Nagari-Pracharini Granthmala Sries No. 4-

THE PRITHVÍRÁJ RÂSO

OF

CHAND BARDÂI,

VOL. IV.

EDITED

BY

Mohanlal Vishnulal Pandia, & Syam Sundar Das, B. A.

With the assistance of Kunwar Kanhaiya Ju.

CANTO LV to LXI.
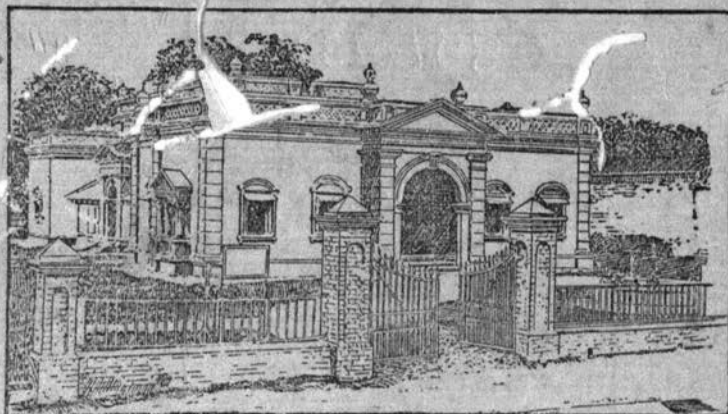
महाकवि चंद बरदाई

कृत

पृथ्वीराजरासो

भाग चौथ

जिसको

मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या और श्यामसुन्दरदास बी. ए. ने

कुँअर कन्हैया जू की सहायता से

सम्पादित किया।

पर्व्व ५५ से ६१ तक.

PRINTED BY THA[illegible]AS, MANAGER, AT THE TARA PRINTING WORKS, AND PUBL[illegible]D BY THE NAGARI-PRACHARINI SABHA, BENARES.

191[illegible]

मूल्य ४) [Price Rs. 4].

(५८) दुर्गा केदार समय।

(१५११ से १५५१ तक)

सूचीपत्र।

(५५) सामंत पंग युद्ध नाम प्रस्ताव।

(पृष्ठ १४१७ से १४४७ तक)

---

(५६) समर पंग युद्ध नाम प्रस्ताव ।

(पृष्ठ १४४९ से १४६३ तक)

(५७) कैमास बध नाम प्रस्ताव।

(पृष्ठ १४६५ से १५०९ तक)

(५९) दिल्ली वर्णन समय।

(पृष्ठ १५५३ से १५६४ तक)

(६०) जंगम कथा प्रस्ताव।

(पृष्ठ १५६५ से १५७५ तक।)

(६१) कनवज्ज समय ।

(पृष्ठ १५७७ से १९५१ तक)

अथ सामंत पंग जुद्ध नाम प्रस्ताव लिष्यंते ।

(पचपनवां समय ।)

पृथ्वीराज का प्रताप वर्णन ।

कवित्त ॥ राह रूप चहुआन । मान लग्गौ सु भूमि पल ॥
दान मान उग्रहै । बीर सेवा सेवा छल ॥
बीय भंति उग्रहै न । कोइ न मंडै रन अँगन ॥
सबर सेन सुरतान । बान बंधन षल षंडन ॥
सा धम्म राह धर धरन तन । देव सेव गंध्रब्ब बल ॥
सामंत सूर सेवहि दरह । मंडे आस समुद्र दल ॥ छं० ॥ १ ॥

दूहा ॥ इक्क दृष्य महि हरष सुष । दुष भज्जै दल द्रब्ब ॥
अरि सेवें आसा अवनि । कोइ न मंडै ग्रब्ब ॥ छं० ॥ २ ॥

जयचन्द का प्रताप वर्णन ।

कवित्त ॥ कनवज्जह जैचंद । दंद दाकुन दल दुत्तर ॥
पच्छिम दष्यिन पुब्ब । कौन मंडै दल उत्तर ॥
छिल्लिय चिचय कोट । जोट अट्ठे दल पंगं ॥
सेव्र दंड अन मंड । षग्ग मंडन बल अंगं ॥
बहु भूमि द्रव्य घर उग्रहै । इम तप्पै रट्ठौर म्हु ॥
सुष इंद्र व्यंद छत्तीस दैर । मुकट बंधि बिन मान सहु ॥
छं० ॥ ३ ॥

अति उतंग तन बल । विभंग जग महि स्हर जुध ॥
अटत वाह जम दाह । काल संकलप काल क्रुध ॥
कोप पंग को सहै । फुट्टि दल जानिक साइर ॥
बल बलिष्ट जुनु इष्ट । दिष्ट कंपहि बल काइर ॥
निम्मले स्हर तन सूर जिम । समर सज्जि गज्जे सुबर ॥
आवाज कंन पंगह सुनी । हलकि कंपि दिल्ली सहर ॥ छं० ॥ ४ ॥

दूहा ॥ दिष्टि सु न्टप दिष्षे सकल । दिल्लावत बनि सेन ॥
मनों सकल अग सुंदरी । जग्गावत पिय मेन ॥ छं० ॥ ५ ॥

पृथ्वीराज का शिकार खेलने जाना ।

कवित्त ॥ इक सबल सित स्हर । इक बल सहस प्रमानं ॥
इक लष्य साधंत । दंति भंजै गज पानं ॥
इक विरुध जम करहि । इक जम जोर भयंकर ॥
इक जपहि दिन अंत । करन कलिकाल पयंकर ॥
सुभ सेव भ्रम्म स्वामित्त मन । तन हित्तन मंडै बियौ ॥
तिन रष्षि घरह प्रथिराज न्टप । अप्पन आषेटक कियौ ॥
छं० ॥ ६ ॥

राजा जयचन्द की बड़वाग्नि स उपमा वर्णन ।

अगस्ति रूप पहु पंग । समुद सोषन धर ढिल्लिय ॥
बयर नयर प्रज्जरहि । धूम डंबर नभ हल्लिय ॥
सजि चतुरंगिय पंग । जानि पावस अधिकारिय ॥
रज्जि रज्ज चष घुम्म । सेन संभरि उच्चारिय ॥
अरि चिय नयन्न बरिषा जुजल । मोर सोर डंबर कविय ॥
प्राची प्रमान संमुह अनिय । मुष पंगुर विज्जनु मनिय ॥ छं० ॥ ७ ॥
अढर ढुरहि गढ़ रुरहि । मेर घर भर सुपरहि भर ॥
कसकि कमठ गर पिट्ठ । सेस सल सलहि छाड़ि धर ॥
जल साइर उच्छरहि । नैर प्रजरहि जरहि घर ॥
जल थल होत समान । बंक छारंत बंक छल ॥

हिंदवान राह पहुपंग बर । चंपि लगे अरि भान ग्रह ॥
छुट्टै न दान कर दान बिन । षग्ग पंति मंडौ सु रह ॥ छं० ॥ ८ ॥
दूहा ॥ दान सूर छुट्टै न महि । विषम राह कमधज्ज ॥
वह जठरागिन राग बिनु । इह जठरागि न सज्ज ॥ छं० ॥ ९ ॥
अभय भयंकर अरि भवन । भ्रमत भूमि षग धार ॥
को कमधज्जह अंग मै । सो न बियौ संसार छं ॥ १० ॥

जयचन्द का राजसी आतंक कथन ।

कवित्त ॥ को अंगमै सु जम्म । क्रम्म को करै सँघारन ॥
को मुर्वी कर धरै । मूर महि कोन उपारन ॥
क्रो दरिया दुस्तरै । नभ्भ ढंको रवि चाहै ॥
को सुन्यह संग्रहै । कौन उत्तर दिसि गाहै ॥
को करै पंग सो जंग जुरि । दनु देवत्तह नाग नर ॥
कलिकाल कलन कंकह कहर । उदधि जानि ऊलटि गहर ॥
छं० ॥ ११ ॥
बेली भुजंगी ॥ चलि पंग सेन अपारयं । अनभंग छचिय धारयं ॥
चहुआन बलनह बंधयं । द्रगपाल क्रम क्रम संधयं ॥ छं० १२ ॥
भव भवन रवनति छंडयं । डर डरपि मुंडति मंडयं ॥
दुअ अट्ठ दिसि बसि बिच्छुरै । जल मीन भंगति उच्छरै ॥
छं० ॥ १३ ॥
भुअ कंप लंक ससंकयं । धर डुलत मानहु चक्कयं ॥
पिय पतिय मुक्कति लुप्पती । कहीं दुतिन दिष्षिय दंपती ॥
छं० ॥ १४ ॥
पहुपंग घूनिय ना रहै । सुरलोक संकति आरुहै ॥ छं० ॥ १५ ॥
दूहा ॥ सुरगन सरनी तल कुदल । षनि कढ्ढै हू कंद ॥
घूनी पंग नरिंद कौ । को रष्षै कविचंद ॥ छं० ॥ १६ ॥
कवित्त ॥ अग्गें सिंघ सु सिंघ । सिंघ पष्षऱ्यो झलालह ॥
पंग अमृत फल चषै । अमृत लग्गौ जु तमालह ॥
आगेई बर अप्पं । नाग नंदन विद्या पढ़ि ॥
आगेई बर करन । भान साहै चिंता चढ़ि ॥

को करै पंग सो जंग जुरि। सु बिधि काल दिष्षै नही॥
रिनमान काज रजपूत गति। संभरि वै संभरि रही॥ छं०॥ १७॥

जयचन्द के सोमन्तक नाम मंत्री का वर्णन।

पंग पुच्छि मंचीस। मंच पुच्छै जु मंच बर॥
सोमंतक परधान। मंत विग्गार्यौ मंड धुर॥
धवल सुमंची मंच। तत्त आरिष्य प्रमानिय॥
तारा क्रत संघरिय। चित्त रावर उनमानिय॥
विधि मंच जंच आरत्ति करि। साम दान भेदह सकल॥
जानो सु बीर सो उच्चरहु। काम क्रोध सांध्रनं प्रबल॥
छं०॥ १८॥

सबद बाद से वरें। इष्ट मंची न तत्त गुर॥
बाल वृद्ध जुवती प्रमान। जानहि स भ्रम्म नर॥
स्वामि भ्रम्म उच्चरैं। कित्ति जुग्गीरह संधे॥
उर अधीन सम प्रान। जानि क्रत जानन बंधे
सह नित्त जीव दिष्षै सु पुनि। मुनि मयंक द्रिगपाल हर॥
कालंक बिनै को तत्त वर। क्रम्म बिना लग्गै सु नर॥ छं०॥ १९॥

दिल्ली की दशा।

संभरि वै तजि गयौ। छंडि ढिल्ली ढिल्ली धर॥
जुद्ध करन न्रप पंग। कोइ न दिष्यौ सु सस्त्र नर॥
ग्राम धाम तजि बीर। बहुरि पत्तौ कनवज्जं॥
तारा क्रत चिचंग। दियो संदेस सु क्रज्जं॥
करि करिनि कंक चिचंग वरु। करौ जग्य आरंभ बर॥
मंची सुमंच राजन बली। ते हक्कारे मंत धर॥ छं०॥ २०॥

जयचन्द का यज्ञ के आरम्भ और पृथ्वीराज को अपमानित करने के लिये मंत्री से सलाह करना।

पंग पुच्छि मंची सुमंत। पुच्छै सुमंच बर॥
पहु सुमंत विग्गार्यौ। जग्य मंड्यौ जु पुब्ब धर॥

सोइ मंचो स प्रमान। जग्य धुर वधं सु बंधे ॥
स्वामि ध्रम्म संग्रहै। कित्ति भग्गी रह संधे ॥
सह जीव जंत दिष्षै सहज। मुनि मयंक द्रिग पाल बर ॥
कालंक दग्ग लग्गै कुलह। सो भिट्टावैंहि मंच नर ॥ छं० ॥ २१ ॥

अति उज्जल न्रप भरथ। भरथ जिहि वंस नाम नर ॥
तिन कलंक लग्गयौ। पुच हत्तयौ अप्प कर ॥
चंद दोष लग्गयौ। कियौ गुर वाम सहिल्लौ ॥
बर कलंक लग्गयौ। राज सुत पंड वुहिल्लौ ॥
चित्रंग राव रावर समर। विनक बंक छिची निडर ॥
आहुट्ठ राइ आहुट्ठ पति। सबर बीर साधन सवर ॥ छं० ॥ २२ ॥

सुंत्र सु मंच परमान। पंग उच्चरिय राज बर ॥
चाहुआन उद्धरन। जग्य उद्धरन मंत धर ॥
चित्त अग्गि भय अग्गि। जग्गि जग्यौ छल राजं ॥
तारा क्रत साध्रम्म। पंग कीजै ध्रम्म साजं ॥
जा ध्रम्म जोग रष्यौ नहरि। कौन ध्रम्म ध्रम्मन गरुअ ॥
मुक्कलौ मंच जे मंच उर। सुबर बीर बोलन हरुअ ॥ छं० ॥ २३ ॥

मंत्री का सलाह देना कि रावल समरसी जी से सन्धि करलेने में सब काम ठीक होंगे।

तब सुमंच मंचिय प्रधान। उच्चरिय राज बर ॥
चाहुआन बंधन सुमत्त। मंडनह जग्य धर ॥
नर उत्तिम चित्रंग। राज उत्तिम चित्रंगी ॥
कर अदग्ग दग्गन। जगत्त रष्षन्न गज अंगी ॥
कालंक अछिय कट्टन सु छिम्र। पर सु चार तिन तिन करय ॥
चित्रंग राव रावर समर। मिलि सु जग्य फिरि दिन धरय ॥
छं० ॥ २४ ॥

कुंडलिया ॥ फुनि न स्यंद पहु पंग बर। उभयति बर बर जोग ॥
समर मिले कमधज्ज कौं। जग्य समप्पैं लोग ॥
जग्य समप्पैं लोग। उभ्भ सारंग सुनाई ॥

एकल्ल सारंग। तिमिर अप कहूं न जाई॥
वियौ तिमिर भंजियै। अर्ध्ध पुलि जाइ तमं घनं॥
अप्प तिमिर भंजिये। प्रलै हाइय सु अप्प फुनि॥ छं०॥ २५॥

सोमंतक का चितौर को जाना।

कवित्त॥ पंग जग्य आरंभ। मंत प्रारंभ समर दिसि॥
सोमंतक परधान। पंग हक्कारि बंधि असि॥
संत तुरंग गति उड्ड। पंग गजराज विशाल॥
मुत्ति अवेध सुरंग। एक दस लालति मालं॥
पंजाब पंच पंचों सु पथ। अड्ड देस अध्र बंटियै॥
चाहुआन बंधि जग बंधिकर। जग्य अरंभ सुंठट्टियै॥
छं०॥ २६॥

जयचन्द का मंत्री को समझाना।

आहुट्टां मझ्झांम। समर साहस चिचंगी॥
निविड बंध बंधे। अबंध सा भ्रम्म सु अंगी॥
चिंतानी कलपत्ति। रूक रत मोह अरत्ता॥
सिद्धानी मोगर सुभैस। सम सद्ध सु गत्ता॥
चहुआन चंपि चवदिसि करिय। जग्य बेलि जिमि उद्धरै॥
चिचंग राव रावर समर। मिलि जीवन जिहि उव्वरै॥
छं०॥ २७॥

पद्धरी॥ मुक्कलै पंग बर मंच बीर। जानै सु गत्ति राजन सरीर॥
मन पंग होइ सो कलें बत्त। बिन्न बुलत बोल बोलें सुतत्त॥
छं०॥ २८॥
जानै सु चित्त नर नरनि बत्त। अनि रत्त रत्त ते लषहि गत्त॥
कीटी सु भ्रंग ज्यौं मिलहि स्याम। डर ग्रहैं रहैं नांमित्त जाम॥
छं०॥ २९॥
तिन मध्य एक सारंग सूर। सह मत्त विद्ध जानत सपूर॥
पाषंड दंड रचै न अंग। भारथ्थ कथ्थ भीषम प्रसंग॥
छं०॥ ३०॥

भ्रगुराज पैंज जिन करिय देव । मंगी सु कृत्यु जिन मृत्य सेवं ॥
संतनु सुमंति स्वामित्त सत्त । रष्षै जु राज राजन सु म्यत्ति ॥
छं० ॥ ३१ ॥

यतौ सुजारं चित्रंग थान । चित्रंग राज मिलि दीन मान ॥
छं० ॥ ३२ ॥

रावल समरसी जी का सोमंत से मिलना और उसका अपना अभिप्राय कहना ।

दूहा ॥ समर सपति प्रति समर की । समर सभेद सपंग ॥
जग्य बेद औ उद्धरौ । भूमि भेद ग्रह जंग ॥ छं० ॥ ३३ ॥

पूब कही चलतहिं न्त्रपति । सुबर बीर कमधज्ज ॥
दीन भये दीनत भगै । सुबर बीर बर कज्ज ॥ छं० ॥ ३४ ॥

दीन भयें अरि अंग बर । छल छुट्टियै न छत्र ॥
मय मत्तह सो हृत्त है । वै पुज्जै गुन मत्ति ॥ छं० ॥ ३५ ॥

रावल जी का सोमंत को धिक्कार करके उत्तर देना ।

नाम सु मंत्री तिन धर्‌यौ । रे अमंत परधान ॥
दीनत भयें भयौ न जग । जग्यबेर बलिदान ॥ छं० ॥ ३६ ॥

अरिल्ल ॥ मिलिरु समर उच्चरि चौहानं । जग्य करन पहुपंग निधानं ॥
त्रेता द्वापर कर्‌यौ जु देव । कलिजुग पंग जग्य करि सेव ॥
छं० ॥ ३७ ॥

कवित्त ॥ समर रूप सुनि समर । पंग आरंभ जग्य धुर ॥
सत्य पहुर बलिराइ । जग्य पहुरै सु जग्य बर ॥
बियौ पहुर रघुबीर । जग्य आरंभन जग्यौ ॥
तृतीय पहुर जग्गयौ । भ्रम्म सुत भ्रम्म न लग्यौ ॥
कलि पहुर जग्गि जग्यन बलिय । सुबर बीर कमधज्ज धुत्र ॥
संसार सब्ब निंद्रा छिपिग । जग्गि जग्ग विजपाल सुत्र ॥
छं० ॥ ३८ ॥

स्वर्ग इच्छ बलिराइ। जग्य किय गयौ पयातल॥
चंद्र जग्य मिट्टन। कलंक [1]का कुष्ट अंग गल॥
राज इच्छ राजसू। राज रा पंडु पंड बन॥
नघुअ राजसू जग्य। क्रूर कर कुष्ट कूप जन॥
कलिजुग्गराज राजसु करौ। कह्यौ दान षोडस करन॥
सित सित्त कोम बर बीर हर। हरि विचार लग्गौ चरन॥
छं० ॥ ३९ ॥

अश्वमेद राजसू। लंब गौषंभ मेद बर॥
अगनि होच बर मेद। मध्य जग मेध अप्प बर॥
कनिष्ट बंध बड़बंध। चीय आचरन ग्रेह बर॥
ब्रत संन्यास आचरन। पंच चवकलि न होहि धर॥
कलि दान जग्य षोड़स करन। बाजपेय बर उद्धरै॥
नन होइ कोइ इन जग्य बर। हँसे लोइ बहु विग्गरै॥छं०॥४०॥

पद्धरी॥ उच्चऱ्यौ मंच चिचंग राव। कलि मध्य जग्य नहिं भ्रम्म चाव॥
बल करौ नन्न भेषह प्रमान। जग्यौ न एक भुअ चाहुआन॥
छं० ॥ ४१ ॥

चहुआन जोग छचौ अनंभ। अन्यन कोस सित्तए मंझ॥
वय हीन इष्ट नन बल प्रमान। जग्गहि सजोग नह लच्छि थान॥
छं० ॥ ४२ ॥

मंची न कोइ बर पंग ग्रेह। [1]नन होइ जग्य मानुष्य देह॥
चवार काल चंपै प्रमान। बरजै न तास उर जग्य ज्ञान॥
छं० ॥ ४३ ॥

अपजस विसाहि करि कुमत मत्त। पुच्छौ सु बत्त तौ कही बत्त॥
सुद्धरै बात सो करौ वीर। आवै न समर बर जग्य तीर॥छं०॥४४॥

रावल जी का कहना कि होनहार प्रबल है।

कवित्त॥ फुनि चिचंग नरिंद। चतुर विद्या सचित्त मति॥
भव भवस्य त्रिम्मान। ब्रह्म भूलै त्रिमान गति॥

(१) ए.-ना कुष्ट।

इह अजब्ब चिंतयौ। ग्रब्ब प्राहारन सांई ॥
तन मनुच्छ सम देव। बुद्ध बुध्यौ बंल तांई ॥
चैलोक अप्पि बलिराइ ने। राम जुद्ध चैता सु बर ॥
जदुबीर सहाइक पंथ्थ बंध। तब कुबेरं बरथ्यौ सुधर ॥ छं० ॥ ४५ ॥

पंग सुवर परधान। समर सम्हौ उच्चारियं ॥
बलि सु जग्य विग्गर्‍यौ। भ्रम्म छिची न सम्हारिय ॥
चंद जग्य विग्गर्‍यौ। मंत बिन अटन सु पत्तौ ॥
दुज्ज दोष नघु क्रत्त। क्रित्त अप्पनौ सु हत्यौ ॥
इह भ्रम्म क्रम्म षल षंडि षग। जित्त जगत सब बस कियौ ॥
प्रथिराज समर बिनं मंडलह। अवर जग्य नह हर तियौ ॥
छं० ॥ ४६ ॥

रावर समर नरिंद। समर साधन्न समर बर ॥
समर तेज सम जुद्ध। समर आक्रत्य समर घर ॥
सम समंति सम कंति। समति सम सूर प्रतापं ॥
समर विधान विधान। सिंघ पुज्जै नन दापं ॥
भव भवसि भूत भव भव कहहि। भवतव्य सु चिंता सद्धरिय ॥
चिचंग राव रावर समर। इह प्रधान सम उच्चरिय ॥ छं० ॥ ४७ ॥

रावल जी का अपने को त्रिकालदर्शी कहना।

हम नरिंद जोगिंद। भूत सुभ्भैत भवसि गति ॥
हम चिकाल दरसौ सु। क्रम्म बंधै न मोह भति ॥
जु कछु पच्छ निरमान। अग्ग मुष सोइ उच्चारै ॥
सुनि सुमंत उच्चरौं। जग्ग चहु नसि रारै ॥
मुनि देव राज दुजं विदुष बर। रही जच तचह सु बर ॥
देषियै भलप्पन-पच्छि बर। तौ अग्गैई जाइ धर ॥ छं० ॥ ४८ ॥

रावल जी का ऐतिहासिक प्रमाण देकर प्रधान को यज्ञ करने से रोकना।

बंदीजन रिषि ब्रह्म। जग्य पंडव बष्यानिय ॥

अकसमात इक प्रगट। निकुल जंपिय इय वानिय॥
द्वादस वरस दुकाल। पंथ्यौ कुरषेत धरन्नं॥
विप्र उच्छ व्रति न्हान। न्योति रिषि धोय चरन्नं॥
तिहि पंक माहि लोटंत हौ। अड़ देह कांचन भयौ॥
पूरन करन्न तुम जग्य में। आयौ पन दाग न गयौ॥ छं०॥ ४९॥

दूहा॥ कहि मोकलि परधान कर। इह सु कथ्य चित्रंग॥
तौ तुम अब जग अंज से। कहा करहु पहुपंग॥ छं०॥ ५०॥
अश्वमेद जग छसें करि। विश्वमित्र तप जोर॥
कहा करै नृप मंद मति। अहंकार मन ओर॥ छं०॥ ५१॥

सोमंत का कुपित होकर जयचन्द की प्रशंसा करना।

कुंडलिया॥ पंग प्रधान प्रमान उठि। बचन श्रवन सुनि राज॥
रत्त द्रष्टि अरु रुद्र मुष। चंपि लुहट्टी साज॥
चंपि लुहट्टी साज। बचन बर बीर कहाई॥
तर उप्पर चित्रंग। करहि जुग्गन पुर नाई॥
सज्जे पंग नरिंद। तीन पुर कंपि अभंग॥
असुर ससुर नर नाग। पंग भय भये सु पंग॥
छं०॥ ५२॥

कवित्त॥ बचन उच्च दिठ उच्च। समर तप करन उचाइय॥
पंग लज्ज सिर मंडि। बीर ब्रह्मंड लगाइय॥
सोइ न्रपत्ति जयचंद। नाम जिन पंग पयानं॥
इला धरन समरथ्थ। नयन कालो जुग जानं॥
कविचंद देव विजपाल सुअ। सरन जाहि हिंदू तुरक॥
चित्रंगराव रावर समर। रज नष्षै लग्गै अरक॥
छं०॥ ५३॥

जयचन्द का राजसी आतंक वर्णन।

पद्धरी॥ बुल्यौ सुमंच मंची प्रमान। कनवज्जनाथ करि जग्य पान॥
मिसि सेन सज्जि आषेट रूप। चिंता न चिंत्य बंधेत भूप॥
छं०॥ ५४॥

आरज्ज सेन प्रथिराज राज। बंधेति बलह समरह समाज ॥
बन वहन गहन दुज्जन सभूमि। सरं ताल वितल कहैति तूंमि ॥
छं० ॥ ५५ ॥

बग्गुरि सभेद गोरी उपाइ। बंधि सिंधं उभय पच्छिम लगाइ ॥
मंडै समूल सुरतान तीर। करनाट करनं षुरसान मीर ॥छं०॥५६॥
गुज्जर सु कोह दक्षिन लगाइ। लग्गै न गहन कहु अरिन पाइ ॥
उतरत्त बंध पुब्बह प्रमान। चढ़ि देषि पंग पावै न जानं ॥
छं० ॥ ५७ ॥

तारक सु षेद बंधे प्रसार। चहुवान चपेटक जुद्ध भार ॥
पाताल पंथ नन व्योम पंथ। बन बहन हरन दुरि सोम अंथ ॥
छं० ॥ ५८ ॥

दल सज्जि करहि न्वप सच भेद। यहुपंगराइ राजह्न वेद ॥
॥ छं० ॥ ५९ ॥

यज्ञपुरुष का ऋषि के वेष में नारद के पास आना।

दूहा ॥ आयौ रिषि नारद सद्रिस। धरम मूल प्रतिपार ॥
मनों विदिसि उत्तारनह। जग्य रूप सिरदार ॥ छं० ॥ ६० ॥

नारद का पूछना कि आप दूबरे क्यों हैं।

दीन दिष्षि वर वदन तिन। ता पुच्छै रिषि राज ॥
किन दुष्षह तन किस्सता। किन दुष्षह आकाज ॥ छं० ॥ ६१ ॥

ऋषि का उत्तर देना कि मैं मानहीन होने से दुखी हूं।

तब रिषि बोल्यौ रिष्य प्रति। अस्त्री अस्त्र सरूप ॥
तिन कारन तन जुरजंर्यौ। अग्गि विभंगन रूप ॥ छं० ॥ ६२ ॥

कवित्त ॥ अंग षंड न्वप राज। मान षंडनति विप्र वर ॥
गुरु षंडन गुरु विदुष। लच्छि षंडन विनक्क घर ॥
निसि षंडन तियं जोग। सु निसि षंडन अभिमानं
क्रत षंडन उरदेव। जग्य षंडन सुरथानं ॥
इत्तने षंड कीने हुते। तदपि दुष्य जर जर तनह ॥
जानैन देव दैवान गति। सुगति विद्धि ब्रह्ममय घनह ॥छं०॥६३॥

नारद ऋषि का कहना कि आपके शुभ के लिये यथा साध्य उपाय किया जायगा।

दूहा ॥ सोनंतहु तिन विप्प कहिं। नब नव चरिंत प्रमान ॥
तू आग्या जो देइ गौ। सो आग्या परमान ॥ छं० ॥ ६४ ॥

विअष्परी ॥ अग्गि समान जु अग्गि प्रमानं। विप्र और औरै उच्चानं ॥
जाहि कुचील कुचील करिज्जै। तौ वह बेद भंग नव लिज्जै ॥
छं० ॥ ६५ ॥

जो वह तन अत्यंत प्रकारं। बहुत भस्म आरत उच्चारं ॥
धंड मंड लीने कर धारिय। कांति सराप भई सिल नारिय ॥
छं० ॥ ६६ ॥

तहां आइ बर बाज बिलग्गे। सुनें पंग आतुर मन मग्गे ॥
जौ आग्या इन भंति सु भज्जै। तौ ग्रेह होंहिं ग्रामि गुर सज्जै ॥
छं० ॥ ६७ ॥

हंका कार दुह न्रप भारी। पंग जाउ जानै न प्रकारी ॥
जिन डहाल क्रन्नं गुन षेद्यौ। तीन बाल भारथ्थह भेद्यौ ॥
छं० ॥ ६८ ॥

उभै बान करि मान प्रकारं। सुबर बीर संचै सिर सारं ॥
छं० ॥ ६९ ॥

सोमंत का राजा की सलाह देना कि चहुआन से पहिले रावल समरसी दोनों की परास्त करना चाहिए।

कवित्त ॥ सुमत समंती स्याम। सुमति संग्रही पंग बर ॥
बंधि राज चहुआन। बंधि चित्रंग सम्म घर ॥
सुलप लज्ज पति जीह। बेंन क्रक्कस उच्चारहि ॥
* ....
मधि भूप रूप दारुन वचन। पंगराइ अम्मर अरस ॥
सज सेन सु वंधौ वंध बल। देव राज देवह परस ॥ छं० ॥ ७० ॥

* छन्द ७० की चतुर्थ पंक्ति चारो प्रतियों में नही है।

सोचहि पंग नरिंद। राज जानै इह सत्तिय ॥
ता छचौ कौं दोस। भूमि भोगवैग्ग दुत्तिय ॥
पंग काल आरुहै। ताहि गारुरू न कोई ॥
सस्त्र मंच उड्डरै। सार धर धार समोई ॥
मयमंत सेन चतुरंग तजि। बढ़िय दंद हिंदुअ उभय ॥
दैवत्त कला दैवत्त तूं। दै दुवाह दुज्जन डरय ॥ छं० ॥ ७१ ॥

मंत्री के बचन मान कर जैचन्द का फौज सजना।

दूहा ॥ सज्जन सेन सु राज कहि। बज्जिग बज्ज सु लाग ॥
इक्कै विधिनर अंगमै। बीय मनुच्छ न भाग ॥ छं० ॥ ७२ ॥

कवित्त ॥ तज्जि कमान जु तीर। छंडि अवाज गोरि चलि ॥
ज्यों गुन मुक्कि उठि चंग। सीह बर खग्ग अंड हलि ॥
त्यौं पहुपंग नरिंद। सेन सजि धर पर धाईय ॥
असुर ससुर सर नाग। पंग पहुपंग हलाइय ॥
अच्छरत रेन अरि उच्छरत। कायर मन पछ अग्ग तन ॥
कविचंद सु सोभ विराजई। जानि पताका दंड घन ॥ छं० ॥ ७३ ॥

जयचन्द की सुसज्जित सेना का आतंक वर्णन।

कुंडलिया ॥ चढ़तैं पंग सु सेन मिलि। तुछ तुछ कूंच प्रमान ॥
नदी समुद्रह सब मिलै। पंग समुद्रह आनि ॥
पंग समुद्रह आनि। सेन न्रप मंडप साचै ॥
सिंभ गंग उतमंग। रंग मल्ल ती रंग राचै ॥
दइय पंग अनभंग। १ सक्र सहायै छिति डुल्लै ॥
मुदरि भान संचरी। दिसा दुरि धर पर चल्लै ॥ छं० ॥ ७४ ॥

चोटक ॥ पहुपंग निसान दिसान हुअं। सुनियं धुनि डुल्लि प्रमान धुअं ॥
विधि बंध विधिं क्रम काल डरै। जयचंद फवज्ज सु बंधि परै ॥
छं० ॥ ७५ ॥

रथ सज्जि हयं गय पाय दलं। तिन मद्धि विराजति चाहि ललं ॥

नव बत्ति निसान न्त्रिघोष सुरं। सुनियै धुनि धीरज तज्जि भरं ॥
छं० ॥ ७६ ॥

गजराज स घंटन घंट बजै। अनहद्द सवद्दनि जानि सजै ॥
घन नंकहि घुघ्घर पष्षर के। सु बुलै जलजात किधों जल के ॥
छं० ॥ ७७ ॥

पर टोपनि सीस धजाति हलै। तिनकी कबि देषि उपम्म कलैं ॥
* चय नेचय मंडिय नेच उजास। झर मद्धि प्रगट्टि मनों कैलास ॥
छं० ॥ ७८ ॥

बँधि पंषि उमा वंवि सीस सधी। वढ़ि संसि कला मनों ईस बँधी॥
चवरंग धजा फहरीति हलं। सु मनों ससि चाह बसीठ हलं ॥
छं० ॥ ७९ ॥

गुरु भान ति राह रु भूमि सुधं। सब अप्पि परी गह तात बुधं ॥
दमकै बनि कंति कती सरसी। निकसै मनु मानिक मंजर सी ॥
छं० ॥ ८० ॥

दिसि अठ्ठ दुरी उपमानि जनं। सु मनों तम जीति रह्यौ रविनं ॥
ढुरि ढाल ढलं मिल सोभ धरै। चढ़ि देव विमान सु केलि करै ॥
छं० ॥ ८१ ॥

सु मनों जनु जुग्गिय जग्गियं। सु मनों प्रलै काल प्रथीपुरयं ॥
छं० ॥ ८२ ॥

रहस्सहि बीरति स्हरति सुष्य। मनों सतपच विकासिय सुष्य ॥
सुदे सुष काइर भुझिझग मोद। मनों भए संझ सु दिष्षि कमोद ॥
छं० ॥ ८३ ॥

* यह पंक्ति छन्दोभंग से दूषित है। त्रोटक छन्द चार सगण का होता है किन्तु इस पंक्ति में एक लघु अधिक है। पाठ में कोई ऐसी युक्ति भी नहीं है कि जिस से लिपि दोष माना जाय और न किसी प्रकार शुद्ध करने का अवकाश भी है अस्तु इसे ज्यों का त्यों रहने देकर केवल यह सूचना दे दी है। छन्द ८२ के बाद के दो छन्द न तो त्रोटक हैं और न समरूप से उनकी मात्रा किसी अन्य छन्द से मिलती है इसका मूल कारण लिपि दोष है। बीच में कुछ छन्द छूटे हुए भी मालूम होते हैं।

उभै षट फौजति पंम सजै। दिसि अठ्ठ उभै दुरि थान लजै.॥
चल्यौ पहुपंग सु हिंदुअ थान। इतें चितरंग उते चहुआन ॥
छं० ॥ ८४ ॥

सेना सजनई का कारण कथन।

दूहा ॥ सधर धार बज्जन बहल। धर पहार बर गज्जि ॥
पुब्ब बैर चहुआन कौ। बजे तीर कर बज्जि ॥ छं० ॥ ८५ ॥
जग्गि जलनि जैचंद दल। बल मंड्यौ छिति राज ॥
बैर बंध्यौ चहुआन सों। पुब्ब बैर प्रति काज ॥ छं० ॥ ८६ ॥

जैचन्द का पृथ्वीराज के पास दूत भेजना।

दूत सु मुक्कि प्रधान बर। दिसि राजन प्रथिराज ॥
*मातुल पष जैचंद धर। अर्द्ध सु मंगै काज ॥ छं० ॥ ८७ ॥

गोयंद राय का जैचन्द के दूत को उत्तर देना।

भुजंगी ॥ न जानं न जानं न जानंत राजं।
तुमं मातुलं वंस ते भूमि काजं ॥
दई राज अनगेस प्रथिराज राजं।
लई भारथं वीर भारथ्थ वाजं ॥ छं० ॥ ८८ ॥
जमं ग्रेह पत्तौ किमं पच्छ आवै।
ततं पंग राजं सु भूमिं सु पावै ॥ छं० ॥ ८९ ॥
दूहा ॥ पंगराज सोइ भूमि बर। मतन भूमि सिरताज ॥
कहै गरुअ गोयंद मति। सामंता सिर लाज ॥ छं० ॥ ९० ॥
कवित्त ॥ सुनहु मंत भर पंग। बात जानहु न मंत बर ॥
बीर भोग वसुमती। बीर बंका बंकी धर ॥
बीरा ही अनसंक। रहै बीरा बिन बंकी ॥
है षुरं षग्गहं धार। सोइ भोगवै जु संकी ॥
पावंड डंड रचै नहीं। पाषंडह रचै न गुन ॥

* इसके बाद का एक दोहा या और कोई छोटा छंद छूट गया मालूम होता है।

क्रम विक्रम चारि चचर जिमसि। अटत हत्त जावै न पन ॥
छं० ॥ ९१ ॥

कवित्त ॥ काल ग्रेह को फिरै। मेघ बुट्ठै धारा धर ॥
षह तुट्टै तारिका। जाइ लग्गै न नाक पर ॥
छल छुट्टै [1]मुष सद्द। गरुअ हरुअं सु प्रमानं ॥
बुधि छुट्टै आबुद्धि। होइ पछितावति जानं ॥
संघरिय चीय बर कंत बर। गरुअ भूमि को भोगवै ॥
मातुल कहाय तातुल सु मति। मरन देव गुन जोगवै ॥
छं०॥ ९२ ॥

दूत का गोयन्दराय के वचन जैचन्द से कहना।

कहिय बत्त यो मंचि। राज यों बत्त न मानिय ॥
अधम बुद्धि बनि तमक पोत। क्रम अक्रम न ठानिय ॥
छल छुट्टै बल बधै। सधै सिद्धंत सु सारं ॥
एक एक आवद्ध। देव देवत्त विचारं ॥
पहुपंग राय राज सु अवर। जाइ कही तामस विधिय ॥
सजि सेंन सबें चतुरंग बर। सुबर बीर बीरह बधिय ॥छं०॥ ९३ ॥

जैचन्द का कुपित होकर चढ़ाई करना।

दूहा ॥ सुतन सु पंग नरिंद सजि। सब छिची छबि छाइ ॥
बर बंसी ससिपाल ज्यों। पग्ग घटक्यौ आइ ॥ छं० ॥ ९४ ॥

जयचन्द के पराक्रमों का वर्णन।

कवित्त ॥ चंदेरी ससिपाल। करन डाहाल पुच बर ॥
तिहि समान संग्राम। बान बेध्यौति पीर उर ॥
तिमिरलिंग षेदयौ। षेदि कढ्यौ तत्तारिय ॥
सिंघराव जै सिंघ। सिंघ साध्यौ गुन गारिय ॥
जैचंद पयग्नौ चंद कहि। ग्रह भग्गौ निग्गह भगिय ॥
भीमंत भयानक भीम बर। पुब्ब तरोवर तब रहिय ॥ छं० ॥ ९५ ॥

(१) कृ.-सुख।

दूहा ॥ सो फुनि जीत्यो पंग पहु। धरनि बीर सों बीर ॥
उदधि उलट्टिय हिंदु नृप। बढ़ि कायर उर पीर ॥ छं० ॥ ९६ ॥

भुजंगी ॥ प्रकारे सुचारे चवै इक्क पायं। असी एक मंतेत्र हीवंत तायं ॥
सु बंबीस मत्ते न हीवंत कंदं। भुजंगी प्रयौतं कहै कब्बिचंदं ॥ छं० ॥ ९७ ॥
चब्यौ पंग रायं प्रकारं प्रकारं। पुरी इंद्र ज्यों जानि बलिराय सारं ॥
घनी अंग अंगं जिती सेन सज्जं। मनो देवता देव साधंत गज्जं ॥
छं० ॥ ९८ ॥
रहै कोन अभ्यंत जंबल्ल प्रकारं। जितै पंग सों कोन कलि आस सारं ॥
फनी फूंक भूली डुली भू प्रमानं। कंपे चारि चारं उभै यं प्रमानं ॥
छं० ॥ ९९ ॥

कवित्त ॥ धर तुट्टै पुरतार। पंग असि बर अस सद्धी ॥
हिंदु मेछ दोउ सेन। दोज देवत्तन बंधी ॥
दुहूं तोन जम द्रोन। पथ्थ प्रथिराज गनिज्जै ॥
ए न डुले ए डुले। ए न रंजे ए रज्जै ॥
जैचंद सपूरन कर पवित। परिपूरन उग्यौ अरक ॥
नर नाग देव देवत्त गुन। विधि सुमंत बज्जी धरक ॥ छं० ॥ १०० ॥

चोटक ॥ सु सुनी धुनि बेन प्रमान धरं। चढ़ि संमुष पंग नरिंद परं ॥
सजि सूर सनाह सुरंग अनी। सु कछू जनु जोग जुगिंद्र धनी ॥
छं० ॥ १०१ ॥
बर बंक चिलक्क करच्च इसी। घन सीस उग्यौ जनु बाल ससी ॥
जल होत थलं थल होत जलं। सु कही कविराज उपंम भलं ॥
छं० ॥ १०२ ॥
जल सुक्किय ग्यानिय मोह जतं। जल बढ्ढि जलं जर वीरज तं ॥
सम बंच करूर कुरंग दिसा। पुरहे जनु कायर बीर रसा ॥
छं० ॥ १०३ ॥
स बढ़े बल सूर प्रमान रनं। सु मनो बरसैं बर घेरि घनं ॥
अरकादि स धुंधर मंत दुरं। सु मनों बिन दानय मान दुरं ॥
छं० ॥ १०४ ॥
हत भंग निसानति बीर बजै। रथ बाज करी करुनान लजै ॥

कलहंत करे किहि चिंत बरं। दुरि इंद्र रह्यौ पय बंधि नरं॥
छं०॥ १०५॥

कुंडलिया (?)॥ यों लय लग्गो पंग पय। तो पग सजिग सिंगार॥
*श्रवन बत्त संची सुनै। श्रवन सुनै घरियार॥
श्रवन सुनै घरियार। अंध कारिम तन सोहै॥
मिलें पंग तौ पंग। अंग दुज्जन दल गोहै॥
षट विय षोडस जन्न जै। जो रजै राज राजे सुतौ॥
.... ॥
विधि बंधन बुधि हरन। देव द्रजोध ज्रोध सौ॥
.... ॥
तौ पंच समह जुद्धह करन। .... ॥
.... ॥ छं०॥ १०६॥

दूहा॥ पंग छत्र छिति छांह बर। उभै दीन भय दीन॥
पंग सूर उग्गै सजल। भयौ बीर प्रति मीन॥ छं०॥ १०७॥

जैचन्द की सेना का प्रताप वर्णन।

कवित्त॥ बन घन षग लग्गीय। हल्लिय चतुरंग सेन बर॥
यों हल्लिय धर भार। नाव ज्यौं रीति वाय बर॥
यों हल्ले द्रिगपाल। चंद हल्लै ज्यों धज धर॥
बद्दर पवन प्रकार। ध्यान डुल्लेति अगनि धर॥
इह मंत चिंति चहुआन बर। मातुल घर उर षग्ग षिति॥
मंगे जु पंग पहुमी सपति। सुबर बीर भारथ्थ जिति॥ छं०॥ १०८॥

जैचन्द का चहुआन को पकड़ने की तैयारी करना और उधर शहाबुद्दीन को भी उसकाना।

दूहा॥ सु विधि कीन सज्जिय सयन। ग्रहन चाइ चहुआन॥
तो सुरपुर भंजै नहीं। इह आधार विरान॥ छं०॥ १०९॥

* यह कुंडलिया नहीं वरन दोहा छन्द है परंतु खण्डित है और इसके बाद के कुछ और छन्द भी लोप हुए ज्ञात होते हैं क्योंकि मजमून का सिलसिला टूटता है।

पहुपंग सु भैभीत गति। बीर डंड मच्चि सूर ॥
ते फिरि सूर समान भय। विधि मति रत्ति करूर ॥ छं० ॥ ११० ॥

नव गति नव मति नव सपति। नव्व सुति नव रति मंद ॥
चाहुआन सुरतान सौं। फिरि किय पंग सु दंद ॥ छं० ॥ १११ ॥

सत्त अरुझि संकरह ज्यौं। उठी बीर बर बेलि ॥
बढ़न मतैं चहुआन रज। बर भारथ्थ सु केलि ॥ छं० ॥ ११२ ॥

कवित्त ॥ भये अभय भय भवन। रजन स्वामित्त सूर नर ॥
तेज़ल लगै न पंग। सुरस पाई न पंग धर ॥
अग्ग क्रंम क्रम धरिय। क्रंम पच्छा न उचारै ॥
मय मत्ता तिथि पत्त। गयौ बंचै न सुधारै ॥
बर बन विहस्सि रह सैन कय। रथ्थ भंजै भंजन सु अरि ॥
डंमरिय डहकि लग्गिय लहकि। दहकि रिदै कायर उसरि ॥
छं० ॥ ११३ ॥

जैचन्द की सेना का दिल्ली राज्य की सीमा की भूमि दबाना और मुख्य मुख्य स्थानों को घेरना।

दूहा ॥ कूरलती सारस सबद। सुरसरीस परि कान ॥
सूर संधि मन बंधि कें। चले बीर रस पान ॥ छं० ॥ ११४ ॥

पद्धरी ॥ अन बुद्ध जुद्ध आबद्ध सूर। बर भिरत मत्त दीस करूर ॥
बर बुद्धि जान आबुद्ध जुद्ध। सामंत सूर बर भंजि सुद्ध ॥
छं० ॥ ११५ ॥

इक्कंत तमसि तेजं कारूर। कढ्ढंति दंत गज मंत सूर ॥
बज्जी सु बाह बाहंत वज्र। झिल्लैति वज्र सुगँ सु रज्ज ॥
छं० ॥ ११६ ॥

सामंत सूर पति तीन बाहु। चंप्योति पंग दल गिलन राहु ॥
डह डहक बदन फुल्लै प्रकार। सामंत सूर संन पच भार ॥
छं० ॥ ११७ ॥

कंमोद ओद काइर कुरंग। उग्यौ सु भान पहपंग जंग ॥

छिति मिच छच छची न जान। नर लीइ गत्ति ज्यों अगति वाम॥
छं० ॥ ११८ ॥

नव निजरि निकरि नव विंघन ह्वर। जंपै सु चंद बरदाइ पूर॥
छं० ॥ ११९ ॥

कवित्त ॥ भुज पहारि चहुआन। उदधि रुक्कवन पंग बर॥
सु दिसि विदिसि वर बोरि। बीर कमधज्ज षग्ग झर॥
अति अथाह उप्पटिय। सलिल सहमत्त सयन बर॥
भ्रम्म जिहाज तिरंत। मंत बैरष्प बंधि भर॥
धर ढारि पारि गढ़ बंक बहु। दिल्ली बै हल्लिय दिसंह॥
धनि ह्वर त्रप्प सोमेस सुच। तुच्छ अथाह प्रवेस दल॥छं०॥१२०॥

ऐसेही समय पर पृथ्वीराज का शिकार खेलने को जाना।

गोडंडह षल मिच। राज सेवा चुकि ग्यानं॥
ग्यान दगध जोगिंद। कुलट कैरव भगि पानं॥
वयति मध्य तामध्य। मझि मोचन अरि रोचन॥
तहां पंग चहुई। पऱ्यौ पारथ नह पोचन॥
भय काल काल संभरि धनी। सुनि अवाज ढिल्ली तजिय॥
सयमंत मयङ्कत मोह गति। सुबर जुड जम क्रत लजिय॥
छं० ॥ १२१ ॥

दूहा ॥ तिन तप आषेटक रमै। थिर न रहै चहुआन॥
बर प्रधान जोगिनि पुरह। धर रष्षन परवान॥ छं० ॥ १२२ ॥

कैमास की स्वामिभक्ति।

कवित्त ॥ गय सु रष्षि परधान। थान कयमास संच वर॥
अति उतंग मति चंग। नदिय नंदन बंदन बर॥
अति उतंग संचह। अभंग झिल्लै प्रहार कर॥
स्वामि काज स्वामित्त। करन सनमान करन धर॥
दल हड्डि सु रिधि राजन बलिय। अभै भयंकर बल गरुअ॥
सामंत ह्वर तिन मंच वर। सबर बीर लग्गौ हरुअ॥ छं० ॥ १२३ ॥

दिल्ली के गढ़ में उपस्थित सामंतों के नाम।

रष्षि कन्ह चौहान। अत्तताई रूढ़ै भर॥
रषि तोअर पाहार। बीर पज्जून जून भर॥
रषि निड्डुर रठ्ठौर। रष्षि लंगा बाबारौ॥
षीची रावप्रसंग। लज्ज सांई सिर भारौ॥
दाहिम्म देव दाहरतनौ। उद्दिग बाह पगार बर॥
जज्जोनराइ कैमास सँग। एकादस रष्षेति भर॥ छं०॥ १२४॥

जमुना पार करके दत्रपुर को दहिने देते हुए कन्नौज की फौज का दिल्ली को घेरना।

गौ जंगल जंगली। देस निरवास वास करि॥
जोगिन पुर पहुपंग। दियौ दष्षिना देव फिरि॥
उतरि जमुन परि बीर। देवपुर सुनि षल षड्डी॥
अद्ध रयनि कल अद्ध। चंद उग्यौ कल अड्डी॥
अगिवान कन्ह तोंअर बलिय। हलिय सेन नन पंच करि॥
नद गुफा बंक बंकट बिकट। सुबर बैर बर बीर षरि॥ छं०॥ १२५॥

दूहा॥ विकट भूमि बंकट सुभर। अंगमि पंग नरिंद॥
सो प्रथिराज सु अंगमै। धनि जैचंद नरिंद॥ छं०॥ १२६॥

सामंतों की प्रशंसा और उनका शत्रु सेना से लड़ाई ठानना।

कवित्त॥ जमुन विहड बर विकट। हक्क बज्जिय चावद्दिसि॥
पंग सेन संमूह। सूर कढ़ै संग्रह असि॥
तेंही रत्त नरिंद। मुक्कि भग्गों चहुआनं॥
पुंडीरा नीरत्ति। नेह बंध्यौ परिमानं॥
विन स्वामि सब्ब सामंत भर। एक एक बर सहस हुअ॥
अष्षैं नरिंद पहुपंग दिसि। धुअ समान सामंत भुअ॥
छं०॥ १२७॥

दूहा॥ अढर ढरहिं अनसन्न महि। ढरहि अठार प्रकार॥
को जयचंदह अंगमै। दोज दीन सिर भार॥ छं०॥ १२८॥

जैचन्द की आज्ञानुसार फौज का किले पर गोला उतारना।

कवित्त ॥ आयस पंग नरिंद। गहन उच्चरि संभरि सुर ॥
सबर सूर सामंत। लोह कट्टे बट्टे बर ॥
बीर डक्क सुनि हक्क। बज्जि चावद्दिस झानं॥
मुष मुष रुए अवलोकि। बीर मत्ते रस पानं॥
सद मद्द सिंघ छुट्टे तमकि। झमकि हथ्थ सिप्पर लइय ॥
दुरजन दुवाह भंजन भिरन। दइ दुवाह उभ्भै दइय ॥छं०॥१२९॥

उधर से सामंतों का भी अग्निवर्षा करना।

नराज ॥ इयं उवं उअं इयं दुअंत सेन उत्तरं।
जमी जु गंज मेत जेत बड्डि सिड्डि सुभ्भरं ॥
कुसंम किंसु किंसु कंक कंत्ति मत्ति मंडयं ॥
मनो मनं मनी मनं मनी मनंत षंडयं ॥ छं० ॥ १३० ॥
जयं जयं जमंन काल व्याल पग्ग उभ्भरं।
मनो मयंक अंक संक काम काल दुभ्भरं ॥
झनं झनं झनं झनं ठनंत घंट बज्जयं।
मनो कि मद्द सद्द रद्द भद्द गज्ज गज्जयं ॥ छं० ॥ १३१ ॥
मनो कि संक काम जास लान ताम बद्दयं।
नृपत्ति रूप भूप जूप नूप नद्द हद्दयं ॥ छं० ॥ १३२ ॥

घोर युद्ध का आतंक वर्णन।

कवित्त ॥ धकाई धक्काइ। मग्ग लीना षग मग्गं ॥
षग्गानी झम अग्ग। बीर नीसानति बग्गं ॥
सार झार दिष्षियै। पंग नन दिष्षि नयनं॥
भय भयान पिष्षियै। सद्द सुनियै नन कंनं ॥
सुष दुष्ष मोह माया न तह। क्रोध कलह रस पिष्षियै ॥
पारथ्थ कथ्थ भारथ विषम। लष्ष एक सर लष्षियै ॥छं०॥१३३॥

शस्त्र युद्ध का वाक् दर्शन वर्णन।

चोटक ॥ जु मिले चहुआन सु चाइ अनी। करि देव दुवारन दुंद घनी ॥

रननंकहि बीर नफेरि सुरं। मनो बीर जगावत बीर उरं॥
छं० ॥ १३४ ॥

दुअ स्वामि दुहाइय मुष्ष पढ़ै। झलकावति षग्गति हथ्थ कढ़ै॥
तिन मध्यति जोगिनी कूक करैं। सुनि सद्द तिलंसिय प्रान डरै॥
छं० ॥ १३५ ॥

नचि कंध कमंधन नंचि शिवा। शिव कै उर लग्गि रही न जिवा॥
दिषि नंदिय चंदति मंद हसी। सिव स्वेद सिवा सुर भंग लसी॥
छं० ॥ १३६ ॥

गज प्रग्ग सु मग्गन यों रमके। सु बजें जनु झंझन के झमके॥
पय बंधि जला जल दिव्य नचै। .... ॥ छं० ॥ १३७॥
परिरंभ अरंभति रंभ बरै। जिनके भर सीस दुझार झरै॥
गज दंतन कढ्ढि सु सस्त्र करै। तिन उप्पर देवन पुष्फ परै॥
छं० ॥ १३८ ॥

उड़ि हंस सु पंजर भग्गि करी। पजरं तिन हंसन फेरि परी॥
अथयौ रथ हंस सु हंस लियं। भर पचनि पंच सु सथ्थ लियं॥
छं० ॥ १३९ ॥

परि डेढ़ हजार तुरंग करी। नरयं भर और गनी न परी॥
छं० ॥ १४० ॥

दूहा॥ उभय सु षट भारथ परिग। हय गय नर भर बीय॥
भरन अवस्था लोक के। जुग ए जीवन जीय॥ छं० ॥ १४१ ॥

कन्ह के खड्गयुद्ध की प्रशंसा।

फिरिय कन्ह जनु कन्ह गिरि। भिरन भूप भर पंग॥
जनु दव लग्गो चिन वनह। भरहर पंगिय जंग॥ छं० ॥ १४२॥

घोर घमसान युद्ध का वर्णन।

भुजंगी॥ लरै स्त्रर सामंत पंगं समानं। मनों डक्क बज्जै सु भूतं उभानं॥
सुअं एक एकं प्रमानंत वाहै। मनों चचरी डिंभरू डंड साहै॥
छं० ॥ १४३ ॥

तुटै अंग अंगं तरफ्फंत न्यारे। तिनं देषि कब्बी उपम्मा बिचारे॥

जलं मानसं तुच्छ जल में विचारी । मनों पेल होहेलुआ देत तारी॥
छं० ॥ १४४ ॥

तुट्टै कधं बंधं उठैं छिंछ रत्ती । कही चंद कब्बी उपम्मा सु रत्ती ॥
तरं बेलिबट्टी सु चट्टौंन अग्गी । फिरी जानि पच्छी सु पाताल मग्गी॥
छं० ॥ १४५ ॥

पियै चौसठी रुद्र गज्जं प्रहारं । घुटै घुंट लोही करै म्रत्यु न्यारं ॥
मनों मोर वंध्यौति मोरंत अष्पै । फरस्सी कपूरं मनौं मुष्प नंषै ॥
छं० ॥ १४६ ॥

तुटै बीरमं बीर बंसी निनारै । दलं मध्य सोहै मनों मुक्ति भारै ॥
प्रजा पत्ति दच्छं जचै ईस अग्गै । भजै पुब्ब बैरं फिरै सीस मग्गै ॥
छं० ॥ १४७ ॥

उड़ै षग्ग मग्गं तुट्टै सीस सज्जै । जंपै झंपि केकी मनों मीन बज्जै ॥
तुटी दंत दंतीन के दंत लग्गी । मनों चंच हंसी म्रनालंति षग्गी ॥
छं० ॥ १४८ ॥

फुलै भान दिष्पै अरुन्नं समेतं । मनों तारका राह गुर काल हेतं ॥
छं० ॥ १४९ ॥

कुंडलिया ॥ सार प्रहारति सार झर । वरन विहसि दछिराज ॥
सो दिष्यौ भारथ्थ में । कथ्थ कहिग सिरताज ॥
कथ्थ कहिग सिरताज । सार सम्हौ सहि बीरं ॥
धार षग्ग उभ्भरी । मुष्प उभ्भरि नह नीरं ॥
मवति मत्ति उज्जली । बीर बीरह लगि वारं ॥
गजदंती विच्छुरै । सूर टुट्टै धर सारं ॥ छं० ॥ १५० ॥

दिल्ली की सेना के साथ चित्तौर की कुमक का आ मिलना।

कवित्त ॥ सुव्रत पंग आभंग । रंग रवनी रवनंगन ॥
मो व्रत अंगम काल । अंग अंगमै देव धन ॥
सार धार देवत्त । देव दुज्जन दावानल ॥
पंग सहायक सूर । वीर मारुत मारुत कल ॥

चहुआन वैर चिचंग दोउ। दुअ सज्जन बंधी अनी ॥
पूजै न कोइ भारथ्थ में। नव निसान जुद्धं पनी ॥ छं० ॥ १५१ ॥

राजा जैचन्द का जोश में आकर युद्ध करना और उस की फौज का उत्साह।

भुजंगी ॥ झुक्यौ पंगराजं प्रकारं प्रकारं। मनो सूर रूप रासि उग्यौति सारं॥
महा तेज मुष रत्त द्रग बीर लज्जै। भयं छंडि भूपाल अलि थान हल्लै॥
छं० ॥ १५२ ॥

मनों ज़ोगमाया जुगं जुद्ध तारं। झुक्यौ पंग पंगं सु लभ्भै न पारं ॥
न जानं न ज्ञानं नं जानंत सेनं। तिहूं लोक पंगंति सेनं समेनं ॥
छं० ॥ १५३ ॥

तितंची तितंची तितंची प्रकारं। मनों उज्जलं सूर ज्यों पंग धारं॥
दिषै भूमि नाहीं अनी सेन देषै। घनं बद्दलं मद्धि घन्नं विसेषै॥
छं० ॥ १५४ ॥

तजै तारुनी तार अहकार तारं। इसे सार सों सार बज्जै करारं॥
ततथ्थे ततथ्थे तथुंगं चिनेतं। रहै कोन अभिमंन रावत्त हेतं॥
छं० ॥ १५५ ॥

महाबीर बंके भयं ढिग्ग दूरं। तिने उपम्मा चंद ससि सैस सूरं॥
प्रलै ते प्रलैकाल पंकीति मेघे। मनो द्वादसं भान छुट्टै प्रमेघे॥
छं० ॥ १५६ ॥

दुहै तोन बंधे सुरं तीन जोधं। तिनं बालुकी बुद्धि ब्रह्मा विबोधं॥
छं० ॥ १५७ ॥

साटक ॥ सासोधं पहुपंग पंगुरु गुरं, नंमं नरं नर सुरं ॥
सब्बं भै विधि भागं मान तजयं, अष्टा दिसा पालयं ॥
भूपालि भूपाल पालन अरिं, संसारनं सारियं ॥
सोयं सा तिहुकाल अंगमि गुरं, नं काल कालं गुरं ॥ छं० ॥ १५८॥

जैचन्द का प्रताप वर्णन।

कवित्त ॥ हयं गय नर थर अरुरि। सरुरि सज्जिय सनाह बर ॥
ज्यों द्रप्पन भूडोल। सिंभ विभ्भूत धरा धर ॥

मुकर मध्य प्रतिबिंब। अग्नि मद्धे सु सांत सधि॥

....

पहुपंग सेन सजि सुक्रित बर। बजि निसान उन मान रिन॥
अंगमै कोन पहुपंग कौ। धीर छंडि बीरह तपन॥ छं०॥ १५९॥

कैमास का राजा पृथ्वीराज के पास समाचार भेजना।

कुंडलिया॥ सुनि अवाज संभरि सुबर। ग्रह न रहै गुरराज॥
ज्यौं दैवत्त सु अंगमै। सो पहुपंग विराज॥
सो पहुपंग विराज। बीर बुल्लै प्रतिभासं॥
मंची बर संभऱ्यौ। राज पुछयौ कैमासं॥
गह वारुअ गुर घरिय। प्रीत प्रत्तह प्रति प्रतिपनि॥
हय मुलतान सु जान। राज ऐसी अवाज सुनि॥ छं०॥ १६०॥

कन्नौज की सेना का जमुना किनारे मोरचा बांधना और इधर से सामंतों का सन्नद्ध होना।

कवित्त॥ जमुन विहड़ गहि विकट। निकट रोकै पहुपंगं॥
सार धार चहुआन। पान बंधें प्रति जंगं॥
सुनत सिद्धि विधि समति। लोह कढ्यौ प्रति हैवै॥
मवन मत्त चहुआन। राज बंध्या ढिल्लीवै॥
रहि सब्ब सूर सामंत बर। गहिग ठौर बंकट करस॥
नृप राज कमंधन सुनि भए। अंमर कै अंमर अरस॥छं०॥१६१॥

निढ्ढुर और कन्ह का भाईचारा कथन।

दूहा॥ भैया निढ्ढुरराइ बल। तिन बल कन्ह नरिंद॥
तिन समान जौ देषियै। तोंवर लिषियै कंद॥ छं०॥ १६२॥

भान के पुत्र का कहना कि राजा भाग गया तो हम क्या प्राण दें? इस पर अन्य सामंतों का कहना कि हम वरि धर्म के लियें लड़ेंगे।

दूहा॥ हम बंधे बर तेक बर। तूं मुक्के धर राज॥

जिय अंगमै सु अप्पनौ। भान पुत्त किं काज ॥ छं० ॥ १६३ ॥
कवित्त ॥ कहै सूर सामंत। सुनहि वर पुहमि ईस बर ॥
अप अंगमै सु जीव। पुत्त बंधहति भान बर ॥
जोग जोइ अंगमै। नेह नारीं नहं रष्षै ॥
बीर राग आनंद। राज तिन हत्त विसष्षै ॥
लिष्षवै सोइ जीवत्त वर। सुहत्त बत्त लिष्षै न बर ॥
तिन काज सूर सामंत बर। राज बरजि बरजियति गुर ॥
छं० ॥ १६४ ॥

यह समाचार पाकर जैचन्द का अपने में सलाह करना।

दूहा ॥ गुरु भ्रत गुरु जानौ न विधि। रिधि रष्षन कमधज्ज ॥
तिहित बीर पहुपंग सुनि। मतौ मत्ति कमधज्ज ॥ छं० ॥ १६५ ॥

सामंतों का एका करके सलाह करना कि किला न छोड़ा जावे।

कवित्त ॥ व्यंजं वरन कवित्त। जंपि कन्हा चहुआनं ॥
वर रट्ठौर नरिंद। राव निड्डुर उनमानं ॥
गरुअ गब्ब गहिलोत। मतै कैमासह सूरं ॥
मतै डिढ्ढ कैमास। चंद डिढ़ कलहति सूरं ॥
तिन मझ्झ रिनह नर सिंह बलि। रेनराम रावत्त गुर ॥
सामंत सूर सामंत गति। कौन बीर बंधैति धुर ॥ छं० ॥ १६६ ॥

सामंतों की पुरैन पत्र से उपमा वर्णन।

दूहा ॥ तज सुमत इन मत्त क्रिय। भयंन तजिय भय राज ॥
पंगानी डर सुजल मधि। भए सतपच विराज ॥ छं० ॥ १६७ ॥
सुबर बीर सतपच छर। पंग नीर प्रति बट्ठ ॥
सुबर बीर प्रथिराज कौ। अंग अहत न चट्ठ ॥ छं० ॥ १६८ ॥
गाथा ॥ जंमुक्का पहुपंगं। तेछचौय सूर बीराई ॥
माहं चवथि प्रमानं। साछिप्पीय लोययं सब्बं ॥ छं० ॥ १६९ ॥

कन्नौज की फौज का किले पर धावा करना।

जंबंघा चव्या चहुआनं। षग्गं सेनाय पंगयं दलयं॥
बालं ससी प्रमानं। सा बंदेस दीन उभयाइं॥ छं०॥ १७०॥

कवित्त॥ स्वामि ध्रम्म रत्ते। सुमंत लग्गै असमानं॥
अजुत जुद्ध आरुद्ध। बीर मत्ते रस पानं॥
हथ्थ थकत श्रम करहि। मनति श्रम सों उद्धारहिं॥
.... । ....॥
धरि धार भार हरि हरुअ घट। कन्यौ घट्ट गरुअत्त जुर॥
इन परत सूर सामंत रिन। लन्यौ न को फिरि बहुरि भर॥छं०॥१७१॥

दूहा॥ बंदिय बल जिन निय न्रपति। न्रपन-रुन्नाद उलंघि॥
कपि साधन रघुवंस दल। ज्यौं दैवत्त प्रसंग॥ छं०॥ १७२॥

दिल्ली घेरे जाने की बात सुन कर पृथ्वीराज का दिल्ली आना।

बाधा॥ संभरि बत्त जु पंग अवन्नं। बीर बिरा रस बढ्ढिय कंनं॥
है गै मै गै सत्त प्रमानं। उग्गिय जान कि बारह भानं॥छं॥१७३॥
लंबिय बाह कपाइत नैनं। गुंज्या सिंह लग्या सिर गैनं॥
है दल पैदल गै दल गट्टं। सूर सनाह सनाह सबट्टं॥ छं० ॥१७४॥
यों रचै पहुपंगति सारं। कच्छे जोग जु गिंद्र विधारं॥
मत्त निरत्त अमत्त निसानं। गज्जे ज्यौं आषाढ़ प्रमानं॥छं०॥१७५॥
को अभिनंतु रहै रन षग्गं। सो दिष्यं चियलोक न मग्गं॥
धारै कंध वराहति रूपं। रहै अग्ग नन डट्ठति भूपं॥छं०॥१७६॥
सयल गयल चिहुं दिसान धावहि। कहै राज ढिल्ली गढ़ ढावहि॥
रत्ते मेन कपाइत अंगं। जांनि विरंचिय बीरति जंगं॥
छं०॥ १७७॥
नंचै भैरव रुद्र प्रकारं। जानि नटी नट रंभ प्रकारं॥
अग्गें होइ गिवान मुनारं। बंध्या ज्यौं नर कोटंति सारं॥
छं०॥ १७८॥
ढाहै गाहै साहै राजं। मानों सासुद्र बांधे पाजं॥
उट्ठी संछ धरा लगि गैनं। बंक ससी सरि राजत मैनं॥ छं०॥ १७९॥

भषै दान प्रोहित्तं राजं। अप्पै मेर सुमेरति साजं॥
यों कीनी धर पंगति सावं। जै जै वाय सु वायति नावं॥
छं०॥ १८०॥

धावै दल मलिनं पहुपंगं। बूड़त नाव नीर गुन रंगं॥
यों धाए पहुपंग सयंनं। मंस काज दीपी उनमंनं॥
छं०॥ १८१॥

वार धुरा धरयौ भर हल्ली। वाय विषंम पात बहु थल्ली॥
एहि प्रकार चल्यौ चित राजं। कहि ढिल्ली ढिल्ली उन काजं॥
छं०॥ १८२॥

पृथ्वीराज के आने से कन्नौज की सेना का घबड़ाना।

दूहा॥ जा ढिल्ली ढिल्ली धनी। दल हल्लिय पहुपंग॥
मानो उत्तर वाय ते। चावद्दिसा विभंग॥ छं०॥ १८३॥

बाहरी तरफ से पृथ्वीराज का आक्रमण करना।

कवित्त॥ संमुह सेन प्रचंड। पंग सज्जी चतुरंगनि॥
ज्यौं उग्गै दृष सूर। बैर करि तपै कमोदनि॥
सुबर सोभ कविचंद। हितू चक्रवाक प्रकारं॥
बरै विरह बिरहनी। हेत उड़गन ससि सारं॥
सा बैर नैर नारिय निकट। विकट कंत बिछुरहि बधुत्र॥
बहुपंग राव राजन बली। सजी सेन सेनह सु भुत्र॥ छं०॥ १८४॥

दो दल के बीच दब कर कन्नौज की फौज का छिन्नभिन्न होना।

कुंडलिया॥ बंधि कविज्जै बीय बर। दिसि दच्छिन अरु पुब्ब॥
सुबर बीर सम्हो भिरिग। करि भारथ्थ अपुब्ब॥
करि भारथ्थ अपुब्ब। कौन अंगम पल षोलै॥
मार मार उच्चारि। असिर अवसानति डोलै॥
सो भग्गा घट सेन। माग आकारति संध्यौ॥
चीय लच्छि तजि मोह। मरन केवल मग बंध्यौ॥ छं०॥ १८५॥

दूहा ॥ संभरि जुद्ध अरुद्ध गति । वर विरुद्ध रति राज ॥
चाहुआन चंपौ अनी । सब संती सिरताज ॥ छं० ॥ १८६ ॥

युद्ध वर्णन ।

कवित्त ॥ सुबर बीर आरुहिय । बीर हक्कै चावद्दिसि ॥
मत्त सार बरषंत । बीर नचइंत मंत कसि ॥
बंकौ असि के सुद्ध । केय लंबी उभ्भारैं ॥
घात षंभ निरघात । जानि झल्लरि झल्लारैं ॥
बुड्डंत रस न संनाह पर । अबुठि बुट्ठि पच्छें परैं ॥
मानौं कि सोम पारथ्थ यों । बर षंनं नंन विथ्थुरैं ॥छं०॥१८७॥

इस युद्ध में मारे गए सामंतों के नाम ।

परिग सुभर नारेन । रूप नर रष्पि बंधि बिय ॥
परिग सूर पामार । नाम पूरन्न पूर किय ॥
बग्घसिंघ बिय पुत्त । परे हरसिंघ सु मोरिय ॥
पऱ्यौ सूर सूरिमा । सेन पंगह ढंढोरिय ॥
बग्गरी बीर बारुड़ हरिय । मुकति मग्ग षोली दरिय ॥
दह परिग भिरिग भंजिग अरिय । ब्रह्मलोक घर फिरि करिय ॥
छं० ॥ १८८ ॥

पऱ्यौ भीम भट्टी भुआल । बंधव नाराइन ॥
पऱ्यौ राव जैतसी । भयौ अजमेर पराइन ॥
परि जंघारौ जोध । कन्ह छोकर अधिकारिय ॥
सरग मग्ग जित्तयौ । ब्रह्म पायौ ब्रह्मचारिय ॥
भौ भंग बंक संके दुते । जुद्धं घांत घ्यातं सु रन ॥
आवरत सूर पहुपंग दल । सुबर बीर संभर अरन ॥ १८९ ॥

जैचन्द के चौसठ बीर मुखियाओं की मृत्यु ।

दूहा ॥ घाव परिग सामंत सह । सुबर सूर सिसु सास ॥
इन जीवत चहुआन निज । फिरि मंडी घर आस ॥ छं० ॥ १९० ॥
चौ अग्गानी सट्ठि परि । डोला पंग नरिंद ॥
हलकि जमुन जल उत्तरिग । कहिग कथ्थ कविचंद ॥ छं० ॥ १९१ ॥

केहरि बर कंठेरिया। डोला मध्य नरिंद ॥
दंद गमाए जमुन कह। कहि फिरि मंडे दंद ॥ छं० ॥ १९२ ॥

जैचन्द का घेरा छोड़ कर चले जाना।

आतुर पंग नरिंद घरि। जमुन विहड़ तजि बंक ॥
धर पद्धर ग्रह विकट तजि। जुग्गिनि पुर ग्रह संक ॥ छं० ॥ १९३ ॥

स्वामिभक्त वीरों की वीर मृत्यु की प्रशंसा।

भुजंगी ॥ क्रमं क्रम्म कढ्ढे क्रमं तंति सस्त्रं। रनं निर्वसीयं निवासीय तत्रं॥
छिती छत्र भेदं अभेदंति सारं। तिनं जोग मग्गीय लब्भै न पारं ॥
छं० ॥ १९४ ॥

कवित्त ॥ जोग मग्ग उथ्थापि। थप्पि मुगती धर धारं ॥
सहस बरस तप करै। मुगति लब्भै न सु पारं ।
छिनक षग्ग मग अंग। जंग सोई क्षत छंडै ॥
धार धार विस्तरै। मुक्ति धामह धर मंडै ॥
धर परै बहुरि संगी न [1]को। तिन तिनुका सब नेह मनि ॥
रजक्रम्म भासयं देह सब। सुनहु स्त्रर कबिचंद भनि ॥ छं० ॥ १९५ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्राथिराज रासके सामंत पंगजुद्ध नाम पचपनवों प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ५५ ॥

(१) "संगी को" पाठ है।
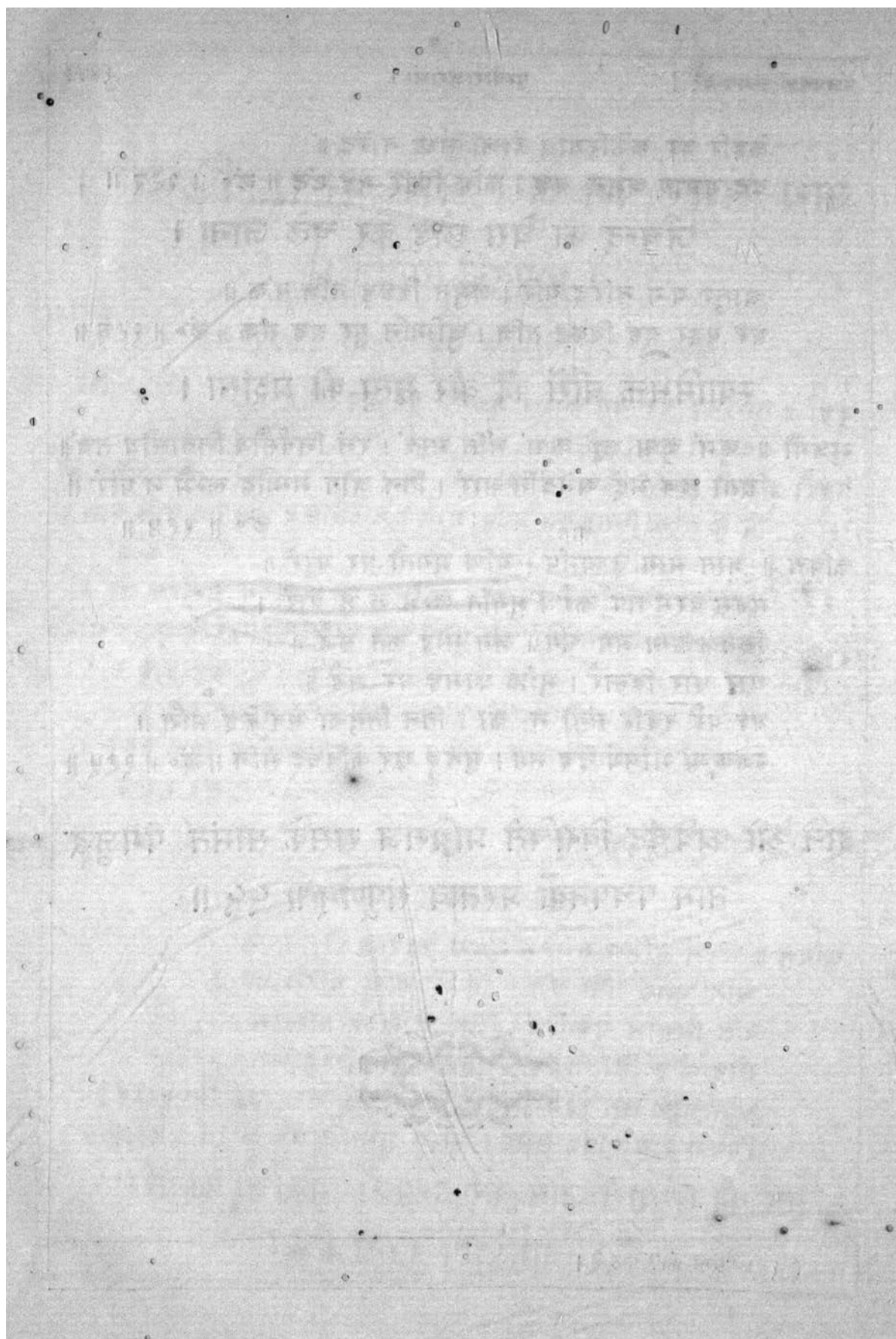
अथ समर पंग जुद्ध नाम प्रस्ताव लिष्यते।

(छप्पनवां समय।)

जैचन्द का चित्तौर पर चढ़ाई करनां।

दूहा ॥ तरउप्पर धर पंग करि। जुग्गनि पुर सहदेस ॥
चित्रंगी उप्पर तमकि। चढ़ि पंगुरौ नरेस ॥ छं० ॥ १ ॥

पद्धरी ॥ चित चिंति चित्तं चित्रंग देस। चढ़ि चल्यौ स गुरि पंगुर नरेस ॥
दिसि संकि दिसा दस कंपि थान। कलमलिय सेस गय संकि पान ॥
छं० ॥ २ ॥

धुम्मलिय विदिसि दिसि परि अँधेर। उरभै कुरंग प्रज्जरह नैर ॥
मिटि भान थान तजि रहिय तक्कि। अरि घरनि अटनि रहि लटकि थक्कि॥
छं० ॥ ३ ॥

बज्जै निसान सुर मान सद्द। सुत ब्रह्म रीझ कहुंति हद्द ॥
बिप्फुरहि कित्ति कमधज्ज सूर। नन रहत मान सुनतह करूर ॥
छं० ॥ ४ ॥

जैचन्द की चढ़ाई का समाचार पाकर समरसी जी का सन्नद्ध होना।

कवित्त ॥ श्रवंन सुनिग समरेस। पंग आवाज बीर सुर ॥
अति अनंद मति चंद। द्वंद भंजन सु अरिन धर ॥
बजि निसान घुम्मरिय। चित्त अंकुरिय बीर रस ॥
मोह कोह छिति छांह। मुक्कि मंड्यौ जुअंग जस ॥
श्रुत सील तत्त द्रिग चित अचल। चलं हथ्थ उर विप्फुरहिं ॥
चित्रंग राव रा धर समर। भिरन सुमत मत्तह करहि ॥ छं० ॥ ५ ॥

युद्ध की तय्यारी जान कर दरवारी योद्धाओं का परस्पर वार्तालाप करनां।

अरिल्ल ॥ सकल लोग मत जे बर जानिय। समर समय समरह परिमानिय ॥
अप्प बचन मुष तूल [1]प्रकासिय। सकल लोय गुरु जन परिभासिय ॥
छं० ॥ ६ ॥

सकल लोक मन सोच विचारिय। तत्त बचन मत्तह उच्चारिय ॥
एक कहत भारथ्थ अपुब्बं। एक कहत जीवन सुष सब्बं ॥
छं० ॥ ७ ॥

दूहा ॥ एक कहत सुष मुगति है। एक कहै सुष लाज ॥
एक कहै सुष जियन रस। जस गुर तस मति साज ॥ छं० ॥ ८ ॥

साटक ॥ यस्या जीवन जन्म मुक्ति तरसं। तस्यां.ननं वै [2]सुषं ॥
नैवं नैव कलानि मुक्ति तरसं। सुष्यंति नरके नरं ॥
धन्यो तस्यय जीव जन्म धनयं। माता पिता सत्गुरं ॥
सो संसार अहत्त कारन मिदं। सुम्राय सुम्रंतरं ॥ छं० ॥ ९ ॥

अरिल्ल ॥ अंतर त्यागिय अंतर बोधिय। बाहिर संगिय लोग प्रमोधिय ॥
एकय एक अनेक प्रकारं। समर राव भारथ्थ उचारं ॥ छं० ॥ १० ॥

रावल जी का वीर और ज्ञानमय व्याख्यान।

दूहा ॥ समर राव भारथ्थ मति। ग्यान गुझ्झ उच्चार ॥
जहति प्रान पवनह रमे। मुगति लभ्भ संसार ॥ छं० ॥ ११ ॥

योग ज्ञान वर्णन।

त्रिभंगी ॥ तन पंच प्रकारं, कहि समरारं, तत उच्चारं, तिह्वारं ॥
मुति ग्यान प्रसंसं, नसयति संसं, वसयति हंसं, जिह्वारं ॥
मन पंच दुआरं, भमय निनारं, रुक्कि सवारं, अनहद्दं ॥
सुरकन्न सबद्दं, चिंतय जद्दं, नासिक तद्दं, तन भद्दं ॥ छं० ॥ १२ ॥
गुरु गम्य सु थानं, चिंतियध्यानं, ब्रह्म गियानं, रमि सोयं ॥
मन सून्य रमंतं, झिलिमिलि संतं, नन भुलि जंतं, सो जोयं ॥
तजि कामय क्रोधं, गुर वच सोधं, संचित वीधं, सब्बानं ॥

(१) ए.-प्रकारिय। (२) ए.-सुषं।

अंगुष्ट प्रमानं, भौंह विचानं, निगम न जानं, तिज्जानं ॥ छं० ॥ १३ ॥
गुर मुष्यय बत्तं, चिंतिय गत्तं, सिद्ध रमंतं, मुनि मोती ॥
षह महयं थानं, पिंड समानं, मंडि सु ध्यानं, दिठ जोती ॥
जब लष्यिय रूपं, भंजि भ्रम कूपं, दीपक नूपं, सो भूपं ॥
तब नंसिय संसं, मुक्ति रमंसं, जोगय जं सं, सो रूपं ॥ छं० ॥ १४ ॥

मनुष्य के मन की वृत्ति वर्णन।

दूहा ॥ कलिय काल कालन कलिय। बल भ्रम्मह बल चित्त ॥
समरसिंह रावर समर। ग्यान बुद्धि गुरु हित्त ॥ छं० ॥ १५ ॥
घरी एक घट सुष्य मैं। घरी एक दुष थान ॥
घरी एक जोगह सलै। घरि इक मोह समान ॥ छं० ॥ १६ ॥
छिन छिन में मन अप्पनौ। मति बिय बीय रमंत ॥
चित्रंगी रावर समर। तिन बेरा चितवंत ॥ छं० ॥ १७ ॥

रावल जी का निज मंत्री प्रति शारीरिक ज्ञान कथन और अमर समाधि का क्रम वर्णन।

पंच तत्व तन मांहि बसहि। कोठा सत्तरि दोइ ॥
तत्त असिय रावर समर। मंचनि जंपत होइ ॥ छं० ॥ १८ ॥
उभय सेन संमुह सजे। चित्रंगी पंगान ॥
समर समय रावर समर। मंचिन जंपत ग्यान ॥ छं० ॥ १९ ॥

रावल जी की समुद्र से उपमा वर्णन।

सर समुद चित्रंगपत्ति। बुद्धि तरंग अपार ॥
तर्क मीन भेदन भंमर। ब्रह्म सु मध्य भँडार ॥ छं० ॥ २० ॥
षग षारी लज्जा सु जल। विद्या रतन बषान ॥
आनि जीव परमातमा। आतम [1]पालन ग्यान ॥ छं० ॥ २१ ॥

जीवन समय की दिवस और रात्रि से उपमा वर्णन।

(१) कृ. को.-पालत।

पद्धरी ॥ जोगंग जुगति जे अंग जानि। कहि चंद चंद सम [1]भनत भान ॥
सब देह जीव धर लषि विनान। धर टंकि बस्त राषन परान ॥
छं० ॥ २२ ॥
मध्यान प्रात लषि संझ मान। भ्रमि जाइ काल रष्षै छिपान ॥
पूरन्न ग्यान जब प्रगट आइ। ब्रह्मंड देह कर धर बताइ ॥
छं० ॥ २३ ॥
आवंत काल सहजह लिषाइ। तब पूर्न तत्व केवल लगाइ ॥
चिंतंत स्याम तन पट्ट पीत। टरि जाइ काल भय अमर मीत ॥
छं० ॥ २४ ॥
तिह काल काल टारन उपाय। हरि रूप रिदय इन ध्यान ध्याय ॥
जब ग्रसन समय संभया प्रकार। चिंतियै सेत धुंमर अपार ॥
छं० ॥ २५ ॥
उपदेस गुरह लषि प्रात गात। जिन धरत ध्यान भुल्लहि सनात ॥
चिंतियै जोति सुभ कर्म सिद्ध। झर दीप कूल ठहराइ मद्धि ॥
छं० ॥ २६ ॥
अष्टमी बीय पंचमी थान। के टहितिकाल मुनि जोर वान ॥
पूरन्न पान ताटंक माल। तन धरै धवल दिष्षिय विसाल ॥ छं० ॥ २७ ॥
तन लषै सुद्धि नह बिय प्रकार। जनु भयौ ब्रह्म इच्छा भँडार ॥
रेचक्क कुंभ ताटंक पूर। जो गंग जुगति इह जतन मूर ॥
छं० ॥ २८ ॥
*षग मंग कहै चिचंग राव। मन सुद्ध समर पूरन्न भाव ॥
छं० ॥ २९ ॥

दूहा ॥ अंग समुद दोऊ समर। षग हिल्लोर छिति पान ॥
फिरि पुच्छत आहुट्ठ पति। तत्त मत्त निरवान ॥ छं० ॥ ३० ॥

कनकराय रघुवंसी का मानसिक वृत्ति के विषय में प्रश्न करना।

(१) कृ. को.-मनत।

* यहां के कुछ (दो या तीन) छन्द नष्ट हो गए जान पड़ते हैं।

कवित्त ॥ फुनि पुच्छै फिरि ग्यान । कनक केवल रघुबंसी ॥
मोहि एक आचिज्ज । तुम सु उत्तर भ्रम नंसी ॥
घरी मध्य आनदं । धरी वैराग प्रमानं ॥
घरिय मध्य मति दान । घरिय सिनगार समानं ॥
वैराग जोग स्रृंगार कब । दइय दरिद्रय विग्रहत ॥
चित्रंग राव रावर चवै । अंतकाल मति उग्रहत ॥ छं० ॥ ३१ ॥

गाथा ॥ केवल मत्ति सउत्तं । चित्तं चित्रंग मत्ति उनमानं ॥
कहि जोगिंद सुराइं । प्रानं वसि गच्छ कंठामं ॥ छं० ॥ ३२ ॥

रावल समरसी जी का, हृदय कुंडली और उस पर मन के परिभ्रमण करने का वर्णन करना ।

चोटक ॥ सु कहै रघुवंसिय रावरयं । सुनि बत्त सु भ्रंम न लावनयं ॥
पुब दछ्छिन उत्तर पच्छिमयं । अगनै वरु वाय विसष्पनयं ॥
छं० ॥ ३३ ॥

नयरत्ति इसानय कन्न धरं । इह अष्ट दिसा दिषि तत्त परं ॥
सु तड़ाग तनं सुष दुष्ष भरं । तहँ पंकज एक रहै उघरं ॥
छं० ॥ ३४ ॥

दिसि पूरब पंत कमल्ल सुरं । तिन रत्तरि पंषुरि व्रन्न धरं ॥
तिहि थंभ वसै मन आइ नरं । सु कह्यौ तु अचित्त सु चित्त धरं ॥
छं० ॥ ३५ ॥

गुरु बुद्धि कल्यान रु दान मती । बरं भोगव बुद्धि सुक्रम्म गती ॥
अगिनेव दिसा दिसि पंषुरियं । तहां नील बरन्नह उघ्घरियं ॥
छं० ॥ ३६ ॥

तहां यद्यपि आइ वसै मनयं । तिय दोष बढ़ै मरनं तनयं ॥
दिसि उत्तर पंषुरियं (१)ररं । तहां पीतह रंग सु व्रन्न धरं ॥
छं० ॥ ३७ ॥

उघरै प्रति कुम्मय क्रम्म गती । तजि भोगय जोग गहै सु मती ॥

(१) कृ. को.-सुररं ।

नयरत्ति निरत्तय धुंमरियं । नभ भ्रम्मि रहै तन घुम्मरियं ॥
छं० ॥ ३८ ॥

पच्छिम दिसि नील बरन्न कारं । तहाँ प्रात पुरष्ष सजै समरं ॥
दिस बायवयं बनि क्रष्ण रंगं । दुरबुद्धि ग्रहै तस अंस अगं ॥
छं० ॥ ३९ ॥

दिसि दष्षिन उज्जल रत्न धरं । सजि सातुक मत्ति ततं अमरं ॥
ईसायन यं रग सुक्कसयं । उपजै सु उचाट मनं नभयं ॥
छं० ॥ ४० ॥

ब्रह्म मंडय पंढ कहै गुरयं । घर मद्धि अनेक मनं सुरयं ॥
मन हथ्थ करै प्रथमं मनुषं । हुअ निर्भरयं तन बद्धि सुषं ॥
छं० ॥ ४१ ॥

जिम दीपक बात बसं हलयं । इम क्रम्मय चिंत नरं चलयं ॥
मन हथ्थ भयें सब हथ्थ भयौ । प्रगटै तन जोति रु अंध गयौ ॥
छं० ॥ ४२ ॥

रावल जी का मन को वश करने का उपदेश करना।

कवित्त ॥ मुगति कठिन मारग्ग । क्रम्म छुट्टै न पंच बर ॥
मन लिप्पै मन छिपै मन । सु अवतरै घरघर ॥
मन बंधै क्रम राज । मन सु क्रम जमय छुडावै ॥
मन साषी सुष दुष्प । मनइ जावै मन आवै ॥
मन होइ ग्यान अग्यान तजि । गुर उपदेसह संचरै ॥
मन प्रथम अप्प बसि किज्जियै । समर सिंघ इम उच्चरै ॥ छं० ॥ ४३ ॥

दूहा ॥ समर सिंह भारथ्थ में । जोग इहै गुन जान ॥
सो निकस्यौ भर समर तें । को जिन करी गुमान ॥ छं० ॥ ४४ ॥

ढुंढाराय का कहना कि राजा का धर्म राज्य की रक्षा करना है।

कवित्त ॥ तब ढुंढारह राइ । मत्त मन बत्त सु कथ्थिय ॥
समर सिंघ रावरह । समर साहस गति पथ्थिय ॥
तुम बीरन गंजागि । भूप साहस रस पाइय ॥
भारथ्था रजपूत । स्वामि आचारा धाइय ॥

आचार धार भरथ्थ मति। तत्त बत्त जानौ जुगति ॥
अग्गै सु पंग अनभंग सजि। राज रष्षि कीजै सुमति ॥छं०॥४५॥

मंत्री का कहना कि सबल से वैर करना बुरा है।

दूहा ॥ कहै मंचि भर समर सुनि। सरभर करि संग्राम ॥
सबला सूं मंडत कलह। धर भर छिज्जै ताम ॥ छं० ॥ ४६ ॥

रावल जी का उत्तर देना।

कहि मंची रावर समर। सुनि मंची बर बेंन ॥
तमकि तेग तन तोंक बँधि। करि रत्ते बर नेंन ॥ छं० ॥ ४७ ॥

चौपाई ॥ ससिर रित्त रित गाजह संधि। गम आगम सित उष्ण प्रबंधि ॥
तपति सूर रत्ते रन रंगं। दुरिग सीत भगि कायर अंगं ॥
छं० ॥ ४८ ॥

रावल जी का सुमंत प्रमार से मत पूछना।

दूहा ॥ बंधि परिग्गह गुर जनह। मंची सजन सु इष्ट ॥
भृत्त सु लोइ पुच्छै न्रपति। सुमति सुरुच अदिष्ट ॥ छं० ॥ ४९ ॥

सुमंत का उत्तर देना कि तेज बड़ा है न कि आकार प्रकार।

कवित्त ॥ सुनि सुमंत पंमार। इक्क गरुडह रु नगन गन ॥
अगस्ति एक सायर सु। इंद्र इक्कै रु कूट घन ॥
निसचर घन काली सु। पंच पंड्व रु लष्य अरि ॥
तारक चंद अनेक। राहु चंपै सु बसन जुरि ॥
मद करी जुथ्थ पंचाइनह। मत्त एक धक्कह वहै ॥
चिचंग राव रावर कहै। अतत मंत मंची कहै ॥ छं० ॥ ५० ॥

सिंह जू का रात्रि को छापा मारने की सलाह देना।

कवित्त ॥ स्वामि बचन सुनि सिंह। जूह रतिबाह विचारिय ॥
सबलां सों संग्राम। भार भारथ्थ उतारिय ॥
जं जानै सब कोइ। जीभ जंपै जस लोइय ॥

अरि भंजै तन भजै। टरै दीहंतन दोइय ॥
आघाय घाय घट निघ्घटै। हय गय हय मंचै रव न ॥
भंजै न भ्रम्म जम्मन मरन। तत्त मंत सुद्धै रवन ॥ छं० ॥ ५१ ॥

रावल समरसिंह जी का कहना कि दिन को युद्ध कर स्वच्छ कीर्ति संपादन करनी चाहिए।

समरसिंह रावर नरिंद। रति उथपि दीह थपि ॥
दीह धवल दिसि धवल। धवल उट्ठहि सु मंच जपि ॥
धवल दिव्य सुनि कन्न। धवल कट्टै धवली असि ॥
धवल वृषभ चढ़ि धवल। धवल बंधै सु ब्रह्म बसि ॥
धवलही लीह जस विस्तरै। धवल सेद संमुष लरै ॥
यों करौं धवल जस उब्बरै। धवल धवल बंधै बरै ॥ छं० ॥ ५२ ॥
सुनिय मंच बर मंच। गुझ्झ गामार मंच सुनि ॥
जनम लभ्भ सोइ कित्ति। कित्ति भंजियै तनह फुनि ॥
जु कछु अंत न्निमयौ। कहै सब माया मेरी ॥
मरत न माया कहै। निमष चलहु न मुष हेरी ॥
पहु जग्ग दान अप्पन सुगति। जुगति मोह भंजै भरै ॥
भोगवौ दुष्ष जीवत बहुत। जु कछु कहौ जिन उब्बरै ॥छं०॥५३॥

चढ़ाई के समय चतुरंगिनी सेना की सजावट वर्णन।

चोटक ॥ जु सुनं धनि बैन प्रमान धरं। चढ़ि संमुष पंग नरिंद घरं ॥
सजि सूर सनाह सुरंग अनी। सु कछै जनु जोग जुगिंद रनी ॥
छं० ॥ ५४ ॥
बर बंक तिलक्क चिलक्क रसी। घन मद्धि उग्यौ जनु बाल संसी ॥
सह बीर बिराजि सनाह इयं। जनु राहह बंधि सु भान दियं ॥
छं० ॥ ५५ ॥
सब सेन सु सिंगियनाद कियं। सुर मोहि सिवापति दंद दियं ॥
जुग बद्द निबंधि सनाह कसी। उर नद्द चिषंडिय बद्दर सी ॥
छं० ॥ ५६ ॥

बजि बीर अनेक प्रकार सुरं । हर चूर चमंकति गंग बरं ।
बजि बीरन नद्द सु सद्द रजं । सु उछ्ळति महति भद्द गजं ॥
छं० ॥ ५७ ॥

सहनाइ नफेरि अनेक सुरं । बर बज्जि छतीस निसान घुरं ॥
दुति देव वसिष्ट निसाचरयं । भ्रम तेज सु बंधन निद्दुरयं ॥
छं० ॥ ५८ ॥

चितरंगपती चतुरंग सजी । तिन दिष्षत पंति समुद्द लजी ॥
चतुरंग चमू चमकंत दिसं । पहुपंड निसान दिसा कु रसं ॥
छं० ॥ ५९ ॥

नल बज्जि हयं बहु सद्द रजे । पटतार मनों कठतार बजे ॥
घन घुग्घर पष्षर बज्जि करी । सुर बंधि सुरप्पति चित्त हरी ॥
छं० ॥ ६० ॥

*चान्द्रायन ॥ बिधि बिनान चतुरंग ति, सज्जि रहस्सि हय ।
समर समर दिसि रज्जि, बाल अरु वृद्ध वय ॥
उठ्ठी छत्र नयजानिय, मानिय पंग त्रिय ।
कढ्ढि लोह बढ़ि कोह, समाहिरु बीर वय ॥ छं० ॥ ६१ ॥

युद्ध वर्णन ।

रसावला ॥ कटै लोह सारं, बिहथ्थंति भारं । तुटैं सार भारं, सरोसं प्रहारं ॥
छं० ॥ ६२ ॥

करै मार मारं, सधारं पचारं । जगी क्रूक वारं, उड़ें छिंछ सारं ॥
छं० ॥ ६३ ॥

सु नंदी हकारं, कटं कंध मारं । कमद्धं निनारं, रुधिं छिंछ सारं ॥
छं० ॥ ६४ ॥

* मूल प्रतियों में इसे मुरिल्ल करके लिखा है । किन्तु मुरिल्ल से और इस से कोई सम्बन्ध नहीं है । यह छन्द वास्तव में चौन्द्रायण ही है । अन्त में जो इस छन्द में रगण के स्थान में नगण का प्रयोग है वह लिपि भेद मात्र है । पढ़ते समय हं+य का उच्चारण है और व य का उच्चारण "वै" होगा । इस प्रकार से रगण का उच्चारण होता है । अस्तु इसीसे हमने इस छन्द को चान्द्रायण नाम से सम्बोधन किया है ।

स चुंथै करारं, तुटै गग्ग भारं। अपारंत मारं, वहै दिव्य भारं॥
छं० ॥ ६५॥

रसं बीर सारं, पती देव पारं। सुमंती डकारं, चवट्ठी सु भारं॥
छं० ॥ ६६॥

रुधी धार पारं, उछारैति वारं। उमापत्ति लीनं, जपै जंग भीनं॥
*गहै मुत्ति तथ्थं, उछारैं विहथ्थं। .... ॥ छं० ॥ ६७॥

पंग के दल का व्याकुल होना।

दूहा॥ दल अग्गी अग्गी अनी। हलमलियौ, दल पंग॥
यों उभ्भौ सुभ्भै सुभुत्र। तिहुंपुर मंडन जंग॥ छं० ॥ ६८॥

पंगराज का हाथी छोड़ कर घोड़े पर सवार होना।

कवित्त॥ हक्कि मंगि गजराज। छंडि गज ढाल सु उत्तर॥
रत्तें रेन विसाल। तेग बंधी दल दुत्तर॥
कै हथ्थी जमजाल। काल छुट्टा मय मत्ता॥
कै अप्पानै अप्प। सेन रावत्त विरत्ता॥
उत उतंग बहु पंग दल। समर समह भारथ भिरिग॥
सारथ्थ किष्ण सम बान बढ़ि। रोकि भीम कंदल करिग॥छं०॥६९॥

भुजंगी॥ चढ्यौ पंग जंगं सु मानिक्क बाजी। नियं वर्न सेनं मनं नील साजी॥
फिरै पष्परं भार क्रूदै उतंगा। मनों बायपूतं धरै द्रोन अंगा॥
छं० ॥ ७०॥

जसं पंग अध्धौ जुलै पंग धारी। घनं सार चोरं न गंगा विचारी॥
चमक्कंत नालं विसालंत मोहै। उभै चंद बीयं घटा जानि सोहै॥
छं० ॥ ७१॥

रबी रथ्थ जोरें सु भौंरै भ्रमावै। मनंषी न अंषीन पंषी न पावै॥

---

* ये युद्ध वर्णन के छन्द या तो छन्द ७४ के बाद होने चाहिए थे या इन्हीं छन्दों के ऊपर का कुछ अंश लोप या खंडित होगया है। क्योंकि कवि ने सर्वत्र इसी प्रकार से वर्णन किया है कि पहिले सेना की तैयारी फिर दोनों सेनाओं का जुड़ाव और तिसके पीछे युद्ध का होना-परन्तु यहां का पाठ इस क्रम से विलकुल विरुद्ध पड़ता है।

मनों बाय गंठी गयौ ब्रह्म बंधी। पियै अंजुली नीर उत्तंग संधी॥
छं० ॥ ७२ ॥
डमं सीस डोलं चिभंगीति सोहै। गिरं नंचि केकी कला जानि मोहै॥
छं० ॥ ७३ ॥

रावल जी के वीर योद्धाओं का शत्रु को चारों ओर से दबाना।

कवित्त ॥ समर सिंघ रावर समान। हय नंषि समर हर॥
कन्ह जैत बर बीर। भान नारेन सिंघ हर॥
पल्हदेव न्रप सोम। अमर न्रप ब्यंटि जानि अम॥
प्रति प्रताप तन समर। ताप भंजन सांई भ्रम॥
बंकम्म बीर बलिभद्र बर। भर तरवारनि अधर झर॥
चतुरंग चंपि चावद्दिसा। धार पहार बिभार भर॥ छं० ॥ ७४ ॥

युद्ध की तिथि और स्थल का वर्णन।

दूहा ॥ बार सोम राका दिवस। पूरन पूरन मास।
समुष सूर संमुह लरैं। मुकति सु लूटन रासि॥ ७५ ॥
नद षारी दुरगा सु पुर। प्रथम जुद्ध बर बीर॥
दुतिय जुद्ध परि समर सों। पत्ति सु पट्टन धीर॥ छं० ॥ ७६ ॥

दोनों सेनाओं का परस्पर घमासान युद्ध वर्णन।

चोटक ॥ षग षोलि बिहथ्थ सु बथ्थ परें। दुहु सीस सु रंग सुभार भरें॥
सिरदार सु गाहत पंग अनी॥ सुमनो जल बारधि पंति घनी॥
छं० ॥ ७७ ॥
फुटि षग्ग किरच्च जुझार भरं। मनु झिंगन भद्दव रेनि परं॥
उडि छिंछनि रत्त तरत्त भए। बिरुझाइन धाइन सूर नए॥
छं० ॥ ७८ ॥
घन घाइ घटं घट अंग रजै। जनु देव प्रसून्नथ बंधु पुजै॥
विफरै बहु हथ्थनि पाइ फुरै। बहु सूर उचीरन से उचरें॥
छं० ॥ ७९ ॥

चित डोलन पिंड को जाइ कहीं। दिषि बीर भरं लपटाइ तहीं ॥
दोउ सूर महाबल के बरकें। सु बजें मद मोषन के सुर कें ॥
छं० ॥ ८० ॥

करि भंजि कुंभस्थल षग्ग लसी। कुवलय्यलकें भ्रर में करसी ॥
रुधि बिंद द्रवै कठ सोभ जगै। मनुं इंद्रबधू चढ़ि पुठ्ठि लगै ॥
छं० ॥ ८१ ॥

उपमा पलयं चलयों न कही। सकुचें सरसी जु समुद्द मही ॥
गज भंजि कुंभस्थल पग्ग दमैं। सु नचै जनु बिज्जुल बद्दल में ॥
छं० ॥ ८२ ॥

गजराज धुकै बहु कंपि करी। तिन सथ्थ महावत कून परी ॥
इन भेषय गज्जय मान छरं। दस कंधय डुल्लि किलास बरं ॥
छं० ॥ ८३ ॥

गज राजति षग्गति मध्य गसं। मनों तेरसि को ससि अद्धनिसं ॥
गजमुत्ति लगै षग यों दमकै। तिन की उपमा दिषि देव जकै ॥
छं० ॥ ८४ ॥

मुठि चंपि द्रढं करपान गसी। निचुरैं मनु नीर सु मोतिग सी ॥
छं० ८५ ॥

रावल समर सिंह जी के सरदारों का पराक्रम वर्णन।

कवित्त ॥ समरसिंह सिरदार। सेनगाही जुरि भज्जिय ॥
आहुट्टां मभ्झाम। परिय द्वादस चमरज्जिय ॥
पंग समानन तक्कि। भूमि नंषत षग वग्गिय ॥
बीरा रस बलबंड। हथ्थ दच्छित भ्रर लग्गिय ॥
जिम परत पतंग जु दीप कन। तूटि तूटि निकरि परत ॥
षुरतार धरें हय षुटि धरनि। षलन षलक षग्गह भ्ररत ॥ छं० ॥ ८६ ॥

पद्धरी ॥ झर करत विदुल भर लोह मार। छुट्टंत नाल्ल उड्डुत पहार ॥
उठ्ठंत धूम धर आसमान। बुड्डंत सार रुंध गूद मान ॥ छं० ॥ ८७ ॥
रुंडंत व्योम अंती अनंत। छुट्टंत नेह घट्ट जीव जंत ॥
गुड्डंत गिद्ध धर वंच बोथ। उथ्थलकि थलकि बाराह मोथ ॥
छं० ॥ ८८ ॥

कमधज्ज सेन आहुट्ठ ऐम। राहु अरु केत रवि सोम जेम ॥
सुझ्झै न अंषि नह सब्द कान। भर रैंन दीह रच्छत्त भान ॥
छं० ॥ ८९ ॥

चड्ढे जु समर मुष समर राव। पत्ते कि पत्त डंडूर वाव ॥
रन रह्यौ रोपि वाराह रूप। पेषिय सु भयंकर पंग भूप ॥
छं० ॥ ९० ॥

दूहा ॥ भयति भीति दुअ जुद्ध हुअ। अवति वंत सत सूर ॥
दह अग्गै अस्तुति सुंबर। न्रप भारथ्थ करूर ॥ छं० ॥ ९१ ॥

कवित्त ॥ कढ्ढि समर विच समर। समर रुक्यौ जु समर भर ॥
अजुत जु अति बुध सस्त्र। सस्त्र बज्जै सुमंत झर ॥
भय अभ्भित मय राम। बीर छुट्टे घन छुट्टै ॥
अघट घट्ट घूंटंत। ईस ग्यानह व्रत छुट्टै ॥
संक्रांति जेठ आषाढ़ मधि। नीर दान सम दान नहि ॥
सामंत सूर साईं भिरत। जोग न पुज्जै मंत लहि ॥ छं० ॥ ९२ ॥

सत्त विरत सांई सु। मत्त लग्गे असमानं ॥
इतत जुद्ध आरुद्ध। बीर मत्ते रस रानं ॥
हय थक्कत श्रम करै। मन न श्रम सों उच्चरैं ॥
गान दगध सों कथ्थ। गुरु न मंचह विस्तारैं ॥
घन धार भार हरुअंत घट। कऱ्यौ घट्ट गरुअंत जुरि ॥
दिन पंच परें पंचो त्रिपत। लऱ्यौ न को रबि चक्कतर ॥
छं० ॥ ९३ ॥

भुजंगी ॥ न जानं न जानं न जानं प्रमानं। न रुद्रं न रुद्रं न रुद्रं न जानं ॥
न सीलं न सीलं न सीलं न गाहं। गुरं जा गुरं जा गुरं जासु चाहं ॥
छं० ॥ ९४ ॥

घनं जा घनं जा घनं जानि लोभी। मुकत्ती मुकंत्ती मुकत्तीत सोभी ॥
छिमंते छिमंते छिमंते समानं। भ्रमंते भ्रमंते भ्रमंते भ्रमानं ॥
छं० ॥ ९५ ॥

उरंगं उरंगं उरगंति धारं। ततथ्थे ततथ्थे ततथ्थे सु भारं॥
छं०॥ ९६॥

समर सिंह जी के शत्रु सेना में घिर जाने पर १२ सरदारों का उनको वेदाग बचाना।

दूहा॥ भयति भरवि भ्रम सयन भर। गयनति गुर गुर गाज॥
लरन सूर पहुपंग कों। करि भारथ्थ सु काज॥ छं०॥ ९७॥
सार सार सज्जे सु ह्रत। सु ह्रत बचनु सुनि काज॥
सो सिर मंडिय लीन बर। जित छिति छित्ती भ्राज॥ छं०॥ ९८॥
कल सु चित्त मत्तह सु चित। रपि भ्रप करन उपाय॥
भर भारथ्थति मुंच तह। रहै सु जीव न चाय॥ छं०॥ ९९॥

कवित्त॥ सबर सूर रजपूत। पत्ति देष्यौ घुमत्त घट॥
समर समर बिच चपत। नीठ [1]कढ्यौ द्वादस्स भट॥
[2]बीच घत्त सो मझ्झि। षग्ग षल रुक्कि भंजि बट॥
बीर रंग बिप्पहर। समर संमुह सुभम्यौ नट॥
अनभंग पंग दल भंग किय। अठिल थाट ढिल्लिय सुभट॥
प्राक्रम्म पिष्षि भ्रम्मेव सुर। सीस कज्ज भ्रमि धर जट॥
छं०॥ १००॥

इस युद्ध में दो हजार सैनिकों का मारा जाना।

दूहा॥ उभय सहस भर लुथ्थि परि। तिन में सत्त सु सूर॥
द्वादस अग रावर परत। त्रिप कढि निठ्ठ करूर॥ छं०॥ १०१॥

रावल जी को निकाल कर वीरों के विकट युद्ध का वर्णन।

पद्धरी॥ कढि सेन समर अस मझ्झि सेन। रुक्कयौ पंग भर भिरि करेन॥
लावार लोह भिरि समर धेन। धावंत तप्पि सब षग्ग देन॥
छं०॥ १०२॥
तन बीर रूप लज्जा प्रहार। कढ़ि असि सूर बर करि दुधार॥

(१) ए.-कह्यौ। (२) ए. कृ. को.-बीस घटत।

झम झमी तेग बर तड़िग रूप। बाहेवि हथ्थ करि आन भूप ॥
छं० ॥ १०३ ॥

ढल मली ढाल गज्ज फिरति ट्टूंन। नग पंति दंति दीसै सदून ॥
तरफरहि लुथ्थि घट घाय धुक्कि। उच्छरें मीन जल जानि सुक्कि ॥
छं० ॥ १०४ ॥

आघात घात घट भंग कीन। बर भड्ग सूर तन छीन छीन ॥
परि समर सुभर रषि समर रूप। ढुंढयौ षेत सह पंग भूप ॥
छं० ॥ १०५ ॥

रावल जी के सोलह सरदारों का मराजाना।

दूहा ॥ गरूअत्तन तन हरूअ भय। घाट कुघाट सु कीन ॥
समर सूर सोरह परिग। मुगति मग्ग जस लीन ॥ छं० ॥ १०६ ॥

सरदारों के नाम।

कवित्त ॥ कन्ह जैत जैसिंघ। पंच चंपे पंचाइन ॥
सोम सूर सामला। नरन नौरह नारायन ॥
रूप राम रन सिंह। देव दुज्जन दावा नल ॥
अमर समर सब जित्ति। समर सध्यौ साई छल ॥
बैकुंठ बट्ट जिन सद्धयौ। रषि सांई जिन सस्त्र बल ॥
माहेस महनसी महन बर। महन रंभि जित्यौ सकल ॥ छं० ॥ १०७ ॥

रावल जी का विजयी होना और आगे की कथा की सूचना।

दूहा ॥ कन्ह भतीज उठाय लिय। हय नंष्यौ बर अग्ग ॥
पंग ढूंढि भारथ्थ भर। संह मिल्यौ जुरि हग्ग ॥ छं० ॥ १०८ ॥
समर सु सद्दे समर बर। बाल [1]सुयंबर लोग ॥
जिन बर बर उतकंठ भय। पानि भरै संजोग ॥ छं० ॥ १०९ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्राथिराज रासके जैचंद राव समरसी जुद्ध नाम छप्पनवों प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ५६ ॥

(१) ए. कृ. को.-सयंबर।
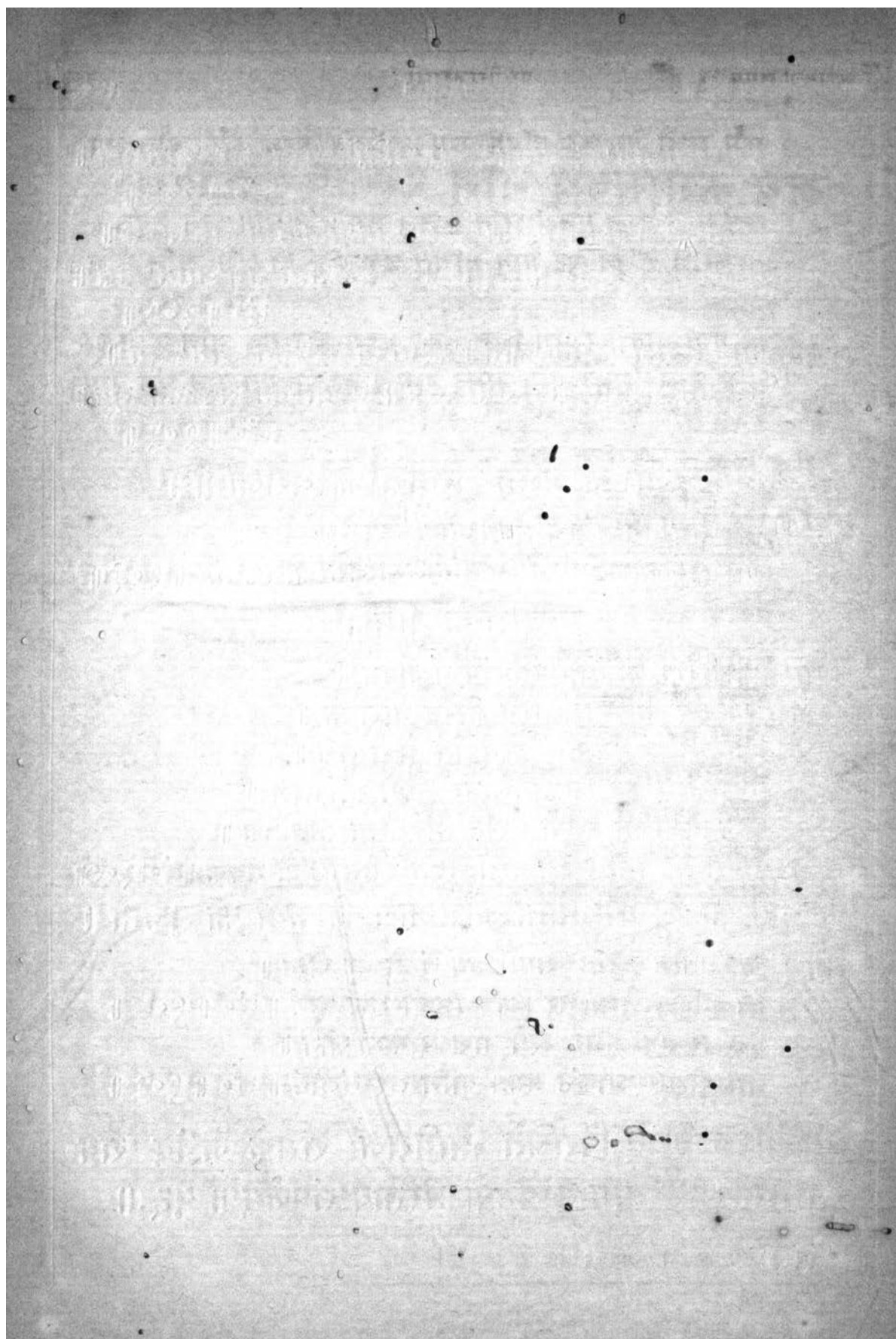
अथ कैमासबध नाम प्रस्ताव लिष्यते।

(सत्तावनवां समय।)

राजकुमार रेनसी और चामंडराय का परस्पर घनिष्ट प्रेम और चंदपुंडीर का पृथ्वीराज के दिल में संदेह उपजाना।

कवित्त ॥ दिल्लीवै चहुआन। तपै अति तेज षग्ग बर॥
चंपि देस सब सीम[1] गंजि अरि मिलय धनुद्दर॥
रयन कुमर अति तेज। रीहि हय पिट्ठ विसंमं॥
साथ राव चामंड। करै कलि किति असंमं॥
मेवास वास गंजै द्रुगम। नेह नेह बढ्ढै अनत॥
मातुलह नेह भानेज पर। भागनेय मातुल सुरत॥ छं० ॥ १ ॥
सयन इक्क संवसहि। इक्क आसन आश्रम्महि॥
[1]बीरा नइ विहार। भार अब राइ सुरम्महि॥
भागनेय मातुलह। जानि अति प्रीति सु उभ्भर॥
चिंति चंदपुंडीर। कही प्रति राज हित्त भर॥
चावंड रयन सिंघह सु [2]घर। अप्प नेह बंध्यौ असम॥
जानौ सु कत्य कारनह कलि। कलै भम्म धरनिय बिसम॥
छं० ॥ २ ॥

दूहा ॥ चित्ति बत्त पुंडीर चित। अप्प सु गुन गंभीर॥
समय काज प्रथिराज नृप। हिय न प्रगट्टिय हीर॥ छं० ॥ ३ ॥
दल बद्दल भर भीर भरि। चवत सूर सुर छंद॥
सामंत सूर [3]सम्मूह सजि। क्रीड़त ईस नरिंद॥ छं० ॥ ४ ॥

पृथ्वीराज का नगर के बाहर सभा रचकर वर्षा की बहार लेना और सायंकाल के समय महलों को आना।

(१) ए. कृ. को.-वारी। (२) मो.-पर (३) ए. कृ. को.-सनाह, समोह।

पद्धरी ॥ संवत्त एक पंचास पूर। आषाढ़ मास नवमी सनूर ॥
रचि विमल षष्प उद्योत भान। प्राचीय जमल [1]फट्टिय पयान ॥
छं० ॥ ५ ॥

सत सूर पूर सम रूढ़ राज। मंड्यौ सु देव देवन समाज ॥
सत रंज राज बर षेल मंडि। मंचीन अप्प आरंभ थंडि ॥
छं० ॥ ६ ॥

पज्जूनराव बर [2]चंद्रसेन। विचरंत राव कर [3]दष्षि नेत ॥
चामंड जैत कर वाम तेन। मुष अग्ग कन्ह निढ्ढुर सु देन ॥
छं० ॥ ७ ॥

अरु सलष लषन विंझल नरिंद। दस निकट रंग सोमेस नंद ॥
कविचंद अग्र [4]विचर सु छंद। तिहि प्रक्ति राज उच्चरि प्रबंद ॥
छं० ॥ ८ ॥

इक जाम सूर कीनौ पयान। उघघरिय धुंध धरनीय थान ॥
मिट्टै सु वाय चर चक्र होत। दष्षिनह वाम अनकूल सोत ॥
छं० ॥ ९ ॥

आएस स्वामि किन्नौ सहूर। बहुरे सु सकल सब भर सपूर ॥
फट्टेब [5]घूर यट्टे सु ताप। उघघर्यौ गेंन रवि धूप धाप ॥
छं० ॥ १० ॥

उक्कसे घोर घन गरुअ गुंज। दिस दिसा उमड़ि बद्दरन पुंज ॥
[6]कलपंत किलकि कल हल्ल राज। क्रीडंत रेनि इंछनि समाज ॥
छं० ॥ ११ ॥

भमकिय सु बूंद बढ्ढिय विसाल। विछुरेय सुब्भगन प्रातकाल ॥
ठट्ठौ सु आइ दीवान राज। किन्नौ सु हुकाम न्रप हदक काज ॥
छं० ॥ १२ ॥

---

(१) मो.-कट्टिय। (२) ए. कृ. को.-सेत्र।
(३) ए. कृ. को.-दच्छिनेव। (४) मो.-विद्दुरै।
(५) मो.-सूर। (६) ए. कृ. को.-"कालांत किलकि कल महल राज"।

दूहा ॥ दूत दूत दरबार बहु। सजे सूर भर साज ॥
सजे बीर दुंदुभि बजे। हदफ षेलि प्रथिराज ॥ छं० ॥ १३ ॥

कवित्त ॥ चढ्यौ राज प्रथिराज। सज्जि बर थट्ट बाज गज ॥
मंचि बोलि कयमास। राव पज्जून चंद्र रज ॥
रा चामँड बर जैत। कन्ह निड्ढुर नर नाहं ॥
सलष लषन बघेल। नरिंद विंझा षग वाहं ॥
कम्मान कठिन हथ हथ्थ करि। बान बिबिध बाहंत बर ॥
बाहुरे सूर रवि [1]अथ्थमित। सोर घोर पावस अतर ॥ छं० ॥ १४ ॥

हाथी के छूटने से घोर शोर और घबराहट होना।

स्वान माल हथ्थान। जोर घेरे षवास रज ॥
बेढ़ि कूट कंठेर। बग्घ बायात कोरि हर ॥
इक्क बत्त कहति वहि। बंधि गजराज डारि कर ॥
.... ॥
बहुरेव सूर मुष अथ्थमित। जूथ जितंतित तुंग बर ॥
छुट्टौ सु पाट गजराज सुनि। घोर सोर पावस अतर ॥ छं० ॥ १५ ॥

हाथी का थान से छूट कर उत्पात करना और चामंडराय का उसे मार गिराना।

पद्धरी ॥ संवत्त एक पंचास अंग। आषाढ़ मास दसमी सुरंग ॥
डंडूर बात जल जात उद्धि। घन पूरि सजल थल प्रथम बुद्धि ॥
छं० ॥ १६ ॥

घहराइ स्याम बद्दल विसाल। विथ्थुरिय सयल सिर मेघ माल ॥
उब्भरिय चसिय चप्पिय सु अप्प। संदेस मेस केकी सु दप्प ॥
छं० ॥ १७ ॥

कीलंत केलि चढ़ि अप्प राज। सामंत सूर सब सजे साज ॥
शृंगारहार गजराज पट्ट। मयमंत मत्त मद झरत [2]पट्ट ॥
छं० ॥ १८ ॥

(१) मो.-अथ्यमन। (२) ए. कृ. को.-उपट्ट।

बंध्यौ सु षंभ संकर गुराह। मानी न सह उनमत्त याह ॥
गज्जंत मेघ धुनि सुनिय अप्प। धुन्निय सु षंभ संकर सु दप्प ॥
छं० ॥ १९ ॥
उप्पर्यौ अप्प चल्ल्यौ विराह। मानै न अनिय अंकुस दुबाह ॥
ढाहंत मट्ट मंडप अनूप। प्राकार द्वार देवाल जूप ॥ छं० ॥ २० ॥
ढाहंत उंच आवास धक्क। मानै न मार प्राहार हक्क ॥
फ़ारंत उंच तरु चौ उरारि। लग्गौ सु लोग सव्वह हँकार ॥
छं० ॥ २१ ॥
पय तेज तुरिय पावै न जानि। मंडै सु (१) दुयस चौप्रय प्रमान ॥
मदगंध अंध सुझ्झै न राह। सनमुष्षं मिल्लिग चामंड ताह ॥
छं० ॥ २२ ॥
दाहिम्म षेलि आवंत ग्रेह। संकरे रोहि मिलि गज सु रेह ॥
गजराज देषि चामंडराइ। उप्पारि सुंड सनमुष्ष धाइ ॥
छं० ॥ २३ ॥
चामंड देषि आवंत गज्ज। पच्छै जु पाइ चिंतिय सु लज्ज ॥
उप्पारि संग है संघ देस। उक्कसिय कंध अड्डह असेस ॥
छं० ॥ २४ ॥
लाघवी दीन वहि षग्ग धार। सम सुंड दंत तुट्टिय सुजार ॥
ढ़हि पर्यौ मंत धरनीय सीस। सब लोकदेव दीनी असीस ॥
छं० ॥ २५ ॥
चामंडराव निज ग्रह अपार। भातेज सथ्य रयनं कुमार ॥
संभलिय बत्त पुहमी नरेस। कलुनलिय चित्त अप्पह असेस ॥
छं० ॥ २६ ॥

शृंगारहार का मरना सुन कर राजा का क्रोध करना और चामंडराय को कैद करने की आज्ञा देना।

कवित्त ॥ सुनिय बत्त प्रथिराज। हन्यौ सिंगारहार गज ॥
चिंति बत्त पुंडीर। अवर गंठी सु गुझ्झा रज ॥

(१) ए. कृ.को.-दुयय।

अप्प कोप उर धरिय । गल्ह [1]कातिन्न कलारिय ॥
रामदेव गुर राज । मुष्ष अग्गे अभ्भारिय ॥
बेरी सु आनि दीनि न्नपति । जाय पाइ चामँड भरौ ॥
संकोच प्रीति सनमंध सुष । नतरु षंड धरनी करौ ॥ छं० ॥ २७ ॥

षिझ्यौ बीर प्रथिराज । राज दरबार रुकाइय ॥
हाहुलिराव हमीर । बोल पज्जून लगाइय ॥
आज राज गज मारि । काल्हि बंधे फिरि तेगा ॥
राजनीति नन होइ । स्वामि अग्या तजि वेगा ॥
तब देव पाइ पच्छे न भय । हांसीपुर दीने तबै ॥
इहि काज कीन अन्न अग्रमन । स्वामि गज्ज मारन अबै ॥
छं० ॥ २८ ॥

लोहाना का वेड़ी लेकर चामंडराय के पास जाना ।

कहै राज प्रथीराज । मीच चामंड न मारौ ॥
सुनहु सूर सामंत । मरन कहुत अत्तारौ ॥
लोहानौ आजान । हथ्थ बेरी लै चल्लं ॥
साम दान करि भेद । पाइ चामंड सु घल्लं ॥
अनभंग अंग है राम गुर । राज रीति राषन्न तिहि ॥
दाहिम्म राव दाहर तनय । सुनि अवाज चर चित्त रहि ॥छं०॥२९॥

चामंडराय के चित्त का धर्मचिंता से व्यग्र होना ।

दोय सहस दाहिम्म । पहिरि सन्नाह सु रज्जिय ॥
बज्जि साहि बर अग्र । बीर.बाहैं कर बज्जिय ॥
चिंत राव चामंड । धत्त इह ध्रम्म न होइय ॥
साम्मि सनंमुष लोह । सामि दोही घर जोइय ॥
पूछियै सेव जिन देव करि । दुष्ट भाव किम चिंतियै ॥
करतारं घरह घरं किति की । दुहु धर मरन न जित्तियै ॥
छं० ॥ ३० ॥

गुरुराम का चामंडराय को बेड़ी पहनाना।

लै बेरी गुर राम। गए चामंड राव ग्रह ॥
कर दीनी दाहिम्म। रीस गजराज घून कह ॥
तब लीना दाहिम्म। भ्रम्म स्वमित्त सुद्ध मन ॥
सो लीनी करझेलि। प्रेम धारी पय अप्पन ॥
धनि धन्नि धन्य सब नयर हुअ। सयल धन्य संचरि सु सद ॥
[1]चामंडराय दाहर तनै। नीति रेह रष्षी सु हद ॥ छं० ॥ ३१ ॥

चामंडराय का बेड़ी पहिनना स्वीकार कर लेना।

दूहा ॥ बंदि लई चामंड ने। बेरी सम्हौ हथ्थ ॥
साम भ्रम्म जुग रष्षयौ। जीरन जग्ग सु कथ्थ ॥ छं० ॥ ३२ ॥
यौं घल्ली चामंड पय। ज्यौं मद मत्त गयंद ॥
लाज [2]राज अंकुसन मिटि। धनि दाहिम्म नरिंद ॥ छं० ॥ ३३ ॥
यौं अग्या प्रथिराज की। मन्नी दाहिम इंद ॥
ज्यौं सुनि मंचह गारडी। मानत आन फुनिंद ॥ छं० ॥ ३४ ॥

इस घटना से अन्य सामंतों का मन खिन्न होना।

अरिल्ल ॥ भर बेरी चामंड राज जब। भए अति विमन सु मन सामंत सब ॥
भ्रमत राज आषेट पंग भय। ग्रह रष्षौ कैमास मंच रय ॥
छं० ॥ ३५ ॥

पृथ्वीराज का शिकार खेलने जाना।

दूहा ॥ तिहि तप आषेटक भ्रमै। थिर न रहै चहुआन ॥
जोगीनिपुर बर रष्षि कैं। [3]दस सामंत प्रधान ॥ छं० ॥ ३६ ॥
चौ अग्गानी बीस बर। संग मुक्कि कैमास ॥
आषेटक चहुआन गौ। न्रप दुग्गीबन पास ॥ छं० ॥ ३७ ॥

राजा की अनुपस्थिति में कैमास को राज्य कार्य्य चलाना।

(१) मो.-काज। (२) ए. कृ. को.-गय।

कवित्त ॥ राज काज दाहिम्म । रहै दरबार अप्प बर ॥
आषेटक दिल्लिय । नरेस षेलै कमंध डर ॥
देस भार मंचीस । राव उद्धार सु धारै ॥
न को सीम चंपवै । हद्द तप्पै सु करारै ॥
लोपै न लीह लज्जा सयल । स्वामि ध्रम रष्षै सुरुष ॥
क्रत नीति रीति बहु बिसह । [1]बंछै लोक असोक सुष ॥
छं० ॥ ३८ ॥

दिन विशेष की घटना का वर्णन।

सुर गुर वासर सेषं । घटिय दसमीय दैव दिन ॥
पुब्ब षाट भद्दों सु गाढ़ । घन वट्ट कोक मन ॥
गहकि मोर दद्दुरनि । रोर बद्दर बगपंतिय ॥
बन दिसान गहरान । चाप वासव चित मंतिय ॥
दरबार आय कैमास न्रप । कीय महल सिर रज्ज भर ॥
[2]घन संकुस तुछ सथ्थे सयन । चित्त मित्त दुअ [3]पंच बर ॥
दाहिम्म मिल्यौ इमि दासि सम । पीर मद्ध जिम नीर मिलि ॥छं०॥३९॥

कैमास का चलचित्त होना।

राज चित्त कैमास । चित्त कैमास [4]दासि गय ॥
नीर चित्त वर कमल । कमल चित्त बर भान गय ॥
भंवर चिंत भमरी सु । भँवर रत्तौ सु कुसुम रस ॥
ब्रह्म लोय रत्तयौ । लोय रत्तौ सु अधम रस ॥
उतमंग ईस धरि गंग कौं । गंग उलटि फिरि उदधि मिलि ॥
छं० ॥ ४० ॥

करनाटी की प्रशंसा और उसकी कैमास प्रति प्रीति।

दूहा ॥ नंदी देस बनिंक सुअ । बेसव नंजन हत्त ॥
बीन जांन रस बनसु घर । राजन रष्षिय हित्त ॥ छं० ॥ ४१ ॥

(१) ए. कृ. को. बंधे।　　(२) ए. को.-छन।
(३) ए. कृ. को.-घन।　　(४) मो.-दाहिम्म।

दिव्य दास रष्षिय दिवस । सुग्रह पवारिय द्वार ॥
तिन अवास दासिय सघन । अह निसि रस रषवार ॥ छं० ॥ ४२ ॥

कवित्त ॥ समुष समुष ग्रह राज । [1]महल साला सु रूव रँग ॥
तहं सु रोहि कयमास । [2]सजन आवरिय अप्प अँग ॥
ऊँच महल करनाटि । देषि डंबर घन अंमर ॥
बैठी गवष ससष्पि । सुमन [3]मंती अरु संमर ॥
सम दिट्ठि उट्ठि दाहिम्म दुअ । जग्गि मार उब्भार चित ॥
अंकूरि द्रष्ट अंतर उरिय । प्रीति परट्ठिय [4]कालक्रत ॥ छं० ॥ ४३ ॥

दूहा ॥ नव जोवन शृंगार करि । निकरि गवष्षह पास ॥
देषि उझकि बर सुंदरी । काम द्रष्टि कयमास ॥ छं० ॥ ४४ ॥
करनाटी दासी सुबर । चित चंचल तिय वास ॥
काम रत्त कैमास तन । दिष्ट उरझिझय तास ॥ छं० ॥ ४५ ॥
करनाटी कैमास मन । राजन नथ्थि अवास ॥
भावी गत को मिट्टई । ज्यों जनमेजय व्यास ॥ छं० ॥ ४६ ॥
द्रष्टि द्रष्टि लोकन जरिग । मति राजन ग्रह काज ॥
सहिय करत असहिय समर । असहवान तन साज ॥ छं० ॥ ४७ ॥

दोनों का चित्त एक दूसरे के लिये व्याकुल होना, और करनाटी का अपनी दासी को कैमास के पास प्रेषित करना।

ग्रह बाहुरि सामंत गय । रहि चौकी कैमास ॥
करनाटी सहचरि उभै । मुक्कि दई तिन पास ॥ छं० ॥ ४८ ॥

गाथा ॥ लग्गी द्रष्टि सु द्रष्टि अपारं । धरकी दुअर धार ना धारं ॥
कलमलि चित्त अभित्त दुआनं । लग्गे मीन केत क्रत बानं ॥
छं० ॥ ४९ ॥

---

(१) मो.-"माहिल साली सु सूव रँग"। (२) ए. कृ. को.-सुजब।
(३) मो.-मतिनि। (४) मो.-काजल।

किय दाहिम्म केविक्रत काजं। उठ्यौ सूर अस्त मनि साजं ॥
अप्प ग्रेह कैमास सपत्तौ। मेन बान-गुन ग्यान बियत्तौ ॥ छं० ॥५०॥
छिन अंदर भीतर आवासं। नन धीरज्ज हंस रहै तासं ॥
नठी मत्ति रति गत्ति उहासं। अविगत देव काल निसि नासं ॥
छं० ॥ ५१ ॥
घटिय पंच पल बीस सवें कल। विक्तिव निसा उसास ससुकल ॥
अति झंपत करनाटिय [1]ऊरं। काम कटाछ्य सु लग्गि कऊरं ॥
छं० ॥ ५२ ॥
कवित्त ॥ कन्नाटिय कैमास। म्रिष्ठ देषत मन लग्गो ॥
कलमलि चित्त सुहित्त। मयन पूरन जुरि जग्गो ॥
गयौ ग्रेह दाहिम्म। तलप अलपं मन किन्नौ ॥
बोलि अप्प सो दासि। काम कारन हित दिन्नौ ॥
[2]लै मंच राज अप्पं सरिस। जौ हम आनें चित्त हर ॥
सम चली दासि कैमास दिसि। जंपिय भेव सनेह बर ॥छं०॥५३॥

करनाटी के प्रेम की सूचना पाकर कैमास का स्त्री भेष धारण कर दासी के साथ होलेना।

दूहा ॥ सुनि दासी करनाटि बच। निज संचरि सथ मुद्द ॥
मत्ति घटी अरुझी सुरति। काल निसा क्रत निद्द ॥ छं० ॥ ५४ ॥
सहचरि बर मोकलि कै। तकै बट्ट कैमास ॥
सम समड्डि सज्जें रह्यौ। क्वरि करि हिये विलास ॥ छं० ॥ ५५ ॥
निसि भद्दव कद्दव कहल। आषेटक प्रथिराज ॥
दाहिम्मौ दहि काम रत। काल रैनि कै काज ॥ छं० ॥ ५६ ॥
दासिय हथ्थ सु हथ्थ दिय। चिय अंबर आछादि ॥
दासिय अंबर अप्प हुअ। [3]दरन स पिथ्यौ सादि ॥ छं० ॥ ५७ ॥

(१) मो.-कुंजर।
(२) ए. कृ. को.-"लै अप्प राज मंत्री सरिस"। (३) मो.-दरसन।

साटक ॥ राजं जा प्रतिमा सुचीन प्रतिमा, रामा रमे साभती ॥
*नित्तौ रंकरि काम बाम वसना, सज्जीन संग्या गती ॥
आधारेन जलिन छीन तड़िता, तारा न धारा रती।
सो मंची कयमास मासं विषया, दैवी विचिचा गती ॥ छं० ॥ ५८ ॥

सीढ़ी चढ़ते हुए इंछिनी रानी का कैमास को देख लेना।

कवित्त ॥ मध्य महल कैमास। दासि सम अप्प संपत्तौ ॥
ग्रेह निकट पामारि। काम [1]कामना न मत्तौ ॥
घन सुगंध सुर भास। जानि वित इंछिनि चिंतिय ॥
आषेटक दिल्लेस। कहा सुर वास सुं भत्तिय ॥
निसि स्याम चिलजि चौया वसन। चढ्यौ अप्प सिढ्ढिय सुमन ॥
इष्यौ सु द्वार इंछिनि तड़ित। नर सु [2]पित्त कोइ काम रत ॥
छं० ॥ ५९ ॥

सुग्गे का इंछिनी प्रति बचन।

सुक चरिच दासिय परषि। कहि इंछिनि संजोइ ॥
काग जाइ मुत्तिय चरै। हरति हंस का होइ ॥ छं० ॥ ६० ॥
सुक जंपै इंछनिय। एक आचिज्ज परष्षिय ॥
बीर भजन मृगमदक। पाय कग्गं तन दिष्षिय ॥
बचन पंषि संभरै। बाल चरचित चित किन्ना ॥
बर आगम गम जानि। भेद सुक कौं किन दिन्ना ॥
निसि अद्ध अध्य सुभझै नहीं। बार बज्जि निसचर हरिय ॥
कैमास क्रम्म गहि दासि भरि। जेम क्रम्म सन्हा भरिय ॥
छं० ॥ ६१ ॥

इंछिनी का पत्र लिख दासी को दे कर पृथ्वीराज के पास भेजना।

* यह साटक और इसके आगे की एक पंक्ति मो. प्रति में नहीं है।
(१) ए. कृ. को.-कामन मन। (२) ए. कृ. को-पिद्द।

गयौ मध्य कैमास। रयनि संपत्त जाम इक ॥
तंबुल्लिय सषि साष। पट्ट रागनिब निकट सिक ॥
बाय घात दिय पूर। भ्रमिय बिय किय अति अंतह ॥
अति सरोस पिक पानि। सु नष लिषि सषि कर कंतह ॥
असि असन वारि मग्गह धरिय। अवधि दीन दो घरिय कह ॥
पल गयन सु राइह संचरिय। अयन सयन प्रथिराज जहँ ॥
छं० ॥ ६२ ॥

रोला ॥ *वर चढ्ढिय चतुरंग तुरंगम चारु सु नारिय।
इंछनि. हथ संदेस· चली बोलह अवधारिय ॥
दोनौ संग पवारि उंभै तब चढ़ि चतुरंगं।
निसिनि अद्ध बढ़ि तिमर गई बाली अनुरंगं ॥ छं० ॥ ६३ ॥

दासी का पृथ्वीराज के पड़ाव पर पहुंचना।

कवित्त ॥ विमल बग्ग सुर अग्ग। धाम धारा ग्रह सुब्बर ॥
जल सु थान अभिराम। दिल्लि अंम्यौति संस[1]तर ॥
मंडे वासुर स्रगय। निसा प्रावट्टि मंनि मन ॥
उभय सत्त हय तथ्थ। ताम विस्राम [2]श्राम तन ॥
सिंगनि सु बान पर्यंक दुअ। अरिय सेज न्रप सयन किय ॥
सुतौ सुथान निद्रा सकल। अति उर कंपिय दिष्षि जिय ॥
छं० ॥ ६४ ॥

राजा और सामंतों की सुसुप्ति दशा।

सनमुष साला सुभट। सकल विस्राम नींद भर ॥
जाम देव बलिभद्र। बूरन चंहुआन संघहर ॥
तोंवर राइ पहार। सिंघ [3]रनभय पावारं ॥

* मूल प्रतियों में इसका पाठ चौपाई करके लिखा है। ए. प्रति में प्रथम पंक्ति का पाठ " वर चढ़िय चतुर तुरंगम नारिय " पाठ है।

(१) र. क. को.-समंतर।　　(२) ए. कृ. को.-श्रम।

(३) ए. कृ. को.-निम्मय।

खंगी लंगरराव। सूर सा अल्ह कुआरं ॥
आजानबाहु गुज्जर [1]कनक। सोलंकी सारंग बर ॥
सामलौ सूर आरज, कमँध। बाम. जु इष्य विसग्ग भर ॥
छं० ॥ ६५ ॥

गाथा ॥ यों राजंत कमानं। राजन सयनेव सुभ्भियं एमं ॥
ज्यों स्त्री बल्ल भरति अंगं। श्रम थक्के दंपती उभयं ॥ छं० ॥ ६६ ॥

दूहा ॥ रष्या करीब देव तुहि। सोवत न्रप अत सब्ब ॥
दासी चौकी चक्रित हुअ। कर धरि छित्तिय जब्ब ॥ छं० ॥ ६७ ॥
न्रप सूतौ अंतर महल। जाइ संपतिय दासि ॥
जुग्गिनिवै चहुआन कौ। गुन किन्नौ अभिलास ॥ छं० ॥ ६८ ॥

दासी का राज शिविर में प्रवेश।

[2]बंध्यो षंभ सु रंभ हय। अप्प चली जहं राज
विसग सथ्थ दिष्यौ सकल। उर मन्यौ अविकाज ॥ छं० ॥ ६९ ॥

दासी का नूपुर स्वर से राजा को जगाने की चेष्टा करना।

गाथा ॥ भू अत सु चित्त निद्रा। सिंगी सार रयन्न जग्गियं ॥
विद्ध दीपक अरंत मंदं। नूपुर सद्दानि भान अच्छानि ॥छं०॥७०॥

साटक ॥ भूपानं जयचंद राय निकटं, नेहाय जग्गाइने ॥
संसाहस्स बसाह साहि सकलं, इच्छामि जुद्धायने ॥
मिद्धं चालुक चाइ मंच. गहनो, दूरेस विस्वारने ॥
अग्यानं चहुआन जानि रहियं, देवं तु रष्या करे ॥ छं० ॥ ७१ ॥

स्लोक ॥ पंग जग्यो जितं वैरं। ग्रह मोषं सुरतानयं ॥
गुज्जरी ग्रह दाहानि। दैवं तु रष्या करे ॥ छं० ॥ ७२ ॥

दूहा ॥ सुनिय सु नूपुर सद्द न्रिप। सषी सु चिंतिय चित्त ॥
मन्निय कारन सिद्ध मनि। न्रप गति दुस्सिन नित्त ॥ छं० ॥ ७३ ॥

दासी का राजा को जगाना और इंछिनी का पत्र देना।

(१) मो.-कमल। (२) ए. कृ. को.- बंध्यौ रंभ सुथंभ।

* चान्द्रायण ॥ छत्तिय हथ्थ धरतं नयंनन चाहुयौ।
दासिय दष्पिन हथ्थ सु बंचि दिषाधयौ॥
जिन बाना बलवान रोस रस[१]दाहुयौ।
मानहु नाग पतित्त अप्प जगावयौ॥ छं० ॥ ७४ ॥

साटक ॥ जग्यौ श्री चहुआन भूपति भरं, सिंघं समं पिष्षियं॥
दिल्लीनं पुरलोक चुंकति ग्रहं, तेजंबु कायं मुषं॥
सा संकी वय ग्रास धीरज रनं, वीराधि वीरं अरी॥
करनाटी वर दासि दाहिम वरं, मंची सरो भिष्टयं॥ छं० ॥ ७५ ॥

दूहा ॥ बंचि बीर कग्गद नरेह। तरकि तोन कर सज्ज॥
निर तिन [१]कह दीनौ न्रपति। सब सामंतन लज्ज॥ छं० ॥ ७६ ॥

पृथ्वीराज का इंछिनी के महल में आना।

आयौ न्रप इंछिनि महल। राज रीस चित मानि॥
अगनि दझ्झ कैमास कै। बीर बरन्निय पानि॥ छं० ॥ ७७ ॥

राजा प्रति इंछिनी का बचन।

वहनि वच्छ महि अच्छ रस। इहि रस महि रसकंत॥
दनुकि देव गंध्रव्व जछि। [२]दासी निसि विलसंत॥ छं० ॥ ७८ ॥

† चान्द्रायण ॥ संग सयंनन सथ्थ न्रपत्ति न जानयौ।
दुहु विचह्नै इक दासिय संग समानयौ॥
इंद नरिंद फुनिंदर अथ्थि समानयौ।
घरह॰घरी दुअ मद्धि ततच्छिन आनयौ॥ छं० ॥ ७९ ॥

दूहा ॥ रति पति मुच्छि आलुझ्झि तन। घन घुम्यौ चिहुँ पास॥
पानिन अंघन संचरै। महल काहल कैमास॥ छं० ॥ ८० ॥

इंछिनी का राजा को कैमास और करनाटी को दिखाना।

सुंदरि जाइ दिषाइ करि। दासी दुहुं दाहिम्म॥

(१) ए. कृ. को.-किन। (२) ए.-दीसी।

* इस छन्द को चारों प्रतियों में रासा करके लिखा है परन्तु यह छन्द चान्द्रायण है। रास या रासा में २२ मात्रा और तीन जमक होते हैं। † रासा।

बर मंची प्रथिराज कहि। दइ दुवाह वर कम्म ॥ छं० ॥ ८१ ॥
ना दानव ना देवगति। प्रभु मानुष वर चिन्ह ॥
सु रस पवारि गवारि कह। प्रौढ़ मुगध मति किन्ह ॥ छं० ॥ ८२ ॥
रमनि पिष्षि रमनिय विलसि। रजनि भयानक नाह ॥
चिच दिषात सु चिंचनी। मोन विलग्गिय बाह ॥ छं० ॥ ८३ ॥
मिमष चिच देष्यौ दुचित। सलष सलष्षिय नैंन ॥
ह्रदै सुयस....सुंदरिय। दुअ थप यंपिय बैन ॥ छं० ॥ ८४ ॥
नीच बान नीचह जनिय। विलसन कित्ति अभग्ग ॥
सुनहु सरूप सु मुत्ति कर। दासि चरांवत्ति कग्ग ॥ छं० ॥ ८५ ॥
करकुँवंड लीनौ तमिक। [1]अरूचि दान्न विधि जोय ॥
चरिय कग्ग तरवर सबै। हंसनि हंसन होइ ॥ छं० ॥ ८६ ॥

विजली के उजेले में राजा का वाण संधान करना।

निसि अद्धी सुझ्झै नहीं। बर कैमासय काज ॥
तड़ित करिग अंगुलि धरम। बान भरिग प्रथिराज ॥ छं० ॥ ८७ ॥

कैमास की शंका।

श्लोक ॥ अर्जुनः सायको नास्ति। दशरथो नैव दृश्यते ॥
स्वामिन् अषेटकं हत्ति। न च वानं न चयो नरः ॥ छं० ॥ ८८ ॥

वाण वेधित-हृदय कैमास का मरण।

दूहा ॥ बान लग्ग कैमास उर। सो ओपम कवि पाइ ॥
मनों हृदय कैमास कै। हथ्थ बुझ्झिय लाइ ॥ छं० ॥ ८९ ॥
कवित्त ॥ भरिग वान चहुआन। आनि दुरदेव नाग नर ॥
दिट्ठ मुट्ठि रस डुलिग। चुक्कि निकरिग्ग इक्क सर ॥
दुत्ति आनि दिय हथ्थ। पुठि पामार पचार्‍यौ ॥
बानि हत्त तुटि कंत। सुनत धर धरनि पधार्‍यौ ॥
इय कब सब सरसै गुनति। पुनित कह्यौ कविचंद तत ॥

(१) ए. कृ. को.- अरुचि।

यों पऱ्यौ कैमास आवास तें। जानि [1]निसानन छिचपत्ति ॥
छं० ॥ ९० ॥

गाथा ॥ सुंदरि गहि सारंगो। दुज्जन दुभनोपि पिष्षि सायक्कं ॥
किं किं विलास गहियं। किंकिनी दुष्ष दुष्षाई ॥ छं० ॥ ९१ ॥

कविकृत भावी वर्णन।

श्लोक ॥ भवितव्यं भवितव्यं। ललाटपटलाक्षरं ॥
दासिकाहेत कैमासं। मरणं हस्त राजभिः ॥ छं० ॥ ९२ ॥

पद्धरी ॥ नदि चलिय पूर गहराइ अत्ति। शृंगार तरुन मन मिलन पत्ति॥
मेदनी नील सोभंत रूप। प्रज रचिय सचिय सम दिष्ट भूप॥
छं० ॥ ९३ ॥

गहकंत दृक्ष वद्दर विरूर। पहु मुष्य मंच बहु ढुक्कि क्रूर ॥
कुरलंत पुष्टि कोकिल कलच्छि। मैं मंत संढ जनु तंब पिच्छ ॥
छं० ॥ ९४ ॥

बर गजिय व्योम रजि इंदवान। गहि काम चाप जनु दिय निसान ॥
नीलभा [2]गहर तरु रज्जि माल। गुन थकित जानि तुट्टे भुआल ॥
छं० ॥ ९५ ॥

मुकल्यौ अप्प भासंत पव्व। मोहियौ रुक्कि मनि मुनि सु तब्ब ॥
.... ॥ छं० ॥ ९६ ॥

कैमास की प्रशंसा।

कवित्त ॥ जिंन कैमास सुमंचि। षोदि षट्टू धन कढ्यौ ॥
जिन कैमास सुमंचि। राज चहुआन सु चढ्यौ ॥
जिन कैमास सु मंचि। पारि परिहार मुरस्थल ॥
जिन कैमास सु मंचि। मेछ बंध्यौ बल सब्बल ॥
चिहुं ओर जोर चहुआन न्रप। तुरक हिंदु डरपन डरह ॥
बाराह बंधि बीराह बिच। सु बस्सि बास जंगल धरह ॥ छं० ॥९७॥

(१) ए. कृ. को.-" निसान छित्त पति "
(२) मो.-गरह त्तर।

अन्यान्य सामंतों के सम दूषण।

साटक॥ कन्हं कायक कांति कंत वहनं, चामंडतिय दावरं॥
हरसिंघं बिय बाल बालय व्रंतं, रामंच सलषं व्रतं॥
[1]द्वै कंता बड़ गुज्जरं च कनक्क, परदारते विम्मुहा॥
रामो काम जिता सनास विविधं, कैमास दासी रता॥छं०॥९८॥

कवित्त॥ जिन मंची कैमास। ग्रेह जुग्गिनि पुर आनी॥
जिन मंची कैमास। बंध बंध्यौ पंगानी॥
जिन मंची कैमास। भीम चालुक्क पहारं॥
जिन मंची कैमास। [2]जिवन बंध्यौ षट वारं॥
सोमत्त घट्ट कैमास की। दासि काज संदोह हुअ॥
दुप्पहर चाह दस दिसि फिरै। कोइ छची ग्रव्वहन तुअ॥छं०॥९९॥

राजा का कैमास को गाड़ देना।

दूहा॥ षनि गड्यौ कैमास तहं। दासी सम करि भंग॥
पंच तत्त सरसे सुषै। प्रात प्रगट्टै रंग॥ छं०॥ १००॥
जो तक पंगति उप्पज्यौ। बैनन दिषि कविचंद॥
साम प्रगट बर कंधनह। बर [3]प्रमाद मुष इंद॥ छं०॥ १०१॥

करनाटी का निकल भागना।

षनि गड्यौ न्रप सम धनह। सो दासी सुर पात॥
दिब धारनै जलद्धि तें। लीला कहिग सु प्रात॥ छं०॥ १०२॥
षनि गड्यौ तिहि गबषनहं। तजि गौषति गई दासि॥
षनि गड्यौ कैमास बर। किम दै दासी भासि॥ छं०॥ १०३॥
कर्नाटी कैमास दुति। दासि गई तग थान॥
संकर रस संकर न्रपति। बर दंपति चहुआन॥ छं०॥ १०४॥
क्रित्य कुलच्छिन हीन चित। जीरन जुग जुग हास॥
निसि निद्रा ग्रसि चिंत बर। पुच्छिय इंछिमि भास॥ छं०॥ १०५॥

(१) मो.-द्वै। (२) मो.-" जिनव बंधी बहु वारं "।
(३) ए. कृ. को.-प्रसाद।

उपाद्घात।

मुरिल्ल ॥ उभै दासि कैमास सपत्ती। दासीं प्रनइ अमंत सु रत्ती ॥
जामनि गई सुक्क आभासी। बिय निसपत्त प्रपत्तय दासी ॥
छं० ॥ १०६ ॥

देवी का कविचंद से स्वप्न में सब हाल जताना।

दूहा ॥ बर चिंता बर राजई। सुपनंतर [1]कविचंद ॥
जुगति मंद मौ मंद दै। भै वीचं भो विंद ॥ छं० ॥ १०७ ॥
गरै माल न्रप किक्ति भय। सोहंती तन माल ॥
सुपनंतर कविचंद सौं। विरचि देवि कहि ताल ॥ छं० ॥ १०८ ॥

गाथा ॥ न्रप हति बीर कैमासं। [2]सुर घट्टी रहि निल्लया ॥
बर गौ पुब्बह धनयं। रैनं निंद्रा गई बानं ॥ छं० ॥ १०९ ॥

दूहा ॥ मुष रत्तौ पत्तौ न्रपति। दिसि धवली तमछिन्न ॥
चिंति मग्ग गहि सूर मन। पुरष प्रवानी लिन्न ॥ छं० ॥ ११० ॥

कविचन्द के मन में शंकाएं होना।

मुरिल्ल ॥ बाल सु भ्रत द्रिगया मन किन्नी। रवि मुष भरि दिषि वल्लभ भिन्नी ॥
को पुच्छै किन उत्तर दीयौ। तजि आषेट भ्रम्म व्रत लीयौ ॥
छं० ॥ १११ ॥

दूहा ॥ भ्रम परंत दिल्लिय नयर। चित सुहि संधि करूर ॥
गौ हरम्म हरि माननी। चित सामंतन सूर ॥ छं० ॥ ११२ ॥
दिन नष्षे हरि पूज बिनु। निसि नष्षे बिन काम ॥
प्रात भई गत रोस गृम। अरधि अग्गि सित ताम ॥ छं० ॥ ११३ ॥
गयौ न्रप्प बन अंद्ध निसि। सुंदरि सौंपि [3]सहाय ॥
सुपनंतर कविचंद सों ; सरसे बद्दिय आय ॥ छं० ॥ ११४ ॥

देवी का प्रत्यक्ष दर्शन देना।

(१) ए. कृ. को.-सुनि।
(२) मो "सुर घटी रहि नीलया"। (३) ए. कृ. को. ।यसाय

मुरिल्ल ॥ तब परतष्यि भई ब्रह्मानी। बीना पानि हंस चढ़ि ध्यानी ॥
त्रिमल चीर हीर विन मंडं। तिहि काल किति कही सु प्रचंडं॥
छं० ॥ ११५ ॥
जिहि निसि सो बर विंतक वित्ती। ज्यों राजन कैमास सु हत्ती॥
बर ब्रंनत सर अंबर छाइय। तबहि रूप चंदह कवि ध्याइय॥
छं० ॥ ११६ ॥
दरसन देवि परस्सिय कब्बी। सुपनंतर कविचंद सु दिब्बी॥
बंद्रिय युक्ति उचार तुंव बर। बरन उचार कियौ आसा उर॥
छं० ॥ ११७ ॥
भइ परतष्यि सु कब्बि मनाई। उगति जुगति कहि कहि समुझाई॥
बाहन हंस अंस सुष दाई। तब तिहि रूप ध्यान कबि पाई॥
छं० ॥ ११८ ॥

सरस्वती के दिव्य स्वरूप की शोभा वर्णन।

नराज ॥ मराल बाल आसनं। अलित्त [1]साय सासनं॥
सुहंत जास तामरं। सुराग राग धामरं॥ छं० ॥ ११९ ॥
कलिंद केस मुक्करे। उरग्ग बाल विथ्थुरे॥
लिलाट रेष चंदनं। प्रभात इंद बंदनं॥ छं० ॥ १२० ॥
कपोल रेष गातयौ। उवंत इंद्र पाथयौ॥
उछाइ कीर षंजनं। तरुन्न रूप रंजनं॥ छं० ॥ १२१ ॥
चाटंक झंक झंकई। तिलक्क पान संकई॥
सुहंत तेज भासई। हलंत मुत्ति पासई॥ छं० ॥ १२२ ॥
उपंम चंद जंपयौ। चुनंत कीर सीपयौ॥
विभूअ जूअ षंचयौ। कलंक राह चंचयौ॥ छं० ॥ १२३ ॥
चिभंग मार आतुरं। चिबुक्क चारु चातुरं॥
श्रवन्न चाट पिष्पयौ। अनंग रथ्थ चक्कयौ॥ छं० ॥ १२४ ॥
जु बाल कीर सुभ्भयौ। [2]उपम्म तासु लुभ्भयौ॥
दिपंत तुच्छ दिठ्ठयौ। विचै अनार फुट्टयौ॥ छं० ॥ १२५ ॥

(१) ए. कृ. को.-छाय। (२) ए. कृ, को.-"तंकत रत्त विंबयौ"।

सु ग्रीव कंठ मुत्तयौ । सुमेर गंग पत्तयौ ॥
सुमंत कुच तुंमरं । [1]सुरच्छि लग्गि भ्रंमरं ॥ छं० ॥ १२६ ॥
नषादि ईस अच्छनं । धरंति सुच्छि लच्छिनं ॥
सुरंग हथ्थ मुंदरी । सो पानि सोभ सुंदरी ॥ छं० ॥ १२७ ॥
सुजीव भ्रम्म बालयं । सुगंध तिप्प तालयं ॥
कनक्क विप्प पब्बया । सुराज सिंभ दिब्बया ॥ छं० ॥ १२८ ॥
विविच्च रोम रंगयं । पपील सुत्तरंगयं ॥
हरंत छब्बि जामिनी । कटिं सुहीन सामिनि ॥ छं० ॥ १२९ ॥
सदैव ब्रह्मचारिनी । अबुद्ध बुद्धि कारिनी ॥
अभाष दोष बंचही । सुहंत देवि संचही ॥ छं० ॥ १३० ॥
अपुट्ठ रंभ नारिनी । सुजुत्त ओप कारनी ॥
नयन्न नास कोसई । बरट्टि कट्टि भेसई ॥ छं० ॥ १३१ ॥
झलक्क तेज कंवुजं । चरन्न चारु अंबुजं ॥
सुरंग रंग ईडुरी । कलीति चंपि पिंडुरी ॥ छं० ॥ १३२ ॥
सबद्द सद्द नूपुरे । चलंत हंस अंकुरे ॥
सु पाइ पाइ रंगजा । जु अद्ध रत्त अंबुजा ॥ छं० ॥ १३३ ॥
दरस्स देवि पाइयं । सु कब्बि कित्ति गाइयं ॥ छं० ॥ १३४ ॥

सरस्वत्योवाच ।

दूहा ॥ मात उचारत चंद सों । भेद दियौ ग्रह काज ॥
दासि काज कै मास कौं । अप्प हन्यौ प्रथिराज ॥ छं० ॥ १३५ ॥

गाथा ॥ अंबुज विकसि विलासं । देवी दरसाइ भट्ट कवि एहं ॥
[2]अद्धं बचं परष्यं । चाचरितं चंद कवि एयं ॥ छं० ॥ १३६ ॥

पावस वर्णन ।

अरिल्ल ॥ अंबुज विकसि बास अलियायौ । स्वामि बचन सुदरि समझायौ ॥
निसि पल पंच घटी दू आयौ । आषेटक जंपिरु न्रप आयौ ॥
छं० ॥ १३७ ॥

(१) ए. कृ. को.-सुरत्ति ।　　　　(२) ए. कृ. को.-अद्ध ।

हनूफाल ॥ घन घुम्मियं चिहुपास। आषेट राजन वास ॥
निर्घोष घन घहरंत। आकाल कलि किलकंत ॥ छं० ॥ १३८ ॥
द्रिगपाल पेंड़न सुद्ध। [1]हल जलज बद्दल उद्द ॥
धर पूर वारि विसाल। गिरि अंभ पूरित माल ॥ छं० ॥ १३९ ॥
तिन समय राजन सेन। धर स्याम अब्भनि गेन ॥
निसि अद्ध नवनिति बिज्जि। चिहु ओर घन घन गज्जि ॥
छं० ॥ १४० ॥
श्वित पंति पंति सु सज्जि। छिन दीप छिन छिन रज्जि ॥
झिमझुम्म लुंम विपष्ष। बहु बत्ति. जल अति कष्ष ॥
छं० ॥ १४१ ॥

दूहा ॥ अच्छौ दिन अच्छै महल। नवबति बज्जि बिसाल ॥
चव श्रुत ग्रह कैमास मत। भग्गी पीठ रसाल ॥ छं० ॥ १४२ ॥

कैमास और करनाटी का कामातुर होना।

लघु नराज ॥ जुग सत्त पुर पंचासयं। भव भद्द मास अवासयं ॥
अग मन्न पष्ष सु वारयं। दिसि दसमि दिवस उचारयं॥ छं० ॥ १४३॥
तम भूमि तंमि नितं तयं। गत महल गुरु गत मंतयं ॥
परजंकयं परमोदयं। अनु चंद रोहिनि कोदयं ॥ छं० ॥ १४४ ॥
दूल मिलिति मिलि जुग मंतयं। जुग जामि जामिनि पत्तयं ॥
सिष सिष्षयं पट रंगिनी। मन सज्ज सज्जित दंगिनी ॥छं०॥१४५॥
[2]दसयं धनं धन अच्छियं। सामानि केलि सु कच्छियं ॥
लिषि भोजयं भरि दासियं। दिय दौर ओर पियासियं ॥छं०॥१४६॥
दुति जाम पल दुति अंतयं। सषि स्वामिनी इह भंतियं ॥
असु हंकयं पल विर्त्तयं। रुचि राज सेन सु इत्तयं ॥ छं० ॥ १४७ ॥
भुअ सचित सेन निसुम्भयं। घन प्रघल रस [3]रस उभयं ॥
तन तेज दीपक अलपयं। रुचि राज राजित तलपयं ॥छं०॥१४८॥
दम दमकि दामिनि दोसयं। झम झमकि बूंद बरीसयं ॥

(१) ए.-जल। (२) ए. कृ. को. सदयं। (३) ए. कृ. को. मो-रस।

धुनि नूपुरं क्कत मंदयं । गत जहां सयन नरिंदयं ॥ छं० ॥ १४९ ॥
हिय पानि मंडित जागरं । कर मझि निरषत कागरं ॥
छिन बंचियं असु हंकियं । क्रम क्रमत राजन बंकियं ॥
छं ॥ १५० ॥
रस तिय निमेष अतीतयं । घनघोर रोर क्रतीतयं ॥
द्रिग द्रिगन दिष्षन अंगयं । कलमहल कलह अलंगयं ॥
छं ॥ १५१ ॥
सम परस पर प्रति दासियं । मुष भिन्न भिन्न प्रकासियं ॥
छं० ॥ १५२ ॥

कैमास का करनाटी के पास जाना ।

कवित्त ॥ नाज रूप कैमास । बाल नन चिपति भुष्ष गुर ॥
मदन बढ्यो गुर जोर । लगी तन ताप तलप उर ॥
नाह नारि छंडयौ । चिष्ष लग्गिय श्रोतानं ॥
लाज बैंद गयौ छंडि । रोग रोगी न पिछानं ॥
पीडयौ प्रेम मारुत सु तरु । राम नाम मुष ना कहिय ॥
जंभाति प्रकंपति सियरल [1]तन । बर प्रजंक पलक न रहिय ॥
छं० ॥ १५३ ॥

इंछिनी रानी का पत्र ।

दूहा ॥ कग्ग अरोह्यौ हंस ग्रह । महल सु राज दुआर ॥
कहती राज न मानते । लिषि पठ्यौ पावार ॥ छं० ॥ १५४ ॥
श्लोक ॥ न जानं मानवो नागेः न ज्ञानं जष्य किन्नरं ॥
अै अपूरबं देहं । दासी महल मनुष्ययं ॥ छं० ॥ १५५ ॥

पृथ्वीराज का इंछिनी के महल में जाना । इंछिनी का राजा को सब कथा सुना कर कैमास करनाटी को बतलाना ।

दूहा ॥ सुनि रु बचन चल्ल्यौ न्रपति । जहां इंछिनिय अवास ॥
कह्यौ क्रत्त कैमास कौ । जो दिष्यौ ग्रह दासि ॥ छं० ॥ १५६ ॥

---

(१) मो.-नन ।

हनूफाल ॥ जल सजल अच्छित सेनं। धर हरत धुम्मर ऐनं ॥
दम दमकि दामिनि दूरि। जलजात नैषद पूरि ॥ छं० ॥ १५७ ॥
करि इच्छिनिय ग्रह पंति। अनु मैंन रति सम पंति ॥
द्रिग दिष्षि क्रूलन वाज। तिय तरित अच्छित दाज ॥ छं० ॥ १५८ ॥
इक पंच धुन कर चंपि। तर तरकि दुअ बिच कंपि ॥
कैमास प्रति सम दीस। तहां बैंनं कोन प्रकीस ॥ छं० ॥ १५९ ॥
इक चुक्कि राजन जाम। पचारि इंछनि ताम ॥
बिप धऱ्यौ राजन पानि। कर करषि क्रन सु तानि ॥छं०॥१६०॥
बिय बुद्ध लगि [1]वहि गात। भर हरिय [2]भूमि निपात ॥
तकि तिष्य धष्षि न सिद्ध। बढि तोमरं तन बिद्ध ॥ छं० ॥ १६१ ॥
कहि क्रन्न बनिता बैन। अरि पऱ्यौ प्रभु [3]असु ऐन ॥
बानावली बर धाइ। चुकि नांहि जुग्गिनि राइ ॥ छं० ॥ १६२ ॥
गहि सुंदरी सारंग। दह नेव दुव्वनि अंग ॥
दिषि राज भवषित भग्ग। मन सोक सोच विलग्ग ॥ छं० ॥ १६३॥
[4]गड्यौ मुधन न्रप अप्प। बर उट्ठि राजन तप्प ॥
.... ॥ छं० ॥ १६४ ॥

राजा का कैमास को मार कर गाड़ देना और करनाटी का भाग जाना।

कवित्त ॥ रवन कंपि रव रवन। भवन भूषन धरि हरि परि ॥
आइय दंपति इष्षि। दिष्षि दाहिम उर उब्भरि ॥
चितें राज गति राज। कठिन मंन्नं मन अंतरि ॥
षनि गड्यौ कैमास। पाच सम दासि [5]लपं उर ॥
चलि सु दासि बोलन्न जो। सो भग्गी मन मानि भय ॥
समपी सुरिद्धि पांवारि कर। फिऱ्यौ अप्प ब्रन प्रिथ्थ [6]रय ॥
छं० ॥ १६५ ॥

---

(१) मो.-वढिय। (२) ए. कृ. को.-भूषन। (३) ए. कृ.-वसु।
(४) ए. कृ. को.-गडयो सु.। (५) मो.-मयं उर। (६) मो.-रथ।

पृथ्वीराज का अपने शिविर में लौट कर आना ।

दूहा ॥ गयौ राज बन जहां सयन । जुहं सामंतरु सूर ॥
संभ्रम सर सति चंद सों । सब बहु सम्मूर ॥ छं० ॥ १६६ ॥

देवी का अन्तरध्यान होंना ।

गई मात कविचंद कहि । भइय प्रात अनुरत्त ॥
दुचित चित्त अनुप्रात भय । चिंति भट्ट प्रापत्त ॥ छं० ॥ १६७ ॥

प्रभात वर्णन ।

कवित्त ॥ बजिग प्रात घरियार । देव दरबार नूर घुलि ॥
भ्रम्म सुक्रत अंकुरिय । पाप संकुरिय कुमुद मिलि ॥
सूर किरन बिसतरन । मिलन उद्दिम सत पची ॥
[1]काम घरी संकुटिय । उड़न पंषी मन मची ॥
मिलि [2]चक्क सु चक्क चकोर धर । चंद किरन बर मंद हुअ ॥
विड्डुरिग बीर बीरं रहन । सूर [3]कंट मन कंद धुअ ॥छं०॥१६८॥

पृथ्वीराज का रोजाना दरबार लगना और कविचन्द का आना ।

*कवित्त ॥ अंतर महल नरिंद । महल मंडिय बुलाय भर ॥
तेज तुंग आछत्य । देषि अबधूत धूत नर ॥
विरद भट्ट विरदैत । नेंन बीरा रस पिष्षिय ॥
सो ओपम कविचंद । रूप हरनार सदिष्षिय ॥
सामंत सूर मंडलि रषिय । कं चित्तें कैमास जिय ॥
भावी विगत्ति जानेन्न को । कहा विधाता निम्मयिय ॥ छं० ॥ १६९ ॥

वार्त्ता ॥ [4]राजन महल आरंभै । नीकी ठौर बैठक प्रारंभै ॥
सूर सामंत बोले । दरीषानै दुलीचै षोलै ॥
छच चमर कर लीने । मूढ़ा गादी सामंतन को दीने ॥छं०॥१७०॥

---

(१) ए. कृ. को.-काम घटी संकुरी ।　　(२) मो.-चक्क ।
(३) ए. कृ. को.-सुर कंद मन कंद हुअ ।　　(४) ए. कृ. को.-राज ।

*अरिल्ल ॥ मद्धि पहर पुच्छैं प्रभु पंडिय। कहि कवि विजै साहि जिहि मंडिय॥
सकल सूर बेठवि सभ मंडिय । आसिष आनि दीय कवि चंदिय ॥
छं० ॥ १७१ ॥

दरबार का वर्णन ।

भुजंगी ॥ ढरै कनक दंडं विराजैत रायं । नगं तेज जोत्यं झलक्कंत कायं ॥
ढरें चौंर सोहै लगे छच ढोरै । तहां चंद कब्बी उपम्मानि जोरै ॥
छं० ॥ १७२ ॥

ग्रहं एकठे मंडली अट्ठ षेलैं । लग्यौ राह निद्वंतियं अप्प भेलैं ॥
मिलो मंडली श्वत्य [1]विच न्नप्प भारी। मनों पारसं पावसं साम धारी॥
छं ॥ १७३ ॥

भरं भार कारी करें [2]वित्त सेनं । कसे संकमानं धनुद्धार तेनं ॥
[3]विरहाप चंदं बरहाय सब्बी । दिषी जोति चौहान संजोति हब्बी ॥
छं० ॥ १७४ ॥

पृथ्वीराज की दीप्ति वर्णन ।

दूहा ॥ मूढ़ा धरि गादी धरी । धुर सामंता राज ॥
देषि देव ग्रब्बं गरै । न्नप सिंघासन साज ॥ छं० ॥ १७५ ॥

रासा ॥ कनक दंड चामर छच विराजत राज पर ॥
रयन सिंघासन आसन सूर सामंत भर ॥
राजस तामस सत्त चयं गुन भिन्न पर ॥
मनहुं सभा मँडि वंभ बिय छिन्न अप्प कर ॥ छं० ॥ १७६ ॥

उपस्थित सामंतों की विरदावली ।

चोटक ॥ सभ द्वन्नन भट्ट कविंद कियं । सब राज दिसा रजपूत बियं ॥
भुज [4]दष्षिन लष्षिन कन्ह हुअं । रन भूमि बिराजत जानि धुअं ॥
छं० ॥ १७७ ॥

---

* छन्द १६९ और छन्द १७१ मो.-प्रति में नहीं हैं ।

(१) मो.-विचित्र भरि । (२) ए. कृ. को.-चित्त, चित्तं ।
(३) मो.-वरदास । (४) ए. कृ. को.-'दच्छिन, लच्छिन ।

जिन बीर महंमुद मान हन्यौ । अरि[1] अच्छ अछच पवार धन्यौ ॥
हरसिंघ हसिंह सुवाम [2]भुजं । उन मद्धि विराजत राज [3]दुजं ॥
छं० ॥ १७८ ॥

नरनाह सनाह सुस्वामि हुअं । जब चालुक भीम मयंद भुअं ॥
बर बिंझ विराजत राज दलं । जब चालुक चार नछिच हलं ॥
छं० ॥ १७९ ॥

परमाल चंदेलति संघ धरै । न्रप जाहि बकारत रौरि परै ॥
बर वीर सु बाहरराय तनं । अचलेसर भट्टिय जासु रनं ॥
छं० ॥ १८० ॥

कर बीर सिंघासन जासु चंपै । नर निद्दुर एक निसंक तपै ॥
जिहि कुप्पत गज्जत देस कंपै । धर विग्रह जाहि जिहांन जपै ॥
छं० ॥ १८१ ॥

* लरि लष्षन देषन दो ललियं । मुँह मारि मुरस्थल स्वस्थ हियं ॥
सनमान सबै दिन चन्द लहै । [4]पुठियं जुध वत्त सु आह कहै ॥
छं० ॥ १८२ ॥

रिसि पाइ के चावँड लोह जन्यौ । मदगंध गयंदन सों सु लन्यौ ॥
गहिलोत गयंद सु राज [5]वरं । भुज ओट सु जंगल देस धरं ॥
छं० ॥ १८३ ॥

तप तोंवर सोभिं पहार सही । दल दिष्य सु [6]साह सिताब ग्रही ॥
मुष मुच्छ सु अल्ह नरिंद मुषं । जुध मंडय साह सहाव रुषं ॥
छं० ॥ १८४ ॥

बड़गुज्जर राम कनक्क बली । जिहि सज्जत पंगुर देस हली ॥
कुवरंभ पजूनति राज बलं । जिन षग्ग सु जुग्गिनि जूह पलं ॥
छं० ॥ १८५ ॥

(१) मो.-अनूअ । (२) ए. कृ. को.-भुअं । (३) ए. कृ. को.-दुज ।
* यह पंक्ति केवल मो. प्रति में है । (४) ए. कृ. को.-पुच्छियं । " चावंड रिसाइ के लोह जन्यौ " (५) मो.-वगी, धरी । (६) ए. कृ. को.-ताह ।

नश्रगौर नरेस न्वसिंघ सही। जिन रिद्धि समंतन माझ लही॥
परमार सलष्यन लष्य गनै। इक पट्टिय कंगुर देस तनै॥छं०॥१८६॥
दस [1]पुत्रति मानिकराइ तनै। कहि को [2]तिनही उतपत्ति [3]बनै॥
जिन बंस जराजित बीर हुअं। सर संभरिजा उतपत्ति भुअं॥छं०॥१८७॥
नवनिक्करि के नव मग्ग गए। नवदेस अपूरब मारि लए॥
तिन पट्ट सु प्रथ्थय राज तपै। कलहौ कलहौ निसि द्योस जपै॥
छं०॥१८८॥
कर सिंगिनि टंक पचीस गहै। गुन अंग जंजीरनि तीन रहै॥
सर संधि समंतत तेज लहै। सबदं संर हैत अनंत बहै॥छं०॥१८९॥
गुन तेज प्रताप जो दून कहै। दिन पंच प्रजंत न अंत लहै॥
सम मंडप मंडित चित्त कियं। कवि अप्प सु अग्ग हकारि लियं॥
छं०॥१९०॥
गाथा॥ *हक्कारिय चन्द कव्वी। देवी वरदाय वीर भट्टायं॥
तिहुं पुर परागद वानी। अग्गें आव राव आएसं॥ छं०॥१९१॥
पद्धरी॥ बेमग्गराइ दारिद विभाड़। अचगल्ल राइ जाड़ा उपाड़॥
अनपुठ्ठराय पुट्ठिय पलानि। मुह कंठराय तालू लगान॥छं०॥१९२॥
असपत्ति राय उथ्थापि हथ्थ। अस कत्ति राय थापन समथ्थ॥
महाराज राज सोमेस [4]पुत्त। दानवह रूप अवतार धुत्त॥छं०॥१९३॥

कविचन्द का राजा के पास आसन पाना।

दूहा॥ †आयस सुनि अग्गे [5]भयौ। दयौ मान कर अप्प॥
[6]सहि न जास कविचंद पै। निकट न्रपत्ति सु तप्प॥ छं०॥१९४॥

कन्ह का कविचन्द से मानिक राय के पुत्रों की पूर्व कथा पूछना।

(१) मो.-पुत्रनि। (२) ए. कृ. को.-तिनकी। (३) ए. कृ. को.-गनै।
* यह गाथा मो. प्रति के सिवाय अन्य प्रतियों में नहीं है।
(४) मो.-पूर। (५) मो.-गयौ। (६) ए. कृ. को.-"सह्यौ न जाइ"
† इस छन्द के बाद का पाठ मो. प्रति में नहीं मिलता।

जराजित्त मानिक सुतन । कन्ह पुच्छि कविचंद ॥
तिहि बंधव कारन कवन । काढ़ि दिए करि दंद ॥ छं० ॥ १९५ ॥

कवि का उत्तर कि "मानिक राय की रानी के गर्भ से एक अंडाकार अस्थि का निकलना"।

अरिल्ल ॥ तक्षक पुर चालुक ग्रह पुत्तिय । मानिकराव परिनि गज गत्तिय ॥
तिहि रानी पूरब क्रम गत्तिय । इंडज आकृति हड्ड प्रसूतिय ॥
छं० ॥ १९६ ॥

मानिक राय का उसे जंगल में फिकवा देना।

कवित्त ॥ कह जानै कह होइ । अस्ति गोला रँभ अंदर ॥
हुकुम कियौ मानिक्क । जाइ नंषौ गिरि कंदर ॥
नह मन्यौ रागिनी । करे अपमान निकासिय ॥
सेंभरि कै उपकंठ । रहिय चालुक पुरवासिय ॥
सोवी विगत्ति मन सोचि कै । बहुत भंति घन जतन किय ॥
दिन दिन अधिक्क बधतौ निरषि । हरषि आस बढ्ढिय सु हिय ॥
छं० ॥ १९७ ॥

दूहा ॥ मुरधर षंडहु काल परि । लैब सही सँग भंड ॥
आय कमधती कर रहिय । चालुक पुर गुढ़ मंड ॥ छं० ॥ १९८ ॥

मानिक राय का कमधुज्ज कुमारी के साथ व्याह करना।

कवित्त ॥ सोलंकिन मन मोच । प्रठंय परधान विचच्छन ॥
दै असंष धन धान । मंगन थप्पाइ ततच्छन ॥
पानिग्रहन कर लियौ । कुअर हड्डा कमधज्जनि ॥
दसह्ह दिसि उड़ि बत्त । सुने अचरज पति गज्जनि ॥
आरंभ गोख करि फौज को । गोला रँभ उप्पर चलिय ॥
नीसान डंक के बज्जते । नव सुलष्य साहन मिलिय ॥
छं० ॥ १९९ ॥

गजनी पति का मानिक राय पर आक्रमण करना।

भुजंगी ॥ नवं लष्य सेना सजे गज्जनेसं। चल्यौ चढ्ढि मग्गं अछिंदं दिनेसं ॥
घलक्कंत अंदू गजं मद्द-छक्के। कमट्ठं दिगंपाल नागं कसक्के ॥
छं० ॥ २०० ॥

प्रजारंत ग्रामानि धामं मिवासं। प्रजा कोक भज्जी उरं लग्गि चासं ॥
दरं कूच कूचं धरा हिंदु लेनं। सुन्यौ संभरीनाथ आवंत सेनं ॥
छं० ॥ २०१ ॥

करेचा परे ताम नीसानं घायं। सतं मुष्य क्रम्यौ सु मानिक्क जायं ॥
पचीसं हजारं चमू चाहुआनं। मिली जाम मध्ये प्रथंमं मिलानं ॥
छं० ॥ २०२ ॥

पुरं चालुकं जाय डेरा सु दीनं। भज्यौ रूस नो रागिनी गोठि कीनं ॥
फिरे चढ्ढियं देय नीसान बंबं। गरज्जे मनों सायरं सत्त अंबं ॥
छं० ॥ २०३ ॥

उस अस्थिअंड का फूटना और उसमें से राजकुमार का उत्पन्न होना।

परज्जंद उट्ठे अग्राजं सबद्दं। नचै बीरभद्रं जिसे वीर हद्दं ॥
बज्यौ सिंधु औ राग सारं करारं। तबे हड्ड फट्यौ प्रगट्यौ कुमारं ॥
छं० ॥ २०४ ॥

प्रचंडं भुजा दंड उत्तंग छत्ती। नरं नारसिंघं अवत्तार भत्ती ॥
कवचं कसे उत्तमंगं सटोपं। धरा बाहरा अश्व आरूढ़ कोपं ॥
छं० ॥ २०५ ॥

पहुंच्चे पिता अग्ग दौरे पहिल्लं। अरी फौज में जोर पारे दहल्लं ॥
नषं तिष्य धारा गरग्गं सु धारे। हिरंनंकुसं गोल रंभं विदारे ॥
छं० ॥ २०६ ॥

इसे लोह वाहे छछोहे दुदीनं। मनो इंद्र हत्तासुरं जुद्ध कीनं ॥
वहे रत्त धारान के पाल नालं। परे भूमि भूमे भरं विकरालं ॥
छं० ॥ २०७ ॥

परी पंषिनी जोगिनी बीर ईसं। नचै नारदं आदि पूरी जमीसं॥
कहां लग्गि चंदं बरन्नै सँग्रामं। भगी साह सेना तजे ग्रब्ब मामं॥
छं०॥ २०८॥

गजं बाज लूटे असंषित्त मालं। लियौ संग्रहे अस्सपत्ती भुआलं॥
छं०॥ २०९॥

उक्त राजकुमार का नाम कर्ण और उसका सम्भर का राजा होना।

कवित्त॥ गोला रंभ रिन गंजि। भंजि नवलष्ष भुजा दंडि॥
सतरि सहस मयमत्त। करे सिर दंड साह छंडि॥
पुनि सेंभरि पुर आय। पूजि आसा वर माइय॥
उर्द्ध पाल दिय नाम। विरद हाड़ा बुल्लाइय॥
असुरान मेटि करि हिंदु हद। पिता राज लद्धिय तवै॥
अस्तिपाल हुअ संभरि न्रपति। हड्ड मंड फट्टिय जबै॥
छं०॥ २१०॥

संभर की भूमी की पूर्व्व कथा।

पद्धरी॥ सेंभरिह मझ्झ सेंभरादेव। मानिक्क राव तिन करत सेव॥
सुप्रसन्न होइ इन दिन बरज्जि। मति लेय दंड करि सिर परज्जि॥
छं०॥ २११॥

चढ़ि पवँग पहुमि षरि है जितक्क। अनषूट रजत ह्वै है तितक्क॥
करि हुकुम मात सेंभरि पधारि। चहुआन ताम हय चढ़ि हकारि॥
छं०॥ २१२॥

द्वादसह कोस ऊतरं कुमंत। भवतव्य कोन मेटै निमंत॥
मन आनि भ्रंति फिरि देषि पच्छ। ह्वै गयौ लवन गरि सर प्रतच्छ॥
छं०॥ २१३॥

उपजीय चित्त चिंता निरास। छंडिय सु देह चंदहु प्रकास॥
अनचिंत म्रत्त हुअ कलह बढ्ढि। बड़ प्रुच जराजित बंध कढ्ढि॥
छं०॥ २१४॥

परजंन लाज गुरजन्न मुक्कि। गोहड्ड नंषि जल घाट रुक्कि ॥
पंधार लार करि सिलह बंधि। उत्तारि आय निज देह रुंधि ॥
छं० ॥ २१५ ॥

धर बेध षेध लग्गिय अनादि। रघु भरथ पंड कुरु जुद्ध बादि ॥
लिय राज पाट हय गय भँडार। मेटै न चित्त उषित्त घार ॥
छं० ॥ २१६ ॥

हो तौ सु जानि फिरि कदंब गोत। डेरा उपारि बिय रवि उदोत ॥
अनि अन्नि साष थप्पित उतन्न। उगलीय जीय मानिक तन्न ॥
छं० ॥ २१७ ॥

*इह कथा जाम कहि रहिय चंद। फिरि निकट बोलि लिय तब नरिंद॥
छं० ॥ २१८ ॥

अरिल्ल ॥ मध्य प्रहर पुच्छै न्टप पंडिय। कहि कवि विजै साह जिन मंडिय॥
सकल सूर बैठे विस मंडिय। आसिक तहां दीय कवि चंदिय ॥
छं० ॥ २१९ ॥

कविचन्द का आशीर्वाद।

साटक ॥ केके देस नरेस सूर किद्रसं, आचार जोवा न्टपं।
किंकिं देन प्रमान मान सरसा, किंकिं कयं भष्ययं ॥
किंकिं भेस कि भूप भूषन गुनं, का सो प्रमानं धरं।
[1]किंनारी नर मान किं नर वरं, जंपे कविंदं तुअं ॥
छं० ॥ २२० ॥

कवित्त ॥ नरह नरेस विदेस। भेस जूजू रसधा रस ॥
कै मंडे जस रस समूह। काल भ्रमया न केन बस ॥
सबे षाइ संसार। किनै संसार न षायौ ॥
मोहनि चित्त निहार। जगत सब बंध नचायौ ॥

*छन्द १९३ से लेकर छन्द २८० तक की कथा क्षेपक मालूम होती।

(१) ए.कृ.को.-नारी।

नच्चै न मोह जग द्रोह जिम। मुगति भुगति करि ना नचै॥
बसि परै पंच पंचो अगनि। मोह छांह सब को पचै॥छं०॥२२१॥

चौपाई॥ [1]हुंकरि चंद देवि बरदाइय। भद्र विरह तिहं पुर ताइय॥
उमा जिनै जुग जुगति जगाइय। मुगति भुगति अप संगह छाइय॥
छं०॥२२२॥

राजौवाच।

दूहा॥ सबै सूर सामंत [2]जुरि। बिना एक कैमास॥
[3]तस जानौ बरदाइ पन। मंचि जोग नन पास॥छं०॥२२३॥

अरिल्ल॥ प्रथमैं सूर पुच्छै चहुआनय। है कयमास कहौ कहं जानय॥
तरनि छिपंत संझ सिर नायौ। प्रात देव हम महल न पायौ॥
छं०॥२२४॥

राजा का कहना कि यदि तुम सच्चे बरदाई हो तो बतलाओ कैमास कहां है।

दूहा॥ उदय अस्त तौ नयन दिठि। जल उज्जल ससि कास॥
मोहि चंद है विजय मन। कहहि कहां कैमास॥छं०॥२२५॥
नन दिठ्ठौ कैमास कबि। मो जिय इय [4]संदेह॥
चामंडा बीरह सुमन। अप्पौ न्रप्प सु छेह॥छं० २२६॥
नाग पुरह नर सुर पुरह। कथत सुनत सब साज॥
दाहिम्मौ दुल्लह भयौ। कहि न जाय प्रथिराज॥छं०॥२२७॥
का भुजंग का देव ससि। निकम कवित्त जु षंडि॥
कै बताउ कैमास मुहि। न्हर सिद्धी बर छंडि॥छं०॥२२८॥

कवित्त॥ जौ प्रसन्न बरदाय। देव संचौ बर अप्पौ॥
कहि अदिष्ट कैमास। देवि बर छंडि न जप्पौ॥
तीन लोक संचरै। सत्ति तिनकी बरदाई॥
तूपन अप्पन छंडि। जोग पाषंडह षाई॥

(१) ए. कृ. को- हक्करि (२) ए. कृ. को- तुरि।
(३) ए. कृ. को- तम (४) ए. कृ. को- अंदेस।

मानहु सु बात अरु बेग बत । कहिग साच कविचंद तत ॥
मन बच क्रम्म कैमास धन । जौ दुरगा सची सुभत ॥
छं० ॥ २२९ ॥

कवि का संकोच करना परंतु राजा का हठ करना ।

दूहा ॥ जौ छंडे सेसह धरनि । हर छंडै विष कंद ॥
रवि छंडै तप ताप कर । बर छंडै कविचंद ॥ छं० ॥ २३० ॥
हठ लग्गौ चहुआन नृप । अंगुलि मुष्ष फुनिंद ॥
तिहुंपुर तुअ अति संचरैं । कहै बनै कविचंद ॥ छं० ॥ २३१ ॥
जौ पुच्छै कविचंद सों । तौ ढंकी न उघारि ॥
अब कित्ती उपर चंपौ । सिंचन जानि गमारि ॥ छं० ॥ २३२ ॥

चन्द के स्पष्ट वाक्य ।

सेस सिरप्पर छ्रर तन । जौ पुच्छै न्रप एस ॥
दुहुं बोलन मंडन मरन । कहौ तौ कव्वि कहेस । छं० ॥ २३३ ॥
होता नत कविचंद सुनि । तूं साचौ बरदाइ ॥
कहि मंची कैमास सौ । क्यों मा-यौ अप धाइ ॥ छं० ॥ २३४ ॥

गाथा ॥ कहना न चंद [१]चित्तं । नर भर सम राज जोइयं नयनं ॥
आचिज्ज मूढ़ [२]वत्तं । प्रगट भवसि अवसि आरिष्टं ॥ छं० ॥ २३५ ॥

कवित्त ॥ एक बान पहुमी । नरेस कैमासह मुक्यौ ॥
उर उप्पर [३]थर ह-यौ । बीर कष्पं तर चुक्यौ ॥
बियौ बान संधान । हन्यौ सोमेसर नंदन ॥
गाढ़ौ करि निग्रह्यौ । षनिव गड्यौ संभरि धन ॥
थल छोरि न जाइ अभागरौ । गाड्यौ गुन गहि अग्गरौ ॥
इम जंपै चंद बरद्दिया । कहा निघट्टै इय [४]प्रलौ ॥ छं० ॥ २३६ ॥

(१) मो.- वित्तं । (२) ए. कृ. को.- मंत्तं, मंतं ।
(३) ए. कृ. को.-परहन्यौ । (४) मो.-प्रलै ।

राजा का संकुचित होना।

दूहा ॥ सुनि न्रपत्ति कवि के वयन। अनन बीय अवरेष ॥
कविय [1]वचन सम्हौ भयौ। सूरै कमोदनि देष ॥ छं० ॥ २३७ ॥
गाथा ॥ झंझामि झार लग्गी। संझ्या वंदामि भट्ट बचनानि ॥
बुझझामि हाम को इनं। षम दम उर मझ्झ रष्यियं राजं ॥
छं० ॥ २३८ ॥

सब सामंतों का चित्त संतप्त और व्याकुल होना।

कवित्त ॥ भट्ट वचन सुनि श्रवन। कन्ह धुनि सीस ग्रेह गय ॥
विसम परिग सामंत। सुनिय साचं जु तत्त भय ॥
कोन काज इह षेह। हुऔ मंची इह राजन ॥
निसि अद्दी आषेट। कियौ किं कीऐ भाजन ॥
किं भट्ट बीर जान्यौ सु रिन। कह सुझ्यौ संभरि धनी ॥
अंगुरी दंत चंपी सकल। अप अप ग्रेह उठि भनी ॥ छं० ॥ २३९ ॥

सब सामंतों का खिन्न मन होकर दरबार से उठ जाना।

वाघा ॥ सुनि सुनि श्रवन चंद चहुआनं। कलिमलि चित्त सुभट सब्बानं ॥
के अवलोइ सु मुष्षं चंदं। निरषे नयन के विभूत दंदं ॥छं०॥२४०॥
के भय मूढ़ ऊढ़ बर अप्पं। के भय चित विरत्त सु दप्पं ॥
समुझि न परे सूर सामंतं। गंठन गुन नन आवै अंतं ॥
छं० ॥ २४१ ॥
निरषें द्रग मुष रत्त करूरं। असही तेज अजेज सनूरं ॥
निरषे अन्यौ अन्य सजूरं। भय भय चित्त सुभट्ट सपूरं ॥
छं० ॥ २४२ ॥
गहके बद्दर गज्जि गुहीरं। भय न्रिघात तरित तन भीरं ॥
भय गंभीर सुहीर समीरं। उड्डे कर सर रेन सनीरं ॥ छं० ॥ २४३ ॥
घट्टी मह्र पंच पल सेषं। विन भद्रवै भयानक भेषं ॥

(१) मो.-षेचन।

दिसि नैरत्ति कि गहि गोमायं। दिसि धूमंत सिवा सुर तायं॥
छं० ॥ २४४ ॥

बद्दी देवि चकोरन भासं। गज्जे छोनि अोनि आयासं॥
मन्न सद्द आरिष्ट अपारं। उपज्यौ किन कारन कत्यारं॥
छं० ॥ २४५ ॥

भुव अवलोकि कन्ह नर नाहं। उट्ठे आसन हुंत अराहं॥
चल्ले अप्प निज मग्ग सु ग्रेहं। फुनि गोयंदराज उठि तेहं॥
छं० ॥ २४६ ॥

[1]उनमन मन्न उट्ठि सामंतं। कलमलि विकल उकल्ल सा चिंतं॥
कहै चंद बरदाइ सकोहं। [2]हनि कैमास दासि रिस दोहं॥
छं० ॥ २४७ ॥

सुनि सुनि वचन भट्ट न्नप कानं। अप्पअप्प गए ग्रेह परानं॥
जुग्गिनि पुर [3]जग्गत चहुआनं। भइ निसि चार जाम जुग मानं॥
छं० ॥ २४८ ॥

सब के चले जाने पर कविचन्द का भी राजा को धिक्कार कर घर जाना।

कवित्त ॥ राजन मझ्झ [4]संपरिय। पट्ट दरबार परट्ठिय॥
बहुरे सब सामंत। मंत भग्गिय सिर लट्ठिय॥
रह्यौ चंद बरदाइ। विमुष पग डगन सरक्क्यौ॥
ग्रभ्भ तेज वर भट्ट। रोस जल पिन पिन सुक्क्यौ॥
रत्तरी कंत जागंत रै। भई घरंघरं बृत्तरी॥
दाहिम्म दोस लग्गयौ परौ। मिटै न कलि सौं उत्तरीं॥छं०॥२४९॥

चौपाई ॥ इह कहि ग्रेह चंद संपन्नौ। बर कैमास आसु भलपन्नौ॥
मित्रद्रोह भट उर सपन्नौ। दाहिम बरन बरन संपन्नौ॥
छं० ॥ २५० ॥

---

(१) मो.-"उने मत मन्न उठे सामंत। (२) ए. कृ. को.-हति।
(३) मो.-जग्गे। (४) ए. कृ. को.-संभारिय।

पृथ्वीराज का शोकग्रस्त होकर शयनागार में चला जाना और नगर में चरचा फैलने पर सब का शोकग्रस्त होना।

पद्धरी ॥ निज रहन अंग साला सु एक। आवास रंग रचन विवेक ॥
अंदर महल्ल अंतर अवास। अति [1]रचन चित्र आसासि तास ॥
छं० ॥ २५१ ॥

पर्यंक उभय आभासि भासि। [2]अति ऊक गंध रसु रस्स वासि ॥
आरोहि अप्प सोहै सु राज। बिन तरुनि करुन मुष छादि राज ॥
छं० ॥ २५२ ॥

दर रष्षि बोल आएस दीन। रुक्यौ सु अप्प पर वच्च चिन्ह ॥
किय सयन पेम न्रप जंपि अप्प। रष्यौ सु थान निज दप्प रप्प ॥
छं० ॥ २५३ ॥

बैठो सु पिट्ठ [3]पट सूर घट्ट। रष्षे सु जक्कि सब थान थट्ट ॥
भय चकित चित्त अंदर बहाज। भयभीत मंन मन्ने अकाज ॥
छं० ॥ २५४ ॥

इह क्रत्य चित्त नयरी निवास। सब लोक दोष उद्दार रास ॥
रूंधे सु हट्ट पट्टन सु बान। बिन रूप दिष्षि दिट्ठिय डरान ॥
छं० ॥ २५५ ॥

सब पत्त सूर सामंत ग्रेह। क्रत्या सु क्रत्य मन्नेव एह ॥
इह क्रम्यौ दुष्प विते चिजाम। भयभीति निसा मन्नी [4]सहाम ॥
छं० ॥ २५६ ॥

भइ [5]घिनद जाम चव जुगं समान। सब लीक दुष्प बित्ती डरान ॥
कैमास ग्रेह चिंत्यौ सु दोस। गञ्यौ सु दासि पुनह सरोस ॥ छं० ॥ २५७ ॥
चंद्रेन चिंति निज नाह सत्त। चढ़ि चलिय ग्रेह बरदाइ जत्त ॥
छं० ॥ २५८ ॥

(१) ए. कृ. को-चरन। (२) ए. कृ. को.-"अति ऊक गंध रव सुर सवास"।
(३) ए. कृ. को.-पट्ट। (४) ए. कृ. को.-महाम। (५) ए. कृ. को. विमद।

उग्गियं मान पायान पूर। बज्जियं देव [1]दर संष तूर॥
*कलत्र कैमास चढ़ि वरन साल। बरदाइ देवि वर मंगि बाल॥
छं॰॥ २५९॥

कवि का मरने को उद्यत होना।

चंद्रायन॥ चलै चीय बर मंगन भट्ट सु भट्ट बर।
अप्पावै कैमास मिले जाइ अंग बर॥
टर छुट्टी कवि हित्त घरी पल बरनि बर।
तौ जन जन सह चिंत सत्ति तुअ देव बर॥ छं॰॥ २६०॥

रोला॥ चंद बदनि ये चंद सीष कोमंगि उचारी।
मरन टरे जो भट्ट राज कैमास विचारी॥
हम तुम दुहुन मिलंत सुनी अंगन तुम धारी।
दंपति सम्हौ बचन तब्ब बर बरनि उचारी॥ छं॰॥ २६१॥

गाथा॥ बाला न अच्छि लग्गी। हुं बरदाइ कढ्ढिया अग्गी॥
तंबाल विरस लग्गी। लच्छिन पुरसान रष्षिया मग्गे॥छं॰॥२६२॥
आदर दीन सु कंन्नी। आसन आछादि रोहि तिय तथ्थं॥
निज प्रारथना राजं। गोमझ्झे ग्रेह साजनं साजः॥ छं॰॥ २६३॥

कविचंद की स्त्री का समझाना।

चौपाई॥ तब ग्रेहनि बरदाइ सु आइय। अंचल गंठि विलग्गिय धाइय॥
को [2]अति जात अप्प जम आनै। अनि सिर सत्य अप्प सिर तानै॥
छं॰॥ २६४॥
जिन कैमास रिद्धि रज रष्षी। जिन कैमास मंच सिर सष्षी॥
जिन कैमास देस नव आने। सो कैमास हत्यौ निज बाने॥छं॰॥२६५॥

(१) मो-दरबार नूर।

* इस छन्द को चारों प्रतियों भुजंगी नाम से सम्बोधन किया गया है। मूल पाठ भी "उग्गियं भान पायान पूरं, बज्जियं देव द्दर संख तूरं। कलत्र कैमास चढ़ वरन साला। देवी बरदाय वर मंगवाला।" यह है परन्तु यह भुजंगी नहीं है। भुजंगी छन्द में चार यगण होता है। मालूम होता है लेख की भूल से कुछ हेर फेर होगया है अस्तु हमने इस छन्द को पूर्वोक्त पद्धरी में मिला कर पाठान्तर दे दिए हैं।

(२) ए. कृ. को.-अनि।

तू भूल्यौ बरदाय विचारं। अच्छिर सुद्धिसुद्ध मन द्वारं॥
जे जमग्रेह न अप्प ढुंढाने। सो आगवै काय विनसाने॥
छं०॥ २६६॥

कवित्त॥ जा जीवन कारनह। भ्रम्म पालहि सत टारहि॥
जा जीवन कारनह। [1]अथ्थि दै चित्त उबारहि॥
जा जीवन कारनह। द्रुग्ग हय देसति अप्पहि॥
जा जीवन कारनह। होम करि नव ग्रह जप्पहि॥
जा जीवन सांई सुपन। न्रपति बहुत जाचिय अभौ॥
सुक्के सु सरोवर हंस गौ। कलि बुझ्झै अधियार [2]भौ॥छं०॥२६७॥
जो मनुच्छ धर भ्रम्म। मरम जानै न मरम जप॥
सास आस बंधयौ। आस आसना करै अप॥
जग्ग जोग तप दान। सास बंधन जग्गो जुअ॥
मोर बीर अनुकार। सास नन असन बंध धुअ॥
छिन देह भंग विज्जल छटा। सजय विजय [3]बंधय सु जिय॥
गुर गल्ह रहै भल पत सुचौ। दुष्य न करो महंत पिय॥छं०॥२६८॥
मात गरभ बस करी। जम्म बासुर बस लभ्भय॥
षिनन नग्गि षिरुदाय। मुदय षिन हंस अलुभ्भय॥
बपु विसष्य बढ्ढयौ। अंत रुङ्गह डर डरयौ॥
कच तुच दंत जरार। धार किम किम उच्चरयौ॥
मन भंग मग्ग मुक्कत सयल। निषत निमेषन चुक्कयौ॥
पर कज्ज अज्ज मंगौ न्रपति। सकै न [4]प्रान पमुक्कयौ॥छं०॥२६९॥

दूहा॥ समरि जाय कविचंद बर। बर लद्धौ हुंकार॥
राज दरह सम्हौ चलै। मरन सुमंगल भार॥ छं०॥ २७०॥

स्त्री के समझाने पर कवि का दरबार में जाना और राजा से कैमास की लाश मांगना।

(१) मो.-अथ्थह। (२) मो. सौं।
(३) मो.-बंधिय। (४) ए. कृ. को.-"प्रान पमुक्कयौ।

कवित्त ॥ रष्षि सरनि सह गवनि । मरन मंगल अपुब्ब किय ॥
दरनि पिष्षि दरबार । रुक्कि सक्यौ न मग्ग दिय ॥
जग्गि जलनि प्रथिराज । नैन नेनं जब दिष्यौ ॥
अति करना रस बीर । करी संकर रस लिष्यौ ॥
बुल्ल्यौ न बेन तबं दीन हुअ । कनक काम कबि अच्छयौ ॥
तुम देव किंत्ति कुहलिय कमल । धरनि धरनि तन मुक्कयौ ॥
छं० ॥ २७१ ॥

दूहा ॥ रहि सु भट्ट अंतर करन । कविन अम्म धर भूर ॥
इह अभम्म लग्गहि उरह । क्रम्म उरक्कहि जर ॥ छं० ॥ २७२ ॥

गाथा ॥ बाला न मंगि बरयौ । काउ वासंत भट्ट [1]सियाइं ॥
ना तुअ गति संभरवै । संभरि वै राय रारसं ॥ छं० ॥ २७३ ॥

पृथ्वीराज का नाहीं करना।

दूहा ॥ पढ़िय किंत्ति बुल्लिय बयन । दिल्ली पुरह नरिंद ॥
दाहिम्मौ दाहर जहर । को कट्टै कविचंद ॥ छं० ॥ २७४ ॥

कवि का पुनः राजा को समझाना।

कवित्त ॥ रावन किन गड्डयौ । क्रोध रघुराय बान दिय ॥
बालि सु कित गड्डयौ । चीय सुग्रीव जीय लिय ॥
चंद किन्न गड्डयौ । कियौ [2]गुरवारस हिल्लह ॥
[3]रविन पंग गड्डयौ । पुच्छि सहदेव पहिल्लह ॥
गड्यौ न इंद्र गोतम रिषह । सिव सराप छंडन जनी ॥
इन दोस रोस प्रथिराज सुनि मति गड्डय संभरि धनी ॥
छं० ॥ २७५ ॥

ना राजन कुर नंद । [4]नाक वत्ती [5]क्रन कट्टी ॥
अभम्म बीर विक्रम्म । सक्क बंधी कल [6]मिट्टी ॥
पंजर सह सु रारि । दिष्षि गंध्रव न्रप अंजों ॥

(१) ए. कृ. को. सिरयाई, सिरपाई। (२) कृ.-गुरवास हिल्लह।
(३) ए.-रवनि।
(४) ए. कृ. को.-नाक वित्ती। (५) मो.-कढ्ढी। (६) मो.-कट्ठी

तमकि तास अगि मारि। क्रित्ति पुत्त मुक्किय अज्जों॥
सो सत्ति बात आतम पुरिसि। तामस इह आपुन मिटै॥
किं जान लोय किं किं [1]जथह। कित्ति तोय बहु न्रप नटै॥
छं०॥ २७६॥

कवि का कैमास की कीर्ति वर्णन करना।

मति कैमास मति मेर। दोस दासी न हनिज्जै॥
मति कैमास मति मेर। सामि दो हौ न गनिज्जै॥
मति कैमास मति मेर। दंड कुब्बेर भरिज्जै॥
मति कैमास मति मेर। दाग बिन धरनि धरिज्जै॥
बहि गई सरक नगौर की। मंच जोर सेवर कहर॥
चहुआन राव चिंतारि चित। गह्यौ कढ्ढि दै करि नहर॥
छं०॥ २७७

दूहा॥ दासि संग कैमास कढि। जग दिष्षवै नरिंद॥
बरै बरनि अंगन घरी। बर मंगै कविचंद॥ छं०॥ २७८॥

कैमास की लाश उसके परिवार को देना।

कवित्त॥ रीस मेल्ही दासी सु। राज लिन्नौ अध लिष्यौ॥
सो नट्ठी तिन बेर। कढ्ढि [2]कैमासह दिष्यौ॥
कविय हथ्थ अप्पयौ। अप्प बरनी बर लिन्नौ॥
पुच बीर दाहिम्म। हथ्थ कविचंद सु दिन्नौ॥
तिहिं तरुनि मिलत तारुन्नि करिनि। पेम पंसि विधि विधि करै॥
कविचंद छंद इम उच्चरै। भावी गति को उब्बरै॥ छं०॥ २७९॥

राजा का कैमास के पुत्र को हाँसीपुर का पट्टा देना।

कविय पुच कैमास। राज हांसीपुर दिन्नौ॥
पुब्ब धनं पन अप्पि। गोद नरसिंह [3]सु किन्नौ॥
तिहि सुं दिनह प्रथिराज। बीर दुरबार सजोइय॥
बरनि बज्जि नौसरन। रोस छिम सात्वक होइय॥

(१) ए. कृ. को. जयियं। (२) मो.-कैवास। (३) ए. कृ. को.-सु दिन्नौ।

सुरतान गहन मोषन न्रपति । पंग बीय पातुर दरसि ॥
दिषि चीय सभा मन पंग कौ । छबि संमुह बरि बरि बिरसि॥
छं० ॥ २८० ॥

दूहा ॥ प्राहारी कैमास न्रप । सो अप्पे विह सत्त ॥
न्रप पुच्छत कविचंद कों । अरु गुर राज सहित्त ॥छं०॥२८१॥

पृथ्वीराज का गुरुराम और कविचन्द से पूछना कि किस पाप का कैसे प्रायश्चित्त होता है।

तुम गुर न्रप अरु गुर कबी । तुम ज्ञानी बहु काम ॥
किहि परि गह लंछन लगै । [1]को मेटै लगि साम ॥ छं० ॥ २८२ ॥

कविचन्द का उत्तर देना। (सामयिक नीति और राज नीति वर्णन)

पद्धरी ॥ उच्चरै चंद गुर राज साज । कल कहै बत्त सो नीत राज ॥
संभरहु सूर सोमेस पुत्त । कल धूत धूत [2]जग धूत धुत्त ॥
छं० ॥ २८३ ॥

सम वर प्रधान सम तेज राज । सम दान मान सामत्ति साज ॥
पलटै कि राज लछन लीन । बहु भंति कुलह विग्गरै तीन ॥
छं० ॥ २८४ ॥

विग्गरै सूत्र हंकार मभ्भ । बर जाय अप्प रस ध्रम्म रज्ज ॥
विग्गरै राज राजन अन्याइ । विग्गरै ग्रेह चीया अछाय ॥
छं० ॥ २८५ ॥

उद्दिम सु हीन न्रप राज राइ । तिन चंद चंद प्रातह दियाइ ॥
विग्गरै इष्टपन कट्ठ नेह । विग्गरै सोय निज लोभ ग्रेह ॥
छं० ॥ २८६ ॥

विग्गरै मोह भर समर साज । विग्गरै लच्छि बौहरे लाज ॥
प्रसट्ठै अध्रम्म विगरै ध्रम्म । संभरि सु राज राजन सु ध्रम्म ॥
छं० ॥ २८७ ॥

---

(१) मो.-"कै मैटन लग्गी काम"। (२) ए. कृ. को.-गज।

साधम्म सेव गरुअत्त जीव। चिय राज नीति राजह न सीव॥
बिग्गरै पुन्य धीरह सु ह्लव। मादक्क ग्रेह बहु इष्ट ह्लव॥
छं० ॥ २८८ ॥

विग्गरै राज परदार [1]पान। लोभिष्ट चित्त चंचल प्रमान॥
विग्गरै राज सुय बाल ह्लर। संचरै बहुंत सषि मभ्भ्क दूर॥
छं० ॥ २८९ ॥

विग्गरै दुज्ज ग्रह अंत दान। विग्गरै तप्प क्रोधह प्रमान॥
विग्गरै राज राजन सु जानि। जो सुनै बत्त दुष्टं सु बानि॥छं०॥२९०॥

परनारि [2]षित्त आचरन होइ। विग्गरै राज निज संच सोइ॥
तन सहै राज चिंतन प्रमान। पुच्छहि सु बोल कनवज्ज जान॥
छं० ॥ २९१ ॥

पुच्छि मंच राय संभरि नरेस। तत ग्रहै राज नीतह सुरेस॥
उच्चऱ्यौ राव जंबू नरेस। संभरिय राज संभरि नरेस॥छं०॥२९२॥

[3]तव बंस भाव जरतित्त मान। संभरी हुत ऊपत्ति थान॥
तिहि सेन राजनीतह सु राज। सो नीत राज जित [4]सुरग राज॥
छं० ॥ २९३ ॥

रिसराज जोर तिन तह प्रमान। बंधयौ सकल तिन राज [5]थान॥
कसि असक ओर कसि द्रव्य दंड। दिज्जियै ओर जोगिंद डंड॥
छं० ॥ २९४ ॥

भंजियै बंक कै बंक साल। भजि कठिन कंक कौ कठिन बाल॥
बल पुच [6]माय सम सुमति जाइ। आनयौ पुत्र सम रहिस धाय॥
छं० ॥ २९५ ॥

[7]पंडिय सु दोस दुज दान प्रीय। न्रप दुरै झूठ कित्ती सु [8]दीय॥
न्रप नीति भ्रम्म समकाल लोय। बंकै कटाछ्य बंके न कोय॥
छं० ॥ २९६ ॥

(१) ए. कृ. को.-थान। (२) ए. कृ. को.-चित्त। (३) ए. कृ. को.-तम।
(४) ए. कृ. को.-सुग्गि। (५) ए. कृ. को.-धान। (६) ए. कृ. को.-न्याय।
(७) ए. कृ. को-"मंडिय सुदेस दुज दान प्रीति"। (८) ए. कृ. को.-दीत।

संसार नीति किय तत्त पंथ। विभ्भूत नीति सुनि नीति ग्रंथ ॥
सह भ्रम्म पुच्छ तत्तं प्रमान। नित साम पास ब्रह्मा सु ध्यान ॥
छं० ॥ २९७ ॥

रषिये सु भ्रत्य रष्षन सु लच्छि। फिरि होत ताहि हित तत्त अच्छि ॥
न्रिप भजै नीति उमराव होति। न्रिप [1]रहै नीति जो हैत प्रीति ॥
छं० ॥ २९८ ॥

न्रप जानि बीर भौ ताहि भेद। दुह भरनि बीर ज्यों पुबह षेद ॥
न्रप मेटि करै समता सरीर। बुभ्झवै अगनि जिम बरसि नीर ॥
छं० ॥ २९९ ॥

भोग वै राज परिगह संजुत्त। मति प्रान करै सा भ्रम्म पुत्त ॥
रिषियै सु भ्रत्य इन भांति मान। ते सामि काम अमरित्त जान ॥
छं० ॥ ३०० ॥

सा भ्रम्म सहै सो मित्त सेव। जानै न सामि उत्तर न देव ॥
न्रप पास बत्त इह भंति जानि। कवि बहि लज्जि गंभीर बानि ॥
छं० ॥ ३०१ ॥

न्रप सुनी बत्त परि कहि न जाइ। ज्यों जल तरंग जल में समाइ ॥
हय गय सु मांहि धुअ परी छूअ। सम्माइ जेम जल छांह कूअ ॥
छं० ॥ ३०२ ॥

समसान अग्गि निधि न्रपति जीय। न्रप चित्त भ्रंग कीटी [2]सु लीय ॥
रष्यो सु अंब जौ न्रपत रूप। वय ससी चित्त लज्जी सरूप ॥
छं० ॥ ३०३ ॥

जन हथ्थ आन पंकी सु रंग। तामैं सु लोह जनि [3]मनित पंग ॥
सुरतान चित्त जब होय लोय। उन चित्त सदा कलपंत होइ ॥
छं० ॥ ३०४ ॥

सा भ्रम्म बिना परि गहन काच। रूपं न रत्त दरबार साच ॥

---

(१) ए. दहै। (२) मो.-तीय।
(३) ए. कृ. को.-मन पतंग।

दुज सफर जम्म [1]नाही सनान । संसार रतन नृप परष वान ॥
छं० ॥ ३०५ ॥

दूहा ॥ इह मंची नृप काज अरु । सब परिगह इन भीत ॥
राजनीति राजन रहै । जस धन ग्रहन न जीत ॥ छं० ॥ ३०६ ॥

राजा का कहना कि मुझे जैचन्द के दरबार में ले चलो ।

होय कंठ लग्गिय अगनि । नयन जलग्गि लखान ॥
अंब जीव बंछै अधिक । कहि कवि कोन सयान ॥ छं० ॥ ३०७ ॥
तौ अप्पों कैमास तों । जो मेटै उर अंदेस ॥
दिष्या वहि पहु पंगुरौ । जै जैचंद नरेस ॥ छं० ॥ ३०८ ॥

कवि का कहना कि यह क्यों कर हो सकता है ।

धिनक न मन धीरज धरहि । अरि दिष्षत तिन काल ॥
अति बर बर बुल्लै नहीं । सुकिम [2]चलहि भूपाल ॥ छं० ॥ ३०९ ॥

पृथ्वीराज का कहना कि हम तुम्हारे सेवक बन कर चलेंगे ।

सुरिल्ल ॥ चलों भट्ट सेवक होइ सथ्यह । जौ बोलूं तो हथ तुम मथ्थह ॥
जबह जानि संमुह हुअ । तब संम्मरु अंग करों दोउ भूअ ॥
छं० ॥ ३१० ॥

कवि का कहना कि हां तब अवश्य हमारे साथ जाओगे ।

अरिल्ल ॥ अब उपाय समझ्यौ इह संचौ । सुनि कवि मरन मिटै नह रंचौ ॥
समर तिथ्थ गंगाजल पंचौ । अवसर अवसि पंग ग्रह नंचौ ॥
छं० ॥ ३११ ॥

राजा का प्रण करना ।

दूहा ॥ आनंद्यौ कवि के बयन । न्रप किय संच विचार ॥

---

(१) ए. कृ. को.-तीही । (२) मो.-चलहु ।

मरन गरुअ सिर हरुअ है। जियन हरूअ सिर भार ॥छं०॥३१२॥

*चान्द्रायन ॥ अप्पौ पहु कैमास सती सत्त संचर्यौ।
मरन लगन विधि हथ्थ तथ्थ कवि उच्चरयौ ॥
धर भर पंग प्रगट्ट रुठट्ट विहंडिहौं।
इन उपहास विलास न प्रानय षंडिहौं ॥ छं० ॥ ३१३ ॥

कैमास की स्त्री का उसका मृतकर्म करना, राज महलों की शुद्धता होनी, सब सामंतों का दरबार होना।

पद्धरी ॥ अप्पौ सु कविय कैमास राज। बरदाय कित्ति मन्यो सु काज ॥
दीनौ सु हथ्थ सह गमनि तथ्थ। लै चली बाहि 'कंत न्नि सथ्थ ॥
छं० ॥ ३१४ ॥

बोलयौ सुतन कैमास हंस। दुअ तिय बरष्प अति रूअ रंस ॥
दीनौ जु तथ्थ सिर राज हथ्थ। थप्पौ सु थान परि तुय परथ्थ ॥
छं० ॥ ३१५ ॥

दुअ घटिय पंच पल आदि जाम। किन्नौ सु महल चहुआन ताम ॥
बोले सु सब्ब सामंत सूर। आदर अदब्ब दिय अत्ति ऊर ॥
छं० ॥ ३१६ ॥

कयमास घात अपराध दासि। सब कही सुभट सुब्भा सु भासि ॥
अप्पान झत्य मन्यो सु अप्प। जानहु सु रीति राजंग दप्प ॥
छं० ॥ ३१७ ॥

इम कहिय कन्ह नरनाह बोलि। अप्पी सु तेग हमकौं सु षोलि ॥
किय सुमन सूर सामंत सब्ब। हुअ ग्रेह ग्रेह आनंद तब्ब ॥
छं० ॥ ३१८ ॥

सब नैर बासि आनंद मन्नि। षोले किपाट न्रप जुगति गन्नि ॥
उथ्यौ सु महल सब सुचित कीन। पारनैं काज द्वादसी दीन ॥
छं० ॥ ३१९ ॥

*इस छन्द को चारों प्रतियों में मुरिछ करके लिखा है। (१) मो.-क्रम।

कैमास के कारण सबका चित्त दुखी होना।

बहुरेब सूर सामंत ग्रेह। कयमास दोस मन्यो सु देह॥
कौने सुभट्ट सब सुचिंत राज। डर मन्यौ अप्प आनंद काज॥
छं० ॥ ३२० ॥

पालहि सु नीति बिधि कित्ति अंग। बिन सच रच दाहिम्म रंग॥
भंगीर धीर मति बीर अत्ति। [1]सुभभ्भै सुमन्न अंतर उरत्ति॥
छं० ॥ ३२१ ॥

राजा का कैमास के पुत्र को कैमास का पद देना।

दूहा॥ उरसल्लौ कैमास न्रप। पुच परठ्ठिय पट्ट॥
चित चंचल अब्बल करिय। दिय हय गय बर थट्ट॥
छं० ॥ ३२२ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके चावंडरायं
बेरी भरन क्रन्नाटी दासी षून कैमास बधनो नाम
सत्तावनवों प्रस्ताव संपूरणम्॥ ५७॥

(१) मो.-सुझ्झै।

अथ दुर्गा केदार सम्यौ लिष्यते ।
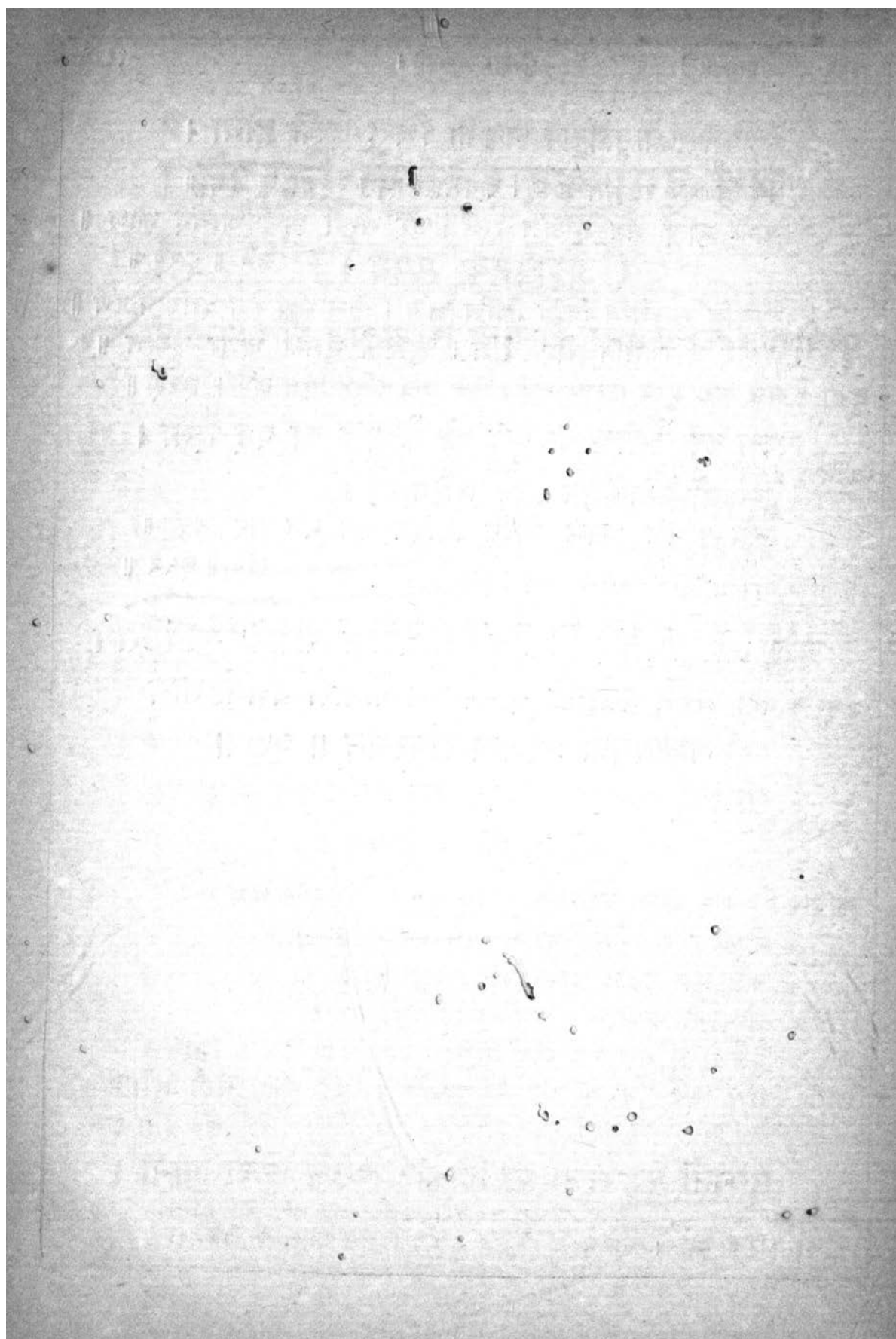
(अट्ठावनवां समय ।)

पृथ्वीराज का कैमास की मृत्यु से अत्यंत शोकाकुल होना ।

दूहा ॥ नह सच मुष्य गवष्य थह । नह सच अंदर राज ॥
उर अंतर कैमास दुष । सामंता सिरताज ॥ छं० ॥ १ ॥

कवित्त ॥ न्रप क्रीड़त चौगान । सथ्थ सामंत सूर भर ॥
जब रामति रसरंग । तब्ब संभरै मंचि बर ॥
जब क्रीड़त जल केलि । चित्त कैमास उहासै ॥
बारावन्नि बिहार । तथ्थ दाहिम बर भासै ॥
जब जब सु गान कोतिग कला । पुहप सुगंधह [1]वास रस ॥
जब जबह अवर सुष संभवै । तब उर सल्लै सहिय तस ॥ छं० ॥ २ ॥

दूहा ॥ अति उर सालै मंचि दुष । करै न प्रगट समुझ्झ ॥
मानो कूआ छांह ज्यौं । रहत रात दिन मझ्झ ॥ छं० ॥ ३ ॥

सामंतों का गोष्ठी करके राजा के शोक निवारण का उपाय विचारना ।

कवित्त ॥ तब सु कन्ह चहुआन । राव जैतह सम बुझ्झिय ॥
षीचीं राव प्रसंग । जाम जद्दव घन सुझ्झिय ॥
चंद्र सेन पुंडीर । राव गोयंद राज बर ॥
लोहानौ आजान । सम रामह बड़गुज्जर ॥
पुछ्यौ सु मंच सब मंच मिलि । राज दुष्य कैमास मिति ॥
नन कहै [2]कवन सो मन वचन । मिटै सोइ मंडौ सुमति ॥
छं० ॥ ४ ॥

सामंतों का राजा को शिकार खेलने लिंवा जाना ।

(१) ए. कृ. को.-बीस । (२) ए. कृ. को.-वचन ।

कही जाम जद्दो जुवान। सुनि कन्ह नाह नर॥
चंद्र सेन पुंडीर। राय गोयंद राज बर॥
आषेटक प्रथिराज। सह अंतर गति आदै॥
दै समद्धि संक्रमौ। करौ इन बुद्धि सवादै॥
मन्नौ सु सब्ब सामंत मिलि। थपि सामंतन सत्ति करि॥
बरनौ सु जाम जद्दव न्टपति। तबहि राज म्रगया सुभरि॥छं०॥५॥

तज्जि सब्ब सामंत। चल्यौ चहुआन पान भर॥
अटल अवनि आभंग। सज्जि सक कन्ह नाह नर॥
गरुअ राव गोयंद। अतत्ताईय ईस बर॥
चढ़िय निडर रट्ठौर। सलष लष्षन बघेल झर॥
सामंत सूर मिलि इक्क हुअ। चले सथ्थ राजन ररिय॥
औछंग अंग सन्नाह लै। इम सु राज म्रगया करिय॥ छं०॥ ६॥

प्रनित सब्ब सामंत। चल्यौ चहुआन अनब्बर॥
सथ्थ सूर सामंत। विरद अन्नेक बहत सिर॥
सथ्थ लीन सन्नाह। अवर परकार साथ सजि॥
बानगीर हथ नारि। धारि दिढ़ मुट्ठि [1]हथ्थ रजि॥
घन लीन सज्जि सथ्थें [2]सयन। करि टामंक सु कूचकिय॥
क्रीड़न सु राज म्रगया चल्यौ। सब आषेटक साजलिय॥छं०॥७॥

पृथ्वीराज के शिकारी साज सामान का वर्णन।

पद्धरी॥ आषेट चल्यौ प्रथिराज राज। सथ लिये सूर सामंत साज॥
रस अग्ग सून्य सौ तुंग एक। संथ लिये तुंग सो भषन तेक॥
छं०॥ ८॥

पंच सै मद्धि नाहर पछारि। जीव लैं जाव वच्छंतिवार॥
इक सहस बधन वादाह तेज। जुटि पटफि भुम्मि फट्टत करेज॥
छं०॥ ९॥

(१) मो.-रथ्थ। (२) ए. कृ.- को.-सथन।

सारद्द सहस बल गनै कौन। धावंत भूंमि भुल्लाइ पौन ॥
छल छेद भेद जीवन लषंति। जुट्टंति अंत पसु पल भषंति ॥
छं० ॥ १० ॥

पय तरह रत्त मुष अग्र नास। रत्ती सु रसन कोमल्ल सु भास ॥
नष बीह अग्र कै बीय चार। चौंरार पुंछ तिष्षे सु तार ॥छं०॥११॥

कर पट्ट घोर जड्डे सजोर। नष तिष्ष विद्व गिरि वज्र रोर ॥
कटि क्रसल थूल नित्तंब जानि। उर थूल लंक केहरि समान ॥
छं० ॥ १२ ॥

गररत्त गरुअ विस्साल भाल। तिष्षे सु दसन दंपति कराल ॥
कप्पोल सरल बल प्रथुल रुच। सोभंत गात वैताल रुच ॥
छं० ॥ १३ ॥

बिन अंग रोम के प्रथुल रोम। अन्नेक जाति दिसि विदिसि भोम ॥
द्रिग अनत तेज जोतिष्ष जास। जघनं सु गत्ति म्रगराज ग्रास ॥
छं० ॥ १४ ॥

जर हेम पट्ट के डोरि पट्ट। सेवक्क एक प्रति उभय घट्ट ॥
धावंत धरनि आजानवाह। बर बेग पवन मन लच्छि गाह ॥
छं० ॥ १५ ॥

नर जान रोह के अस्व जान। आरुढ़ सकट के वृषभ थान ॥
तुंगह सु पंच तोमर पहार। अन्नेक देस साजोति सार ॥
छं० ॥ १६ ॥

सत तुंग भषन लंगीस राव। तुंगह सु पंच जामानि ताव ॥
पम्मार जैत चव तुंग तथ्य। द्वै तुंग भषन चोहान तथ्य ॥
छं० ॥ १७ ॥

चय तुंग चंद पुंडीर धीर। द्वै तुंग राम गुज्जर [१]गहीर ॥
बलिभद्र एक सारद्द तुंग। परसंग राव द्वै तुंग जंग॥ छं० ॥ १८ ॥

द्वै तुंग महन परिहार सार। चय तुंग बरुन बंधव सहार ॥
षेलंत सब्ब प्रथिराज संग। गिरवर विहार थल बढ्ढि रंग ॥
छं० ॥ १९ ॥

(१) ए. कृ. को.-गहीर।

सारह्न दून सें चिच साज। बर साज बहल के भास भाज ॥
हय रोय कैय आरोग्रि पिट्ट। खो गोस केस जन्नाव यट्ट ॥
छं० ॥ २० ॥

फंदैत कुरंग सें दून सार। जर हेम [1]पट्ट डोरी मषार ॥
जुर बाज कुही तुर मतिय जुत्त। को गनै अवर पंषी अभुत्त ॥
छं० ॥ २१ ॥

[2]षेदा सु सहस सारह्न एक। तरिया सु सहस चौ जूवि भेक ॥
सें पंच मूल धारी अभूल। द्रिग दिट्ठ अंत आनै समूल ॥ छं० ॥ २२ ॥
आवै सु मध्य पावै न जानि। क्रीड़ंत राज सम विषम थान ॥
.... । .... ॥ छं० ॥ २३ ॥

शहाबुद्दीन का दिल्ली की ओर दूत भेजना।

कवित्त ॥ मन चिंतै सुरतान। मान संभरिपति भंजिय ॥
पानी पन्न प्रवास। सबै सुष तिन दुष तज्जिय ॥
तिन सु बैर उर चिंति। प्रात अष्यिय सम [3]दूतन ॥
तुम दिल्लिय पुर जाहु। जहँ चहुआन सु धू तन ॥
लिषि पच साह ध्रम्मान सम। सुष वानी इम रट्टियौ ॥
कैमास हत्य सामंत सम। षबरि विवरि सब पट्टियौ ॥ छं० ॥ २४ ॥

दूहा ॥ दूत सपत्ते साहि तव। जहं कायथ ध्रम्मान ॥
भेद राज सामंत कौ। लिषि दीजै अब्वान ॥ छं० ॥ २५ ॥

धम्मायन कायस्थ को शाह का दिल्ली की सत्र कैफियत लिखना।

ध्रम्माइन काइथह तब। जो [4]कछु वित्त कवित्त ॥
चाहुआन सामंत के। सब लिखि दिये चरित्त ॥ छं० ॥ २६ ॥

दूतों का गजनी पहुंच कर शाह को धम्मायन का पत्र देना।

(१) ए. कृ. को.-वट्ट। (२) ए. कृ. को.-दोषा।
(३) ए. कृ. को.-दूतह, धूतह। (४) ए. कृ. को.-चिन्त।

दूत सपत्त गज्जनै । जहं गोरी सुरतान ॥
तपै साह साहाब बर । मनों भान मध्यान ॥ छं० ॥ २७ ॥

दिन चढ़तें साहाव दर । आनि कगर कर दीन ॥
मुदित चित्त भए मीर सब । मन उछाह सब कीन ॥ छं० ॥ २८ ॥

दुर्गा भाट का देवी से कविचन्द पर विद्या वाद में विजय पाने का वर मांगना।

कवित्त ॥ निसा एक निज ग्रेह । भट्ट साहाब द्रुग्ग बर ॥
धरिय देवि उर ध्यान । इष्ट चिंतन सु अप्प करि ॥
निसा अद्ध सुत जानि । देवि आई सुहित्त धरि ॥
कहै चंडि सुनि चंड । मुझ्झ विग्यान इक्क बर ॥
बरदाइ चंद चहुआन कौ । सुनिय अपूरब कथ्थ तस ॥
सम बाद विद्य मंडौ रसन । जौ पाऊं देवी दरस ॥ छं० ॥ २९ ॥

देवी का उत्तर कि तू और सब को परास्त कर सकता है, केवल चन्द को नहीं।

कहै देवि सुनि द्रुग्ग । उभय पुत्तह नह अंतर ॥
दीरघ चंद सु चारु । अनुज केदार कलाधर ॥
वाद विवाद जु कोइ । जाय चंदह सम मंडै ॥
झीन होइ मति हीन । ख्याति तिन वानी षंडै ॥
जित्तनह अवर जग मझ्झ तुम । एक चंद अंतर सुचिर ॥
अनि वस्त विवह अप्पों अनंत । पुच सु पुज्जन प्रेम धर ॥ छं० ॥ ३० ॥

हनूफाल ॥ उच्चरिय देविय गाजि । सुनि भट्ट तूं कविराज ॥
कविचंद दीरघ सैव । तुम अनुज अंतर भेव ॥ छं० ॥ ३१ ॥
ननं करहु तिन सम वाद । आनि देस जिप्पन स्वाद ॥

दुर्गा का कहना कि मैं पृथ्वीराज से मिलना चहता हूं इस पर देवी का उसे वरदान देना।

केदार अष्पय एम । चहुआन देषन प्रेम ॥ छं० ॥ ३२ ॥

जो हुकम अप्पै मात। सुविहान पुच्छों बात॥
बोली सु देवी बेन। तुम चलौ दिल्लिय चेंन॥ छं०॥ ३३॥
साहाब दैहै सीष। चहुआन पेम परीष॥
हय गय सु वाहन हेम। ग्रामेक पच परेम॥ छं०॥ ३४॥
सत बाज हथ्थिय तीस। समपै सु दिल्लिय ईस॥
अषेट लभ्भय राज। पानीय पंथ समाज॥ छं०॥ ३५॥

प्रातःकाल दुर्गा भाट का दरबार में जाना।

गाथा॥ निसि गत जग्गिय भट्टं। उर आनंद मानि मन अप्पं॥
जहां साहिब सुरतानं। तहां स चलि अप्पयं कब्बी॥ छं०॥ ३६॥
दूहा॥ मुक्कि ग्रहं निय ग्रह दिसा। सयन आप तजि बंध॥
ज्यौं कंचन जिय चिंतइय। ज्यौं पंडित गुन अंध॥ छं०॥ ३७॥
गाथ॥ कवि पहुंच्यौ दरबारं। करि सलाम साह बर गोरी॥
दिष्टे वासब सेनं। पेंसत दिठ्ठाइ गोरियं साहिं॥ छं०॥ ३८॥

दुर्गा भट्ट का शहाबुद्दीन से दिल्ली जाने के लिये छुट्टी मांगना।

कोलाहल कवियानं। सनमानं साहिबं होयं॥
[1]वारिज विपनह मझ्झ झै। ना सूझंत हरुअ गरुआई॥
छं०॥ ३९॥
भुजंगी॥ दिषे माहि गोरी दरब्बार थानं। करै भट्ट केदार [2]ताके बषानं॥
मनो पावसं अंत आभा सु रंगं। दिषे साहि दरबार बहु मेछ रंगं॥
छं०॥ ४०॥
कही बागबानी प्रमानी सु अल्ली। दियौ साह सीषं चलै भट्ट दिल्ली॥
.... । .... ॥ छं०॥ ४१॥

तत्तार खां का कहना कि शत्रु के घर मांगने जाना अच्छा नहीं।

(१) मो.-ज्यो बाज दिन संझने। (२) ए. कृ. को.-ताकि।

कवित्त ॥ सुनिय बचन सुरतान । दिष्षि बोल्यौ ततार बर ॥
भट्ट चलै मंगना । जहां बंध्यौ सु अप्प कर ॥
अरिसों ना हिय मिलन । मगन तिन ठाउन जाइय ॥
मान भंग जहां होइ । पास तिन मग नन पाइय ॥
अप्पिहै दान अप्पन कुटिल । अप्प किति तौ [1]हान मम ॥
बरदाय भट्ट द्रुग्गा सु तुम । इच्छ होइ तौ करहु गम ॥ छं० ॥ ४२ ॥

शाह का कविचन्द की तारीफ करना ।

दूहा ॥ सुनि सहाब हसि उच्चरिय । दिष्षहु चंदह सत्त ॥
सुपनेंऊ धर गज्जनें । मंगन नायौ इत्त ॥ छं० ॥ ४३ ॥

इस पर दुर्गा भट्ट का चकित चित्त होना ।

सुनिय बयन सुरतान मुष । कवि उत्तर नन आइ ॥
मानों उरग [2]छछोंदरी । डारैं बनै न षाय ॥ छं० ॥ ४४ ॥

शहाबुद्दीन का दुर्गा भट्ट को छुट्टी देना और भिक्षावृत्ति की निन्दा करना ।

घरी एक बिसमति भयौ । मुष दिष्षै सुरतान ॥
मोहि भट्ट पुंछहु कहा । जाहु जहां तुम जान ॥ छं० ॥ ४५ ॥
तिन तें तुस तें तूल तें । फेंन फूल तें जानि ॥
हसि जंपै गोरी गरुअ । मंगन है हरुआन ॥ छं० ॥ ४६ ॥

दुर्गा केदार का दरबार से आकर दिल्ली जाने की तैय्यारी करना ।

सुनत बचन सुरतानं मुष । भट्ट संपतौ धाम ॥
तजि विराम चित्तह चल्यौ । जुग्गिनिवै पुर ठाम ॥ छं० ॥ ४७ ॥
पिता पुत्र सों बत्त कहि । मंगन मन चहुआन ॥
स्वामि बैर दातार धन । साहि कही इह बानि ॥ छं० ॥ ४८ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-दान मम ।　　(२) ए. कृ. को. छछुंदरी ।

कवित्त ॥ [1]चल्लिय भट्ट बर ताम। नाम द्रुग्गा केदार बर ॥
संभरेस अवद्देस। लष्ष अप्पै विलष्ष गुर ॥
अति उतंग चहुआन। मान मरदन षल पानं ॥
अरब षरब उप्परें। कोरि अप्पै करि दानं ॥
संभरिय राउ सोमेस सुअ। आसमान अभिलाष षल ॥
भिद्दै न [2]जाहि माया प्रबल। मनों नीर मझ्झै कमल ॥ छं० ॥ ४९ ॥

दुर्गा केदार का ढाई महीने में पानीपत पहुंचना।

दूहा ॥ [3]पष्ष पंच पंथह गवन। आतुर षरि उत्ताव ॥
सुनिय राज संभर धनी। पानी पंथ प्रभाव ॥ छं० ॥ ५० ॥
गिरिवर झुंगर [4]गहर बन। नद विहार जल थान ॥
क्रीड़त देसह आनि किय। पानी पंथ मिलान ॥ छं० ॥ ५१ ॥

शिकार में मृत पशुओं की गणना।

कवित्त ॥ पानी पंथह राइ। आय षेलत आषेटक ॥
सत्त एक एकल बराह। हत्ते सु गात सक ॥
अवर सत्त षट तथ्थ। घत्त हत्ते करवानह ॥
सौ कुरंग संग्रहै। [5]दून सौ हनै चितानह ॥
को गनै अवर सावज [6]अनँत। हनें [7]पसू अरु पंषि जहां ॥
उत्तंग छाह जल थान पिषि। चित्त उल्हस अनु सरिय तहां ॥
छं० ॥ ५२ ॥

राजकुमार रेणसी का सिंह को तलवार से मारना।

नीसानी ॥ अहो सिंघ न वल्ल इक अस्या निथ्थारे।
संभल्ल हक्क गहक्क ही उथ्था [8]भूभारे ॥
उत्तरिया असमान थी किनि कस्या भूफारे।
कंध बिबथ्था प्रथु कपोल तिष दंत करारे ॥ छं० ॥ ५३ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-चल्यौ। (२) ए. कृ. को.-नाहि।
(३) ए. कृ. को.-पक्ष। (४) ए. कृ. को.-गहन। (५) मो.-दूत।
(६) ए. कृ. को. अनंग। (७) ए. कृ. को.-अनंतीति। (८) ए. कृ. को.-मारे।

जीह झाक झक झकै मनों बीज पथारे।
नैन विसोहै जामिनी गुरु सुक्रह तारे॥
लग्गी भट्ट टगट्टगी मनों [1]मुस्सीरे।
संभरिया पंच मुष्ष थापें देष्पा दस बारे॥ छं०॥ ५४॥
आया कुंअर उप्परे पावास निहारे।
आडा आया संकडा परवार पचारे॥
आवत [2]सीस उझक्किया सिर सिंगी झारे।
हथ्थल षग्ग पछट्टिया कोय पिंड पलारे॥ छं०॥ ५५॥
रेंनि कम्ष्ष कोपिया झुक्या असि झारे।
बहिया कंध विसंध होय दोय टूक निनारे॥
मनों सारे स्रत पिंड हो धग्गा कुल्हारे।
पड़िया सीस धरट्ठ हे परसह पहारे॥ छं०॥ ५६॥
जानि परे गिरि शृंग होहारि वज्र प्रहारे।
जानि कि कन्हा कोपिया दोइ मल्ल पछारे॥
कै अप्प कुपे रघुनाथ ने सिर रावन झारे॥
जानि अलुझ्झी गुज्जरी दधि मट्ट फुटारे॥ छं०॥ ५७॥
क्रूर कबारी कुट्टिया तरु उंच कुठारे।
रेनि कहंदै धन्य हो जै सद्द उच्चारे॥ छं०॥ ५८॥

पानीपंत के मैदान में डेरा पड़ना।

कवित्त॥ आषेटक संभरिय। कुंअर खगराज प्रहारे॥
जामदेव जहों। पुंडीर का कन्ह विचारे॥
दस दिस अरिय प्रचंड। तुम्ह सिक्कार सथ्थ हम॥
मिलि चिन्हय चहुआन। अप्प षिल्लियै भोमि क्रम॥
सुनि राज अप्प मन फिरन हुअ। मानि मंत सामंत किय॥
सित माह प्रथम बर पंचमी। पानीपंथ मेलान दिय॥ छं०॥ ५९॥

गोठ रचना।

(१) ए. कृ. को.-मुछारे। (२) ए.-सीर।

दूहा ॥ तहां उतरि प्रथिराज पहु। करिय गोठि तथ्थाहु ॥
घन पकवान सुअन अ[illegible]त। गनै कोन जी हांहु ॥ छं० ॥ ६० ॥

गोठ के समय दुर्गा केदार का आ पहुंचना।

कवित्त ॥ भई गोठि जब राज। सद्द परिहार सब्बन किय ॥
आय सूर सामंत। अवर बरदाय बोल लिय ॥
तथ्थ समय इक भट्ट। नाम द्रुग्गा केदारह ॥
सपत दीप दिन जरहि। सथ्थनी सर नौसारह ॥
सिर हेम छच उप्पर उरग। अंकुस तुसं कर दंड सम ॥
आसीस आय दीनी न्नपति। मिलि[1] पहु पुच्छिय मति मरम ॥
छं० ॥ ६१ ॥

चौपाई ॥ आषेटक संभरि न्रप राई। बट छाया बैठे [1]तहां आई ॥
दानवंत बलवंत सलज्जौ। सुबर राज राजन प्रथिरज्जौ ॥छं०॥६२॥

कवि के प्रति कटाक्ष वचन।

दूहा ॥ भट डिंभी आडंबरह। अरु पर जानन वित्त ॥
अप्प सु कवि कब्बी कहै। किय न्रप सम्हौ चित्त ॥ छं० ॥ ६३ ॥

कवि की परिभाषा।

गाथा ॥ भट्ट उचरियं बानी ॥ [2]उगतिं लहरि तरंगं रंगं ॥
[3]जुगतिं जल जंभायं। रतनं तर्क वितर्कयं जानं ॥ छं० ॥ ६४ ॥

कवित्त ॥ जानन तर्क वित्तर्क। सरल वानी सुभ अच्छिर ॥
च्यारि बीस अरु च्यार। रूप रूपक्क गुन तच्छिर ॥
सुंदर अठ गन ग्रेह। लघू दीरध बल नच्चै ॥
जुगति उगति घन संचि। लेइ गुन औगुन [4]बच्चै ॥
बुधि तोम बान वर भलक करि। वर विधान मा बुद्धि कबि ॥
बिय गुनिय देषि गब्बह गरै। ज्यौं तम भगत दूषंत रबि ॥
छं० ॥ ६५ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-नृप छाई। (२) मो.-उकतं लहर तरंगयं रंगं।
(३) मो-जुगत। (४) मो.-बंचै।

दुर्गा केदार कृत पृथ्वीराज की स्तुति और "आशीर्वाद" ।

पद्धरी ॥ मिलि भट्ट दिष्ट न्रपती प्रमान । (१)तुलि छंद बंध सम चाहुआन ॥
तुहि इंदप्रथ्थ आजानबाह । तुहि अग्गि तूल चालुक्क दाह ॥
छं० ॥ ६६ ॥

तुंहि भंजि जुद्ध परिहार धाइ । तुंहि पंच पथ्थ प्रथिराज राइ ॥
तुंहि भंजि मान जैचंद पंग । तुंहि बीर मुरवि तुंहि काम अंग ॥
छं० ॥ ६७ ॥

तुंहि सूर रूप तुंहि भ्रम्मराइ । तुंहि भेद अभेदन बेद गाइ ॥
तुंहि मौज त्याग छिष्यौ न ईस । नन सर वरीस धन्नाधि तीस ॥
छं० ॥ ६८ ॥

विक्कम्म पच्छ सब बंध तूंहि । तुंहि साल पंग सुरतान तूंहि ॥
मम दिष्ट वाद श्रोतान लग्ग । सोइ देषि आज प्रथिराज द्रिग्ग ॥
छं० ॥ ६९ ॥

दूहा ॥ दिय असीस प्रथिराज कौं । बहुत भाव गुन चाव ॥
साम दाम दंड भेद करि । तब तिन बेध्यौ राव ॥ छं० ॥ ७० ॥

कवित्त ॥ बैनह बेध्यौ राव । चाव बेध्यौ चहुआनं ॥
गगन भान गाहतौ । भोमि गाहै पल पानं ॥
सूर गरूअ (१)गुर बीर । बीर बीराधि सु बीरं ॥
छत्रपती छिति सोभ । सूर सामंत सु धीरं ॥
सुरतान गहन मोषन सुबर । उभय बेद एकत्त कर ॥
हिंदवान लाज सोभै सु उर । कहैं भट्ट द्रुग्गा सु बर ॥ छं० ॥ ७१ ॥

पृथ्वीराज का दुर्गा केदार को सादर आसन देना ।

करि जुहार चहुआन । भट्ट आदर बहु किन्नौ ॥
मुक्कि न्रपति आषेट । चिंति मुक्काम सु दिन्नौ ॥
संझ महल्ल परमान । भट्ट दोऊ रस बहे ॥

(१) मो.-तुर, उर ।

उन उचार उच्चरत। बाद दोऊ तब बढ्‌ढे ॥
उच्चऱ्यौ द्रुग्ग केदार बर। क्यों बरदा अप्पन ग्रहै ॥
मानो तौ साच बरदाय पनु। जो द्रुग्गा सेंमुष कहै ॥ छं० ॥ ७२ ॥

दुर्गा केदार का निज अभिप्राय कथन।

दूहा ॥ कहै भट्ट न्रप राज सुनि। मुहि मति बुद्धि अगाध ॥
सुनिय चंद बरदाय है। आयौ बद्दन बाद ॥ छं० ॥ ७३ ॥

उसी समय कविचन्द का आना और राजा का दोनों कवियों मे बाद होने की आज्ञा देना।

कवित्त ॥ दिय असीस कविचंद। आय तिन बेर प्रमानं ॥
उभय ध्रम्म हिंदवान। आइ बेठे इक थानं ॥
उभय बेद रह जानि। उभय बरदाय उभय बर ॥
उभय बाद जित वान। उभय वर सूर सिद्ध नर ॥
न्रप राज ताम पुच्छै दुअनि। गुन प्रबंध कवितह रचिय ॥
बरनौ दुबीर तुम बाद बद। ध्यान धरे [1]उभया सचिय ॥
छं० ॥ ७४ ॥

दोनों कवियों का गूढ़ युक्ति मय काव्य रचना।

दूहा ॥ यल अप्पौ सु दुल्लन कवि। ससि बरनौ इक बाल ॥
इक पूरन बरनौ ससौ। इक जंपो वै काल ॥ छं० ॥ ७५ ॥
इक कहौ रितु राज गुन। जुगतें जुगति प्रमान ॥
कहै राज कविराज हौ। तत्तह्नि तत्त बषान ॥ छं० ॥ ७६ ॥
मिलिय चंद भट तास सम। किय सादर सनमान ॥
सु गुन [2]प्रसंसिय अप्प कर। करौ बाद विधान ॥ छं० ॥ ७७ ॥
बाल चंद अरु बाल ससि। द्वै विधि चंद सु भत्ति ॥
वर वसंत पूरन्न ससि। विधि द्रुग्गा किय सत्ति ॥ छं० ॥ ७८ ॥

(१) ए. कृ. को.-उभया। (२) मो.-प्रसंसित।

कविचन्द का वचन।

कवित्त ॥ चंद चंद बिध कही। सुनो प्रथिराज राज बर ॥
मदन बाज नष लग्यौ। मदनं बांनी [1]नवक्क सर ॥
समर सार कत्तरी। दिसा सुंदरि नष षित पिय ॥
चक्र काटि मनमथ्थ। उभय किय तोरि ताहि बिय ॥
दसि अधर बधू मानोज ससि। सिंघ काटि नष बड्डियौ ॥
कटाच्छ सुरति बंकै विषम। कै काम दीप हुप सड्डियौ ॥छं०।७९॥

गाथा ॥ जं कहियं कविचंदं। संभरि रायान रावतं कहियं ॥
धौपानं सहु राजंन। सा जंपी कित्तियं भट्टं ॥ छं० ॥ ८० ॥

दुर्गा केदार का वचन (वैसन्धि)

कवित्त ॥ कहै भट्ट द्रुग्गा प्रमान। वैसंधि उचारिय ॥
पच भार अंकुरित। डार नव सुभित कुँमारिय ॥
कोकिल सुर सजि रहिय। भ्रंग सजि पंष उड़ावन ॥
सीतल मंद सुगंध। पवन विममौ [2]भौ भावन ॥
वासंत बिना इन सकल बुधि। सब्ब मनोरथ रह्यौ मन ॥
लहरी समुद्र हंससमुद्र में। उलसि उलसि मध्यें सु तन ॥छं०॥८१॥

कविचन्द का उत्तर देना।

कहै चंद वयसंधि। आय ऐसें गति धारिय ॥
सैसब्ब वपु सिकदार। सु वन पत्तह [3]उत्तारिय ॥
सिसिर थान छुट्टयौ। पुह जोवन लै धारित।
काम न्रपति दै आन। कढ्ढि सैसब तन पारित ॥
जागित्त जुब्ब तब भ्रंगे तर। [4]सिसिर कढ्ढि भए बंधयौ ॥
नव भए सगुन अचिज्ज तन। आन दीप दोय रुंधयौ ॥ छं० ॥ ८२ ॥

दूहा ॥ के छुट्टा तुट्टति के। के अति षोट उचार ॥

---

(१) ए. कृ. को.-निवक्क। (२) मो.-भै।
(३) ए. कृ. को.-उच्चारिय। (४) ए.-समिर।

अष्षर कुकवि कवित्त ज्यौं। गति जुन तुट्टाहार ॥
विधि विधि [1]बरन सु अर्थ लिय। अति ढंक्यो न उघारि ॥
अष्षर सु कवि कवित्त ज्यौं ज्यों। चतुर स्त्री हार ॥ छं० ॥ ८४ ॥

दोनों कवियों में परस्पर तन्त्र और मंत्र विद्या सम्बन्धी वाद वर्णन।

सो सरसत्तिय सुष दियन। बाद बरन्न न भट्ट ॥
चित्त मंडि का करन पल। मत कवित्त बढ़ि घट्ट ॥
छं० ॥ ८५ ॥

केदार के कर्त्तव्य से मिट्टी के घट से ज्वाला का उत्पन्न होना और विद्याओं का उच्चार होना।

पद्धरी ॥ केदार कहै सुनि चंद भट्ट। सत अग्र मुष्ष इक मंडि घट्ट ॥
सब मुष्ष होंहि ज्वाला प्रचार। [2]मुष मुष्ष वेद विद्या उचार ॥
छं० ॥ ८६ ॥

कविचंद कहै सुनि भट्ट राज। प्रगटौ जु अप्प विद्या सु साज ॥
केदार ताम मंड्यौ जु घट्ट। उच्चर्यौ मुष्ष प्रति अंग षट्ट ॥
छं० ॥ ८७ ॥

सब मुष्ष प्रगटि पावक्क ज्वाल। किल किला सद्द श्रुति बंचि नाल ॥
मंड्यौ सु घट्ट बरदाय चंद। उच्चर्यौ मुष्ष प्रथु प्रथुल छंद ॥
छं० ॥ ८८ ॥

दस च्यार मुष्ष विद्या उचार। ज्वाला सु मड्डि सब वारि धार ॥
हुंकार सद्द किलकार हांक। पूरौ सु चंद देवी भिलाष ॥
छं० ॥ ८९ ॥

बंधी जु गत्ति जब चंद भट्ट। केदार ताम करि अवर थट्ट ॥
केदार कहै सुनि कवि विवेक। [3]बुल्लाउं बाल ज्यो मास एक ॥
छं० ॥ ९० ॥

(१) मो.-ब्रह्मन।
(२) ए. कृ. को.-सब मुष्ष वेद विद्या विचार। (३) ए. कृ. को. बुल्लाउ।

कविचन्द के बल से घोड़े का आशीर्वाद पढ़ना।

कविचंद कहै सुनि चंडिपाल। जंपै छ भाष दिन एकबाल॥
ठट्ठौ जु अग्ग जकि वाज राज। दिय अषित सीस केदार साज॥
छं० ॥ ९१ ॥

है राज राज दीनी असीस। उट्ठे विचंद दिप कुसुम सीस॥
उच्चऱ्यौ बाज गाथा सु एक। आसीस राज बर विधि [1]विवेक॥
छं० ॥ ९२ ॥

गाथा ॥ जिन सारथ सजि पंथ्यौ। निज रष्यौ सु ग्रभ्भ उत्तरया॥
जिन रष्यौ प्रह्लादौ। सो करौ रष्या राज प्रथिराजं॥ छं०॥९३॥

दुर्गा केदार का पत्थर की चट्टान को चलाना और उसमें अंगूठी बैठार देना।

हनूफाल ॥ वै संधि बाल प्रमान। घट घटिय द्रुग्गा पान॥
पढ़ि छंद मंच विसाल। नर रीझि देवन माल॥ छं० ॥ ९४ ॥
भय अग्ग जंगम अंग। गति लही थावर जंग॥
रिंगि चल्यौ पाहन पंग। नय जानि जमुन तरंग॥ छं० ॥ ९५ ॥
[2]थुति करत सामँत सूर। धनि चंद मंच गरूर॥
कढ़ि मुद्र कीनिय पानि। नंषीति मध्य प्रमान॥ छं० ॥ ९६ ॥
गुन पढ़त रह्यि सुभट्ट। भय प्रथम उपल सु घट्ट॥
कर मंगि मुद्रिक चंद। नन दई मुद्रि कविचंद॥ छं० ॥ ९७ ॥
कीनी सु विद्य प्रमान। फिरि बाद मंडिय जान॥ छं० ॥ ९८ ॥

कविचंद का शिला को पानी करके अंगूठी निकालना।

दूहा ॥ प्रथम वाद पाहन कियौ। फिरि मंड्यौ बिय बाद॥
चंद सिला पानी करी। दुग्गा आनि प्रसाद॥ छं० ॥ ९९ ॥
साटक ॥ छचं सीस विराजमान बरयं राजेंद्र राजं बरं॥

(१) ए. कृ. को.-विसेक। (२) ए. कृ. को.-छत, छुत, छुति।

धम्म सास्त्र विरत्त [1]मंचति कवी बरदाय गुर सिद्धयौ ॥
केदाराय सु भट्ट किंन चरितं हिंदवान साषी बरं ॥
जै द्रुग्गा बरदान देवि मुषयौ तर्क बरं भासितं ॥ छं० ॥ १०० ॥

दुर्गा केदार का अन्यान्य कलाएं करना और चन्द का उत्तर देना।

चौपाई ॥ कला बहुरि द्रुग्गा बहु किन्नी। पुच काटि सिर जू जू दिन्नी ॥
धर धावै सिर पढ़ै सु छंदं। इसौ दिष्षि अद्धौ भय चंदं ॥
छं० ॥ १०१ ॥

दूहा ॥ बर प्रसन्न द्रुग्गा कियौ। विविध चरित्र विचार ॥
ए सुजानि [2]नर बीर गति। बहु बंधाना भार ॥ छं० ॥ १०२ ॥

देवी का वचन कि मैं कविचंद के कंठ में सम्पूर्ण कलाओं से विराजती हूं।

अरिल्ल ॥ मात कहै सुनि चंदर भासं। एक दिना ठाढ़ी पित पासं ॥
पाप तात कौ संध्यौ पंठ। हुं तब छंडि [3]बसी तो कंठ ॥
छं० ॥ १०३ ॥

अनि कवि कंठ बसी परिमानं। कला पाव कै अद्धी जानं॥
तो में बसी सबै गुन लीनी। [4]दुती देह नह जानै भीनी॥छं०॥१०४॥

अन्तरिक्ष में शब्द होना कि कविचंद जीता।

झाई सी बोलिय घट मांही। चंद जीभ बोल्यौ गहरांही ॥
षिझयौ सुन द्रुग्ग केदारं। अंतरिष्षि बोल्यौ गुन हारं ॥छं०॥१०५॥

दुर्गा केदार का हार मान कर राजा को प्रणाम करना और राजा तथा सब सामंतों का दुर्गा केदार की प्रशंसा करना।

(१) ए. कृ. को.-मतृति। (२) ए. कृ. को.-चर।
(३) मो.-नसी। (४) मो..दुनी।

दूहा ॥ हारि बोलि उर सकल बर । गयौ पास प्रथिराज ॥
सकल सूर आचिज भयौ । विधि विधान विधि साज ॥ छं० ॥१०६॥

कवित्त ॥ विधि विधान विधि साज । हारि अंतरिष बुलिय बर ॥
कहिय अप्प प्रथिराज । कला केदार करिय गुर ॥
थुति जंपै दनु देव । नाग जंपैति असुर नर ॥
सकल सूर सामंत । कित्ति जंपैति कित्ति कर ॥
सिर कट्टि पुच माया विभग । छंद बंध मुष उच्चरै ॥
सामंत सकल सेना सुबर । जै जै जै बानी करै ॥ छं० ॥ १०७ ॥

सरस्वती का ध्यान ।

साटक ॥ सेतं चीर सरीर नीरं सुचितं स्वेतं सुभं निर्मलं ॥
स्वेतं संति सुभाव स्वेत ससितं हंसा रसा आसनं ॥
बाला जा गुन दृड्डि मौर सु धितं त्रिभे सुभं भासितं ॥
लंबी जा चिहु राय चंद्र वदनी दुर्ग्गं नमो निश्चितं ॥ छं० ॥१०८॥

सरस्वती देवी की स्तुति ।

भुजंगी ॥ सधी सद्धियं बीर बीरं प्रमानं । हँसी देषि मातंग मातंग न्यायं ॥
करै मुक्ति कौ काज सब्बैति देवं । तहां मुक्ति कौ तत्त आवै सु भेवं ॥
छं० ॥ १०९ ॥
करै रिद्धि कौ काज सब्बै विहंसं । तहां सिद्ध आवै न सेवे वरंसं ॥
करै रिद्ध कौ पास गन्नै सछंडै । तहां रिद्धि आवै न पासै विपंडै ॥
छं० ॥ ११० ॥
इतं बात जानै न तो बाद जीतं । ननं सस्त्र बीरं मनं बीर रीतं ॥
जरी सस्त्र सों जंच जालंधरानी । सबै तेज मातंग तूही समानी ॥
छं० ॥ १११ ॥

कवित्त ॥ तू माया तूं मोह । मोह तत भेदन तूंही ॥
तूं जिह्वा मोथान । तूंब गुन मैं गुन भोंई ॥
तो बिन एक न होय । एक पच्छै कवि राजं ॥
मंच सुनै सह बड्ड । लष्य लष्यन सिरताजं ॥

तजि मोह बीर बंछै सु कवि। तत्त भेद नन अंग तिहि ॥
मो समरि मं डोलै नहीं। उभय आस छंडै जु कहि ॥छं०॥ ११२ ॥

देवी का वचन।

दूहा ॥ सु कवि सों सरसति कहै। मो तो अंतर नाहि ॥
सूर तेज कोइ हो कहै। ससि अस अमृत छांह ॥ छं० ॥ ११३ ॥

लीलावती ॥ हहं तूं हहं तूं नहं तूं नहं तूं। ननंहुं ननंहुं ननंहुं तुं नांही॥
भयं तो भयं तो महंतो महंतो। कथं तूं कथं तूं ननं ह्रूं ननं ह्रूं ॥
॥ छं ॥ ११४ ॥
गुनं तो गुनं तो हुं जंची हुं जंची। तु जंज्रं तु जंचं कयंती पढ़ंती ॥
कथंती कथंती न्रतंती न्रतंती। भ्रमंती भ्रमंती नतंती नतंती ॥
छं० ॥ ११५ ॥
भ्रमे जेमवंती जमंती जमंती। .... ॥ छं० ॥ ११६ ॥

कवित्त ॥ पय दष्षन कर उंच। मुष्ष बोले तूं है बर ॥
कहै सु बर प्रथिराज। बत्त जंपै सु क्रम गुर ॥
ब्रह्म विष्णु उप्पनौ। ब्रह्म देवी जुग जन्ना ॥
सूर बंस न्रप आदि। चंद बंसी नर दुन्ना ॥
रचि बालय ब्रन्नन तेज बन। किय जमुन्न जगि सुमन किय ॥
उच्चर्‍यौ संत सत्ता सु गति। मति प्रमान जंपैति सिय ॥छं०॥११७॥

दुर्गा केदार का कवि को पुनः प्रचारना।

दूहा ॥ पाषंड न जित्या अमर। सिला दिष्ट बंध कीन ॥
अब जानै बरदाय पन। उमया उत्तर दीन ॥ छं० ॥ ११८ ॥
जु कछु कहै कविचंद सो। [१]करै बनै कवि सोय ॥
जु कछु बत्त तुमसों कहों। सो उतर द्यौ मोय ॥ छं० ॥ ११९ ॥
जो पाषान सु पुत्तरी। अस्तुति करै जु आय॥
जो उमया सैंमुष कहै। तो सांचो बरदाय ॥ छं० ॥ १२० ॥

कविचन्द का वचन।

जासों तू पाषंड कह। सो रचि मोहि दिषाउ ॥
हो नंषों बर मुंदरी। तूं कर कढ्ढि सु ताउ ॥ छं० ॥ १२१ ॥

(१) ए. कृ. को.: फरै बनें सब कोइ।

एक संधि वै बरनवों। इक चद हव्वों भट्ट ॥
दो बर साथि उमा कहै। अंतर अभ्भ्भ सु घट्ट ॥ छं० ॥ १२२ ॥

घट के भीतर से लाली प्रगट होकर देवी का कविचन्द को आस्वासन देना।

कवित्त ॥ सुनि सैसव विछुरत्त। बाल किय अमर अरुन द्रिग ॥
बाल जगावन काज। रह्यौ [1]पिलदार जानि ढिग ॥
छीनरु उन्नित बढ़ै। घटै करकादि मकर जिम ॥
कामसाल गति पढ़ंति। चिंति उतरादि सूर भ्रम ॥
इच्छइ जु अंछि बंके करन। संका [2]लज्ज बसंकरी ॥
ग्रह ग्रहन फिरत बल दिष्षिए। श्रवन कथा रसनन चरी ॥
छं० ॥ १२३ ॥

गज निसि अंकुस चंद। कम्न तारक विहीनी ॥
कै प्राची दिसि चिया। बिंद कै कंदर छीनी ॥
कै कुंचिक शृंगार। काम द्रप्पत बर लोभै ॥
गाहनि काननि [3]ग्रनी। सिंघ नष गज मुष सोभै ॥
मनमथ्थ भुवन सोभै सुकवि। नष पच्छिम दिसि बधुअ मुष ॥
मनमथ्थ धजा मनमथ्थ रथ। चक्र एक एक हति रुष ॥
छं० ॥ १२४ ॥

रोला ॥ घट मंझै कविचंद। कवित उभया सुनि सुन्नी ॥
अति रिझ्झय बरदाय। सुरंग यासों सर धुन्नी ॥ छं० ॥ १२५ ॥

*चान्द्रायना ॥ विजै है मति राज। उकत्ति जो बहु धऱ्यौ।
मोहि चंद बरदाय। सु अंतर मति कऱ्यो ॥ छं० ॥ १२६ ॥

चौपाई ॥ जो विन अक्षर एक न होई। घट घट अंतर कव्विन जोई ॥
तुम बहु जुगति द्रुगति कवि आनौ। मो कविचंद न अंतर जानौ ॥
छं० ॥ १२७ ॥

(१) मो.-पिलवार। (२) ए. कृ. को.-लंक। (३) ए. कृ. को.-गनी।

* चारों मूल प्रतियों में रोला छन्द को चौपाई करके लिखा है इस चांद्रायन का नाम ही नहीं दिया है।

चन्द कृत देवी की स्तुति।

भुजंगी ॥ तुंही ए तुंही ए तुंहीं तुं जुगंतं। तुंही देव देवा [1]सुरेतं समंतं ॥
मरालंति बालं अलिं सारि ओरैं। कियं कै सभुक्के उगस्सं विढोरैं ॥
छं० ॥ १२८ ॥

लिलाटं न चंदं विराजै कला की। प्रभातं तडंदं बंदै लोय जाकी ॥
रुरें रत्त सोभै बरन्ने सु चंदं। घसे गंग हेमं भुले माहि इंदं ॥
छं० ॥ १२९ ॥

पढ़ै तुंमरं ताहि पावै न पारं। दियो चंद कब्बी हयं जा हुंकारं ॥
छं० ॥ १३० ॥

पुनः दुर्गा केदार का अपनी कलाएँ प्रगट करना और कविचन्द का उन्हें खण्डन करना।

पद्धरी ॥ केदार बत्त तब जंपि एह। दिष्षाउं तोहि बरसाय मेह ॥
प्रथमं सु पवन तब बज्जि जोर। गज्जीय गगन घन गरजि सोर ॥
छं० ॥ १३१ ॥

नभ छाइ स्याम बद्दल विसाल। भइ अंध धुंध जनु हुअ निसाल ॥
तरकंत तड़ित चिहुं ओर जोर। लग्गे सु करन कल मोर सोर ॥
छं० ॥ १३२ ॥

झम झमक बूंद बरसन्न लाग। इह चरित मंडि केदार बाग ॥
आचिज्ज हुअ [2]स[3] सभा एह। दिष्षय बसंत कविचंद तेह ॥
छं० ॥ १३३ ॥

आघात बात चलि फारि मेह। न्त्रिम्मलिय नभ्भ रबि तयन छेह ॥
हुअ अंब मौर फुल्लिगपलास। द्रुम सघन फुल्लि पंषिन हुलास ॥
छं० ॥ १३४ ॥

भमि भंग जुथ्थ गुंजार भार। कलयंठ कुहुकि द्रुम बैठि डार ॥
[5]सभ सकल मोहि रहि इन सु छंद। किन्नी अभूत वृत्तह सु [4]चंद ॥
छं० ॥ १३५ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-अधारं। (२) ए. कृ. को.-सभ सकल।
(३) ए. कृ. को.-सम। (४) ए. कृ. को.-छंद।

जे जेय विद्य देषी केदार। ते तेय चंद देषिय [1]वियार ॥
बैठक सु राज सिल एक तथ्य। दिष्षिय सु चंद उच्चरिय कथ्य ॥
छं० ॥ १३६ ॥

सुनि बत्त अहो द्रुग्गा केदार। प्रगटौ [2]सु विद्य जौ अव्व सार ॥
गुन पढ़ौ याहि अग्गें सु छंद। हुअ उपल गलित तो विद्यवंत ॥
छं० ॥ १३७ ॥

चिंत्तिय सु चिंत्त बरदाय देव। मन बच्च क्रम्म आचिंति तेव ॥
लगि पढ़न चंद देवी चरित्त। वर बानि ग्यान सची सु मंत ॥
छं० ॥ १३८ ॥

कुहलाय उपल हलहलिय अंग। झलमलगि जानि पारद सुरंग ॥
भिद्यौ सु वज्र गिरि पंक जानि। मुद्रकिय नंषि कवि मध्य थान ॥
छं० ॥ १३९ ॥

डुब्बी सु मध्य मुद्रिक अभिंदु। भयौ बज्र वान [3]सरिवरि कबिंद ॥
कविचंद कहै बर बदौं तोहि। अप्पै जौ काढ़ि मुद्रिय सु मोहि ॥
छं० ॥ १४० ॥

लग्यौ जु पढ़न केदार बानि। बर भास छंद अन्नेक आनि ॥
भेदै न उपल कछु अंग ताहि। थक्यौ अनंत करि करि उपाय ॥
छं० ॥ १४१ ॥

फिरि लग्यौ पढ़न कविचंद मंत। किल किलकि मध्य देवी हसंत ॥
अन्नेक बीज मंचह उचार। पढ़ै सु बानि कविचंद सार ॥
छं० ॥ १४२ ॥

फिरि भयौ गरित गिरिन्नर सु अंग। कढ्ढिग सु चंद मुद्रीय नंग ॥
*लग्यौ सु पाय केदार तब्ब। स्रम तोहि दिषि न त्रिभुवन्न कब्ब ॥
छं० ॥ १४३ ॥

कविचंद प्रसंसिय ताम भट्ट। बर विमल तुंही बानी सु घट्ट ॥छं०॥१४४॥

कवित्त ॥ लज्जि बीर केदार। बाद मंड्यौ मरनं चित ॥
सुबर [4]कट्ठ पुत्तरी। देहि उत्तर सजीव हित ॥

(१) ए. कृ. को.-चियार। (२) ए.-जु। (३) ए. कृ. को.-मवरी।
* ये अन्तिम दो पंक्तियां मो-प्रति में नहीं हैं। (४) ए. कृ. को.-कष्ठ।

तब चंद बंदि आराधि। घट्ट जल बंधि उड़ायौ ॥
गंग हेत बरदाइ। बरनि नौ रस्स पढ़ायौ ॥
द्रुग्गा केदार घट भंजि कै। कर अंतर भ्रंमत करि ॥
घिरयौ न सुजल अंतर रह्यौ। सो ओपम कविचंद हरि ॥छं०॥१४५॥

दूहा ॥ नीर भ्रमं तजि पिष्षियै। घट पर्ष्यं कविचंद ॥
मानौ [1]किरनि पतंग की। षेलत पारस मंडि ॥ छं० ॥ १४६ ॥

चौपाई ॥ एह चरित्त चंद कवि दिष्षिय। भला भला ऐसा तुम अष्षिय ॥
चंद सूर दोऊ कगि सष्षिय। बाद विवाद परस पर रष्षिय ॥
छं० ॥ १४७ ॥

कवित्त ॥ पढ़त मंच बरदाय। चल्यौ पाषान सुरंग कल ॥
घट बहै रिति कलिय। दिन्न आसीस हय सु बल ॥
बर सुंदरि कढ़ि नंषि। और आरंभ सु किन्नौ ॥
जंच मंच बहु जुगति। मंगि फिर बोल सु दिन्नौ ॥
ठठुक्यौ सु दुर्गा केदार बर। देव विष्ट नंषे सुमन ॥
जीत्यौ न कोय हार्‍यौ न को। सुनिय कथ्थ प्रथिराज उन ॥
छं० ॥ १४८ ॥

अन्त में दोनों का बाद बराबर होना।

दूहा ॥ बाद विबादन बीर [2]कबि। सत्ति सुभाव सुधीर ॥
द्रुग्ग मत्ति तौ संचरी। जौ चंद वयट्ठौ नीर ॥ छं० ॥ १४९ ॥

दोनों कवियों की प्रशंसा।

नीसानी ॥ पुन्न राह पढ़मष्परां हिंदू तुरकाना।
दोई राज सु दीन दो गोरी चहुआना ॥
दोई सास्त्र विचार दो कौरान पुराना।
इल उप्पर त्यों भट्ट दो ज्यों राति विहाना॥ छं० ॥ १५० ॥
इकै पुच विवद्ध कर इक नीर पषानां।
दोई राजन मंनिया सामंत सवानां ॥ छं० ॥ १५१ ॥

(१) ए. कृ. को.-किरनि। (२) मो.-कोइ।

पृथ्वीराज का दुर्गा केदार को पांच दिन मेहमान रख कर बहुत सा धन द्रव्य देकर बिदा करना।

कवित्त ॥ बाद बीर संबाद। [1]रहै मन मभ्भ मनोरथ ॥
[2]कोप छाह सिंधु तरँग। लग्गयौ कि बान पथ ॥
संझ परत प्रथिराज। रहै ऐसै मन धारिय ॥
बहुत बाद उच्चार। चंद जीतौ गुन चारिय ॥
न्त्रप दीन भट्ट दिष्यौ बदन। सो दिन सरसत्तिय बिरस ॥
अप्पयौ दान उच्चित.सु श्रुति। सु कवि दिष्षि ताथें सरस ॥
छं० ॥ १५२ ॥

रष्षि पंच दिन राज। चंद आदर बहु दिन्नौ ॥
भोजन भाव भगत्ति। प्रीति महिमान सु किन्नौ ॥
गेंवर सज्जिय तीस। तुंग साकति सिंगारिय ॥
तरल तुरँग सजि बेग। सत्त दिय परिकर सारिय ॥
कोटेक द्रव्य दीनौ न्त्रपति। अवर गिनै को विविध वरि ॥
सामंत सब्ब दिनौ सु दुत। कवि सुप्रसंसित कित्ति करि ॥
छं० ॥ १५३ ॥

दूहा ॥ हैवर सत गज तीस सुभ। मोती माल सु रंग ॥
लाल माल उभ्भय करुन। दै राजन रस रंग ॥ छं० ॥ १५४ ॥

स्लोक ॥ यावच्चंद्रो दिवानाथ। यावत् गंगा तरंगयोः ॥
तावत् [3]पुत्र प्रपौत्रस्य। दुर्गा ग्रामं [4]विलोकयेत् ॥ छं० ॥ १५५ ॥

कवित्त ॥ बर समोधि न्त्रप भट्ट। रीस छिम्माय प्रमोध्यौ ॥
तापच्छैं कविचंद। भट्ट गुन करि गुन सोध्यौ ॥
प्रसनं बीर प्रथिराज। लच्छि चतुरंग सु अप्पी ॥
इंद्रप्रस्थ वै थान। ग्राम दस अघटह अप्पी ॥

(१) ए. कृ. को.-रहेन। (२) ए. कृ. को.-कूय छांह।
(३) ए. कृ. को.-पौत्रस्य। (४) ए. कृ. को.-विलोकयत्।

*
आजन्म जन्म दारिद्र कपि। भट्ट भारद्द सरद करिय ॥
आदर अद्ब पहुंचाय करि। सब प्रसंस परसाद किय ॥
छं० ॥ १५६ ॥

दुर्गा केदार कवि का राजा को आशीर्वाद देकर विदा होना।

प्रथीराज चहुआन। दान गुन जान पग्ग धर ॥
अवलोकत से दून। पंच से देइ बाच वर ॥
जानि समप्पै सहस। सहस वत्तह जो दिज्जै ॥
बर विद्या रंजवै। तास दारिद्र न छिज्जै ॥
सोमेस सुअन सब जान गुन। दानहं अंकन वालियौ ॥
केदार कहै सब कुसल कल। कवि लहु सुत परि पालियौ ॥
छं० ॥ १५७ ॥

दूहा ॥ चल्यौ भट्ट केदार जब। दिय प्रथिराज असीस ॥
करि सुभाव सामंत सब। उठि रुचि नायौ सीस ॥ छं० ॥ १५८ ॥

कवि की उक्ति।

पिथ्थ बलिय चहुआन पें। बामान ह्वै कवि आय ॥
[1]लिये दान केदार कह। फुनि ब्रह्मंड नमाय ॥ छं० ॥ १५९ ॥

कवि का शहाबुद्दीन से रास्ते में मिलना।

चल्यौ भट्ट गज्जन पुरह। मझ्झ रह मिल्यौ सहाब ॥
लिये सथ्थ घन सेन बर। हय गय [2]तथ्थ तहाव ॥ छं० ॥ १६० ॥

गजनी के गुप्तचर का धर्म्मायन के पत्र समेत सब समाचार शाह को देना।

* इस छन्द में "चल्लावनि सामंत सूर सब सेना थप्पी" यह पंक्ति चारों प्रतियों में अधिक है। कहीं कहीं कवि ने इसी कवित्त छन्द को ८ पंक्ति का मान कर "डोढ़े के नाम से लिखा है परन्तु यहां पर न तो इसके जोड़ की दूसरी पंक्ति है न इसका पाठक्रम समयोचित है इस लिये हमने इस पंक्ति को मूल छन्द से बिलकुल निकाल कर अलग पाठान्तर में लिखा है।

(१) ए. कृ. को.-पाये। (२) मो.-सथ्थ।

कवित्त ॥ सोइ ग्राम सोइ ठाम। मान अप्पौ चहुआनं ॥
आदर सादर समुह। भट्ट गोरी सुरतानं ॥
ताहि सथ्थ बर दूत। रहै ऐसें परिमानं ॥
जल महि ज्यों गति जोक। भेद कोई नन जानं ॥
मुक्कयो बाद बद्दे सु कवि। गए पास सुरतान चर ॥
आघात साहि गोरी सुबर। आषेटक चहुआन धर ॥ छं० ॥ १६१ ॥

अद्द सथ्थ चहुआन। राज आषेटक षिल्लै ॥
हय हथ्थी बर साज। सबै जुग्गिनिपुर मिल्लै ॥
अप्पान्के अपजोग। पुच्छि तत्तार प्रमानं ॥
कही सु दूतय बत्त। तत्त जंगली निधानं ॥
निय भट्ट बाद हार्‍यौ सु [१]निय। कछु कछु तत जंपे सगुर ॥
फ्रम्मान बोर कग्गद लिष। करो साहि सो सत्ति धुर ॥ छं० ॥ १६२ ॥

शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज पर चढ़ाई करना।

सुनिय बत्त साहाब। बंचि कग्गर ततार बर ॥
अति आनंदिय चित्त। करिय अति धंष राज धर ॥
कियौ निसानन घाव। धाक दस दिसि धर फट्टिय ॥
मिले षान अगिवान। चढ़न साहाब सु रट्टिय ॥
दस कोस साहि बर उत्तरिय। सरित तट्ट मुक्काम किय ॥
रंग रत्त पीत डेरा बने। हय गय मीर गंभीर जिय ॥ छं० ॥ १६३ ॥

तत्तार खां का फौज में हुक्म सुनाना।

दूहा ॥ बोलि परिग्गह सूर सबं। पुच्छे सकल जिहान ॥
षां षुरसान सु बोलि बर। बंर बंध्यौ चहुआन ॥ छं० ॥ १६४ ॥

कवित्त ॥ कहै षान षुरसान। साहि गोरीं परिमानं ॥
बर संभरि चहुआन। दूत भेज्यौ बनि दानं ॥
लहुति लोह लोहांर। पग्ग षुरसान षटक्कै ॥
सुनत दूत बर बेन। साह सज्यौति सटक्कै ॥

(१) ए.-निव।

चहुआन सेन सायर मथन। गहन मान पुब्बा कब्यौ ॥
चतुरंग सज्जि बाजिच सूर। करि गोरी आतुर चल्यौ ॥छं०॥१६५॥

यवन सरदारों का शाह के सम्मुख प्रतिज्ञा करना।

षा षुरसान ततार। साहि सम्हें कर जोरिय ॥
आन दीन सु विहान। एन चहुआन विछोरिय ॥
हसहि मीर कहि धीर। मीर रोजा रंजानहि ॥
पंच निवाज विकाज। [1]जाइ गोरी गुम्मानहि ॥
इन बेर साहि सुरतान बर। करै दीन बत्ता सु गुर ॥
भर सूर सधै बंधै न्रपति। कै जीवत मङ्कै सुधर ॥ छं० ॥ १६६ ॥

दूहा ॥ छय मुसाफ सुरतान अग। उंच उंच बंधि तेग ॥
सुबर साहि साहाब सुनि। करै दीन उच वेग ॥ छं० ॥ १६७ ॥
सौगँध मानि साहाब षरि। ढिल्लीवै चहुआन ॥
राति दीह सल्लै सुबर। पुब्ब बैर सुरतान ॥ छं० ॥ १६८ ॥

शहाबुद्दीन की चढ़ाई का आतंक वर्णन।

पद्धरी ॥ चढ़ि चल्यौ साहि आलम असंभ। उप्पब्यौ जानि सायरन अंभ ॥
जल थल थलं न [2]जल होत दीस। उन्नयौ मेछ बर बैर रीस॥
छं० ॥ १६९ ॥

बज्जहि निसान धुंनित विसाल। हालंत नेज सुरतान हाल ॥
बारुनि बहंत मदगंध बुंद। मानो कि कूट चलि सत रविंद
छं० ॥ १७० ॥

सज्यौति सेन सुरतान बीर। बढ़ि तेज तुंग जानै गंभीर ॥
सम्हौ सु भट्ट मिलि आय राज। अति क्रूर तेज आहत्त साज॥
छं० ॥ १७१ ॥

सुरतान कहै हो दिल्लि राज। आयौ सु दौरि निय सुनि अवाज ॥
तब दूत कहै साहाब बाचि। आपी सु भट्ट चहुआन जाचि ॥
छं० ॥ १७२ ॥

(१) ए. जोइ। (२) ए. कृ.-को.-मिल।

चहुआन सत्त हय दीय उच्च। सामंत अवर समदिय सरुच्च ॥
गज तीस अप्पि ग्रामह दुसष्य। अप्पिय सु हेम राजन विलष्य ॥
छं० ॥ १७३ ॥

[1]अनि द्रव्य कोट दीनौ सु भाइ। सामंत सब्ब रुचि सीस नाइ ॥
संभरिय बत्त सुरतान बीर। धारेव उअर मझ्झे गंभीर ॥
छं० ॥ १७४ ॥

अग्गें सु बंधि निसुरत्ति षान। दस पंच हथ्थ उत सुव्विहान ॥
पारस्स साहि लक्करिय लाल। मानो कि सुभ्भि परवाल माल ॥
छं० ॥ १७५ ॥

दूहा ॥ सुबर साहि बंचिय निजरि। बर चल्लिय अगिवान ॥
यों पहुंच्यौ असपत्ति गनि। देस दिसा चहुआन ॥ छं० ॥ १७६ ॥

शहाबुद्दीन का सोनिंगपुर में डेरा डालना और वहां पर दुर्गा केदार का उससे मिलना और दूतों का भी आकर समाचार देना।

उतरि साह सोनंग पुर। दिसि दष्षिन बर थान ॥
किय डेरा केदार तब। मीर महब्बति षान ॥ छं० ॥ १७७ ॥

अरिल्ल ॥ निमां [2]साम बज्जिय नौबत्तिय। किय निमाज उमरावन तत्तिय ॥
सज्जि महल साहाब बयट्ठौ। आयौ महल [3]उम्मरां जिट्ठौ ॥
छं० ॥ १७८ ॥

आय.महल दुग्गी केदारह। दीन असीस बिविधि विद्यारह ॥
मिलि सहाब सादर सम्मानिय। पुच्छिय कुसल विविध कल बानिय ॥
छं० ॥ १७९ ॥

दूहा ॥ पुच्छि कुसल आसन्न दिय। सम दुग्गा केदार ॥
तन बिभूत जट सिंग म्रग। आए दूत सुच्यार ॥ छं० ॥ १८० ॥
दिय दुव्वाह तिन्न चरच वस। काइम साहि सहाब ॥

(१) ए. कृ. को.-"अति द्रव्य कोर दीनौ सु भाइ"।
(२) मो.-सात्र। (३) मो.-उमराव।

तीस लष्य में साहि। [1]थट्ट तारे दस दष्षे ॥
तिन में पंच सु लष्य। लष्य में लष्य सु दिष्षे ॥ छं० ॥ १९६ ॥

कवित्त ॥ सीर फिरस्ते टारि। दंष्ष मान्यौ सिंधु तट्टें ॥
सिंधु विहथ्थैं बीच। साह पुल बंधन घट्टें ॥
छुय मुसाफ तत्तार। मरन केवल विचारे ॥
सज्जि साथ चहुआन। काल्हि उतरिहैं पारे ॥
उप्परे डेर मुक्काम तजि। सेन काज [2]पुंटिय बजे ॥
नीसान हवाई मुंदरी। गज घंटानन डर सजे ॥ छं० ॥ १९७ ॥

दूहा ॥ जाय राज प्रथिराज पहि। विवरि पंवरि सुरतान ॥
कहियो [3]बेगी सेन सजि। आयौ पंथ चंपान ॥ छं० ॥ १९८ ॥

कविदास की होशयारी और फुर्ती का वर्णन।

कवित्त ॥ चल्यौ चंड कविदास। दमकि उट्ठौ दा सेरक ॥
मनु वामन किय हड्ड। क्रम्म चयलोक मने सक ॥
[4]कुसा तिष्य कर कढ्ढि। अग्र द्रिय वक्र निरष्षै ॥
मनों कुलटानि कटाच्छ। मध्य गुर जन सम लष्षै ॥
संचऱ्यौ एम संमीर वर। प्रोथ बात रोक्यौ प्रबल ॥
अध धऱ्यौ चक्र कर जेम हरि। मनुं जंबूर स छुट्टि कल ॥
छं० ॥ १९९ ॥

दास कवि का पानीपत पहुंचना और पृथ्वीराज से निज अभिप्राय सूचक शब्द कहना।

दूहा ॥ चल्यौ चंड कविदास तब। पहर एक निसि जंत ॥
अनल बेग हक्कयौ दरक। आयौ पानी पंथ ॥ छं० ॥ २०० ॥

कवित्त ॥ उत्तम न्त्रिम्मल सु द्रह। पुलिन बर पंसु झीन सम ॥
करत राज जल केलि। सुमन कसमीर अभर भ्रम ॥

---

(१) मो.-हथ्थ। (२) ए. कृ. को.-पुंटिय।
(३) ए. कृ. को.-बेगी। (४) ए.-कसा।

सथ्थ सूर सामंत । मत्त षेलत हड्डूअ ॥
.... । .... ॥
दिन सेष धरी सत्तरु दुअह । [1]हहंकि दरक मन वेग तहाँ ॥
कविदास आय तब जंपि न्नप । करौ सिलह सामंत सह ॥
छं० ॥ २०१ ॥

*दूहा ॥ मो दिष्षै न्नप दिष्षियौ । गोरी साहि नरिंद ॥
हसम हयग्गह सज्जि कै । दल वद्दल वर इंद ॥ छं० ॥ २०२ ॥
साहबदी सुरतान अब । तुम पर साज्यौ सेन ॥
[2]मों देष्षै देषौ न्नपति । घरी एक अप नेन ॥ छं० ॥ २०३ ॥

कवि के वचन सुनकर राजा का सामंतों को सचेत करना और कन्ह का उसी समय युद्ध के लिये प्रबन्ध करना ।

वृद्धभ्रमरावली ॥ सुनियं तब राजन चंड तनं [3]बयनं ।
तब जग्गिय बीरह धीर तनं नयनं ॥
तब सद्दिय सब्बह एक किए अयनं ।
सब सामंत सूरह सीस सजे गयनं ॥ छं० ॥ २०४ ॥
पहु आवरि वीरह अप्प तनं तयनं ।
मुष रत्तह व्यंवह श्रोन समं नयनं ॥
भिरि मुच्छह भौंहह भोंह समं षयनं ।
सब आवध सज्जिय भत्तह जे हयनं ॥ छं० ॥ २०५ ॥

कवित्त ॥ तब सज्जि सेन प्रथिराज । मंत सब सामँत पुच्छिय ॥
हय अरोहि धुज जुरहि । काय [4]पथ होइ सुमत्तिय ॥
कहिय कन्ह चौंहान । सु थल या अग्गें बेहर ॥
पुट्ठि सुने दिसि बाम । पूर जल किन्न सु केहरि ॥
मंडियै जुद्ध हय छंडि सब । इक भाग रष्यौ चव्यौ ॥
मंनी सु बत्त सामंत न्नप । भल भल सब सेना पव्यौ ॥छं०॥२०६॥

---

(१) ए. कृ. को.-हक्कि ।　　　　* यह दोहा मो. प्रति में नहीं है ।
(२) ए. कृ. को.-मैं ।　　(३) ए. कृ. को.-बनयं ।　　(४) ए. कृ. को.-पय ।

चहुआन सेना की सजाई और व्यूह रचना।

भुजंगी ॥ सयं सज्जियं व्यूह प्रथिराज राजं। सुरं बीर रस उंच बाजिंत्र बाजं॥
भरं मंडलं मंडियं मंडि अन्नी। [1]रसं सूर सामंत सा सूर मन्नी॥
छं० ॥ २०७ ॥

भरं सहस बा बीस हय छंडि बीरं। तिनं रच्चियं व्यूह जल जात धीरं॥
नरं कन्ह चौहान गोयंद राजं। भरं जैत पर सिंघ बलिभद्र साजं॥
छं० ॥ २०८ ॥

बडं गुज्जरं दून हड्डा हमीरं। रचे अट्ठ सामंत वा पच भीरं॥
बरं बग्गरी देव पज्जून राजं। सुतं नाहर सिंह परिहार साजं॥
छं० ॥ २०९ ॥

भए च्यार सामंत सो कर्णि कारं। बियं सब्ब धीरं परागं सु ढारं॥
भयो नारि पम्मारि जैतं समथ्थं। भयौ मध्य मेही प्रथीराज तथ्थं॥
छं० ॥ २१० ॥

भरं मध्य उद्दिग्ग बाहं पगारं। तिनं मद्धि जद्दौं सु जामानि सारं॥
सजे मध्य चंदेल भौंहा सु धीरं। तिनं मद्ध लोहान सा बिंझ बीरं॥
छं० ॥ २११ ॥

चढ़े रष्षिनं दष्षिनं रा पहारं। सहस्सं च अट्ठं चढ़े सूर सारं॥
छं० ॥ २१२ ॥

शहाबुद्दीन का आ पहुंचना।

दूहा ॥ सज्जि सेन साहाब सुर। आयौ आतुर हंकि॥
दिष्षि रेन डंबर डहसि। भर चहुआन असंषि॥ छं० ॥ २१३ ॥
गंभीरां सुरतान दल। अति-उतंग [2]वरजोर॥
मिले पुब्ब पच्छिमह ते। चाहुआन चित घोर॥ छं० ॥ २१४ ॥

यवन सेना की व्यूह रचना।

कवित्त ॥ अनिय बंधि पतिसाह। जुद्ध जीपन चहुआनं॥
षां मुस्तफा दलेल। पुट्ठि रष्षे गिरवानं॥

(१) मो.-रसे। (२) ए. कृ. को.-अति।

सज्जे सेन चतुरंग । दंद दंती बनि घट्टा ॥
सुबर बीर सुरतान । बान [1]उब्बरि जल छुट्टा ॥
चहुआन सुन्यौ आचंभ चर । सिंधु उतरि संम्हौ मिल्यौ ॥
दोउ दीन आय आवरि सुभर । षग्ग कढ्ढि षग्गह पुल्यौ ॥
छं० ॥ २१५ ॥

यवन सेना का युद्धोत्साह और आतंक वर्णन ।

हनूफाल ॥ आयो सु सज्जि सहाब । [2]उल्लथ्यौ सायर आब ॥
द्वै लष्य सारध एक । प्रति रची फौज विमेक ॥ छं० ॥ २१६ ॥
जति अनंत बज्जै बुज्ज । गिरधरनि अंबर गज्जि ॥
भर सिलह बंधिय बीर । तजि आस जीवन धीर ॥ छं० ॥ २१७ ॥
सजि कसे आवध सब्ब । बर लज्ज देषिय [3]ग्रब्ब ॥
मद गज्ज अट्ठो अट्ठ । बर बेग राह सु घट्ट ॥ छं० ॥ २१८ ॥
करि दौरि आयौ साहि । पंचास कोस [4]पहाहि ॥
विच राज जोजन एक । विश्राम सज्जिय सेक ॥ छं० ॥ २१९ ॥
तहां सिलह द्वै गै भार । परसंसि पीर भुझार ॥
उन्नमिय नेज उतंग । गनि जाइ रुवन रंग ॥ छं० ॥ २२० ॥
षुर षेह उड्डिय रेन । आकास मुंदिय तेन ॥
गहगही सद्द सु गाह । रन गहर पष्षर पाह ॥ छं० ॥ २२१ ॥
बानैंति बानैं साज । रस बीर धरिय सु गाज ॥
भय निजरि दूनिय सेन । भर भीर चिंतिय तेन ॥ छं० । २२२ ॥
बज्जंत रन रनतूर । निज ध्रम्म संभरि सूर ॥
जब देषि हिंदु उतारि । उच्चर्‍यौ षान ततार ॥ छं० ॥ २२३ ।

तत्तार का खां आधी फौज के साथ पसर करना, बादशाह का पुष्टि में रहना ।

दूहा ॥ कहि ततार साहाब सौं । किय दल हिंदु उतार ॥
हम उत्तरियै मीर सब । तुम रहौ पुट्ठि साधार ॥ छं० ॥ २२४ ॥

---

(१) मो.-उच्चरि ।　　(२) ए. कृ. को.-उह्रर्‍यो ।
(३) ए. कृ. को.-पब्ब ।　　(४) ए. कृ. को.-पहाड़ ।

कवित्त ॥ लष्य एक है छंडि । कियौ तत्तार उतारह ॥
अह लष्य दल चढ्यौ । रह्यौ सुरतान सुभारह ॥
मीर मसंद मसंद । अग्ग सज्जे भर सुभ्भर ॥
कुल अरेह असील । बोलि पित पिच नाम नर ॥
अग्गै सु भार हयनारि धरि । बानग्गीर बानैत तँह ॥
सजि सेन गरट चलि मंद गति । लग्गे बज्जन बीर रह ॥
छं० ॥ २२५ ॥

दोनों सेनाओं का परस्पर साम्हना होना।

दूहा ॥ बज्जे बज्जन लाग दल । उभै हंकि जगि बीर ॥
विकसे सूर सपूर बढ़ि । कंपि कलच अधीर ॥ छं० ॥ २२६ ॥

हिन्दू मुसल्मान दोनों सेनाओं का घोर घमासान युद्ध वर्णन।

गीतामालची ॥ छुट्टियं हयनारि दुअ दल गोम व्योमह गज्जियं ॥
उड्डियं आतस झार झारह धोम धुंधर सज्जियं ॥
छुट्टियं बान कमान पानह छाह आयस रज्जियं ॥
निरषंत अच्छरि सूर सुब्बर सज्जि पारथ मज्जियं ॥ छं० ॥ २२७ ॥
सज्जेवि सुभ्भर देवि ईसर आय गंध्रव किन्नरं ॥
नारद नद्दह मंडि मद्दह इच्छि नंचि अचंभरं ॥
हिंदू स जंपिय राम रामह सांइ अग्या सद्दयं ॥
असुरेव जंपिय दीन दीनय [1]पीर मीर महम्मयं ॥ छं० ॥ २२८ ॥
मिलि फौज दूनह एक मेकह झार धारह बज्जियं ॥
इक्के दुसाइय अप्प अप्पह वाहि आवध गज्जियं ॥
तन तेग [2]तुट्टय सीस लुट्टय कमध नच्चय केभरं ॥
बहि स्रोन पूरह काल करूरह किलकि जोगिनि जे सुरं ॥ छं० ॥ २२९ ॥
नच्चंत बीर बिताल तालिय घरहरंत सु सद्दयं ॥
नच्चंत ईसुर रज्जि भीसुर डमकि डौरुअ नद्दयं ॥
रस रूक बाहै धाक धाहै झाक आवध ओझरं ॥

(१) मो.-पादि नीर। (२) ए. कृ. को.-तुट्टहि, लुट्टहि।

असि पटापेलय सेल [1]मेलय सूर तुट्टहि सुभ्भरं ॥ छं० ॥ २३० ॥
परि सीस हक्कहि धर हहक्कहि अंत पाइ अलुभ्भरं ॥
उठि उट्ठि झक्कसि केम उक्कसि सांइ सुध्धल [2]जुभ्भरं ॥
एकेक चंपहि पीठ नंषहि धरनि धर परिपूरयं ॥
हकियं सु वेगं अलिय महमद करिय द्रग्ग करूरयं ॥ छं० ॥ २३१ ॥
सम चले गज्जह देषि रज्जह जीह हनि हनि जंपियं ॥
आवंत दून मसंद राजह देषि चच्चर चंपियं ॥
हनि संग जूरह प्रान पूरह दो कलेवर गोइयं ॥
विह्व वि राजह परे गाजह संगि एक परोइयं ॥ छं० ॥ २३२ ॥
रस रुद्र बीर भयान मुच्चिय काल नच्चिय नोदयं ॥
हक्कीय राज दुअप्प सुभ्भर बीर बीरह मोदयं ॥
हँकि सूर मंत गयन्न लग्गिय बाह चंपिय आवधं ॥
ढिल्लि असुर सयंन पिंड पंचह चंपि जंपिय सावधं ॥ छं० ॥ २३३ ॥
जामेक जुद्ध अरुद्ध लग्गिय बीर जंपिय बीरयं ॥
सिद्धीय सिंद्धय संत रासह ग्रभ्र स्रोनह सीरयं ॥
....　　....　　....　　....　　.... ॥
....　　...　　....　　....　　.... ॥ छं० ॥ २३४ ॥

वरनी युद्ध वर्णन ।

कवित्त ॥ हय गय हय हय अरथ । रथ्थ नर नर सों लग्गा ॥
हय सों हय पायल सु । पाय करि सों करि भग्गा ॥
ईस आन बर चवै । सूर सूरन हक्कारिय ॥
सार धार झिल्लै । प्रहार बीरा रस धारिय ॥
घरि एक भयानक रुद्र हुअ । सीस माल गंठी सु कर ॥
कविचंद दंद दुअ दल भयौ । मुगति मग्ग पुल्ले विदर ॥ छं० ॥ २३५ ॥

लोहाना का फुर्तीलापन ।

साटक ॥ सीतं [3]गोप सरेत भीतय बरं नर जोति दिष्षी गुरं ॥
रंभं रंभ सुरथ्थयं च अमृतं आलंब वाई बरं ॥

---

(१) ए. कृ. को.-सेलहि ।　(२) ए. कृ. को.-जुध्धरं ।　(३) ए. कृ. को.-तोप ।

दिष्टी दिष्टि विभारथोवि सरसा भारथ्थ बियं बुद्धयं ॥
गोरी सा सुरतान रुक्कति तयं आजानबाहं बरं ॥ छं० ॥ २३६ ॥

लोहाना और पहाड़राय का शाह पर आक्रमण करना और यवन सेना का उन्हें रोकना।

दूहा ॥ लोहानो आजान वर। लोहा लंगरि राव ॥
कढ्ढि लंबी तेग वर। साह सनंमुष धाव ॥ छं० ॥ २३७ ॥
सज्जि [1]सेन तूंअर सुभर। [2]वढ्ढिय हय चढ़ि षेत ॥
समुह साहि दिष्यौ सु द्रग। बंध्यौ बंधन नेत ॥ छं० ॥ २३८ ॥

नराच ॥ सु दिठ्ठि दिष्षि फौजयं, पहार साहि सम्मयं।
चल्यो सु राव सूर मंत, दिष्षि सम्म रम्मयं ॥
बचे सु राम बीर बीचि, साजि गाज उट्टए।
कढ़े सु सस्त्र सारि झारि, मीर सीस तुट्टए ॥ छं० ॥ २३९ ॥
मिली दु फौज हक्कि धक्कि, अन्य अन्य आवधं।
जयं सु अप्प बंछि बंधि, बीर संधि सावधं ॥
तुटे सु षग्ग भग्ग भार, दंत उड्डि दामिनी।
बरंत हूर मीर धीर, काम [3]बंछि कामिनी ॥ छं० ॥ २४० ॥
बरंति सूर अच्छरी, सु देह रोहि रथ्थयं।
ग्रहंत अग्नि एक पंति, उड्ड जात तथ्थयं ॥
मच्यो करार धार मार, सार सार धारयं।
परंत एक तुट्टि तेग, उड्डि झार मारयं ॥ छं० ॥ २४१ ॥
करें किलक्क बीर हक्क, सद्धि कंठ पूरयं।
रमंत रासि भीर भासि, नंदि नंचि नूरयं ॥
तुटंत सीस रोम रीस छक्कयं धरप्परं।
.... ॥ छं० ॥ २४२ ॥
नचै कमंध तुट्टि रंध [4]भभ्भि रंत संभरं।
अलुझ्झि कंठ कंठ एक तुट्टि तेग दुब्भरं ॥

---

(१) ए.-फौज। (२) ए. कृ. को.-कढ्ढिय।
(३) ए. कृ. को.-बंधि, बंदि। (४) ए. कृ. को.-भर।

वहंत सार बार पार ता करंत अंतरं।
ग्रहंत दंत दंत एक कंठ कंठ मंतरं ॥ छं० ॥ २४३ ॥
झटा सु हाक झाक धाक साल सेल संमुहं।
करंत घाव अंम [1]डाव घाव घाव रंमहं ॥
हुअंत षंड षंड घाउ सुन्नरं बगत्तरं ॥
परंत बाजि षंड भाजि सुंडरं सु पष्षरं ॥ छं० ॥ २४४ ॥
झरंत मत्त सुंड दंत षंड षंड चिक्करं।
ठिले सु मीर एक धीर नठ्ठि षेत निक्करं ॥
चली सु फौज लष्षि साहि रोहि गज्ज सज्जियं ॥
हकारि मीर बक्कारि [2]षग्ग धारि गज्जयं ॥ छं० ॥ २४५ ॥

क्षत्रिय वीरों का तेज और शाह के वीरों का धैर्य्य से युद्ध करना।

कवित्त ॥ बीर बीर पुट्टए। बीर बीरह आहट्टे ॥
सार धार बज्जे प्रहार। मद ज्यों दुअ जुट्टे ॥
रन हक्कारें राव। सिंघ पर एन सु छुट्टे ॥
वर उतंग भर सुभर। अप्प पर अनत न छुट्टे ॥
बर बीर साहि दिष्षौ निजरि। सां षुल्लें कुल चाढ़ि महु ॥
जाने कि काल जीहा उक्कसि। उद्दिग बाह [2]षगार बहु ॥
छं० ॥ २४६ ॥

दूहा ॥ हय गय रथ्थ अरथ्थ हुअ। नर सों नर नर लग्ग ॥
सघन घाइ उर बज्जते। भय भींभर द्रग भग्ग ॥ छं० ॥ २४७ ॥
हुअ हकार गज्जिय सुंभर। जुटे साहि तसील ॥
मानों मत्त गयद दो। जुटि अंकस बिन पील ॥ छं० ॥ २४८ ॥

उक्त दोनों वीरों का युद्ध और अन्य सामंतों का उनकी सहायता करना।

(१) ए. कृ. को.-द्राव। (२) मो. पगार।

भुजंगी ॥ जुटे जोध जोधं अभंगं करालं। उठे मुष्य नासा नयन्नं बरालं॥
मिले छोह कोहं असम्मान लग्गे। परे लोह लत्तं निघत्तं करग्गे ॥
छं० ॥ २४९ ॥

दुअं दीन दीदेर ते लोह [1]छक्के। फिरै गेन देवी हकारंत हक्के ॥
भए चाल बंधं [2]मसंदं मसंदं। करें कूक हक्कं सु आवत्त सद्दं ॥
छं० ॥ २५० ॥

ढरें संध बंधं बहैं षग्ग धारें। मनों चक्र पंकं कुलालं उतारें ॥
लगे [3]सेंग अंगं कढ़ें बार पारं। बहै जानि जावक्क श्रोनं प्रनारं ॥
छं० ॥ २५१ ॥

लगै गुर्ज सीसं दुअं हथ्थ जोरं। दधी भाजनं जानि हरि ग्वाल फोरं॥
मिले हथ्थ बथ्थं गहै सीस केसं। जरे जम्म दड्ढं महा मल्ल भेसं ॥
छं० ॥ २५२ ॥

करें छुल्लिका जुड़ [4]कित्तेति बीरं। दिषें भेज अंगं मनों मुंड चीरं॥
रुपे बीर सामंत डिग्गे न पग्गं। तुटै सीस धक्कै धरं हक्क अग्गं॥
छं० ॥ २५३ ॥

चले श्रोन षारं मची कीच भूमी। अभूतं सु कंकं महाबीर झूमी॥
जहा षान तत्तार रुपि राह रूपं। तहां चक्र रुपी प्रथीराज भूपं॥
छं० ॥ २५४ ॥

मिले मुष्य गोयंद चहुआन कन्हं। जुरे जैत बलिभद्र परसंग नन्हं ॥
परे मेच्छ व्यूहं सु पावै न जानं। करी पारसं कोपि चहुआन आनं॥
छं० ॥ २५५ ॥

गहौं साहि गोरी हरों स्वामि त्रासं। बहै सथ्थ लोहान ज्यों काल ग्रासं॥
मुर्यौ षान तत्तार अप्पार मारं। परे षेत अंगं अभंगं अपारं ॥
छं० ॥ २५६ ॥

लिये जीति वाजिच हस्ती तुरंगं। तक्यौ तोमरं साहि सज्यौ कुरंगं॥

---

(१) ए. कृ. को.-छक्कं, हक्कं।
(२) ए. कृ. को.-मसंदं।
(३) ए. कृ. को.-संग।
(४) मो.-कित्ते सु।

* .... । .... ॥ छं० ॥ २५७ ॥

यवन सेना का पराजित होकर भागना।

कवित्त ॥ [1]लुथ्थि लुथ्थि आहुट्टि। लुथ्थि पर लुथ्थि अहुट्टिय ॥
षां षुरसान ततार। षान रुस्तम बे जुट्टिय ॥
अबर सेन अध लष्प। तेह घाइल भर भग्गिय ॥
सहस [2]सत्त परि षित्त। मुष्प सामंत बिलग्गिय ॥
मत्तंति लोह छक्के गरुअ। हरुअत्तन करि गरुअ किय ॥
भग्गौ सु तूल सुरतान दल। क्रम्म क्रम्म उड्डं बरिय ॥छं० ॥ २५८ ॥

छः सामंतों का शाह को घेर लेना।

चढ़त गज्ज साहाब। दिट्ठ पाहार सु दिष्षिय ॥
रा जद्दव जामानि। राव भौंहा भर लष्षिय ॥
लोहानों आजान। बाह उद्दिग पग्गारह ॥
बिंझराज चालुक्क। देषि षट सामंत सारह ॥
दौरे सु सज्जि असिवर सुमुष। गहो गहो जंपेव सुर ॥
आए मसंद अड्डे दुदस। मुझ्झ अलुझ्झिय साह पर ॥
छं० ॥ २५९ ॥

उत्तह बीस मसंद। इत्त सामंत सत्त षट ॥
बज्जै सार करार। झार उड्डंत रूक झट ॥
[3]पसरन श्रोन प्रवाह। गाहि रन बीर समथ्थं ॥
परे मसंद मसंद। धरनि सामंत सु हथ्थं ॥
चंप्पौ सु गज्ज गोरी गरुअ। रा भौंहा हय सीस गय ॥
घेऱ्यौ सु सब्ब सामंत मिलि। लोहानों गज रोह हय ॥छं०॥२६०॥

लोहाना का शाह के हाथी को मार गिराना।

दूहा ॥ हक्कि तुरी लोहान तब। हन्यौ कंध गज षग्ग ॥
ढरिग सीस पुंतार सम। धररिनि दंत दोय लग्ग ॥ छं० ॥ २६१ ॥

*मालूम होता है यहां के कुछ छन्द खण्डित हो गए हैं।

(१) मो.-लोथि। (२) ए. कृ. को. सित्त। (३) ए. कृ. को.-पसरत।

शाह का पकड़ा जाना।

कवित्त ॥ उरत कंध गज साहि। गह्यौ पाहार पंचि कर ॥
कसिय बाह तूंवर सतेन। हय डारि कंध पर ॥
गह्यौ देषि सुरतान। सेन भग्गो सब आसुर ॥
परी लूटि हय गय समूह। बर भरे दरक [२]जर ॥
परे मीर सत्तह सहस। सहस अड्ड हय [३]पंचि मय ॥
दिन अस्त साहि साहाब गहि। दियौ हथ्थ अप्पन सु रय ॥
छं० ॥ २६२ ॥

मृत वीरों की गणना।

दूहा ॥ सय चत्तिय परि हिंदु रन। सत्त एक हय थान ॥
सामंता सब तन कुसल। जय लद्धी चहुआन ॥ छं० ॥ २६३ ॥

लोहाना की प्रशंसा, शाही साज सामान की लूट होना।

कवित्त ॥ लोह हद्द मंडीय। मोहि विसमै द्रिग लिन्निय ॥
अहत कंट मंडयौ। होम पासंग सु किन्निय ॥
सकति अग्ग दुभ्भरी। किन्न पूजा कज बट्टिय ॥
सुजस पवन छुट्टयौ। किस्ति चाव दिसि फुट्टिय ॥
आवद्ध रतन लोहान बर। लोहा लंगर धाइयां ॥
आजान बाह बहु भूप बल। गहन तेग उचाइयां ॥ छं० ॥ २६४ ॥
गह्यौ साहि सुरतान। जोध हय गय तहं भग्गे ॥
जमदड्ढां जम दड्ढ। असम असिधर नर लग्गे ॥
चामर छत्र रषत्त। तषत्त लुट्टे सुरतानी ॥
बंधि साह सु विहान। सुकर दीनौ चहुआनी ॥
बर बंध गए ढिल्ली तषत। जै बज्जा बज्जे सघन ॥
सोमेस सुअन संभरि धनी। रवि समान तप मान [३]धन ॥
छं० ॥ २६५ ॥

---

(२) ए.-जारन। (३) ए. कृ. को.-पंचि। (३) ए. कृ. को.-सम।

पृथ्वीराज का सकुशल दिल्ली जाना और शाह से दंड लेकर उसे छोड़ देना ।

गहिय साहि आलम्म । गए प्रथिराज अप्प ग्रह ॥
पोस मास पंचमिय । सेत गुरवार क्रत्ति कह ॥
जोग सकल गहि साह । सज्जि दिल्ली संपत्तौ ॥
अति मंगल तोरन । उछाह नौसान घुरत्तौ ॥
दिन तीस रष्षि गोरी गरुअ । अति आदर आसन्न बर ॥
करि दंड सहस अट्ठह सु हय । गय सु सत्त लिय मुक्कि कर ॥
छं० ॥ २६६ ॥

दंड वितरण ।

दूहा ॥ अद्ध दंड [1]प्रथिराज पहु । दीनौ राव पहार ॥
अवर पंच सामंत अध । दीनौ प्रथुक पथार ॥ छं० ॥ २६७ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके दुग्गा केदार संवादे पातिसाह ग्रहनं नाम अट्ठावनवों प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ५८ ॥

(१) मो.-पतिसाह ।

अथ दिल्ली वर्णनं लिष्यते ।

(उनसठवां समय ।)

पृथ्वीराज की राजसी ।

दूहा ॥ साष साष भट भाष षट । । दर सम वर पुर इंद ॥
तपै सूर सामंत इछं । दिल्लिय चंद कविंद ॥ छं० ॥ १ ॥

दिल्ली के राज्य दरबार की शोभा ।

अति अति रूप अनंत वर । जरि जराव बहु भंति ॥
सभा सिंगारिय सकल भर । मनु सुरपति ओपंति ॥ छं० ॥ २ ॥
मधुरिति छच विराज महि । सिंघासन बहु साज ॥
जनु [1]कि मेर उतकंठ महि । सामँत रिद्धि सकाज ॥ छं० ॥ ३ ॥
कवित्त ॥ षट सुभाष षट हंन । बहुत बज्जन तहं बज्जत ॥
रंग राषि षट भंति । करिय सें अट्टह गज्जत ॥
वपु सुमेर गति सप्प । छके षट रिति मद मत्तह ॥
मनहु काम प्रतिबिंब । । लयौ अवतार [2]दिल्लि थह ॥
चल चलत राइ चिहुं चक्क के । आयस रन डंडक गहन ॥
चहुआन भान सम भान तप । रहन वास उडपति धरन ॥
छं० ॥ ४ ॥

निगमबोध के बाग की शोभा वर्णन ।

नराच ॥ सुधं निगंम बोधयं, अमंन तट्ट सोधयं ।
तहां सु बाग अच्छयं, बने सु गुल्ल अच्छयं ॥ छं० ॥ ५ ॥
समीर तासु बासयं, फलं सु फूल रासयं ।
विरष्ष वेलि डंबरं, सुरंग पान अंमरं ॥ छं० ॥ ६ ॥
जु केसरं कुमंकुमं, मधुप्प वास तं भ्रमं ।

---

(१) मो.-जनु किरन्न । (२) ए. तिनह ।

अनार दाष पल्लवं, सु छच पत्ति ढिल्लवं ॥ छं० ॥ ७ ॥
श्री षंड षंड [1]वासयं, गुलाब फूल रासयं ।
जु चंपकं कटंबयं, षजूरि भूरि अंबयं ॥ छं० ॥ ८ ॥
सु अंननास जीरयं, सतूतयं जँभीरयं ।
अषोट सेव दामयं, अवाल बेलि स्यामयं ॥ छं० ॥ ९ ॥
जु श्रीफलं नरंबयं, सबद्द स्वाद छीतयं ।
रवंत मोर वायकं मनो सँगीत गायकं ॥ छं० ॥ १० ॥
उपम्म बग्ग राजयं, मनों कि इंद्र साजयं ।
...., ... ॥ छं० ॥ ११ ॥

दूहा ॥ उड़ि सु वास गुलाल अति । उड़ि अबीर असमान ॥
मनहु भान अंबर सुरत । बजी तंति सुरगान ॥ छं० ॥ १२ ॥

दरबार की शोभा और मुख्य दरबारियों के नाम ।

* वेलीविद्रुम ॥ बजि तंति तंचिय बज्जनं । सुरगान [2]सज्जिय सुरगनं ॥
गुलाल लल्लिय अंगनं । आरक्त रंगि परंगनं ॥ छं० ॥ १३ ॥
चहुआन ओपिय छचयं । बंधान बंधिय सचुअं ॥
सामंत दरगह [3]सज्जयं । करतार कौन सु कज्जयं ॥ छं० ॥ १४ ॥
ढरि चमर दुअ भुज ढिल्लयं । मधु उपम मधुवन मिल्लयं ॥
गोयंद निद्दुर सलष्षयं । धुर धरन गहिय नष्षयं ॥ छं० ॥ १५ ॥
बनि इंद देव सु वन्नयं । सोमेस बंधव कन्हयं ॥
चष पटिय चष्षन थट्टयं । दस लष्ष मीर दवट्टयं ॥ छं० ॥ १६ ॥
रिषि आप आप विधुत्तयं । थिर रहै रिद्धि न युत्तयं ॥
गुरराम पिट्ठ विराजयं । जनु वेद ब्रह्म सु साजयं ॥ छं० ॥ १७ ॥

(१) ए.-वीसयं ।

* इस छन्द को मो. प्रति में दण्डमालची करके लिखा है । वास्तव में कौन छन्द ठीक है इसके लिये हमने प्रचलित हिन्दी पिंगलों की छानबीन की परन्तु कुछ भी पता न चला अस्तु हमने ए. कृ. को. तीनों प्रतियों के पाठ को मान कर मो. प्रति के पाठ को पाठान्तर में दिया है।

(२) ए. कृ. को.-सज्जि कि सरगनं । (३) ए. सज्जियं ।

मुष अग्ग चंद [1]सु भष्षनं । रज रीति हद्द सु रष्षनं ॥
पुंडीर चंद सु पाहरं । नर नाथ दानव नाहरं ॥ छं० ॥ १८ ॥

बसि अन्यो अन्य सु ठौरयं । सुनि तंति सुरगन सोरयं ॥
पिट्ठै स दिट्ठय पासनं । रचि अंब सेत हुतासनं ॥ छं० ॥ १९ ॥

चामंड लष्ष सु लष्षनं । रजि हिंदु राज सु रष्षनं ॥
रनधीर सामंत सुब्भयं । भिरि भंजि मीर सु द्रब्भयं ॥ छं० ॥२०॥

मुष अग्ग बाजन ठट्टयं । पहु दीप मभ्भल कट्टयं ॥
दोसत्त जुर रा दुष्षनं । चिहु चक्क चारु सु [2]पिष्षनं ॥ छं० ॥ २१ ॥

घुरि चंब सुर तहं बज्जनं । गहि छंड गोरिय गज्जनं ॥
रचि महुल मधुरिति मधुरयं । भ्रम छंडि मंडि सु पिथ्थयं ॥
छं० ॥ २२ ॥

दिल्ली नगर की शोभा वर्णन ।

चोटक ॥ घुरि घुम्मिय चंब निसान घुरं । पुर है प्रथिराज कि इंद्रपुरं ॥
प्रथमं दिलियं किलयं कहनं । ग्रह पौरि प्रसाद घना सतनं ॥
छं० ॥ २३ ॥

धन भूप अनेक अनेक भती । जिन बंधिय बंधन छत्रपती ॥
जिन अस्व चढ़ै [3]घरि असि लषं । बल श्री प्रभु मत्त अनेक भषं ॥
छं० ॥ २४ ॥

दह पौरि सु सोभत पिथ्थ बरं । नरनाह निसंकित दाम मरं ॥
भर हट्ट सु [4]लष्षनयं भरयं । धरि बस्त अमोल नयं नरयं ॥
छं० ॥ २५ ॥

तिहि बीच महल्ल सतष्षनयं । लष कोटि धजी सु कवी गनयं ॥
नर सागर तारँग [5]सुद्ध परें । पंरि राति सुरायन बादुघरें ॥
छं० ॥ २६ ॥

---

(१) मो. सु भूषन । (२) ए. कृ. को.-चष्षनं । (३) ए. कृ. को.-घारि ।
(४) ए. कृ. को.-सुप्पनयं । (५) ए.-सद्द ।

मचि कीच ओगालन हट्ट मझें। दिषि देव कैलासन दाव दझें॥
[1]रजितार वितारन भंति नवी। परिजानि हुतासन लाल छवी॥
छं० ॥ २७ ॥

मनु सावक पावक मद्द कियं। विन तार अतारन मारि लियं॥
इन रूप टगं मग चाहनयं। मनों सूर सबै ग्रह राहनयं॥
छं० ॥ २८ ॥

तिन तट्ट कलिंदय तट्ट सजं। धर मभ्भक्ष तार अनेक सजं॥
तिन अग्ग सुभंत सु बग्गनयं। लषि लष्षि चौरासिय उड्डनयं॥
छं० ॥ २९ ॥

पषि लक्षिय नीलिय मानकयं। रतनं जतनं मनि तेज कयं॥
सुभ दिल्लिय हट्ट सु नैर मझें। करि दंत मिषांत गिरंत सझें॥
छं० ॥ ३० ॥

इय सामँत दामित रूप कला। वर बीर उठै घरि सत्त कला॥
जिन सामँत सामँत सुद्धरयं। घटि बद्धि मँडे गिर दुभ्भरयं॥
छं० ॥ ३१ ॥

कवित्त॥ परिहारह बन बीर। आय इय जोरि सु उभ्भिय॥
भोजन सद्द प्रमान। तहां [2]प्रथु सामँत सुभ्भिय॥
सभा विसरजिय सूर। आय बैठक बैठारिय॥
बहुत मंस पकवान। जबुकि प्रथमी आधारिय॥
पट ब्रम्ह दरग्गह सोम सुष। केसर अगर कपूर उर॥
सामंत नाथ चरचिय सबन। सिव दद्धी ढुंढा सहर॥
छं० ॥ ३२ ॥

राजसी परिकर और सजावट का वर्णन।

तोटक॥ इह इंद्र पुरं किधौं दिल्ल पुरं। इम उप्पिय मंदिर सोम [3]सुरं॥
इह मेर किधौं इंद्र चायनयं। बहु भंति जरे मनि पट्टिनयं॥
छं० ॥ ३३ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-रचिता विरलारन। (२) ए.-प्रिथा, ए. कृ. को.-प्रिथ।
(३) मो.-सुंअ।

सुर मध्य विराजत सूर समं। सु मनों सुर उप्पर भान भ्रमं॥
घन मद्धि तड़िक्त कला विकलं। पुर धाम सुभद्र सषा प्रबलं॥
छं० ॥ ३४ ॥

सुभ रूप तहां गनिका गनयं। भ्रमि मानव सिद्ध सुरं भ्रमयं॥
गहि तंचिय जंचिय डक्क बजै। जनु मार किधों कुरु कोक सझै॥
छं० ॥ ३५ ॥

उड़ि बीर अबीर न झारनयं। जनु मेर सुधा गिर धारनयं॥
लष एक लियै रजनी सजनं। ग्रह रूप अनूपम काम मनं॥
छं० ॥ ३६ ॥

भरि द्रव्य रमै सब हीर मनं। रमि जूप बदै रमनी गमनं॥
सब हारि निहारि कोपीन सझै। जब लिद्धिय नारि अपारि दझै॥
छं० ॥ ३७ ॥

इन मान अमान सु रूप रमै। मनु सिद्धि करामति क्रम्म क्रमै॥
बनि पंति सुकंत निसान लयं। मुष दिट्ठिय ढिल्लिय मालनयं॥
छं० ॥ ३८ ॥

मनु रूप अनूप सितं विकनं। भर भौर बढ़ी नह दिट्ठ नयं॥
[1]घन घोरत सोर अमोघ नयं। मनु बाल सजोवन प्रौढ बनं॥
छं० ॥ ३९ ॥

सु जहां चहुआन सु भोन सजै। सु मनों ससि कोरन कोर मझै॥
ग्रह दिष्षिय दासि अवासनयं। तिन सोभ सुकाम करी [2]तनयं॥
छं० ॥ ४० ॥

बहु रूप रवंन रवंन भती। मुष अम्रत सम्रत प्रान पती॥
सुर अट्ठ सषी अँग रष्षि कला। मनु सेस बधू प्रभु की अबला॥
छं० ॥ ४१ ॥

तिन धाम कलस्सन कोर बनी। जनु अंबर डंबर भान घनी॥

(१) ए. कृ. को.-घन सोर अमोर।
(२) ए. कृ. को.-नटयं, नठयं।

सित सत्त कलस्स सु [1]मुंदरयं। तिन मक्झ सषी बहु सुंदरयं॥
छं० ॥ ४२ ॥

गज राजत राज सु छपपती। प्रथिराज कैमास हन्यौ सु मती॥
चहुआन बधू दसयं भनयं। भिरि लिछि मंडोवर दंपतियं॥
छं० ॥ ४३ ॥

सुभ इंछिनियं कनयं [2]सुनयं। रिति छच कला सुर संपतयं॥
तिय पिथ्थइ व्याह पुंडीर कियं। मनु अंबर मद्धि तड़ित्त बियं॥
छं० ॥ ४४ ॥

भनि नाम चंद्रावति चंद सुती। सुष भाग सुहागन चंद सुती॥
घर दाहुर दाहिम पुत्ति इयं। तिनं पेट रयन्न कुमार भयं॥
छं० ॥ ४५ ॥

ससि हत्त सु भंतिय क्रष्ण करी। मनु आनिय पीय सु कंध धरी॥
तिन रूप [3]रूपं मनि लिद्ध रजं। चहुआन सु आनिय देव सजं॥
छं० ॥ ४६ ॥

बरि लिन्निय षग्ग इंद्रावतियं। जनु सुष्ष सरस्वति गावतियं॥
कुल भान सती सुत हाहुलियं। जनु किस्न रुकंमनयं मिलयं॥
छं० ॥ ४७ ॥

ग्रह पान सुती सु पजून घरं। मनु चित्त कि पुत्तरि आनि धरं॥
रिनथंभ हंसावति काम कला। तिन दीपति छिप्पत चंद कला॥
छं० ॥ ४८ ॥

सुर अच्छर मच्छर मान वती। किय अप्प [4]जँजोग संजोग सती॥
वह रूप अनूप सरूप मती। नह दिष्षिय नागिनि इंद्र सुती॥
छं० ॥ ४९ ॥

मनु काम [5]धनुंक करी चढ़यं। किधौं षंभ द्रुमं सु हिमं [6]चढ़यं॥
सुर कोटि चिषंड नयन्न सुजं। तट तास सुवास जमुंन [7]सजं॥
छं० ॥ ५० ॥

(१) मो.-सन्दरयं। (२) ए.कृ.को.-सुभयं। (३) ए.कृ.को.-रथंमनि। (४) ए.कृ.को.-संजोग।
(५) ए. कृ. को.-धनंक। (६) ए.-बढ़यं। (७) ए. कृ.-सझं।

तिन तट्ट अनेक [1]गयंद सढं । पग नट्ट गिरं पवनंति वढं ॥
बहु रूप अनूप सरूप भती । दिषि जानि काला सुर देव पती ॥
छं० ॥ ५१ ॥

गज थंभ छुटंत उसह मदं । मनुं याजत गज्ज अषाढ़ भदं ॥
कि मनों षह उट्ठिय कंठ लयं कि बढ़े मनु उप्पर बद्दरयं ॥
छं० ॥ ५२ ॥

बहु रंग सुरंग सु वस्त्र दियै । तिन मेर [2]सिषंन सुभान छिपै ॥
तिन मध्य रयंन कुमार नयं । सुत ह्वर गयंन विदारनयं ॥
छं० ॥ ५३ ॥

दिनप्रप्नि रमें तट झूलनयं । सुर पेषि सुरायह भूलनयं ॥
तट रेष रिषी सर पालनयं । क्रित नाम सुधारन कालनयं ॥
छं० ॥ ५४ ॥

राजकुमार रेनसी का ढुंढा की गुफा पर जाकर उसका दर्शन करना, ढुंढा की संक्षेप में पूर्व कथा ।

[3]सत तीन बरष्ष असी अमलं । जब ढूंढ़ ढँढोरिय भू सगरं ॥
तिन सिद्ध गुफा अवतार लियं । मुनि जानि अब्बा समयं दिषयं ॥
छं० ॥ ५५ ॥

तिन ढिग्ग रयंन कुमार गयं । मुनि जानि क्रपाल क्रपाल भयं ॥
बजि तारिय भारिय सद्द बधं । प्रति जीव सु जोति गयंन सिधं ॥
छं० ॥ ५६ ॥

जट जूट विकट्ट भ्रकुट्ट भरं । मधि क्रन्न सुकी सुक मंडि घरं ॥
सुत चंद सु पानि जुगं जुरयं । सिधद्रिग्ग उघारि दिषं नरयं ॥
छं० ॥ ५७ ॥

तिन पुच्छिय बत्त मह्वी रिषयं । तुम बीसल पुत्त नरं [4]भषयं ॥
अब किच्छिय दुच्छिय बास कियं । प्रथमं अजमेर कुबेर दियं ॥
छं० ॥ ५८ ॥

(१) ए.-सयंद । (२) ए. कृ. को. सषंन ।
(३) मो.-सित दोय वरष्ष असी अलगं । (४) मो. भषनं ।

दूहा ॥ जब उतपंन सु कुंड मझि। दिय रिषि नें बर ताम ॥
आहु सु पहिलै [1]अजय बन। जुग्गिनि वास सु ठाम ॥ छं० ॥ ५९ ॥

कवित्त ॥ पुर जोगिनि सुर थान। [2]जुग्गइने ताथें तारिय ॥
सतजुग संकर सधर। परत प्रथिराज सु पालिय ॥
द्वापर पंडव राव। सम कौरव संघारिय ॥
कलिजुग पति चहुआन। जिन सु गोरी घर ढारिय ॥
घर जारि पंग [3]पारन रवरि। फिरि दिल्ली चिहुं चक्क धर ॥
मेवात पत्ति इक छच मह्हि। [4]निव धमेव आवट्टि नर ॥छं०॥६०॥

रेनु कुमार की सवारी और उसके साथी सामंत कुमारों का वर्णन।

दूहा ॥ सुभट सीष दिय भर सबन। रिषि प्रमान करि भौर ॥
बिन तारी करतार बर। तट बहि जमना तीर ॥ छं० ॥ ६१ ॥
घुरि निसान सद्द धमकि। चढ़ि गज रेन कुमार ॥
मनों इंद्र ऐराप धरि। करिय असुर संघार ॥ छं० ॥ ६२ ॥

पद्धरी ॥ अरोहि गज्ज रेनं कुमार। चढ़ि चले सुतन सामंत सार ॥
सुत कन्ह मन्नि ईसरह दास। दिय देस रहन पट्ट[5] सु वास ॥
छं० ॥ ६३ ॥
सुत निडर बीर चंद्रह [6]जु सेन। पल मारि भारि कर बध्ध रेन ॥
सम जैत सुअन करनह सु जाव। जिन लिये सच सिर सिद्ध दाव ॥
छं० ॥ ६४ ॥
गोयंद सुतन सामंत सींह। जिन स्वामि काम नहि लोपि लीह ॥
कैमास सुअन परताप आप। जिन रष्षि भ्रम्म घर वट्ट बाप ॥
छं० ॥ ६५ ॥
पुंडीर धीर सुत चंद्रसेन। जिन चलै सज्ज हैं उड्डि रेन ॥

(१) ए. कृ. को.-अज्ज। (२) ए. कृ को.-जुगह तेता ते तारिय। (३) ए. कृ. को पारी। (४) ए. कृ. को.-निहच मेव आवट्टि नर। (५) ए. सु

परिहार पीय सुअ तेज पुंज। मनु दाष पक्क कै केलि कुंज॥
छं० ॥ ६६ ॥

गुरराम सुअन हरिदेव रूप। मुष मिठ दिठ्ठ कलि परन भूप॥
हम्मीर सुतन नाहर पहार। दस पंच बरष महि बजिय सार॥
छं० ॥ ६७ ॥

जग जेठ कुँअर चामंड आव। जिन लिये कोट दस भंजि राव॥
सुत महनसिंह जैसिंघ बीर। जिन रष्षि वंस पिषवढ नीर॥
छं० ॥ ६८ ॥

पंमार सिंघ सुअ रनजसिंघ। जुरि जुद्ध रुद्र उड़ि बाह जंघ॥
रिनधीर सुतन गुज्जरह राम। दस देस लिद्ध ग्रह अप्प धाम॥
छं० ॥ ६९ ॥

बरदाइ सुतन जल्हन कुमार। मुष वसै देवि अंबिका सार॥
हरिसिंघ सुतन पातल नरिंद। गज दंत कढ़े जनु भील कंद॥
छं० ॥ ७० ॥

विझा नरिंद सुत देवराज। सो जंग मंझ गज करत पाज॥
अचलेस सुतन देवराज पट्ट। तन तरुन तेज गंगा सु घट्ट॥
छं० ॥ ७१ ॥

तोंअर सुतन्न किरमाल कन्ह। जिन करी रिद्ध दुज दे अनंत॥
पज्जून सुअन पाहाररराइ। चहुआन इला कलि करन न्याइ॥
छं० ॥ ७२ ॥

नरसिंघ सुतन [1]हरदास हड्ड। गुर ग्रब्ब मान हम्मीर गड्ड॥
षीची प्रसंग सुअ मल्हनास। वचि देव छम्म बंकट्ट बास॥
छं० ॥ ७३ ॥

सुत तेज डोड अचला सुमेर। दीपंत देह मानों कि मेर॥
जंघार भीम [2]सुअ सिवहदास। कट्ठियाराइ सुत कव्हिलास॥
छं० ॥ ७४ ॥

अतताइ सुतन आरेन रूप। भिरि भीम बद्ध मारंत भूप॥
चंदेल माल प्रथिराज सूअ। भिरि जंग मझ्झ गज गहन भूअ॥
छं० ॥ ७५ ॥

(१) मो.-सिवदास। (२) ए.-सुह।

संग्राम सुअन सहसो समथ्थ । जुरि जुद्ध भान रोकै सुरथ्थ ॥
.... । .... ॥ छं० ॥ ७६ ॥

दूहा ॥ स्वामि दरग्गह चलि सुवन । मनहु प्रथीपुर इंद ॥
[1]कलि सोभन मोहन कवी । मनो सरद्द चंद ॥छं०॥ ७७ ॥

बसंत उत्सव के दरबार की शोभा, राग रंग और उपस्थित दरबारियों का वर्णन ।

पद्धरी ॥ रितराज राज आगंम जानि । पंचमि बसंत उच्छव सुठानि ॥
किय हुकुम सचिय सम बोलि तब्ब । प्रभु सेव साज मंगाय सब्ब ॥
छं० ॥ ७८ ॥

परजनन जुक्त तह मभ्झ आइ । षिल्लहि बसंत गोपालराइ ॥
परधान हुकुम सिर पर चढ़ाइ । सब बस्त रष्पि कन पहि कढ़ाइ ॥
छं० ॥ ७९ ॥

घनसार अगर सत कासमीर । म्रगमद जवाद बहु मोल चीर ॥
बहु बर्न पुप्फ को लहै पार । मन हरत मुनिन सुरगंध तार ॥
छं० ॥ ८० ॥

चदंन अबीर रोरी गुलाल । अति चोल रंग जनु भूड लाल ॥
मिष्ठान पान मेवा असंष । मन चिपति होत निरषंत अंषि ॥
छं० ॥ ८१ ॥

सुभ साल विसद अंगन अवास । विच्छाय सु पट जाजिम नवास ॥
अंमोल मोल दुल्लीच भारि । षंचाइ पुंट ललितानि धारि ॥
छं० ॥ ८२ ॥

छिरकाव छिरकि गुल्लाब पूरि । दिषियंत उड़ति अब्बीर धूरि ॥
रहि उमड़ि घुमड़ि तहं धूप वास । तन बढ़त जोति सुब्बास रास ॥
छं० ॥ ८३ ॥

तहं धरिय सिंघासन मध्य आनि । नग जरित हेम बिसकर्म जानि ॥
बैठाय पाट गोपालराइ । घन घंट संष झल्लरि बजाइ ॥
छं० ॥ ८४ ॥

(१) ए. कवल ।

मिरदंग ताल जहं पौन धार । बीनादि जंच भिनकार सार ॥
नपफेरि भेरि सहनाइ चंग । दुर बरौं ढोल [1]आवझ उपंग ॥
छं० ॥ ८५ ॥

दम्माम सबद बज्जत विनोद । बंसी सरस्स सुर उपजि मोद ॥
[2]अनि अनि चरित्त नर नारि आनि । सक्कै न होइ तिन जाति जानि ॥
छं० ॥ ८६ ॥

धरि कनक दंड सिर चमर सेत । रष्यंत पवन विस बिप्र हेत ॥
[3]विद्वान चतुर दस विद्य अच्छ । सम अग्ग सिंघासन बैठि पच्छ ॥
छं० ॥ ८७ ॥

बैठिय सु कन्ह चहुआन आनि । झलहलत क्रोध उर अगनि जानि ॥
गहिलोत राव गोयंद आय । जिन सुनत नाम अरिदल पुलाइ ॥
छं० ॥ ८८ ॥

निढ्ढुर नरिंद कमधज पधारि । आदर [4]अनंत न्रप करि उचारि ॥
कूरंभ कहर बलिभद्र आय । जिहि सुनत नाम अरिनह दहाय ॥
छं० ॥ ८९ ॥

फुनि आय अप्प अल्हू नरेस । भय भीम रूप जमनेस भेस ॥
अततार आइ तहं सिव सरूप । बैठिय सु उट्ठि [5]भहराय भूप ॥
छं० ॥ ९० ॥

चावंड बिना भट सब्ब आय । अरि धरनि धरनि जे देत दाय ॥
पुंडीर आय तहं धीर चंद । अरि तिमिर तेज जिन फटति दंद ॥
छं० ॥ ९१ ॥

कूरंभ कहर पाल्हन्न देव । जिहि वियन काम बिन स्वामि सेव ॥
बय वृद्ध बाल सामंत सब्ब । अवधारि राज प्रथिराज तब्ब ॥
छं० ॥ ९२ ॥

फुनि आइ चंद [6]बरदाइ माइ । जिहि प्रसन जीह दुरगा सदाइ ॥
आये सु न्रत्य नाटक अधीन । गंधरव राग विद्या प्रवीन ॥
छं० ॥ ९३ ॥

(१) मो.-आवझ । (२) मो.-अनेक चरित । (३) मो.-पडित ।
(४) ए. कृ. को. अनंत । (५) ए. भरराय । (६) ए. कृ. को.-बरदास ।

छह ग्राम मुरछना गुनं वास। सुर सपत ताल विद्या विलास ॥
संगीति रीति अभ्यास बाल। उच्चारि राग रिझ्झिय भुवाल ॥
छं० ॥ ९४ ॥

अन्नेक चरित श्रीकृष्ण कीन। ते सब्ब प्रगट कीने प्रवीन ॥
तिन सुनत तवत तन पाप छीन। न्वप राइ रिझ्झि बहु दान दीन॥
छं० ॥ ९५ ॥

रस रह्यो रंग सभ उट्ठि राज। सामंत सब्ब निज ग्रह समाज ॥
अनसंक कंक बंकन पधोर। यों तपै पिथ्थ दिल्ली सजोर ॥
छं० ॥ ९६ ॥

इति श्रीकविचंद विरचिते प्रथिराज रासके दिल्ली वर्णनं
नाम उनसठवों प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ५९ ॥

अथ जंगम कथा लिष्यते ।

(साठवां समय ।)

सुसज्जित सभा में पृथ्वीराज का विराजमान होना ।

चौपाई ॥ बैठौ राजन सभा विराजं । सामँत सूर समूहति साजं ॥
विस्तरि राग कला क्रत भेदं । हरषित [1]हृदय असम सर षेदं ॥
छं० ॥ १ ॥

सज्जिय थान न्रपति कै पातुर । गुन रूपक विचरति श्रुत चातुर ॥
नाटिक कला संगीत आन रचि । अति [2]न्रत्यत करि विगति सु गति सचि॥
छं० ॥ २ ॥

चंद चारु माठा रूपक धरि । गीत प्रवीन प्रबंध कीन थरि ॥
उघट चिघट [3]अंग प्रमुष्य थह । निंद्त चित्ररेष अच्छरि गह ॥
छं० ॥ ३ ॥

राजा को एक जंगम के आने की सूचना का मिलना ।

दूहा ॥ तत्त समै राजिंद बर । अपि सु षबरि अच्छत्त ॥
जंगम [4]एक सु आय कहि । कमधज्ज पुर पति वत्त ॥ छं० ॥ ४ ॥

दिष्षि रहसि न्रप निरति रस । गुन अनेक कल भेद ॥
निरषि परषि प्रति अंग अलि । पातुर कला अषेद ॥ छं० ॥ ५ ॥

राजा का नृत्यकी को विदा करना ।

सत्त हेम है राज इक । दिय पातुर प्रति दान ॥
न्रत्ति विगति अवलोकि गुन । दई सीष यह मानि ॥ छं० ॥ ६ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-हृदय, रिदय । (२) ए. कृ. को.-सु नृत्य ।
(३) ए. कृ. को.-अंड ।" (४) ए. कृ. को. इक्के ।
(५) ए.-वत्ति ।

पृथ्वीराज का जंगम से प्रश्न करना और जंगम का उत्तर देना।

पुनि जंगम प्रति उच्चरिय। कमधज्जन की कथ्थ॥
बहुरि भिन्न करि उच्चरिय। सुनि सामंत सु नथ्थ॥ छं०॥ ७॥

चौपाई॥ राज जग्य सज्ज्यौ कमधज्जं। देस देस हुंकारत सज्जं॥
मिलि इक कोटि सूर भर हासं। न्रप अदेस देस रचि तासं॥ छं०॥ ८॥

थपि दर द्वारपाल चहुआनं। लकुटिय कनक हथ्थ परिमानं॥
आय पंग तट इष्ष समाजं। आनि अप्प चहुआन सु लाजं॥ छं०॥ ९॥

इह सु कथा पहिली सुनि राजन। आय कही सो फौफुनि साजन॥
लग्यौ राग ओतान रजानं। बुझ्झी बहुरि सु जंगम जानं॥ छं०॥ १०॥

संयोगिता का स्वर्ण मूर्ति को जयमाल पहिराना।

कवित्त॥ [1]आवलि पंग नरेस। देस मंड सुबेस बर॥
बरन कज्ज चौसर। विचार संजोग दीन कर॥
देवनाथ कवि अग्ग। बरनि न्रप देस जाति गुन॥
फुनि अप्पै संजोग। कनक विग्रह सु द्वार उन॥
चहुआन राव सोमेस सुअ। प्रथीराज सुनि नाम बर॥
गंध्रव्व [2]वचन विचारि उर। धरि चौसर प्रथिराज गर॥ छं०॥ ११॥

संयोगिता का दूसरी बार फिर से स्वर्ण मूर्ति को माला पहिराना।

दूहा॥ देषि फेरि कहि नाथ पति। फुनि मुक्कलि कविराज॥
बहुरि जाहु पंगानि अग। विचरै न्रपति समाज॥ छं०॥ १२॥

कवित्त॥ बहुरि नाम गुन जाति। देस पित प्रपित बिरद बर॥
लै लै नाम पराम। देवजानी स देव कर॥

(१) मो.-आचलि। (२) मो. वयन।

फुनि चहुआन सु पास। आय ठड्ढे भए जामं ॥
कछु कवि रहिय राज। कछुक जंपे गुन तामं ॥
न्रप लज्ज पंग ग्रह भट्ट बर। तुच्छ संषेप सु उच्चऱ्यौ ॥
संजोग समझ्झे उर रह। कंठ प्रथ्थ, चौसर धऱ्यौ ॥
छं० ॥ १३ ॥

पुनः तीसरी वार भी संयोगिता का पृथ्वीराज की प्रतिमा पर जयमाल डालना।

दूहा ॥ दुसर राज इह देषि सुनि। तिय सु नाथ उर जाम ॥
सपत हथ्थ सुर जा धरिय। प्रचरि नरेसनि ताम ॥ छं० ॥ १४ ॥

कवित्त ॥ फुनि नरेस अदेस। नाथ फिरि आय मझ्झ दर ॥
आदि वंस रचि नाम। चवत विक्कम्म क्रम्म बर ॥
दई पानि कवि जानि। होत काह्न कर मंडं ॥
भूत भविष्यत बत्त। भव्वि जानी उर चंडं ॥
उतकंठ लोकि प्रतिमा प्रतषि। दिष्षि देव देवाधि सचि ॥
बरनी संजोग चहुआन बर। पहुप दाम ग्रीवा सु रचि ॥
छं० ॥ १५ ॥

जयचन्द का कुपित होकर सभा से उठ जाना।

दूहा ॥ कोप कलंमल पंग पहु। समय विरंचि विचारि ॥
रोस सोस उर धारि तब। क्रम भति भई न चारि ॥ छं० ॥ १६ ॥
उट्ठि राज अंदरह दर। कियौ प्रवेस अपान ॥
विमुष निमुष दिष्यौ न्रपंति। देव क्रत्य परमान ॥ छं० ॥ १७ ॥

पंगराज का दैवी घटना पर संतोष करना।

कवित्त ॥ दइय काल सुनि पंग। जग्गय विग्गऱ्यौ दच्छ पति ॥
द्रुपद राय पंचाल। जग्गय विग्गऱ्यौ इष्ट रति ॥
दइय काल दुजराज। जग्य विग्गऱ्यौ सु जानं ॥
[1]न्रघुष राइ [2]राज हू। गत्त जानी परमानं ॥

(१) ए. कृ. को.-नघुष। (२) ए.-राजरु।

श्रुति बर पुरान श्रोतास बल। विधि विचार मंडिय सकल ॥
चय काल काल सामंत कहि। दइय काल मानै अकल ॥
छं० ॥ १८ ॥

राजा जयचन्द का संयोगिता को गंगा किनारे निवास देना।

दूहा ॥ आदि कथा संजोग की। पहिलें सुनी नरेस ॥
अब इह जंगम आय कहि। विधि मिलवन संदेस ॥ छं० ॥ १९ ॥

कवित्त ॥ रचि अवास रा पंग। गंग दंगह उतंग तट ॥
दासि सहस सुंदरिय। प्रसँग कल ग्यान भाव पट ॥
हत उचार चहुआन। धरत कर करत अप्प पर ॥
पंच धेन पूजंत। बचन मन क्रम्म गवरि हर ॥
सुनि पुनि नरेस संदेस दिढ़। सोफी फुनि जंगल कहिय ॥
आरत्ति चरित चहुआन मन। दइय भेद चित्तह गहिय ॥
छं० ॥ २० ॥

दूहा ॥ पहिल ग्यान जंगम कहिय। दुतिय सो सोफी आनि ॥
तब प्रथिराज नरिंद ने। दैव काल पहिचान ॥ छं० ॥ २१ ॥

पृथ्वीराज का अपने सामंतों से सब हाल कहना।

उठि राजन तब हुकम किय। बहुरि सूर सामंत ॥
पारिहार केहरि कमल। काम नाम भर संत ॥ छं० ॥ २२ ॥
बुल्लिय स भूपति साधनह। दुतिय स ईसर दास ॥
बरन नेह विस्तार तन। आन रंग इतिहास ॥ छं० ॥ २३ ॥
गंग जमन जल उभय करि। करि अस्नान नरिंद ॥
क्रत हरि हर उर ध्यान प्रभु। उठ्यौ थान सुरिंद ॥ छं० ॥ २४ ॥
असन मार आराम सुष। सुष सयन्न क्रत राज ॥
उर सल्लै संजोग हत। संभरि नाथ समाज ॥ छं० ॥ २५ ॥
*तब परिहार सु हुकम दिय। गए सु भोजन साल ॥
व्यंजन रस रस सेष परि। सुनि सुनि कथा रसाल ॥ छं० ॥ २६ ॥

* यह दोहा मो. प्रति में नहीं है।

पृथ्वीराज की संयोगिता प्रति चाह और कन्नौज को चलने का विचार ।

पद्धरी ॥ लग्गयौ सु राज श्रोतान राग । संजोग हत संभरि समाग ॥
　　अति असम बान बेधे सरीर । नह धीर हसं [1]नह भाव धीर ॥
　　　　　　　　छं० ॥ २७ ॥
　　[2]रिति राज आनि रंगे सदंग । फुल्लेस विकह नव कुसुम [3]चंग ॥
　　कलयंठ कंठ उपकंठ अंब । पाठत विरहनी पति सितंब ॥छं०॥२८॥
　　कुंजत उतंग गिरि तुंग सार । तालीस धार [4]उद्दार धार ॥
　　सति मांन जानि सिंदून सु तात । संजोग सुषद विरहिन निपात ॥
　　　　　　　　छं० ॥ २९ ॥
　　उन श्रवन सान गाजंत जोर । मधु हत्त समागध पठत घोर ॥
　　[5]साहीत सिषी चढ़ि सिषर टेरि । विज्जोग भगनि तिय उप्प वेर ॥
　　　　　　　　छं० ॥ ३० ॥
　　सासन सुरंम धरि चिविध पोन । वारह मत्त लघुमात गौंन ॥
　　लगि दहन गहन मदनह सु भाम । रति नाथ नाथ विन सज्जि ताम ॥
　　　　　　　　छं० ॥ ३१ ॥
　　संवत्त संभ पंचास मेक । पष स्याम असित [6]उच्चार नेक ॥
　　पित नछिच जोग सुभ नवमि दीह । न्टप मन विचार उर चलन कीय॥
　　　　　　　　छं० ॥ ३२ ॥
दूहा ॥ लग्गि बान अनुराग उर । मनमथ प्रेरि वसंत ॥
　　सहै न्टपति अष्षै न कहुं । षेदे रिदय असंत ॥ छं० ॥ ३३ ॥
कवित्त ॥ दंग सुरंग पलास । जंग जीते बसंत तपु ॥
　　मदन मानि मन मोदं । लीन छेदे [7]प्रछेद बपु ॥
　　देस नरेस अदेस । देस आदेस काम कर ॥
　　नीर तीर नाराच । पंग बेधे अवेध पर ॥

---

(१) ए. कृ. को.-चित ।　(२) ए. कृ. को.-रति ।
(३) ए. कृ. को.-जंग ।　(४) ए.-उद्दास ।　(५) ए. कृ. को.-साहात ।
(६) ए. कृ. को.-उज्जार।　(७) ए. कृ.को.-अछेद ।

बालमत्तत चित्त चहुआन तब। उर उपजै संजोग हत ॥
बरदाय बोलि तिहि काल कबि। मन अनंत मति पर उधृति ॥
छं० ॥ ३४ ॥

कविचन्द का दरबार में आना और राजा का अपने मन की बात कहना।

दूहा ॥ आय चंद बरदाय बर। दिय आदर नृप ताम ॥
आनि बहुरि दीने सु तब। रष्षे तथ्य सु काम ॥ छं० ॥ ३५ ॥
द्वारपाल कमधज्ज थपि। हम रष्षे दरबार ॥
अब जीवन बंछै कहा। कहौ सु कब्नि विचार ॥ छं० ॥ ३६ ॥
अरु दिढ़ हत्त पँगानि लिय। तुम जानो सब तंत ॥
चलन नयर कमधज्ज कै। सु बर विचारहु मंत ॥ छं० ॥ ३७ ॥

कबि का कहना कि कन्नौज को जाने में कुशल नहीं है।

तब कबि [1]एम सु उच्चरिय। सुनि संभरी नरेस ॥
चलत नृपति बरजिय न कहुं। विधि न्नम्मान सुदेस ॥ छं० ॥ ३८ ॥
पंग सु जानहु तुम नृपति। चलि कीनी तुम देस ॥
गाम ठाम बाहर विचल। पारि जारि किय रेस ॥ छं० ॥ ३९ ॥

कवित्त ॥ [2]कोरि जोर कमधज्ज। सयन आयौ पर ढिल्ली ॥
जारि पारि बेहाल। पलक कीनी धर मिल्ली ॥
[3]गोपर मार उत्तंग। तोरि उच्छारि झारि भर ॥
दंग जंग परजारि। [4]ठाम कीनौ अठाम नर ॥
कर सौंप काल मुष को धरै। को जम पानि पसारि लय ॥
सोमेस नंद विच्चारि चलि। भवसि सोय [5]देवाधि भय ॥ छं० ॥ ४० ॥
कवन भुजा [6]बलवंत। गयन प्रस्थानन लीनौ ॥
पारावार अपार। कवन पलक्न तन कीनौ ॥

(१) ए. कृ. को.-राम।
(२) मो.-कारि।
(३) ए. कृ. को.-गोपरि गिर।
(४) ए. कृ. को.-ताम, छाम।
(५) ए. कृ. को.-देवास।
(६) ए. कृ.-बलबंड।

हेम सैल करताल । धन्यौ सिष नष्ष सुन्यौ न्रप ॥
कवन धनंजय पानि । करै संभरि नरेस दप ॥
जम जोर हथ्थ को जोर रहि । जवन अकन रन जित्तियै ॥
चल्लहु नरेस परदेस मन । द्वै विधान मन चिंतियै ॥ छं० ॥ ४१ ॥

पृथ्वीराज का फिर भी कन्नौज चलने के लिये आग्रह करना।

दूहा ॥ चलन नरिंद कविंद पिथ । पुर कनवज मत मंडि ॥
दइय सीष कविचंद कहु । बहुते आसन छंडि ॥ छं० ॥ ४२ ॥

रात्रि को दरबार बरखास्त होना, सब सामंतों का अपने अपने घर जाना, राजा का सयन।

जाम एक रजनी रहिय । तथ्थ सुबर कविचंद ॥
ताम काम परिहार कों । दई सीष उनमंद ॥ छं० ॥ ४३ ॥
तब सु चंद ग्रह अप्प गय । उठिय सु पिथ्थ नरिंद ॥
आभूषन बस वास धरि । ससि दुति तेज सु मंद ॥ छं० ॥ ४४ ॥

राजसी प्रभात वर्णन।

कवित्त ॥ आय राज दीवान । जानि नाकेस अमर गन ॥
उद्वि [1]सुभर न्रप करि । जुहार आरोहि सोह यन ॥
आय तब्ब बर बुद्धि । [2]बीन धर नमित क्रत्त पहु ॥
सुधरि तंत सुर सपत । कंठ कलरव कलंठ सहु ॥
जुग घटिय सु घट अनुराग मन । राग स्रोत स्राता धरत ॥
पांवार तार उम्भय [3]अभय । जर सभीत तारन परत ॥ छं० ॥ ४५ ॥
ताम समय बंदियन । आय बरदाय बीर बर ॥
दिष्षि सभा राजिंद । इंद निंदंत नाक पर ॥
नथ्थि सुहर वाहनह । नथ्थि कालिंद्र वार भर ॥
नथ्थि बरुन बलिराइ । नथ्थि दनुनाथ लंकधर ॥
अनजीत निगमबोधह नयर । बयर साल [4]कट्टन [5]महन ॥

(१) मो. सुभंय । (२) मो.-"बीन धरन मिल ब्रत पहुं । (३) ए. कृ. को.-उभय । (४) ए. कट्टन । (५) ए. मनह ।

सोमेस नंद अनलह कुलह। जंच किति भंजन दहन ॥छं०॥४६॥
गाथा ॥ दिष्षि सुभट्टह दिवानं। राजत बीर धीर अरोहं ॥
निरषि ताम प्रतिसारं। आगम निगम जान सह कब्बी ॥छं०॥४७॥

कविचन्द का विचार।

कबि जानी करतारं। रचना [1]सचन सब्ब भर सुभरं ॥
कतन सु मेटन हारं। विधि लिषयं भाल अंकेन ॥ छं० ॥ ४८ ॥
दूहा ॥ गत सभांन भर थान उठि। आयति समय पुलिंद ॥
गहन मझि वाराह वर। निंदत कोहर किंद ॥ छं० ॥ ४९ ॥
तत कोहर इक भाल वर। घात अराम भिराम ॥
विहरि न्रपत्ति नरेस किय। व्याधि स रष्षहु ताम ॥ छं० ॥ ५० ॥

पृथ्वीराज का कतिपय सामंतों सहित शिकार को जाना।

कवित्त ॥ उठि प्रातह चहुआन। [2]चढ़ि सु क्रम्मत नरेस पिथ ॥
सथ्थ सूर सामंत। मंत जान्यो अषेट पथ ॥
सुभट जाम जद्दों जुवान। बलिभद्र बीभ्र वर ॥
महनसीह मग पोप। बंधि लंगिय अभंग भर ॥
गुज्जरहराम आजानभुज। जैतराव भट्टी अचल ॥
हाहुलियराव मंडन्न हर। मिले सुभट तहं क्रमत भल ॥छं०॥५१॥

बाराह का शिकार।

दूहा ॥ जाय संपते भर गहन। जोजन इक इक [3]कोह ॥
तहं सूकर सूतौ न्रिमय। कोहर तथ्थ सु [4]षोह ॥ छं० ॥ ५२ ॥
धरि छत्तिय दिढ़ तुपक न्रप। हक्किय व्याधि वराह ॥
उट्ठि भयंकर घात तजि। तिच्छन संचरि ताह ॥ छं० ॥ ५३ ॥

वाराह का वर्णन और राजा का उसे मारना।

कवित्त ॥ कविय व्याधि वाराह। उट्ठि धायौ चंचल सम ॥
बदन भयंकर भूत। दंत दीरघ ससि वीय, सम ॥

(१) मो.-सचनं। (२) मो.-"चाढ़ि संक्रम्म नरेस पिथ"।
(३) मो. क्रेह। (४) मो.-षेह।

सनमुष क्रमत नरेस। दिष्षि छत्तिय धरि जंतिय ॥
सबद रोस संचार। सूर जोवंत [1]सु पंतिय ॥
संचष्षि उभय भ्रकुटिय सहथ। लग्गिय गोरिय [2]परचरिय ॥
उच्छरत योत धुक्किय धरनि। भल जंपिय भर सारथिय ॥
छं० ॥ ५४ ॥

दूहा ॥ किय सिकार बर सूर पति। ग्रेह संपतौ जाय ॥
चल्यौ प्रात प्रथिराज पहु। सिव सेवन सद भाय ॥ छं० ॥ ५५ ॥

शिकार करके राजा का शिवालय को जाना। शिव जी के शृंगार का वर्णन।

पद्धरी ॥ आभ्रत्त ईस ईसान थान। पुर अलक असुर सुर वृंद मान ॥
जट विकट चकुट झलकंत गंग। तिन दरसि भरत पातिग पतंग ॥
छं० ॥ ५६ ॥
तट भाल चंद दुति दुतिय दीह। हरि सुजस रेष राजन अतीह ॥
तिन निकट नयन झलकंत अंग। सिर पंच [3]सोह रजिकय उदंग ॥
छं० ॥ ५७ ॥
आभा अनूप विभ्भूति बार। प्रगटे सुषीर दधि करि विहार ॥
झलकंत तरल तिच्छन सुरंग। [4]तम रहै मेर उपकंठ संग ॥
छं० ॥ ५८ ॥
रजि उरग हार उद्दार धार। रुचि सेत स्याम तन तिन प्रकार ॥
आरोपि उअर वर रुंडमाल। उड़पंति कंति हिम गिरिय [5]भाल ॥
छं० ॥ ५९ ॥
कटि तटि लपेटि लंकाल पाल। आवरिग अंग गज [6]तुज विसाल ॥
कर तरल तुंग तिरसूल सोह। चयलोक सोक संकत समोह ॥
छं० ॥ ६० ॥
डहडहत डमरू कर दच्छि पानि। क्रत उंच उंच भय भगति [7]भानि ॥

(१) ए. कृ. को.-सयत्तिय। (२) ए. कृ. को.-परचारिय।
(३) ए. कृ. को.-सीह। (४) ए. कृ. को.-तन।
(५) ए. कृ. पयाल। (६) मो. गज तुव। (७) ए. कृ. को.-सांनि।

अरधंग उमय सरवंग देव। नाटिक्क कोटि को लहत भेव ॥
छं० ॥ ६१ ॥
चवरँग विसाल [1]माली प्रमथ्य। अरोहि वृषभ मन [2]सुमन रथ्थ ॥
षट बदन बदन गज मदन अग्ग। गन जंत गज्ज अनेक वग्ग ॥
छं० ॥ ६२ ॥
कैलास वास सिवरंग रोध। बर बसत आय थिर निगमबोध ॥
आहुत्ति परसि क्रित प्रथियराज। उपवास व्याधि कारन सुभाज ॥
छं० ॥ ६३ ॥
निसि जगत ईस तिय रथ परिथ्थ। हरिहरि समेत कलि कलन कथ्थ॥
अनेक विधी रिष गन प्रसंग। उर हरंन करन क्रमि आय तंग ॥
छं० ॥ ६४ ॥
दूहा ॥ राज दरसि हर सरस बर। उर उद्दित आनंद ॥
कर कलंक तिरसूल कर। जै जै समर निकंद ॥ छं० ॥ ६५ ॥
नमित दान शिव प्रमित सुष। वारह वार नरेस ॥
हर हर हर उर ध्यान गुर। दिष्षन दरसन तेस ॥ छं० ॥ ६६ ॥
श्रुति उचार संचय सु रिषि। उज्जल अरचि अचार ॥
मन सु ब्रह्म तन माम सौ। ते देषे हरद्वार ॥ छं० ॥ ६७ ॥

पृथ्वीराज का स्नान करके शिवार्चन करना, पूजा की सामग्री और विधान वर्णन।

करि सनान संभरि स पहु। स च सुवास तन धार ॥
अंदर शिव मंदिर परसि। आरोहन क्रत कार ॥ छं० ॥ ६८ ॥
पद्धरी ॥ करि नमसकार संभरि नरेस। अवलोकि अंग उमया वरेस ॥
रिषि रुष षटंग उचरंत चार। ओरहि राज दुज सम सुसार ॥
छं० ॥ ६९ ॥
धरि ध्यान [3]उरध नाटेस राय। मधु दूब षीर दधि तंदुलाय ॥
घट उभय सहस [4]सुर सुरिय अंब। चव सहस कलस जमना प्रसंब॥
छं० ॥ ७० ॥

(१) ए. कृ. को.-मानी। (२) ए. समन।
(३) ए. कृ. को.-अरघ। (४) मो. रसुरीय अंब।

दधि सहस एक घट सहस घीर। मधु पंच सत्त सुच्छव सछीर॥
घट सहस [1]रष्षि अट्ठह प्रवान। घट कासमीर सय पंच थान॥
छं० ॥ ७१ ॥

रस उभय दून घट विसल वानि। अस्तुति चंद जंपै विधान॥
वरकुंभ सत्त गुल्लाब पंच। घट उभय नाग संभव सुरंच॥
छं० ॥ ७२ ॥

घठ उभय अष्षि क्रहम सु सत्त। घट उभय सात बहु विधि प्रब्रत्त॥
सिव सिर अवंत न्रप अप्प हाथ। सद भाय अर्चि अलकेस नाथ॥
छं० ॥ ७३ ॥

तंदुल सु दूब मधु घीर नीर। दधि सार पंच तुछ मंडि सीर॥
सिव संषि सुघट पुज्जै चिअंब। सु प्रसन्न ईस [2]कारन तिअंब॥
छं० ॥ ७४ ॥

सतपच कमुद ससि सूर वंस। मंदार पहुप केतकि सुअंस॥
मालती पंच जाती अनेव। फल पहुप पच पल्लव सु भेव॥
छं० ॥ ७५ ॥

मालूर पंग श्रीषंड धूप। नैवेद ईस आराधि जप॥
आरोह नंत आगम प्रदोष। रचि सयन अयन राजन सु कोष॥
छं० ॥ ७६ ॥

प्रस थारि कथा ग्रहि संभरेस। अन्नेक दांन रिषि दिय नरेस॥
.... । .... ॥ छं० ॥ ७७ ॥

पूजन के पश्चात कविचन्द का राजा से दिल्ली चलने को कहना।

दूहा॥ पूजा [3]हर घन हित करी। धूप दीप सब साज॥
चंद भट्ट बोल्यौ तबै। चल्यौ सु ग्रह फिरि राज॥ छं० ॥ ७८ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराजरासके जंगम सोफी कथा, सिव पूजा नाम साठवों प्रस्ताव सम्पूर्णम्॥६०॥

(१) ए. कृ. को.-सरषि। (२) ए. कृ. को.-कारनीन। (३) ए. कृ. को.-घन हर।

अथ कनवज्ज समयो लिष्यते।

(एकसठवां समय ।)

[अथ षट् ऋतु वर्णन लिष्यते ।]

पृथ्वीराज का कविचन्द से कन्नौज जाने की इच्छा प्रगट करना।

दूहा ॥ सुक बरनन संजोग [1]गुन । उर लग्गे छुटि बान ॥
षिन षिन सल्लै वार पर । न लहै बेद विनान ॥ छं० ॥ १ ॥
भय श्रोतान नरिंद मन । पुच्छै फिरि कविरज्ज ॥
दिष्षावै दल्लपंगुरौ । धर ग्रीषम कनवज्ज ॥ छं० ॥ २ ॥

कवि का कहना कि छद्म वेष में जाना उचित होगा ।

कवित्त ॥ दीसै बहु विध चरिय । सुअन नर दुअन भनिज्जै ॥
बल कलियै अप्पान । किति अप्पनी सुनिज्जै ॥
हीं डिज्जै तिहि काज । दुष्ष सुष्षह भोगिज्जै ॥
तुच्छ आव संसार । चित मनोरथ पोषिज्जै ॥
दिष्षियै देस कनवज्ज वर । कही राज [2]कवि चंद कहि ॥
[3]मुक्कही सूर छल संग्रहै । तौ पंग दरसन तत्त लहि ॥ छं० ॥ ३ ॥

यह सुनकर राजा का चुप हो जाना और सामंतों का कहना कि जाना उचित नहीं ।

दूहा ॥ सुनिय सुकवि इह चंद वच । ना बुल्ल्यौ सम राज ॥
अंबुज को दोऊ कठिन । उदय अस्त रविराज ॥ छं० ॥ ४ ॥
श्लोक ॥ गमनं न क्रियते राजन् । सूर सामंतमेवच ॥
[4]प्रस्थानं च प्रयाणं च । राजा [5]मध्ये गतं तदा ॥ छं० ॥ ५ ॥

(१) मो.-सुन • (२) ए. कृ. का.-कहि । (३) मो. मुक्कहि सूर रछ संग्रहे ।
(४) ए. कृ. मो.- प्रच्छानं । (५) ए. कृ. को.- मध्य ।

राजा का इंछिनी के पास जाकर कन्नौज जाने को पूछना।

दूहा ॥ पुच्छि गयौ कविचंद कौ। इंछिनि महल नरिंद ॥
सुंदरि दिसि कनवज्ज कौ। चलै कहै धर इंद ॥ छं० ॥ ६ ॥

रानी इच्छनी का कहना कि वसंत ऋतु में न जाइए।

इन रिति सुन चहुवान वर। चलन कहै जिन जीय ॥
हौं जानूं पहिलै चलै। प्रान प्रयान कि [१]पीय ॥ छं० ॥ ७ ॥
प्रान ज्वाव दूनों चलै। आन अटक्कै घंट ॥
निकसन कों झगरौ पऱ्यौ। रुक्यौ गद्गद कंठ ॥ छं० ॥ ८ ॥

वसंत ऋतु का वर्णन।

साटक ॥ स्यामंगं कलधूत नूत सिषरं, मधुरे मधू वेष्टिता।
[२]वाते सीत सुगंध मंद सरसा, आलोल संचेष्टिता ॥
कंठी कंठ कुलाहले मुकलया, कामस्य उद्दीपने।
रत्ते रत्त वसंत मत्त सरसा, संजोग भोगायते ॥ छं० ॥ ९ ॥

कवित्त ॥ मवरि अंब फुल्लिग। कदंब रयनी दिघ दीसं ॥
भवर भाव भुल्लै। भ्रमंत मकरंदव सीसं ॥
वहत [३]बात उज्जलति। मौर अति विरह अगनि किय ॥
कुहकुहंत कल कंठ। पत्र राषस रति अग्गिय ॥
पय लग्गि प्रान पति वीनवौं। नाह नेह मुझ चित धरहु ॥
दिन दिन अवद्धि जुब्बन घटय। कंत वसंत न [४]गम करहु ॥ छं० ॥ १० ॥
धुम्र चलिय बन पवन। भ्रमत मकरंद कंवल कलि ॥
भय सुगंध तहँ जाइ। करत गुंजार अलिय मिलि ॥
बल हीना [५]डगमगहि। भाग आवै भोगी अन ॥
उर धर लगै समूह। कंपि भौ सीत भयत नन ॥
लत परी ललित सब पहुप रति। तन सनेह जल पवित किय ॥
निझरै भंग अंवुज हरस्र। सीत सुगंध सुमंद लिय ॥ छं० ॥ ११ ॥

(१) के. कृ-पीउ। (२) ए. कृ. को.- वातो।
(३) ए. कृ. को.- वत। (४) ए. कृ. को.- गमन। (५) मो.-डत।

साटक ॥ लैवंधं सुर थट्ट डंक्रित मधू, उन्मत्त भ्रंगी धुनी।
कंद्रप्पं सु मनो वसंत रमनं, प्राप्तो धनं पावनं॥
कामं तेग मनं धनुष्य सजनं, भीतं वियोगी मुनी।
विरहिन्या तन ताप पत्त सरसा, संजोगिनी सोभनं॥ छं० ॥ १२ ॥
कुंडलिया ॥ इहि रिति मुक्कि न बाल प्रिय। सुष [1]भारी मन लुट्टि॥
कामिनि कंत समीप बिन। हुई षंड उर फुट्टि॥
हुई षंड उर फुट्टि। रसन कुह कुह आरोहै॥
चलन कहै जो पीय। गात वर [2]भग्गो सोहै॥
नयन उमगि कन बीय्र। सोभ ओपम पाई जिहि॥
मनों षंजन बिय [illegible]। गहिय नंषत सुत्तिय [3]इहि॥ छं० ॥ १३ ॥

ग्रीष्म ऋतु आने पर पृथ्वीराज का रानी पुंडीरनी के पास जाकर पूछना।

दूहा ॥ इहि रिति रष्षिय इंछिनिय। भय ग्रीषम रितु चारु॥
कांम रूप करि गय न्रपति। पुंडीरनी दुआर॥ छं० ॥ १४ ॥
सुनि सुंदरि पहु पंग की। दिसि चालन कौ सज्ज॥
बर उत्तम धर दिष्षियै। पिष्षन भर कनवज्ज॥ छं० ॥ १५ ॥

रानी पुंडीरनी का मना करना।

न्रप ग्रीषम ग्रिह सुष्षनर। ग्रेह मुक्कि नन राज॥
गोमगांम छादिय अमर। पंथ न सुझ्झै आज॥ छं० ॥ १६ ॥
कवित्त ॥ दीरघ [4]दिन निस हीन। छीन जल धरवैसंनर॥
चक्रवाक चित मुदित। उदित रवि थकित [5]पंथ नर॥
चलत पवन पावक। समान परसत सु ताप मन॥
सुकत सरोवर मचत। कीच तलफंत मीन तन॥
दीसंत दिगम्बर सम सुरत। तरु लतान गय पत्त झरि॥
अकुलंत दीह संपत्ति विपति। कंत गमन ग्रीषम न करि॥ छं० ॥१७॥

(१) ए.- भारे।
(२) ए. भग्गै-ए.-भग्गौ।
(३) ए. कृ को.-जिहि।
(४) ए. कृ. को.-दिस।
(५) ए. कृ. को.-पसत।

साटक ॥ दीहा दिग्घ सदंग कोप अनिला, आवर्त मित्ता करं।
रेनं सेन दिसान थान मिलमं, गोमग्ग आडंबरं ॥
नीरे नीर अपीन छीन छपया, तपया तरूया तनं।
मलया चंदन चंद मंद किरनं, ग्रीष्म च आषेवनं ॥ छं० ॥ १८ ॥

कवित्त ॥ पवन त्रिविध गति मुक्कि। सेन भुम्र पत्ति जूथ चलि ॥
विरह [1]जाम बर कदन। मदन मैं मंत पील हलि ॥
पथिक बधू भरै। आस आवन चंदाननि ॥
जो चालै चहुआन तौ। मरै फुटि उर ब्रंननि ॥
मन भुम्रन आन दैतो फिरै। प्रिय आगम गज्जै मयन ॥
कंता न मुक्कि वर किक्ति गर। कहूं सुनौ सोनिय बयन ॥छं०॥१९॥
पिन तरूनी तन तपै। बहै नित बाव रयन दिन ॥
दिसि च्यारौं परजलै। नहिं कहौं सीत अरध पिन ॥
जल जलंत पीवंत। रुहिर निसि वास निघट्टै ॥
कठिन पंथ काया। कलेस दिन रयनि सघट्टै ॥
चिय लहै तत्त अष्पर कहै। गुनिय न ग्रन्न न मंडियै ॥
सुनि कंत सुमति संपति विपति। ग्रीषम ग्रेह न छंडियै ॥छं०॥२०॥

*गीतामालची ॥ चिय ताप अंगति दंग दवरित दवरि छव रित भूषनं।
कुरु भेह पेहति ग्रेह लंपिति स्वेद संवित अंगनं ॥
नर रहित अनहित पंथ पंगति पंगयौ जित गोधनं।
रवि रत्त मत्तह अम्भ उद्दिक कोप ककस मोषनं ॥ छं० ॥ २१ ॥
जल बुट्टि उट्ठि समूह बज्जिय मनौं सावन आवनं।
हिंडोल लोलति बाल सुष सुर ग्राम सुर सुर गावनं ॥
कुसमंग चीर गंभीर गंधित मुंद बुंद सुहावनं।
ढलकंत वेनिय तट्ठ येनिय चंद्र सेनिय आननं ॥ छं० ॥ २२ ॥
ताटंक चंचल लजित अंचल मधुर मेषल रावनं।
रव रंग नूपुर हंस दो सुर कंज ज्यौं पुर पावनं ॥
नष द्रप्प द्रप्पन देषि अप्पन कोपि कंपि सु नावनं।
दमकंद दामिनि दमन कामिनि जूथ जामिनि आननं ॥छं०॥२३॥

(१) ए.कृ.को.-जातु। * आधुनिक हिन्दी पिंगलों में इस छन्द को प्रायः हरिगीतिका करके लिखा है।

तंबोल रत घनसार भारह बेलि विद्रुम छावनं ।
अलि गुंज मालहि. देषि लालहि रंभ राज रिझावनं ॥
.... ॥ छं० ॥ २४ ॥

वर्षा के आने पर राजा का इन्द्रावती के पास जा कर पूछना ।

दूहा ॥ मानि रूप मानिनि वचन । रहि ग्रीषम वर नेह ॥
पावस आगम धर अगम । गय इंद्रावति ग्रेह ॥ छं० ॥ २५ ॥

इन्द्रावती का दुखी होकर उत्तर देना ।

पीय वदन सो प्रिय परषि । हरष न भय सुनि गोंन ॥
आल्हू मिसि असु उप्पटै । उत्तर [1]देय सलोन ॥ छं० ॥ २६ ॥

वर्षा ऋतु वर्णन ।

साटक ॥ अब्दे वद्दल मत्त मत्त विसया, दामिन्य दामायते ।
दादूरं दर मोर सोर सरिसा, पप्पीह चीहायते ॥
[2]शृंगारीय वसुंधरा मल्लिलता, लीला समुद्रायते ।
जामिन्या सम वासुरो विसरता, पावस्स पंथानते ॥ छं० ॥ २७ ॥

कवित्त ॥ मग सज्जल सुझझैन । दिसा धुंधरी सघन करि ॥
रति पहुवी कि चरित । लता तरु वींटि सुमन भरि ॥
आलिंगत धर अभ्भ । मान मानिन ललचावत ॥
वर भद्रव कद्रव मचंत । कद्रव विरुझावत ॥
चतुरंग सेन वै गढ दहन । घन सज्जिय न्रप चढ़िन तिन ॥
भरतार संग बंछै त्रिया । बिन क्रतार [3]भ्रत्तार बिन ॥ छं० ॥२८॥
घन गरजै घरहरै । पलक निस रेनि निघट्टै ॥
सजल सरोवर पिष्षि । हियौ तत छिन धन फट्टै ॥
जल वद्दल बरषंत । पेम पल्हरै निरंतर ॥
कोकिल सुर उच्चरै । अंग पहरंत पंच सर ॥

(१) ए. कृ. को. देति । (२) ए. कृ. को.-श्रगाराय ।
(३) ए. कृ. को.-भरतार ।

दादुरह मोर दामिनि दसय। अरि चवथ्थ [1]चातक रटय॥
पावस प्रवेस वालम न चलि। विरह अगनि तनतप घटय॥छं०॥२९॥
घुमड़ि घोर घन गरजि। करत आडंबर [2]अंमर॥
पूरत जलधर धसत। धार पथ थकित दिगंबर॥
झझकित द्रिग सिसु म्रग। समान दमकत दामिनि द्रसि॥
विहरत चाचग चुवत। पीय दुपंत समं निसि॥
ग्रीषंम विरह द्रुम लता तन। परिरंभन क्रत सेन हरि॥
सज्जंत काम निसि पंचसर। पावस [3]पिय न प्रवास करि॥
छं०॥ ३०॥

चंद्रायना॥ विजय विहसि द्रिगपाल पायनन्नि पंच किय॥
विरहनि [4]विस गढ़ दहन मघव धनु अग्र लिय॥
गरजि गहर जल भरित हरित छिति छच किय।
मनहु दिसान निसानति आनि अनंग दिय॥ छं०॥ ३१॥

गीतामालचौ॥ द्रिग भरित [5]धूमिल जुरति भूमिल कुमुद न्निम्मल सोभिलं॥
द्रुम अंग वल्लिय सीस हल्लिय कुरलि कंठह कोकिलं॥
कुसुमंज कुंज सरोर सुभ्भर सलित दुभ्भर सद्दयं।
नद रोर दद्दुर मोर नद्दुर बनमि बद्दर बद्दयं॥ छं०॥ ३२॥
झम झमकि विज्जल काम किज्जल अवति सज्जल कद्दयं।
पप्पीह चीहति जीह जंजरि मोर मंजरि मंद्दयं॥
जगमगति झिंगन निमि सुरंभन भय अभय निसि हद्दयं।
मिलि हंस हंसि सुवास सुंदरि उरसि आनन निद्दयं॥छं०॥३३॥
[6]उट साम आस सुवास वासुर [7]छलित कलि वपु सद्दयं।
* करत आडंबर अमर प्रस्त जलधर धार पयध्धयं॥
संयोग भोग संयोग [8]गामिनि विलसिराजन भद्दयं॥छं०॥३४॥

(१) मो. चत्रिक, चातिक। (२) ए. कृ. को.-डमर।
(३) मो.-प्रिय। (४) ए. कृ. को. नर्ग।
(५) ए. कृ. को. भूमिल। (६) ए. कृ. को. उव।
(७) ए. कृ. को. कलिल। * यह पंक्ति मो० प्राति के सिवाय अन्य प्रतियों में नहीं है।
(८) मो. मानानि।

साटक ॥ जे [1]बिज्जु झझल फुट्टि तुट्टि तिमिरं, [2]पुन अंधनं दुस्सहं ।
बुंदं घोर तरं सहंत असहं, बरषा रसं संभरं ॥
बिरहीनं दिन दुष्ट दारुन भरं भोगी सरं सोभनं ।
मा मुक्के पिय गोरियं च अबलं, प्रीतं तया तुच्छया ॥छं०॥३५॥

शरद् ऋतु के आरंभ में तैयारी करके राजा का हंसावती के पास जाकर पूछना ।

दूहा ॥ सुनि [3]स्रावन बरिषा सघन । सुष निवास न्रिप कीय ॥
बर पूरन पावस कियौ । राज पयान सु दीय ॥ छं० ॥ ३६ ॥
हंसावति सुंदरि सुग्रहं । गयौ ग्रीय प्रथिराज ॥
धर उत्तिम कनवज्ज दिसि । चलन कहत न्रप आज ॥छं०॥३७॥

हंसावती के वचन ।

दिष्षि वदन पिय योमिनी । फुनि जंपै फिरि बाल ॥
सरद रवन्नौ चंद निसि । कित लब्भै छुटि काल ॥ छं० ॥ ३८ ॥

शरद् वर्णन ।

साटक ॥ पित्ते पुत्त सनेह गेह [4]गुपता, जुगता न दिव्या दने ।
[5]राजा छचनि साज राज छितिया, निंदायि नीवासने ॥
कुसुमेषं तन चंद न्रिमल कला, दीपाय वरदायने ।
मा मुक्के प्रिय बाल नाल समया, सरदाय दर दायने ॥छं०॥३९॥
दूहा ॥ आयौ सरद स इंद्र रिति । चित पिय पिया सँजोग ॥
दिन दिन मन केली चढ़े । रस जु लाज [6]अलि भोग ॥छं०॥४०॥
कवित्त ॥ पिष्षि रयनि न्रिमलिय । फूल फूलंत अमर धर ॥
स्रवन सबद नहिं सुझै । हंस कुरलंत मान सर ॥
कवल कद्रव विगसंत । तिनह हिमकर परजारै ॥
तुमहि चलत परदेस । नहीं कोइ सरन उबारै ॥

(१) मो.-बिज्जुल । (२) मो.-पुनंधन ।
(३) को.-सावन । (४) ए. कृ. को. भुगता ।
(५) ए. कृ. को. राजा छत्र निमान (६) ए. कृ. को.-अति ।

निग्रहन रत्त भरपंच सर। अरि अनंग अंगी वहै ॥
जौ कंत गवन सरदै कहै। तौ विरहिनि सिष ह्वै दहै ॥छं०॥४१॥
द्रप्पन सम आकास। अवत जल अम्रत हिमकर ॥
उज्जल जल सलिता सु। सिद्धि सुंदर सरोज सर ॥
प्रफुल्लित ललित लतानि। करत गुंजारव [1]भंमर ॥
उदति सित्त निसि नूर। अंगि अति उमगि अंग बर ॥
तलफंत प्रान निसि भवन तन। देषत दुति रिति मुष जरद॥
नन करहु गवन नन भवन तजि। कंत दुसह दारुन सरद ॥छं०॥४२॥

माधुर्य ॥ लहु वरन षट विय सत्त, चामर बीय तीय पयो हरे।
माधुर्य छंदय चंद जंपय, नाग वाग समोहरे ॥
अति सरद सुभगति राज राजति सुमति काम उमद्दयं।
ग्रह दीप दीपति जूप जूपति भूप भूपति सद्दयं ॥ छं० ॥ ४३ ॥
नव नलिनि अलि मिल अलिन अलि मिल्नि अलिनि अलिव्रतमंडियं॥
चक चकी चकित चकोर चष्पित चच्छ छंडित चंदयं।
दुज अलस अलसनि कुसुम अच्छित कुसुम मुद्दित मुद्दयं॥
भव भवन उच्छव तरु असोकहि देव दिव्य नि नद्दयं ॥छं०॥४४॥
नौरता मंचहि न्नपति राजत बीर झंझरि बग्गयं।
महि महिल लच्छिर सुष्षित अच्छिर सकति पाठ सु दुग्गयं॥
अट्ठार भारह पुषित अष्षित अधर अम्रत भामिनी।
रस तीय राजन लहय सोजन सरद दीपक जामिनी ॥छं०॥४५॥

कवित्त ॥ नव नलिनी अलि मिलहि। अलिन अलिमिलि व्रत मंडै ॥
तनु न्नम्मल [2]षह चंद। चष्प [3]चकोरति छंडै ॥
दुज अलसित बर निगम। कुसुम अच्छित मुद्रावलि ॥
[4]पिय नेह ग्रेहरचें। बाल छुट्टै अलकावलि ॥
करि स्नान धूत बसतर रचें। कंज वदन चिचंग चरि ॥
आनूप जूप अंजन रचै। बिना कंत तिय गुन सुगरि ॥
छं० ॥ ४६ ॥

(१) मो.-संभर। (२) ए. कृ. को.- षह।
(३) ए. कृ.-चकोरन। (४) ए.कृ. मो.-पिय ग्रेह नेह रचें।

चंद रयनि न्रिम्मली । सरिस आकास अभ्यासित ॥
पिया बदन सो चंद । दोइ कुच चिकुर प्रगासित ॥
षंजन नयन अलोल । कीर नासा [1]न्रम्मल मुति ॥
उज्जल वस्त्र अनूप । पुहप भाजन रजता भति ॥
नव गात न्रिमल सुंदरि सरल । नवल नेह नित नित भलौ ॥
चित चतुर रीति बुझझै न्रपति । सरद दरद करि मति चलौ ॥
छं० ॥ ४७ ॥

हेमंत ऋतु आने पर राजा का रानी कूरंभा के पास जाकर पूछना और उसका मना करना ।

दूहा ॥ हिम आगम वित्तें सरद । गवन चित्त न्रप इंद ॥
पुछन कुरंभी महल गय । सरद ग्रेह वर चंद ॥ छं० ॥ ४८ ॥

रानी का वचन और हेमंत ऋतु का वर्णन ।

साटक ॥ छिन्नं बासुर सीत दिघघ निसया, सीतं अनेतं बने ।
सेजं सज्जर बानया बनितया, आनंग आलिंगने ॥
यों बाला तरुनी वियोग पतनं, नलिनी दहन्ते हिमं ।
मा मुक्के हिमवंत मन्त गमने, प्रमदा निरालम्बनं ॥ छं० ॥ ४९ ॥

रोला ॥ कुच वर जंघ नितंब निसा बहुत धन बढ्ढी ।
लंक छीन उर छीन छीन दिन सीत सुचढ्ढी ॥
गिरकंदर तप जुगति आगि जोगीसर मंनं ।
ते लब्भे कविचंद वाम कामी सर धंनं ॥ छं० ॥ ५० ॥

कवित्त ॥ देह धरें दोगत्ति । भोग जोगह तिन सेवा ॥
कै वन कै वनिता । अगनि तप कै कुच लेवा ॥
गिरि कंदर जल पौन । पियन अधरारस भारी ॥
जोगिनोद मद उमद । कै छगन वसन [2]सवारी ॥
अनुराग बीत कै राग मन । बचन तीय गिर झरन रति ॥
संसार विकट दुन विधि तिरय । दुही विधी सुर असुर अति ॥छं०॥५१॥

(१) ए. कृ. को.-भ्रमल ।　　　　(२) ए. कृ. को. सचारी ।

रोमावलि वन जुथ्थ। वीच कुच कूट मार गज ॥
हिरदै[1] उजल विसाल। चित्त आराधि मंडि सज ॥
विरह करन क्रीलई। सिह्र कामिनी डरप्पै ॥
तो चलंत चहुआन। दीन छंडै पै रुप्पै[2] ॥
हिमवंत कंत मुक्कै न चिय। पिया पन्न पोमिनि, परषि ॥
ग्रहि कंठ कंठ ऊठन[3] अवनि। चलत तोहि[4] लगिवाय रूष ॥छं०॥५२॥

न चलि कंत सुभचिंत। धनौ बहु[5] विंत प्रगासौ ॥
गह गहि ऐसौ प्रेम। सौज आनंद उहासौ ॥
दीरघ निसि दिन तुच्छ। सीत संतावै अंगा ॥
अधर दसन घरहरै। प्रात परजरै अनंगा ॥
[6]जा ऐनि रैनि हर हर जपत। चक्क सह चक्की कियौ ॥
हिमवंत कंत सुग्रह ग्रहति। हहकरंत फुट्टै हियौ ॥ छं० ॥ ५३ ॥

चोटक ॥ गुरु पंच सुभै दस मत्तपयो। श्रिय नाग हऱ्यौ हरबाहनयो ॥
इति छंद विछंद विलास लहै। तत चोटक छंद सुषदं कहै॥ छं० ॥५४॥
दिव दुग्ग निसा दिन तुच्छ रवै। जरि सीत बनं बनवारि जवै ॥
चक चक्कि चकी जिम चित्त भवै। नितवांम प्रिया मुष [7]मोरि ठवै ॥
छं० ॥ ५५ ॥

बिरही जन रंजन हारि भियं। घनसार[8]मृगंमद पुंज कियं ॥
पहुपंकति पुंजति कन्त जियं। परिरंभन रंभन रे रतियं ॥
करि विभ्रम निभ्रम लग्ग तियं। .... ॥
छिन भाजत लाजत लोचनयं। तन कम्पत जम्पत मोचनयं॥
छं० ॥ ५६ ॥

नव कुंडल मंडल कन्न रमै। कच अभ्रपटी जनु वीज भ्रमै ॥
कुसमावलि तुट्टि लवंग लगं। बरनं रचि छुट्टति पंति बगं ॥ छं० ॥ ५७ ॥

---

(१) मो.-हिरेदे उज्जल जल विसाल चित्त आविति मांड गज। (२) मो.-रुक्कै
(३) ए. कृ. को.-अवत । (४) ए. कृ. को.-चलन तोहि लग्गीय रुष ।
(५) मो.-वत्त । (६) ए. कृ. को.-जय नह रैनि ।
(७) ए. कृ. को.-कोलि जवै । (८) ए. कृ. को.-मृदंमद ।

श्रम बुंदति मुत्ति झरं उरनं। झलनी अनु गिम्ह सिवं सरनं ॥
कटि मंडल घंटि रमन्नि रवै। सुरमंजु[1] मंजीर अमीय श्रवै ॥
छं० ॥ ५८ ॥
रति ओज मनोज तरंग भरी। हिंमवंत महा रितराज करी ॥
॥ छं० ॥ ५९ ॥

शिशिर ऋतु का आगम।

दूहा ॥ संगम सुष सुत्तौ न्रपति। ग्रिह विन एक न होइ ॥
सुनि चहुआन नरिंद बर। सीत न मुक्कै तोइ ॥ छं० ॥ ६० ॥
हिम वित्यौ आगम,शिशिर। चलन चाइ चहुआन ॥
सुनि पिय आगम शिशिर कौ। क्यौं मुक्कै ग्रिह थान ॥ छं० ॥ ६१ ॥
साटक ॥ [3]रोमाली वन नीर निद्ध[4] चरयौ[5] गिरिदंग [6]नारायने ॥
पव्वय पीन कुचानि आनि मलया, फुंकार झुंकारए ॥
सिसिरे सर्वरि वारूनी च विरहा माहइ मुव्वारए ॥
मांझंते म्रिगबद्ध मध्य गमने, किं दैव उच्चारए ॥ छं० ॥ ६२ ॥
*दूहा ॥ अरिय सघन जीतन दिसा। चलन कहत चहुआन ॥
रतिपति बल होइ पिथ्थ गय। ग्रह हमीर ग्रिह आनि ॥
छं० ॥ ६३ ॥
कवित्त ॥ आगम फाग अवंत। कंत सुनि मित्त सनेही ॥
सीत अंत तप तुच्छ। होइ आनंद सब ग्रेही ॥
नर नारी दिन रैनि। मैंन मदमाते डुल्लैं ॥
सकुच न हिय छिन एक। बचन मनमानै बुल्लैं ॥
सुनौ कंत सुभ चिंत करि। रयनि गवन किम कीजइय ॥
कहि नारि पीय बिन कामिनी। रिति ससिहर किम जीजइय ॥
॥ छं० ॥ ६४ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-पंज ।
(२) ए. कृ. को. गति
(३) ए. कृ. को. रोमावालि ।
(४) ए. कृ. को. निचयो ।
(५) ए. कृ. को.-गिरिदंत ।
(६) ए. कृ. को. नारायते ।
* यह दोहा मो. प्रति में नहीं है ।

हनुफाल ॥ गुर गरुअ चामर नंद। लहु वरन विष विष इंद ॥
विवहार पय पय बंद। इति हनूमानय छंद ॥ छं० ॥ ६५ ॥
रिति ससिर सरवरि सोर। परि पवन पत्त झकोर ॥
वन चिगुन तुल्ल तमोर। घन अगर गंध निचोर ॥ छं० ॥ ६६ ॥
भुअ भोज व्यंजन भोर। लव अमर तिष्य कटोर ॥
रस मधुर मिष्टित थोर। रति रसन रमनति जोर ॥ छं० ॥ ६७ ॥
कल कलस न्त्रिति किलोर। वय स्याम गुन अति गोर ॥
परि पेम पेम सजोर। अवलोक लोचन ओर ॥ छं० ॥ ६८ ॥
सुष अंत मुकति सकोर। .... ॥
रस रमति पिथ्थ न्रपत्ति। मनों भुवन वनि सुरपत्ति ॥छं०॥६९॥
इति ससिर सुष विलसंत। रिति राइ आय वसंत ॥
षटु रित्त, षट रमनीय। रषि चंद वरनन कीय ॥ छं० ॥ ७० ॥
तरु लता गहवरि फेरि। प्रति कुंज कुंजन हेरि ॥
... . । .... ॥ छं० ॥ ७१ ॥

कवित्त ॥ कुंज कुंज प्रति मधुप। पुंज गुंजत वैरनि धुनि ॥
ललित कठ कोकिल। कलाप कोलाहल सुनि सुनि ॥
राजत वन मंडित। पराग सौरंभ सुगंधिन ॥
विकसे किंसुक विहि। कदंव आनंद विविध धुनि ॥
परिरंभ लता तरवरह सम। भए समह वर अनग तिथि ॥
विच्छुरन छिनक संपत्ति पति। कंत असंत वसंत रिति ॥छं०॥७२॥

पृथ्वीराज का कविचन्द से पूछना कि वह कौनसी ऋतु है जिसमें स्त्री को पति नहीं भाता।

दूहा ॥ षट रिति वारह मास गय। फिरि आयौ रु वसंत ॥
सो रिति चंद बताउ मुहि। तिया न भावै कंत ॥ छं० ॥ ७३ ॥

(१) ए. कृ. को. सस।

कबिचन्द का कहना कि वह ऋतु स्त्री का ऋतु समय (मासिक धर्म्म) है।

जौ नलिनी नीरहि तजै। सेस तजै सुरतंत ॥
जौ सुबास मधुकर तजै। तौ तिय तजै सु कंत ॥ छं० ॥ ७४ ॥
रोस भरै उर कामिनी। होइ मलिन सिर अंग ॥
उहि रिति प्रिया न भावई। सुनि चुहान चतुरंग ॥ छं० ॥ ७५ ॥

रानियों के रोकने पर एक साल सुख सहबास कर पृथ्वीराज का पुनः बसंत के आरंभ में कन्नौज को जाने की तैयारी करना।

चौपाई ॥ षट्ट सु [1]बरनी विय षट मासं। रष्ये बर चहुआन बिलासं ॥
ज्यों भवरी भवरं कुसुमंगा। त्यों प्रथिराज कियौ सुष अंगा ॥
छं० ॥ ७६ ॥
दूहा ॥ बर बसंत अग्गें निपति। सेन सजी बहु भार ॥
दिसि कनवज बर चढ़न कौं। चितवति संभरिवार ॥ छं० ॥ ७७ ॥
कै आनै कविचंदई। कै प्रयान प्रथिराज ॥
सित सामंत सु संमुहै। पंगराय ग्रह काज ॥ छं० ॥ ७८ ॥

गुरुराम का कूच के लिये सुदिन सोधना।

मतौ मंडि संभरि [1]न्रपति। चलन चिंत [2]पहु अज्ज ॥
दिन अप्पौ गुरराज मिलि। चिंत चलन कनवज्ज ॥ छं० ॥ ७९ ॥

राजा का रविवार को अरिष्ट महूर्त में चलने का निश्चय करना।

कवित्त ॥ चैत तीज रविवार। सुद्ध संपज्यौ सूर जब ॥
एकादस ससि होइ। छंडि दस थान मान तब ॥
बर मंगल न्रप राशि। पंच अक्रूर मेछ बर ॥
दुष्ट भाव चहुआन। राशि अष्टम ढिल्ली धर ॥

(१) ए. कृ. को.-बरुनी। (१) मो.-नुपहु। (२) मो.-वर।

भर रासि गाइ षोटौ न्टपति। देषि पुच्छि चहुआन चलि॥
भावी विगत्ति मति उरइ उर। जु कछु कह्यौ कविचंद पुलि॥
छं० ॥ ८० ॥

पृथ्वीराज का कैमास के स्थान पर जैतराव को राजमंत्री नियत करना।

दूहा॥ नन मानी चहुआन न्टप। भावी चिंति प्रमान॥
सलष वोलि मंतह न्टपति। मत कैमासह थान॥ छं० ॥ ८१ ॥

कवित्त॥ मंचिय थपि पामार। मंति कैमास.थान वर॥
ता मंची पन अप्पि। सूर सामंत मंझ भर॥
मंच दिट्ठ दिढ़ वाच। काछ दिट्ठौ दिढ़ लोभै॥
लोह दिट्ठ जुध काल। सामभ्रम्मह दिढ़ सोभै॥
पुरुषह सु दिट्ठ काया प्रचंड। दिढ़ दुरग्ग भंजन सुहर॥
गुरराज राम इम उच्चरै। सो मंची न्टप करन धर॥ छं० ॥ ८२ ॥

राज्य मंत्री के लक्षण।

सो मंची न्टप करिय। पुव्व वंसह सु वीय सुधि॥
दूत भेद अनुसार। मोह रस बसिन ईछ मुधि॥
न्याय ध्रंम अनुसार। न्याय नंदन परगासै॥
रोगजीत नन होइ। तान चिय लछि अभ्यासै॥
परधान ध्यान जानै सकल। अध्रम द्रव्य नन संग्रहै॥
पम्मार सलष मंची न्टपति। बल गोरी मुष संग्रहै॥ छं० ॥ ८३ ॥

राजा का जैतराव से पूछना कि भेष बदल कर चलें या योंही।

सो मंची पुच्छौ न्टपति। चलन चाइ चहुआन॥
दिसि कनवज धर दिष्पियै। पंग जोग परमान॥ छं० ॥ ८४ ॥
छग्गल पान नरिंद बर। अद्भुत चरित विराज॥
चंद भेष चहुआन कौ। षेट सुपत्तौ साज॥ छं० ॥ ८५ ॥

जैतराव का कहना कि छद्मवेष में तेजस्वी कहीं नहीं छिपता इससे समयोचित आडंवर करनां उचित है।

चौपाई ॥ राजन चंद वदन ढँकि किम्मं। छिपै न छिप कर सूर सघम्मं ॥
छिप्पत कवहुँ न मोमभ्भर तिन। रंकति न छिपै वित परघन षिन॥
छं० ॥ ८६ ॥

सुभग मन मधि विदुष सु कव्वी। देषि सुजान न छिपै गुनव्वी ॥
गैपति मैपति समद न छिप्पै। न [1]छिप्पै न रज रजपूत सुदिप्पै ॥
छं० ॥ ८७ ॥

कवित्त ॥ जो आडंवर तजिय। राज सोभै न राज गति ॥
आडंवर विन भट्ट। कव्वि पुनगार मेट थति ॥
आडंवर विन नट्ट। गोरि गावै नह रुक्कहि ॥
आडंवर विन वेस। रूप रत्ती न सोय कहि ॥
जन एक सुभर वंदन विदुष। हरुअत आडंवरह विन ॥
पर धर नरिंद वंदन मतौ। करि आडंवर बीर तन ॥ छं० ॥ ८८ ॥

पुनः जैतराव का कहना कि मुझसे पूछिए तो मैं यही कहूंगा कि सब सेना समेत चल कर यज्ञ उथल पथल कर दिया जावे।

दूहा ॥ मत पुच्छै चहुआन मुहि। सज्जि सवै चतुरंग ॥
अजै विजै जानै नहीं। जग्य विनट्टै पंग ॥ छं० ॥ ८९ ॥
तुच्छह सथ्थ नरिंद सुनि। जो जानै पहुपंग ॥
वंधि देए करतार अरि। चोर लग्ग निय संग ॥ छं० ॥ ९० ॥
अरि भंजै भंजौ सु पुनि। सम वरि समर सु पंग ॥
जौ पुच्छै चहुआन बर। [2]तौ सज्जौ चतुरंग ॥ छं० ॥ ९१ ॥

गोयन्द राय का कहना कि ऐसा करना उचित नहीं क्योंकि शहाबुद्दीन भी घात में रहता है।

मतौ गरुत्र गोयंद कहि। वर ढिल्ली सुर पान ॥

(१) ए. कृ. को.-नन छिये रजपूत मरकांत वह दिप्पै। (२) ए. कृ. को.-वर।

इथ्थ वीर विरुझाइ बलि। धर लग्गौ सुरतान ॥ छं० ॥ ९२ ॥
जिम लग्गो आखेट अगि। ढिल्ली वै सुरतान ॥
विन बुझाय बुझि अग्गिया। जिम [1]घट्ट जम पानि ॥ छं० ॥ ९३ ॥
चित्त चलन चहुआंन कौ। जिम अप्पौ मति नन्ह ॥
सब भृत मझझनटारि लष। न्रप ढुंढिय धन लिन्ह ॥ छं० ॥ ९४ ॥

अन्त में सब सेना सहित रघुबंश राय को दिल्ली की गढ़ रक्षा पर छोड़कर शेष सौ सामंतो सहित चलना निश्चय हुआ।

सौ समंत छ सूर भय। ते इक एकह देह ॥
जोगिनपुर रघुवंश सौ। सो रष्षौ तल लेह ॥ छं० ॥ ९५ ॥
तत्त मत्त चालन कियौ। महल विसरजन कीन ॥
सत्त घरी घरियार वजि। वर प्रस्थान सुदीन ॥ छं० ॥ ९६ ॥
एक वरष प्रस्थान ते। विय प्रस्थान सुपत्त ॥
ग्यारह से कनवज्ज कौ। चैत तीज रविरत्त ॥ छं० ॥ ९७ ॥

रात्रि को राजा का शयनागार में जाकर सोना और एक अद्भुत स्वप्न देखना।

कवित्त ॥ बिपन महल चहुआन। राज प्रस्थान सुपत्तौ ॥
निसा निद्र उत्तरिय। सघन उन्नयौं सु रत्तौ ॥
बीज तेज झूझंत। तमत उग्यौ व्रत भारी ॥
निसा पत्ति सुर आय। बोल बर बर उच्चारी ॥
चरि चित्त चित्त चहुआन करि। बान विषम गुन बंधयौ ॥
बल श्रवन दिष्ट संभरि धनी। सुर चिंतह लष संधयौ ॥
छं० ॥ ९८ ॥

प्रथमं स्वर चहुआन। बान संध्यौ गुन मंगह ॥
विय अलुझ सुर बोलि। चित्त मुक्यौ तिन संगह ॥

(१) मो.-हट्टै।

तीय वचन अपि जोह। जीव सध्यह सुक छुट्टिय ॥
कर चारहु मन राज। कह्यौ छंदै अंग जुट्टिय ॥
निस पतन भई जोगय विपन। हंकाऱ्यौ दुजराज बर ॥
घरियार प्रात बज्जै सुघर। रत्त मार बर उग्गि धर ॥
छं० ॥ ९९ ॥

कविचन्द का उस स्वप्न का फल बतलाना

सु गुन विह्व कविचंद। अग्र भय छंद विचारिय ॥
[1]सामि हथ्थ जस चढ़न। सुभत आतुर रन पारिय ॥
कलह केलि आगंम। सामि परिगह आछुट्टिय ॥
बल संगपन किय दान। हीन हीनह अप छुट्टिय ॥
कहुई चंद कवि मुष्ष तत। आरुष राज न मानइय ॥
सो भ्रत्त गति न्त्रिमान सति। नन मिट्टै जुग जानइय ॥
छं० ॥ १०० ॥

दूहा ॥ नहिं वरज्यो कविचंद न्रप। कहि सुनाय सब सथ्थ ॥
ज्यों विधिना वर न्त्रिमयौ। [2]जम कग्गद चढ़ि हथ्थ ॥ छं० ॥ १०१ ॥

११५१ चैतमास की ३ को पृथ्वीराज का कन्नौज को कूच करना

ग्यारह से एकानवै। चैत तीज रविवार ॥
कनवज देषन कारनें। चल्यौ सु संभरिवार ॥ छं० ॥ १०२ ॥

पृथ्वीराज का सौ सामंत और ग्यारह सौ चुनिंदा सवारों को साथ में लेकर चलना।

कवित्त। ग्यारह से असवार। लष्ष लीने मधि लेषैं।
इसे सूर सामंत। एक अरि दल बल भष्षैं ॥
[3]तनु तुरंग बर वज्र। वज्र ठेलै वज्रानन ॥
बर भारथ सम सूर। देव दानव मानव नन ॥
नर जीव नाम भंजन अरिय। रुद्र भेस दरसन न्त्रपति ॥
भेटयौ सु यह भर सम्भई। दिपति दीप दिवलोक पति ॥ छं० ॥ १०३ ॥

(१) ए. कृ. को.-स्वामि। (२) मो०.-सो. (३) ए० कृ० को०-तनु तन गव्वर वज्र।

चल्यौ सु संभरिवार। सथ्थ सामंत सूर भर ॥
इनिग राज कयमास। अवनि आकंप राज बर ॥
सर बर संभरिवार। साहि बंध्यौ गज्जनवै ॥
हय गय नर भर वीय। सिद्धि छंड्यौ पुनि है वै ॥
सामंत सूर सथ्थह न्रपति। दैव वत्त कारन सुगति ॥
कनवज्ज राज अग्गह कलन। चल्यौ राज संभरि सुभति ॥
छं० ॥ १०४ ॥

कनवज्जह जयचंद। चल्यौ दिल्लीपति पिष्षन ॥
चंद बरद्दिय तथ्थ। सथ्थ सामंत सूर घन ॥
चाहुआन कूरंभ। गौर गाजी बड़गुज्जर ॥
जादव रा रघुवंस। पार पुंडीरति पष्षर ॥
इत्तने सहित भूपति छल्यौ। उड़ी रेन छीनौ नभौ ॥
[१]इक लष्ष लष्ष बर लषिए। चले सथ्थ रजपूत सौ ॥ छं० ॥ १०५ ॥

दूहा ॥ करि सुनंद संभरि सु पहु। चढ़िक्कम्यौ [३]लय मग्ग ॥
हर हर सुर उच्चार मुष। उर आराधन लग्ग ॥ छं० ॥ १०६ ॥

साथी सामंतों का ओज वर्णन।

कवित्त ॥ एक सत्त वल सूर। एक वल सहस पानि बर ॥
एक अयुत सापंत। [४]दुरद रद दहन तत्त कर ॥
एक लष्ष आरुड्ढ। जुद्ध जम जेम भयंकर ॥
एक कोटि अंगवन। धरत हर उर सु ध्यान वर ॥
रवि तन समान तन उज्जले। सत पट अग्ग सु बीर तन ॥
तिन सथ्थ सज्जि संभरि स पहु। तिथ्थ क्रम न विच्चारअन ॥
छं० ॥ १०७ ॥

सामंतों की इष्ट आराधना ॥

एक ईस आराधि। एक उमया आरोहन ॥
[५]एक दुमनि चित जपत। एक गजवदन प्रमोहन ॥

(१) मो० कारन (२) ए. कृ. को.-एकेक लष्ष बर लिषीए।
(३) ए. कृ. को. मय। (४) ए. कृ. को.-दर। (५) मो.-एकदिन मन।

एक सट्ठि चव रचित । एक पंचास उभय रत ॥
एक हनू हिय ध्यान । एक भैरव घोरत[1] मत ॥
इक जपत अंत अंतक मनह । एक पुरंदर रत्त उर ॥
इक उर विदार विहर मिरग । धरत ध्यान संकाल सुर ॥
छं० ॥ १०८ ॥

राजा के साथ जानेवाले सामंतों के नाम और पद वर्णन ।

भुजंगी ॥ गुरुं अंत मत्तं [2]पयं पाय पायं । असी मत्त सब्बै गयंनं सठायं ॥
लह्न षोडसं[3]गोचवं अट्ठ मायं । चवै चंद छंदं भुजंगंप्रियायं ॥
छं० ॥ १०९ ॥

चल्यौ जंगलीराव कनवज्ज पथ्थं । चले सूर सामंत सथ्थं [4]समथ्थं ॥
चल्यौ सथ्थ सामंत कन्हं समथ्थं ॥ जिनै बंदियं सूर संग्राम हथ्थं ॥
छं० ॥ ११० ॥

विरदं नरंनाह उग्गाह सोहं । कुलं चाहुआनं चषं पट्ट रोहं ॥
गुरू राव गोयंद बंदै सु इंदं । सुतं मंडलीकं सबै सेनचंदं ॥
छं० ॥ १११ ॥

धरै धूंम सामित्त सा रायलंगा । सुतं राव संयम्म रन में अभंगा ॥
सदा सेवसों चित्त हनमंत बीरं । रमै रोस रंगं तवै आय भीरं ॥
छं० ॥ ११२ ॥

चल्यौ स्वामि सन्नाह सा देवराजं । सुतं बग्गरीराव सामंत[5]जाजं ॥
सदा इष्ट आभिष्ट स्वांमित्त चित्तं । वियं बीर चित्तं सु आनै न हित्तं ॥
छं० ॥ ११३ ॥

रनंधीर पावार सथ्थं सलष्षं । चल्यौ जैत[6]सिंघं सु कंकं अलष्षं ॥
भरं जामजद्दौं सु षीची प्रसंगं । कारं कच्छवाहं सु पज्जून संगं ॥
छं० ॥ ११४ ॥

बलीभद्र कूरंभ पाल्हंन सथ्थं । करंबाह कथ्थं सु कंकं अकथ्थं ॥
नरं निढ्ढुरं धज्ज कमधज्जराजं । वडंगुज्जरं राम सो सामि काजं ॥
छं० ॥ ११५ ॥

(१) मो.- मन । (२) ए. कृ. को-पाद्य । (३) ए. गोचर ।
(४) कृ. को.-समर्थं । (५) मो.-राज । (६) मो.-सिंगं ।

सदा ईस सेवं सुरं अत्तताई। चले हड्ड हम्मीर गंभीर भाई॥
वरंसिंघ दाहिम्म जंघार भीमं। बरं तास चंपै न को ओर सीमं॥
छं०॥ ११६॥

सज्यौ वाह पम्मार उद्दिग्ग सथ्थं। चल्यौ चंद पुंडीर संग्राम सथ्थं॥
वर चाहुआनं बरसिंघ वीरं। हरसिंघ संगं सु संग्राम धीरं॥
छं०॥ ११७॥

सज्यौ राव चालुक्क सारंग संगं। समं विझराजं सु बंधं अभंगं॥
सथं आगरं सूर सागौर गोरं। बरं बाररंसिंह सा सूर[1] घोरं॥
छं०॥ ११८॥

चली वाररं रेन रावत्त रामं। दलं दाहिमा रूव संग्राम धामं॥
निरबान बीरं सु नारेन नीरं। समं सूर चंदेल भोंहा सधीरं॥
छं०॥ ११९॥

बड़ंगुज्जरं कंक राजं कनक्कं। सइं सूर सामंत बंधैति अंकं॥
चल्यौ माल चंदेल भट्टी सु भानं। समं सामलं सूर कमधज्जरानं॥
छं०॥ १२०॥

बरं सिंघ बीरं सु मोहिल्ल बंधं। न्नपं राय बंधं बरंनं सुमिद्धं॥
दलं देवरा देवराजं सु सोहं। महा मंडलीराव सौहं अरोहं॥
छं०॥ १२१॥

धनू धावरं धीर पांवार सथ्थं। चल्यौ तोमरं पाहरा [1]वारि वथ्थं॥
सज्यौ आवलौ अल्हह चालुक्क भारौ। चलं वग्गरी वाय षेता षंगारौ॥
छं०॥ १२२॥

चली राय वीरं सु सारंग गाजी। परीहार राना दलं रूव राजी॥
बरं बीर जादौं भरं भोजराजं। समं सांषुला सौह सामल्ल साजं॥
छं०॥ १२३॥

कामंधज्ज बीकंम सादल्ल मोरी। जरी ठंठरी टाक सारंन [2]जोरी॥
जयंसिंघ चंदेल वारू कंठेरी। भरं भीम जादौं अरी गो उजेरी॥
छं०॥ १२४॥

---

(१) ए. कृ. को.-घोरं।
(२) मो.-सथ्थं।

(१) ए. कृ. को.-वसि।
(२) ए. कृ. को.-मोरी।

सुतं नाहरं परिहारं महन्नं। समं पीप संग्राम साहं गहन्नं ॥
बरं बारडं मंडनं देवराजं। रनं अचलं पाय अचलेस साजं ॥
छं० ॥ १२५ ॥

चल्यौ कच्चराराव चालुक्क बंभं। सुतं भीम संगं सदा देव संभं ॥
कमधज्ज आरज्ज आहं कुमारं। भरं भीम चालुक्क बीरंबरारं ॥
छं० ॥ १२६ ॥

गनै लष्षनं लष्ष बघ्घेल एकं। सुतं पूरन[1] सूर बंदै सुतेकं ॥
परीहार तारन्न तेजल्ल डोडं। अचल्लेस भट्टी अरीसाल सोढं ॥
छं० ॥ १२७ ॥

बड़गुज्जरं चंद्रसेनं सुधीरं। सुतं कट्ठियं सिंघ संग्राम बीरं ॥
विजैराज बघ्घेल गोहिल्ल चाचं। लषंनं पवारं नही कूर राचं ॥
छं० ॥ १२८ ॥

भरं रंघरी छम्म सामंत पुडीरं। भिरै सूर भग्गै नही सारभीरं ॥
कमध्धज्ज जैसिंघ पुंज पहारं। भरं भारथंराय भारथ्थ भारं ॥
छं० ॥ १२९ ॥

सुतं जागरं केहरी मल्हनासं। बँधंनौरवं कट्ट संग्राम बासं ॥
चल्यौ टांक चाटा सुरावत्त राजं। हरी देवतीराइ जादौं सुजाजं ॥
छं० ॥ १३० ॥

बली राइ कच्छं[2] ओहट्टी गँभीरं। हुअं हाहुलीराव सथ्थं हमीरं ॥
पहू पुहकरंराव कन्हं सुराजं। दलं दाहिमा जंगली राग्र साजं
छं० ॥ १३१ ॥

मुषं पंच पंचाइनं चाहुआनं। सुअं पारिहारं रनंबीर रानं ॥
रसं सूर सामंत सथ्थं ससष्षं। बरं लष्षियं एक एकं मुलष्षं ॥
छं० ॥ १३२ ॥

हनूफाल ॥ इक सेवक छिंगन कन्ह तनौ। निरष्षे कविचंद पुरष्ष घनौ ॥
छह अग्गर सुभ्भट सत्त जुतं। कनवज्ज चल्यौ नृप सोमसुतं ॥
छं० ॥ १३३ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-पूर　　　　(२) के.-एहट्टी।

पृथ्वीराज का जमुना किनारे पड़ाव डालना।

कवित्त ॥ तट कालिंदी तीर। कियौ मुक्काम दिलेसुर ॥
अवर सूर सामंत। सब्ब उत्तरे आय तुर ॥
समै निसा निज सिवरि। बोल सामंत सूर सब ॥
मधूसाह परधान। राज उब्बैर सूर तब ॥
तीरथ बन अंतर धरिय। अंतर बेध सगंग धर ॥
आवासि मंत कारन सुनहु। चल्लौ सुभट्ट समंग भर ॥छं०॥१३४॥

दूहा ॥ तट कालिंद्री तहँ विमल। करि मुक्काम न्रप राज ॥
सथ्थ सयन सामंत भर। सूर जु आये साज॥ छं० ॥ १३५ ॥

कवित्त ॥ अप्प जाति विन सब्ब। चले सामंत सथ्थ तब ॥
पहु निकट्ट कनवज्ज। ताहि प्रछन्न गवन कब ॥
मधूसाह गुरराम। रहे दिल्ली रह कज्जं ॥
गुर वीठल समदेव। अनुज रामह सथ सज्जं ॥
अह अट्ट राज आवागमन। सज्जौ सेन सथ्थें सुविधि ॥
कज दान द्रव्य गंगह सजौ। जिम सिभझै तीरथ्थ सिधि ॥
छं० ॥ १३६ ॥

जमुना के किनारे एक दिन रात विश्राम करके सब सामंतों को घोड़े आदि बांटकर और गढ़रक्षा का उचित प्रबन्ध करके दूसरे दिन पृथ्वीराज का कूच करना।

दूहा ॥ [1]किय आयस संभरि स पहु। सुनौ सगुर बर साह ॥
सत क्रम्मलक सथ्थ घन। सजौ सक मन राह ॥ छं० ॥ १३७ ॥
एकादस सर एक न्रप। सौ सामंत छ सूर ॥
दिसि कनवज दिल्ली न्रपति। चैतह वज्जि [2]स सूर ॥ छं०॥ १३८ ॥

कवित्त ॥ पारिहार रनबीर। राजा अग्गें आभासिय ॥
प्रछन्नह कनवज्ज। तिथ्थ संक्रमन सु भासिय ॥

(१) मो.-कार (२) मो..सनूर।

साज सब्ब बर [1]तास । भरौ वासन द्रव रज्जिय ॥
अवर सब्ब परिहार । काज भोजन सथ सज्जिय ॥
साहनौ सहि जगमाल तहँ । देहु सबन सामंत हय ॥
सारङ्ग सित्त तेजक्क हय । सजे सब्ब परकार तय ॥ छं० ॥ १३९ ॥

दूहा ॥ बोलि साहनौ सोच मन । दल लष्षन अस लज्ज ॥
सामंतन कारन विलहन । समपि समर जस कज्ज ॥ छं० ॥ १४० ॥
प्रथम संवोधे सथ्थ सह । सुत दुज रष्षे साह ॥
जाम सेष रजनी चल्यौ । सिलह सु सज्जी ताह ॥ छं० ॥ १४१ ॥

पृथ्वीराज का नाओं पर यमुना पार करना ।

इन प्रपंच भुअपति चल्यौ । अरु कविचंद अनूप ॥
जमुना [2]नावनि उत्तरिय । निकट महल अनुरूप ॥ छं० ॥ १४२ ॥

पृथ्वीराज के नांव पर पैर देते ही अशुभ दर्शन होना ।

कवित्त ॥ चढ़त राज प्रथिराज । सगुन भय भीत उपन्नौ ॥
स्याम अंग तन छिद्र । कलस संमुह संपन्नौ ॥
एक अंग तिय सकल । एक आभिस भेस बर ॥
एक अंग शृंगार । एक अंगह सुंदर [3]नर ॥
दिष्षी सु नयन राजन रमनि । पुच्छि वत्त धारह धनिय ॥
शृंगार बीर दुअ संचरहि । अब्बूवै अप्पन भनिय ॥ छं० ॥ १४३ ॥

नांव से उतरने पर एक स्त्री का मिलना ।

दूहा ॥ तौन बंधि भुअपति उभय । अरु कविचंद अनूप ॥
जमुन उतरि नावह निकट । मिलिय महिल इन रूप ॥छं०॥१४४॥

उक्त स्त्री के स्वरूप का वर्णन ।

कवित्त ॥ पानि नाल दालिमी । हास मुष नैन रोस निज ॥
उरसि माल जा सूल । कमल कनयर सिरसी रज ॥

(१) ए. कृ. को.-ताह । (२) मो.-नावसु ।
(३) ए. कृ. को.-बर ।

वाम हेम आभंन। लोह दच्छिन दिसि मंडिय ॥
अद्व केस सलवंध। अद्व [1]मुकलित तिहि छँडिय ॥
विपरीत पीत अंबर पहरि। पिष्षि राज अचरिज्ज करि ॥
किन महिली किन घर न सुवर। किन सु राज अरधंग धरि ॥
छं० ॥ १४५ ॥

हनूफाल ॥ मिलि महिल सगुन सरूप। द्रग अप्प निरषत भूप ॥
दछि दोर नालि सु लीन। कर वाम समकर भीन ॥ छं० ॥ १४६ ॥
अधकेस मुकुलित संधि। [2]अध कुंत लंकल बंधि ॥
अवतंस इक अव स्रोन। दिसि कंक आसिय वोन ॥ छं० ॥ १४७ ॥
द्रिग वाम अंजन दीन। दछि नेंन नागवि कीन ॥
सल वाल भाल सुपत्ति। परसात कंकि [3]षत्ति ॥ छं० ॥ १४८ ॥
मुष हास नेन विरोस। [4]नासाग्र उग्रन ओस ॥
कर रतन दच्छिन राज। पहु पानि वल्लिय बाजि ॥ छं० ॥ १४९ ॥
मुकतावली अध सेत। अध साल माल मवेत ॥
दुति बरन भूषन रूप। आलंक कलसा नूप ॥ छं० ॥ १५० ॥
अधसेत आसुरि स्याम। रत पीत अंबर काम ॥
मुर गुनिय जा तिल तंत। सिर कमल कल हय यंत ॥ छं० ॥ १५१ ॥
तंडीव तरल तरंग। आलंक तंड सुरंग ॥
अध मत्त गवन अनूप। अध चंचलं मद ऊप ॥ छं० ॥ १५२ ॥
पद जेहरी धरि हेम। क्रम क्रम्यौ उरजत नेम ॥
सच साष वाम सु पुछि। पद दच्छिनी क्रत गुछि ॥ छं० ॥ १५३ ॥
को महिल को वर गेह। पुछि राज अचरिज एह ॥
.... । .... ॥ छं० ॥ १५४ ॥

राजा का कवि से उक्त महिला के विषय में पूछना।

दूहा ॥इहि बिधि नारि पयान मिलि। मुष कल रत्त फुनिंद ॥
उद्दिम आदर चलिय न्रप। तव नह बुभिझय चंद ॥ छं० ॥ १५५ ॥

---

(२) मो.-मुक्कित बर। (१) ए. कृ. को.-धर।
(२) ए. कृ. को.-पत्ति। (३) ए. कृ. को.-नासाग्र उग्रं उग्गन जै।

*कहै चंद न्टप ईस सुनि। दरस देवि दिय तोहि ॥
अग्गि भंजि अरि गंजिकै। दुलह संजोगिय होइ ॥ छं० ॥ १५६ ॥

राजा का कविचंद से सब प्रकार के सगुन असगुनों का फल वर्णन करने को कहना।

बहुरि सगुन राजन्न हुअ। फल जंपै कविचंद ॥
उत्तिम मद्धिम विवह परि। कहि समझावत [1]छंद ॥ छं० ॥१५७॥

पद्धरी ॥ चहुआन चवै सुनि चंद भट्ट। संक्रमन [2]मग्ग उछछंग थट्ट ॥
तुम लहौ अर्थ विद्या सु सार। जंपौ सु सगुन सब्बै प्रचार ॥
छं० ॥ १५८ ॥

कविचंद का नाना प्रकार के सगुन असगुनों का वर्णन करना

कविचंद कहै सुन दिल्लिराज। विधि कहौं सगुन रुब्बें सु साजि ॥
दष्षिनहि वादि वामंग वादि। सम थान देवि उत्तिम उमादि ॥
छं० ॥ १५९ ॥

अति बृद्धि रिद्धि [3]अष्षै सु लोय। जस कुसल सुफल पंथी मजोइ ॥
सुर दून तीन दाहिनी देय। वज्जंत गमन पथिकं परेय ॥
छं० ॥ १६० ॥

मंडलह स्तर तरि संझ सद्दि। मुक्कंत सीम पंथिक परद्धि ॥
बायंब हुंत दष्षिन प्रवेस। ताराय ताम जंपे सु तेस ॥
छं० ॥ १६१ ॥

एकीक कुसल दुअ कुसल काज। [4]तीसरी होत फल रिद्धि राज ॥
दाहिनी हुंत दिसि वाम आय। पंथी गवंन वरजंत ताइ ॥
छं० ॥ १६२ ॥

दूसरी घात बंधनह हत्त। तीसरी गवन [5]सूचंत मृत्त ॥
ताराय उंच फल उंच [6]देस। मद्धिम्म अधम अद्धी सु [7]तेस ॥
छं० ॥ १६३ ॥

*यह दोहा मो. प्रति में नहीं है। (१) ए. कृ. को.-चंद।
(२) ए. कृ. को.-लग्ग। (३) ए. कृ. को.-अषै। (४) ए. कृ.-नीसरी।
(५) मो.-सयंत। (६) ए. कृ. को. देह। (७) ए. तेय। को. मो. नेस।

दष्षिनी सगुन सुर दष्षि चारि। बांईय बाय प्रसरंत रारि॥
कारज्ज सिद्धि सूचंत नाम। विपरीत सुफल विपरीत काम॥
छं० ॥ १६४ ॥

सुर एक एक कंटक अरोहि। अंगार तूर भसमं वरोहि॥
सूकें सु कट्ठ गोवर सु हंडि। आहुट्ठि सहि गुनयंग छंडि॥
छं० ॥ १६५ ॥

उत्तरै तार सद्दै सु सद्द। पूरन्न चित्त कारिज्ज मंद॥
आवंत होय जो ग्रेह नाम। वांईय सद्दि सिद्धंत काम॥
छं० ॥ १६६ ॥

केदार कूप नै तट्टवाय। परहरै सिद्ध वंछै सु जाय॥
तीतरह षरह नाहर जंबूक। सारस्स चिल्ह चाचिग अलूक
छं० ॥ १६७ ॥

कपि कंठनील सुक सद्धि नाम। दिस संति सुष्य पूरंतवाम॥
पंचाइन दिस दाहिन प्रचार। सादंत अर्थ दष्यित सचार॥
छं० ॥ १६८ ॥

सूचंत सुभय दारुन्न सथ्थ। पति सथ्थ निद्धि निंदं अतिथ्थ॥
चै पंच सत्त एकं उभार। पछु काल म्रग्ग दाहिन सुचार॥
छं० ॥ १६९ ॥

भोजनं पच्छ वाईय माल। पूरंत अर्थं अर्थींव ढाल॥
एकलौ असित म्रग जम्म रूप। बूडंत किरनि अंतकह जूप॥
छं० ॥ १७० ॥

निक्काम सगुन जो होइ सिद्धि। प्रावेस सोय विपरीत रिद्धि॥
सद्दै जो सिवा सद्दह कराल। वाईंय दिसा सुभ भेव ढाल॥
छं० ॥ १७१ ॥

चाषिग्ग निकुल अज भारद्वाज। चामर सु छत्र वीणा सवाज॥
भृंगार बार विरही कनक। दुर्वारु[1] दद्धि सुरसुर[2] धनंक॥
॥छं०॥१७२॥

(१) ए. कृ. को.-दुर्वास। (२) मो.-सुरि।

द्रुप्पन कलाल बेसाह गज्ज ।[1]सारज्ञ सिढि अष्पै सुरज्ज ॥
मूषक करम्भ गोधह भुअंग । .... छं० ॥ १७३॥
अंगार कष्ष भसमंग पास । गुड़ लवण तक्र गोबर द्रास ॥
[2]प्रवरज्ज अंध मूकंत केस । गरदम्भ रूढ़ तजि अंदरेस ॥
॥छं०॥१७४॥

प्रनयाम पंच छह करहि जाम । या दुष्ट सगुन छंडै सु राम ॥
सागुन पुरिष सह वाम नाम । त्रिय नाम सुम्भ दच्छिनह ताम ॥
॥ छं० ॥ १७५ ॥

दूहा ॥ बनबिलाव घूघू घरह ।॰परत परेव पंडूक ॥
एक थान दष्षिन दिसह । कहिय न श्रवन समूक ॥ छं० १७६ ॥
रासभ उभय कुलाल करि । सिर बंधन निस भारि ॥
वाम दिसा संमुह मिलिय । अवसि होइ प्रभु रारि ॥छं०॥१७७॥
अतिलक बंभन स्याम असु । जोगी हीन विभूति ॥
संमुह राज परष्षियै । गमन वरज्जै नित्त ॥ छं० १७८ ॥
सिर पंछी दच्छिन रवै । वामी उवहि सियाल ॥
मृतक रथी समुंह मुषह । कीजै गवन न्रिपाल ॥छं०॥१७९॥
कलस केलि उज्जल वसन दीपक पावक मच्छ ॥
सुनिय राज बरदाय भनि । एह सगुन अति अच्छ ॥छं०॥१८०॥
राज सगुन संमूह हुअ । धुअ तन [3]सिंघ दहारि ॥
मृग [4]दच्छिन छिन छिन षुरहि । चलहित संभरिवार
॥ छं० ॥ १८१ ॥
सुनत सीस [5]सारस सबद । उदय सुबद्दल भान ॥
परनि भाजि प्रतिहारसौ । करहित काज प्रमान ॥ छं० ॥ १८२ ॥
कल कलार सद्यो समुह । इमि न्रप बुझयौ चंद ॥
इक रवि मंडल भेदि है । इक करिहै आनंद ॥ छं० ॥ १८३ ॥

(१) ए. कृ. को.-साहसन । (२) ए. पवरज्ज ।
(३) मो. "सिंघइ" । (४) मो. दष्षिन षिन षिन ।
(५) ए. कृ. को.- सारद ।

कवि का कहना कि आप सफल मनोरथ होंगे परंतु साथही हानि भी भारी होगी ।

एक करहि ग्रह नंद वहु । इक छिन [1]भिन्न सरीर ॥
इक भारथ्थ सु जीतिहै । जे वज्रंग सु बीर ॥ छं० ॥ १८४ ॥

यह सुन कर पृथ्वीराज का कैमास की मृत्यु पर पश्चाताप करके दुचित्त होना ।

सुबर बीर सोमेस सुअ । गुन अवगुन मन धारि ॥
दुष अति दाहिम्मा दहन । मरन सु. मंगल रारि ॥ छं० ॥ १८५ ॥

सामंतों का कहना कि चाहे जो हो गंगा तीर पर मरना हमारे लिये शुभ है ।

सम सामंतन राज कहि । पहु परमारथ मत्ति ॥
समर तिथ्थ गंगा उदक । उभय अनूपम गत्ति ॥ छं० ॥ १८६ ॥

वसंत ऋतु के कुसमित वन का आनंद लेते हुए सामंतों सहित राजा का आगे बढ़ना ।

रति माधव मोरै सु तरु । पुहप पत्त बन बेलि ॥
राज कबी करतह चले । सम सामंतन केलि ॥ छं० ॥ १८७ ॥

राजा के चलने पर सम्मुख सजे बजे दूलह का दर्शन होना ।

कवित्त ॥ चलत मग्ग चहुआंन । जांम पिगौय पहु निकरि ॥
सजि दुल्लह सनमुष्ष । सुमन सेहरौ सीस धरि ॥
सजे पिट्ठ वामंग । रंग निज नेह प्रकम्मे ॥
पिष्षि राज प्रथिराज । मन्नि सा सगुन सु [2]मुम्मे ॥
उदयंत दिवाकर चौय मिलि । सुभट अंत किय जुद्ध जुरि ॥
जय जंपि सथ्थ साहा गवन । बज्जे बज्जनि [3]सिंधु सुर ॥छं०॥१८८॥

(१) ए. कृ. को.-भीन । (२) को.-भ्रंमे । (३) मो.-सिंधुसुरन ।

आगे चलकर और भी शकुन होना और राजा का मृग को वाण से मारना।

बाग षंचि दिसि स। जाम उभया षिन उत्तरि॥
दिसि दाहिनि सजि द्रुग्ग। बाम विसी तर [2]उप्परि॥
दिसि बाइँ बर सहि। भमम उप्पर आरुह्मौ॥
ताम तंमि, उत्तरी। इष्षि राजन सरसम्मौ॥
एकल्ल मृग्ग सम्हौ मिल्यौ। हयौ राज संधेव सर॥
उत्तरी ताम देवी दुहर। देषि सर्व दुम्मन्न भर॥ छं०॥ १८९॥

और भी आगे चलने पर देवी के दर्शन होना।

चल्यौराज प्रथिराज। उभय षिन तथ्थ विलंबे॥
मिलि संमुह जुग्गिनिय। दरस दीये न्रप अंबे॥
कर षप्पर तिरसूल। सवद उच्चरि जय जंपे॥
मधि षप्पर [2]धरि हेम। प्रनमि राजंग पयंपे॥
साकत्ति सज्जि हय हंकि सब। अवर वारि आरोहि चिय॥
ग्रह जाइ अप्प अपगुन कियै। मिलिय राज सा संमुहिय॥
छं०॥ १९०॥

इसी प्रकार शुभ सूचक सगुनों से राजा का बत्तीस कोस पर्य्यंत निकल जाना।

दूहा॥ इन सग्गुन दिल्लिय न्रपति। संपत्तौ भूसाम॥
कोस तीस दुअ अग्गरौ। कियौ मुकाम सु ताम॥ छं०॥ १९१॥

एक रात्रि विश्राम करके पृथ्वीराज का आगे चलना।

सहि राज रनबीर तहँ। किय भोजन सु उताम॥
सब आहारे अन्न रस। चढ्या जाम निसि जाम॥ छं०॥ १९२॥

अरिल्ल॥ किय भोजन सबसथ्थ ब्रहासन ग्रास दिय।
तिथ्थि चवथ्थिय सीम जाम इक नींद लिय॥

(१) ए. कृ. को.- उत्तरि। (२) मो.-पर।

फुनि चढ़ि चल्यौ राज न बुझयौ कोइ भत्त।
नट्ट सु बुझझै राज समझि न अषि व्रत्त॥ छं० ॥ १९३ ॥

उक्त पड़ाव से राजा का चलना और भांति भांति के भयानक अपशगुन होना।

भुजंगी ॥ चढ्यौ राज प्रथिराज कनवज्ज राजं। लिए सहस एकं सतं एक साजं॥
रवीवार वारं तिथी ताइ रूपं। सवं इन्द्र जोगं छठं राह रूपं॥
छं० ॥ १९४ ॥

दुरं वार आकास वाअंक लज्जी। दुहूं पष्ष नीचं सवं दाव नज्जी॥
मिली नारि पंचं सिरं कुंभ धारी। मुरी मध्य विड्डी उभै रूपकारी॥
छं० ॥ १९५ ॥

स्वपं जोग तीरं जु जै जै करंती। दई दच्छिनं वाम पंषी फिरंती॥
मिल्यौ रूपराअं करै सद्द वामं। गरज्जंत मेघं अकालं सु तामं॥
छं० ॥ १९६ ॥

सुवं अग्गि झालं मृतं कास उट्ठी। वम्मैजा करीरं मुषं मंस छुट्टी॥
लियं मंस गिद्धी उषं हंनि मग्गी। बुलै सारसं वाम कुरलंत डग्गी॥
छं० ॥ १९७ ॥

एक ग्राम में नट का भगल (अंग छिन्न दृश्य) खेल करते हुए मिलना।

कवित्त ॥ चलत मग्ग चहुआन। निकट इक गाम समंतर॥
नट षेलत नाटक्क। भगल मंड्यौ भ्रम तंतर॥
सत्त संगु उप्परै। नट्ट सुत्तौ जय जंपत॥
कहुंत सीस कहु पानि। धरनि धर पर्‍यौ सु कंपत॥
इह चरित पिष्षि सामंत सब। अप्प चित्त विभ्रम लहै॥
पिष्षंत परस्पर मुष [1]सकल। नको बुझ्झ राजन कहै॥छं०॥१९८॥

(१) ए. कृ. को.- सयक।

जैतराव का कन्ह से कहना कि राजा को रोको यह अशगुन भयानक है। कन्ह का कहना कि मैं पहिले कह चुका हूं।

इक कहै कोइ तिथ्थ। कवन थानक को देवह ॥
जिहि असगुन चल्लियै। कोइ न जानै यह भेवह ॥
कहिय जैत सम कन्ह। तुमहिं रष्षौ कहि राजन ॥
कहै कन्ह.नन.लहौ। प्रथम बरज्यौ बहु आजन ॥
पज्जून कहै बुज्झहु [1]सकल। इह अवस्य कनवज क्रमै ॥
जानै सुभट्ट कारज सयल। मति सु कोइ चिंता भ्रमै ॥ छं०॥१९९॥

कन्ह का कहना कि कहने सुनने से होनी नहीं टरती।

कहै कन्ह नरनाह। सुनहु कूरंभराव धुअ ॥
जो भविस्य [2]न्रिमान। सोइ मिट्टै न मूर [3]धुअ ॥
धरम सुअन [4]क्रत दूत। सोई बरज्यौ नहिं मानिय ॥
जनमेजै कहि जग्य। सु हित निष्षेध न जानिय ॥
सौमित्र बरज्जित राज रघु। कनक म्रग्ग संधेव सर ॥
दसकंध [5]निषेधिय मंत्रियन। सीय न अप्पिय काल वर ॥ छं०॥२००॥
किय जद्दव त्रिय रूप। श्राप दुर्वास सुधारिय ॥
काल विनस निर्घोष। विप्र वाहै नन हारिय ॥
इहि राजा प्रथिराज। हन्यौ कैमास अप्प कर ॥
भरि वेरी चामंड। किये दुम्मन सब्ब भर ॥
इह गमन भट्ट बुज्झै न्रपति। करै कहा सुज्झै न मन ॥
उप्पजी कोइ क्रत्या अतुल। सोइ प्रह्लचिय राज म तन ॥ छं० ॥२०१॥
*बार सोम पंचमी। जाम एकह निसि बित्ती ॥
कैं दुर्बल वर पट्ट। तहां उतरी न्रप रत्ती ॥

*यह २०२ और २०३ दोनों छन्द मो. और ए. प्रतियों में तो हैं ही नहीं। कृ. प्रति में लिख कर काट दिए गए हैं॥

(१) ए. कृ. को- सयल (२) मो.-निरमान। (३) मो. कृ. ए.-भुअ।
(४) ए. कृ. को.-अम। (५) ए. कृ. को. निषेधन।

करि स्तुति सब सथ्थ। अश्व तजि नींदह ग्रासं॥
घटी पंच निसि शेष। सु पहु चल्यौ चढ़ि तासं॥
पत्तौ सु जाय संकरपुरह। दिवस अंत वरथान नय॥
आहारि अन्न आसन्न सय। सब बुल्लि सामन्त तय॥ छं० ॥ २०२॥

पृथ्वीराज का सब सामंतों को समझाना।

इह जंपी प्रथिराज। करिव अस्तुति सामंतं॥
धरि छग्गर कविचंद। महल्ल दिष्षन मन संतं॥
जब जानौ युध समय। तुमैं सब काम सुधारौ॥
मो चिंता मन मांहि। होय तुमतैं निसतारौ॥
संभलिव सकल सामन्त मत। भयौ वीर आभास तन॥
चिंतिय सु इष्ट अप्पान अप। आश्रम्मे सब्बा सुमन॥ छं० ॥ २०३॥

पंचमी सोमवार को पहर रात्रि गए पड़ाव पड़ना।

दूहा। जानि सगुन चहुआन नें। मन भावी सो गत्ति॥
मो न मिटै पर ब्रह्म सौं। ब्रह्म चीत भैभित्त॥ छं० ॥ २०४॥

सामंतों का कहना कि सब ने हटका पर आप न माने।

[1]सह समझि नारंजुलै। सो इच्छिनि मोकल्लि॥
गुरू सज्जन सैसव[2] सु बंध। बरजंतै न्रप चल्लि॥ छं० ॥ २०५॥

सामंतों का कहना कि हमें तो सदा मंगल है परंतु आप हमारे स्वामी हो इस लिये आपका शुभ विचार कर कहते हैं।

रवि मंडल भेदै स [3]फुटि। प्रथम चित्त [4]फुनि होइ॥
[5]तन जंपै भट जोह करि। न्रपहि अमंगल [6]जोइ॥ छं० ॥ २०६॥

(१) ए. कृ. को.- सम। (२) ए. कृ. को.- सैसव्व।
(३) मो.- फुनि। (४) मो.- पुनि।
(५) मो.- नन। (६) ए. कृ. को.- होइ।

प्रातःकाल पुनः चाहुआन का कूच करना। स्वामी की नित्य सेवा और उनका साहस वर्णन।

पद्धरी ॥ चढ़ि चल्यौ राज चहुआन सूर । त्रिमलिय किति रवि प्रात नूर॥
इक एक बीर दह दहति सूर[1] । दैवत्त वाह दुज्जन करूर ॥
छं० ॥ २०७ ॥

तिन सथ्थ पंच भर पंच जित्त । सज्जोति सेन सिरदार इत्त ॥
इक इक्क संग हुअ दुअन दाह । जनु दार पच्छ बाराह राह ॥
छं० ॥ २०८ ॥

सजि चली संग दैविय प्रचंड । उनमत्त[2] रूप कर सजे दंड ॥
सजि चल्यौ संग भैरूं उभंत । सेवक सहाय अरि करत अंत ॥
छं० ॥ २०९ ॥

सजि चले दूय पंचास बीर । कौतक्क कहल मन हरषि धीरं ॥
जुग्गिनिय सट्ठि चव चल्लि संग । किलिकिलत काल सम रमन जंग॥
छं० ॥ २१० ॥

भहराति भीत भूतन जमांति । घहराति घोरि सुर प्रेत पांति ॥
अनि अन्नि इष्ट सबदेव साधि । चल्ले सुमंच जंमनि अराधि ॥
॥ छं० ॥ २११ ॥

अकलंक कंक अनसंक चित्त । रच्चे सु स्वामि सब सेव हित ॥
माया न मग्ग जिन चित्त जाइ । पोइनिय पत्त जल ज्यौं जनाइ ॥
॥ छं० ॥ २१२ ॥

ऐसे जु सित्त सामंत सूर । उनमत्त अंग जनु नदिय पूर ॥
ढलहलिय ढाल मालह सजूर । यम्संत जानि हल्लत षजूर ॥
॥ छं० ॥ २१३ ॥

निरषंत नयन तिय तेज ताप । चढ़ि चल्यौ राज चहुआन आप ॥
सामंत सूर[3] सूरहि नरंभ । दिष्षियै लाज तिन मुष्ष अंभ ॥
॥ छं० ॥ २१४ ॥

(१) ए. क्रूर। (२) ए. कृ. को.- उनमत्ते। (३) ए. कृ. को. सूरद।

सामंत किरनि प्रथिराज सूर। अरि तिमिर तेज कट्टन करूर॥
पूहवी न बीर इन समह कोइ। कवि कहै बरनि जो आन होइ॥
॥ छं० ॥ २१५ ॥

रहि पंड समय भूभार पथ्थ। तिहि काज भयौ अवतार [1]तथ्थ॥
भय अभय चिंति हृद मुषहि जोति। उग्गंत हंस छवि जानि होत॥
॥ छं० ॥ २१६ ॥

इस पड़ाव से पांच योजन चलने पर पृथ्वीराज का कन्नौज की हद मे पहुंचना।

जोजनह पंच गय चाहुआन। पर पुरह जानि उग्गयौ सुभान॥
... .. । .... .. ॥ छं० ॥ २१७ ॥

दूहा॥ पर पुहमी पत्तं सु पहु। उग्ग भान पयान॥
दल वद्दल सद्दल दिसह। पूरन [2]छयत गयान। छं० ॥ २१८॥

एक दिन का पड़ाव करके दूसरे दिन पुनः प्रातः काल से पृथ्वीराज का कूच करना।

उदय हंस सज्जे सगुन। बज्जे अनहद सद्द॥
दिष्यत दरसन परस तप। पुल्ले दस दिस जद्द॥ छं० ॥ २१९॥

प्रभात समय वर्णन।

कवित्त॥ [3]चढ़ि चतुरंग चहुआन। राइ संभरिय सुयंभर॥
सकल सूर सामंत। मंत भंजन समथ्थ वर॥
पर अहंन सम समय। होत सकुन कुल सोरं॥
वज्जि पंचजन देव। सेव अंबर [4]मग ओरं॥
जल पात जात मिल्लि विच्छुरत। रोर अलिन सज्जिन सुषद॥
[5]लंपट कपाट विट चिय तजत। तम चर चर कीनी मुषद॥
छं० ॥ २२० ॥

(१) मो - दिथ्थ। (२) ए. कृ. का.-सयत। (३) ए. कृ. को. चढ़ि चतुरंग चतुरंग।
(४) ए. कृ. को.- मन। (५) मो.-लपट किपाट विट चिय तजन। चम चर चर कीनी भुखद।

पद्धरी ॥ तब सज्जि सुदल्ल विद्दल्ल बिसाल । पूरंन [1]गेन मूरंन [2]भाल ॥
[3]डंबरिय धरनि आरोह गेंन । दिसि विदिसि पवनपरसंत[4] रेन ॥
॥ छं०॥ २२१ ॥

सामंत सूर हैवर अरोहि । आकत्त [5]क्रत्त मलि अगम सोह ॥
हलवीय पीय हलकंत ढाल । दधि झाल पलव बैरष विसाल ॥
॥ छं० ॥ २२२ ॥

हय हींसधरा पुर विहर बाह । तारच्छ सु तन अंतर उलाह ॥
ऐसे सुबीर रिन[6]विषम धार । अरि अंब[7]अचन अग्गथि करार ॥
॥ छं० ॥ २२३ ॥

चतुरांनभान अरि तिमिर तार । मानंत सूरकरिकर प्रचार ॥
दरसंत परसपर सुभट नेन । सौंभंत भंति तन धरिग्ग सेन ॥
छं० ॥ २२४ ॥

विह[8]सत विहाय सथ्थान थान । सतपत्र फुल्लि मिल्लि भ्रमर मान॥
छूटंत गंधि [9]मिल्लि मंद वात । मिल्लि चल्ले भ्रमर परसन्न सुधात ॥
॥ छं० ॥ २२५ ॥

परजंक प्रीय नह तजत प्रौढ़ । नव पंज रंज [?]तल मलत मौढ़॥
सदंत चक्र साहीत बैन। अनुभान मत्त क्रम छंडि सेन॥
॥ छं० ॥२२६ ॥

दिसि विदिसि नयन परमान करंत । रसना रसान हरि वर धरंत ॥
संफटि तमाघ [10]तिमरनि तरार । अंजनह नगर उठि पवन धार ॥
छं०॥ २२७ ॥

संभरिय राय संभरि सु [11]भाम । अवलोक देव बंदन सु राम ॥
.... । .... छं० ॥ २२८ ॥

(१) ए. कृ. को.-गोंन । (२) । ए.-मुंत । (३) मो.- डम्भरि ।
(४) मो. पसंत । (५) ए. कृ. को.-क्रम्म । (६) मो.-निरमले ।
(७) ए. कृ. को.-मो. अचपन । परंतु अक्षर बढ़ता है । (८) ए. कृ. को.-जागि ।
(९) मो.-नल । (१०) ए. कृ. को. नमूनि । (११) मो.-राम, को. कृ.-समान ।

कवित्त ॥ है सजि संभरि राय। चढ़िव चौहान प्रमं मनं ॥
क्रमत मग्ग पिंगलह। मान उदयाम विषंनम ॥
नेंन दरसि दिसि विदिसि। निंद सभगिय पल अंगन ॥
अवलोकित दिन लोक। लोकनर वर है दंगन ॥
दिष्षियै बदन दुलह दुगनि। सदन रंग [1]दुलही क्रमत ॥
बंदेवि पाय निंदे अगुन। फल सुभाव अंबर प्रमत ॥
छं० ॥ २२९ ॥

वन प्रान्त में एक देवी का दर्शन करके राजा का चकितचित होंना।

दूहा ॥ बन सु थान इक देवि मिलि। संग स्वान गन माल ॥
जट विभूति कर कंबयनि। लषि अचिज्ज भूपाल ॥ छं० ॥ २३० ॥

देव का स्वरूप वर्णन।

हनूफाल ॥ जट विकट सिर जट जूट। अव सच्चिय मुद्र विनूट ॥
चरचर्थ्य चरचित अंग। द्रग दिपै लोल सुरंग ॥ छं० ॥ २३१ ॥
गर गुंज गुंथित बंध। बनि सेत नेत सुकंध ॥
सजि पानि तानि कराल। मँग रंग स्वानह माल ॥ छं० ॥ २३२ ॥
रव हक्क गज्जत गन। लघु दिघ्घ चुट्टत बैंन ॥
हिय रत्त स्याम सु थान। कटि नील पीत उरान ॥ छं० ॥ २३३ ॥
भुज गेंन [2]रंग रसाल। कंबु ग्रीव [3]पीत सु आल ॥
अव सेत भ्रूव स भूर। लिल्लाट केसरि नूर ॥ छं० ॥ २३४ ॥
तन रंग नान प्रकार। चर चरनं रंग सु चार ॥
नष नील घन परवान। मुष मुदित दिष्षि त्रपान ॥ छं० ॥ २३५ ॥
कविचंद दीन असीस। हसि जंपि नंमिय सीस ॥
दिषि दंत नील सुरंग। रसना सुरंग दुरंग ॥ छं० ॥ २३६ ॥
सित असित तन के भाव। सुद देव भूतनि राव ॥

(१) मो.-दुल्ली। (२) ए. कृ. को.-रैंन। (३) ए. कृ. को.-पीतल।

राजा का पूछना कि तू कौन है और कहां जाती है।

किन थान सों गम कीन। किन ठौर पर मनदीन ॥ छं० ॥ २३७ ॥

उसका उत्तर देना कि कन्नौज का युद्ध देखने जाती हूं।

सतिजुग्ग मो पित जुद्ध। रन त्रिपुर षंड विरुद्ध ॥
त्रता सु रघुकुल राम। हनि लंक रावन ताम ॥ छं० ॥ २३८ ॥
द्वापुर सु अर्जुनराय। [1]घटवंश घव्यौ घाय ॥
कलिजुग्ग कनवज राज। चहुआन कुल [2]प्रथिराज ॥ छं० ॥ २३९ ॥
अच्छी सु कमधज्ज बंस। जुन्हाइ उद्दर प्रसंस ॥
दिय सुमति ताहि दुसीस। कलिप्रिया नाम सरीस ॥
छं० ॥ २४० ॥
पित पत्ति कल संघार। सम पानग्रहन सु बार ॥
सो चरित दिष्षन काज। सिव हार कंठ समाज ॥ छं० ॥ २४१ ॥
यह जंपि गवन सु कीन। न्रिप चंद हसि रसभीन ॥
.... । . . .... छं० ॥ २४२ ॥

पृथ्वीराज का चंद से अपने सपने का हाल कहना

तिघट तौय माया सरिय। द्रिग लग्गिय तिहि काल ॥
सजि संवेग सु सुंदरिय। रचि शृंगार रसाल ॥ छं० ॥ २४३ ॥

पूर्व की ओर उजेला होना, एक सुंदरी स्त्री का दर्शन होना।

हनूफाल ॥ पहु ओर प्रगटि [3]प्रहास। छिन प्राचि ओर उजास ॥
तिहि समय न्रप द्रग लग्गि। तिन मध्य सुपन सुषग्गि ॥
छं० ॥ २४४ ॥

उक्त सुन्दरी का स्वरूप वर्णन।

छिय नैन सेन विहास। नवरंग नारि इहास ॥
तिहि समय सुभ्रम चंद। मुष अग्ग न्रप बर संद ॥ छं० ॥ २४५ ॥

(१) ए. कृ. को.- घन। (२) ए. कृ. को.-युगराज।
(३) ए. कृ. को. प्रकाम।

कच कुसुमकवरि सुरंग। जनु ग्रसिय [1]इंद उरंग॥
नग मुत्ति सुमन सुभाल। हर रुद्र कालि कपाल॥ छं०॥२४६॥
मधि भाग केसरि [2]आट। हर इंद तिलक लिलाट॥
श्रुत मंडि कुंडल लोल। रथ भान भंग अलोल॥ छं०॥ २४७॥
[3]भुअ बंक धनु सुरराइ। कर अंचि [4]चाय सुचाइ॥
द्रिग दिपत चंचल चार। अलि जुगल कुमुद विहार॥छं०॥२४८॥
नव नासिका सुकनंद। रति बिंब बढ्ढिय अनंद॥
तिन अग्र मुक्ति सु नंद। रस सुक्र ससि नष कंद॥ छं०॥ २४९॥
कल काम आल कपाल। तहं अलक झलकत लोल॥
[5]दुरि रदन दारिम बीज। रव काल कोकिल सीज॥छं०॥२५०॥
बनि चिबुक स्याम सु व्यंद। बसि कुमुदनी अलिइंद॥
कलग्रीव रेष सुभेष। हरि कंज अंगुल [6]तेष॥ छं०॥ २५१॥
करकुसुद अमुद अनूप। जटि रतन रूप सनूप॥
कुच मद्धि हार विराज। हरहार गंग जु राज॥ छं०॥ २५२॥
कटि छीन छवि म्रगराज। पचि भंग पीत समाज॥
रचि और कंचन थंभ। लजि दुरिग कल कल रंभ॥छं०॥ २५३॥
बनि पिंड नारंगि रंग। जनु कनक दंड सुरंग॥
नष चरन बरन अनूप। रवि चंद अंबुज जूप॥ छं०॥ २५४॥
कलहंस गमन विसाल। बरनी सु चंदति काल॥

राजा का उससे पूछना कि तू कौन है और कहां जाती है।

[7]को नाम को तुम मात। को बंध को पित जात॥ छं०॥ २५५॥
जाती सु कोपति थान। किहि आत कुन पयान॥
मो देवि पुर जगनाथ। मो प्रकृति भिन्न अकाथ॥ छं०॥ २५६॥

(१) ए. कृ.-इन्द्र। (२) ए. कृ. को.-आइ।
(३) मो.- भुव बंक धनुष सु राह। (४) कृ. ए. चाय।
(५) ए. कृ. को. रद कनक। (६) ए. कृ. भेष, को. नेक।
(७) मो. को को नाम तम तात को बंध को पित मात॥

उस सुन्दरी का उत्तर देना।

गाथा॥ पयं पीयं गत नयं। घट्ट कट्टंति हृरयं॥
भरता पित कुल बद्धं। स्रापं सुमंतयो मुनी॥ छं०॥ २५७॥
कलह प्रिया मो नामं। मंजु घोषापि रंभया सोरं॥
समरस्य अग्य समये। प्रछन्नं कथितं मया॥ छं०॥ २५८॥

कवि का कहना कि यह भविष्य होनहार का आदर्श दर्शन है।

दूहा॥ पल प्रगट्टि कवि चंद सों। कह्यौ कौन इह भाव॥
कह्यौ जु इह ह्वै है अवसि। सुन डंकिनिपुर राव॥ छं०॥ २५९॥

भविष्य वर्णन।

कवित्त॥ कहर कंक कल कलिय। भार फनिमन कर भज्जिय॥
सजिय सेन चहुआन। किन्न कारन अरि कज्जिय॥
अप्प अप्प सजि इट्ठ। चलै जैचंद सभानन॥
बर अप्पन चौसट्ठि। करह सो कर दैवानन॥
रुधि गहन पच दारुन दिवहि। चंद भट्ट आसिष्य दिय॥
सुर करिय किंत्ति भय भीत भर। करन रुत्त आगम कहिय॥
छं०॥ २६०॥

चिहुर बंध बंधियहि। काल षड्डियहि कुलाहल॥
... . । .. ... ॥
अधर पाइ धर धरनि। कंठ रुधि पियै सु नड्डिय॥
मनो पुज्ज प्रति पाउ। पच पचन उरि लड्डिय॥
संजोग व्याह विध जोग सुनि। चलत राह उद्यान मग॥
रन राग रंग पचन भरन। दुर्गति रूप दानव सु द्रग॥छं०॥२६१॥

देवी का पृथ्वीराज को एक बाण देकर आप अलोप होजाना।

एन बान असुरान। भिरन महिषासुर भग्गिय॥
एन बान राषिसन। राम रावन्न उछग्गिय॥

(१) ए. कृ. को. जुध।

एन बान कौरव समथ्थ। पथ्थ भर करन पछारिय॥
एन बान संकर सुभग्ग। त्रिपुरारि सु पारिय॥
इन बान पराक्रम बहु करिय। सजिय हथ्थ चहुआन वर॥
इन बान मारि पंगुर पिसुन। करन कंक चल्लौ कहर॥छं०॥२६२॥

पृथ्वीराज को शिवजी के दर्शन होना और शिवजी का राजा की पीठ पर हाथ देकर आशीर्वाद देना।

चलत मग्ग चहुआन। भान सम देषि भयंकर॥
गिर तरु लग्गिय गेन। घलन षंडन तरु षंषर॥
वैल गैल जट जूट। पिट्ठ तठ काम विराजै॥
गंग उदक उच्छरै। सार चंमर सिर राजै॥
जब चष्प पिष्प चौहान भट। तब उत्तरि सब भरनि भर॥
पेपंत पाइ दुज्जन दुसह। धर्यौ पिट्ठ सवि अप्प कर॥छं०॥२६३॥
उदक गंग विभ्भूत। अंग सारंग सुरंगह॥
वरन अनंत मन हरत। निरषि गिरजा मन रंजह॥
करी चर्म गरलइ विक्रंम। रष्षिस उर दाहन॥
द्रिग्ग चयन ज्वाला वयन्न। कंद्रप्प न मानह॥
तरु तरुन तार त्रिय वर बसहु। रिसहु सच्च चहुआन रषि॥
भरि भूत धूत दिढ्ढिय पिथह। लिय अग्या सिर नाइ सिष॥
छं० ॥ २६४ ॥

पुनः पृथ्वीराज का पयान वर्णन।

दूहा॥ चले राहु पहु फट्टतें। सत सामंत सुराह॥
मनों पथ्थ भारथ करन। दल कौरव धरि दाह॥ छं० ॥ २६५॥

कन्ह को एक ब्राह्मण के दर्शन होना। उसका कंन्ह को असीस देकर अन्तर्ध्यान होना।

कवित्त॥ दुज 'उद्धो दल नाह। प्रवल तन जोति प्रगासिय॥
मुष विद्धी भर कन्ह। मानि अप्पन मन भासिय॥

(१) ए. कृ. को.-उम्भौ।

द्रग पट्टिय छुटि पट्ट । लग्यौ उद्योत उरानह ॥
भान रूप भज नाह । दिष्ष नागजी [1]दानह ॥
लगि पाय धाय कर पिट्ठ दिय । मम संके जुद्धह निपुन ॥
फिरि तथ्थ विप्र नह [2]पिष्षयौ । तुम हम मंडल रवि मिलन ॥
छं० ॥ २६६ ॥

हनुमान जी के दर्शन होना ।

चलिय अग्ग चहुआन । एक जोजन ता अग्गिय ॥
घटा रूप घन मज्जि । निजरि ता ताहि न लग्गिय ॥
जीह वीज विकराल। धजा घन वद्दल रंगिय ॥
हथ्थ गदा सोभंत । भूत प्रेतह ता संगिय ॥
सामंत राज पिष्षिय सलष । हनूमान चंदह कहिय ॥
बाजंत नद्द विधि विधि वसुह । चह सुवज्जि चंबक दहिय ॥
छं० ॥ २६७ ॥

कविचन्द का हनुमान जी से प्रार्थना करना ।

दूहा ॥ चंद गयौ अग्गें सुवर । तीतन रूप अथाह ॥
हम मानुष्षी मति अधम । करहु रूप कल नाह ॥ छं० ॥ २६८ ॥

लंगरीराव का सहस्राबाहु का दर्शन और आशीर्वाद देना ।

कवित्त ॥ सहस हथ्थ सोहन्त । धूम्र ब्रन्नह मुष मग्गह ॥
अंषि तेज अगि जानि । पानि पलचर [3]ता संगह ॥
धनुष धजा फररंत । हथ्थ डंकिनि फिकारैं ॥
जैं जैं मुष उचरंत । सिंह वह वर बक्कारैं ॥
लंगोट बंध काया प्रचंड । लोहालंगर समुष करि ॥
धारंत हथ्थ मथ्थें धरिय । सासु पंष मथ्थें सुहरि ॥ छं० ॥ २६९ ॥

गोयन्दराय को इन्द्र के दर्शन होना ।

जोजन तीन जंलङ्घि । राय गोयंद सु भारिय ॥
आप इष्ट तन सिद्धि । इन्द्र इंद्रासन धारिय ॥

(१) ए. कृ. को.-दीनह । (२) ए. कृ. को. दिष्षई । (३) ए. कृ. को.-ता रंगह ।

एक कोस आकंप। भद्र जाती उज्जल तन ॥
सहस दंत सित हथ्थ। मनो राका जोतिंबन ॥
विंमान देव बहु जटित मय। चमर छत्र अच्छरि चलिग ॥
गोयंदराव सिर हथ्थ दिय। कहिय तुझ्झ हम ग्रह मिलिग ॥
॥ छं० २७० ॥

एक बावली के पास सब का विश्राम लेना। कवि को देवी का दर्शन देना।

विबर एक वट मंझ। तास मझ्झह कंदल ग्रह ॥
भान तेज [1]झलकंत। आय सेना उत्तरि [2]सह ॥
चंद गयो चलि अग्ग। देवि पूजा घन विद्धिय ॥
वग्घ रूप आरोहि। आय उभ्भी हर सिद्धिय ॥
मम करहि चंद अंदेस मन। लेय राज संजोगि ग्रहि ॥
चौसट्ठि सुभर भेटें सुहरि। जय जय करि अपछरि वरहि ॥
छं० ॥ २७१ ॥

दूहा ॥ चयत दिवस चय जामिनिय। चयत जाम फल उन्न ॥
जाजन दुक्कत संचरिग। प्रथीराज संपन्न ॥ छं० ॥ २७२ ॥

समस्त सैनिकों का निद्रागस्त होना और पांच घड़ी रात से चल कर शंकरपुर पहुंचना।

कवित्त ॥ बार सोम पंचमी। जाम एकह निसि विम्मिय ॥
के दुब्बल वर पट्ट। तहां उत्तरि पहु रत्तिय ॥
करि अस्तुति सब सथ्थ। अस्व तजि नींद सु ग्रासं ॥
घटी पंच निसि सेष। सु पहु चढ़ि चल्यौ तासं ॥
पत्तो सु जाइ संकरपुरह। दिवस अंत वर थान नय ॥
आहारि अन्न आसन्न मय। सब बोले सामंत तय ॥ छं० ॥ २७३ ॥

(१) को.- झलंत। (२) ए. कृ. को. तहां।

राजा का सामंतों से कहना कि मैं कन्नौज को जाता हूं बाजी तुम्हारे हाथ है।

इह जंपिय प्रथिराज। करिव अस्तुति सामंतं ॥
धरि छद्म कविचंद। महल [1]पिष्षन मन संतं ॥
अब आनौ सुध समै। तुमै सब काम सुधारौ ॥
मो चिंता मन मांहि। होइ[2] तुमतें निसतारौ ॥
संभलत सब्ब सामंत मत। भयौ बीर आभासि तन ॥
चिंतिय सु इह अप्पान अप। आश्रम्में सव्वां सुमन ॥
छं० ॥ २७४ ॥

दूहा ॥ बयति जांम बासुर विसरि। घटिग हंस तन गात ॥
जु कुछु चषष इच्छा हुती। सोइ दिष्षौ परभात ॥ छं० ॥ २७५ ॥

कवित्त ॥ कहै राज प्रथिराज। [3]श्रमित सामंत सुरेसं ॥
मो चिंत्यौ तुम कंध। सुनौ कारन क्रत एसं ॥
चितिया दिन बाईस। कोस चोवीस चवथ्थौ ॥
षट चौसह पंचमी। तीस अठ षष्टि सपथ्थौ ॥
जोजन्न उभय कनवज्ज कहि। इन थानक कमधज्ज अगि ॥
देषनह पंग अभिलास अति। कृत्य सब्ब तुम कंध लगि ॥छं०॥२७६॥

पृथ्वीराज प्रति जैतराव के बचन कि छद्मवेष में आप छिप नहीं सकते।

कवविका ॥ बद्दल चंद किरन्न। छिपै नन सूर छांह घन ॥
भूपति छिपै न भोग। रंक नन छिपत बसन तन ॥
नाह नेह नह छिपत। छिपै नन पुहप बास तर ॥
कुलट *कुटंब न छिपै। छिपै नन दान अधर धर ॥
छिप्पै न सुभर जुद्धह समै। चतुर पुरष कवितह कह्या ॥
पंमार कहै प्रथिराज सुनि। तू न छिपै छग्गर गह्या ॥छं०॥२७७॥

(१) ए. कृ. को.-दिष्षन। (२) ए. लम।
(३) ए. कृ. को.-सब्ब। * कुटंग

सामंतों का कन्नौज आकर जयचन्द का दरबार देखने की अभिलाषा में उत्सुक होना।

दूहा ॥ करि अस्तुति सामंत न्रप। जंपि विगति रति बत्त ॥
उतकंठा दिष्षन नयन। कमधज राज दरत्त ॥ छं० ॥ २७८ ॥

मुख्य सामंतों के नाम और उनका राजासे कहना कि कुछ परवाह नहीं आप निर्भय होकर चलिए।

पद्धरी ॥ सुनि तहां सभा ए राज बेंन। उभभरे [1]रोम लग्गे सु गेंन ॥
अप्पानि अप्प [2]दैवत्त चिंत। संमान सुचित चिंते सुचिंत ॥
छं० ॥ २७९ ॥

मंड्यौ सुराज दीवान राज। जानै कि देव देवन समाज ॥
बैठे सु कन्ह गोयंदराज। पज्जून सलष निड्डर समाज ॥
छं० ॥ २८० ॥

पुंडीर चंद तुंवर पहार। जामानिजद्द आजान बार ॥
पंमार सिंह लष्षन बघेल। चहुआन अत्ताई अभंग ॥
छं० ॥ २८१ ॥

बलिभद्रराइ षीची प्रसंग। गुज्जरह कनकरामह अभंग ॥
अनि अन्नि सूर सामंतरेस। बैठ स राज आवरि अर्थ्रेस ॥
छं० ॥ २८२ ॥

हक्कारि चंद बरदाइ ताम। उध्यान मान वर जथ्थ ठाम ॥
इह जंपि राज भर सुमत संम। दिष्यौ सपंग [3]दीवान तंम ॥
छं० ॥ २८३ ॥

क्रत काल कव्य लय पान वीर। अवलोकि पंग भर सुभर तीर ॥
सब महिल वरित अन अन्नि रंच। अंधव तंम सोभानि संच ॥
छं० ॥ २८४ ॥

दूहा ॥ [4]विहसि सुभर विकसे सुमन। न्रप न करहु अंदेस ॥
धनि धनि मुष जंपिहु विनय। दिष्षहु महल नरेस ॥ छं० ॥ २८५ ॥

(१) मो.-रोम। (२) मो.-दैवान।
(३) ए. कृ.-पंग। (४) ए. विहरि।

तुच्छ निद्रा लेकर आधीरात्रि से पृथ्वीराज का पुनः कूच करना

मानि मंत सामंत । राज सुष सेन विचारिय ॥
भूम सेज सुष सयन । गंग मंडल वर धारिय ॥
घटिय पंच जुग अग्ग । तलप अलपह आनंदति ॥
फुनि चढ़ि चल्यौ राज । पुरह संकर सानंदति ॥
सुनियै निसान ईसान घन । जनु दरिया पाहार गुरि ॥
निस अद्ध घरिय ऊपर चतुर । पंग सु उत्तरि गंजि धर ॥
छं० ॥ २८६ ॥

दूहा ॥ चढ़त राज चहुआन निस । घोर सपंग निसान ॥
जान कि मेघ असाढ़ सम । उठिय घोर दरसान ॥छं०॥२८७॥
चलत मग्ग संभरि सपहु । सुर बज्जे सहनाइ ॥
रस दारुन भय संचरिग । घोर गंभीर विभाइ ॥ छं० ॥ २८८ ॥

कवित्त ॥ [1]घटिय च्यार उप्परह । अद्ध जामनिय जरत तम ॥
चढ़िग राज संभरि नरेस । सामंत सकल सम ॥
देवगुरू सत्तमी । अस्वनि अभि जोग प्रमानह ॥
चलत मग्ग अहुआन । [2]गंग मंडल वर थानह ॥
अग्गह सुभट्ट मारग सुमग । कहत कथा जाह्नविय ॥
कलमल बिछाह तन होत जल । जाल बाल चूरन [3]कविय ॥
छं० ॥ २८९ ॥

पृथ्वीराज का कहना कि क़न्नौज निकट आया अब तुम भी वेष बदल डालो।

वचनिका ॥ राजा सामंतन सौं बोल्यौ । हूं पंगुरे कौ दिवान देषन चल्यौ॥
प्रगट रूप सरूप [4]दुराओ ॥ और सरूप करि साथ आओ ॥
ऐसो कहत सामंतन मानी । सो निसा जुग एक बराबरि जानी ॥

(१) मो.-वरिय । (२) मो.-गगन मंडल वर भानह ।
(३) ए. कृ. को. करिय । (४) ए. कृ. को.-दुरावौ आवौ ।

सामंतों की तैयारियां और वह प्रभात वर्णन।

पद्धरी॥ चंपौ सुभोमि कनवज्ज जाइ। टमगुनौ सूर बर चढ़त भाइ॥
उच्चर्‌यौ भट्ट कविचंद सथ्थ। दीसई राज रवि सम समथ्थ॥
छं० ॥ २९० ॥

जिम जिम सु निकट कनवज्ज आय। डरपहि न सूर तिम तिम हढ़ाय॥
ओपंम चंद जंपी सुराय। बल बंधि पीय संगम दिढ़ाय॥*
छं० ॥ २९१ ॥

उत्तरिय चित्त चिंता नरेस। बेतरहि सूर सुरलोक देस॥
इक कहत लेंहि बल इंद्र राज। जस-जियन मरन प्रथिराज काज॥
छं० ॥ २९२ ॥

कर करहिं सूर अस्नान दान। बर भरत सूरसुनि क्रन निसान॥
सरवरिय माल बंछहित भांन। मुध बाल जेम इच्छत विहान॥
छं० ॥ २९३ ॥

गुरु दयत उदित म्रित मुदित इत्त। झलमलिग तार तरु हलिग पत्त॥
देषियत इंद किरनीन मंद। उदिमह हीन जिम न्रपति चंद॥
छं० ॥ २९४ ॥

धरहरिग [1]चित्ति सुर [2]मुद्द मुंद। उप्पज्जौ जुद्ध आवद्ध दुंद॥
पहु फटिग घटिग सर्वरि सरीर। झलकंत कलस दिषि गमन नीर॥
छं० ॥ २९५ ॥

बिरहीन रैंनि छुट्टि [3]मित मान। नष्षंत तोरि भूषन प्रमान॥
असुवंत अंसु उस्सास आइ। बिरहीन कंत चंदहु बुलाइ॥
छं० ॥ २९६ ॥

पह फट्टि घट्टि भूषननि बाल। दिसि रत्त दरसि दरसी कसाल॥
[4]न्रिप भ्रंमि गंग सब पुब्ब देस। आरब्भ अरिन उत्तरि नरेस॥
छं० ॥ २९७ ॥

---

* ए. कृ. को.-बल बंधि पिय संग दिन दिढाय। आपम चंद जानी समाय।

(१) ए. कृ. को.-वित्त। (२) ए. कृ. को. सद्द।

(३) ए. कृ. को.-नमाति। (४) को.-नृप भूमिग जानि यह पुब्ब देस।

न्रप भ्रमिग जानि इह पुब्ब देस। अरि नयर [1]नीर उत्तर कहेस ॥
हर सिद्ध दिद्ध कनवज्ज राव। तिन बक्यौ अंग धर भ्रंम चाव ॥
छं० ॥ २९८ ॥

दूहा ॥ पह फट्टिय घट्टिय तिमिर। तमचुरिय कर भान ॥
पहुमिय पाय [2]प्रहारनह। उदोहोत असमान ॥ छं० ॥ २९९ ॥
रत्तंबर दीसै सुरबि। किरन परष्पिय लेत ॥
कलस पंग नहिं होय यह। बिय रबि बंध्यौ नेत ॥छं०॥३००॥

सब का राह भूलना परंतु फिर उचित दिशा बांधे कर चलना।

रवि तंमुह संमुह [3]उद्यौ। इह है मग्ग समुभिझ ॥
भूल्लि भट्ट पुब्बह [4]चाल्य। कहि उत्तर कनवज्ज ॥ छं० ॥ ३०१ ॥
कंचन फूलिय अर्क बन। रतनह किरनि [5]प्रसार ॥
सु अ कलस जयचंद घर। संभरि संभरिवार ॥ छं० ॥ ३०२ ॥

पास पहुचने पर पंगराज के महलों का देख पड़ना।

कवित्त ॥ एह कलस कवि चंद। दंद मंड्यौ सुष रव्विय ॥
जग उप्पर जगमगत। [6]भूल्लि कैलासह छव्विय ॥
जगत पत्ति जग धज्ज। षग्ग कमधज्ज बांहबर ॥
दान षग्ग अनभंग। धजा बिय दान बंधि पर ॥
आभंग अवंग कनवज्ज पति। सुष नरिंद [7]दुनि इंद बर ॥
पाइये बंस छत्तीस तहाँ। नवै रस्स षट भाष गुर ॥छं०॥३०३॥

कन्नौज पुरी की सजावट और सुखमा का वर्णन।

दूहा ॥ गंगा तट साधन सकल। करहि जु भंति अनेक ॥
नट [8]नाटिक संभरि धनी। बर विष्यात छबि केक ॥छं०॥३०४॥

(१) मो.-जानि। (२) ए. कृ. को.-प्रहारनल, पहार नर।
(३) ए. कृ. को.-उचौ। (४) ए. कृ. को. चल्यौ।
(५) ए. कृ. को.-प्रचार। (६) ए. कृ. को.-ईस कैलास भुल्लि छवि।
(७) ए. कृ. को.-दुति। (८) ए. कृ. को.-नागर।

भुजंगी ॥ कहूं संभरे नाथ थट्टे गयंदा। मनं पिष्षियै रूप ऐराप इंदा ॥
कहूं फेरिछिंत भूप अच्छे तुरंगा। मनों प्रब्बतं बाय बट्टे कुरंगा ॥
छं० ॥ ३०५ ॥

कहूं मल्ल भूदंड ते [1]रोस साधैं। तिकै मुष्टिकं जोर चानूर बाधैं ॥
कहूं पिष्षि पाइक्क बानैत बाधैं। नवें इंद्र [2]आहस कै बज्र माधैं ॥
छं० ॥ ३०६ ॥

कहीं विप्र उठ्ठंत ते प्रात चल्ले। कहूं देवता सेवते स्वर्ग भुल्ले ॥
कहूं जग्य जापन्न ते राज काजैं। कहूं देवात देव नित्यान साजैं ॥
छं० ॥ ३०७ ॥

कहूं तापसी तप्प ते ध्यान लागै। तिनं दिष्षियै रूप संसार भागै ॥
कहूं षोड़सा राय अप्पंत दानं। कहूं हेम सम्मान प्रथ्वी समानं ॥
छं० ॥ ३०८ ॥

कहूं बोलही भट्ट छंदं प्रमानं। कहूं [3]औघटं बीर संगीत गानं ॥
कहूं दिष्षि सिद्धं लगी तारि भारी। मनों नैर प्रातं कपाटं उघारी ॥
छं० ॥ ३०९ ॥

कहूं बाल गावैं विचित्रं सुग्यानं। रहै चित्त मोहन्न डुल्लै न [4]पानं ॥
इत चरित पेषंत ते गंग तीरे। स्वयं देषतें पाप नट्ठे सरीरे ॥
छं० ॥ ३१० ॥

पृथ्वीराज का कवि से गंगा जी का माहात्म पूछना।

दूहा ॥ कह महंत दरसंन तिन। कह महत तिन न्हान ॥
कह महंत सुमिरंत तिन ; कहि कविचंद गियान ॥छं०॥३११॥

कवि का गंगा जी का महत्व वर्णन करना।

गाथा ॥ जो फल नीरह नयनं। जो फल गुनी गाइयं गेयं ॥
साइ फल न्हात सरीरं। सोइ फल पीयंत अंजुलं नीरं ॥
छं० ॥ ३१२ ॥

(१) मर्गो। (२ ए. कृ. को.-आसेह।
(३) ए. कृ. को.-देवान। (४) मो.-औपटं।
(५) ए. कृ. को.-प्रानं। *छन्द ३१२ मा.-प्रीते में नहीं है।

जं जय भाव सु बुद्धं। तं तं कहियंपि सुंदरी कथ्थं ॥
मह्हिलान बाल अच्छं। सामं घनं सोभियं सारं ॥ छं० ॥ ३१३ ॥

पुनः कवि का कहना कि गंगास्नान कीजिए।

अरिल्ल ॥ जं तं न्हान महातम जानौं। दरसन तंत महंत बषानौं ॥
सुमिरन पाप हरै हर गंगे। सो प्रभु आज परस्सहु अंगे ॥छं०॥३१४॥

सब सामंतों सहित राजा का गंगा तीर पर उतरना।

कवित्त ॥ अंबुज सुत उमया विलोकि। वेद पढ़त षलि बीरज ॥
सहस बहत्तरि कुँअर.। उपजि भीज़ंत गंगा रज ॥
आभूषण अंबर सुगंध। कवच आयुध रथ संतर ॥
रविमंडल के पास। रहत चौकी सु निरंतर ॥
चहुवांन चमूं तिन समर जत। सु कविचंद ओपम कथिय ॥
सामंत सूर परिगह सकल। उतरि तट्ट भागीरथिय ॥छं०॥३१५॥

कवि का गंगा के माहात्म्य के संबंध में एक पौराणिक कथा का प्रमाण देना।

साटक ॥ सोरंभं कमलं तज्यों न मधुपं, मध्ये रह्यौ संपुटं ॥
सो लैजाय सरोज संकर सिरं, चढ़ाइयं अच्छरी ॥
सिंघं तंत स उप्परं घट भरं, गंगा जलं धारयं ॥
बारं लग्गि न चंद कव्वि कहियं, संभू भयौ छप्पयं ॥ छं०॥३१६॥
इक्कं मृग्ग पियंत नीर डसियं, काली समं पंनगं ॥
साई व्यालय मृगछालय बही, शृंगी बही सुरसुरी ॥
धारे रूप पसूपती पसु तहां, भागीरथी संगती ॥
*आनंदी दुज बैल लैन क्रमियं, कैलास ईसं दिसं ॥छं०॥३१७॥

राजा का गंगा को नमस्कार करना, गंगा की उत्पत्ति और माहात्म्य वर्णन।

दूहा ॥ हो सामंत सुमंत कहु। सु हरि चिंति तजि बाज ॥

*"३११ से ३१७ तक ये छंद मो. प्रति में नहीं है।

त्रिपथ लोक प्रथिराज सुनि । नमसकार करि राज ॥छं०॥३१८॥

कवित्त ॥ पाप मनंमथ हरन । गंग नव बंध अनै पर ॥
हरि चरनन करि जनम । काम छंडै सु दुष्य बर ॥
तीन लोक भर भवन । तहां प्राक्रंम सु थानन ॥
निगम न हरि उर धरौ । भ्रम्म तट काय प्रमानन ॥
वंछहि सु चतुर नर नाग सुर । दुति दरसन परसन [1]विहर ॥
[2]ढिल्लीवनाथ सो गंग दिषि । जस सम उज्जल बसु अपर ॥छं०॥३१९॥

साटक ॥ ब्रह्मा कष्य कमंडलं कलिकले, कांताहरे कंकवी ॥
तं तुष्टा त्रयलोक संपद पदं, तंबाय मह्हसंनवी ॥
अघ काष्टं ज्वलने हुतासन हवी, अध विष्णु आगामिनी ॥
जजाल जग तार पार करनी, दरसाय जाह्नवी ॥ छं० ॥ ३२० ॥

अरिल्ल ॥ ब्रह्मा कमंडल तें कल गंगा । दरसन राज भयौ दिवि संगा ॥
तामस राजस धरि उर पारह । [3]सातुक उदक गंग मझ्झारह ॥
छं० ॥ ३२१ ॥

दूहा ॥ अस्तुति कहि बरदाय बर । पढ़िय कवींद्र विचार ॥
सो गंगा उर जंपई । क्रम उत्तारन पार ॥ छं० ॥ ३२२ ॥

जैचन्द की दासी का जल भरने को आना।

वचनिका ॥ राजा दल पंगुरे की दासी गंगोदक भरन आनि ठाढ़ी भई ॥
चंद कह्यौ राजा इह काम तीरथ मुगति तीरथ हथलेवा मिलत है॥

कवि का दासी पर कटाक्ष करना।

दूहा ॥ जरित रयन घट सुंदरी । पट कूरन तट सेव ॥
मुगति तिथ्थ अरु काम तिथ । मिलहि. हथह हथ लेव ॥छं०॥३२३॥

काव्य ॥ उभय कनक सिंभं भृंग कंठीव लीला । पुहप पुनर पूजा विप्रवे कामराजं॥
त्रिवलिय गंग धारा मद्धि घंटीव सबदा । मुगति सुमति भौरे नंग रंगं त्रिवेनी॥
छं० ॥ ३२४ ॥

(१) ए. कृ. कां.-विहर । (२) ए.-ढिल्लीच ।
(३) ए.-सादुक ।

दूहा ॥ रहसि केलि गंगह उदक। सम नरिंद किय केलि ॥
चिरन चिभंगी छंद पढ़ि। चंद सु पिंगल मेलि ॥ छं० ॥ ३२५ ॥

गंगाजी की स्तुति।

चिभंगी ॥ हरि हरि गंगे तरल तरंगे अघ छित भंगे छित चंगे।
हर सिर परसंगे जटनि बिलंगे विहरति दंगे जल जंगे ॥
गुन गंध्रव छंदे जै जै बंदे छित अघ कंदे मुष चंदे।
मति उच्च गति मंदे दरसत नंदे पढ़ि वर छदे गत दंदे ॥
छं० ॥ ३२६ ॥

बपु अपु बिलसंदे जभ भृत जंदे सुर धुनि नंदे कह गंदे।
.... । .... ॥
षिति मति उर मालं मुगति विसालं विर धुत कालं सद कालं।
हिम रिति प्रतिपालं सुर तट तालं हर छर नालं विधिवालं ॥
छं० ॥ ३२७ ॥

दरसन रस राजं सुमरित साजं जय जुग काजं भय भाजं ॥
अंमर छर करिजं चामर वरिजं वर बहु पाजं सुर साजं ॥
[1]अंमर तरु मंजरि निय तन अंजरि बर बर रंजरि चष पंजरि ॥
करुना रस मंजरि जनम पुनंगिरि हसि हसि संकरि सासंकरि ॥
छं० ॥ ३२८ ॥

कलिमल हरि मंजन भव भ्रत भंजन जन हित संजन अरि गंजन ॥
.... । .... ॥ छं० ॥ ३२९ ॥

दूहा ॥ हरि जस जिम उज्जल सजल। तरल तरंगति अंग ॥
पाप बिडारन अंग तें। भ्रंम तरुन्नि विहंग ॥ छं० ॥ ३३० ॥

राजा का गंगा स्नान करना।

बचनिका ॥ राजा षीरोदक पहिर स्नान कर्‌यौ।
तब चंद बहुरि और अस्तुति करत है ॥

कवि का पुनः गंगा जी की स्तुति करना।

(१) ए.-अमरत।

भुजंगी ॥ तिके दिष्षियै गंग चिहु पास बालं । तहां उप्पमा चंद जंपै बिसालं
अरै कामनाथं दया गंग आई । मनों हार धारी रती तत्त छाई ॥
छं० ॥ ३३१ ॥

भरै घट्ट भारं घटं नीरझाई । तहा चंद बंदी सु ओपम्म पाई ॥
ग्रसे चंद कुंभं करं इंद दंदं । मनों विश्व पारीर भेंटै फुनिंदं ॥
छं० ॥ ३३२ ॥

करै बाल अस्नान सोभै प्रकारं । तहां चिंतियं चंद ओपंमभारं ॥
चमक्कंत लक्कं सु कप्पोल सोहै । मंनों उट्टितम चंद कै पास रोहै ॥
छं० ॥ ३३३ ॥

झलक्कं कनक्कं कलस्संत नीरं । मनों सज्ज सथ्थै सुपंतीज सीरं ॥
दिष्यै गंग तट्टं कहै कव्वि कथ्थं । किधों मुगति तिथ्थं किधों काम तिथ्थं ॥
छं० ॥ ३३४ ॥

कविचन्द का उस दासी का रूपलावण्य वर्णन करना।

चंद्रायन ॥ दिष्यौ नगर सुहावो कवियन इह कहै ।
चप चंचल तन सुद्ध जु सिद्धति मन रहै ॥
कंचन कलस झकोरति गंगह जल भरै ।
सु कविचंद वरदाय सु ओपम तहँ करै ॥ छं० ॥ ३३५ ॥
चपतिष्षी वरबाल बाल मति सहस वर ।
आप मनोरथ करै कवींद्रति मंडिनर ॥
सहज तमारि स फुल्लि अलिन ग्रीवाति मन ।
मधुसहज्ज वरषंत विहंगन सूर नन ॥ छं० ॥ ३३६ ॥

संक्षेप नख सिख वर्णन।

कवित्त ॥ राह चंद इकलास । पास कोवंड कुरंगा ॥
कीर बिंबफल जुगल । उभय भूतेस अनंगा ॥
मृग्गराज गजराज । राज पिष्षिय एकंतं ॥
पुच्छि तांम कविराज । कहा इह अचरिज वत्तं ॥

(१) ए. कृ. को. सुगति ।

बरदाइ ज्वाब दीनौं बहुरि । निरषि तट गंग दासि तन ॥
थांनक प्रताप जयचंद के । वैरभाव छंडियं सु इन ॥ छं० ॥ ३३७ ॥

दासी के जल भरने का भाव वर्णन ।

दूहा ॥ दिग चंचल चंचल तरुनि । चितवत चित्त हरंति ॥
कंचन कलस झकोरि कैं । सुंदरि नीर भरंति ॥ छं० ॥ ३३८ ॥

जल भरती हुई दासी का नख सिख वर्णन ।

लघुनराज ॥ भरंति नीर सुंदरी । सु पांनि पत्त अंगुरी ॥
कनक्क बंक ऐ जुरी । तिलग्गि कट्टि ऐहरी ॥ छं० ॥ ३३९ ॥
सुभाव सोभ पिंडुरी । जु मेन चिचढी भरी ॥
सकोल लोल जंघया । सुनील कच्छ रंभया ॥ छं० ॥ ३४० ॥
कटिंत सोभ मंसुरी । बनी जु बांन केसरी ॥
अनंग छवि छत्तियां । कहतं चंद वत्तियां[2] ॥ छं० ३४१ ॥
दुरांइ कुच्च उभ्भरे । मनो अनंग ही भरे ॥
रुलंत हार सोहए । विचित्र चित्त मोहए ॥ छं० ॥ ३४२ ॥
उठंत हथ्थ अंचले । रुलंत मुत्ति सजले ॥
कपोल लोल उज्जले । लहंत मोल सिंघले ॥ छं० ॥ ३४३ ॥
अरद्ध अद्ध रत्तए । सुक्कील कीर वत्तए ॥
सुहंत दंत आलिमी । कहंत बीय दालिमी ॥ छं० ॥ ३४४ ॥
गहंग कंठ नासिका । बिनाग राग सासिका ॥
जुभाय मुत्ति सोभए । दुभाय गंज लोभए ॥ छं० ३४५ ॥
दुराय कोय लोचने । प्रतष्य काम मोचने ॥
अवद्ध ओट भोंह ए । चलंत सोंह सोहए ॥ छं० ॥ ३४६ ॥
लिलाट राज आड़ ए । सरद्द चंद लाजए ॥
.... ॥ छं० ॥ ३४७ ॥

(१) ए. कृ. को.-मंडिय । (२) ए. कृ. को.-रत्तियां ।

पृथ्वीराज का कहना कि क्या इस दासी को केश हैं ही नहीं।

दूहा ॥ हसि प्रथिराज नरिंद कहि। कवि चुक्को अंदेस ॥
पंग दास आचिज्ज इह। बाल बरनि बिन केस ॥ छं० ॥ ३४८ ॥

कवि का दासी के केशों की उपमा वर्णन करना।

ढिल्ली मुह अलि की लता। श्रवन सुनहु चहुआन ॥
जनु भुजंग संमुष चढ़ै। कंच न षंभ प्रमान ॥ छं० ॥ ३४९ ॥

कवि का कहना कि यह सुंदरी नागरी नहीं वरन पनिहारिन है।

[1] रहि रहि चंद म गव्व करि। करहित कवित विचारि ॥
जे तुम नयर सुंदरि कही। सह दिष्षिय पनिहारि ॥ छं० ॥ ३५० ॥

गाथा ॥ जे जंपी कविराजं। साजं सुष्षाय कित्तियं बलयं ॥
तिरए छित्ति समस्तं। जानिज्जे भूलयो कव्वी ॥ छं० ३५१ ॥

कन्नौज नगर की गृह महिलाओं की सुकोमलता और मर्य्यादा का वर्णन।

दूहा ॥ जाह्नवी तट दिषि दरस। रूपरासि ते दासि ॥
नगर सु नागर नर घरनि। रहहिं अवास अवास ॥ छं० ॥ ३५२ ॥
ते दरसन दिनयर दुलह। निय मंडन भरतार ॥
सुह कारन विह निरमई। दुह कत्तरि करतार ॥ छं० ॥ ३५३ ॥
पाव न धरनि परट्टियै। उंच थांन जे बाल ॥
कै रवि देषत सतघननि। कै मुष कंत विसाल ॥ छं० ॥ ३५४ ॥
कुवलय रवि लज्जा रहसि[2]। रहि भगि भंग सरन्न ॥
सरस वृद्धि हंनन कियौ। दुल्लह तरुन तरुन्न ॥ छं० ॥ ३५५ ॥

उनके पतियों की प्रशंसा।

गाथा ॥ दुल्लह तरुनिति मुष्षं। घन दीहंति ईस सेवायं ॥

---

(१) ए. कृ. को.-रहहि चन्द मम गर्व करि।　　(२) ए. कृ. को.-विहसि।

जानिज्जै मन[1] अप्पं । [2]प्रीतमयं तप्प अधिकायं ॥ छं० ॥ ३५६ ॥

कन्नौज नगर की महिलाओं का सिख नख श्रृंगार वर्णन ।

दूहा ॥ पुनर मंडि जनमेज जगि । पित अरि कुल दइ अग्गि ॥
भग्गि शेषकुल शेष रहि । रहि त्रिय पीठनि लग्गि ॥छं०॥३५७॥

भुजंगी ॥ पुनर्जन्म जेते रहे जांनि जग्गे । सु ये सेस सेसा तिके पिट्ठ लग्गे॥
मनं मग्ग[3], मोहन्न मोती न बानी । मनों धार आहार कै दूध तांनी॥
छं० ॥ ३५८ ॥

तिलक्कं नगं देषि जगजोति जग्गी । मनों रोहिनी रूप उर इंद लग्गी॥
रुअं अब्बरेषं भुअं देषि जग्यौ । मनों कांम चापं करं उड्डि लग्यौ॥
छं० ॥ ३५९ ॥

[4]प्रगट्टे नयंनं विचिं ऐन दीसं । मनों जोति सारंग निर्वात रीसं ॥
तेज चाटंक ते श्रोन डोलं । मनों अर्क राका उदै अस्त लोलं ॥
छं० ॥ ३६० ॥

कही चंद कव्वी उपम्मा प्रमानं । मनों चंद रथभंग द्वै भान जानं ॥
उरज्जं जंभीरं भई मंझ झोलं[5]। उवं दिव्यदर्शी अरूढील बोलं ॥
छं० ॥ ३६१ ॥

अधर आरत्त तारत्त सांई । मनों चंद बिय विंब अरुने बनाई ॥
कहौं ओपमा दंत मोतीन कंती । मनों बीज माला जुगं सोभ पंती॥
छं० ॥ ३६२ ॥

कपोलं कलागी कली दीव सोहं । अलक्कं अरोहं प्रवाहंत मोहं ॥
सितं स्वाति बुंदं जिते[6] हार भारं । उभै ईस सीसं मनो गंग धारं॥
छं० ॥ ३६३ ॥

करं कोक नइंति कंचू समुभ्भं। मनो तिथ्थराया त्रिवल्ली अलुझ्झं॥
तिनं ओपमा पांनि आनंन[7] लभ्भं। लाजि कुल केलि दरिमभ्झ गभ्भं॥
छं० ॥ ३६४ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-नन । (२) ए. कृ. को.-प्रीतम पंत अप्प अधिकाय ।
* यह दोहा मो.-प्रति में नहीं है । (३) ए. कृ. को.-भगं । (४) मो.-प्रगेर ।
(५) मो. जालं । (६) ए. कृ. को.-जिस । (७) ए.-आनंत ।

नितंबं उतंगं जुरे बे गयंदं । तिनं मभ्भ रिपुछीन रष्यौ मयंदं ॥
कटी कांम मापी सुकामी करालं । मनों काम की औति बद्दौ सरालं॥
छं० ॥ ३६५ ॥

जघं व्रन्न सोवन्न भोहन्न[1] शंभं । मनों सीत उस्नेव रितु दोषरंभं ॥
नरंगी निरंगी सुपिंडी छछोटी । मनों कनक कुंदीरु कुंकु अलोटी॥
छं० ॥ ३६६ ॥

किधों केसरं रंग हेमं भकोरं । किधों बद्धियं बांम मनमथ्थ जोरं ॥
सदं रोह आरोह मंजीर वाद्दे । मदं छिद्द तेजं परंकार वाद्दे ॥
छं० ॥ ३६७ ॥

पगं एड़ि अं डंबरं ओन बानी । मनों कच्च चीनीन में रत्त पांनी ॥
नषं न्निमलं द्रप्पनं भाव दीसं । समीपं सुपीयं कियं मांन रीसं ॥
छं० ॥ ३६८ ॥

रगं अम्मरं[2] रत्त नीलंत पीतं । मनों पावसं धनुक सुरपत्ति कीतं॥
सुकीबं सुजीवं जियं स्वामि जानं । रवी पंग दरसं अरब्यंद मानं ॥
छं० ॥ ३६९ ॥

दासी का घूंघट उघर जाना और उसका लज्जित होकर भागना।

कुंडलिया ॥ दरस चियन ढिल्ली न्रपति । सोवन घट वर हथ्थ ॥
वर घुघट छुटि पट्ट गौ । सटपट परि मनमथ्थ ॥
सटपट परि मनमथ्थ । [3]भेद वष कुच तट छेदं ॥
उष्ट कंप जल द्रगन । लग्गि जंभायत भेदं ॥
सिथल सु गति लजि भगति । गलत पुंडरि तन सरसी ॥
निकट [4]निजल घट तजै । मुहर मुहर पति दरसी ॥छं०॥३७०॥

दासी के मुखारविंद की शोभा वर्णन।

गाथा ॥ कमोदं वर विगासं । सरसीरुह सरसियं[5] तेजं ॥
चक्कति चक्क एकं । अरकं रकइ प्रथ्थ संजोगं ॥ छं० ॥ ३७१ ॥

---

(१) ए. कृ. को. सोहन्न । (२) मो.-अंतर । (३) ए. कृ. को. भेद तट कुच वच्छेदं ।
(४) मो.-निज्जल । (५) ए. कृ. को.-सर्सीयं ।

रोरंत कच बिलास । चंद मुखी दरसि सरसिय प्रतिय ॥
मवसं प्रांन वेसासी । दोहं मेकं सयं एक ॥ छं० ॥ ३७२ ॥
कुमुदं कुच प्रगासी । हार वीचं तनं तयं अंबं ॥
अभिवर तरंग ओपं । रोमं राजीव सेवालं ॥ छं० ॥ ३७३ ॥
पावस धनुक सुकंती । अंबर नीलाइ पीतमं बाले ॥
जानिज्जै परमासं । स्यांम घन मझ्झि तड़ितायं ॥ छं० ॥ ३७४ ॥

गंगा स्नान और पूजनादि करके राजा का चार कोस पश्चिम को चल कर डेरा डालना ।

दूहा ॥ प्रथम स्नान गंगा निरषि । पुर रट्ठौर निवास ॥
फिरि पच्छिम दिसि उत्तरै । जोजन एक सुपास ॥ छं० ॥ ३७५ ॥

चौपाई ॥ जोजन एक गयौ चहुआनं । सोम सूभ्र तिथि षष्टी जानं[1] ॥
अंतरि पट्ट सुनंत नरिंदं । भर विंटे जनु पारस चंदं ॥
छं० ॥ ३७६ ॥

कवित्त ॥ सो पट्टन तजि न्रपति । चल्यौ कमवज्ज राज बल ॥
जाय [2]संपनौ राव । गंग सुरसर सुरंग जल ॥
करि मिलान परमोन । थान आस्रम्म सु उज्जल ॥
दीप जाप मन करै । भ्रंम भंजै सु अध्रम्म दल ॥
चहुआन दान षोड़स करिय । तिहि जय जय सुरलोक हुअ ॥
दिन पतत निसा बंधय सयन । रस षिझ्झिय प्रथिराज जिय ॥
छं० ॥ ३७७ ॥

दूसरे दिन एक पहर रात्रि से तैय्यारी होना ।

दूहा ॥ निसि नंषी चिंतान भर । भयग प्रात तम भग्गि ॥
तरुन अरुन प्रगट्टिय किरनि । वर प्रयान न्रप जग्गि ॥ छं० ॥ ३७८ ॥
निसि चियाम बित्तिय सु जब । उच्छ सुषिन दा प्रान ॥
प्रात तेज उद्दित भयौ । चढ़ि चल्यौ चहुआन ॥ छं० ॥ ३७९ ॥

(१) ए. कृ. को. थानं । (२) ए. कृ. को.-सपन्नौ ।

राजा पृथ्वीराज का सुख से जागना और मंत्री का उपस्थित होकर प्रार्थना करना।

कवित्त ॥ जग्गि सु न्रप चहुआन। थान सामंत सूर फिरि ॥
चहूं राज कर जोरि। मंत कीनो सुमंत करि ॥
इहइ दिष्षि कनवज्ज। जहां बसि थान सुरत्तं ॥
दई विधिना निम्मयौ। काल ग्रह आनि सु पत्तं ॥
मुष कालव्याल उंदर परै। ग्रास मुष्ष मंषौ जियन ॥
तुम सत्त ग्रहौ बंधौति षग। मंत अप्प देषौ बयन ॥ छं० ॥ ३८० ॥

व्यूह बद्ध होकर पृथ्वीराज का कूच करना।

राज अग्ग गोयंद। बीर आहुट्ट नरेसर ॥
दाहिम्मौ नरसिंघ। चंदपुंडीर सूर सर ॥
सोलंकी सारंग। राव कूरंभ पजूनं ॥
लोहा लंगरिराव। षग्ग मग्गह दह गूनं ॥
लष्षन बघेल गुज्जर कनक। बारहसिंघ सु अग्ग चलि ॥
बिय सेन सब्ब साईं सु पुछि। षग्ग मग्ग जिन बल अकल ॥ छं० ॥ ३८१ ॥

दूहा ॥ इह समग्ग सब सेन चलि। दिसि कनवज्ज नरिंद ॥
प्रथीराज ढिग राजई। मधि कविता [1]बरचंद ॥ छं० ॥ ३८२ ॥

सबका मिलकर कन्ह से पट्टी खोलने को कहना और कन्ह का आखों पर से पट्टी उतारना।

एक दिसा उत्तरि न्रपति। [2]अरन छिनक सपब्ब ॥
मतौ करन सांई सु भृत। पुच्छहिं आय सु कन्ह ॥ छं० ॥ ३८३ ॥

कवित्त ॥ सुनि कन्हा चहुआन। ग्रेह कैमास न मंत्री ॥
तंतसार बिन तुंब। जंच बाजै छिन [3]जंत्री ॥
चंद दंद उप्पाय। गंज विष [4]अग्गि लगाई ॥
सुभर भ्रम्म रजपूत। पत्ति रष्षे पति पाई ॥

(१) ए. कृ. को. कविचन्द। (२) ए. कृ. को.-अरानि।
(३) मो. मंत्री। (४) ए. कृ. को.-अंगि।

दरबार पंग दैवान भर। कल जलह मौ उझलै ॥
पुच्छौ सु इच्छ बल मंत बर। दल भंजै पुज्जै दलै ॥ छं० ॥ ३८४ ॥

सुनि कन्हा चहुआन। कन्ह बिद्यौ जु कन्ह जुगि ॥
कन्ह अनी कुव्वंर। मेछ मोरन्न मुट्ठि षगि ॥
सामध्रम्म अगि प्रान। नीति राषन राजंनिय ॥
तिहि कारन तुम्र अंषि। निड्डि पाटी जुग आनिय ॥
आचिज्ज लोइ कनवज्ज वर। पूछि न दिषि तन तन नयन ॥
प्रथिराज काज तौ सुब्बरौ। छोरि पट्ट मन्नौ सयन ॥छं०॥३८५॥

तत्पश्चात् आगे चलना और प्रभात समय कन्नौज में जा पहुंचना।

दूहा ॥ कूच करिग भावी अवन। बर बर चलि सहरत्त ॥
प्रात भयौ कनवज्ज फिरि। सुनि निसान धुनि पत्त ॥छं०॥३८६॥

कन्ह मंत मित्तंज बर। बर पुच्छन हग सब्ब ॥
बर भावी गति चिंतकिय। नयन सु बरजी तब्ब ॥ छं० ॥ ३८७ ॥

देवी के मंदिर की शोभा और देवी की स्तुति।

भुजंगी ॥ [1]जहां दिष्षियै आसु संदेह सेहं। उअं अर्कसा कोटि संपन्न देहं॥
बने मंडपं जासु सोब्रन्न गेहं। तिनं मुत्तियं छच दीसै न छेहं ॥
छं० ॥ ३८८ ॥

रुधिं सित्त माहीष बहु मध्य रत्ती। तिनं प्रात पूजंत न्रनेम अत्ती।
भुजं डंड दंदेस देसं प्रकारं। भमै देवता इंद्र लब्भै न पारं ॥
छं० ॥ ३८९ ॥

बजै दुंदभी देव देवाल निच्चं। बरं उट्ठि संगीत गानं पवित्तं ॥
बजै सद्द झंझं समं जोग भिद्दं। निरत्तं न पायं तिनं कब्बिचंदं॥
छं० ॥ ३९० ॥

(१) ए. कृ. को.-तहां।

सुषं पंड भारथ्य विय वैर साजी। मुषं देषि चहुआन किलकारि गाजी॥
प्रभा भान तेजं विराजै अकारी। मनों अग्नि ज्वाला अलं में उजारी॥
छं० ॥ ३९१ ॥

[1]नमो तूंअ तातं नमो मात माई। तुअं सक्ति रूपं जगत्तं बताई॥
तुअं थावरं जंगमं थान थानं। तुअं सत्त पाताल सरतं सतानं॥
छं० ॥ ३९२ ॥

तुअं मारुतं पानियं अग्गि मट्टी। तुअं पंचभूतं स्वयं देह थट्टी॥
तुअं स्वस्ति चंदं अनंदं अनंदी। भई मोह माया जपै जाप बंदी॥
छं० ॥ ३९३ ॥

तबै बैन आकास मद्धि भयौ ताजं। तुमं होइ जैपत्त प्रथिराज राजं॥
तबं दच्छिनं अंग करि नमसकारं। धुअं मध्यता नैर कीजै विचारं॥
छं० ॥ ३९४ ॥

सरस्वती रूप की स्तुति।

साटक ॥ वीना धारन अग्र अग्रति दिवं, देवं तमं भूतलं ॥
तूं वाले जल जी जगंत कलया, जोगिंद माया दुतिं ॥
त्वं सारं संसार पार करनी, तोयं तुअं सारसं ॥
दंदीनं दारिद्र दैत्य दलनी, मातं त्वया द्रग्गया ॥ छं० ॥ ३९५ ॥

कवि का देवी से प्रार्थना करना कि पृथ्वीराज की सहायता करना।

दूहा ॥ [2]कै मातुल कै प्रकृति तू। कै पुरिषत्व प्रमान ॥
तुं सब छचिन मंझ है। तू रष्षै चहुआन ॥ छं० ॥ ३९६ ॥

गाथा ॥ लज्जा रूप सुदेवी। हवी हवीतेज [3]सुगति का गनया ॥
किय कमलं सु जेयं। बंधि पानि उज्जरै बलयं ॥ छं० ॥ ३९७ ॥
तूं धारन संसारं। चंदं चंद किन्तियौ सुनियं ॥
ज्यौं पंडव मंझ प्रगट्टी। अब हुज्जे राज मभझाइं ॥ छं० ॥ ३९८ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-नमो तू अतानं।

(२) ए. कृ. को."कै मातुल परकृति गति"। (३) ए. कृ. को. मंगीत।

चौपाई॥ इच्छा नाम छषि जौ लेई। सार धार दुज्जिन बल कोई॥
बो अग्गा छल दाषें वीर। जौ गुन होइ [1]जु मध्यसरीर॥
छं०॥ ३९९॥

कवि का कहना कि नगर को दहनी प्रादिक्षणा देकर चलना चाहिए।

दूहा॥ किय विचार नृप नगर कौ। सह सामंत समेव॥
चंद बुझ्झि तब मन कियौ। चल्यौ सु [2]दष्षन देव॥छं०॥४००॥
देत प्रदिष्षन नगर कों। होत तहां बहु बार॥
राज देष पच्छै करै। एह सकल विचार॥ छं०॥ ४०१॥
हर सिद्धी परनाम करि। राषि समंत सु साज॥
कनवज दिष्षन राज ग्रह। चल्यौ चंद बर राज॥ छं०॥ ४०२॥

पृथ्वीराज के नगर द्वार पर पहुंचते ही भांति भांति के अशकुन होना।

भुजंगी॥ वजै पंग नीसान प्रातं प्रमानं। धरी अंक भोमं चली थान थानं॥
कहै चंद कब्बी उपम्मा सु पत्तं। गजै मेघ मानो नछत्रं सहित्तं॥
छं०॥ ४०३॥
धुनं संभरी कन्न साधंत भीतं। ग्रहै साध भ्रम्मं सहै साधु नीतं॥
सधें मग्ग हेतं ग्रहं भ्रम्म जीयं। [3]निहं दोस मंदेह छत्रं [4]पतीयं॥
छं०॥ ४०४॥
सोई भ्रंम कन्हं चितंतं प्रमानं। दिषी लज्जि मन्नं कम्मं जोति मानं॥
धरै सामध्रमं जिनं धूम्र लीनं। जिनं जित्तियं जस्स देहं न कीनं॥
छं०॥ ४०५॥
सगुन्नं प्रथीराज दीसै नरिंदं। धुरं पैसते भोम पहु पंग इंदं॥
बुलै देवि वामं घटं वाल मध्यै। बुलै वायसं वाम चढ़ि अस्ति रथ्यै॥
छं०॥ ४०६॥

---

(१) मो.-सु। (२) ए. कृ. को. दिष्षन।
(३) ए. कृ. को.-तिहं। (४) ए. कृ. को.-पयहिं।

दिषी राज दिट्ठं गसंती ज ईसं। लरै वाम नंदी अनंतं सुरीसं॥
दिसा दष्षिनी लोह भट्टी सु जागी। तहां चक्रितं चित्त कविचंद लागी॥
छं० ॥ ४०७ ॥

कवित्त ॥ असुभ सगुन मंगल न। चित्त चहुआन विचारी॥
मग्ग अग्ग मंजार। वाम दष्षिन निक्कारी॥
बर उचिट्ठ पावक्क। विद्दन तिन मझ्झ चमंकै॥
मेघ छुट्टि आकाल। मध्य धुमंरिय गहक्कै॥
आरिट्ठ भाव कविचंद कहि। तब चिंत्यौ न्निमान बसि॥
भावी विजत्ति भंजन गढ़न। सुनि चहुआन नरिंद हसि॥
छं० ॥ ४०८ ॥

दूहा ॥ सिंगिनि बंदि विरंम करि। बाग पंग न्रप जाइ॥
दिषि अराम मिष ग्रह परसि। रहि सुगंध बरछाइ॥छं०॥४०९॥

कन्नौज नगर का विस्तार और उसके चारों तरफ के बागानों का वर्णन।

भवर टोल झंकार बर। सुमन राइ फल लिद्ध॥
क्रूर दिट्ठ मन रह वढौ। ससि तारक भ्रित रिद्ध॥छं०॥ ४१०॥

पद्धरी ॥ बर मग्ग बग्ग चिहु कोट दिष्षि। विस्तार पंच जोजन्न लष्षि॥
कछ मग्ग भोमि चिहुं मग्ग दिस्सि। नारिंग सुमन दारिम विगस्सि
छं० ॥ ४११ ॥

प्रतिव्यंब अंभ झलकत सरूप। उप्पम तास बरनत अनूप॥
नव विद्व गत्ति सह जल प्रवेस। मुमकंत झुंड दिष्षी सुदेस॥
छं० ॥ ४१२ ॥

प्रतिव्यंब झलकि चंपक प्रसून। उप्पंम देषि कविचंद दून॥
दीपक्क माल मनमध्य कीन। हरभयति दिष्षि इह लोक दीन॥
छं० ॥ ४१३ ॥

हलहलत लता दमकंत वाय। मनु बध्धौ मपतसुर भंग पाइ॥
चल्लै सुगंध बर सीत बत्त। जानियै सब्ब हथ्थीन जित्त॥
छं० ॥ ४१४ ॥

भुजंगी ॥ तहां प्रात प्रातं विंबं अंब मौरे । सुरं कंठ कलियंठ रस प्रस्स झोरें ॥
फली फूल बेली तरं चढ़ि सोहै । तिनं ओपमा दैन कविचंद मोहै॥
छं० ॥ ४१५ ॥

रवी तेज देषी ससी बाल भागी । मनों तारिका उड़ि तर सब्ब लागी॥
कहीं जूहि जंभीर गंभीर वासी । तमी तप्पनी सेव सौसंम सासी ॥
छं० ॥ ४१६ ॥

ग्रसै मोर सुकरंद उडि बाग मेंही । मनों विरहनी [1]दिग्घ उस्सास लेही॥
किते एक बीजोर फल [2]भार लुट्टै । [3]मनों जीवनं पीउ पीयूष फुट्टै॥
छं० ॥ ४१७ ॥

कहूं सेवसत्ती फुलै ते प्रकारं । किधों दिष्षियं प्रगट मकरंद तारं ॥
कहूं सोभही यट्ट गुल्लाल फूलं । चषं भोर मकरंद सहफूल भूलं ॥
छं० ॥ ४१८ ॥

बरं बोरसरि फूल फूली सुरंगी । छके भोर भौरं मनं होइ पंगी ॥
कहूं कद्दली सेसुरंगं जु पंती । किधों [4]मंत मध्यं कि बीचैं धमंती ॥
छं० ॥ ४१९ ॥

घरी एक चहुआन तिन थान राही । असंसार संसार संसार काही॥
तरं पिंड आकास फुल्लै निनारै । वरन्न वरन्नं अनेकं सवारे ॥
छं० ॥ ४२० ॥

सवैं कव्विराजं उपम्मा न पग्गी । मनों नौ ग्रहं वार रस आय मग्गी॥
कवी जे जुवानं मनं ओप जानै । कवी जेम वत्तं रसं सो बषानै ॥
छं० ॥ ४२१ ॥

न लालं न [5]पिंगी षजूरं अमग्गी । नरं उंच त्रिषंत सो सीस पग्गी॥
छं० ॥ ४२२ ॥

पृथ्वीराज का नगर में पैठना।

दूहा ॥ विलम सगुन चल्यौ न्रपति । नेन दरसि सो सथ्थ ॥
वर दीसी हट मैर कौ । मिलन पसारत हथ्थ ॥ छं० ॥ ४२३ ॥

(१) ए. कृ. को. दीरघ, दीर्घ । (२) ए. कृ. को.-प्रात ।
(३) ए. कृ. को.-"मनों जीवनं पीय पी पीउ फुट्टै" । (४) मो.-मनमध्य ।
(५) ए. कृ. को. पीगी ।

नगर प्रवेसनि देषि रूप। जूप साल जेठाइ॥
ता हल्लन रस उप्पज्यौ। कहत चंद बरदाइ॥ छं०॥ ४२४॥

नगर के बाह्यप्रान्त के वासियों का रूपक तदनन्तर नगर का दृश्य वर्णन।

भुजंगी॥ जिते लंगरी रूप दिन के प्रसंगा। तिते दिष्षियै कोटि कोपीन नंगा
जिते जूपकों चोप चौंपें जु आरी। तिते उच्चरें सो आनंन पारी॥
छं०॥ ४२५॥

जिते साधु संमारि षेलंत लष्षे। तिते दिष्षियै भूप दामंत पष्षे॥
जिते छैल संघाट वेस्यानि रत्ते। तिते द्रव्य के हीन हीनंत गत्ते॥
छं०॥ ४२६॥

जिते दासि कै चास लग्गे सु रूपा। मनों मीन चाहंत बग मध्य कूपा॥
किते नाइका दिष्षि नर नैन डुल्लै। रहैं सुरह लोकं सुरं दिष्षि भुल्लै॥
छं०॥ ४२७॥

बचं उच्चरै बेंन निसि कौ उज्जग्गी। मनो कोकिला भाष संगीत लग्गी॥
उडै उंच अब्बीर सेज्या समारै। मनों होइ वासंत भूपाल द्वारै॥
छं०॥ ४२८॥

कुसम्मं समं चीर संकीर सोभा। मनो मध्यता काम कद्ली सु ग्रभा॥
रसं राग छत्तीस कंठं करंती। बरं बीन बाजिंच हथ्थें धरंती॥
छं०॥ ४२९॥

तिनें देषि असमान म्रग्गी ठठुक्की। मनो मेनिका न्रत्य तें ताल चुक्की॥
बरन्नंत भावं लगें जुग्ग सारे। इसे पट्टनं ग्रेह दिष्षे सवारे॥
छं०॥ ४३०॥

दूहा॥ सो पट्टन रट्ठौर पुर। उज्जल पुराय विपष्ष॥
कोट नगर नायक सघन। धज बंधी तिन लष्ष॥ छं०॥ ४३१॥

नाराच॥ सु लाष लाष द्रव्य जासु नित्य एक उट्ठवै।
अनेक राइ जासु भाइ आय आय बिट्ठवै॥
सुगंध तार काल मानसा म्रदंग सुभ्भवै।
सु दछिनं समस्त रूप स्याम काम लुभ्भवै॥ छं०॥ ४३२॥

सु छंद चाव भुज देस सेस कंठ गावहीं।
उपंग बीन तासु पानि वालते बजावहीं॥
ममम्भि ते अनंग रंग संग ए परच्छए।
सु बीर सा अरह अंग पट्ठि पाच नच्चए॥ छं०॥ ४३३॥
सवह सुभ्भ उच्चरें सु क्रित्ति का वषानिए॥
नरिंद इंद इत्त ने सु कोटि इंद आनिए॥ छं०॥ ४३४॥

कन्नौज नगर के पुरजनों का वर्णन।

दूहा॥ अमग हट्ट पट्टन नयर। रत्न मुत्ति मनिहार॥
हाटक पट धन धात सह। तुछ तुछ दिष्षि सवार॥ छं०॥ ४३५॥

मोतीदाम॥ अमग्गति हट्टति पट्टन मंझ। मनों द्रुग देवल फूलिय संझ॥
जु नष्षहि मोरि तमोरि सु ठार। उलिंच्छत कीच कि पीक उगार॥
छं०॥ ४३६॥

मिली.पद पट्ट सु बेदल चंप। सु सीत समीर मनो हिम कंप॥
जु बेलि सेवंतिय गुंथहि जाइ। दिये द्रव दासि सु लेहि ढहाइ॥
छं०॥ ४३७॥

सुबुद्धि बजावत बीन अलाप। अनेक कथा कथ ग्रंथ कलाप॥
विवेक बजाज सु बेचहि सार। छुअंत नवासर सूझहि तार॥
छं०॥ ४३८॥

ति देषहि नारि सकुंज पटोर। मनो दुज दष्षम लागहि थोर॥
सु मोति जराइ मढे बहु भाइ। जु कट्टहि कोरि कहै सुनि गाइ॥
छं०॥ ४३९॥

सु लेतनं सुष्ष रहै अपनाइ। जु सेज सुगंध रचे पलटाइ॥
लहंलह तामक तानति वाम। बनी चिय दीसहि कामभिराम॥
छं०॥ ४४०॥

जरावं कनक जरंज कसंत। मनो भयौ बासुर जामिन अंत॥
कसिकसि हेम सु काढ़त तार। उगंत कि हंसह कन्न प्रकार॥
छं०॥ ४४१॥

करंकर कंकन अंकह ओव। मनों दुजहीन सरद्दहि सोव॥
जरे जिव प्राम प्रकारति लाल। मनों ससि सभ्भह तार बिसाल॥
छं०॥ ४४२॥

रुलंत जुषंतत राजनु ओप। मनों घन मद्धि तद्दित्तह ओप॥
जरेजिव नंग सुरंग सुघाटि। ति सुंदरि सोभ[1] उवावति पाट॥
छं०॥ ४४३॥

दु अंगुलि जोरि निरष्षहि हीर। मनों फल बिंबहि[2] च पहि कीरि॥
नषं नष चाहति मुत्तिय अंस। मनों भष छंडि रह्यौ गहि हंस॥
॥ छं०॥ ४४४॥

दसों दिसि पूरि हयग्गय भार। सु पुच्छत चंद गयौ दरवार॥
.... । .... ॥ छं०॥ ४४५॥

कविचन्द का राजा सहित राजद्वार पर पहुंचना॥

दूहा॥ हय गय दल सुंदरि सहर। जौ बरनों बहुबार॥
इह चरित्त कह[3] लगि कहूं। चलि पहुपंग दुआर॥
॥छं०॥ ४४६॥

चलत अग्ग दिष्यौ न्रपति। हरि सिद्धी सु प्रसाद॥
चंद नम्मि अस्तुति करिय। हरिय अघ अपराध॥ छं०॥ ४४७॥
कौतूहल दिष्यै सकल। अकल अपूरब बट्ट॥
पानधार[4] छर छग्गरह। राजग्रही बर भट्ट॥ छं०॥ ४४८॥

राजद्वार और दरवार का वर्णन।

कवित्त॥ गज घंटन हय[5] षेह। विविध पसुजन समाज[6] हुव॥
घन निसान घुम्मरत। प्रबल परिजन समथ्थ नव॥
विविध बज्ज बज्जत सु। चंद भर भीर उमत्तिय।
इक्क लत्त आवत सु। इक्क नरपत्ति समथ्थिय॥

(१) ए. कृ. को.-पुंपावहि। (२) ए. कृ. को. जंपहि। (३) ए. कृ. को-गनों।
(४) ए. कृ. को.-छग्गल छलह। (५) मो.-हेष। (६) ए. कृ. को.-रच।

पुंभौय अवनि सुम्भय महल। अनु दुल्लित उभ्भिय करन ॥
दरबार राज कमधज्ज कौ। जग मंडन मभ्भह धरनि ॥
छं० ॥ ४४९ ॥

कौतूहल आलम अलाप। दिष्षिय दर चंदह ॥
पंगराइ दरबार। बार जागत जै विंदह ॥
सत जुग्गह बलिराइ। नगर पुर भ्रंम प्रमानं ॥
त्रितिय जुग्ग रघुनाथ। अवधि पट्टन वर थानं ॥
द्वापरह नाम नागर नगर। जुरा जोध तप्पे सुतप ॥
जै चंद दंद दाह दलन। कलि कमधज कनवज्ज नृप ॥
॥ छं० ॥ ४५० ॥

दिष्षि चंद दरवार। छत्र धरि फिरिहि विनहमद ॥
भ्रमर गुंज पुंजरत।[१]कत्त क्रमंत दुरद रद ॥
अनुचर अनुमंकारह। मत्त गम्मित कंठौरव ॥
वासुर संझ विहारि। वारि अचवत अभंग भव ॥
दिष्षियै द्रुगम सुग्गम सुघन। सुगम द्रुगम जयचंद ग्रह ॥
सब जंत तंत जिम मर कटकि। समन दमन बस भूरि बह ।
छं० ॥ ४५१ ॥

कन्नौज राज्य की सेना और यहां की गढ़रक्षा का सैनिक प्रबंध वर्णन।

लष्ष सुभर आवंत। लष्ष दरवारं हरज्जै ।
लष्षह गोलंदाज। लष्ष दूकै नालि भरिज्जै ॥
लष्ष तानि सिलहान। गिरद रष्षै दरबारह ॥
पाइक लष्ष प्रचंड। संक मानै नह मारह ॥
लष असिय सकल सेवा करै। द्वादस सूरज जोति कल ॥
लष तीन तुरय पष्षर सहित। पवन पाइ ऐराक भल ॥
छं० ॥ ४५२ ॥

---

(१) ए. कृ. को. मुकत क्रमत दुरहु रद।

नागाओं की फौज का वर्णन।

मञ्जत जलधि प्रमान। संष धुनि बज्जत भारिय ॥
मनक्रम चिय बच रहित। सहित सन्नाह सुधारिय ॥
रिष सरूप जयचंद। सहस संषद्धुनि रष्षन ॥
आवध साल प्रलंब। षंभ रुप्पौ अति तिब्बन ॥
मन सित्त एक इथ्थिय फटक। इक हथ्थ झेलन्त बल ॥
भुज दंड प्रचंड उचाय कर। धरत आनि मदगल कि मल ॥
छं० ॥ ४५३ ॥

नागा लोगों के बल और उनकी बहादुरी का वर्णन।

हथ्थ सित ऊरध षंभ। बान नंषत सत भारिय ॥
फोरत लोह प्रचंड। मुट्ठि चौसट्ठि प्रचारिय ॥
किनकि संगि नंषंत। धरनि षुंभन्न निष्पारिय ॥
कितक बथ्थ भरि षंभ। कड्ढि नंषंत उछारिय ॥
इम रमत सहस संषह धुनिय। रिषि सरूप प्राक्रम अतुल ॥
उच्चन्यौ राज भट्टह सस्स। इह कौतूहल पिषिय भल ॥
॥ छं० ॥ ४५४ ॥

संखधुनी लोगों का स्वरूप और बल वर्णन।

मोरपंष तन वस्त्र। मोर सिर मुकुट विराजत ॥
मोर पंष बल्लभ अनंत। पंषे कर साजत ॥
तप सु तेज विचीय। चच्छ बघ्घह भुज सुंडह ॥
पग नेवर झनकार। समर मेरं गिरि मंडह ॥
अवतार रूप दरसंत भल। संष बजावत माधरिय ॥
लष असी मभझ पौरुष अतुल। धर कंपत पग्गह धरिय ॥
॥ छं० ॥ ४५५ ॥

(१) मो.-इक।

पृथ्वीराज का उन्हें देख कर शंकित होना और कवि का कहना कि इन्हें अत्तताई मारेगा।

दूहा ॥ पिष्षि पराक्रम राज इह । विरत भयौ मन मंझ ॥
चंद वरद्दिय उकति करि । सामंत सूर समंझ ॥
॥ छं० ॥ ४५६ ॥

कहिय चंद राजन्न प्रति । कहा सोचि मन मंडि ॥
अत्ततांइय जुध जुरै । अब इन सत्रुन षंडि ॥
॥ छं० ॥ ४५७ ॥

भाषनि भाष सु मिल्लिय दिस । दई सिसिर वनि इंद ॥
नव नव रस अरु सघन सष । जोध सुषंग नरिंद ॥ छं० ॥ ४५८ ॥

पद्धरी ॥ संचरिय देस भाषा न भाष । रायान राय साषान साष ॥
नौवत्ति वज्जि भर तीन लाष ।[1]चक्रित सुनाथ हुअ निच विसाष ॥
छं० ॥ ४५९ ॥

सामंतो का कहना कि चलो खुल कर देखें कौन कैसा बली है।

दूहा ॥ निसि नौवति मिलि प्रात मिलि । हय गय देषिय साज ॥
विष्वरि सुभर करिवर [2]गहिय । किन्नहि कहिय प्रथिराज ॥
॥ छं० ॥ ४६० ॥

कवि चंद का मना करना।

कहहि चंद दंद न करहु। रे सामंत कुमार ॥
तीन लष्ष निसि दिन रहै । इह जैचंद दुआर ॥
॥ छं० ॥ ४६१ ॥

उसका कहना कि समयोचित कार्य करना बुद्धिमानी है देखो पहिले सब ने ऐसा ही किया है।

(१) ए. कृ. को.-"चक्रित सुनाथ दुज निरषि साष"　　(२) मो.-गहिउ।

कवित्त ॥ एक ठौर[१] पृथिराज । रास मंगै इल काजै ॥
समौ ताकि गोविंदि । अग जरासिंध सुभाजै ॥
समौ जानि श्रीराम । बैर पति कासिय मुक्किय ॥
समौ ताकि पंडवन । देह जस बल अघ लुक्किय ॥
मतिसिष्ट पुरष तक्कै समौ । मनह मनोरथ चिंति मति ॥
कवि कहल केलि लागौ विषम । टारौं टरै न पुब्बगति ॥
छं० ॥ ४६२ ॥

राजा का कवि की बात स्वीकार करना ।

दूहा ॥ मांनि राज रिस रीस मन । चिंति उंदै प्रथुदुत्ति ॥
सो जागौ श्रो तान जल । मन भौ कंद उपत्ति ॥ छं० ॥ ४६३ ॥

कवि का पूछते पूछते द्वारपालों के अफसर हेजम कुमार रघुवंशी के पास जाना ।

मुरिल्ल ॥ पुच्छत चंद गयौ दरबारह । जहां हेजम रघुवंस कुमारह ॥
जिहि हरि सिद्धि पाम वर पायौ । सु कविचंद दिल्लिय तैं आयौ
छं० ॥ ४६४ ॥

द्वारपालों का वर्णन ।

कवित्त ॥ करनि कनक मय दंड । परम उद्दंड चंड बल ॥
दिध्घ देह सुंदर समथ्थ । अति सुमति सु न्रिमल ॥
प्रति नर प्रीति प्रसन्न । परम सपन्न सब्ब जग ॥
अवर भूप पिष्षत नयन्न । परसाद लग्गि[१] नग ॥
सुकलम्म कलपतरु वग्ग जिम । पुन्य पुंज पुज्जिय सुभुअ ॥
प्रति द्वार राज दरबार महि । दिषि वरदाय नमित्त हुअ ॥
छं० ॥ ४६५ ॥

प्रतिहार का पूछना कि कौन हो? कहां से आए? कहां जाओगे?

---

(१) ए. कृ. को.-नग ।

मुरिल्ल॥ हकि कविंद हेजम बुझिय हसि। कौन थान बर चलिय कौन दिस॥
को न्रप सव देव का नाम। किहि दिसि चिंत कस्यौ परिनाम॥
छं० ॥ ४६६ ॥

कवि का अपना नाम ग्राम बतलाना।

हो हेजम रघुवंस कुमार। न्रिप चहुआन प्रथीअवतार॥
फिरि ढिल्ली कविआन नरिंद। मो बर नाम कहै कविचंद॥
छं० ॥ ४६७ ॥

हेजम कुमार का कवि पर कटाक्ष करना।

द्वारपालवाक्य।

स्लोक॥ मंगिवांन विवारता कविन, संधिवान् किं विग्रहात्॥
जुद्धवाम पंग राश्न्। ना भूतो न भविष्यति॥ छं०॥ ४६८॥

दूहा॥ बैरी काटन राज बच। डंड भरन परधान॥
सेवा मानन भेदियन। हिंदू [1]मुसलमान॥ छं०॥ ४६९॥

कवि का उत्तर देना

[2]असतिनि बोलहु हेजमन। ग्रब्ब करहु जिम आलि॥
जु कछु समर बित्तें रनह। इह देषहु तुम कालि॥ छं०॥ ४७०॥

हेजम कुमार का कवि को सादर आसन देना।

आदर करि आसन दियौ। पालक पंग नरिंद॥
छिनक विलंबहु सुहित करि। जब लगि कहौं कविंद॥
॥ छं० ॥ ४७१ ॥

हेजम कुमार का बचन।

पंग दरस अच्चनं मिसह। कै मोकल्लिग बसीठ॥
कै मिलि पह मंडल न्रपति। राज राज सु दीठ॥ छं०॥ ४७२॥

(१) ए. मुसलमान। (२) मो.-असत बोलहु हजमने।

कवि का कहना कि कवि लोग वसीठ पन नहीं करते ।

कुंडलिया ॥ सुनि हेजम रघुवंस वर। भट्ट बसीठ न हुंति ॥
पति घट्टैं छिनकह मरै। जस मंगन नन षंति ॥
जस मंगन नन षंति। कौन प्रथिराज दान वरि ॥
का दिष्यन राज सू। कहा नलराइ जुधिष्ठिर ॥
मंडली मोहि जाचन नियम। दरिद करिय चहुआन चुनि ॥
पंगुरौ न्रपति दूषन मनह। रघुवंसी हेजम्म सुनि ॥ छं० ॥ ४७३ ॥

कवित्त ॥ तू मंगन कविचंद। सथ्थ मंगन नन होइय ॥
तौ देषत तिय थान। इंद्र भुल्लिय [1]द्रग जोइय ॥
इह कपट कवि हस्यौ। नयन दिष्षियै निनारै ॥
न्रपन होइ दरबार। भूत भयं छंद विचारै ॥
दरबार कव्वि बिरम्यौ न्रपति। [2]भर संमुह रघ्यौ म दर ॥
तुम राज नीत जानेंहु सकल। हुकम विना रघ्यौ न वर ॥
॥ छं० ॥ ४७४ ॥

दूहा ॥ तहां बिरम कीनौं सु कबि। सष सामंत बहोरि ॥
चंद फेरि दष्षिन दिसा। भर उभ्भै बरजोर ॥ छं० ॥ ४७५ ॥

हेजम कुमार का उसे बिठा कर जैचन्द के पास जाकर उसकी इत्तला करना ।

न्रप कवि हेजम मझ्झि दर। रष्षि गयौ न्रप पास ॥
भट्ट संपतो राज पै। वैने चंद विलास ॥ छं० ॥ ४७६ ॥

आदर करि हेजम [3]कविहि। गयौ जहां न्रपति नरिंद ॥
दिल्लियपति चहुआन कौ। कह असीस कविचंद ॥
॥ छं० ॥ ४७७ ॥

सुनत हेत हेजम उठिग। दिषंत चंद बरदाइ ॥
न्रप आगे गुदरन गयौ। जहां पंग न्रप आहि ॥ छं० ॥ ४७८ ॥

(१) ए. कृ. को.-जुग। (२) ए. कृ. को.-तर। (३) ए. कृ. को.-सुकवि।

हेजम गय पहु पंग पैं । स्वामि आय कविचंद ॥
मत जंपी बुल्यौ सुभट । सुनि सुनि सोभ नरिंद ॥
॥ छं० ॥ ४७९ ॥

जो करिजै चिंतक सुतौ । जानत होइ अजान ॥
हरुअत्तन गरुअत करै । सोई न्रपति सयान ॥ छं० ॥ ४८० ॥

हेजम कुमार का जैचन्द को बाकायदे प्रणाम करके कवि के आने का समाचार कहना ।

बस्तबंध रूपक ॥ तब सु हेजम तब सुहेजम। जुगम कर जोरि ॥
.. .. । .... ॥
सीस नयौ [1]दसवार तिहि । सेत छत्र पति मद[2]सुदिट्ठौ ॥
सकल बंध सथ्थह नयन । चकित चित बुल्लै गरिट्ठौ ॥
तब सु कियौ परनाम तिहि । बर करी राय [3]प्रतिहार ॥
जिहि प्रसन्न सरसति कहै । सुकविचंद दरबार ॥ छं० ॥ ४८१ ॥

दूहा ॥ सीस नायि बुल्लौ वयन । औसर पंग रजेस ॥
कवि जौ जुग्गिनि पुर कहै । संपत्तौ द्वारेस ॥ छं० ॥ ४८२ ॥

कवि की तारीफ ।

कवि सरस बानी सरस । कित्ती रूप प्रमान ॥
चंद [4]बत्त हर बिदुष जन । गोपंथिती समान ॥ छं० ॥ ४८३ ॥
गुन आगंम समंद जौ । उक्त तिन्न हरि तरंग ॥
जपति कवित मज्जाद ज्यौं । रतन वच्च प्रघरंग ॥ छं० ॥ ४८४ ॥
संमिय अगुनि प्रगास ज्यौं । गत्ति जुगत्ति बिचार ॥
सुध्ध नरेस निधान धन । [5]जनु अर्जुन भटवार ॥ छं० ॥ ४८५ ॥
गुन बिध्धौ नघ्घै धनी । तीन प्रकारय कित्ति ॥
सरसेसर उतकंठ कर । ग्रब्बह तत कवि दित्त ॥ छं० ॥ ४८६ ॥

(१) कृ. को.-दरवार, दसार (२) ए. कृ. को नद । (३) मो.-प्रहार ।
(४) मो.-बल्हरे । (५) ए. कृ. को.-अनु

आडंबर बर भट्ट बहु। भर बर सथ्थ कविंद॥
तब रुक्यौ दरबार में। संग रष्षि कबिचंद॥ छं०॥ ४८७॥

राजा जैचन्द का दसौंधी को कवि की परीक्षा करने की आज्ञा देना।

बयन सुन्यौ रघुवंस कौ। भय सुभ सुभहि नरिंद॥
तिन दसौंधिय सौं कह्यौ। बोलि परष्षहु चंद॥ छं०॥ ४८८॥
कवियन तन चाह्यौ न्रपति। जो मुष तकौ न जान॥
जौ लाइक लष्यौ लषन। तौ लाओ इन थान॥ छं०॥ ४८९॥

* दसौंधी का कवि से मिलकर प्रसन्न होना।

चौपाई॥ आयस भौगु तियन तन चाह्यौ। तिन परनाम कियौ सिर नायौ॥
कैधों डिंभ कवी परवानी। सरसें वर उच्चारहु बानी॥
छं०॥ ४९०॥
ते चवि आइ चंद पहि ठढ्ढे। मिलतें हेत प्रीति रस बढ्ढे॥
हुअ आनंद चंद पहि आए। ज्यों सक्कर पय भूषें पाए॥
॥ छं०॥ ४९१॥

कवि और डिंबियों का भेद।

भुजंगी॥ कितं दंडिया डंबरी भेष धारी। सु कब्बी कुकब्बी प्रकारं विचारी॥
सुने भट्ट मेंजे ह च्यार प्रकारी। किधौं ब्रह्म मुनि ब्रत वर ब्रह्म विचारी॥
किधों ठग्ग कै ठोठ कै हैनगारी। .... ॥ छं०॥ ४९२॥
कहै राइ पंगुं सुनौ कव्वि सव्वौ। परष्यौ सु पतं कुपतं गुनव्वौ॥
छं०॥ ४९३॥
किते भट्ट जाने दुरे ते कविंदं। तिनं पास आडंबरं नथ्थ इंदं।
कला ग्यान अग न्यान विग्यान जानं। अरथ्थं सुरथ्थं कुरथ्थं प्रमानं॥
छं०॥ ४९४॥

* दसौंधी एक जाति होती है जो कि आज कल जसौंधी भी कहलाती है, दरबार के नाजि या कड़खे कहने वाले जोगबर अबतक इस वंश में होते हैं।

काठोरं कुबोलं पंढते तिरष्षं। अदिष्टं अदानं प्रमानी निरष्षं॥
जिते बाल बानी कवीचंद जानं। तिते पंग दिष्टं अदानं प्रमानं॥
छं० ॥ ४९५॥

अछित्तं सुछित्तं सु वित्तं विचारी। रसं नौ छ भाषा स साषा उधारी॥
परंमान ग्यानी विग्यनी विरूरं। लषौ वुद्धि विद्या तौ आनौ हजूरं॥
छं० ॥ ४९६॥

दसौंधियों का कवि के पास आना और कविचन्द का कवित्त पढ़ना।

चौपाई॥ ति कवि आय कवि पहि संपत्ते। गुरु व्याकंन कहै मन मत्ते॥
थकि प्रवाह गंगा सरसत्ती। सुर नर श्रवन मंडि रहै वत्ती॥
छं० ॥ ४९७॥

मुष [1]परसंत परसपर रत्ते। मुन उच्चार कर्यौ सरसत्ते॥
गुन उच्चार चार तन कीनौ। जनु भुष्षै पय सक्कर दीनौ॥
छं० ॥ ४९८॥

सब रूपक कहि कहि कवि जित्ते। नव रस भास सु पुच्छहि तत्ते॥
गजपति गरूअ ग्रेह गुन गंजहु। श्रीधर बरनि पंग मन रंजहु॥
छं० ॥ ४९९॥

श्रीबर श्रीकर श्रीपति सुंदर। सुमिरन कियौ तथ्य कविचंदर॥
बीठल्ल विमल्ल बयन बसुधा बन। द्रुपद पुत्ति चिरु चीर बढ़ावन॥
छं० ॥ ५००॥

ग्राहं गहत गंधर्व गयंदह। रष्षहु मान सुभान नरिंदह॥
तुअ चिंतत सच्चु सब मिल्लिय। विष दातव्य विषा लच्छी चिय॥
छं० ॥ ५०१॥

जब अर्जुन कोवंड धरिय कर। तब [2]संघरिय सकल्ल षोहिन भर॥
जब अर्जुन मन मोह उपायौ। तब भारथ मुष मभ्भ दिषायौ॥
छं० ॥ ५०२॥

(१) ए. कृ. को.-परसंत। (२) ए. संघिय।

है हरता करता अविनासी। प्रकृति पुरुष भारथ श्री दासी ॥
सा भारति मुष मझ्झ प्रसन्नी। तव न वरस साटक भाष छ भन्नी ॥
छं० ॥ ५०३ ॥

साटक ॥ अंबोरुह मानंद लोइ लरिसी, दारिम्म लो बीयलो ॥
[1]लोयन्ने चल चाल, चालु य वरं, बिंबाइ कीयौ गहो ॥
के सीरी कै साइ बैनिय रसौ, चीकौमि की नागवी ॥
इंदो मध्य सु इंद मानवि [2]हितो, ए रस्स भासा छठौ ॥
छं० ॥ ५०४ ॥

दसोंधी का प्रसन्न होकर कवि को स्वर्ण आसन देना।

चौपाई ॥ कवि पिष्यत कवि को मन रत्तौ। न्याय नयर कवंज संपत्तौ ॥
कवि एकह अंगी ग्रित कीनौ। हेम सिंघासन आसन दीनौ ॥
छं० ॥ ५०५ ॥

दसोंधी का कवि की कुशल और उसके दिल्ली से आने का कारण पूछना।

दूहा ॥ क्यौ मुक्यौ प्रथिराज बर। क्यौं ढिल्ली पुर छेह ॥
जंपि कहौ कविचंद तत। तुम कुसलत्तन ग्रेह ॥ छं० ॥ ५०६ ॥

कवि का उत्तर देना कि भिन्न भिन्न राज्य दरबारों में विचरना कवियों का काम ही है।

गाथा ॥ दीसै विविह चरियं। जानिज्जै सज्जन दुज्जनं ॥
[3]अप्पानं चक लिज्जै। हिंडिज्जै तेन पुहवीए ॥ छं० ॥ ५०७ ॥

दूहा ॥ जिन मानो चहुआन भौ। सुलाइ जालई भट्ट ॥
देषि ग्रव्व सुरपति गरै। पंग दरसि सो थट्ट ॥ छं० ॥ ५०८ ॥
जगत समुद्दयकार जल। षग्ग सीस चहुआन ॥
इह अचिज्ज बर भट्ट सुनि। तुछ निठुर संमान ॥ छं० ॥ ५०९ ॥

(१) ए.-को-लोदन्ने, लोहने। (२) मो. हनौ। (३) ए.-अप्पाजं तनक लिउजै।

दसौंधी का कहना कि यदि तुम बरदाई हो तो यहीं से राजा के दरबार का हाल कहो।

चौपाई ॥ गजपति गरूअ ग्रेह मन रंजहु । किन गुन पंग राय मन गंजहु ॥
जो सरसै बर हैं तुम रंचौ । [1]तौ अदिष्ट बरनौ कवि संचौ ॥
छं० ॥ ५१० ॥

मुरिल्ल ॥ तब सो देषै जान [2]प्रवीनं । भट्ट नयन सोहै रसलीनं ॥
दान षग्ग सरबंगै सूरौ । अनीवानि [3]अब्बंगै पूरौ ॥छं०॥५११॥

दूहा ॥ दीन वचन लहु करि कहौ । कविन करौ मन मंद ॥
जै सरसै बर कछु हुए । तौ बरनौ जयचंद ॥ छं० ॥ ५१२ ॥

अरिल्ल ॥ अहौ चंद बरदाइ कहावहु । कनवज्जह न्रप देषन आवहु ॥
जौ सरसति [4]आनौ बर चाव । तौ अदिष्ट बरनौ नृप भाव ॥
छं० ॥ ५१३ ॥

कवि का कहना कि अच्छा सुनों मैं सब हाल आशु छन्द प्रबंध में कहता हूं।

दूहा ॥ जौ बरनौं जैचंद कौ । तौ सरसें बर मोहि ॥
छंद प्रबंध कवित्त जति । कहि समझाउं तोहि ॥ छं० ॥ ५१४ ॥

दसोंधी का कहना कि यदि आप अदिष्ट प्रबन्ध कहते हैं तो यह कठिन बात है।

कहहि पंग बुधिजन कवित । सुनहु चंद बरदाइ ॥
दिठि दिष्यौ बरनै सकल । अदिठ न बरन्यौ जाइ ॥ छं० ॥ ५१५ ॥

कविचन्द का जैचन्द के दरबार का वर्णन करना।

पद्धरी ॥ सभ साज पंग बैठौ नरिंद । गुनगहर सकल माजै सु इंद ॥
सिंघासन आसन सुभ्र साज । मानिक्क जटित बहु मोल भ्राज ॥
छं० ॥ ५१६ ॥

---

(१) मो.-तौ अदिष्ट बरनहु नृप संचौ ।　　(२) ए. प्रचीनं ।
(३) मो.-सरबंगै ।　　(४) ए. कृ. को.-जानू ।

वामन्न सेत मधि पीति सोहि । अनंत ताम कविराज मोहि ॥
मंड्यौ किरीट बररूव सीस । उत्तंग मेर हर सिषर दीस ॥
छं० ॥ ५१७ ॥

बैठो सु भूप मुष दिसि कुबेर । रजि रुद्र थान रचि जानि मेर ॥
दाहिनै वांम भर भर बयट्ठ । सूरत्त दत्त गुन सकल दिट्ठ ॥
छं० ॥ ५१८ ॥

सिर सेत छत्र मंड्यौ सु भूप । बहु देस रिद्धि बधु तास रूप ॥
सनमुष्ष बैठि बर विप्र भट्ट । इह चव सु विद्य कलताम घट्टि ॥
छं० ॥ ५१९ ॥

तिन पच्छ बैठि गायन सु गेव । किन्नरह कंठ रस सकल भेव ॥
हिमदंड छत्र किय सेत पान । ठट्टौ सु पिट्ठ विस भूप जानि ॥
छं० ॥ ५२० ॥

दुहु पिट्ठ साजि वर चँवर ढार । रजि रूप जानि अस्वनि कुमार॥
ठट्टौ सु पन्नधर दच्छि थान । प्रतिबिंब रूप दुअ इंद जानि ॥
छं० ॥ ५२१ ॥

बैठे सु पिट्ठवर पासवान । बनि रूप रेह जित राज जान ॥
रत्तौ सु कीर मुष अग्र जान । भुज्जंत पक्क फल करक पान ॥
छं० ॥ ५२२ ॥

यरि करह बाज ठट्टौ समुष्ष । दे यंत ताम तामो सुरुष्ष ॥
इहि विद्धि बयट्टौ पंगराज । आसनह जीति जोगिंद साज ॥
छं० ॥ ५२३ ॥

जैचन्द का वर्णन।

साटक ॥ जा सीसं चमरायते सित छतं, पं पिन्न इंदोलिता ॥
बाला अर्क समान तेज तपनं, कोटी तयं मौलिता ॥
सस्त्र सस्त्र समस्त षिचि दहियं, सिंधु प्रयाते षलं ॥
कंठे हार हलंति आनक समं, प्रथिराज हालाहलं ॥
छं० ॥ ५२४ ॥

दरबार में प्रस्तुत एक सुग्गे का वर्णन।

दूहा॥ नील चंच अरु रत्त तन। कर करकटी भषंत॥
जोइ जोइ अष्षै राज मुष। सोइ सोइ कीर कहंत॥छं०॥ ५२५॥

कवित्त॥ नीम चंच तन अरुन। पानि आरोहि राज सुक॥
रुचि संपार परंम। चरन पिंगल सुभंत जुक॥
कंठ मुकत गुन रतन। जटित ओपत आभूषन॥
[1]रूर वारु कर नयनि। दष्षि भष्षित तन पूषन॥
जिम जिम उचार अष्षत न्नपति। तिम तिम कीर करंत सुर॥
भूलंत सुनत क्रत बेद बर। रस रसाल बानी सु फुर॥
छं० ॥ ५२६॥

दूहा॥ सहस छच बज्जन बहल। बहुल बंस विधि नंद॥
एक सहस संषहधुनी। महल आनि जयचंद॥ छं०॥ ५२७॥

दसोंधी का कहना कि सब सरदारों के नाम गाम कहो।

दूहा॥ तब तिन कवियन उच्चरिय। अहो चंद बरदाइ॥
[2]पृथुक पृथुक नर नाम सभ। बरनिरु हमहि सुनाइ॥
छं०॥ ५२८॥

कवि चन्द का सब दरबारियों का नाम गाम और उनकी बैठक वर्णन करना।

पद्धरी॥ राजिय सुसभा राजै सपंग। बिहु बांह पंति रंगह सुरंग॥
सोभत सुरेस सुर समय सार। हनि हतअसुर दरबार भार॥
छं०॥ ५२९॥

दष्षिनिय अंग रयसल कमंध। तिन अंग बीरचंदह सुबंध॥
अद्दवह भांन जुगरान बीर। कासह नरिंद रविबंस धीर॥
छं०॥ ५३०॥

(१) ए.-रूर चारु कर नयनि, कृ.-रुचिरु रनि पनि, मो. उरट वारु कर नयनि।
(२) ए. कृ. को.-"पृथुक नाम नर नाम सब"।

बरसिंघ राव बघेल सूर। [1]कठिया राय केहरि करूर ॥
परताप बीर तेजंप नाथ। रा राम रेन राहण्प पाथ ॥
छं० ॥ ५३१ ॥

केलिया बंध कट्ठी सु आस। करमाट भर काहण्प तास ॥
सारंग भट्ट सुग्रीव भाव। मोरी मुवंद परमार राव ॥
छं० ॥ ५३२ ॥

बीरंमराव नर पाल बीर। नरसिंघ कन्ह सम भुज गंभीर ॥
महदेव समह हरंसिघ बंक। मेहान इंद सद सार कंक ॥
छं० ॥ ५३३ ॥

पूरन्नराव चालुक्क देव। गोयंदराव परमार भेव ॥
हम्मीर धीर परताप तत्त। परबत पहार पाहार सत्त ॥
छं० ॥ ५३४ ॥

सत्तसाल अवधि पाटन नरिंद। साषुला हीर भुज फर कंविद ॥
हन्नू लंगूर रनबीर बाह। जसवंत उट्ठ द्रुग सबर नाह ॥
छं० ॥ ५३५ ॥

बर बीरभद्र बघघेल मेर। नृप क्रन्नराय सहन अरेर ॥
श्री मकुंदराइ बीराधिधार। जै सिंघ सूर [2]आकार भार ॥
छं० ॥ ५३६ ॥

भुज बाम बंक सेनी सधीर। आघात पात वज्जंग बीर ॥
रठवरह सूर रावत्त राज। रनवीर धीर आवद्ध आज ॥
छं० ॥ ५३७ ॥

न्त्रप चंद्रसेन पांवार राव। न्त्रप भीमदेव आजान दाव ॥
नरसिंघ सूर चालुक्क वीर। वर रुद्रसिंघ कंठी सधीर ॥
छं० ॥ ५३८ ॥

श्री रामसेन राजेस राज। सांषुला देव दासह समाज ॥
रा रामचंद्र रानिंग राव। हम्मीर सेन चतुरंग चाव ॥
छं० ॥ ५३९ ॥

(१) ए. कृ. को.-कठिसा। (२) कृ. को.-आकार, ए.-साकार।

जट्टह सुदेव सारंग सूर । बीरंम सवन घाती समूर ॥
जैसिंघ कमध आजानि पांनि । पंमार भीम रण सिंघ थान ॥
छं० ॥ ५४० ॥

अरजुन्नदेव निमकुल नरेस । आसोक राइ साहन सुरेस ॥
चंदेल बीरभद्रह सबीर । सहदेव बंक भुज धज गंभीर ॥
छं० ॥ ५४१ ॥

केहरी अद्भी चालुक बीर । हरिचंद तेज चहुआन नीर ॥
हरसिंघ राइ रजि पास वान । निसुरत्ति बीर ममरेजषान ॥
छं० ॥ ५४२ ॥

इतमीस मीर बहबल मसंद । [1]आरासषान पीरोज बंद ॥
कंमोदषान जहान भार । जुग बलिय अमिय अल्लिय करार ॥
छं० ॥ ५४३ ॥

महमुंद षान केलिय गंभीर । अबदुल्ल रोम राहिम्म मीर ॥
सल्लेम साहि [2]इसमित्त षान । [3]आरोज साहि असवह षान ॥
छं० ॥ ५४४ ॥

ढारंत चंवर जुग पच्छ भूप । हरि बीर रास सम वय सरूप ॥
ठट्ठौ सु दृषिन कर मंचि राव । थट्टे मुकुंद पहु वाम थाव ॥
छं० ॥ ५४५ ॥

शिव राग होत हरि गुन [4]मिलंत । उर सुनत सत्त पत्तह [5]पिलंत ॥
श्रीकंठ सु गुर कवि कमल भट्ट । जुग जोर समुष कमधज्ज पट्ट ॥
छं० ॥ ५४६ ॥

जुग पुरुष आय विनतिय समान । पठ्ठए नाथ तिरहुत्त थाम ॥

दसौंधी का दरबार में जाकर कवि की शिफारिस करना ।

कवि गमत बहुर फिरि पंग तीर । सुनि गुन गंभीर कमधज्ज बीर ॥
छं० ॥ ५४७ ॥

(१) ए.-आरात ।　(२) ए. कृ. को.-इसमीर ।　(३) मो.-आरज्ज ।
(४) कृ. ए.-मिलंत ।　(५) मो.-लिपंत ।

हेजम का अलकाव बोलना और कविचन्द का आशीर्वाद देना

दूहा ॥ हकान्यौ हेजम्म कवि। निकट बोलि नृप ईस ॥
सरसें बर संभारि करि। कवि दीनौ आसीस ॥ छं० ॥ ५६० ॥

कवि का आशीर्वाद देना।

कवित्त ॥ जिम ग्रह पिति ग्रहपंति। जिम सु उड़पति तारायन ॥
मधि नाइक जिम लाल। जिम सु सुरपत नाराइन ॥
जिम विषयन संग मयन। सकल गुण संग सील जिम ॥
वरन मध्य जिम उगति। चित्त इन्द्रिय आलह तिम ॥
अनि अनि नरेस भर भीर सर। दारिम न्रप मंदिर मरिय ॥
दिख पंग पानि उन्नित करिय। सुकविचन्द आसिष्ष दिय ॥
छं० ॥५६१॥

वचनिका ॥ साहि भार साहि विभ्भार। बलिय साहि कंध कुद्दार ॥
सबर साहि मान मरदान। निबर साहि मान भूमि वरदान ॥
अदतार राइ अंकुस्स सीस। दातार राइ सरसोभ दीस ॥
सुक्ति राइ बाहन बरीस। विजैपाल सूय कनवज्ज ईस ॥

जैचंद की दराबरी बैठक वर्णन।

कवित्त ॥ मंगल बुध गुरू सोम। सुक्र सनि सोभ पास तप ॥
हत तप [1]धुतम नरिंद। पंग सोहीज मंडि जप ॥
सकल सूर बर सुभट। सुबर मंडिलौ विराजै ॥
द्रुग्ग देषि कविचंद। [2]सुभंत सुरराज सुभाजै ॥
क्रंम वेन सम उच्चर्यौ। विरह तुंग द्रिगपाल तप ॥
क्रम अट्ठ अट्ठ षिटें सु वर। मध्य वीर मंडलिय अप ॥ छं० ॥५६२॥

जैचन्द की सभा की सजावट का वर्णन।

भुजंगी॥ सभा सोभियं बीर विजपाल नंदं। मनों मंडियं थान बिय इंद दंदं ॥
बरं थान थानं दुलीचै विराजै। तिनं देषि रंगं धनंपंति लाजै ॥
छं० ॥ ५६३ ॥

(१) ए. कृ. को.-धुतम। (२) ए. कृ. को.-सुदित सुरनाथ सु भाजै।

गुंथे रत्त पट्टं सुई डोरि हेमं। मनो भूमि रविक्रंन मिल चलहि तेमं॥
जरे रत्त नीलं नगं पट्ट साही। मनो आवरे बंधु धर नील माही॥
छं० ॥५६४॥

ढरैं चोर सेतं झपै मोज ताही। तिनंकी उपम्मा कवीचंद भाही॥
मनं आरुही भान लगि लग्गि आजं। डरं जान उग्गै रमै रथ्थ साजं॥
छं० ५६५॥

उठै छच पैगं उपम्मा समग्गं। मनो नौग्रहं मान तजि सीस लग्गं॥
कवीचंद राइं बरहाय बीरं। कला काम कल कोटि दिष्षी सरीरं॥
छं० ५६६॥

राजा जैचन्द को प्रसन्न देख कर सब दरबारियों का कवि की तारीफ करना।

दूहा॥ पंग पयंप्यौ कवि कमल। अमर सु आदर कीन॥
पुब नरेस परसंन दिट्ठि। सब जंपयौ प्रवीन॥ छं०॥ ५६७॥
चंद अग्ग प्रथिराज बर। हल्लौ फुनि फुनि एष॥
जिम जिम न्रप पुच्छै बिरद। तिम तिम बढ़ै विसेष॥छं०॥५६८॥

पुनः जैचन्द का बल प्रताप और पराक्रम वर्णन

कवित्त॥ कोरि जोर दल प्रबल। अचल चल सुथिर थरथ्थर॥
नाग सु फनि फन सकुचि। कच्छ पुप्परिय परप्पर॥
चढ़त भान छावंत रेन। [1]गयनेव दसं दिस॥
दीपक ज्यौ बसि बात। आत पच्चं [2]आधारिस॥
कमधज्जराइ विजपाल सुअ। तो बर भूपति हय किसौ॥
बरदाइ चंद हैदेवि बर। जिसौ होइ अप्पै तिसौ॥ छं०॥५६९॥

इस समय की पूर्व कथा का संक्षेप उपसंहार।

प्रथम परसि संदेह। भयौ आनंद सबै जन॥
अरू गंगा जल न्हाय। पाप परहर्‍यौ ततच्छन॥

(१) ए. कृ. को. गयनेंन दसंज्जिय। (२) ए. कृ. को.-आधारिय।

गयौ चद् दीवान। अनी बानी सु फुरंती ॥
सुफल हथ्य सुष विरद। राय भिंव्यौ सु तुरंतौ ॥
श्रुत सुनिय विरद पुच्छिय तुरत। संच पयंपहु भट्ट सुनि ॥
जिम जिम अचार ढिल्लिय न्रपति। तिम तिम जंपहि पुनह पुन ॥
छं० ॥ ५७० ॥

भुजंगी ॥ जहां आसनैं सूर ठट्टै सनाहं। जिनै जीति छितिराइ किय एक राहं ॥
धरा भ्रम्म दिगपाल धर धरनि षंडं। धरै छच सिर सोभ दुति कनक [1]डंडं॥
छं० ॥ ५७१ ॥

जिनै साजतें सिंधु गाहें सु पंगा। उनै तिमिर तजि तेज भाजै कुरंगा॥
जिनें हेम परवत्त सें सव्व ढाहे। [2]जिनें एक दिन अट्ठ सुरतान साहे॥
छं० ॥ ५७२ ॥

असं जंपियं [3]सच्च सो चंद चंडं। जिनै थप्पियं आय तिरहुत पिंडं ॥
जिनै [4]दष्षिनी देस अप्पै विचारै। जिनैं उतऱ्यौ सेतबंधं पहारै॥
छं० ॥ ५७३ ॥

जिनैं करन डाहाल द्रुअ बान बेध्यौ। जिनैं सिद्ध चालुक्क कय बार षेध्यौ॥
तिनं दिव्व जुद्धं भिरै भूमि रुंडं। बरं तोरि तिल्लंग गोआल कंडं ॥
छं० ॥ ५७४ ॥

जिनै छिंडियौ बंधि इक गुंड जीरा। ग्रहे लिद्ध वैरागरें सब हीरा ॥
जिने गज्जने सूर साहाब साही। तिने मोकल्यौ सेव निसूरत्ति भाहीं॥
छं० ॥ ५७५ ॥

बरं भुल्लि भष्षी घनं जोब रोरै। तहां रोस कै सोस दरिया हिलोरै॥
जिनैं बंधि षुरसान किय मीर बंदा। इसौ [5]रट्ठवर राय विजपाल नंदा
छं० ॥ ५७६ ॥

जहां बंस छत्तीस आवैं हकारे। परं एक चहुआन षुमान टारै ॥
छं० ॥ ५७७ ॥

(१) ए. कृ. को.-दड। [२] मो.-जिते। [३] ए. कृ. को.-सच्च।
[४] ए. कृ. को. दछिन। [५] मो.-रिटवर।

पृथ्वीराज का नाम सुनतेही जैचन्द का जल उठना।

दूहा ॥ सुनत न्रपति रिपु कौ बयन । तन मन नयन सु रत्त ॥
दिय दरिद्र मंगन घरह । को मेटै विधिपत्त ॥ छं० ॥ ५७८ ॥
रतन बुंद बरषै न्रपति । हय गय हेम सु हद्द ॥
लग्गि न बुंद सु मग्ग तन । सिर पर छच दरिद्द ॥ छं० ॥ ५७९ ॥

पुनः जैचन्द की उक्ति कि हे*बरद्द दुबला क्यों है ?।

मुह दरिद्र अरु तुच्छ तन । जंगलराव सु हद्द ॥
बन उजार पसु तन चरन । क्यौं दूबरौ बरद्द ॥ छं० ॥ ५८० ॥

कवि का उत्तर देना कि पृथ्वीराज के शत्रुओं ने सब घास उजार दी इसी से ऐसा हूं।

कवित्त ॥ चढ़ि तुरंग चहुआन । आन फेरीत परद्धर ॥
तास जुद्ध मंडयौ । जास जानयौ सबर बर ॥
केइक तकि गहि पात । केइ गहि डार मूर तरु ॥
केइत दंत तुछ चिन्न । गए दस दिसनि भाजि [1]डर ॥
भुअ लोकत दिन अचिरिज भयौ । मान सबर बर मरदिया ॥
प्रथिराज षलन षड्डौ जु षर । सु यों दुब्बरौ बरद्दिया ॥
छं० ॥ ५८१ ॥

पुनः जैचन्द का कहना कि और सब पशु तो और और कारणों से दुबले होते हैं पर बैल को केवल जुतने का दुःख होता है। फिर तूं क्यों दुबला है।

हंस न्याय दुब्बरौ । मुत्ति लब्भै न चुनंतह ॥
सिंघ न्याय दुब्बरौ । करी चंपै न कंठ कह ॥

(१) ए. कृ. को. कर।

* "बरद्द" शब्द के दो अर्थ होते है एक बरदाई दूसरा बैल। अब भी बैसवाड़े में बैल को बरधा, बरध या बाधेया इत्यादि कहते हैं।

म्रग्ग न्याय दुब्बरौ। नाद बंधियै सु बंधन ॥
छैल छक्क दुब्बरौ। चिया दुब्बरौ मीत मन ॥
आसाढ़ गाढ़ बंधन धुरा। एकहि गहि इ हरदिया ॥
जंगर जुरारि उज्जर घर न। क्यों दुब्बरो बरहिया ॥ छं० ॥ ५८२ ॥
पुरै न लग्गौ आरि। भारि लद्यौ न पिट्ठ पर ॥
गज्जवार गंमार। गह्यौ गठ्ठौ न नथ्थ कर ॥
भम्यौ न कूप भावरी। कबंहुक सब सेन हत्तौ ॥
पंच धार ललकारि। रथ्थ सथ्था नह जुत्तौ ॥
आसाढ़ मास बरषा समै। कंध न कहों हरहिया ॥
कमधज्ज राव इम उच्चरै। सु क्यौं दुब्बरौ बरहिया ॥ छं० ॥५८३ ॥

पुनः कवि का उपरोक्त युक्ति पर प्रत्युत्तर देना।

फुनि जंपै कविचंद। सुनौ जैचंद राज बर ॥
पुरै आर किम सहै। भार किम सहै पिट्ठपर ॥
नथ्थ हथ्थ किम सहै। कूप भाँवरि किम मंडै ॥
है गै सुर बर सुधर। स्वामि रथ भारथ तंडै ॥
बरषा समान चहुआन कै। अरि उर बरह हरहिया ॥
प्रथिराज षलनि षद्धौ सु षर। सुइम दुब्बरौ बरहिया ॥ छं० ॥५८४

प्रथम नगर नागौर। बंधि साहाब चरिग तिन ॥
सोझंते भर भीम। सीम सोधीत सकल बन ॥
मेवाती मुगल महीप। सब्ब पच्चजु षद्धा ॥
ठठ्ठा कर ढिल्लिया। सरस संमूर न लद्धा ॥
सामंत नाथ हथ्थां सु कहि। लरिकैं मान मरहिया ॥
प्रथिराज षलन षद्धौ सु षर। यौं दुब्बरौ बरहिया ॥ छं०॥५८५ ॥

कवि के वचन सुन कर जैचंद का अत्यंत कुपित होना।

सुनत पंग कवि बयन। नयन अरुत बदन रत्त बर ॥
भुवन बंक रद अधर। चंपि उर उससि सास झर ॥
कोप कलंमलि तेज। सुनत विक्रम अरि क्रम्मह ॥
सगुन विचार कमंध। दिष्षि दिस चंद सु पिम्मह ॥

आदर सुभट्ट राजिंद किय। अंग र ड़ाइ बिसतारि कर ॥
नन मिलत मोहि संभरि धनिय। कहौ बत्त मुष बिरद बर ॥
छं० ॥ ५८६ ॥

कवि का कहना कि धन्य है महाराज आप को। आपने मुझे वरद पद दिया। वरद की महिमा संसार में जाहिर है।

जिहि बरद-ब्बद्धि कै। गंग सिर धरिय गवरि हर ॥
सहस मुष्ष संपेषि। हार किन्नौ भुजंग गर ॥
तिहि भुजंग फन जोर। झोलि रष्यौ वसुमत्तिय ॥
वसुमत्ती उप्परै। मेरगिरि सिंधु सपत्तिय ॥
ब्रहमंड मंड मंडिय सकल। धवल कंध करता पुरस ॥
गरुअत्त बिरद पहुपंग दिय। कृपा करिय भट्टह सरिस ॥
छं० ॥ ५८७ ॥

जैचन्द का कहना कि मुझे पृथ्वीराज किस तरह मिले सो बतलाओ।

दूहा ॥ आदर किय न्रप तास कौं। कह्यौ चंद कवि आउ ॥
[1]मिले मोहि ढिल्लिय धनी। सु वत कहिग स मझाउ ॥ छं० ॥५८८॥

राजा जैचन्द का कहना कि पृथ्वीराज और हम सगे हैं और तुम जानते हो कि सब राजा मेरी सेवा करते हैं।

उनि मातुल मुहि तात कहि। नित नित प्रेम वढंत ॥
जिम जिम सेव स अद्दरिय। तिम तिम दान च्ढंत ॥ छं० ॥ ५८९॥
सोमेसं पानिग्रहन। जब ढिल्ली पुर कौन ॥
हम गुरजन सब बत्त करि। बहु धन मंग सु लीन ॥ छं० ॥ ५९० ॥
कै कमान सह्यौ सु इह। सुन्यौ न विजय नरिंद ॥
सब सेवहि पहु हमहि न्रप। सो तुम सुनि कविचंद ॥छं०॥५९१॥

[1] मो.-मिले न मुहि।

कविचन्द का कहना कि हां जानता हूं जब आप दक्षिण देश को दिग्विजय करने गए थे तब पृथ्वीराज ने आपके राज्य की रक्षा की थी।

पद्धरी ॥ अवसर पसाउ सुनि पंगराव। तुअ तात मात द्रिगविजय चाव ॥
तुम दिवस लग्गि दच्छिनह देस। तब लग्ग मेछ [1]इच्छह प्रवेस ॥
छं० ॥ ५९२ ॥

सामंत नाथ तपि तोन बंधि। संहऱ्यौ साहि सब सेन संधि ॥
दामिन्न रूप छत्री कुलाइ। सामंत स्वर दुहु विधि दुबाइ ॥
छं० ॥ ५९३ ॥

अन पुच्छि करै ग्रिह राज काज। कुल छत्र पंड चहुआन लाज ॥
[2]सिंगिनि समथ्थ सर सबद बेध। जिन करहु राव उन मिलन षेध॥
छं० ॥ ५९४ ॥

हिँदवान जेन लग्गीय धाय। उहि छिच कौंन द्रिग विजै राइ ॥
मानिक्कराव दुअ बंस सुद्ध। रघुवंसराव जिमनि विन दुद्ध ॥
छं० ॥ ५९५ ॥

मुक्कयौ तोहि दिष्पनि बरीति। राज सु जेम मंन्यौ प्रवीति ॥
.... । .... ॥ छं० ॥ ५९६ ॥

जैचन्द का कहना कि यह कबकी बात है आह यह उलहना तो आज मुझे बहुत खटका।

कवित्त ॥ कहै पंग सुनि चंद। येह वितक किम वित्तौ ॥
किम गोरी सुरतान। भार भर थंभर जित्तौ ॥
कौंन समै इह बत्त। घत्त षेल्ली किम गोरी ॥
यादिन ही मुहि परम। परी बत्ता सब भोरी ॥
कहि कहि सु चंद मम ढील करि। राज पयंपत पुनह पुन ॥
[3]तब कही चंद वचनह विवर। एह कथ्थ संमूल सुनि ॥ छं० ॥५९७॥

(१) ए. कृ. को.-इच्छह। (२) मो.-सग्गनि। (३) ए. कृ. को.-तब कहा चंद वरदाइ ने।

कवि का उक्त घटना का सविस्तर वर्णन करना।

संवत तीस चिआर। विजय मंड्यौ सुपंग पह॥
जीति देस सब अवनि। लीन करमध्य हिंदुसह॥
दिसि दच्छिन संपत्त। कोपि गोरी सहाब तब॥
रचिय बुद्धि बर अप्प। बोलि उमराव मीर सब॥
तत्तार षान पुरसान षां। षां रुस्तम [1]कालन गनिय॥
जेहान मीरै मारूफ षां। बोलि मंत मंचह मनिय॥ छं०॥ ५९८॥

शहाबुद्दीन का कन्नौज पर चढ़ाई करने का मंत्र करना।

गुभझ महल साहाब। दीन सुरतान सपत्तौ॥
मंडि मंत एकंत। बोलि उमरावन तत्तौ॥
इह काफर बरजोर। जीति अवनीय अप्प किय॥
तेज अनंत मति अनँत। सेन सज्जै भर बंकिय॥
आए सु साज कंगुर करषि। करन सेव को देन कर॥
बर जोर हिंदु सा दीन पहु। घटै न रंचि सु बुद्ध [2]नर॥
छं०॥ ५९९॥

मंत्रियों का कहना कि दल पंगुरा बड़ा जबरदस्त है।

कहिय षान तत्तार। माहि साहाब दीन सुनि॥
विषम जोर बर हिंद। जीति पहुपंग अप्प फुनि॥
मिले सेन सुरतान। [3]मलिक अनेक द्रव्य भर॥
द्रव्य पानि पथ्थार। संकरि सब वस्य अप्प पर॥
गहि कोट सज्जि गज्जन सुबर। आतम चरित [4]अनेक करि॥
आवंत पंग साधर सयन। [5]लरि मनमध्य पियान अरि॥
छं०॥ ६००॥

(१) ए. कृ. को.-तालन यह नाम महोबे के चंदेल राजा परिमाल के दरबारी एक मुसलमान सरदार का भी है।

(२) ए. कृ. को. बर। (३) ए. कृ. को. मिलक।

(४) ए. कृ. को.-अनंत। (५) ए. कृ. को. जीर मनमथ पिय थान लरि।

शाह का कहना कि दिल छोटा न करो दीन की दुहाई बड़ी होती है।

कहै साहि साहाब। अहो तत्तारषान सुनि ॥
षुरासान रुस्तमां। जमन मारूफ षान गुनि ॥
काल जमन जेहान। सुनौ बर बत्त चित्त तुम ॥
मंत सत्त सुद्धरौ। दीन मन हीन करौ क्रम ॥
सजि सेन चढ़ौ कनवज्ज धर। भंजि देस सम पुर सयल ॥
हरि रिद्धि बंधि नर नारि धर। आतस जालिय अप्प बल ॥
छं० ॥ ६०१ ॥

दूहा ॥ सज्जि सेन [1]साहन[2]समुद। गज्जनवै सुरतान ॥
बोलि मीर गंभीर भर। भंजि देस थन थान ॥ छं० ॥ ६०२ ॥

शहाबुद्दीन का हिंदुस्तान पर चढ़ाई करना और कुंदनपुर के पास रयसिंह बघेले का उसे रोकना।

पद्धरी ॥ मिलि सेन साहि आलम असंष। गंभीर मीर दिढ़ तीर नंषि ॥
मेमंति दंति घन बज्जि सार। आगाढ़ स्याम बद्दर सु ढारि ॥
छं० ॥ ६०३ ॥

बर तुरिय तेज अग्गल उभ्भाव। उत्तंग अंग [3]जिम वेग वाव ॥
सजि लष्ष चढ़े गोरीस सेन। रज्जि सु बाज बज्जे सु गेन ॥ छं० ६०४ ॥

धज नेज झंड हल्ले अनंत। बहुरंग अंग लभ्भै न अंत ॥
षह पूरि धूरि धुंधुरिग भान। दिसि विदिसि पूरि मंनिय नमान ॥
छं० ॥ ६०५ ॥

गहरह सुमंत सुनियै न कान। संचार बत्त संचरहि थान ॥
संपत्त सेन कनवज्ज देस। भंजिए नयर पुर ग्रभनेस ॥ छं० ६०६ ॥
बंधियहि बांधि गोचीय बाल। धर जारि पारि किज्जै विहाल ॥
.... । .... ॥ छं० ॥ ६०७ ॥

(१) ए. कृ. को.-साहिन। (२) ए.-समुह। (३) ए. कृ. को.-तजि।

कवित्त ॥ कुंदन पुर वघघेल । राय रयसिंघ सिंघ रन ॥
आगम साहि सहाब । सेन सज्जिय [1]बीरह तिन ॥
सहस उभै साहन । समुंद दस सहस पयभ्भर ॥
बंधि नारि नग ढारि । रह्यौ निज सेन सज्जि बर ॥
आवंत सेन ढुक्यौ सकल । भयौ जुड हरि उग्ग मनि ॥
परसै न सुदल रोक्यौ सकल । भयौ जुड अदभुत्त तिन ॥ छं० ६०८ ।

हिन्दू मुसलमान दोनों सेनाओं का युद्ध वर्णन ।

भुजंगी ॥ चली अग्र चौकी सु साहाब सायं । अगें गज्ज चालीस मत्ते महायं ॥
अगें हथ्थनारी उभारी उतंगा । सयं सत्त सासह वादी सु चंगा ॥
छं० ॥ ६०९ ॥

सहस्संच पंचं गजं बाज पूरं । महाबीर बाजिच बज्जे करूरं ॥
मिली फौज हिंदू तुरक्कीस तेजं । कहै सूर रैसिंघ आपं अजेजं ॥
छं० ॥ ६१० ॥

सरं टून छुट्टै सुभारं उभारं । सरा पंजरं पंथज्यों पंड चारं ॥
हकै हक्क वज्जी भरं टून टूनं । चपे सिंघ न्रसिंघ हक्कं रऊनं ॥
छं० ॥ ६११ ॥

भगी साहि चौकी चंपे सिंघ रायं । परे मीर भीरं सयं तीन घायं ॥
महा आय गज्जे सु मैदान सिंघं । भगे मीर मारूफ करि जेम जंगं ॥
छं० ॥ ६१२ ॥

हके कढ्ढि तत्तार कत्तार तिष्पं । भली मुच्छ भौहैं भई रत्त अंषं ॥
करै फौज अग्गै चल्यौ गज्जि गोरी । चवै दीन दीनं लषै झल्लि घोरी ॥
छं० ॥ ६१३ ॥

मिलै आवधं मीर हिंदू करारे । धुरं ध्रुव्व तुट्टै उभै सार धारै ॥
झरं आवधं आवधं झाक वज्जै । बजै बीर बाजिच गोमेन गज्जै ॥
छं० ॥ ६१४ ॥

धरा कार [2]लोहं रसं रुद्र मत्तं । उभै हार मन्नै नहीं आय अंतं ॥

(१) ए.-बारह । (२) ए.-मोहं ।

मिली दिट्ठ तत्तार रैसिंघ दूनं। मिले घाय सायं घुले घग्ग जूनं॥
छं० ॥ ६१५ ॥

करै दिट्ठ तत्तार कम्मान मुट्ठी। कसे बान गोरी महा दट्ठ दिट्ठी॥
लगे उर सौंसंग फुट्टे परारं। हँसे भार संगी हयौ षान सारं॥
छं० ॥ ६१६ ॥

लगे बाहु ग्रीवा समं घाय सालं। पन्यो षान तत्तार बाजी बिहालं॥
हयो सिंघ कालन्न मीरं सनेजं। पन्यो राय रनसिंघ रन ऋंत सेजं॥
छं० ॥ ६१७ ॥

भगो फौज हिंदू जुधं जीति मीरं। धन्यौ षान तत्तार भोरी सु तीरं॥
छं० ॥ ६१८ ॥

मुसलमानी सेना का हिन्दू सेना को परास्त कर देश में लूट मार मचाते हुए आगे बढ़ना।

दूहा ॥ परे हिंदु सय तीन धर। सत्त पंच पर मीर ॥
गुर गुस्ताना नंचिया। बजि बाजिच गुहीर ॥ छं० ॥ ६१९ ॥

मंझ ढाल तत्तार षां। धरि आयौ साहाब ॥
साज सज्जि चल्यौ सु फुनि। जनु उलौ [1]दरियाव ॥ छं० ॥ ६२० ॥

भंजि रयन पुर लूटि निधि। बजि बाजिच निहाय ॥
अलहन सागर उत्तरिय। बंधि तत्तार सु घाय ॥ छं० ॥ ६२१ ॥

नागौर नगर में स्थित पृथ्वीराज का यह समाचार पाकर उसका स्वयं सन्नद्ध होना।

दिसि दिसि धाह जु संचरिय। भगिय प्रजा तजि देस॥
सुनिय बत्त नागौर पहु। चढ़ि प्रथिराज नरेस ॥ छं० ॥ ६२२ ॥

(१) मो. दधि आव।

पृथ्वीराज का सब सेना में समाचार देकर जंगी तैयारी होने की आज्ञा देना।

कवित्त ॥ सुनिय बत्त प्रथिराज । चल्यौ चहुआन महाभर ॥
बोलि कन्ह चहुआन । राय बरसिंघ सिंघ बर ॥
बोलि चंदपुंडीर । बोलि बघेल्ल सु लष्षन ॥
षोहानौ आजानबाह । मिलयो सु ततष्षिन ॥
गुज्जरह राम जिन बंध सम । चालुक बीझ सु भीम भर ॥
हाहुलिराव हम्मीर हर । मिलिय सेन दस सहस सर ॥ छं० ६२३॥

दूहा ॥ अवर सेन सामंत मिलि । चल्यौ राज प्रथिराज ॥
गाजि गुहिर बाजिच बजि । सज्जि सयन [1]जुध साज ॥ छं०॥६२४॥

कुमक सेना का प्रबंध।

कवित्त ॥ बोलि चंद चंडौस । दीन आयस प्रथिराजहु ॥
तुम षट्टूपुर जाहु । [2]जहां तिथि मंचिय काजहु ॥
लै आवहु कैमास । राइ चामंड महाभर ॥
हैवर पष्षर सूर । सज्जि आतुर सु जुझ्झ हर ॥
कहियौ सु बत्त साहाब सब । भंजि देस कनवज्ज इन ॥
षिन पंग हिंदु मिरजाद मिटि । आवहु आतुर षेत रिन ॥
छं० ॥ ६२५ ॥

पृथ्वीराज का सारुंडे के मुकाम पर डेरा डालना जहां से शाही सेना केवल २८ कोस की दूरी पर थी।

दूहा ॥ पठय चंद षट्टूपुरह । चल्यौ राज चहुआन ॥
आतुर बहिय अवधि न्रप । सारुंडै सुसथान ॥ छं० ॥ ६२६ ॥
आइ चंद षट्टूपुरह । कहिय षबर कैमास ॥
चल्यौ सु अप्पन सुनत हीं । आनि संपतौ पास ॥ छं० ॥ ६२७ ॥

---

(१) ए.-सुत्र ।   (२) ए. कृ. को. जहां थिति मांची कैमासह ।

सारुंडै चहुआन पहु। संपत्ती बरबीर॥
सुनिय बत्त [1]सुरतान की। ओजन सित्तह [2]तीर॥ छं० ॥ ६२८॥

पृथ्वीराज की सेना का ओज वर्णन।

भुजंगी॥ स्वयं चढ्ढियं सेन प्रथिराज राजं। बजे बीर बाजित्र [3]आयास गाजं॥
धुनं सीस सामंत सूरं सुधारे। भरं बंधियं राग रज्जे करारे॥
छं० ॥ ६२९॥
तुरी सद्द उत्तंग धुंधै धरत्ती। मनो छुट्टियं मेघ सेना सुरत्ती॥
पुरं जाइ संपत्त सो संकराई। सबें उत्तरे बाग मध्ये सु भाई॥
छं० ॥ ६३०॥

चंद पुंडीर का कहना कि रात को छापा मारा जाय।

दूहा॥ चवै चंड पुंडीर तब। अहो राज चहुआन॥
निसा जुद्ध सज्जिय समय। भंजिय सेन परान॥ छं० ॥ ६३१॥

पृथ्वीराज का सात घड़ी दिन रहते से धावा करके आधी रात के समय शाही पड़ाव पर छापा जा मारना।

कवित्त॥ मानि मंत चहुआन। मंत पुंडीर चंद कहि॥
घटिय सत्त दिन सेष। राज सज्जिय सु सेन सह॥
चल्यौ राज प्रथिराज। नद्द नीसान बीर सुर॥
कौन दान तं हान। सूर सामंत सब्ब भर॥
सन्नाह सब्ब सेना धरिय। निसा अद्ध पत्त सु पुर॥
हल्लाल हल्लि सय सत्ति दुति। चढ़ि चौकी गोरी गहर॥छं०॥६३२॥
दूहा॥ चौकी चढ़ि षुरसान षां। सहँस सत्ति हय रज्जि॥
उभय सत्त गज मद गहर। गुरु सनाह हय रज्जि॥ छं० ॥ ६३३॥
चोटक॥ चढ़ि सज्जि सबैं प्रथिराज भरं। पर चौकिय [4]चंपिय हक्कि हरं॥
भर बज्जिय आवध रीठ सुरारि। मनों बन कूटहि कढ्ढि कवारि॥
छं० ॥ ६३४॥

---

(१) ए. कृ. को.- चहुआन। (२) मो.-नीर।
(३) ए. कृ.-अकास। (४) मो.-चंपय।

दोनों सेनाओं का घमासान युद्ध होना और मुसल्मानी सेना का परास्त होना ।

हहक्किय चंपिय सूर सुधीर । महा भर सामंत विक्रम बीर ॥
महा बर चंपिय चौकिय काल । ठिले भर भग्गिय मिच्छ बिहाल ॥
छं० ॥ ६३५ ॥

कईकह मुक्क सु मज्झि करार । सुन्यौ सुरतान भजे दल भार ॥
बजे मुष मारि चँपे चहुआन । लरे मझि अप्प मेछ अपान ॥
छं० ॥ ६३६ ॥

हवक्कहि धक्कहि सेलहि संग ।पटा भर झार विडारिय अंग ॥
वहै किरमाल सुचाल सुभेद । मनों सुभ सार करव्वत छेदि ॥
छं० ॥ ६३७ ॥

परे सिर नंचत उट्ठक मंध । करे रिनषंड सु धार विसंद ॥
चलक्कत श्रोन नदी जिम षाल । परे गज बाल भरे रन ताल ॥
छं० ॥ ६३८ ॥

करव्वत केस सु एकहि एक । परे रन रिंघहि तुट्टि सुतेक ॥
तरफ्फत उट्ठन लग्गत कंठ । सुछुट्टिय घाव करै दिठ मुंठि ॥
छं० ॥ ६३९ ॥

लरक्कर लग्गहि कंठ करीति । मनों मतवार लरै रस मीत ॥
किनक्कहि बाजिय बीर सुभार । [1]फिरें गज भीर करंत चिकार ॥
छं० ॥ ६४० ॥

लष्यौ पतिसाह सु चंद पुंडीर । हयौ हिय सेल भगी भर भीर ॥
भग्यौ रन सेन सहाब सचल्लि । निकस्सिय सक्कि दिसा [2]अवदस्सि ॥
छं० ॥ ६४१ ।

रष्यौ पतिसाह इकल्लो बीर । भयो जिम मीन गये सर तीर ॥
धरी गर सिंगनि चंद पुंडीर । लयो पतिसाह सु बंधिय बीर ॥
छं० ॥ ६४२ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-परे । (२) ए. कृ. को.-अवदिस्स ।

चंद पुंडीर का शाह को पकड़ लेना।

दूहा॥ भाग्यौ सेन साहाब गिरि। इकल्लौ गहि सार॥
गह्यौ चंद पुंडीर परि। हय कंधहि दिय डारि॥ छं०॥ ६४३॥
भगे सेन साहाब रन। उग्गि सूर सुविहान॥
अठ सहस धर मीर परि। पंच कोस रन थान॥ छं०॥ ६४४॥

पृथ्वीराज का खेत झरवाना और लौट कर दर पुर में मुकाम करना।

सोधि सु रन प्रथिराज पहु। [1]दरपुर कीन मुकाम॥
सुद्धि रिद्धि चिय गोस धन। जुरि जस लद्धौ ठाम॥ छं०॥ ६४५॥

पृथ्वीराज का शाह से आठ हजार घोड़े नजर लेना।

दंड कियौ सुरतान सिर। अट्ठ सहस हय सब्ब॥
घत्ति सुषासन पट्ठ घर। गज्जिय पिथ्थ सु गब्ब॥ छं०॥ ६४६॥

कविचंद का कहना कि पृथ्वीराज ने इस प्रकार शाह को परास्त कर आप का राज्य बचाया।

इम गज्जनवे गंजि पिथ। जस लिन्नौ पल मारि॥
सरवर सक संभरि धनी। कोइ न मंडौ रारि॥ छं०॥ ६४७॥

जैचन्द का कहना कि पृथ्वीराज के पास कितना औसाफ है।

कितक सूर संभरि धनी। कितक देस [2]दल बंधि॥
कितक हथ्थ रन अग्गरौ। हसि नृप बूझयौ चंद॥ छं०॥ ६४८॥

कवि का उत्तर देना कि उनकी क्या बात पूछते हैं पृथ्वीराज के औसाफ कम परंतु कार्य्य बड़े हैं।

---

(१) दरपुर (या) हरपुर। (२) ए. कृ. को.-बल।

कवित्त ॥ कितक सूर संभरि नरेस । अंदेस कहत करि ॥
कितक देस बल बंधि । [1]राव रावत्त छत्रधर ॥
कितक को स मेंगल मदंध । तोषार भार भर ॥
कितइक गहि करिवार । कलह विहारि बीर भर ॥
कित इक मौज विद्रन बहत । अति पर आगम जानिबै ॥
उग्गो न अरक तित्तह लगै । तिमिर तितें बल मानियै ॥
छं० ॥ ६४९ ॥

पृथ्वीराज का पराक्रम वर्णन ।

दूहा ॥ सूर जिसौ गयनह उवै । दल बल मारन आस ॥
जब लग अरि कर उट्ठवै । तब लग देय पचास ॥ छं० ॥ ६५० ॥

कवित्त ॥ सूर तेज चहुआन । हनत गज कुंभ झार षग ॥
विय विहंड होइ षंड । परत धर रत्त धार जग ॥
दल बल धरै न आस । तेज आजानबाह बर ॥
सपत नाग सर पार । तार [2]कोवंड तजै कर ॥
मत्त दुरद रद सह वर । पारि भारि मध्यै धरनि ॥
बिसगो बिकार उब्भारि पटु । मालकार नंषे करनि ॥छं०॥६५१॥

जैचन्द का पृथ्वीराज की उनिहार पूछना ।

दूहा ॥ बिहसत कवि बुल्ल्यौ बयन । इह लच्छन छिति है न ॥
सूभ सु मूरति लच्छिनह । को दिषवों पहु नेंन ॥ छं० ॥ ६५२ ॥
मुकट बंध सब भूप हैं । सब लच्छिन संजुत्त ॥
कौन बरन उनहार किहि । कहि चहुआन सु उत्त ॥छं०॥६५३॥

कवि चन्द का पृथ्वीराज की आयु वल बुद्धि और शकल सूरत का वर्णन करके सच्चे पृथ्वीराज को उनिहारना ।

कवित्त ॥ बत्तीसह लच्छिनह । बरस छत्तीस मास छह ॥
इस दुज्जन संग्रहत । राह जिम चंद सूर ग्रह ॥

(१) ए. कृ. को. राह । (२) ए. कृ. को.-कोदंड ।

एक छुटहि मद्दिदान। एक कुट्टहिति दंड भर॥
एक गहहि गिर कंद। एक अनुसरहि चरन परि॥
चहुआन चतुर चावद्दिसहि। हिंदवान सब हथ्थ जिहि॥
इम जंपै चंद बरद्दिया। प्रथीराज उनहारि इहि॥ छं०॥६५४॥

इसौ राज प्रथिराज। जिसौ गोकुल महि कन्हइ॥
इसौ राज प्रथिराज। जिसौ पथ्थर अहि वन्नइ॥
इसौ राज प्रथिराज। जिसौ अहंकारिय रावन॥
इसौ राज प्रथिराज। राम रावन संतावन॥
बरस तीस छह अग्गरौ। लच्छिन सब संजुत्त गनि॥
इम जंपै चंद बरद्दिया। प्रथीराज उनहारि [1]इनि॥ छं०॥६५५॥

जैचन्द का कुपित होकर कहना कि कवि वृथा बक बक करके क्यों अपनी मृत्यु बुलाता है।

दिष्षि नयन कमधज्ज। नरेस अंदेस हुअ वर॥
दंग दहन जीरन जरंत। परचंत अंत पर॥
श्रुत्ति अरुन मुष अरुन। नेन आरत्त प्रत्त सम॥
पानि मींडि दबि अधर। दंत दब्बंत तेज तम॥
कविचंद बहुत बुल्लहु बयन। छित्ति अछिति षची कवन॥
चल दल समान रसना चपल। विफल बाद मंडौ मवन॥छं०॥६५६॥

पृथ्वीराज और जैचंद का दूर से मिलना और दोनों का एक दूसरे को घूरना।

दूहा॥ देषि थवाइत थिर नयन। करि कनवज्ज नरिंद॥
नयन नयन अंकुरि परिय इक थह दोइ मयंद॥ छं०॥६५७॥

कवित्त॥ दिष्षि नयन रा पंग। दंग चहुआन महा भर॥
अंकुरि नयन विसाल। झाल झारंत रंच उर॥

(१) ए. कृ. को.-इहि।

इक बार कंठीर । [1]चल न आकज्ज करत तमि ॥
बर बारुनी समग्ग । मत्त मातंग रोस [2]जमि ॥
कमधज्जराज फिरि चंद कहु । कहत बत्त संभरधनिय ॥
बर बर कवित्त कवि उच्चरिय । अब सुकित्ति कथ्थौ घनिय ॥
छं० ॥ ६५८ ॥

जैचन्द का चकित चित्त होकर चिन्ताग्रस्त होना और कविचंद से कहना कि पृथ्वीराज मुझ से मिलते क्यों नहीं।

अति गँभीर पहु पंग । मन सु दब्बै द्रिग [3]लज्जइ ॥
कवन काज छग्गरह । पानि ग्राही भट कज्जइ ॥
कित्त काज करि बैंन । बानि बंदन बरदाइय ॥
श्रवन राग हम तुमै । दिष्ट गोचर तत लाइय ॥
संभरै जंम देषै सुभट । अंत निमत पुज्जै भिलत ॥
सोमेस पुत्त तुम हित्त करि । क्यौं मुझझहि नाहीं [4]मिलत ॥
छं० ॥ ६५९ ॥

कवि का कहना कि बात पर बात बढ़ती है।

दूहा ॥ मत मंतौ लहु मंत कहि । नीतें नीति बढंत ॥
जिम जिम सैसव सो दुरै । तिम तिम मदन चढ़ंत ॥ छं० ॥ ६६० ॥

कवि का कहना कि जब अनंगपाल पृथ्वीराज को दिल्ली दान करने लगे तब आपने क्यों दावा न किया।

कवित ॥ चहुआना कुल रीति । ध्रम्म आनन सोमी बर ॥
बर सोमेसर सीस । तिलक कहुच अनंग करि ॥
अप्प जानि दोहित्त । राज ढिल्ली दे हथ्था ॥
प्रजा [5]लोक परधान । राय सह तूंअर कथ्था ॥

(१) मो.-चलन । (२) ए. कृ. को.-जिमि । (३) ए. कृ. को.-कज्जह, लज्जह ।
(४) ए. कृ. को.- भिलत । (५) ए. कृ. को.-लोइ ।

तिन्नेंति वीर तिथ्थह गयौ। रहसि फेरि विष बत्त दिय ॥
जे मुरिय न्रपति कविचंद (१)कहि। तब जोगिनि पुर छल न लिय ॥
छं० ॥ ६६१ ॥

जैचन्द का कहना कि अनंगपाल जब शाह की सहायता ले कर आए थे तब शाही सेना को मैं नें ही रोका था।

अनंग पाल चक्कवै। साहि। गोरी पुकारै ॥
हय गय दल चतुरंग। मीर मीरह सब्बारै ॥
में बल रुकि साहिब्ब। सेन अग्गा षुरसानी ॥
बर अगस्ति कमधज्ज। समुद सोषै तुरकानी ॥
मी सरन रहन हिंदू तुरक। अग्गि जानि तिहि मंडयौ ॥
विग्गारि जग्ग चहुआन गय। हिंदु जानि मैं छंडयौ ॥छं०॥६६२॥

कवि का कहना कि यदि आपने ऐसा किया तो राजनीति के विरुद्ध किया।

कोन लोइ जग्गंते। बसत अप्पनी गमावै ॥
कोन जोर रस जोइ। दई जन कोन छलावै ॥
को तात बैर दुज्जनै। दया मानव को मुक्कै ॥
को विषहर वर डसै। दाव को घावह चुक्कै ॥
पहुपंग जानि चहुआन अरि। बसि परि सकै न मुक्कियै ॥
पुज्जै न सुबल कर चढ़त नहिं। घात अप्प अप चुक्कियै ॥
छं० ॥ ६६३ ॥

जैचन्द का पूछना कि इस समय सर्वाङ्ग राजनीति का आचरण करने वाला कौन राजा है।

दूहा ॥ हँसि पुच्छौ पहुपंगने। तुम जानौ बहु मित्त ॥
को राजन तकि काल रत। को रत कोन विरत ॥ छं० ॥ ६६४ ॥

(१) मो-मुनि।

कवि का कहना कि ऐसा नीति निपुण राजा पृथ्वीराज है जिसने अपनी ही रीति नीति से अपना बल प्रताप ऐश्वर्य्य आदि सब बढ़ाया।

पद्धरी ॥ संभरिय पंग आयस प्रमान। बोलै सु छंद पाधरी मान ॥
संभरि सु बीर सुनि तत्त राज। नीतें सु बंध सब चलन साज ॥
छं० ॥ ६६५ ॥

नीतिय सु लहिय लहौ सु राज। धन ध्रम्म किति तिहिं तेज साज ॥
जीवन सु नीति नृप जमिन पीन। वह मरन बीर कुल ध्रंमहीन ॥
छं० ॥ ६६६ ॥

पुनः कवि का कहना कि आपका कलियुग में यज्ञ करना नीति संगत कार्य्य नहीं है।

उच्चरै चंद बरदाइ तब्ब। राज ह्न जग्य को करै अब्ब ॥
बलिराय प्रथम जुग जग्गि मंडि। बर बीर बंधि पाताल छंडि ॥
छं० ॥ ६६७ ॥

कट्टन कलंक ससि मंडि जग्ग। गज्जरे कुष्ट वर बीर अंग ॥
न्नघुराइ जग्य मंडे प्रमान। काकुष्ट धरिग तन कोपि ध्यान ॥
छं० ॥ ६६८ ॥

इच्छियै इच्छ गुर मंडि बीर। नव सीय दोष जज्जर सरीर ॥
श्री राम जग्य मंड्यौ विचारि। कुब्बेर बरषि सोव्रन्न धार ॥
छं० ॥ ६६९ ॥

मह दान कलहि षोडस्स होइ। राजह्न जग्य मंडै न कोइ ॥
सुन्नै सरूप पंगु लभ्भ कीय। देवरह ध्रम्म बड़ बंध कीय ॥
छं० ॥ ६७० ॥

राजह्न जग्य को करन भाय। नन होय पंच कलिजुग्ग राइ ॥
*सतजुग्ग जग्य सुत कवल कीन। हाटक सुमेर दच्छिना दीन ॥
छं० ॥ ६७१ ॥

* यहां से मो. प्रति में पाठ नहीं है आवांतर कथा की कल्पना होने से कुछ भाग के क्षेपक होने का भी संदेह है।

संकलित नम्म तिहि संग चार। लूटंत विप्र हरि हथ्थ हारि ॥
ता पच्छ जग्य रचि मरुत रज्ज। दानह सु दीन वेपार दुज्ज ॥
छं० ॥ ६७२ ॥

नंषिय सु मग्ग लगि हेम भार। परि साठि सहस पंकति पहार ॥
गो दान दीन फुनि तिहि अछेह। तारक गंग रज बुंद मेह ॥
छं० ॥ ६७३ ॥

आरंभ जग्य फुनि राज ऐल। तसु दान वेद कहि सकि न सैल ॥
नवषंड पूरि वेदी रवंन। डाभाग्र रहि न षाली अवंनि ॥
छं० ॥ ६७४ ॥

करि जग्य सेत कीरत्ति भूप। दस सहस नदी चल्लाय नृप ॥
सक्कि सक्किय न झेल आहुत्ति वन्हि। तजि कुंड गइय ब्रह्मा सरन्नि॥
छं० ॥ ६७५ ॥

पथ्थहि चराइ षंडीव अग्न। मिट्टिय अजीर्न घन दिनौ तव्व ॥
बलिराइ जग्य रच्चिय जिवार। उतपन्न भ्रंम वामनति वार ॥
छं० ॥ ६७६ ॥

थपि जग्य जुधिष्टिर राज पंड। पनवार अप्प श्री कृष्ण मंडि ॥
गुहरिय तब्ब दूह चंद भट्ट। जैचंद राइ सौं विविध थट्ट ॥
छं० ॥ ६७७ ॥

राजा जैचन्द का कवि को उत्तर देना।

सुनि श्रवन जंपि पहुपंग ताम। पर होड़ करन कहु कौन काम ॥
उनमान अप्प अप्पनि अवन्नि। रष्षहि जु नाम सोइ भूप धन्नि ॥
छं० ॥ ६७८ ॥

*साभ्रम्म होइ जोगिन पुरेस! आमंत निरषि संचौ नरेस ॥
नीतह सु भंग किट्टी सुरज्ज। भनतंत जोति विच्चरै सज्ज ॥
छं० ॥ ६७९ ॥

तजि नीत सोय अप इष्ट जान। कट्टै जु अद्ध दिन घरि प्रमान ॥
जुध सथ्थ साइं मुक्कियै अंग। रष्षियै भ्रंम साईं सुरंग ॥
छं० ॥ ६८० ॥

---

* यहां से मो.-प्रति का पाठ पुनः आरंभ होता है।

बिन राजनीति ग्रह औ धरज्ज । घट घटहि नीर छिन गलति सभ्भ॥
बिनै राजनीति दुति तजिय ओन्ह । सोब्रन्न प्रतिम मंडिये बैन ॥
छं० ॥ ६८१ ॥

इह सुनिय बैन पहुपंग बीर । मुष तत्त मुष्ष कलह सरीर ॥
न्त्रिप कलह साउ जेही जनाय । कालंत कहिय कल किति गाय ॥
छं० ॥ ६८२ ॥

चाटंक त्रिमुष घटि कला जाइ । आनौ सुकाल छल हीन ताय ॥
रत गुन अरत्त रत्ते न मोह । उप्पंम चंद जंपै सद्रोह ॥छं०॥६८३॥
रँग रंग गत्त मज्जीठ मन्न । कस्सूँभ रंग रँग मोह पन्न ॥
बर बिरत ओन लच्छिन प्रमत्त । नव नवी वाम इच्छा रमत्त ॥
छं० ॥ ६८४ ॥

[1]सातुक्क सक्कइं हित बढंत । आतंम मोह माया चढ़ंत ॥
दिष्षौ ज स्रग्ग खिला सरंत । संसार कूप रस में परंत ॥
छं० ॥ ६८५ ॥

राजा जैचन्द का कहना कि कवि अब तुम मेरे मन की बात बतलाओ ।

दूहा ॥ सत सुवत्त कविचंद मुष । तब पुच्छिय इह बत्त ॥
हौं पुच्छो चाहुं सुमति । सो जंपौ कवि तत्त ॥ छं० ॥ ६८६ ॥

कवि का कहना कि आप मुझे पान दिया चाहते हैं और वे पान रनिवास से अबिवाहिता लौंडियां ला रही हैं ।

जे त्रिय पुरिष रस परस बिन । उठिगराइ सु निसान ॥
धवलग्रह संपन्न कहि । भट्टहिं अप्पन पान ॥ छं० ॥ ६८७ ॥

राजा का पूछना कि तुमने यह कैसे जाना ।

महल अदिट्ठ त्रिय दिट्ठ सुत्र । क्यों ब्रन्नै बर कब्बि ॥
सरसैं बुधि ब्रन्नन कर्यौ । मुष दिष्षे नन रब्बि ॥ छं० ॥ ६८८ ॥

(१) ए. कृ. को. सक्क हितहि बढंत ।

कवि का कहना कि अपनी विद्या से।

कछुक सयन नयनइ करिय। कछु किय बयन बषान ॥
कछु इक लच्छिन विचार किय। अति गंभीर सु जानि ॥ छं० ॥ ६८९ ॥

कवि का उन पान लाने वाली लौंडियों का रूप रंग आदि वर्णन करना।

तिन कइ अथ्थि सु इथ्थ किय। जे राजन ग्रइ अच्छि ॥
ते सुंदरि सब एक सम। चली सुगंधनि कच्छि ॥ छं० ॥ ६९० ॥
षोड़स बरस समुच्च ग्रिइ। ले सब दासि सु आनि ॥
मनों सभा सुरलोक की। चलि अच्छरिय समान ॥ छं० ॥ ६९१ ॥

उक्त लौंडियों की शिख नख शोभा वर्णन।

अर्धनराज ॥ विहिंग भंग जो पुरं। चलंत सोभ नूपुरं ॥
अनेक भंति सादुरं। अषाढ़ सोर दादुरं ॥ छं० ॥ ६९२ ॥
सुधा समान सथ्थही। सुगंध इथ्थ इथ्थही ॥
चरन रत्त सोभई। उपम्म कब्बि लोभई ॥ छं० ॥ ६९३ ॥
बरन्न रत्त श्रीर जे। कसीस कासमीर जे ॥
चरन्न एड़ि रत्त ए। उपम्म कब्बि पत्त ए ॥ छं० ॥ ६९४ ॥
सु बंक चंद अंकनं। सु राइ तेज संकनं ॥
सुसंक जीवनं टरै। सुनें सरूप में करै ॥ छं० ॥ ६९५ ॥
नषादि आदि उप्पनं। सु काम केलि द्रप्पनं ॥
चरन्न इंस सद्दही। उपम्म कब्बि लद्दही ॥ छं० ॥ ६९६ ॥
सुनंत छोड़ छंडयौ। चरन्न सेव मंडयौ ॥
सु पिंडि बाल सोभई। सु रंग रंग लोभई ॥ छं० ॥ ६९७ ॥
सुरंग कुंकुमं भरी। दराद काम उत्तरी ॥
सुरंग जंघ ताल से। कि काम थंभ आरुसे ॥ छं० ॥ ६९८ ॥
नितंब तंब स्याम के। मनो सयन्न काम के ॥
लवन्न भंग गुंजही। सुगंध गंध पुंजही ॥ छं० ॥ ६९९ ॥

दिषंत डोर कंकनं । कटिं प्रमान रंकनं ॥
टिकै न दिट्ठ लंकयौ । विलोकि अष्षि अंकयौ ॥ छं० ॥ ७०० ॥

उतंग तुंग तामयौ । कि भ्रम्म लोभ कामयौ ॥
सु रोमराजि दिट्ठयौ । हसंत बेनि पिट्ठयौ ॥ छं० ॥ ७०१ ॥

सु चंपि चंद गाढयौ । विपास काम चाढ़यौ ॥
अुअन हीय सोभई । सु सिद्ध मैंन लोभई ॥ छं० ॥ ७०२ ॥

ग्रहन्न रंग चालई । सु लज्जि लंक हालई ॥
उठंत कुच्च कंचुअं । कि तंबु काम रच्चयं ॥ छं० ॥ ७०३ ॥

बजे प्रमान सज्जनं । सुमेर श्रद्ध भंजनं ॥
जु पोत पुंज सोभयौ । सु चित्त काम लोभयौ ॥ छं० ॥ ७०४ ॥

सु जित्ति राह थानयौ । सु चंद बैठि मानयौ ॥
जराइ चौकि कंठयौ । उपम्म कव्वि तंठयौ ॥ छं० ॥ ७०५ ॥

ग्रहं जु इंद आइयं । चरन्न चंद साहियं ॥
बनित्त सब्ब अंपयौ । सुराह थान अप्पयौ ॥ छं० ॥ ७०६ ॥

चिबुक्क चारु सोभयौ । उपम्म कव्वि मोहयौ ॥
सु बाल अंग पत्तयौ । सु कंज मुक्कि जत्तयौ ॥ छं० ॥ ७०७ ॥

सुरत्त अद्ध [1]रत्तयौ । लहै न ओप अंतयौ ॥
ओसाफ, कव्वि सोहयौ । प्रवाल रत्त मोहयौ ॥ छं० ॥ ७०८ ॥

सुधा समान मुष्षही । दसन्न दुत्ति रुष्षही ॥
सु सद्द बद्द पंचमं । कलिन्न कंठतं क्रमं ॥ छं० ॥ ७०९ ॥

सुनी सु कव्वि राजई । उपम्म कव्वि साजई ॥
ससंक सारगं हरी । प्रगट्ट काम मंजरी ॥ छं० ॥ ७१० ॥

धनुक्क भौंह अंकुरे । मनों नयन्न बंकुरे ॥
श्रवन्न मुत्ति ताल जे । अलक्क बंक आलुजे ॥ छं० ॥ ७११ ॥

सबद्द सोभ जो धुलै । रहंत लज्जि कोकिलै ॥
अनेक रून जो कहै । तौ जम्म अंत ना लहै ॥ छं० ॥ ७१२ ॥

---

(१) ए.कृ. को.-जत्तयौ ।

दासी का पानों को लेकर दरबार में आना और पृथ्वीराज को देख कर लज्जा से घूंघट घालना।

कवित्त ॥ आय निकट रापंग। अंग आरद्धन बेद बर ॥
अति सुगंध तंमोर। रंग जुत धरय जुथ्थ पर ॥
दिष्षि न्रिपति प्रथिराज। दासि आरोहि सीस पट ॥
मनहु काम रति निरषि। सकुचि गुर पंच मझि,म्रटु ॥
कमधज्ज राज संकुल सभा। अकुल सुभर दरसंत दिस ॥
उस्ससे अंग उभ्भरि अरषि। परसपर सु अवलोकि [1]सिस ॥
छं० ॥ ७१३ ॥

कवि का इशारा कि यह दासी वही करनाटकी थी।

चौपाई ॥ बहुआनद दासी सिर कंषिय। पुर रट्ठौर रची दिसि नंषिय ॥
बिगरत केस पुरुष नहिं अंकिय। प्रथीराज देषत सिर ढंकिय ॥
छं० ॥ ७१४ ॥

दासी के शीश ढांकने से सभासदों का संदेह करना कि कबि के साथ में पृथ्वीराज अवश्य है।

अरिल्ल ॥ ढंकित केस लषी भय [2]भूपह। दिन दिन दिस्सि कहां राई मह॥
कविवर सथ्थ प्रथीन्रप आयौ। सो लच्छिन बर दासि बतायौ ॥
छं० ॥ ७१५ ॥

उच्च सरदारों और पंगराज में परस्पर खुगबुग होना।

कवित्त ॥ अप्प अप्प भट अटकि। षटकि पट दासि मंडि सिर ॥
इक चवै क्रात बढ़न। एक षल नथ्थ जानि थिर ॥
इक कहै प्रथिराज। इक्क जंपय षवास बर ॥

(१) मो.-रिस। (२) ए. कृ. को.-भूमह।

दिष्षि दरस [1]रयसिंघ। कहत दीवान अज्ज भर॥
कढ्ढिया [2]विकट केहरि कहर। अहर भार अंगय मनह॥
संग्रहौ आय रिपु दुष्ट ग्रह। समय सह रा पंग कह॥छं०॥७१६॥

दूहा॥ भै चकि भूप अनूप सह। पुरष जु कहि प्रथिराज॥
सुमति भट्ट [3]सथ्थह अछै। जिहि करंत तिय लाज॥ छं०॥ ७१७॥

कविचन्द का दासी को इशारे से समझाना।

अरिल्ल॥ करि बल कलह स मंची मार्यौ। नहि चहुआन सरंन बिचार्यौ॥
सेन सुबर कहि कवि समुझाई। अब तूं कलह करन इहां आई॥
छं०॥ ७१८॥

दासी का पट पटक देना और पंगराज सहित सब सभा का चकित चित्त होना।

समझि दासि सिर बर तिन ढंक्यौ। कर पल्लव तिन द्रग बर अंक्यौ॥
कव रस मवै सभा कमधज्जी। भैचकि भूप [4]सिंगिनी सज्जी॥
छं०॥ ७१९॥

उक्त घटना के संघटन काल में समस्त रसों का आभास वर्णन।

कवित्त॥ वर अदभुत कमधज्ज। हास चहुआन उपन्नौ॥
करुना दिसि संभरी। चंद बंर रुद्र दिपन्नौ॥
बीभछ वीर कुमार। बीर बर सुभट विराजै॥
गोष बाल झंषतह। द्रिगन सिंगार सु राजै॥
संभयौ सन्त रस दिष्षि बर। लोहालंगरि बीर कौ॥
मंगाइ पान पहुपंग बर। भयं नव रस नव सीर कौ॥
छं०॥ ७२१॥

दूहा॥ सिर ढंकति सकुचिय तरुनि। सु विधि चिंति स्वामित्त॥
बहुरि सु जिम तिम ही कियौ। [5]लवन विचारिय हित्त॥छं०॥७२१॥

---

(१) मो.-रासिंघ। (२) मो. निकट। (३) ए.कृ. को.-अथ्थह।
(४) ए. कृ को. सिंगनि गुन। (५) ए. कृ. को.-नवन।

एक कहै बंठै सुभट। इनह सथ्थ प्रथिराज॥
ए न्रप जीवन एक है। तिनहि करत चिय लाज॥ छं०॥ ७२२॥

जैचन्द का कवि को पान देकर विदा करना।

अप्पि पान सनमान करि। नहि रष्यौ कवि गोय॥
जु कछु इच्छ करि मंगिहौ। प्रात समप्पों सोय॥ छं०॥ ७२३॥

राजा का कोतवाल रावण को आज्ञा देना कि नगर के पश्चिम प्रान्त में कवि का डेरा दिया जाय।

हक्कारयौ रावन न्रपति। के के मुक्कि सुबास॥
पच्छिम दिस्सि जैचंद पुर। तिहि रष्यौति अवास॥ छं०॥ ७२४॥

रावण का कवि को डेरों पर लिवाजाना।

आयस रावन सथ्थ चलि। अयुत एक भट सथ्थ॥
अग्ग राह सो संचरै। मेर उचावहि वथ्थ॥ छं०॥ ७२५॥

कवित्त॥ पच्छिम दिसि पुर चंद। सु कवि सौ न्रपति सपत्तौ॥
रावन सथ्थ समथ्थ। वचन सो कवि रस रत्तौ॥
धवल मझ्झ सपन्न। कलस कुंदनह वज्र दुति॥
जठित षंभ जगमगहि। कनक वासन विचित्र भति॥
प्रज्जंक कनक मनि मुत्ति भति। मानिक मध्य विविद्व भति॥
आसनह पट्ट बहु मोल विधि। मनु मनि भूमि कि संझ क्रति॥
छं०॥ ७२६॥

दूहा॥ डेरा सु कवि विरंम तुम। करि कवि लषौ चरित्त॥
राजनीति रज गति चरित। चित गनि कह्यौ [1]सुचित॥
छं०॥ ७२७॥

रावण का कवि के डेरों पर भोजन पान रसद आदि का इन्तजाम करके पंगराज के पास आना।

---

(१) ए. कृ. को. चरित्त।

डेरा कराइ रावन चल्यौ । थान थान तिन ठाहि ॥
सुष्य सुषासन आरुहै । तहां पंग न्रप आहि ॥ छं० ७२८ ॥

डेरों पर पहुंच कर पृथ्वीराज का राजसी ठाठ से आसीन होना और सामंतों का उसकी मुसाहबी में प्रस्तुत होना ।

कवित्त ॥ बोलि लियौ सब सथ्थ । तथ्थ प्रथिराज सुअत्तं[२] ॥
सलिता जेम समुद्द । मुद्ध पति मिलन सपत्तं ॥
चामर छच रषत्त । लियै सामंत सपत्ते ॥
रति सुभ्यौ राजान । मद्धि ग्रह पति रवि रत्ते ॥
आए सु सुद्दर सब चंदपुर । देषि अनूपम षंति तथ ॥
सामंत नाथ बरदाइ बर । आय सपत्तं सब्ब सथ ॥ छं० ॥ ७२९ ॥

सब सामंतों का यथास्थान अपने अपने डेरों पर जमना ।

दूहा ॥ सथ्थ सपत्तौ तथ्थ सब । थित सामंत रु सूर ॥
हय हयसाला बंधि गै । सुभि राजन दर नूर ॥ छं० ॥ ७३० ॥

अरिल्ल ॥ मंदिर बंटि दिए सब भूपन । आप रहै निज ग्रेह अनूपन ॥
हौर हिरंनन की दुति पंडिय । तापर लाल षरग्गहि मंडिय ॥
छं० ॥ ७३१ ॥

पृथ्वीराज के डेरों पर निज के पहरुवे बैठना ।

दिय डेरा सामंत समानह । फिरि आवास सुवास सवानह ॥
दर रष्ये दरबार सुजानह । बिन आयस न्रिप रुकि परानह ॥
छं० ॥ ७३२ ॥

पंगराज का सभा विसर्जन करके मंत्रियों को बुलाना और कवि के डेरे पर मिजवानी भेजवाना ।

दूहा ॥ सभा विसरजी पंग पहु । गय मधि साल विचिच ॥
तहां सुषासन इंद्र सम । तिष्ठ सुमंत्रिय मंच ॥ छं० ॥ ७३३ ॥

(२) ए. क. को.-सुभप्पं ।

कवित्त ॥ तव राजन जैचंद। बोलि सोमिच प्रधानह ॥
अरु प्रोहित श्रीकंठ। मुकंद परिहार सुजानह ॥
दियौ राइ आएस। जाहु सो कवियन थानह ॥
विविध अन्न व्यंजनह। सरस रसरंग रसानह ॥
तंमोर कुसुम केसरि अगर। कट्ठ कपूर सुगंध सह ॥
आदर अनंत उपचार बर। करि सु प्रसन्नह कविय कह ॥छं०॥७३४॥

सुमंत का कवि के डेरे पर जाना, कवि का सादर मिजवानी स्वीकार करके सबको बिदा करना।

तब आयस जैचंद। मंनि सो मिच प्रधानह ॥
अरु प्रोहित श्रीकंठ। मुकंद परिहार प्रमानह ॥
बचन बंदि जय जंपि। लिए उपचार सार सब ॥
गये कब्बि सुथ्थान। रुके दर सथ्थ सब्ब जब ॥
दर रष्षि कह्यौ दरबार नृप। भय षवास संबोलि सहु ॥
धरि वस्त विवह अग्गै सु कवि। विविध विवरि बर लष्ष लहु ॥
छं० ॥ ७३५ ॥

सुमंत का जैचंद के पास आकर कहना कि कवि का सेवक विलक्षण तेजधारी पुरुष है।

चोटक ॥ कवि आदर किन्न सु पंग दियं। किय विद्य सु विद्यह जीति जियं॥
फिरि मंगिय सीष सु पंग रजं। लषि नीति सु किंत्ति अनंत सजं॥
छं० ॥ ७३६ ॥

रज मित्ति सु गत्ति अनंत भती। महनूर अदब्ब न आइ मती ॥
कवि भ्रत्त सरूप सु भूप वरं। तिन तेज अजेज असेस भरं ॥
छं० ॥ ७३७ ॥

चित चक्कित मंचि मुकंद गुरं। भए देषि बिमन्न ग्रहन्न नरं ॥
गय पंग दरं सुधि पंग लही। चिचसाल सुधूपह बोलि तही ॥
छं० ॥ ७३८ ॥

सब पुच्छिय कब्बि चरित्त कला। कहि मंचिय 'मोसहु बार न ला ॥
कहै मंचिय विप्र सु राज सुनै। कवि मंनिय गत्ति न चित्त गुनै
छं० ॥ ७३९ ॥
रज रीति अनूप अदब्ब लही। छित देषि अनूप न जाय कही ॥
छित रूपहि इंद्र समान लजं। बल तेज अजेज सु राज सजं ॥
छं० ॥ ७४० ॥
कवि सथ्थ सु छितह तेज नयं। भर पंग निरष्षिय नेन सबं ॥
... . । .... ॥ छं० ॥ ७४१ ॥

जैचंद के चित्त में चिन्ता का उत्पन्न होना।

दूहा ॥ सुनि चित्तह चिंत्यौ न्रपति। कवि यह कह कथ चित्त ॥
गुन गंभीर सु गंठि हिय। गौ दिय सिष्य सु ब्रत्त ॥ छं० ॥ ७४२ ॥

रानी पंगानी के पास कविचन्द के आने का समाचार पहुंचना।

चौपाई ॥ सुनिय बत्त न्रप पंग सु राजह। आयौ कवि चहुआन सु लाजह ॥
सुनि जुन्हाइय चित्त सु चिंतिय। बोलि सहचरि मंत सुमंतिय ॥
छं० ॥ ७४३ ॥

रानी पंगानी का कवि के पास भोजन भेजना।

गाथा ॥ इह कवि दिल्लियनाथो। मैं सुन्यौ बीर बरदाई ॥
तिहि नव रस भाष छ भनियं। पठ्ठाइयं अस्सनं तथ्यं ॥ छं० ॥ ७४४ ॥
तिहि सषि बोलि सुथानं। चित्रनि चित्र केसरी समुषं ॥
लीला विमल सु बुद्धी। सा बुद्धी लग्गि चरनायं ॥ छं० ॥ ७४५ ॥
दूहा ॥ पंगराइ बर बीर बर। सेंन अप्पि सहलीन ॥
दिसि जुन्हाइ असीस कवि। हुकम कहन न्रप दीन ॥ छं० ॥ ७४६ ॥
पद्धरी ॥ चौबार स्याम बर पंग ग्रेह। ग्रिह मझ्झि रतन कै मझ्झि केह ॥
षोड़स बरष्ष अप्रपत्त बाल। [3]दिष्षियै पंग भामिनि बिसाल ॥
छं० ॥ ७४७ ॥

---

(१) मो.-सा मति। (२) मो.-तये। (३) ए. कृ को.-दिष्षी सु।

दिपि हरन कत्ति करवत्त काम। मनों मीन मीन विश्राम ताम ॥
पदमिनिय हंस चिषनिय बाल। सोभै सुपंग ग्रिह मुह विसाल ॥
छं० ॥ ७४८ ॥

पदमिनी कुटिल केसह सुदेस। अत्तनह चक्र वक्रह सुनेस ॥
बरगंध पदम सुर हंस चाल। जन जीभ रत्त म्रिग अंकि साल ॥
छं० ॥ ७४९ ॥

कुलवंत सील अंमृत वचन्न। पदमिनी [1]हरै पहुपंग मन्न ॥
आसीस भट्ट बोल्यौ प्रकार। चित हरै चंद मुषचंद मार ॥
छं० ॥ ७५० ॥

पंगानी रानी "जुन्हाई" की पूर्व्व कथा।

कवित्त*। सूर किरनि तें प्रगटि। रुचिर कन्यका तपत्या ॥
तरवर तुंग कैलास। साष संग्रहि कर सत्या ॥
झूलंती संपेषि। भयौ भुअपत्ति सु आसिक ॥
एक पाइ तय मंडि। धारि द्रग अग्ग सु नासिक ॥
वाचिष्ट रिष्षि सु प्रसन्न होइ। रवि प्रारथ्थि विवाह किय ॥
जैचंद राय बरदाइ कहि। तिहि सम जुन्हाइ लहिय ॥ छं० ॥ ७५१ ॥

अरिल्ल ॥ पंग हुकम अरुदान जुन्हाई। भट्ट न्रपति चहुआन सुनाई ॥
रहि सि चोय चित दै बहु बट्टै। [2]जनों किरन कल पचम चट्टै ॥
छं० ॥ ७५२ ॥

दासियों की शोभा वर्णन।

मुरिल्ल ॥ सब अंग सु रंगिय दासि घनं। घन हथ्थय पीत पटंबरनं ॥
घनसार सुगंध जु हथ्थ धरै। तिन उप्परि भोरन झोर परै ॥
छं० ॥ ७५३ ॥

रानी जुन्हाई के यहां से आई हुई सामग्री का वर्णन।

(१) ए. कृ. को.-रहै। *यह कवित्त मो.-प्रति में नहीं है और क्षेपक जान पड़ता है।
(२) ए. कृ.-जनों कि हथ्थ कल पत्रम चट्टै।

कवित्त ॥ सहस एक हेमंग । सहस दोइ पीत पटंबर ॥
सहस अह नव नालि । केलि [1]कप्पूर सु ठुंमर ॥
खिग जु नाभि निक रासि । देस गवरी सा षंगी ॥
मुक्कि गंध कासीन । सेत बंधह भारंगी ॥
दारिम्म बिजोरी द्रब्य वर । विमल मह मोदक भरन ॥
अह गंध पंग संभारि करि । जाति जुन्हाई संधि रन ॥ छं० ॥ ७५४ ॥

हनूफाल ॥ मिलि मंजरी गुन बेलि । मदनावली गुनकेलि ॥
मालती अविज सरूप । लीलया कमला अनूप ॥ छं० ॥ ७५५ ॥
मभ्भ हिय सुलष्य सुबुद्धि । लषि नैंन लघन सु बुद्धि ॥
[2]कंमारि माला मुष्य । सम हंसगोरिय रुष्य ॥ छं० ॥ ७५६ ॥
वर बीर सषि सम लाज । पुच्छिय सु स्वामिनि काज ॥
कर जोरि आयस मंगि । बहु सषिय बोलिय संग ॥ छं० ॥ ७५७ ॥
जुन्हाइ जंपिय तब्ब । पति दिल्लिय आयौ कब्ब ॥
मिष्टाइ लै [3]तहां तथ्य । [4]सम जाहु सषिसम सथ्य ॥ छं० ॥ ७५८ ॥
मिष्टाइ विवह विचित्र । मिष्टाइ रूप पवित्र ॥
सें तीन बानय पूरि । आच्छादि अवर सनूर ॥ छं० ॥ ७५९ ॥
रस अगर पंच सुअट्ठ । करपूर पूरित जट्ठ ॥
केसरि सद्रोन सदून । म्रगमद्द थालन रून ॥ छं० ॥ ७६० ॥
तंमोलि चौसट्ठि पान । द्वै सहस हेम जुतान ॥
हिम हंस एक अनूप । अस जपै चातुर भूप ॥ छं० ॥ ७६१ ॥
मानिक जटित अमूल । मनि विचित्र जानि अतूल ॥
मरकंति मनि बिन रेह । वरछद्द मुत्ति अलेह ॥ छं० ॥ ७६२ ॥
मनि जटित विवह विराज । वर बसन धारित भाज ॥
सुभ सुजल मुक्तिय माल । वासंसि सुभ धरि थाल ॥ छं० ॥ ७६३ ॥
वर विचित्र अन्न अनंस । सुभ गत्ति स्वाद सुमंस ॥
मिष्टाइ जाति न संष । बहु रूप राजित अंष ॥ छं० ॥ ७६४ ॥

---

(१) ए.-ठुंमर । (२) ए. कृ. को. कम्यारि ।
(३) ए. कृ. को.- थह । (४) ए. कृ को.-लै ।

अनि वस्त विवह विभंति। गनि जाति कौन गिनंत ॥
.... । .... ॥ छं० ॥ ७६५ ॥

दूहा ॥ सु बन सिंगारिय सह सषिय। विवह वस्त लिय सब्ब ॥
सो निज स्वामिनि अंग सुनि। अमिय सु अप्पह कब्ब ॥छं०॥७६६॥

कवि के डेरे पर मिठाई लेजाने वाली दासियों का सिखनख श्रृंगार वर्णन।

लघुनराज ॥ रजंत बान सा सषी। द्रगंत बानता तिषी ॥
सिंगारि साज सब्बयौ। दिषै छरीब गब्बयौ ॥ छं० ॥ ७६७ ॥
सु गोरि पवास रासयं। तमोर भष्षि आसयं ॥
बदन्न रूव[1] रज्जयौ। सरद्द बिंब लज्जयौ ॥ छं० ॥ ७६८ ॥
ढुरंत मुत्ति बेनियं। विराजि काम मेनियं ॥
सुभाल कोर वासनं। उही सुमुच्छ भासनं ॥ छं० ॥ ७६९ ॥
चाटंक सोभि अमरं। तड़ित्त दुत्ति संमरं ॥
[2]खंत कद्दि मेषरं। चकोर साव से सुरं ॥ छं० ॥ ७७० ॥
सुरंस हंस हंस यौ। समूह साव रंसयौ ॥
सुरं समथ्थ कामिनं। समोहि मुट्ट वामिनं ॥ छं० ॥ ७७१ ॥
वरष्प अट्ठ अट्ठयं। सवंक कंपि तट्ठयं ॥
रुलंत हीय हारयं। ससुट्ठि काम कारयं ॥ छं० ॥ ७७२ ॥
विचित्र हंस कामिनी। मयंद मत्त गामिनी ॥
सषी सुबीय सष्षयं। क्रमंत अंग पष्षयं ॥ छं० ॥ ७७३ ॥
प्रवीन बीन बद्दनं। सुरन्न षड्ड अड्डनं ॥ ॥
विचित्र काम जं कला। कटाषि चाल अष्षिला ॥ छं० ॥७७४ ॥
विसाल वैन चातुरी। मनो सु मोहिनी जुरी ॥
सु सामं दान भेदयौ। कुसल्ल दंड षेदयौ ॥ छं० ॥ ७७५ ॥
कला सु अट्ठ अट्ठयौ। सुभेव भाव गट्ठयौ ॥
सभाव चन्न सोभिलं। बदंत काम कोकिलं ॥ छं० ॥ ७७६ ॥

(१) मो.-रूप। (२) मो. रचंति।

चलीं सु सब्ब संजुरी । मनो सुइंद अच्छरी ॥
चढ़ी कि डोलियं बरं । सरोहि कै हयं बरं ॥ छं० ॥ ७७७ ॥
सषी सु पंचयं सयं । गमंत सथ्थ सेनयं ॥
लियं सु सब्ब साजयं । सु अथ्थि रिद्धि राजयं ॥ छं० ॥ ७७८ ॥
सपन्न कव्वि थानयं । दरं सु रष्षि मानयं ॥
.... । .... ॥ छं० ॥ ७७९ ॥

कवित्त ॥ पंकज सुत[1] सोवंत । फेरि करवट्ट प्रजंकह ॥
असुर उपजि अनपार । धरनि कज मंडिय कंकह ॥
संभ समय तब ब्रह्म । देह तजि रंभ उपाइय ॥
रूप अचंभम देषि । रहे दानव ललचाइय ॥
नग सिष मानहु तिहि सम । रचे संप्रतीक सहचरि सकल ॥
कविचंद थान कामधज पठय । कलन सु छल पिथ्थह अकल ॥
छं० ॥ ७८० ॥

उक्त दासी का कवि के डेरे पर आना ।

अरिल्ल ॥ सतु दासी न्रप थान सपत्ती । नूपर सद कविथान प्रपत्ती ॥
चंद चिंत उप्पय बर भारे । जुथ वजे मनमथ्थ नगारे ॥
छं० ॥ ७८१ ॥

दरवान का दासी को कवि के दरबार में लिवा जाना ।

गाथा ॥ सषि दरबार सपन्नी । आदर दीन तथ्थ दरवानं ॥
दर गय अंदर राजं । नइवेदयं तथ्थ लब्भायं ॥ छं० ॥ ८७२ ॥

चौपाई ॥ बोलिय मभ्भ सु कव्विय बाल्लह । तब सिंघासन छंडि भुआलह ॥
आय सषी सब मभ्भ स बुल्लिय । आदर विवह वानि कवि किल्लिय ॥
छं० ॥ ७८३ ॥

दासी का रानी जुन्हाई की तरफ से कवि को पालागी कहना और कवि का आशीर्वाद देना ।

(१) को.-सोवत्त ।

विवह विचित्र धरी मुष अंबह। कही असीस जुन्हाइय कब्बह॥
तुम त्रिकाल दरसी बुधि पाइय। बहु आदर दिन्नौ जु जुन्हाइय॥
छं०॥ ७८४॥

तुम बहुग्यान सु भट्ट समत्तिय। अगम सुगम गत लही सु गत्तिय॥[1]
मंगिय विद्या सु कब्बि प्रसन्निय। देषि चरित रजगत्ति सु मन्निय॥
छं०॥ ७८५॥

दासी का खबर में वापस जाकर रानी से कवि का आशीर्वाद कहना।

गति मति अंतर भेद सु जन्निय। देषि चरित्त अचिज्ज सु मुन्निय॥
फिरि आई जु जुन्हाइय थानह। पयलग्गी विधि कही विनानह॥
छं०॥ ७८६॥

गाथा॥ कहि आसीस सु कव्वी। सुप्रसन्नो दिट्ठतो भासं॥
[2]तो तन चिंता भंगो। कथ्थिय आसीस केलि कव्वीसं॥ छं०॥ ७८७॥
रामा रज गति [3]लद्धी। आदर अदब नीति अनभूतं॥
कवि थह अथ्थह राजं। संपिष्य य कह कह नाई॥ छं०॥ ७८८॥
सुनि सा बत्त जुन्हाई। दिय निज कम्म सब्ब संपिष्णं॥
निज हिय चिंता ठानी। संपत्ती धवल मभ्भभ्भनं॥ छं०॥ ७८९॥

यहां डेरों पर यथानियम पृथ्वीराज की सभा का सुशोभित होना और राजा का कवि से गंगाजी के विषय में प्रश्न करना।

दूहा॥ तहां सु सूर सामंत मिलि। मधि [4]नायक कवि चंद॥
प्रथीराज सिंघासनह। [5]जनु परिपूरन इंद॥ छं०॥ ७९०॥
अहो चंद इह दंद भलि। हंज दरसन किय गंग॥
मन उछाह पुनि मुझ्झ भयो। कछु बरनन करि रंग॥
छं०॥ ७९१॥

(१) ए. कृ. को. गत्तिय, मत्तिय।
(२) ए. कृ को-"तो तन चिंतिय भंगो कही असीस केलि कव्वीस"।
(३) मो.-रिद्धी।
(४) ए. कृ. को.-ताकिय। (५) मो. मनों प्रथीपुर इंद।

कविचन्द का गंगाजी को स्तुति पढ़ना।

कहै कव्वि न्रप राज सुनि। मो मुष रसना एक॥
इह सु गंग सुर मुनि जिते। [1]लहहि न पार अनेक। छं०॥ ७९२॥

भुजंगी॥ मुनी साधु जोगी जती आय जेते। गुनी ग्यान ध्यानं प्रमानं न तेते॥
धरा रोम ते व्योम तुम्मं तरंगे। बसी ईस सीसं जटा जूट गंगे॥
छं०॥ ७९३॥

चतूरान पानं व्रह्मंडं कमंडं। चयीकाल संध्या रिषी दोष षंडं॥
समाधिं धरै कूल साधून साधं। तुही एक तें चंद चकोर राधं॥
छं०॥ ७९४॥

तुमं सेव भागीरथं जानि कीनी। सबें मेलि आचानि तू संग दीनी॥
हुती स्वर्गवै लोक धारा अपारं। धसी प्रव्वतं पेलि नाना प्रकारं॥
छं०॥ ७९५॥

प्रवाहं अमानं प्रमानं न जानं। मनो एक मुष्षं मती मूढ़ ग्यानं॥
कंपै पाप जो भीर पत्तं सु सत्तं। रहै दिष्य संसिष्य तद्वार भत्तं॥
छं०॥ ७९६॥

तुही सग्गुनं निग्गुनं सुद्धि कासं। तुही सब्ब जीवं सजीवं स सासं॥
तुही राजसं तामसं सातुवंती। तुही आहितं हित्त चितं चरंती॥
छं०॥ ७९७॥

तुही ज्वाल माला कुलाला कुरष्टी। तुही बारिधारा अधारं अरिष्टीं॥
तुही वर्न भेदे विसंताहि साधै। तुही नाद रूपी सजोगी अराधै॥
छं०॥ ७९८॥

तुंही ते हरी तूं हरी तेन औरै। जिसौ भेद जो कंचनं टूक कोरै॥
सषै को गती तो मती देव गंगे। रटै कोटि तेतीस तो नाम अंगे॥
छं०॥ ७९९॥

जिसौ वारि गंगा तरंगे प्रकारे। तिसौ तोमने अप्प अप्पं अपारै॥
करै पाप भारं फना व्याल कंपै। रसन्नाजि कै देवि तो नाम जंपै॥
छं०॥ ८००॥

---

(१) मो.-लहत।

त्रिभारं करै पाप भारंत दूरं। रचौ पुन्य कै बधारवै भ्रम्म सूरं ॥
सतै साध गहि लोक तें सीस रघ्यौ। तवं बेद भय बेद सब छेद नंष्यौ ॥
छं० ॥ ८०१ ॥

अमी आइ अंगाइ त्रिमया न किन्नौ। हंतौ दोष आदिष्ट गारिष्ट भिन्नौ ॥
तुंही देषि करि तेज कप्यौ समुद्दं। छल्यौ सब्ब करि देवि छंड्यौ सु चंदं॥
छं० ॥ ८०२ ॥

धरे सहस मत रूप आनूप भारी। कला नेक भेकं अनेकं प्रकारी ॥
रमी रंग रंगं तरंगं सरीरं। जिसौ भेद पय पान जान्यौ न नीरं ॥
छं० ॥ ८०३ ॥

जिसौ सिंह अरु मगति भयभीत भारी। जिसौ मुत्तिहर मूर तें झाकझारी॥
जिसौ अप्प अप्पै अपारं अनंतं। तिसौ मोष नर भेद पावै तुरंतं ॥
छं० ॥ ८०४ ॥

सिया रूप हुय भूप रावन सहान्यौ। भये देवकी अंस चानूर मान्यौ॥
इसौ कौन सहगत्ति सों कहै ग्यानी। इहै द्रोपदी होइ भारथ्य ठानी॥
छं० ॥ ८०५ ॥

[1]रमी सीस तें देवि देवी मुरारें। रमी सीस तें माहिषं पाइ ठारे॥
[2]इहै कालिका काल जिम दुष्ट मारै। इहैं संभनिस्संभ धायौ प्रहारै ॥
छं० ॥ ८०६ ॥

तुंही ग्रंथ गेनं सिवं संग धंगे। तुही मोचनी पाप कल अलष गंगे ॥
दयालं दया जानि चवि चंद बानी। जयं जान्हवी जोति तू पापहानी॥
छं० ॥ ८०७ ॥

श्री गंगा जी का माहात्म्य वर्णन।

चन्द्रायण ॥ मनसा एक जनम्म महा अघ नासही।
दरसन तीन प्रकारति पाप प्रनासही ॥
न्हायै दुष्य समूह मिटै भव सात के।
अंब हरै लगि बूंद सहस्रति गात के ॥ छं० ॥ ८०८ ॥

---

(१) मो-समी। (२) ए. कृ. को.-रहै।

गंगाजी के जलपान का माहात्म्य और कन्ह का कहना कि धन्य हैं वे लोग जो नित्य गंगाजल पान करते हैं।

गाथा ॥ सो फल निरषित नयनं । सो फल गुन गाइयं बैनं ॥
सोइ फल न्हात सरीरं । सोइ फल पियत अंब अंजुलयं ॥
छं० ॥ ८०९ ॥

भुजंगी* ॥ जलं गंग न्हावै कितीकं कलत्तं । अलंकार चीरं सरीरं सहित्तं ॥
सरं केस पासं नितंबं विलंबे । तिलं तेल फुल्लेल सीचें प्रलंबे ॥
छं० ॥ ८१० ॥

द्रगं कज्जलं अग्गयं कस्सतूरी । करी कच्छपं भोजियं हथ्थ चूरी ॥
मुकत्ताफलं सीपयं कीट पट्टं । विलेपन्न कीनें सुगंधं सुघट्टं ॥
छं० ॥ ८११ ॥

मुषं नाग वल्ली विरष्षं बरंगं । महंदी नषं जावकं रंग पग्गं ॥
इतें जीव पायं तुरन्तं मुकत्ती । कवीचंद जंपी न झूटी उकत्ती ॥
छं० ॥ ८१२ ॥

धरे ध्यान चौहान किन्नौ सनानं । अचिज्जं कहा पावनं मोषयानं ॥
सुने कन्ह तामं कहै कन्ह ताकौ । पियें अंब निसि दीह वड़भाग ताकौ ॥
छं० ॥ ८१३ ॥

दूहा ॥ इय गंगा राजं न थुति । सुनी रत्ति धरि ध्यान ॥
जनम मरन दोउ सधै । जो उपजै इह थान ॥ छं० ॥ ८१४ ॥

सामंत मंडली में परस्पर ठट्ठा होना और बातों ही बात में पृथ्वीराज का चिढ़ जाना।

तब सामंतन चंद कहु । सब पुच्छिय न्प बत्त ॥
जु कछु सत्य संबोध भौ । निहुररायह तत्त ॥ छं० ॥ ८१५ ॥

* यह छन्द मो. प्रति में नहीं है।

अरिल्ल ॥ बत चारे निप जिहुर दुज्जिय । राजा चंद प्रकास अनुज्जिय ॥
चाहि दियै कमधज्ज सु रायहि । हासि समेत कह्यौ सव भायहि ॥
छं० ॥ ८१६ ॥

चाचिज एक भयौ अनुमानह । मान सबै सुक्किय क्रम थानह ॥
भट्ट बिवेक करै कर जोरहि । कन्ह धन्यौ कवि कोन निहोरहि ॥
छं० ॥ ८१७ ॥

फेरि कह्यौ कविचंद सु वत्तिय । पंच प्रताप गयौ नृप छत्तिय ॥
प्रान सु पात तुर्के गर यत्तिय । भट्ट कह्यौ कर छुट्टर [1]झत्तिय ॥
छं० ॥ ८१८ ॥

संभरि राव तमंकि रिसानौं । मैं श्रम काज धन्यौ कर पान्यौं ॥
कालिह सु भेस करौं भुअपत्तिय । कंप न लोकि धरद्धर छत्तिय ॥
छं० ॥ ८१९ ॥

कन्ह का कविचन्द से बिगड़ पड़ना ।

भट्ट सौं कन्ह निपट्ट रिसानौ । तूं सामंत न तोर घरानौ ॥
तूं कवि देत असीसन छुट्टहि । सूर सीस दे सखन [2]जुट्टहि ॥
छं० ॥ ८२० ॥

कविचन्द का राजा को समझाना और सब सामंतों का कन्ह को मनाकर भोजन प्रसाद करना ।

कवित्त ॥ [3]कपह जग्ग मंडयौ । न्यौति जम इंद्र बुलाइय ॥
दिग्गविजय तँह करत । कौम सै रावन आइय ॥
मरन अचिंत्यौ जानि । चिंत कायरपन आदर ॥
वायस करकोटिग्ग । रूप धरि उब्बरि दादुर ॥
दिय श्राद्ध पिंड जम कग्ग कौं । रंग ककेटक सुरपती ॥
मंडिक मदह गन्यौ वरुन । चंद कहत सुनि नरपती ॥
छं० ॥ ८२१ ॥

(१) ए. कृ. को.-चालिय । (२) मो. छुट्टहि । (३) कृ.-कग्गह, को.-कवह ।

अरिल्ल ॥ तब परिहार वीर वीरन वर । भोजन सह सबै कीनौ नर ॥
राव गोयंद इंद वर उट्ठे । धरिय कन्ह निज बाह स उट्ठे ॥छं०॥८२२॥

सब का शयन करने जाना ।

तो लगु भोजन भष्य संपज्जे । इसि करि मंत्र सुचेतन सज्जे ॥
हो सब साथ समाय सयानौ । सूर कहै कब होइ बिहानौ ॥
छं० ॥ ८२३ ॥

वार्ता ॥ जब लगि मिष्टान्न भाम सरसे । तब लगि अंबर [1]दिनयर दरसे ॥

पृथ्वीराज का निज शिविर में निःशंक होकर सोना ।

दूहा ॥ भइत निसा द्विज मुदित बिधु । उडुपति तेज बिराज ॥
कथक साथ कथ्थहि कथा । सुष्ष सयन प्रथिराज ॥ छं० ॥ ८२४ ॥
अदरस दिनयर देषि करि । तलप प्रजंक असंक ॥
मनहु राज जोगिनिपुरह । सोभै सेन निसंक ॥ छं० ॥ ८२५ ॥
कोतर रत रस चित्त लइ । मानौं थान बिहंग ॥
जुवती जन मन कुमुद बसि । मनु मनि सथ्थ भुअंग ॥छं०॥८२६॥

जैचंद का कवि को नाटक देखने के लिये बुलवाना ।

ओसर पंग सुरत्त किय । चंद सुजानह भट्ट ॥
कहै आय जुग्गिनि पुरह । नव रस भास सुघट्ट ॥ छं० ॥ ८२७ ॥
और प्रपंच बिरंच कौ । निजरि पंग लगि क्रूर ॥
साथ दिषावन राग रँग । चंद बुलाय हजूर ॥ छं० ॥ ८२८ ॥
जाम एक निसि बीति बर । बोलि भट्ट नरिंद ॥
ओसर पंग नरिंद कौ । देषहु आय कविंद ॥ छं० ॥ ८२९ ॥
एकाकी बोल्यौ सु कवि । ओसर देषन राय ॥
राज नींद मुक्यौ करत । पौरि संपतौ जाइ ॥ छं० ॥ ८३० ॥

---

(१) ए. कृ. को.-दिनरय ।

जैचंद की सभा की रात्रि के समय की सजावट और शोभा वर्णन।

सुरिल्ल ॥ सुनि न्रप भट्ट महल तजि आइय। देषत पंग सु ओपम पाइय॥
नहि रावन्न सजे सु प्रमानं। क्रम लहौ 'गिर अंध गजानं॥
छं० ॥ ८३१ ॥

दूहा ॥ म्रदु म्रदंग धुनि संचरिय। अलि अलाप सुध व्यंद ॥
ताल विग्गम उपंग सुर। औसर पंग नरिंद ॥ छं० ॥ ८३२ ॥

कवित्त ॥ दस हजार मन तेल। सित्त मन अगर फुलेलह ॥
सत्त सहस सोब्रन्न। जरित दीवी सित मेलह ॥
सहस पाल असुहेज। षेल षाना सु जनावर ॥
सीह सग्ग सोहन्नं। कपिल हस्ती बहु नाहर ॥
पंषी अनेक जलचर प्रबल। जल थल प्रवत दूक हुए ॥
जैचंद राइ तप तेज थी। कु निजरि कोई नह जुए ॥ छं० ॥ ८३३॥

दूहा ॥ ज्वलन दीप दिय अगर रस। फिरि घनसार तमोर ॥
जमनि कपट उच्च महल मुष। जनु सरद अभ्भ ससि कोर ॥
छं० ॥ ८३४ ॥

राजा जैचन्द की सभा में उपस्थित नृत्तकी (वेश्याओं) का वर्णन।

तात धरम्मह मंत हुह। रत्तह काँम सु चित्त ॥
काम विरुद्ध निषिद्ध किय। न्रत्य निंतबिनि नित्त ॥ छं० ॥ ८३५ ॥

भुजंगी ॥ सजी पातुरं नट्ट दीसै सु पंगं। पिहु पास पासं अतंकी अभंगं ॥
उड़ी धाम अग्गार ने धाम छाई। तिनं देषतें चंद ओपंम पाई
॥ छं० ॥ ८३६ ॥

सुरं नूपुरं सद्द बद्दं विहंगं। बरं नारि ता रूप पाषं सुरंगं ॥
करै जमनिकं पट्ट दीसै सुरंगी। गतं चंदलं चंद उप्पम्म मंगी ॥
छं० ॥ ८३७ ॥

---

(१) मो.-मिरधंगज।

हरं बार पुब्बं मनंमध्य सज्जं । बंध्यौ काम जारं मनी सीस [1]मज्जं॥
बजै नूपुरं सद्द पर सद्द घंमै । बजै दुंदभी समर सम राज क्रम्मै ॥
छं० ॥ ८३८ ॥

नगं हेम वर जटित तन घन बिराजै । तिनं ओपमा चंद बरदाइ साजै॥
लगी नौग्रहं उग्रहं काम लग्यौ । मनों आतमा आतमा भाव जग्यौ
छं० ॥ ८३९ ॥

तिनं भट्ट संकै कहै बाल संचै । तिनं कारनं पातुरं साथ नंचै ॥
कटिं छुद्रघंटी रनंती बिराजै । तिनं उप्पमा सुबर कविचंद साजै ॥
छं० ॥ ८४० ॥

दिपै धनुष कामं चिजै सिंभ चासी । लगै पंचग्रह चंचलं तं धरासी॥
करै हार भारं सु मुत्ती अनूपं । दमं मुष्ष कंती प्रतीव्यंब रूपं॥
छं० ॥ ८४१ ॥

कथी चंद बंदी उपम्मा अनूपं । करै चंद आद्दन्न जल सेत क्रूपं॥
करै बाल कंठं समं [2]मुट्ठि पुंजं । कहै चंद कब्बी उपम्मा [3]अनुज्जं ॥
छं० ॥ ८४२ ॥

तिनं भेष सोहै फिरै बंध नंगं । धरै चंद तत्तं हरं मध्य गंगं ॥
बरं भूषनं दूषटं बाल साजै । बरं अट्ठ दूनं सिंगारं बिराजै ॥
छं० ॥ ८४३ ॥

वेश्याओं का सरस्वती की वंदना करके नाटक आरंभ करना।

नाटक ॥ दीपांगी चंद्ररेषा नलिन अलि मिली, नैन रंगी कुरंगी ॥
कोकाषी दीर्घनासा सुसर कलिरवा, नारिंगी सारदंगी ॥
इंद्रानी लोल डोला चपल मति धरा, एक बोली अमोली ॥
पुहपा बानी बिसाला सुभग गिरवरा, जैत रंभा सु बोली ॥
छं० ॥ ८४४ ॥

---

(१) मो.-बज्जं। (२) ए. कृ. को.-कुम्भ। (३) ए. कृ. को.-लघुजं।

नृत्यारंभ की मुद्रा वर्णन।

दूहा ॥ पुहपंजलि दिसि वाम कर। फिरि लग्गी गुरपाइ ॥
तरुनि तार सुर धरिय चित। धरनि निरष्षय चाइ ॥
छं० ॥ ८४५ ॥

मुरिल्ल ॥ सजि नग पातुर चातुर चल्ली। कैवर चंद चंद बर बुल्ली ॥
देषि सुबर ओपम [1]वर भल्ली। मदन दीप मालासजि चल्ली ॥
छं० ॥ ८४६

मंगल आलाप।

दूहा ॥ मंग प्रथम जंप जपै। जै गजमुष अग्रजाइ ॥
सेत दंत पाठक उदै। सोभै पंगुर राइ ॥ छं० ॥ ८४७ ॥

वेश्याओं का नृत्य करना; उनके राग, बाज, ताल, सुर,ग्राम, हाव भाव आदि का और उनके नाट्य कौशल का वर्णन।

नराज ॥ उच्चं अलाप मच्चिता सुरं सु ग्रामपंचमं।
चढंम तप्प मूरछं मनंत मान संचमं ॥
निसंग थारंत अलप्य जापते प्रसंसई।
दरस्स भाव नूपुरं इतन्न तान नेतई ॥ छं० ॥ ८४८ ॥
सुरंसपत्त तंच कंठ[2]बोधि राग साभरं।
हहा हुहू निरष्षि तार रंभ चित्त ताहरं ॥
ततंग थेइ तत्तथेइ तत्तथे सुमंडियं।
थथुंगं थुंग थुंगथे विराम काम मंडयं ॥ छं० ॥ ८४९ ॥
सरग्गमप्प धुन्निधा धुनं धुनं निरष्षियं।
भवंति जोति अंग मानु अंग अंग लष्षियं ॥

(१) ए. कृ. को. सुर। (२) ए. कृ. को.-बोल।

कलं कलं सु [1]सथ्थनं सुमेकुनं मनंमनं ।
रनक्कि झंकि नूपुरं सुपंत झंझनं झनं ॥ छं० ॥ ८५० ॥

थमंडि चारु घंटिका भर्मति भेष रेषवी ।
[2]जुटंति घु'ट केस पास पीत स्याह पेषवी ॥
सजंति गत्ति तारमा कटिं प्रमान कंद्री ।
कुसम्मसार आउधं कुसुम्म ओड़ मंद्री ॥ छं० ॥ ८५१ ॥

अरंभ रंभ भेम भेष सेषरं करं कसं ।
तिरप्पि तिष्प सिष्पयौ सु देस दष्छिनं दिसं ॥
सुरंति संधि गालनी धरंति लासनी धुने ।
जमाइ जोग कट्टरी चिविद्र नंच संपने ॥ छं० ॥ ८५२ ॥

तिरप्पि लेत [3]पातुरं सु चातुरं दिषावही ।
कै अट्ठ ग्रेह बीय चंद भोर कै भ्रमावही ॥
छतीस राग बंधि तार बाल ता बजावही ॥
.... छं० ॥ ८५३

सु कम्म तार थी मृदंगजिक्त बंध संचरं ॥
विरम्म काम धूव बंधि चंद्र भ्रूव उच्चरं ॥
समीप रम्भ भेदसौ जु चित्त चित्त चोरई ॥
अनेक भंति पातुरी सुमन्न मेर डोरई ॥ छं० ॥ ८५४ ॥

सिँगार ते अनेकरं परस्सि उभ्भ रावके ॥
सिँगार सोभ पातुरं कि [4]आतुरं सिंगार के ॥
उलट्टि पट्टि नाचनौ फिरट्टि चक्रि मावनौ ॥
निरष्षि नेंन राषि आनि थंभ पुत्ति काछनौ ॥ छं० ॥ ८५५ ॥

विसेस देस रूपाइं अक्ख देव रामकौ ॥
सु चक्र भेष चक्र भ्रत्ति चाल ता [illegible] ॥
उरन मुद्र मंडली अरोह रोह चालिनं ॥
ग्रहंति मुत्ति दुत्तिमा मनौं मराल मालिनं ॥ छं० ॥ ८५६ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-सथ्थनं । (२) ए. कृ. को.-जटंति ।
(३) ए. कृ. को. षातुरं । (४) ए. कृ. को.-आतुरं ।

प्रवीन वान उद्धरी मुनींद्र मुद्र कुंडली ॥
प्रतष्षि मेष उद्धर्यौ सु भुम्मि लोइ षंडली ॥
तलं तलं सुताल ता मृदंग धुंकने घने ॥
अपा अपा भनंत मे अपंत आन ज्यौं अने ॥ छं० ॥ ८५७ ॥

अलाष लाष लाष नेनयं न बेन भुंषने ॥
नरे नरिंद मास मेस मेस काम सुष्षने ॥
.... । • ....छं० ॥ ८५८ ॥

सप्तमी शनिवार के बीतक की इति।

दूहा ॥ जाम एक छिन [1]दान घट सत्तमि सत्तनिवार ॥
कहु कामिनि सुष रति समर। [2]त्रिपनिय नींद निवार ॥छं०॥८५९॥

घटि त्रियाम घरियार बजि। ससि मिटि तेज अपार।
अकस अच्छ दिन सो तजौ। त्रिय रुठि निसि भरतार ॥छं०॥८६०॥

नृत्यकी (वेश्या) की प्रशंसा।

साटक ॥ सुष्षं सुष्ष मृदंग तक्ष अघनं , रागं कला कोकनं ॥
कंठी कंठ सुभासनें समजितं , कामं कला पोषनं ॥
उरभी रंभ कि ता गुनं हरहरी , सुरभीय पवनं पता ॥
एवं सुष्षइ काम कुंभ गहिता , जय राज राषं गता ॥ छं०॥८६१॥

कांती भार पुरान यौविंगलिता , साषा न गल्हस्थलं।
तुच्छं तुच्छ तुरास लग्गि कमनं , कलि कुंभ निंदा दलं ॥
मधुरे माधुरयासि आलि अलिनं , अलि भार गुंजारियं ॥
तरुनं [3]प्रात लुटीय पंगज जिया, राषं गता साम्प्रतं ॥
छं० ॥ ८६२ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-दक्षिन (२) ए. कृ. को.-त्रिय तिय निंदनिवार।
(३) ए. कृ. को.-प्रान।

तिपहरा बजने पर नाच बंद होना, जयचंद का निज शयनागार को जाना और कवि का डेरे पर आना।

अरिल्ल ॥ भई ग्रम बेर अथवंत निसं। गछि चोर परहर कपट बसं ॥
झलि झालरि देवर सुष्ष नदं। भइ विप्र उचारिय बेद बदं ॥
छं० ॥ ८६३ ॥

दूहा ॥ गयौ चंद थानह न्रपति। मतौ पंग चितवार ॥
भट्ट सथ्थ चहुआन सत। बंधि दियौ करतार ॥ छं० ॥ ८६४ ॥
प्रातराव संप्रापतिग। जहं दर देव अनूप ॥
सयन करहि दरबार तहं। सत्त सहस अस भूप ॥ छं० ॥ ८६५ ॥
गत चिजाम राजन उठ्यौ। सीष दई कविचंद ॥
निसा जाम इक नींद किय। प्रात उठ्यौ जैचंद ॥ छं० ॥ ८६६ ॥
प्रापत चंद कविंद तहं। जहं ढिल्ली चहुआन ॥
जगि बरदाइ बर बुलै। बरबंधन सुरतान ॥ छं० ॥ ८६७ ॥

इधर पृथ्वीराज का सामंत मंडली सहित सभा में बैठना, प्रस्तुत सामंतों के नाम और गुप्तचर का सब चरित्र चरच कर जैचन्द से जा कहना।

भुजंगी ॥ सभा सोभियं राज चहुआन पासं। बिठे सूर सामंत रस बीर लासं॥
सभा सोभियं सूर सूरं प्रमानं। तहां बैठियं सूर चौहान ध्यानं ॥
छं० ॥ ८६८ ॥

तहां बैठियं राइ गोयंद जूपं। जिनै मुग्गली बंध दिय हथ्थ भूपं ॥
भरं दाहिमौ सोभि नरसिंघ बीरं। जिनै पत्ति बंध्यौ षुरासान मीरं॥
छं० ॥ ८६९ ॥

सभा सोभियं सूर कूरंभरायं। जिनै आस हांसीपुरं जीति पायं॥
सभा मभ्भ सारंग चालुक मंड्यौ। मनों लाल मोतीन में मेर छंड्यौ॥
छं० ॥ ८७० ॥

सभा सोभियं सूर बघ्घेलरायं। जिनै सेहरो स्वामि दिल्ली चढ़ायं॥
रजं राज पामार लष्यं सलष्यं। जिनै बंधि गोरी सबै सेन भष्यं॥
छं० ॥ ८७१ ॥

सभा सोभियं राइ आल्हन्न रायं। जिनै ठेल्लि ठट्टा समुद्दं बहायं॥
सभा बीरचंदं सुचंदं पुंडीरं। जिनैं प्रांन रक्कं सरद्दं गँभीरं॥
छं० ॥ ८७२ ॥

सभा सोभियं बीर भोहां प्रकारं। जिनैं देवगिरि सीस भिल्लै दुधारं॥
सभा धावरं सोभि नारेन बीरं। जिनै भंजियं मीर सुरतान तीरं॥
छं० ॥ ८७३ ॥

सभा सोभियं जावलौ जल्ह कातं। जिनै षेदि सब्बं ससी पल्ह जंतं॥
सबै सूर सामंत सभ में बिराजैं। जिनै देषि ससि सरद की भांति लाजैं॥
छं० ॥ ८७४ ॥

चरं संभरी कथ्थ जंपै ननिंदं। इदं बैठियं भासि प्रथमीपुरंदं॥
ढुरै कनक सीसं सु चौरं जु दीसं। मनौं उग्गयौ भान प्राची प्रदीसं॥
छं० ॥ ८७५ ॥

[1]सुनी पंग बीरं अबी रंति मिंटी। करे जोर जम्मं रह्यौ भान ब्यंटी॥
बरं बोलहीं दिष्ट बिहु जन्न एकं। जनौं आरजं बार बर इंद मेकं॥
छं० ॥ ८७६ ॥

अरिल्ल ॥ गयौ दूत सब देषि चरित्तं। पंग अग्गि जंपी बर तत्तं॥
भट्ट जानि जिन भुल्लो चंदं। बैठौ जेम प्रथीपुर इंदं॥ छं०॥८७७॥

दूत के बचन सुनकर जैचन्द का प्रसन्न होना और शिकारी तैयारी होने की आज्ञा देना।

कवित्त ॥ श्रवन सुनिग कमधज्ज। पंग फुल्ल्यौ बर भासं॥
प्रात फुल्लि सतपत्र। संझ कामोद प्रकासं॥
[2]बार रूप भौ बीर। भीम दुस्सासन बारं॥
द्रोन कज्ज हनुमान। कन्ह गोधन्न उपारं॥

(१) ए. कृ. को.-सुनी पंग वीरं अपं रीति मिट्टी"। (२) मो.-वीर

उद्दरं चंद चंदहति सम । दंद पुब्ब भंजन सु दह ॥
आषेट हुकम दै पुब्ब दिसि। चंद समप्पन दान बह ॥ छं० ॥ ८७८ ॥

जैचन्द की शिकारी सजनई की शोभा वर्णन ।

आषेटक पहुपंग । बाजि नीसान प्रथम बर ॥
हिंदवान अरु असुर । गयरु सज्जीय [1]धरद्धर ॥
दुतिय बज्जि.नीसान । सबै भृत हैबर सब्बर ॥
मग्ग अट्ठ पय वांम । राज कमधज्जह समभर ॥
बज्जै निसांन न्रपतिय चढ़ौ । पंच सबद बाजिच बजि ॥
सामंत सूर बर भरि भरिय । करह न दंद नरिंद कजि ॥ छं० ॥ ८७९ ॥

दूहा ॥ आषेटक पहु पंग क्रत । चढ़िग सष्य बजि तूर ॥
आज बीर कमधज्ज सौ। इंद फुनिंद न सूर ॥ छं० ॥ ८८० ॥
कम्यौ राज जैचंद बर। जहां चंद प्रथिराज ॥
सुभि ग्रहगन मध्ये सवित। अदभुत चरित विराज ॥ छं० ॥ ८८१ ॥

कवित्त ॥ नग सु तुल्य चलि नाग। मान सेना कितीस तर ॥
मनहुं काम कर सज्जि । रंग चवरंग [2]चंग चर ॥
अदभुत चरित विराज । नग्ग जर बंग विराजत ॥
अंतरष्यि हय [3]हथ्यि । मनहुं पातुर तिय साजत ॥
दरबार उतरि भयभीर भर । सकल सोक बर इंद कौं ॥
जैचंद राज विजपाल [4]सुअ । विदा करन कविचंद कौं ॥
छं० ॥ ८८२ ॥

वृद्ध नाराच ॥ चढ्यौ नरिंद पंग राइ बाजि बीर सद्दयं ।
अनेक राइ राज सज्जि दि [5]जान नद्दयं ॥
कनंक हथ्थ पच सुलक्करीन कंछियं ।
मनों समंद उड्डि सोर बीर बोझ झम्मियं ॥ छं० ॥ ८८३ ॥

(१) मो.-चर पर । (२) मो.-चंक, चक्क ।
(३) मो.-हन्छि । (४) ए. कृ. को.-तन ।
(५) को.-जाम ।

सुपंग अंग बंधि बीर बार कंद्रपं कयं।
रजंत अग्ग एक सौ ज दंति पंति चोरयं ॥
तिमद्द रद्द हेम पट्ट घट्ट थट्ट फेरयं।
सुभंत छच राज सीस हेम दंड मेरयं ॥ छं० ॥ ८८४ ॥
धनुष्यधार मीर बंद दुष्ट [1]अप्प दिष्षयं।
रमंत तत्त बेध साम बान ते विसष्षयं ॥
सुदंद सज्ज हथ्थ रथ्थ पट्ट पोत चल्लयं।
मनों करीय नाग अग्ग पट्ट कांम पुल्लयं ॥ छं० ॥ ८८५ ॥
दसं दिसान कंपवै निसान राज संभरै।
सुन्यौ जू सूर लोक वाम पुंज तेज विफ्फुरै ॥
.... छं० ॥ ८८६ ॥

जैचंद का सुखासन (तामजाम) पर सवार होना।

दूहा ॥ सिसि बज्जहिं गंगा बरन। दान कवी पति सेव ॥
चढ़त सुषासन संमुही। जहं सामंत न्रपेव ॥ छं० ॥ ८८७ ॥

पंगराज का मंत्री को बुलाकर शिकार की तैयारी बंद करके कवि की विदाई के विषय में सलाह करना।

कवित्त ॥ बोलि सु मंचिय पंग। मुक्कि आषेट राइ बल ॥
भट्ट किति चल चित्त। भट्ट निस चलह किति चल ॥
भेद मंच दिय दान। दंद दालिद कवि भग्गिय ॥
सवें मनोरथ भग्गि। सुष्ष आसुष्ष विलग्गिय ॥
जाचै न दून हिंदून दुह। कै कवि भग्गौ कंक बल ॥
संभारै बाल संभरि धनी। जम्म चंद भग्गौ जलल ॥ छं० ॥ ८८८ ॥
*चिंति चित्त कमधज्ज। दान बेताल सु विक्रम ॥
अद्व लष्ष मन कनक। अंक मेटन विधि अक्रम ॥

(१) ए. अप्प।
* यह छन्द मो. प्रति में नहीं है।

मुत्तिय मन इकतीस । दुरद मदगंध प्रकासं ॥
वारंगन इकतीस । रूप लावन्य निवासं ॥
मंत्री सुमंत इह कुमति किय । बरजि राइ जैचंद कौं ॥
पन कितौ कहरि क्रप्पन्न होइ । इतिक विदा सजि चंद कौं ॥
छं० ॥ ८८९ ॥

मंत्री सुमंत का अपनी अनुमति देना ।

छनूफाल ॥ सो मंत्र मंचिय तब्ब । करि अरज फेरि सु कब्ब ॥
दहतीय सजि गजराज । सुनि गगन मंद अवाज ॥ छं० ॥ ८९० ॥
सम इंद्र आसन रूप । चलि नाग नाग सरूप ॥
घन चुअत मद परि अंत । गिरि राज भरनि झरंत ॥ छं०॥ ८९१ ॥
जटि कनक [1]काज सुरंग । सम बसति सोभ दुरंग ॥
सत उभय तुरिय सु तेज । दुअ अंस वंस विरेज ॥ छं० ॥ ८९२ ॥
फरकंत चातुर जेम । असमान सज्जत तेम ॥
नग जीन करित अमोल । उत साज सज्जित तोल ॥ छं० ॥८९३॥
लगि लाग लेत ललित्त । गति अंतरिच्छ कलित्त ॥
रस उभै वानी हेम । सतमन्न तुल्लिय तेम ॥ छं० ॥ ८९४ ॥
है लाष पूरि प्रमान । गिरिराज उदर समान ॥
मनि रतन मोल अनंत । गनि होइ गनिकन अंत ॥
छं० ॥ ८९५ ॥
फिरि पुरष कीनी कोस । सकलाति फिरगरु तोस ॥
जरबाफ कसब जराव । उद्दोत करन प्रभाव ॥ छं० ॥ ८९६ ॥
बहु जात चामर रूप । सिरं ढुरै जानि सुभूप ॥
जिन चरचि बहुत सुवास । कलि कसब सवित उहास ॥
छं० ॥ ८९७ ॥
जै चंद इंद विराज । है गै सुघन घन साज ॥
कविचंद कारन इंद । सम दैन चलि जैचंद ॥ छं० ॥ ८९८ ॥

(१) ए. कृ. को.-साज ।

कविचन्द की विदाई के सामान का वर्णन।

कवित्त ॥ तीस सज्जि गजराज। गगन गर जार मंद करि ॥
है सें चपल तुरंग। चरन लग्गै धरनि पर ॥
हाटक षोडस बानि। मनह सत केवल तोलिय ॥
रतन अमोलक मुत्ति। परषि ते गंठहि बंधिय ॥
सकलाति फिरंग चामर चरचि। कसब सबें विधि जर जरिय ॥
जैचंद इंद वित विविध लै। विदा करन चलि चंद किय ॥
छं० ॥ ८९९ ॥

दूहा ॥ तीस करिय मुत्तिय सघन। है सें तुरंग बनाय ॥
द्रव्य बदर बहु संग लिय। भट्ट समंषन जाय ॥ छं० ॥ ९०० ॥

पंगराज के चलते समय असकुन होना।

कवित्त ॥ भट्ट समंषन जात। राज नट बिंद प्रबंधी ॥
सीस बैंन नहि चित्त। मझझ हक्कत सालध्यी ॥
सिभू भेस अनंत। रुंड माला रचि गुंथी ॥
षंड षंड अंगार। मच जूरी तत रुंधी ॥
उच्चई कंभ षग मग्ग करि। गिद्धि पष फुनि फुनि करै ॥
जनय चोट धाराहरह। रस प्रसिद्ध बीरह भिरै ॥ छं० ॥ ९०१ ॥

दूहा ॥ कुरलंती विलिहय गयन। चंच विलग्गौ सप्प ॥
वाम अंग मंजार भय। चक्रित चिंत न्रप अप्प ॥ छं० ॥ ९०२ ॥

पंगराज का चिंता करके कहना कि जिस प्रकार से शत्रु हाथ आवे सो करो।

बोलि सवन्नी सुनि श्रवन। सुर अन भग अकथ्थ ॥
धन्नि भ्रंम भरि किति जन। ज्यौं अरि आवै हथ्थ ॥ छं० ॥ ९०३ ॥

(१) मो.-चित। (२) मो.-सिभ सेस।

मंत्रियों की सलाह से पंगराज का कवि के डेरे पर जाना ।

भुजंगी ॥ ननं मांनियं जानियं देव भंती । गयं [1]चंद न्रप ग्रेह देषै बिरंती ॥
गतं सायरं साम गभीर दालं । सदं जा प्रवालं पवनं [2]प्रचालं ॥
छं० ॥ ९०४ ॥

बलं तेज केली ननं जाहि कालं । सुरज्जं समं पाइ संचार आलं ॥
बरं लावनं इंद्रियं दिग्ग पालं । बलीनं बलीनं भरं विश्व बालं ॥
छं० ॥ ९०५ ॥

ब्रह्मंडं विजै थंभ करि हथ्थ बज्रं । पगं जानि पारथ्थ भारथ्थ सज्जं ॥
दिठी असु दिट्ठी सबैं सथ्थ रारी । धरी सथ्थ नंदी संसारी सुभारी ॥
छं० ॥ ९०६ ॥

दिषी पंग जैचंद इंदं परष्षी । तहांईय आसीस बरदाय भष्षी ॥
छं० ॥ ९०७ ॥

जैचन्द का शहर कोतवाल रावण को सेना सहित साथ में लेना ।

कवित्त ॥ जीत मत्त पहुपंग । बोलि राठौर सुबीरं ॥
सास दान करि भेद । डंड बंध्यौ अरि मीरं ॥
छल बल कल संग्रहै । दई दुरजन दावानल ॥
भट्ट थान आहुट्टि । पंग बुट्टै सारह जल ॥
चतुरंग लच्छि लीजै सघन । दै दुबाह धायन चढ़हि ॥
सब सथ्थ सथ्थ प्रथिराज बल । सुनौ सुभर सो बुद्धि इहि ॥
छं० ॥ ९०८ ॥

रावण के साथ में जाने वाले योद्धाओं का वर्णन ।

(१) ए. कृ. को.-गयंदंच । (२) ए. कृ. को.-प्रवालं ।

दूहा॥ अगि मोकलि रावन न्टपति। हक्कार्यौ कबिराज॥
भट्ट हट्ट मोकलि सु बर। कंक बिसाहन काज॥ छं०॥ ९०९॥

कवित्त॥ मेर उच्चवहि वथ्थ। देय तन वज्र पात कर॥
भषै च्यार अज इक्क। नेर सम क्रंति देह धर॥
हठिय अग्ग रिन परहि। स्वामि स्वामित्तन चुक्कहि॥
पर नायि पर मुष्य धर। धरा धीर सु रष्यहि॥
कर चलहि अप्प पय अचल बर। रावन सथ्थ सु मंडि लिय॥
दिष्षिय सु भंति इह कव्वि करि। मनुं सरद अभ्भ ससि कुंडलिय॥
छं०॥ ९१०॥

रावण का कवि को जैचन्द की अवाई की सूचना देकर नाका जा बांधना।

दूहा॥ सवैं क्रूर ग्रह पंग बर। एकादस न्टप राह॥
दुष्ट मंच दानह करिग। भट्ट सुनंदन राहु॥ छं०॥ ९११॥
गयौ रावन मैलान बर। कपट चित्त मुह मिठ्ठ॥
दान समप्पन भट्ट कों। चित बंधन बर दिट्ठ॥ छं०॥ ९१२॥

पंगराज के पहुंचने पर कवि का उसे सादर आसन देना और उसका सुयश पढ़ना।

कवित्त गयौ रावन मेरहान। चंद बरदिया [1]समप्पन
देषि सिंघासन सद्यो। पास पारस्स इंद्र जनु॥
कवि आदर बहु कियौ। देषि कनवज्ज मुकट मनि॥
इह ढिल्लिय सुर दत्त। बियौ नहि गनै तुभ्भ गिनि॥
थिरु रहैं थवा इत वज्र कर। छंडि सिकारहि छिन कुरहि॥
[2]जिहि असिय लष्य पलानि यहि। पान देहि दिढ हथ्थ गहि॥
छं०॥ ९१३॥

(१) मो.-समप्पन। (२) मो.-निसि।

पान देह दिढ़ हथ्थ। परिस पावास पंग बर॥
जा अग्गै अस तेज। तेज कंपहि जु नाग नर॥
देषि प्रथीपुर उदै। सूर सरनै गौ तत्तक॥
बर कंपै द्रिगपोल। चित्त चंचल गत्तौ भ्रक॥
अघ हरन किरन किरनौ प्रचंड। देखि दून गति देषियै॥
अप्पि बर पान पारस सुगत। दुती परस सो लिष्षियै
छं० ॥ ६१४॥

पान धार दै पान। भट्ट न्त्रिप जानि मंडि कर॥
नर नरिंद जैचंद। जग्गि सम मंडि देव बर॥
इंद्र मौज जच्चन [1]विसा। सह होय जचाइय॥
।.... .... । .... ॥
[2]चय हथ्थ लंक उप्पर न्त्रपति। तरन हथ्थ कमधज्ज कहि॥
आदि करि देव दानव सुरह। बलि आंच्यो बाबन जुजहि॥
छं० ॥ ६१५॥

खवास वेष धारी पृथ्वीराज का जैचन्द को बाएं हाथ से पान देना और पंगराज का उसे अंगीकार न करना।

दूहा॥ पान देइ दिढ हथ्थ गहि। बर करि हथ्थ दिवंक॥
मनु रोहिनि सो मिल्लिग ज्यों। बीय उदित्त मयंक॥ छं०॥ ६१६॥
लिय सु पान भुअ राज रुष। मुखप्रसन्न [3]मन रोस॥
दिषत न्त्रपति चल चिंत किय। पुब्ब प्रसन्नौ दोस॥ छं०॥ ६१७॥
करै न कर प्रथिराज तर। धरै न कार जैचंद॥
उभय नयन अंकुरि परिग। ज्यों जुग मत्त गयंद॥ छं०॥ ६१८॥
[4]सुनि तमोर पट्ठिय सुकर। मुष उत करि दिठ बंक॥

(१) मो. पिसाल। (२) मो.-त्रय लोक हथ्थं लंक उद्धर नृपति।
(३) ए.कृ. को.-मुन मुत। (४) ए. कृ. को.-मुनि।

जनु छैलनि कुलटा मिलै। बहुत दिवस [1]रस पंक ॥ छं० ॥ ९१९ ॥
राज पान जब अप्पही। पंग न मंडै हथ्थ ॥
रोस न्रपति जब चिंति मन। कही चंद तब गथ्थ ॥ छं० ॥ ९२० ॥

कवि का श्लोक पढ़ कर जैचन्द को शान्त करना।

श्लोक ॥ तुलसीयं बिप्र हस्तेषु। विभूति श्रिय जोगिनां ॥
तांबूलं चंडि हस्तेषु। चयो दानेव आदरं ॥ छं० ॥ ९२१ ॥

जैचन्द का पान अंगीकार करना परंतु पृथ्वीराज का ठेल कर पान देना।

चौपाई ॥ भट्ट जानि करि मंड्यौ राय। उहि तंमोर दियौ न्रप चाइ ॥
ठट्ठै पानि दियौ नित ठेलि। मनों वज्रपति वज्रह मेलि ॥ छं० ॥ ९२२ ॥

पृथ्वीराज का जैचंद के हाथ में नख गड़ा देना।

दूहा ॥ पानि पान करिकें दियौ। कमधज्जह प्रथिराज ॥
चल्यौ रकत कर पल्लवनि। ग्रह्यौ कुलिंगन बाज ॥ छं० ॥ ९२३ ॥
कर चंपे न्रप तास कर सारंग दिड्ड सुचंग ॥
पानि प्रथीपति दब्बियौ। श्रोन चल्यौ नष संग ॥ छं० ॥ ९२४ ॥

इस घटना से जैचंद का चित्त चंचल हो उठना।

कवित्त ॥ पान धार दै पान। दिष्ट आरुहिय बंक बर ॥
एक थान द्वै सूर। तेज दिष्यौ कि सूर बर ॥
[2]बिहुन हथ्थ बिब्भरै। लाज संकर गर बंधिय ॥
अंघ वह दिषि भट्ट। बीर भंजन सु बीर पिय ॥
निश्चल सु चित्त चहुआन कौ। चित निश्चल नन पंग बर ॥
लग्गौ सु पान न्रप वज्र सर। पान धरे बर बज्र [3]सर ॥
छं० ॥ ९२५ ॥

दूहा ॥ प्रथमहि सभा परष्षयौ। पानधार नहि भट्ट ॥
न्रप कविथान सपत्तयौ। तब परषयौ निपट्ट ॥ छं० ॥ ९२६ ।

(१) मो.-रिस। (२) ए. कृ. को. बहुन। (३) ए. कृ. को.-कर।

भुअ बंकी किय पंग न्रप । अप्पि हथ्थ तंमोर ॥
मनहु बज्रपति वज्र धर । सब अप्पौ तिहि जोर छं० ॥ ९२७ ॥

जैचन्द का महलों में आकर मंत्री से कहना कि कवि के साथ का खवास पृथ्वीराज है उसको जैसे बने पकड़ो।

कवित्त ॥ गहि कर पान सु राज । फिऱ्यौ निज पंग ग्रेह वर ॥
सोमंचिक परधान । बोल उच्चरिय क्रोध भर ॥
गहौ राज संभरि नरेस । सामंत अंत रिन ॥
मिटै बाल उर आस । आस जीवन सु मिटै तिन ॥
बोलिय सुमिच कमधज्जं वर । छग्गर भट्ट न पृथु गहन ॥
भृत भ्रात तात सामंत सुत । छलन काज पठ्ठिय पहन ॥
छं० ॥ ९२८ ॥

मंत्री का कहना कि पृथ्वीराज खवास कभी न बनेगा यह सब आपके चिढ़ाने को किया गया है ।

दूहा ॥ छलन काज पठ्ठिय पहन । मिलिन हम्म दरबार ॥
पान भट्ट पृथु किम ग्रहै । न्रप बर सोचि विचार छं० ॥ ९२९ ॥

कवित्त ॥ न्रप बर सोचि विचारि । संग सुभ्भै बरदाइय ॥
अवधि बसीठ रु भट्ट । बंस न्रप लगै बुराइय ॥
इह कलि कित्ति नरिंद । रज्ज अपजस हुअ ढंकन ॥
दिष्टमान बिनसिहै । लग्गि अंमर कुल अंकन ॥
जुग्गिनि समथ्थ जौ इन हुए । तौ सब भ्रत गिनि मारियै ॥
रिधि मंच राइ राजन सुनौ । विप्र भट्ट नन टारियै ॥ छं० ॥ ९३० ॥

जैचन्द का कवि को बुला कर पूछना कि सच कहो तुम्हारे साथ पृथ्वीराज है या नहीं ।

चौपाई ॥ टरिय राज उर क्रोध विचारिय । बरदाई मिथ्या न उचारिय ॥
फिरि जैचंद पिथ्थ ग्रह आयौ । निज कर (१)रावन भट्ट बुलायौ ॥
छं० ॥ ९३१ ॥

(१) मो.-रात्र सुभट्ट ।

कवित्त ॥ अप्पि पान करि मान। नाथ कनवज्ज अप्प कर ॥
दिल्लीवै चहुआन। तास बर भट्ट सिद्धि हर ॥
अमर नाग नर लोक। जास गुन ज्ञान ग्यान बर ॥
आदि बंध मुनिवर। प्रबंध षट भाष भाव भर ॥
नव रस पुरान नव दून जुत। चतुर देह चातुर सु तप ॥
रष्यौ न राज अप्रछन्न कवि। कहत तत्त कनवज्ज नृप ॥
छं० ॥ ९३२ ॥

चौपाई ॥ बोलो भट्ट सु मत्ति विचार। किन सिर आतपत्र आधार ॥
जौ प्रथु ह्वै तौ हनों ततच्छिन। नहिं तुझ है गै 'देउ' अथ्थि घन॥
छं० ॥ ९३३ ॥

कवि चंद का स्वीकार करना कि पृथ्वीराज हैं और साथ वाले सब सामंतों का नाम ग्राम वर्णन करना।

दूहा ॥ पद्धरि छंद सु चंद कहि। सिंघासन प्रथिराज ॥
कन्ह सु दिष्षिन जन्ह गिरि। निड्डुर वास विराज छं० ॥ ९३४ ॥

पद्धरी ॥ बैठो सुभट्ट आरोहि पिट्ठ। तिन ढिगह सोभ इंद्रह बयट्ठ ॥
छत्रह उतंग चामर बइंभ। क्रष्णह सरूप फुल्लीत संभ ॥छं०॥९३५॥
डोलीय पंच आरोहि तिथ्थ। तिन मझ्झ बयठ निड्डुर समथ्थ ॥
बल कन्ह देषि पट्टी अरोहि। कौरवह घत्ति कर्नह समोहि ॥
छं० ॥ ९३६ ॥

पुच्छै सु बत्त कनवज्ज राइ। देषेव रूप प्रज्जलित लाइ ॥
दामित्त रूप सामंत देषि। लिन्नौ सु भ्रंम जम्मह स लेष ॥
छं० ॥ ९३७ ॥

कन्हा नरिंद चहुआन बंक। पट्टनह राव मार्यौ जु कंक ॥
गोयंद राव गहिलौत नेस। जिन दोय फेर गज्जन गहेस ॥छं०॥९३८॥
जैतह पमार अब्बू नरेस। छत्रह धरंत मध्यै असेस ॥
षंडियौ राय बंध्योति साष। बलबंधि साह दस सहस लाष ॥
छं० ॥ ९३९ ॥

(१) प. कृ. को.-दिया। (२) प. कृ. को.-जु।

हरसिंघ नाम बर सिंघ बीर। तिन हथ्थ जुद्धि पच्चवट्ट नीर ॥
वालुका राव सध्यौ सु पंग। संभलिय राय झाला प्रसंग ॥

छं० ॥ ९४० ॥

विंझ राज देषि चहुआन रूप। जिन भरिय लष्प द्रव्यान कूप ॥
परमाल देषि चंदेल राज। बंधिया राय द्रव्यान काज ॥

छं० ॥ ९४१ ॥

बारड़ सु राव अधिपत्ति सेन। तिन चढ़त लग्गि वह उड्डि रेन ॥
अचलेस नाम भट्टी सु संध। मुरधरह राइ पडिहार बंध ॥

छं० ॥ ९४२ ॥

परिहार पीप सामंत सुद्ध। पतिसाह बंधि लीयौ अरुद्ध ॥
निढुरह राय अवनी अकंप। गजनेस राइ ज्वाला तलंप ॥ छं० ॥ ९४३ ॥

तोंवर पहार अवनी सु जोर। बंधयौ राइ कन्ह समोरि ॥
कूरंभ राव पज्जून बीर। सद्धये जेन इक लष्प मीर ॥ छं० ॥ ९४४ ॥

नरसिंघ एक नागौर पत्ति। रिनधीर राज लीयौ जुगत्ति ॥
परमार सलष जालौर राह। जिन बंधि लिद्ध गजनेस साहि ॥

छं० ॥ ९४५ ॥

कंगुरौ देस दल लीन ढाहि। कीनी सु एक पिच वट्ट राह ॥
परमार धीर रिनधीर सथ्थ। मेवात बंधि मुग्गल अकथ्थ ॥

छं० ॥ ९४६ ॥

जद्दव सु जास पीची प्रसंग। लीनें सु देस अवनी पुलिंग ॥
हाहुलिराय कंगुर नरेस। लीए सु सत्त पतिसाह देस ॥

छं० ॥ ९४७ ॥

जंघार भीम उड्गल सु सोह। रिन जुद्ध बीर संकर अरोह ॥
सारन्न राइ मोरी भुआल। कट्ठिया राइ जिन किद्ध काल ॥

छं० ॥ ९४८ ॥

तेजलह डोड परिहार रान। भिड़ एक तेक बंदै सु भान ॥
गुजरात धनी सागौत गौर। आरनि सु साहि बंधंत मौर ॥

छं० ॥ ९४९ ॥

परिहार एक तारन सुरष्य । कर सलय लोथ सेना समष्य ॥
वारड़ सुधीर सहसौ करन्न । बरियाति वीस हुअ छिन्न भिन्न ॥
छं० ॥ ९५० ॥

चहुआन एक अततोइ रुप । कालिंज राइ बंध्यौ अनूप ॥
बल्लिराइ एक भारथ्थ भीम । कूरंभ राव चंपेव सीम ॥छं०॥९५१॥
भौंहां चँदेल जिन बंधराज । पानीय पंथ प्रथिराज काज ॥
गुज्जरह राम धूवत समान । मारयौ जेन आल्हैल षान ॥
छं० ॥ ९५२ ॥

चंदेल माल यट्टा अरोह । साधियौ वीर जनचंद भोह ॥
रस सूर रोह मेरह समान । जिन हेम प्रवत लिय जोर पान ॥
छं० ॥ ९५३ ॥

मंडलीक राव वघ्घह अरोह । आवद्ध एक चिस्सूल सोह ॥
पूरन्न माल पल हंड षेत । जिन सूर दीन सत अश्वमेत ॥छं॥९५४॥
धावरह धीर सामंत राज । जिन जीव एक प्रथिराज काज ॥
हाडौ हमीर सथ्थें कुलाह । बंधयौ जेन भिरि पातिसाहि ॥छं॥९५५॥
रावत्त राम सामंत सूर । जिन द्रिग्ग देषि नट्ठे करूर ॥
जावलौ जल्ह रिनतूर बज्जि । लिय बंधि जेन इकतीस रज्जि ॥
छं० ॥ ९५६ ॥

चालुक एक भारो जु सोह । लीयें जु फिरै इक सहस लोह ॥
बग्गरी बघ्घ षेता पँगार । रिनथंभ तेन करि मार मार ॥ ९५७ ॥
दाहिम सुभट्ट संग्राम धाम । मारयौ वरुन करुना सु काम ॥
मंडलीक (1)कंकवे सेन चंद । बंधयौ जेन भौमह नरिंद ॥छं०॥९५८॥
परमार सूर सामल नरेस । रिन मंभ अटल दल असहेस ॥
परमार कनक पळ्ळवान लीन । प्रथिराज ग्राम दस सहस दीन ॥
छं० ॥ ९५९ ॥

संजम हराय बर जुद्ध नेस । षोडस्स दान दिय बाल वेस ॥
चाटौ जु टांक बैठौ नरिंद । देषंत जानि धुअ रूप इंद ॥ छं०॥ ९६०॥

(१) ए. कृ. को.-कंसवे ।

विरसन्न इसौ चाटंत सेन। रिन जुवत सेन उड्डुंत रेन॥
साषुलौ सहस मलनेत बंध। दस सहस ग्राम पट्टैति बंध॥
छं० ॥ ९६१॥

विक्रमादित्य कमधज्ज राइ। जिन देस भोग लीयात नाय॥
भुज राज सुभट दो सहस सेन। बंधिया राइ अवधूत तेन॥
छं० ॥ ९६२॥

मोरीति सुभट सादल नरिंद। कंठिया राव वासीति हिंद॥
बघेल सूर सोहंत सेन। लिन्नीय षग्ग बल दष्षि नेन॥
छं० ॥ ९६३॥

लंगरिय राव सथ्थह भुआल। अध देस दिड्ड व्याघात काल॥
पुंडीर चंद सोहंत सथ्थ। किरनाल मेघ कीनी अकथ्थ॥
छं० ॥ ९६४॥

परिहार सुअन तारन सु सोह। देषंत अछर करि मोह सोह॥
केहरिय मल्हनासह विधूस। बधनौर वास सत जाइ भूस॥
छं० ॥ ९६५॥

हरिदेव सहस सामंत रूप। जद्दव सु जाज अवनी अकूप॥
उहठी गंभीर सोहंत एह। रज रीति रूप रष्षीति रेह॥
छं० ॥ ९६६॥

सामंत राइ पुहकर समथ्थ। जिन लीन दिल्लि जोधान कथ्थ॥
दाहिमौ कन्ह समियान गड्ड। बंधि लिय राय सोक तल बड्ड॥
छं० ॥ ९६७॥

चहुआन पंचाइन सहस सेन। चलंत सथ्थ उड्डंत रेन॥
परिहार इसी रिनधीर सोह। रिन चढ़ै जन्म जालिंम लोह॥
छं० ॥ ९६८॥

सामंत सित्त पंगुर नरेस। तिन पिट्ठ सूर सत्तह कहेस॥
तिन पिट्ठ सूर सुभटह हजार। रिन जुड्ड करंतह मार मार॥
छं० ॥ ९६९॥

सामंत एक बुंदह सु जत्त। उठ्ठंत बीर घरि एक सत्त॥

जुध करहि सूर धड़ मचहि सार। मस्तकहि पिठु करै मार मार॥
छं०॥ ९७०॥

पंगुरै देषि चित चक्रित नाथ। असमान सीस लगि ढिल्ल नाथ॥
डेरौ सुदीन चयकोस माहि। जे लिए रखत उत्तंग साह॥
छं०॥ ९७१॥

अनेक कमल अनेक रूप। रह वास थान तल उंच सूप॥
कनवज्जराय तब उठि चल्लि। रायान राय साषा न हल्ल॥छं०॥९७२॥

दस लष्य रष्षि चौकी भुआल। इंद्र रूप दरस सेवंत काल॥
प्रथिराज प्रात कीनौ पयान। दस लाष वींटि परि परस [1]भान॥
छं०॥ ९७३॥

जैचन्द का हुक्म देना कि पड़ाव घेर लिया जाय, पृथ्वीराज जाने न पावे।

कवित्त॥ कहि सब कनवज राइ। भज्जि प्रथिराज जाइ जिन॥
असिय लष्य हय दलहं। षबरि किज्जै सु षिन्नषिन॥
हसिय सव्व सामंत। रोस प्रथिराज उहासै॥
मिलिय सेन रघुबंस। चंद तब भट्ट प्रगासै॥
इह दैत्य रूप जुध मंगिहै। आज नीक परतह बहै॥
कनवज्ज नाथ मन चिंत इह। जुध अनेक बल संग्रहै॥छं०॥९७४॥

पहचान्यौ जयचंद। इहतै दिल्ल सुर लिष्यौ॥
नहिय चंड उनिहार। दुसह दारुन तन दिष्यौ॥
कर संध्यौ करिवार। कहै कनवज्ज मुकुटमनि॥
हय गय दल षष्परहु। भाजि प्रथिराज जाइ जिन॥
इत्तनौ सोच भुअपति उठ्यौ। सुनि नरिंद किन्नौ न भौ॥
सामंत सूर हसि राज सों। कहै भलौ रजपूत भौ॥ छं०॥ ९७५॥

इधर सामंतों सहित पृथ्वीराज का कमरें कस कर तैयार होना।

(१) ए. कृ. को.-पासिमान।

धनि धनि धनि सामंत। सूर कहि राज इंद बर॥
निरषि हरषि कर करषि। परषि कनवज्ज नाथ तर॥
निरभै सोम सिंगार। करन कलहंत मंत मन॥
नरनि नाह कन्हह कमंध। उच्चर्‍यौ बीर तन॥
आभासि अवर आनन सुभट। यट्ठ मंति चट्ठे चलन॥
करि साथ तुरंगम सथ्थ भर। कसि ठट्ठे अप अप बलन॥
छं०॥ ९७६॥

दोनों ओर के बीरों की तैयारियां करना।

रसावला॥ उठ्यौ पंग राजी, रवी तेज साजी। उठे बीर सूरं, छछोह सभीरं॥
छं०॥ ९७७॥

भृंगीराज राजी, सुराजी विराजी। चिहूं पास साजी, अरीदीस गाजी॥
छं०॥ ९७८॥

दोऊ रोस जग्गी, प्रलै जानि अग्गी। .... ॥छं०॥९७९॥

पृथ्वीराज के सामंतों की तैयारियां और उनका उत्तेज।

कवित्त॥ कंठ सूर दाहिम्म। अंग लग्गी सुवास तन॥
लष्य मद्धि दुह प्रगटि। अग्गि उट्ठी सूरं घन॥
चंद वीय ज्यौं बट्ठ। अग्गि लग्गी दरसानी॥
हय [1]हय हय उच्चार। गहग्गह सुनिये बानी॥
लंगरीराव [2]लोहा लहारी। चावौंगो चहुआन दल॥
बर भरी बीर जित्तन अरिय। [3]मुगति पंथ षुल्लिय सु बिल॥
छं०॥ ९८०॥

कवित्त॥ पट्टै सर प्रथिराज। राज सोमेसर संभरि॥
लंगी लंगरराइ। राय संजम सुअ जंवरि॥
वारा झायह भुल्लि। बंघ उठ्यौ लोहानह॥
पारद्वी भुल्लि धार। मूल चंप्यौ चहुआनह॥
बर बीर बराहां उप्परैं। केहरि बढ्ढारी बढन॥
इक चप्प क्रन्न कर पग्ग इक। सावक मुष लग्गा रहन॥छं०॥९८१॥

(१) मो. गय। (२) ए. कृ. को.-लोहो। (३) ए. कृ. को.-सुकाति।

अड्डा आसन अड्ड। राज अड्डा तंमूलं॥
अड्डा टेम सुवेस। एक आदर संमूलं॥
पंगानै दीवान। रहै न रष्यौ चलि सथ्थह॥
काया तुंग सु कन्ह। देव साष्यौ भुज वथ्थह॥
गुरवार रत्ति गोचर कियौ। प्रात प्रगट्टत छुट्टयौ॥
दरबार राव पहुपंग दल। चौकी चौरंग जुट्टयौ॥ छं० ॥ ६८२॥

पंग दल की तैय्यारी और लंगरीराय का पंगदल को परास्त करके राजमहल में पैठ पड़ना।

पद्धरी॥ जुध जुटन लंग उट्ठयौ भीम। मानों कि पथ्थ गो ग्रहन सीम॥
संभरिय राज सों करि जुहार। चय सहस सुभट सजि लोह सार॥
छं० ॥ ६८३॥

मद गंध करी च्यालीस सोह। गज फूल कनक रुप्पह करोह॥
भानेज सहसमल सथ्थ व्योम। धुंधरिग [1]भान इह दिग्ग धोम॥
छं० ॥ ६८४॥

हम्मीर कनक राठौर बंस। चाल्यौ कि कृष्ण मारनह कंस॥
हरि सिद्ध जाइ कीनौं प्रनाम। दुअ सहस महुर दुज दिन्न दाम॥
छं० ॥ ६८५॥

दरबार जाइ दरबान रुक्कि। सत सहस पौरि दरवान मुक्कि॥
लष तीन महल चौकीन हल्लि। परधान सुमिच तव तेग झल्लि॥
छं० ॥ ६८६॥

हहकारि सीस दर गयौ लंग। हल हलिय सुभट देषंत पंग॥
उंचे अवास जाली सु भंति। दस पंच महल मंडी जु पंत॥
छं० ॥ ६८७॥

तिन मझ्झि पंग देषै सु भट्ट। अन्नेक अवर मिलि एक यट्ट॥
घम घम निसान चय लष्ष बज्जि। सिंधूर राग करनाल सज्जि॥
छं० ॥ ६८८॥

गुजरत्त सह अंगी तबल्ल। मानो कि भृम्म करिहै जु मल्ल॥

(१) मो.-वांम।

अनेक गिद्धि परि ठौर ठौर। जंबुक कुलाह जिय नह सोर॥
छं० ॥ ९८९ ॥

चौसट्ठि रुद्र तुंवर [1]अनेय। रंजि रंभ रही टगटगी लेय॥
संजोगि मात पुच्छै सु जोइ। आचिज्ज एह यह कवन लोइ॥
छं० ॥ ९९० ॥

अद्धा सु अंग इह कहां दिट्ठ। तरवारि झपट पारंत रिट्ठ॥
मुह मुह चमक्कि दामिनि झपट्टि। जय लष्य घटा लीनी लपट्टि॥
छं० ॥ ९९१ ॥

लंगरीराय के आधे धड़ का पराक्रम वर्णन और उसका शान्त होना।

अनेक छिंछ आकास उट्ठि। जैचंद यट्ठ रहे निट्ठ निट्ठ॥
विहथंत तेग [2]वाहत अछेग। उड्डंत सीस धर परत वेग॥छं०॥९९२॥
निरषंत सीस घर मद्धि पंग। दुअ लष्य सेन करि मान भंग॥
हल हले सहर दुनियां अकंप। वाउलिय लग्गि [3]उड्डंत लंप॥
छं० ॥ ९९३ ॥

जयचंद घरनि सब निरषि व्योम। धुंधरिग धराधर उड्डि धोम॥
उड्डंत बीर झपटंत सेन। लरषरहि परहि उड्डंत तेन॥
छं० ॥ ९९४ ॥

निकल्यौ महोदधि जन्न बीर। मुहु लेय चिन्न उतर्यौ नीर॥
लेयंत सीस हर हार कौन। बर्यौ सु मिच अपछरन लौन॥
छं० ॥ ९९५ ॥

किलकंत मट्ठि रुधि पीय पूर। सम्हौ जु जुद्ध जे किये सूर॥
अंतह अलुभिझ पग बीर बाहि। धर भार धार भर पारि याहि॥
छं० ॥ ९९६ ॥

षहचर उड्डंत पल धाषि लेय। आवंत रष्य अनेक केय॥
चालत रुधिर सलिता प्रवेन। तिन मध्य चली अनेक सेन॥
छं० ॥ ९९७॥

(१) ए. कृ. को.-अनेक। (२) ए. कृ. को.-चाहत। (३) को.-उझ्झत।

पट्टनह हट्ट बिच चलिय नह। सागीय सु करि वहता सु मह ॥
चौसट्ठि पच बुदबुदा चल्लि। अंगुली भिंग सल सलत सल्लि ॥
छं० ॥ ९९८ ॥

भरसुंड करी मग स्रवि बुद्धि। कमलति सुभंत सर मझि रुद्धि ॥
उप्परह भौंह सो भवर तुंड। अपछूर अनेक तट जानि झुंड ॥
छं० ॥ ९९९ ॥

घुप्परिय कछ सेवाल केस। संगरिय किद्ध क्रीड़ा नरेस ॥
ऐसौ सु जुद्ध करिहै न कोउ। चव लष्य सात आवट्ट सोउ ॥
छं० ॥ १००० ॥

घर मझि रुधिर पलचर अमेय। घर छोड़ि सरत हर सिद्धि लेय ॥
तुट्टी अकास धरनिय पलट्टि। गिद्धनी सलित उप्पर झपट्टि ॥
छं० ॥ १००१ ॥

संभले राज प्रथिराज सेन। करि है न जुद्ध करना सु केन ॥
संजमराय सुत सकल संभ। गम्मयौ दरिद्र रुद्र तनौ रंभ ॥
छं० ॥ १००२ ॥

किलकिका नाल छुट्टी अवाज। लै चली लंग घर महल साज ॥
दस कोस परे गोला रनकि। परि महल कोट गज्जी धनकि ॥
छं० ॥ १००३ ॥

संजमह सुअन लै चली रंभ। सब लोक मझि हूऔ अचंभ ॥
.... । .... ॥ छं० ॥ १००४ ॥

जैचन्द के तीन हजार मुख्य योद्धा, मंत्री पुत्र भानेज और भाई आदि का मारा जाना।

कवित्त ॥ परे तुरिय सत सहस। परे मदगंध सहस्सह ॥
परे पेत पंगार। पर्यौ मंत्री सु धरंतह ॥
परे सुभट चय लष्य। परे लंगा चहुआनह ॥
परि सहसो भानेज। परे चय सहस सवानह ॥
परि धनी सेन किय उद्ध गति। रुधिर कम्पित कनवज बही ॥
पर मझि परी गिद्धनि अछरि। सु कविचंद ऐसी कही॥छं०॥१००५॥

लंगरीराय का पराक्रम वर्णन ।

इह जुद्ध लंगरिय । आय चौकी सम जुथ्यौ ॥
एक अंग लंगरिय । तीन लष्यह इथ पुथ्यौ ॥
सार सार उछरंत । परी गिद्धा रव भष्वन ॥
गज वाजिच निहाय । वज्जि उत्तराधि दष्षिन ॥
द्रुम भिन्यौ लंग पंगह अनी । हाय हाय मुष फुट्टयौ ॥
हल हलत सेन असि लष्प दल । चौकी चौरंग जुट्टयौ ॥
छं० ॥ १००६ ॥

मंची राव सुमंत । इथ्थ विंटचौ सचलंतौ ॥
दुज्झाई दिल्लीष कोप । ओप कुंजरनि बढ़ंतौ ॥
हालो हल कनवज्ज । मंझ केहरि कुकंदा ॥
संजमराव कुमार । लोह लग्गा लूसंदा ॥
चहुआन सहावै जुद्ध हुअ । ग्रहा गिद्ध उड़ाइयां ॥
रन भंग रावनै वर विरद । लगै लोह उचाइयां ॥
छं० ॥ १००७ ॥

एक कहै अप्पान । एक कहि बंधि दिवाना ॥
बंधौ बंधन हार । मार लद्धौ सिर कन्हा ॥
बाबारी बर तुंग । षग्ग [1]साहै विरझाना ॥
लंगी लंगरराव । अद्ध राजी चहुआना ॥
उरतान ढंकि कमधज्ज दल । संजम राव समुह हुअ ॥
प्रारंभ जुद्ध जुद्धं सबल । चलि चलि बीर भुजंग [2]भुअ ॥
छं० ॥ १००८ ॥

पृथ्वीराज का धैर्य्य ।

जौ पच्छिम दिसि उवै । पुब्ब अंथवै दिनंकर ॥
धर धर फनि फन मुरहि । गवरि परहरै जु संकर ॥
ब्रह्म वेद नह चवै । अन्नित जुधिष्टिर जौ बुल्लय ॥
जौ सायर जल छिलै । मेर [3]मरयादह डुल्लय ॥

(१) ए. कृ. को.-सोहै । (२) ए. कृ. को.-हुअ । (३) मो.-मरयादा ।

इतनौय होय कविचंद कहि। इह इत्तो षिन में करहि ॥
तुम हीन दीन सब चक्कवै। प्रथीराज उर नहिं डरहि॥
छं० ॥ १००९ ॥

लै संजोगि नृप षेत। आइ ठट्टौ एकत बर ॥
तब लगि पंग कनवज्ज। वीर चहूँ संमुह धर ॥
रावन रन [1]उत्तऱ्यौ। सामि फौजह अधिकारिय ॥
मीर कटक मोकलहु। ताम रुक्यौ झुकि भारिय ॥
बनबीर राज सिंहा सुभर। मुक्कल्यौ बेगि चतुरंग दल ॥
सज्जे सुबंध चहुआन भर। .... ॥ छं० ॥ १०१० ॥

अपनी सब सेना के सहित रावण का पृथ्वीराज पर आक्रमण करना।

तब झुकि पंग नरिंद। दिष्टि कीनी झुकि अग्गी ॥
जिम सुकिया दुति बचन। दृत टारिय अंषि अग्गी ॥
ज्यों जोगिंद सुष इंद। रंभ टारै तप भग्गै ॥
झुकिय किन्त [2]कुटवार। पंग रावै द्रव मग्गै ॥
भयभीत नृपति रावन्न तजि। तजै धनज जोगिंद तजि ॥
यों बल्यौ राज चहुआन पर। अप्प सेन नलवारि रजि ॥
छं० ॥ १०११ ॥

रावण की फौज का चौतरफा नाकेबंदी करना।

अप सेन सम नरिंद। लरन धायौ रावन बर ॥
काल जाल जम जाल। हथ्थ कीने जु अग्गि गिरि ॥
[3]सजि सनाह जमदाह। कूह मंची जु अत्ति बर ॥
सुनि सु कान रव पाल। वीर संभरि निसान घुरि ॥
फिरि पऱ्यौ सेन इन उप्परहि। सो ओपम कविचंद कहि ॥
फट्टी फवज्ज चावद्दिसह। गंग कूल बक्कारियहि ॥ छं० ॥ १०१२ ॥

(१) ए. कृ. को.-उच्चऱ्यौ। (२) ए. कृ. को.-कोटवार।
(३) मो. सजि।

रावण का पराक्रम और उसकी वीरता का वर्णन।

फिऱ्यौ हथ्थ जमजाल। ग्रहन अति बार पच्छ फिरि॥
नीर थंभ यह फिऱ्यौ। तुट्टि जल फिरै मीन हरि॥
पवन फेर पित फिरै। बीर ज्यों फिरै हकाऱ्यौ॥
फिरै हथ्थ बर रोस। पेम ज्यों फिरै संभाऱ्यौ॥
भज्जई हथ्थ हथ्थौंञ बल। करिस नैंन रत्ते रुधिर॥
जानै कि दैड्ड जम की विसल। [1]चुवै जानि मंगलति झर॥
छं० ॥ १०१३॥

मोरि हथ्थ बिट्टारि। काल बिट्टारि भवन कौं॥
तिरम जानि रस मुट्ठि। चल्यौ मोरन्न पवन कौं॥
काम अंध दिष्षै न कोइ। सोच सुद्धित मदपानिय॥
राज मद्द राजनिय। ग्यान सुद्दिन सुर पानिय॥
करि दैषि मंत रावन बलिय। उप्पर हरि धावै लरन॥
ओपम्म चंद जंपै विसल। तत्त मंत कबहूं करन॥ छं० ॥ १०१४॥

ज्यों कलंकपर हरै। न्हान गंगा तिथ्थह बग॥
अध्रम ध्रम्म परहरै। अजस पर हरै सुजस मग॥
माह चवथ ससि तजै। देवध्रम तजै छुद्र नर॥
चंप भवर गुन तजै। भोग जिम तजै रिष्य गुर॥
इम मुक्कि करिय रावन बलिय। राज सेन उप्पर पऱ्यौ॥
जमजाल काल हथ्थी सु बर। ता पच्छै क्रम क्रम [2]पऱ्यौ॥
छं० ॥ १०१५॥

रावण के पीछे जैचन्द का सहायक सेना भेजना और स्वयं अपनी तैयारी करना।

लरत राज रावन्न। पंग पच्छै फवज्ज फटि॥
छूर किरन फट्टंत। बान छुट्टंत पथ्थ फटि॥

---

(१) ए. कृ. को.-चवै। (२) ए. कृ. को.-सारग्न।

है गै मत्त मतंग। [1]दंद दंतिनि धर छाइय॥
ज्यौं बद्दल दल उपरि। छांह चल्लै सो धाइय॥
ता पच्छै पंग अप्पन चढ़न। सुनि रावन आहत जुध॥
आनै कि राज चहुआन को। इसौ दरसि भग्गौ जु बंध॥
छं०॥ १०१६॥

चांद्रायन॥ इह ओपम कविचंद। पिष्षि [2]तन रन्निय॥
सोज राज संमेत। जपेषय तन्निय॥ छं०॥ १०१७॥

अरिल्ल॥ सूर करी मधि डार कहंकह। कहै प्रथिराजन लेउ गहंगह॥
.... । .... ॥ छं०॥ १०१८॥

पंगराज की ओर से मतवाले हाथियों का झुकाया जाना।

दूहा॥ छूटत दंतिन संकरनि। सो मत मंत उतंग॥
गात गिरव्वर नाग गति। [3]चालत सोभ सुअंग॥ छं०॥ १०१९॥
सत्त सूर सोभत सजत। अभंग सेन भर राज॥
गहन राज प्रथिराज कौं। सेन सुरंगह साज॥ छं०॥ १०२०॥

पंगराज और पंगनी सेना का क्रोध।

विअष्परी॥ देषियहि राज रस सूर भल्लै। सूर रज बीर सारोस हल्लै॥
वेंन आकास सर लल्ल काल्लै। देषियहिं पंगुरे नेंन लल्लै॥
छं०॥ १०२१॥

दोनों सेनाओं का परस्पर मिलना।

कवित्त॥ मिले सूर बज्जे अघात। [4]सस्त्र बज्जे अस्त्रन सौं॥
ज्यौं ताल ताल बज्जए। जीभं चियं मेग उलाल सौं॥
गजर बज्जि घरियार। लोह भय अंति अघानं॥
बजि त्रिघात उतंग। सस्त्र घल्लै सुर पानं॥

---

(१) ए. कृ. को.- दंत। (२) ए. कृ. को.-रन, को.-तर।
(३) ए. कृ. को.-चालति। (४) ए. कृ. को. सस्त्रं वज्जे जु सस्त्र सौं।

चहुआन आन कमधज्ज करि। पाइ मंडि आघाट दुज ॥
हक्कै पहक्क कायर परै। देव रूप आहत्त सुज ॥ छं० ॥ १०२२ ॥
तेग बहत मंडली। रोष जनु करी तुंग बर ॥
पूर जूह आवंत। रुधिर रन लोह लग्गि पर ॥
स्वामिध्रंम सों लच्छि। मेर हथ लच्छि न ग्राहै ॥
रगत पील मझ्झि गिरत। तिनह में मोती बाहै ॥
भेदै न कमलं जल सुबर बर। कमल पंच छिंटन्न लग ॥
छवि गात तेग आतुर बहै। रुधिर छिंट छुट्टै न जुग ॥छं०॥१०२३॥

पंगराज का सेना को प्रगट आदेश देना।

दूहा ॥ तब हंकारी कीय न्रप। चढ़ि मच्छर बर जीव ॥
जनु प्रजरंती अग्गि महि। लै करि ढारिय घीव ॥छं०॥१०२४॥
मंचिय जुद्ध अनुद्ध सुनि। अरियन ग्रहन न सार ॥
रे चहुआन न जाइ घर। पंग पिटारै मार ॥ छं० ॥ १०२५ ॥
इह कहंत पंगह चल्यौ। आइस ले सब सेन ॥
लेहु लेहु इमं उच्चरिय। जन जन मुष मुष बेंन ॥ छं० ॥ १०२६ ॥

पृथ्वीराज का कविचंद से पूछना कि जैचन्द को पंगु क्यों कहते हैं।

*पुच्छि नरिंद सु चंद सौं। तुम बरदाय कविंद ॥
सब पंगुर किहि विधि कहत। यह जयचंद सु इंद ॥
छं० ॥ १०२७ ॥

कवि का कहना कि इस का पूर्श उपनाम दलपंगुरा है क्यों कि उसका दलबल अचल है।

कवित्त ॥ जैसे नर पंगुरौ। विनु सु [1]झंगुरी न हल्लहि ॥
आधारित झंगरी। हरू वह वत्त न चल्लहि ॥
तैषे रा जयचंद। असंष दल पार न पायौ ॥

*छन्द १०२७ और १०२८ मो. प्रति में नहीं है। (१) को-डंगुरी।

चाल,क इक सर सरित'। दलन हरबल्ल अघायै ॥
दिसि उभय गंग जमुना सु नदि। अद्ध कोस दल तब बढ्यौ ॥
कविचंद कहै जैचंद न्रप। तातें दल पंगुर कढ्यौ ॥ छं० ॥ १०२८ ॥

जैचन्द की सेना का मिलना और पृथ्वीराज का पड़ाव पर घेरा जाना।

चंद अन्नित भरि बीर। विषय झाला सु प्रजलि चलि ॥
नैन दंत आरुहिज। मत्त दंती सु दंत धुलि ॥
तम तामस उक्करै। बीर नीसान धुनंके ॥
बीर सद्द सुनि क्रन्न। मद्द गजराज झुनंके ॥
विंटये सूर सामंत न्रप। रावन सब न्रप मग्ग गसि ॥
असि लष्ष न्रपति पहुपंग दल। सूर 'चिंत नन मंत बसि ॥ छं० ॥ १०२९ ॥

दूहा ॥ ग्रसि रावन चिहु मग्ग रहि। सर प्राहार प्रमान ॥
ग्रहन राज चहुआन कौं। पंग बज्जि नीसान ॥ छं० ॥ १०३० ॥
साम सनाह कनंक वर। सलष सु लष्ष प्रमान ॥
मग रष्षन रजपूत बट। अरि मुक्यौ न सु थान ॥ छं० ॥ १०३१ ॥

कवित्त ॥ रावन दल दलमलत। हलत भग्गोव सुभर अरि ॥
भग्गें दल बोहिथ्थ। बीर भाटी पहार फिरि ॥
घरी एक आहत्त। झंझ बज्जी जुध जग्गी ॥
जनु कि महिष मैंमंत। मत्त विभ्रम बल लग्गी ॥
भर सिंघ पंच पचाइनह। तजन राज रज राज भिय ॥
पांवार धन्नि धावर धनी। मग्ग पग्ग मग भीर लिय ॥ छं० ॥ १०३२ ॥

जैचन्द का मुसलमानी सेना को आज्ञा देना कि पृथ्वीराज को पकड़ो।

चौपाई ॥ बज्जे सुनवि पंग सुर रूपं। चक्रित चित्त भूपाल सु भूपं ॥
'पुक्कारे बर उन न्रिप अंगं। अरि गौ भंजि थान सुर मंगं ॥
छं० ॥ १०३३ ॥

(१) मो.-चित्त। (२) ए. कृ. को.-पुक्कारी।

पद्धरी ॥ अग्गें सुपंग बज्जीर बीर। फुरमान अप्पि अरि गहन मीर ॥
बंधि सिलह कन्ह उभ्भौ करूर। मनु धाइ छुट्टि (१)भद्दव तिहूर ॥
छं० ॥ १०३४ ॥
सन्नाह सज्जि गोरी पहार। जानियै सूर सायर अपार ॥
हज्जार सित्त सजि सुभर मीर। मिलि पंग हेत बर बीर तीर ॥
छं० ॥ १०३५ ॥
जानियै बीर बीरन्न जूर। कंद्रप्प किति जानीय सूर ॥
मनु हक्क सज्जि सजि सिलह थान। बहकरै बीर दस कंध मान ॥
छं० ॥ १०३६ ॥
हज्जार साठि सजि षरे मीर। कलहंस मान कसि अंग बीर ॥
हय गय पलान पहुपंग षुल्लि। दैषंत किरनि बर किरनि डुल्लि ॥
छं० ॥ १०३७ ॥
हलहलत होत गजराज छुट्टि। आयस आनि धन पंग लुट्टि ॥
सन्नाह सज्जि सोभै सु भूप। द्रप्पन झलक्कि प्रतिब्यंब रूप ॥
छं० ॥ १०३८ ॥
सोभै अनेक आकार बीर। मानो मढ़ि ढ्ढ सोभै सरीर ॥
पष्षरै भीर हय भीर जंपि। गति डुलै प्रबत प्रव्वत्त सु कंपि ॥
छं० ॥ १०३९ ॥
बर हुकम पंग न्रिप इहय दीन। टिड्डीस अन्न सम गवन कीन ॥
बिहूरे सेन कमधज्ज षान। ग्रहन भी ग्रहन प्रथिराज भान ॥
छं० ॥ १०४० ॥
उग्रहन बत्त करतार हथ्थ। रुक्कवन धाइ चहुआन सथ्थ ॥
छं० ॥ १०४१ ॥

युद्ध-रँग राते सेना समूह में कवि का नव रस की सूचना देना।

कलाकल ॥ नचि नौरस थान अदभ्भुत बीर। भयो रस रुद्र कवै कवि भीर॥

(१) मो.-भद्दव कि।

भैभंति भयानक कायर कंपि। करुना रस केलि कलामुष जंपि॥
छं० ॥ १०४२ ॥

तहां रस संकर द्वै अरि संच। उभ्यौ अदबुद्द महारस नंचि॥
लियौ रस निड्डुर बीभछ अंग। दिष्यौ चहुआन सु सेनह पंग॥
छं० ॥ १०४३ ॥

हस्यौ रस हास सलष्य पवार। बरं बरझालि सु बीर दुधार॥
भयौ रस सत्त मुगत्ति य मग्ग। सुधारहि काम चलै जस अग्ग॥
छं० ॥ १०४४ ॥

रचैइ सिंगार बरब्बर रंभ। झुल्यौ रस बीर पगं पग अंभ॥
.... । .... छं० ॥ १०४५ ॥

दूहा॥ कल किंचित किंचित करहि। सुरग सुधारहि मग्ग॥
भंजौ लज्ज मुकत्ति बर। ग्रहि भग्गौह न दग्ग॥ छं० ॥ १०४६ ॥

पृथ्वीराज का सामंतों से कहना कि तुम लोग जरा भीर सम्हालो तो तब तक मैं कन्नौज नगर की शोभा भी देख लूं।

सकल सूर सामंत सम। बर बुल्यौ प्रथिराज॥
जौ रुक्कौ पिन षेत में। देषौं नगर विराज॥ छं० ॥ १०४७ ॥

सामंतों का कहना कि हम तो यहां सब कुछ करें परंतु आपको अकेले कैसे छोड़ें।

कवित्त॥ हम रुक्कैं अरि जूह। स्वामि को तजै इकल्लै॥
कै रपि दुज्जन पढन। स्वामि मुक्कियै न ढिल्लै॥
नारिंघनि करि देव। ताप तप जांहि देव बर॥
सुनहि राज प्रथिराज। दिठ्ठ बंधीय अप्प कर॥
सो चलै संग छाया रुकिय। कै छांह स्वामि मुक्कौ भिरन॥
चहुआन नयर दिष्षन करै। दुरन देव सोभै किरन॥
छं० ॥ १०४८ ॥

कन्ह का रिस होकर कहना कि यदि तुम्हें ऐसाही कहना था तो हम को साथ ही क्यों लाए।

दूहा ॥ कहै सब्ब सामंत सौं। एकल्लौ बिन बग्ग ॥
दइ विधिना फिरि मैं लई। जाय परस्सो गंग ॥ छं० ॥ १०४९ ॥
बोल्यौ कन्ह अयान न्रप। रे मत मंड समथ्थ ॥
जो मुक्कै सत सथ्थियन। तौ कित लायौ सथ्थ ॥ छं० ॥ १०५० ॥
जौ मुक्कौं सत सथ्थियन। तौ संभरि कुल लज्ज ॥
दिष्षन करि कनवज्ज कौं। फिर संमुह मरनज्ज ॥ छं० ॥ १०५१ ॥

परन्तु पृथ्वीराज का किसी की बात न मान कर चला जाना।

चल्यौ नयर दिष्षन करन। तजि सामंत सुलच्छि ॥
गौ दिष्षन दिष्षन करन। चित्त मनोरथ बंछि ॥ छं० ॥ १०५२ ॥
कुंभ चित्त चहुआन कौ। चौकट बुंद न अभ्भ ॥
जल भय पंगह ना भिदै। ज्यौं जल चौकट कुंभ ॥छं०॥१०५३॥

युद्ध के बाजों की आवाज सुनकर कन्नौज नगर की स्त्रियों का वीर कौतूहल देखने के लिये अटारियों पर आ बैठना।

गाथा ॥ दस सुंदरि गहि बालं। विसालं सुष्प अलनि मिलि अलियं ॥
सुनि बज्जं पहुपंग। चरितं सो भुल्लियं बाला ॥ छं० ॥ १०५४ ॥
चढ़ि गवष्पन बाला। सु विसालं जोइ राजियं राजं ॥
थक्क विमान सूरं। सुभंतिय वाय कंसजियं ॥ छं० ॥ १०५५ ॥
दूहा ॥ देषन लच्छिन न्रपति बर। गो दच्छिन क्रत बेर ॥
अवन राज चहुआन बढि। पंग घरंघर बेर ॥ छं० ॥ १०५६ ॥

जैचन्द का स्वयं चढ़ाई करना।

जो पत्ती पत मरन की। बोलि सहेट प्रमत्त ॥

इम सौलत बंधे सु बट । न्रिप तिह मिलहि न मत्त ॥छं०॥१०५७॥
इह बदंत पंगह चल्यौ । बजि निसान सरभेर ॥
सकल सूर सामंत सम । लेहि नरिंदह घेरि ॥ छं० ॥ १०५८ ॥
कवित्त ॥ पल्लान्यौ जयचंद । गिरद सुरपति आ कंप्यौ ॥
असिय लष्य तोषार । भार फनपति फन तंप्यौ ॥
सोरह सहस निसान । भयौ कुहराव भूअ भर ॥
घरी मझ्झि तिहुलोक । नाग सुर देव नाम नर ॥
पाइक्क धनुद्धर को गिनै । असी सहस गेंवर गुरहि ॥
पंगुरौ कहै सामंत सम । लेहु राज जीवत घरहि ॥ छं० ॥ १०५९ ॥
इय गय दल धसमसहि । सेस सलसलहि सलक्कहि ॥
सहस नयन झलझलहि । रैंन पल पूरि पलक्कहि ॥
तरनि किरन मुंदयौ । मान द्रगपाल स छुट्टिहि ॥
वसंत पवन जिम पत्र । अरिय इम होइ सु यट्टहि ॥
पायान राय जैचंद कौ । विगरि पिथ्थ कुन अंगमै ॥
हय लार बहति भाजंत थल । पंक चहुट्टै चक्कवै ॥ छं० ॥ १०६० ॥

जैचन्द की चढ़ाई का ओज वर्णन ॥

विजय नरिंदह तनौ । रोस करि इम धरि चल्ल्यौ ॥
इम हम पुर पुंदत । एम पायालह [1]डुल्ल्यौ ॥
एम नाद उछल्यौ । एम सुर इंद गयंदहि ॥
एम कुलाहल भयौ । एम मुद्दित रवि इंदहि ॥
दल असिय लष्य पष्षर परहि । एम भुअन आकंप भय ॥
पंगुरौ चल्यौ कविचंद कहि । बिन प्रथिराजह को सहय ॥
छं० ॥ १०६१ ॥

एक एक अनुसरिग । अंग दह लच्छि कोटि नर ॥
धानुक धर को गिनै । लष्य पचासक हैंवर ॥
सहस हस्ति चवसट्टि । गरुअ गाजंत महाभर ॥
समुद सयन उलटंत । डरहिं पन्नग सुर आसुर ॥

(१) को. झुल्यौ ।

जैचंद राइ चालंत दल। चक्क सूर पुज्जनं चलिग ॥
गढ़ गिरिग्ग अलथल मिलिग। इत्त सब दिष्षिय जुरिग ॥
छं० ॥ १०६२ ॥

पंगराज की सेना के हाथियों का वर्णन।

मत्त गत्त सन भिरिग। हट्ट पट्टन सह तुट्टिग ॥
कच्छि कच्छि जुरि भौर। घंट घंटा रुरि फुट्टिग ॥
बाल बाल आलु झिझ। करन सम करन लागि पग ॥
मेंगल मदगल चलंत। थार हस्ती सन चंपिग ॥
जैचंद राय चालंत दल। गिरिवर कंपहि चंद कहि ॥
देषंत राइ भंभरि रहहि। दंति पंति दस कोस लहि ॥
छं० ॥ १०६३ ॥

दूहा ॥ जल थल मिलि दुअ कंप हुअ। टुटि तरवर जल मूल ॥
देषि सपन सामंत बल। छलन कि वामन फूल ॥ छं० ॥ १०६४ ॥

दल पंगुरे के दल बद्दल की चढ़ाई का आतंक वर्णन।

बाघा ॥ दह दिसा थर विथरंत। दिगपाल दसन करंत ॥
उरवी न धारत सेस। ससि होत फेर दिनेस ॥ छं० ॥ १०६५ ॥
धरधुंध रज छदि व्योम। सद नास थिर गहि गोम ॥
कठ कमठ पीठ कमंठ। थल वियल फिरत न कंठ ॥ छं० ॥ १०६६ ॥
धुरि मेर मुरि मुरि जात। सर सूकि सवित उपात ॥
मम चढ़हु पंग नरिंद। हरहरत गगन गुरिंद ॥ छं० ॥ १०६७ ॥
हरि सीस रज बरषंत। द्रिग उरग मझि परंत ॥
हुंकार प्रगटित अग्गि। चिय नयन प्रजलि विलग्गि ॥ छं० ॥ १०६८ ॥
ससि तवैं अमिय पतंत। [1]अबि बुंद सिंह अगंत ॥
बबकारि [2]गज्जत सद्द। विद्दुरत धवल दुरद्द ॥ छं० ॥ १०६९ ॥
सिव फिरत तिन संग जूर। नन चढ़हु पंगह सूर ॥
ब्रह्मंड नष अरु एक। दुल मिलत होत समेक ॥ छं० ॥ १०७० ॥

(१) ए. कृ. को.-आप। (२) ए. कृ. को.-सज्जत।

गन सेंन विथुरित भूमि। घन मिटत नासा घूम ॥
जल प्रलय लोपत लीह। धर बिथरि होत अगीह ॥ छं० ॥ १०७१ ॥
भुअ परत अच्छरि व्योम। नीसान गज्जत गोम ॥
तुम चढ़त जैचंद राज। तिहुलोक ढरति अवाज ॥ छं० ॥ १०७२ ॥

कवित्त ॥ डर द्रुग्गम धरहरहि। अढर ढरि परहि गरुअ गिरि ॥
चिन बन घन टूटंत। धरनि धसममहि हयनि भर ॥
सर समुंद थरभरहि। डिढह डिढ डाह करक्कहि ॥
कमठ पिट्ठ कलमलहि। पहुमि महि प्रलय पलट्टहि ॥
जयचंद पयानौ संभरत। फुनि ब्रहमंड विछुट्टि हय ॥
मम चलहि मचलि मम चलि मचलि। चलहित प्रलय पलट्टि हय ॥
छं० ॥ १०७३ ॥

दूहा ॥ साजत पंग नरिंद कहुं। विनय स छोनिय बाग ॥
मुगता ग्रह सुक कवित कह। [1]जलथल थग्ग अमाग ॥छं०॥१०७४॥

कवित्त ॥ दल राजन मिलि विभजि। अट्ठ दिग्गं [2]करवर कर ॥
कर धरंत द्रिग अट्ठ। [3]डट्ठ वाराह मुरहि हरि ॥
हरि वराह दिढ दट्ठ। करतु फनवै फन टारहि ॥
फनिवै फनह टरंत। कमठ पोपरि जल भारहि ॥
भारहि सुजल्ल पुप्परि उछरि। उच्छरि है पायाल जल ॥
जल होत होय जगतै प्रलौ। समु चढ़ि चढ़ि जैचंद दल ॥
छं० ॥ १०७५ ॥

समस्त सेना में पृथ्वीराज को पकड़ लेने के लिये हल्ला होना।

दूहा ॥ मढरि मढरि छोनी सु चिय। सत करि छिनक सबल्ल ॥
छत्रपति करि जीरन भपिग। तूं नित नितह नवल्ल ॥छं०॥१०७६॥
धम धमंकि धुकि निष्य महि। रमहि न गंग सु तट्ट ॥
गहहि चंपि चहुआन कों। भव भरि मुहित सु वट्ट ॥छं०॥१०७७॥

(१) ए. कृ. को.-"जल थल मग्ग अमग्ग"।
(२) ए. कृ. को. करु। (३) मो. मट्ठ, को. झट्ट।

भौं टामंक दिसि विदिसि कहु । बहु पष्षर बहु राव ॥
मनु अकाल टिड्डिय सघन । पव्वय छुट्टि पहाव ॥छं०॥ १०७८ ॥

कन्नौज सेना के अश्वारोहियों का तेज और ओज वर्णन ।

भुजंगी ॥ प्रवाहंत ताजी न [1]लज्जीय हारे । मनों रब्बि रथ्थं सु आने प्रहारे॥
जिके स्वामि संग्राम झल्ले दुधारं । तिनं ओपमा क्यों बदी जै छिकारे॥
छं० ॥ १०७९ ॥

तिनं साहियं बग्ग गड्डे न लारा । मनों आवधं हथ्थ वज्जंत तारा॥
हयं छट्टियं तेज ठट्टे जिकारा । सयं सज्जियं सूर सव्वे [2]करारा ॥
छं० ॥ १०८० ॥

सरे पाषरे प्रान जे मार वारा । तिके कंध नामे नहीं लोह झारा॥
तहां घाट औघट्ट फंदै निनारा । तिनं कंठ झूमंत गज गाह भारा॥
छं० ॥ १०८१ ॥

दिसा राह लाहौर बज्जै तुरक्की । तिनं धावतें धूर दीसे धुरक्की ॥
दिसं पच्छिमं भूमि जानै न थक्की । तिनं साथ [3]सिंधी चलै नाव जक्की॥
छं० ॥ १०८२ ॥

पवंनं न पंषी न अंषी मनक्की । तिके सास कड्डै न चंपे न नक्की ॥
तिनं राग चंपे न सुड्डी डरक्की । मनों ओपमा उंच आए धरक्की ॥
छं० ॥ १०८३ ॥

अरब्बी विदेसी लरै लोह लच्छी । गनै कोन कंठील कंठील कच्छी॥
धरं षेत षुंदंत रुंदंत बाजी । [4]हरंवी हए एक तत्तार ताजी ॥
छं० ॥ १०८४ ॥

तिके पंडु ए पंगुरे राइ साजे । मनों दुअनं दल सुच्छ देषंत लाजे॥
इसौ एह आपुब्ब कविचंद पिष्यौ । तिनं रव्वि दुजराज सम तेज दिष्यौ॥
छं० ॥ १०८५ ॥

डरं डंबरी रेन अप्पै न पारं । अषीनं [5]पषीनं सषीनं निहारं ॥

(१) ए. कृ. को.-लज्जी अहोर ।
(२) ए. कृ. को.-तुषारा । (३) ए. कृ. को.-सिधं ।
(४) ए. कृ.-हरंत्री हए एक ताजी तत्तारी । (५) ए. कृ. को.-अषीनं ।

तहां कोन सामंत राजं न [1]ठट्ठै। मनों मेर उत्तंग हस्ती न चट्टै॥
छं० ॥ १०८६ ॥

सुषं जोव जोवं भरं भूप भारे। [2]तिनं काम कनवज्ज मझ्झै पधारे॥
छं० ॥ १०८७ ॥

दूहा ॥ भर हय गय नीसान बहु। इह दिष्षिय सह थान ॥
जौ चढ़िजै हर [3]दिष्षियै। चिहु दिसि समुद प्रमान ॥
छं० ॥ १०८८ ॥

वृद्धनाराज। जहां तहां हयग्गयं निसान घान घुंमरे।
मनों कि मेघ भद्दवा दिसा दिसान धुंमरे॥
चमक्कती सनाह संग वीज तेज विप्फुरै।
मनो कि गंग न्हाय कै किरन्न भान निक्करै॥ छं० ॥ १०८९ ॥
सपष्षरं प्रमान राज बाज राज सोभई।
मनो कि पंष प्रब्बतं सुफेरि इंद लोभई॥
गहग्गहं जु वाजि नाद तेज हथ्थ विथ्थुरे॥
सुने सबद्द तेज सूर कायरं स विद्दुरे॥ छं० ॥ १०९० ॥

इतने बड़े भारी दलबल का साम्हना करने के लिये पृथ्वीराज की ओर से लंगरी राय का आगे होना।

दूहा ॥ सुनिय सबर दल गंग हिन। लंगा लोह उचाय॥
पंग सेन सम्हो [4]फिरिय। बोलि वज्र विरुझाइ॥ छं० ॥ १०९१ ॥

लंगरी राय का साथ देने वाले अन्य सामंतों के नाम।

कवित्त ॥ लंगा लोह उचाइ। जूह झल्लिय संमुह भिरि ॥
दुज्जन सलष पुंडीर। धरै बंधव उप्पर करि ॥
तूंअर तमकि ततार। तेग लीनी गढ़ तत्ती ॥
बर पुच मिच अचान। भान कूरंभ सुभत्ती ॥
सांपुला सूर बंकट भिरं। मोरी केहरि सूर भर॥

(१) ए.-डट्ठै। (२) ए. कृ. को.-फिनं।
(३) मो. दिष्षिकै। (४) ए मो. परिय।

पहु पंग सेन सम्हौ भिरिग । सु बजि बीर बर विप्पहर ॥

छं० ॥ १०९२ ॥

दोनों सेनाओं का एक दूसरे को प्रचार कर परस्पर मार मचाना ।

रसावला ॥ पंग सेनं भिरं । षग्ग षोलं झरं ॥ बीर हक्कं विर्यं । लोह लंगी लियं ॥

छं० ॥ १०९३ ॥

षग्ग लग्गे झलं । भिन्न रत्तं पलं ॥ बीर हक्के अरी । घाय बज्जं घरी ॥

छं० ॥ १०९४ ॥

तुंग बाहं बरं । नंषि वड्डंप्फरं ॥ बीर लग्गे भरं । कालते संघरं ॥

छं० ॥ १०९५ ॥

द्रोन नंचं धरी । मार हक्कं परी ॥ कूक बीरं करी । गिद्ध उड्डे डरी ॥

छं० ॥ १०९६ ॥

टूक पावं बटं । षग्ग टेके ठटं ॥ घाइ घुम्मे घनं । मत्तवारे मनं ॥

छं० ॥ १०९७ ॥

कंधनं बंधरं । जंमुषं विड्डुरं ॥ रंभ तारी चसी । सूर पानं हसी ॥

छं० ॥ १०९८ ॥

घाव वज्जे घटं । पाइ कै सुब्भटं ॥ अंत तुट्टै बरं । पाइ आलुभ्भरं ॥

छं० ॥ १०९९ ॥

भट्ट ऐसे रजं । तंति बंधे गजं । मुगति मग्गे अरी । षग्ग षोली दरी ॥

छं० ॥ ११०० ॥

कवित्त ॥ घरी एक आवरत । पंग संघार अरिय पर ॥

लुथ्यि लुथ्य आहुट्टि । रुद्र रस भवत बीर बर ॥

हय गय नर भर भरिय । पर्यौ रन रुद्दि प्रतापं ॥

षग्ग मग्ग अरि हलिय । चलिय धारनि धर आपं ॥

दुअ जन्न भट्ट हक्कारि करि । कमल सेन जिन चिंत परि ॥

उच्चरे ब्रह्म ब्रहमंड सों । गोटन कोट गह्नन फिरि ॥ छं० ॥ ११०१ ॥

चौपाई ॥ धाए न्रिपत न लोह अघानं । छुट्टक सिद्ध किद्ध विरझानं ॥

संझ किधौं घरियारन घाई । चच्चर सौ चुतुरंग बजाई ॥

छं० ॥ ११०२ ॥

सायंकाल होना और सामंतों के स्वामिधर्म की प्रशंसा।

दूहा ॥ भंजन भीरन जो नृपति। करिभन भौंर चरंच ॥
सांई बिन जीवन्न कौं। षोहनि करत छ पंच ॥ छं० ११०३ ॥
भान न भग्गौ भान चलि। भान भिरंतह भान ॥
अस्ति समंपिय भान कौं। दै सिर संकर दान ॥ छं० ॥ ११०४ ॥

युद्ध भूमि की वसंत ऋतु से उपमा वर्णन।

कवित्त ॥ पंग बसंत सो लिग सु। गंध गज मद झरि दानं ॥
सो कायर पत पीप। पत्त झर झर कर पानं ॥
प्रसव चंद सिर आन। मान भिरि भिरि अग्गह हर ॥
लज्जा छोह सुरंग। रंग रंग्यौ सु सुरंग बर ॥
बोलंत घाव भवरिय भवर। कूक कूह कोकिल कलह ॥
फ़ुल्लिग्ग सुभर अंजह सुरन। पवन त्रिविध सेना सुलह ॥
छं० ॥ ११०५ ॥

अट्ठ अट्ठ अरु अ॰। एक आगरे पंच बर ॥
षग्ग मग्ग ति॰त पत्त। भरें भर धज्जि जित्त भर ॥
धर पलचर हर रंभ। नंद नरिंदह आघाई ॥
सुगति चिपंग मन मज्जि। अंब यौवन जिहि आई ॥
गोरष्ष किल्लि जित्ती सपन। मात पित्त गुर बंध [1]रन ॥
दई साम सुधारन सकल कौं। इत समान कीरति मयन ॥
छं० ॥ ११०६ ॥

अरिल्ल ॥ ठट्ठ के सुसेन पङ्गपंग अग्गं। छिले लोह सूरं मनं जंग भग्गं ॥
सबै धाय बीरं रहै बीर पासं। न को कंध कट्टै ठढे पास वासं ॥
छं० ॥ ११०७ ॥

पंगराज का पुत्र के तरफ देखना।

दूहा ॥ पंग प्रपत्तौ पुत्त दिषि। झुकि किय [2]मुष दिसि वास ॥
बीर मत्त रत्त नयन। उत्तर सु किय प्रनाम ॥ छं० ॥ ११०८ ॥

(१) मो.-रत।   (२) ए. कृ. को.-मुख।

पंग पुत्र के वचन ।

कवित्त ॥ जोरि हथ्थ फिरि तथ्थ । राज संमुह उच्चारिय ॥
असुर ससुर नर नाग । जुद्ध दिष्यौ न संभारिय ॥
अप्प सथ्थ [1]मुनि सामि । अरिन सम्हौ छक्कारिय ॥
भय भारथ्थ सु जुद्ध । जीह आवै न प्रकारिय ॥
धनि हथ्थ सूर सामंत के । धनि सु हथ्थ पहुपंग भर ॥
घरि तीन मोहि सुझ्झयौ न कछु । सार अगनि अग्गैं सु नर ॥
छं० ॥ ११०९ ॥

नन जित्यौ दल अप्प । दल न भग्गौ चहुआनं ॥
द्वादस हथ्थिन बीच । लुथ्थि पर लुथ्थि समानं ॥
पच्छै दल सुनि स्वामि । लोह छीनं अनलोपं ॥
राज कहन मुकलीय । सामि अवगुन सुनि कोपं ॥
अरि अरिय हथ्थ दह छंडि रन । रन में ढुंढिय पंग बर ॥
हज्जार उभै अप सेन परि । तुच्छ सु परि चहुआन भर ॥ छं० ॥ १११० ॥

पंगराज का क्रोध करके मुसल्मानों को युद्ध करने की आज्ञा देना ।

दूहा ॥ तुच्छ तुच्छ अरि पंग भर । चित्त सपच्छ हस हथ्थ ॥
यौं चल्ले चहुआन दल । लच्छि गमाई हथ्थ ॥ छं० ॥ ११११ ॥
[2]झुक्कि पंग दिय हुकम सह । गहन मीर चहुआन ॥
प्रात सु डंबर मझ्झतं । किरन सु छुट्टिय भान ॥ छं० ॥ १११२ ॥

पंगसेना का क्रोध करके पसर करना, उधर पृथ्वीराज का मीन चरित्र में लैवलीन होना ।

पद्धरी ॥ बर हुकुम पंग दुअ दीन दीन । मंची सुमंचि सजि सिलह लीन ॥
अप्पं तुरंग पहुपंग फेरि । भर सुभर लेत घन मझ्झ हेरि ॥
छं० ॥ १११३ ॥

(१) ए. कृ. को.-मुनि । (२) ए. सुक्कि, कृ. को.-झुक्कि ।

गजराज पंच आकास अन्न ॥ सोभै सु पंग रत्ते नयन्न ॥
चिहु मग्ग फट्टि फौजै सु लीन। चहुआन भूलि बर चरित मीन ॥
छं० ॥ १११४ ॥

दूहा ॥ पिथ्थ चरित्त जु भुल्लि बहु। नट नाटक बहु भूप ॥
दूहा दासि संयोग कौ। हरि चित रत्तौ रूप ॥ छं० १११५ ॥
भर भुल्लिय सह चित भुल्लि। अरि रहि अनि तजि क्रोध ॥
बढि ढिल्ली पहुपंग कौं। छुट्टि सु मंची सोध ॥ १११६ ॥

घोर घमसान युद्ध होना।

रसावला ॥ सुधं मंच बानं। कलं भूर गानं। रसं वट्ट जानं। लहू क्रूर मानं ॥
छं० ॥ १११७ ॥
लपै चट्टि चन्नं। बरं रत्त रन्नं ॥ हयं उट्टि तिन्नं। तुलं बज्र छिन्नं ॥
छं० ॥ १११८ ॥
सुरं सोभ घन्नं। दिवं आस मंनं ॥ हयं बीव तानं। बनं नष्पि धानं ॥
छं० ॥ १११९ ॥
रतं कंध तीनं। घची विब्भरीनं ॥ [1]रठं रंक धन्नं। हुनी सुद्द मन्नं ॥
छं० ॥ ११२० ॥
उभं झेलि फिन्नं। दतं कट्टि लिन्नं ॥ [2]जवं जानि तीनं। जुधं जीत बीनं ॥
छं० ॥ ११२१ ॥
लजं मेर जंनं। सदाहत्त पंनं ॥ धरं दुड्ड रानं। ससी भल्लि फानं ॥
छं० ॥ ११२२ ॥
सुधं मंच सूरं। भुअं नंषि पूरं ॥ जहं जं पियारी। रुके पार सारीं ॥
छं० ॥ ११२३ ॥

लंगरीराय के तलवार चलाने की प्रशंसा।

दूहा ॥ पारस फिरि पहुपंग दल। दई समानति रुक्कि ॥
जंघारो जोगी बली। त्राबारो पग धुक्कि ॥ छं० ॥ ११२४ ॥
पग धुक्किय मुक्किय न पग। लंगा लोह उचाय ॥

(१) मो. टरं। (२) ए. कृ. को.-बजं।

पंग समुद्द संमुद्द पऱ्यौ। बर बड़वा नल्ल धाइ ॥ छं० ॥ ११२५ ॥

जैचंद के मंत्री के हाथ से लंगरी राय का मारा जाना।

भुजंगी ॥ [1]परे धाइ सोमंच मद्देक वारं। बहै पग्ग [2]सोरं गुरज्जं निनारं ॥
हयं नारि सोवान कीह्लक फुट्टै। करै हथ्थ छत्तीस आवद्ध छुट्टै ॥
छं० ॥ ११२६ ॥

बरं बीर बीरं तथा विड पारं। [3]पगं बाजि सो पग्ग झामं किसारं ॥
सहंनाइ में सिंधुश्रौ राग बज्यौ। लगी लोह [4]में जुड आजुड गज्यौ ॥
छं० ॥ ११२७ ॥

गयं मुष्ष हाकी हहाकी करारी। [5]बरं बीर सोमचियं जुड भारी ॥
बढ़ी बाजि सो मुक्कि प्राधान बीरं। लगी धायसो लंगरी बड्ड पीरं ॥
छं० ॥ ११२८ ॥

पलं पंचकं लोकलं किक्ति भुल्लौ। बरं भारथं लग्गि सो तुंग हल्लौ ॥
बरं लंगरी राइ प्राधान बीरं। भगी सार मा भग्गियं सूर नीरं ॥
छं० ॥ ११२९ ॥

तुटी रंच कीरच्च कीरच भयन्नं। तुटी पग्ग सोवं गिनं उड्डि गेनं ॥
इकं पंच तें पंचकं विड्ड नचं। इके तिन्न के सीस सारं सु नचं ॥
छं० ॥ ११३० ॥

वरी लंगरी बीर प्राधान बारे। भयौ भार उत्तारनं बंग धारे ॥
छं० ॥ ११३१ ॥

दूहा ॥ पऱ्यौ वीर लंगरि सु बर। जंघारो घन घाइ ॥
सु बर बीर सामंत मिलि। मंचौ सोम उपाइ ॥ छं० ॥ ११३२ ॥

कन्ह का गुरुराम को पृथ्वीराज की खोज में भेजना।

कवित्त ॥ राज गुरू दुज कन्ह। कन्ह मोकलि सु लेन न्टप ॥
स्वामि मल्हि सह सथ्थ। मंच कारज्ज मंच अप ॥

(१) ए. कृ. को.-"परे धाइ सोमंध मत्रीक वारं"।
(२) ए. कृ. को.-गेरं। (३) ए. कृ. को.-पगं।
(४) ए. कृ.-सै। (५) ए. कृ. को.-ककारी।

लै आवौ प्रथिराज। पंग है बिहुर सेन ॥
पष्षवै न पथ आज। भयौ भर अंतर केन ॥
यों करिग देव दच्छिन सु दुज। दिषि सामंत षटंग बंर ॥
संजोग दासि इंदह न्रपति। ठठुकि रह्यौ [1]तषि थान नर ॥
छं० ॥ ११३३ ॥

पृथ्वीराज का कन्नौज नगर का निरीक्षण करते हुए गंगा तट पर आना।

दूहा ॥ फिरि राजन कनवज्ज महँ। जानि संजोगिह वत्त ॥
चढ़ि विमान जै जै करहि। देव सु रंगन कित्ति ॥ छं० ॥ ११३४ ॥

कवित्त ॥ नगर सकल गुन मय। निहार लह्यौय सुष न्रपति ॥
मंडप सिषर गवष्य। जालि दिठ्ठी सु विचित्र अति ॥
द्वार उंच पागार। बिपुल अंगन आगारह ॥
जह तहं निझ्झर झरंत। निरमल जल धारह ॥
नर बाज दुरद बन गेह पसु। भरिय भीर पट्टन परम ॥
सुर असुर चमंकत सबद सुनि। सु फिरि समुद मथ्थन भरम ॥
छं० ॥ ११३५ ॥

दूहा ॥ करिग देव दच्छिन नयर। गंग तरंगह कूल ॥
जल छुटै तब इच्छ करि। मीन चरित्तन मूल ॥ ११३६ ॥

पृथ्वीराज का गंगा किनारे संयोगिता के महल के नीचे आना।

भुजंगी ॥ रची चित्र सारी त्रिषंडी अटारी। नकस लाज वर्द सुवंनं सु ढारी॥
जरे तथ्थ जारी नही राजु वन्नं। रही फैलि रवि इंद मानों किरन्नं॥
छं० ॥ ११३७ ॥

हसै ष्याल षेलै तहां म्रग्ग नैनी। भरें माग मुत्ती गुहै बैठि बैंनी॥
सजै छत्र आचार आनंद भीनै। तिनं सीस भोरानि आहत कीनें॥
छं० ॥ ११३८ ॥

---

(१) ए. कृ. को. तेहि।

सुभं रूप सोभा तिनं अंग वेसं। तनं चीर सारी पटं कूल नेसं॥
चमक्कंत चौकी कनै फूल भव्वी। गरै पौति पुंजं रिदै हार फव्वी॥
छं० ॥ ११३९ ॥
कटिं छुद्रघंटा वंसी जे बनीयं। पयं झंझनं सद्द स्रवने सुनीयं॥
इदं रूप हंसाय गंमाय तेनं। लजै कोकिला कान सुनतें सुरेनं॥
छं० ॥ ११४० ॥
बनी निकट नारी सुगंधाय वासै। सबै चंद बदनी तहां चंद भासै॥
तहां संभरी नाथ लागे तमासै। लरै मीन हय फौन, तिन देषि हासै॥
छं० ॥ ११४१ ॥

कुंडलियां ॥ मीन चरित्र जु भुल्लि नृप। पंग न भुल्लिय युद्ध ॥
तीन लष्ष अग्गें नृपति। जो भारथ्थ विरुद्ध ॥
जो भारथ्थ विरुद्ध। दई अंगमै सु सब्बल ॥
दई बन लाई कलिय। जुपिय रुक्कियै सवदल ॥
वल अभंग अरिभंग। पंग सिर पान सु लिन्नौ ॥
कहर कन्ह साहस्स। सिंघ सो दिल्ल समिन्नौ ॥ छं० ॥ ११४२ ॥

दूहा ॥ इतें सेन चढ़ि पंग बर। है गै दिसा दिसान ॥
दछिन नैर नरिंद करि। गंग सु पत्तौ ध्यान ॥ छं० ॥ ११४३ ॥

पृथ्वीराज का गले की माला के मोतियों का मछलियों को चुनाना।

चन्द्रायना ॥ भूलौ नृप इह रंगहि जुद्ध विरुद्ध सह ।
नंषहि मीननि मुत्ति लहै जुअ लंष्ष दह ॥
छोड़ तुछ तुच्छ सु मुत्ति मरं-तन कंठ लह ॥
पंक प्रवेस हसंत भरंत न कंठ मह ॥ छं० ॥ ११४४ ॥

संयोगिता और उसकी सखी का पृथ्वीराज को गोख में से देखना।

कवित्त ॥ सुनि बज्जन संजोग। सुनिय आवन्न नृपति बर ॥
भयौ चित्त चर चित्त। मित्त संभरि सु रंग नर ॥

बल बींटिय राज नह। लाज रष्षी मत किन्नौ ॥
गौष कुंअरि सिर रही। उट्ठि सुंदरि बर चिन्हौ॥
दिसि पुव्व देखि चहुआन न्रप। बर लोचन मन षग्ग मग॥
उपम्म बाल चिंतै सु चल। पुव्व दिसा दौ रवि सु डग॥
छं० ॥ ११४५ ॥

पृथ्वीराज का संयोगिता को देखना।

कुंजर उप्पर सिंघ। सिंह उप्पर दोय पव्वय॥
पव्वय उप्पर भ्रंग। भ्रंग उप्पर ससि सुभ्भय॥
ससि उप्पर इक कीर। कीर उप्पर म्रग दिट्ठौ॥
म्रग उप्पर कोवंड। संध कंद्रप्प बयट्ठौ॥
अहि मयूर महि उप्परह। हीर सरस हेम न जर्‍यौ॥
सुर भुअन छंडि कविचंद कहि। तिहि धोषै राजन पर्‍यौ॥
छं० ॥ ११४६ ॥

दूहा॥ भूल्यौ न्रप इन रंग महि। पंग चल्यो हय पुट्ठि॥
सुनि संदर बर बज्जने। अई अपुब्ब कोइ [1]दिट्ठ॥ छं० ॥ ११४७ ॥
देषत सुंदरि दल मिलनि। चमकि [2]चढ़ी मन आस॥
नर कि देव किधौं नाग हर। गंगह संत निवास॥ छं० ॥ ११४८ ॥
अरिल्ल॥ बजि बीर निसान दिसान बजी। सु किधौं फिरि भद्दव मास गजी॥
सह नाइन फेरि अनेक [3]सजी। सुनि सोर संजोग सु गौष रजी॥
छं० ॥ ११४९ ॥

चौपाई॥ सुनि सुंदरि बर बज्जन चल्ली। षिन अलपह तलयह मुष भल्ली॥
देषि रंजि संजोगि सु भल्ली। फूलि वाइ मुष कुमुदह कल्ली॥
छं० ॥ ११५० ॥

पृथ्वीराज और संयोगिता दोनों की देखा देखी होने पर दोनों का अचल चित्त हो जाना॥

स्लोक॥ दिष्टा सा चहुआनं। संमरं कामं संमायते॥

(१) ए. कृ. को.- हुट्ठि। (२) ए. कृ. को.-चढ़ी। (३) ए. कृ. को.-वजी।

कमधुज्ज वर वीरं। विगलति नीवीवनं वसति ॥ छं० ॥ ११५१॥

मुरिल्ल ॥ उर संजोइ साल घन मंडं। श्रवन श्रोतान जु लागि चिकंडं ॥
फरन फराक भये पग भग्गे। अनु चंमक लोहान सु लग्गे॥छं०॥११५२॥

संयोगिता का चित्रसारी में जा कर पृथ्वीराज के चित्र को जांचना और मिलान करना।

मोतीदाम ॥ प्रति बिंब निरष्षि हरष्षिय बाल। लई सषि सथ्य चढ़ी चित्रसाल॥
साइक समानं न प्रौढन मूढ़। समान सु केलि सिंगार स घोढ़ ॥
छं० ॥ ११५३ ॥

स बुद्धि स बुद्ध अबुद्धि न बुद्ध। चलं चल नैंन सु मैंन निवद्ध ॥
षिनं षिन रूप सरूप प्रसन्न। पुजै किम कोकिल जास रसन्न ॥
छं० ॥ ११५४ ॥

लगी वर आलि न गौषन नाय। लिषी दषि पुत्तलि चित्त समाइ ॥
रही बर देषि टगं टग चाहि। मनों चित्र पास न कै दिन आहि ॥
छं० ॥ ११५५ ॥

कहै इक नारि संयोगि दिषाई। धरै अंग अंग अनंग जु साई ॥
किधों दिसि प्राचिय भान प्रकार। किधों मन मध्य कै काम अकार॥
छं० ॥ ११५६ ॥

कि इंद फुनिंद नरिंद्र कोइ। किधों हत लीन संयोगिय सोइ ॥
छं० ॥ ११५७ ॥

संयोगिता की सहेलियों का परस्पर वार्त्तालाप।

दूहा ॥ इक कहै दनु देव इह। इक कहै इंद फुनिंद ॥
इक कहै अस कोटि नर। इक प्रथिराज नरिंद। छं ॥ ११५८ ॥
सुनि वर सुंदरि उभै तन। उभै रोम तन अंग ॥
स्वेद कंप सुर भंग भौ। नैंन पिषत प्रथ रंग ॥ छं० ॥ ११५९ ॥

संयोगिता के चिबुक बिंदु की शोभा।

त्रोटक ॥ हिय कंप विकंप विपथ्थ पथं। मनु मंत विराजत काम रथं ॥
कल कंपित कंप कपोल सुभं। अलकावलि पानि उचंत उभं ॥
छं० ॥ ११६० ॥

निज निंदति मंथुर पंथमियं। धव धक्क धकं धक अस्ति हियं॥
सुर भंग विभंग उसंग पिअं। रद मंडल मंडल चंपि लियं॥
छं० ॥ ११६१ ॥

निज नूपुर भारि नितंब छियं। रिजु नेह दुनेह चिमंग चियं॥
चिबुकं चिकु उद्दिम विंदु धुअं। कटि मंडल हार विहार सुअं॥
छं० ॥ ११६२ ॥

अध दिष्ट उनष्टि कतं तिलकं। बरुनी बर भंगत यौ पलकं॥
सत भाव सतं [1]तिल को कथयं। निज सोजि विलोकि तयं पथयं
छं० ॥ ११६३ ॥

हँसि हँसिह रस्य करी करयं। सषि साषि परष्षि हँसी हरयं॥
छं० ॥ ११६४ ॥

संयोगिता का पृथ्वीराज को पहिचान कर लज्जित होना।

गाथा ॥ पिय नेहं विलवंती, अवली अलि [2]गुज नेन दिट्ठाया।
परसान सद्द हीनं, भिन्नं कौ माधुरी माध ॥ छं० ॥ ११६५ ॥

चन्द्रायन ॥ दुलह जानि अनराइ सु हाइ सुषं अली।
लज्जा गरुअ समुंद अबुड्डन यह कली॥
मरन सरन संजोगि विहत बरनं सचिय।
सहि चहुआन सु बुझ्झिय पेम सु मंझ चिय॥ छं० ॥ ११६६ ॥

संयोगिता का संकुचित होते हुए ईश्वर को धन्यवाद देना और पृथ्वीराज की परीक्षा के लिये एक दासी को थाल में मोती देकर भेजना।

अरिल्ल ॥ मारति संकुल सांवर वीरं। सषि संकुचि भी लोचन नीरं॥
[1]परसपर संपर भीरन भीरं। कामातुर निट्ठुर लगि तीरं॥
छं० ॥ ११६७ ॥

गुरु जम गुर निंदरियं सुंदरि। राज पुत्ति पुच्छियै न दुरि दुरि॥
समहि पुच्छि तौ दुत्ति पठावहि। कुन अच्छै पुच्छ विकरि आवहि॥
छं० ॥ ११६८ ॥

(१) ए. कृ. को. तिक। (२) ए. कृ. को. गुंजनेव।

चोटक ॥ मन पंचिय सौजुग यौ अविषं। सुमरी मन लज्जिय मात पषं ॥
अध दिष्ट करी फिरयौ सु हितं। गुरनी गुर बंधिव गंठि चितं ॥
छं० ॥ ११६९ ॥

चन्द्रायण ॥ अनो गोचर कथ कलंनि कथं कथ अष्यियै ।
रस संकहि अंकुरि मान मनं मथ भष्यियै ॥
आन इहै परमान विधानन लष्यियै ।
को मिट्टै संजोग संजोगिन अष्यियै ॥ छं० ॥ ११७० ॥
नव पंगुर राय सु पुत्तिय मुत्तिय थाल भरि ।
जौ हिय इह प्रथिराजह पुच्छहि तोहि फिरि ॥
जौ इन लच्छिन सब तंत्र विचारि करि ।
है व्रत मोहि न्नप जौव तौ लेउं सजौव वरि ॥ छं० ॥ ११७१ ॥

कवित्त ॥ दिष्ट फंद संजोग। दासि पिल वारि हथ्थ दिय ॥
स्रग बंधन चहुआन। पुब्ब श्रीतान षेद किय ॥
पुब्ब रूप गिद्दीव। मद मन मथ्थ संभारिय ॥
भय स्रग पंग नरिंद। चंद वंधन वन डारिय ॥
हक्कैति हक्क हाका सषिय। मूर गौष अपबंध सिष ॥
बेधंत आनि बानह [1]अभुल। अगुक सौस कामंग इष ॥छं०॥११७२॥

दासी का चुप चाप पीछे जाकर खड़े हो जाना।

दूहा ॥ सुंदरि धरि श्रवननि सुन्यौ। गुन कट्टौ मुनं विड ॥
ठग मग प्रत्ति [2]प्रतच्छि पिय। प्रसनह प्रत्ति प्रसिद्ध ॥छं०॥११७३॥

चन्द्रायन ॥ सुंदरि आइस धाइ विचारन बुझइय ।
ज्यौं जल गंग हिलोर प्रथौति प्रसंग तिय ॥
कमलति कोमल पानि केलि कुल अंजुलिय ।
मनहु अंध दुज दान सु अप्पत अंजुलिय ॥ छं० ॥ ११७४ ॥

पृथ्वीराज का पीछे देखे बिना थाल में से मोती ले ले कर मछलियों को चुनाना।

(१) ए.-अभुज। (२) ए. कृ. को.-परषि।

दूहा ॥ अंजुलि जल मंडत न्रपति । जव वित्त गलमुत्ति ॥
जलहल भै अंमन कियौ । षमीति बाल निपत्ति ॥ छं० ॥ ११७५ ॥
पौष निरष्षहि सुभ्भ चिय । हियै हरष्षहि बाल ॥
उभै पानि एकंत करिग । देषि गुरज्जन हाल ॥ छं० ॥ ११७६ ॥

थाल के मोती चुक जाने पर दासी का गले की पोत पृथ्वीराज के हाथ में देना। यह देखकर पृथ्वीराज का पीछे फिर कर दासी से पूछना कि तू कौन है और दासी का उत्तर देना कि मैं रनवास की दासी हूं।

छंद नराज ॥ नराज माल छंद ए कहंत कब्बि चंद ए ।
अपंत अंजुलीय दान जान सोभ लग्ग ए ॥
मनों अनंग रत्त सेय रंभ इंद पुज्जए ।
सु पानि बार थक्कि थाल मुत्ति वित्तए ॥ छं० ॥ ११७७ ॥
पुनेपि हथ्थ कंठ तोरि पोति पुंज अप्पए ।
... . ॥
सुटेरि नेन फेरि रेन तानि पत्ति चाहियं ।
तरप्पि दासि पाम कंपि संकियं न वाहियं ॥ छं० ॥ ११७८ ॥
भयं चक्यौ भयान राज गात श्रम्म दिष्पयौ ।
कै स्वर्ग इंद गंग में तरंग चित्त पिष्पयौ ॥
अनेक संग रूप रंग जूप जानि सुंदरी ।
उछंग गंग मद्धि धुक्कि स्वर्ग पत्त अच्छरी ॥ छं० ॥ ११७९ ॥
हों अच्छरी नरिंद नाहि दासि ग्रेह पंगुरे ।
जु तास पुत्ति जम्म छंडि ढिल्लि नाथ अदरे ॥
सपन्न सूर चाहुआन मन्न एम जानये ।
करी न केहरी न दीप इंद एन थान ए ॥ छं० ॥ ११८० ॥
प्रतष्य हीर जुड्ड धीर जौ सुवीर संचहौ ।

(१) मो. अ-दए ।

बरंत प्रान मानि बीच लौ सु देन गंठही ॥
सुनंत सूर अश्व फेरि तेज ताम इंकयं।
मनौं दरिद्र रिद्ध पाइ जाय कंठ लग्गयं ॥ छं० ॥ ११८१ ॥
कनक्क कोटि अंग धात रास बास मालची।
रहंत भौंर भोर स्याम छब तंब कामची ॥
सुधा सरोज मौजयं अलक्क अलि इल्लियं।
मनौं मयन्न रत्ति रत्न काम पास घल्लियं ॥ छं० ॥ ११८२ ॥
करस्सि काम कंकनं जु पानि फंद माजए।
जु भांवरी सषी सु लाज झुंड सो बिराज ए ॥
अनेक संग डोर रंव रत्त मत्त सस्सियं।
जु संगही सरोज सोभ होत कंत तस्सियं ॥ छं० ॥ ११८३ ॥
अचार चारु देव सब्ब दोउ पष्य अंपियं ॥
सु गंट्ठि दिट्ठ एक चित्त लोक लोक चंपियं ॥
सु इंद्रनी जु इंद्र जानि गंध्रवी विवाहयं।
मुसक्कि मंद हासयं समुष्य दिष्षि नाहयं ॥ छं० ॥ ११८४ ॥
सु अंगुली उचक्कि एक देवतानि सुंदरी।
मिलंत होय कथ्थ मोहि स्वर्ग वास [१]मंदरी ॥
अनेक सुष्य मुष्य सास जुद्ध साध लग्गियं।
सुकंत कंति अष्षिता तमोरि मोरि अप्पियं ॥ छं० ॥ ११८५ ॥
दूहा ॥ इहि विध [२]धिरताईं कहत। विड्डिय विड्डि निषड्ड ॥
सुष्य सु विड्डय जान सें। मुष्यह विड्डि निषिड्डि ॥ छं० ॥ ११८६ ॥
दिषन सासु सहस वलिय। अरि चेस सिंघनि डार ॥
कानिन गन अनभंग है। मत्ति तेन दह च्यार ॥ छं० ॥ ११८७ ॥
चक्रित चित्त चहुआन हुअ। दरसि दासि तन चंद ॥
तन कलंक कढ्ढन मिसह। जहां रत्न विष वंद ॥ छं० ॥ ११८८ ॥

दासी का हाथ से ऊपर को इशारा करना और पृथ्वीराज का संयोगिता को देख कर बेदिल होजाना।

(१) ए. कृ. को.-संगरी। (२) ए. धिरसाई कृ. को.-धिरताई कहै।

मुरिल्ल ॥ दरसि दासि तन रूप बर उट्टौ। भेद बांच पंडुर तन चट्टौ ॥
उष्ट कंप जल नेंन अंभाई। प्रात सेज ससि रोहिनी आई ॥
छं० ॥ ११८६ ॥

दासि दिष्ट चहुआन सु जोरी। रूप निहारि उभै दिसि मोरी ॥
दुंद्र इंद्र रस भरि ढरि चीनौ। मनो मुष रोष वारुनी पीनो ॥
छं० ॥ ११६० ॥

करिवर दासि संजोगि दिषाई। दिष्यत न्रिप दुरि तन भय गाई ॥
झंकत तुछ तन सब्ब न सारन। सुकल ससि रवि हस्स पारन ॥
छं० ॥ ११६१ ॥

दूहा॥ चंद चमक झंषिम गवष। चंद्र पर्ति दुति मार ॥
मनों बदन चहुआन कौ। बंधति बंदर वार ॥ छं० ॥ ११६२ ॥

संयोगिता का इच्छा करना कि इस समय गठ बंधन हो जाय तो अच्छा हो।

मुरिल्ल ॥ कुमल जोग[1] राजन चित इट किय। जनम पुब्ब प्रथिराज षट्ट किय ॥
बर विचार बर बाल बुलाइय। गंठ जोरि ग्रह घर चल्लाइय ॥
छं० ॥ ११६३ ॥

संयोगिता का संकुचित चित्त होना।

दूहा ॥ जौ जंपौ तौ [2]जित्त हर। अनजंपै विहरंत ॥
अहि डट्ठ छच्छुंदरी। हियै बिलग्गी बंति ॥ छं० ॥ ११६४ ॥

ऊपर से दस दासियों का आकर पृथ्वीराज को घेर लेना।

चन्द्रायन ॥ उतर देन संजोगिय धाइय दासि दस।
चावद्दिसि चहुआन सु विट्टिय कीय बस ॥
नही कोट दै ओट सु गट्टिय काम कस।
मनुं दह रुद्र न बिंटि करै मन मध्य बस ॥ छं० ॥ ११६५ ॥

दासियों का पृथ्वीराज पर अपनी इच्छा प्रगट करना।

(१) मो. रोज। (२) ए. कृ. को-चित्त।

दूहा ॥ मुक्कि सुवर चहुआन कौ। अली सु कहिय जु बत्त ॥
पुव्व अंक विधि बर लियौ। को मेटे विधि पत्त ॥ छं० ॥ ११९६ ॥
पानि ग्रहन संजोगि कौ। जोइ सु देवनि ग्रेह ॥
यों नथि भाविति भाव गति। मनु पुच्च पंग सु एह ॥ छं० ॥ ११९७ ॥

संयोगिता की भावपूर्ण छवि देख कर पृथ्वीराज का भी बेबस होना ।

कवित्त ॥ देषि तथ्थ संजोगि। नेह जल काम करारे ॥
हाय भाय विभ्रम। कटाच्छ दुज बहु भंति निनारे ॥
रचित रंग झंकोर। [1]वयन अंदोल कसय सब ॥
हरन दुष्ष द्रुम रुम सिवाल। कुच चक्र वाक सोदि सब ॥
द्रिग भवर मकर बिंबर परत। [2]भरत मनोरथ सकल सुनि ॥
[3]बर बिहुर न्रपति मनाल नें। नन जानो किहि घटिय गुनि ॥
छं० ॥ ११९८ ॥

सखियों की परस्पर शंका कि व्याह कैसे होगा ।

दूहा ॥ मंगल कढि पानि ग्ग्रहन। सुष्य संजोग सु बंक ॥
दिषि विवाह सुभ्भौ वदन। ज्यौं मुंदरि ससि पंक ॥ छं० ॥ ११९९ ॥

अन्य सखी का उत्तर कि जिनका पूर्व संयोग जाग्रत है उनके लिये नवीन संबंध विधि की क्या आवश्यकता ।

कवित्त ॥ सुनि सषि सषि उच्चरिय। कौन बंध्यौ अकास मज ॥
अमर न देषे देव। वेद गंध्रव्व रिषिय सुज ॥
रुषमनि अरु गोविंद। वेद गंध्रब सुष किन्नौ ॥
दमयंती नल व्रत्त। पच्छ अग्ग तिन लिन्नौ ॥

(१) ए. कृ. को.-वैन अंदोल कसय सव ।
(२) ए. कृ. को.- भरत मनों मुनि सकल अंग ।
(३) ए. कृ. को.-वर विदुर नृपति मृनालते तत जानो केहि दाहि लागि ।

यों हृत्त लीन संदरति पत्त। धावि अगें सो सुन्नही ॥
संजोगि अंग जो विधि लिष्यौ। सो मिटै न सिर नन धुन्नही ॥
छं० ॥ १२०० ॥

दूती का पृथ्वीराज और संयोगिता को मिलाना।

दूहा ॥ कहि करि न्रप संजोगि फुनि। दिसि सुहथ्थ बहु लाइ ॥
मिलि कमोद सत पच रवि। दूती दूहु न माइ ॥ छं० ॥ १२०१ ॥

पृथ्वीराज का संयोगिता के साथ गंधर्व विवाह होना।

हनूफाल ॥ संजोगि गहि न्रप हथ्थ। मनों सरज जोरित नथ्थ ॥
संजोगि न्रप वर राज। उप्पंम कवि बर साज ॥ छं० ॥ १२०२ ॥
पट्मिनिय पत्न प्रमान। हरु अंषिआन अधान ॥
मषि बिंट दंपति सोभ। कविराज ओपम लोभ ॥ छं० ॥ १२०३ ॥
दिषि चंद रोहिनि लास। गइ लास कुमुदनी पास ॥
फिरि रंभ आरभ कीय। न्रप वाम वाम सुलीय ॥ छं० ॥ १२०४ ॥
तन बंध मन दै दान। न्रप छोरि गंठ [1]प्रवान ॥
.... । .... ॥ छं० ॥ १२०५ ॥

दूहा ॥ वरि चल्ल्यौ ढीली न्रपति। सुत जयचंद कुमारि ॥
गंठ छोर दच्छिन फिरिग। प्रान करिग मनुहार ॥ छं० ॥ १२०६ ॥

पृथ्वीराज का संयोगिता से दिल्ली चलने को कहना।

कहि चल्ल्यौ चहुआन चित। उरझे चित्त सु [2]पथ्थ ॥
[3]बद चल्ल प्रथिराज न्रप। हठ संजोगि सु तथ्थ ॥ छं० ॥ १२०७ ॥

स्लोक ॥ प्रयाने पंगपुत्री च। नैतिकं जोगिनीपुरं ॥
विधि सर्व निषेधाय। तांबूलं ददतं न्रपं ॥ छं० ॥ १२०८ ॥

संयोगिता का क्षण मात्र के लिये विकल होकर स्त्रीजीवन पर पश्चाताप करना।

गाथा ॥ सुनि इंदो अनुराओ। दिट्ठी रिझाइ सब्ब सो अप्पं ॥

(१) ए. कृ. को.-प्रमान। (२) मो.-तथ्थ। (३) ए. कृ. को.-बदांकि चले।

है हथ्थं हवि छुट्टा। हाइं जे बज्जनो हिययौ ॥ छं० ॥ १२०९ ॥
हंजेह आइ नंषी। कंपी तनपाइं काम संजोइ ॥
निरधा अधार विनसं। या [1]बाला जीवनं कुच ॥ छं० ॥ १२१० ॥
दूहा ॥ नर आसुर सु रंम मन। [2]सबल बंध अवलेह ॥
थान लाज चहुआन कौं। टुट्टिय संकर नेह ॥ छं० ॥ १२११ ॥

दंपतिसंयोग वर्णन ।

चौपाई ॥ रति संजोगि जगि उप्पम नेनं। रष्षौ विचारि कब्बि वर मेनं ॥
जोग ग्यान द्रिग पुच्छि उचारै। तौ दंपति रति ओपम मारै ॥
छं० ॥ १२१२ ॥
मेर जेम मो मन सा जानं। जो हत लीय जिही चहुआनं ॥
सुष भरि बेंन नेंन अवलोकं। गंठि बंधि पुब्बइ परलोकं ॥
छं० ॥ १२१३ ॥
कछूं कंति धर मुछि बल बुझी। षीन देहु दुति छुट्टी लझी ॥
कल अधकी अध छिप्पत मन्नं। हकि चतुर्थ्थि सुकल ससि जन्नं ॥
छं० ॥ १२१४ ॥
मुच्छि परंत प्रजंक प्रसंसी। [3]माइस अद्ध घरी घट चंसी ॥
षोडस आदि कलंकल कंपी। रष्षि सषी सषि सों साष जंपी ॥
छं० ॥ १२१५ ॥

पृथ्वीराज का संयोगिता प्रति दाक्षिण से अनुकूल होजाना।

दूहा ॥ [4]सुनि अंदोअन राव दिठ। रिझझाए सब सोइ ॥
फंदह मांहि विछुट्टही। देह जे बंज न होइ ॥ छं० ॥ १२१६ ॥
बर दच्छिन पुब्बइ न्टपनि। भो अनकूल प्रमान ॥
कंक कन्ह अष्षन कवन। पन्न सु धन परिमान ॥ छं० ॥ १२१७ ॥
मुरिल्ल ॥ मन रूषी तन पिंजर पीरे। दंपति दुष जंपति तन तीरे ॥
हरुअ दुष्प सुष सषी प्रगासी। परमहंस गुर वैन सन्यासी॥ छं०॥ १२१८॥

(१) ए. कृ. को.-बाले। (२) ए.-सबल।
(३) ए. कृ. को.-माहस अद्ध भरी घर संसी।
(४) ए. कृ. को.-सुनि इन्द्रानव रायदित।

संयोगिता का दिल खोल कर अपने मन की बातें करना, प्रातः काल दोनों का बिलग होना।

कवित्त ॥ दच्छिन बर चहुआन। कीय अनुकूल पिम्म तन ॥
बिरह बाल द्रग उमगि। अंषि कमक क्रम नंधन ॥
न्टप मन धन दक्षिय सनेह। देह दुष काम वाम अगि ॥
ज्यों कुलाल घट अग्गि। पचषयौं उमझि उट्ठि लगि ॥
दंपत्ति नेह दुष दुहन कहि। बिछुरि साथ चक्रवाक जिम ॥
ज्यों सहै दुहन जिहि कुल बधू। कहत साष पंजर सु तिम ॥
छं० ॥ १२१९ ॥

गुरुराम का गंगा तीर पर आ पहुंचना।

दूहा ॥ पहुंचायौ दस दासि न्टप। गंग सपत्तौ ताम ॥
वह दिष्यौ गुरु राज ने। ज्यौं रति बिछरति काम ॥ छं० ॥ १२२० ॥
चौपाई ॥ दिसि गुर राज राज तन चाहं। मनो गजिय उर उज्जल गाहं ॥
दिष्षि सु छबि ढिल्ली चहुआनं। जानै कन्ह सु लछियं जानं ॥
छं० ॥ १२२१ ॥

पृथ्वीराज का गुरुराम को पास बुलाना।

दूहा ॥ बर दंपति दस दासि ढिग। दंद जुदो जनु व्याह ॥
दुहु दिसि मंगल बज्जिहै। बिच मंगल बरधाह ॥ छं० ॥ १२२२ ॥
तब देषिय गुर राज न्टप। चलि आइय तिहिं पास ॥
मन देषत सीतल भयौ। बढिय राज उर आस ॥ छं० ॥ १२२३ ॥

गुरुराम का आशीर्वाद देकर सब बीतक सुनाना।

दै असीस उच्चारि अज। संभरि संभरि वार ॥
सुभर सूर सामंत सौं। पंग सु जुद्ध प्रहार ॥ छं० ॥ १२२४ ॥
कवित्त ॥ बीर हेम झुझ्झयौ। वाम जग्गयौ जु कंक अगि ॥
बर दंपति हथ लेव। बधि बंदी उपंम मनगि ॥
बरसै सब उतरंत। चढ़त सम राज पाज बंधि ॥

कै भगि मगि भज्जि पाल । मंगि बाला जोवन संधि ॥
आचार चार दुहु पष्ष बर । देव देव मिलि जंपइय ॥
भाँवरिय लाज सषि ज्यों जुरिय । धीर बीर [1]मिलि बज्जइय ॥
छं० ॥ १२२५ ॥

पऱ्यौ राव लंगरी । पंग भंजे परधानं ॥
ईर्द दमन कूरंभ । परे दुरजन [2]सलषानं ॥
सिंघ मिले मंमरह । सिंह न्रिब्बान सभानं ॥
बर प्रताप तूँवर ततार । सकति सुनि न्रिप कानं ॥
रघुबंस भीम जै सिंघ दिनि । भान भष्ष गौ झुल्लयौ ॥
इन परत पंग ढिल्ली बहुअ । न्रिप ढिल्लीस न ढिल्लयौ ॥
छं० ॥ १२२६ ।

गुरुराम का कहना कि सामंतों के पास शीघ्र चलिए ।

दूहा ॥ ढिल्ली वै संभरि न्रपति । बत्त कहंतह बेर ॥
फिरि सामंतन सूर मिलि । करहि न न्रपति अबेर ॥छं० ॥ १२२७
दुज रामो संयोग पै । कहन सोभ कलिरीय ॥
दे सुराज चहुआन चित । ओडन मुक्किय जीय ॥ छं० ॥१२२८॥

कवित्त ॥ इह सर सुनि सजोगि । जोग पायौ न देव मुनि ॥
तिहि सर सुष्ष न दुष्ष । जीत भौंटरै जम्म फुनि ॥
रंभा भर जुग्गिनी । गिद्ध बेताल सु कंषी ॥
हंस हंस उड़ि चलै । रहि जल कमल नियंषी ॥
रस बीर विषै सेवाल कच । किन्नि भवर तिहि गंजइय ॥
[3]रत्तय म्रनाल किन्निय अथय । सूर सुतन मन रंजइय ॥
छं० ॥ १२२९ ॥

दूहा ॥ सुनिय बयन संजोगि कहि । लिषि दिय पट्ट प्रमान ॥
दई करै सो न्रिम्मयौ । मिलन तेहु चहुआन ॥ छं० ॥ १२३० ॥

कन्ह का पत्र पढ़ कर पृथ्वीराज का चलना और संयोगिता का दुखी होना ।

(१) ए. कृ. को.-मिसि । (२) ए. कृ. को.सलष्यानं । (३) ए. को.-इत्तह ।

चौपाई ॥ लै पटि बंधि कन्ह गिरि संगं । चल्ल्यौ न्रपति [1]जुद्ध रस अंगं॥
जिम जिम बर चल्लै चहुआनं । तिम तिम बाल प्रमुक्कै प्रानं ॥
छं० ॥ १२३१ ॥

कवित्त ॥ चल्यौ राज प्रथिराज । पास गुर कन्ह मन ॥
चिंति स सूर सँजोग । चल्यौ चहुआन राइ पन ॥
सौ क्रंम दस ता अग्ग । पंग दल रुद्धि जुद्ध बल ॥
इक कहै [2]प्रिथु पथ्थ । इक तप जुत्त जुधिष्ठल ॥
रुक्यौ रतन सा निद्धि पत । रतन सौंह चिहु मग्गि गसि ॥
हंकारि सूर सम्हौ फिरिय । संभरि वै कढ्ढीति असि ॥छं॥१२३२॥

पृथ्वीराज का घोड़ा फटकार कर अपनी फौज में जा मिलना ।

नंषिहै मान नरिंद । बज्जि घुरतार कंपि भुअ ।
बज्रघात त्रिघघात । बज्र संपत्त कंपि ध्रुअ ॥
अट्ठ सु चल दह विचल । उड्डि बंबर धर धुम्मर ॥
बजी सद्द पर सद्द । मद्दतजि रहिग मद्द करि ॥
भै चक्क सुभट न्रप बीर बर । लष्षि वीर चहुआन बर ॥
[3]बर नचे बीर सुनि कन हंसे । जियत बत्त प्रथिराज नर ॥
छं० ॥ १२३३ ॥

मुसल्मान सेना का पृथ्वीराज को घेरना पर कन्ह का आड़ करना ।

रसावला ॥ राजरुक्के अरी, सिंघ रोहं परी । पंजरं षोलियं, बीर सा बोलियं ॥
छं० ॥ १२३४ ॥
षग्ग बंकी कढ़ी, तेज बीयं बढी । बान नष्षं भरं, मोह [4]मंत्तं झरं ॥
छं० ॥ १२३५ ॥
राज बिच सारयं, पंच हज्जारयं । बंक धंकं डनी. बीर नंषे धुनी ॥
छं० ॥ १२३६ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-दुद्ध । (२) मो.-प्रथिराज ।
(३) ए. कृ. को.-बरनचे । (४) ए. कृ. को.-मत्तं जंर ।

राषि सज्ज धमं, बोलि पत्त मनं । फौज फट्टी फिरी, कन्ह रक्के अरी ॥
छं० ॥ १२३७ ॥

सामि कट्टे बलं, काज रड्डे पलं । ...., ... ॥
छं० ॥ १२३८ ॥

सात मीरों का पृथ्वीराज पर आक्रमण करना और पृथ्वीराज का सब को मार गिराना ।

कवित्त ॥ सत्त मीर जम सम सरीर । अड़ रुक्यौ न्रप अग्गा ॥
राज कन्ह दुज गुरू । सार छल सूरह लग्गा ॥
नग सम सत्त पुरष्ष । पूर मंचह असि बर पढ़ि ॥
होम आप जुध्यौ सु । बीर सरसं प्रहार चढ़ि ॥
सम सेवग सेव सु स्वामि छ्रत । किंत्ति देव संतोष बलि ॥
षँड अग्ग भाग प्रथिराज कौ । देव भ्रम्म उग्गारि बल ॥
छं० ॥ १२३९ ॥

फिरि पच्छो चहुआन । बान आरोह प्रथम करि ॥
षां वहिरमं बरजही । फुटि टट्टर टरिग्ग धर ॥
बीय बान संधान । षान पीरोज सु भग्गा ॥
पष्षर अस्व पलान । मीर सहितं धर लग्गा ॥
चय बान कमान सु संधि करि । सुगति मग्ग गुन चंद कहि ॥
जल्लाल मीर सम बल प्रचंड । बालि प्रान संमह सहहि ॥
छं० ॥ १२४० ॥

बान चवथ्थै राज । तूटि कंमान षनक्की ॥
उडि गासी छुटि तीर । [१]पंच-बहु सद्द भनक्की ॥
इति उत्तरि चहुआन । षग्ग कढि बज्ज कि पायौ ॥
दुति उप्पम कविचंद । तीय विक्रम असहायौ ॥
नषि राज बाज उप्पर वसिस । सक मीर अवसान चुकि ॥
षग मीर ताप तप्पौ नही । मुक्कि अस दिसि वाम धुकि ॥
छं० ॥ १२४१ ॥

(१) मो.-पंष ।

दूहा ॥ हय गय बर गंभीर चढ़ि। नर भर दिसन दिसान ॥
पंग राव कोपिय सुबर। गहन मेछ चहुआन ॥ छं० ॥ १२४२ ॥
रैन परै सिर उप्परै। हय गय [1]गतर उछार ॥
मनहु ठग्ग ठग मूरि लै। रहिग सबै मुंछार ॥ छं० ॥ १२४३ ॥

पृथ्वीराज को सकुशल देख कर सब सामंतों का प्रसन्न होना।

मनहु बंध अनभूति धर। है तिन आनत थट्ट ॥
बचन स्वामि भंग न करहि। सह देषहि न्रप बट्ट ॥छं०॥१२४४ ॥
अवलोकति तन स्वामि मन। भौ सामंतनि सुष्य ॥
हँसहि सूर सामंत मुष। कायर मानहि दुष्य ॥ छं० ॥ १२४५ ॥
धीरत धरि ढिल्लेस बर। बहु दंती उभ [2]रोभ ॥
न्रपति नयन तन अंकुरे। मनहु मद्द गज सोभ ॥ छं० ॥ १२४६ ॥

सामंतों की प्रतिज्ञाएं।

कुंडलिया ॥ देषि सुभर न्रप नेन। आनि भौ आनंद चंद ॥
अरि गंजे रुप त्रिप्प। बीर हक्के ग्रह दंद ॥
बीर हक्के ग्रह दंद। मुकति लुट्टे कर रस्सी ॥
आज सामि रन देहि। बरै अच्छरि कुल लस्सी ॥
काम तेज संभरी। देव कंदल जुध पिष्षे ॥
गुरू गल्ह उड्डरै। दुट्टि धारा रवि दिष्षै ॥ छं० ॥ १२४७ ॥

कन्ह का पृथ्वीराज के हाथ में कंकन देख कर कहना यह क्या है।

दूहा ॥ हरषवंत न्रप धत्त हुअ। मन मझझह जुध चाव ॥
मिलत हथ्थ कंकन लष्यौ। कह्यौ कन्ह इह काव ॥छं०॥१२४८ ॥
गगन रेन रवि मुंदि लिय। धर भर छंडि फनिंद ॥
इह अपुब्ब धीरत्त तुहि। कंकन हथ्थ नरिंद ॥ छं० ॥ १२४९ ॥

(१) ए. कृ. को.-गज। (२) मो.-रोस।

इथ्यह कंकन सिर तिलक। अचिक्षत लगे लिलार॥
कंठ माल तुम कंठ नहि। कहि न्नप कवन विचार॥छं०॥१२५०॥

पृथ्वीराज का लज्जित होकर कहना कि मैं अपना पण पूरा कर चुका।

चौपाई॥ सुनि सुनि बचन भुमि सिर नायौ। क्रपन दान ज्यौं बंजि दुरायौ॥
पंच पंच अव लीन क चिंतर। छंडित बहि दियौ तब उत्तर॥
छं० ॥ १२५१ ॥

बरिय बाल सुत पंगह राय। वह व्रत भंग मोहि हत जाइ॥
तिहि मुंधहि अब जुड्ड सुहाई। अथ्थि अवासह देउं बताई॥
छं० ॥ १२५२ ॥

कन्ह का कहना कि संयोगिता को कहां छोड़ा।

तिहि तजि चित्त कियौ तुम पासं। छंडिय कन्ह रुदंत अवासं॥
सौ सुभट्ट महि एक भट होइ। तौ नृप धनहि न मुक्कै कोइ॥
छं० ॥१२५३॥

जौ अरि थाट कोरि दल साज। तौ दिल्लिय तषत दै हि प्रथिराज॥
इतनौ नृपति पुच्छियै तोहि। परनि मुक्कि संदरि इह होइ॥
छं० ॥१२५४॥

पृथ्वीराज का उत्तर देना कि युद्ध में स्त्री का क्या काम।

श्लोक॥ जज्ञकालेषु धर्मेषु। कामकालेषु शोभिता॥
सर्वं च वल्लभा बाला। संग्रामे नर्नं गेहिनी॥ छं० ॥१२५५॥

कन्ह का कहना कि धिक्कार है हमारे तलवार बांधने को यदि संयोगिता सकुशल दिल्ली न पहुंचे।

चौपाई॥ हम सौ रजपूत रु सुंदरि एक। मुक्कि जांहि ग्रह बंधहि तेक॥
जौ अरियन थट कोरि दल साजहि। तौ दिल्लिय तषत दै हि प्रथिराजहि॥
छं० ॥१२५६॥

कवित्त ॥ महि मंडन महिलान। जोग मंडन सुष मंडन ॥
दुष बंटन श्रम चसन। नेह पूषनि मन षंडन ॥
काम वंत सोभाय। पूर चित समर विमत्तन ॥
भय मुष दिष्षत मोह। लीन भौ अनुरत रत्तन ॥
संसार सुबरनी सरम रूप। करहि सरन अनमुष्ष रुष ॥
अरि धरनि मुक्कि धारन न्नपत। चलहि कित्त जुग एक मुष ॥
छं० ॥१२५७ ॥

पुनः कन्ह के वचन कि उसे यहां छोड़ चलना उचित नहीं है।

दूहा ॥ जग्गि काल धूम काल कौ। सब्ब काल सोभित्त ॥
पूरन सब सारथ्थ सग। मोकिल ना मोहित्त ॥ छं० ॥ १२५८ ॥
भर बंकै अच्छरि बरन। रस बंके दिसि बाल ॥
दुहु बंके पारथ्थ करन। चढ्ढि सुरत्तन साल ॥ छं० ॥ १२५९ ॥

पृथ्वीराज के चले आने पर संयोगिता का अचेत होजाना।

चलि चलि सुरति सथ्थ हुअ। [१]रन निसंक मन भौंन ॥
सह अचार मुष मंगलह। मनहुं करहि फिरि गौंन ॥
छं० ॥ १२६० ॥
पति अंतर बिछुरन विपति। न्नपति सनेह संजोग ॥
सुनत भयौ सुष कौंन विधि। दैव जिवावन जोग ॥ छं० ॥ १२६१॥
सुरिल्ल ॥ पानि परस अरु दिट्ठ विलग्गिय। सा सुंदरि कामागिन जग्गिय ॥
[२]पिन तलपह अलपह मन कीनौं। ज्यों बर वारि गये तन मीनौ ॥
छं० ॥ १२६२ ॥
अंगन अंग सु चंदन लावहि। अरु राजन लाजन समुझावहि ॥
दै अंचल चंचल द्रिग मूंदहि। विरहायन दारुन रवि उदहि ॥
छं० ॥ १२६३ ॥
फिरि फिरि बाल गवष्षनि अष्षिय। तासिष दैंन बैंन बर सष्षिय॥
विन उत्तर सु मौंन मन रष्षिय। मन बच क्रम प्रीतम रस कष्षिय॥
छं० ॥ १२६४ ॥

(१) ए. कृ.-को.-नर (२) मो.-षिन तप्पन तलयह।

सखियों की उसे सचेत करने की चेष्टा करना।

कवित्त ॥ बाली विजन फिरन । चंद चारी क्रितम रस ॥
के घन सार सुधारि । चंद चंदन सो भति लस ॥
बहु उपाय बल करत । बाल चेतै न चित्त मय ॥
है उचार उचार । सखी बुन्नयति हयति हय ॥
श्रवनें सु नाइ जंपै सु अलि । नाम मंच प्रथिराज बर ॥
आवस निवत्त अगाद भय । तं निबलह द्रिग छिनक कर ॥
छं० ॥ १२६५ ॥

संयोगिता का मरने को तैयार होना, सखियों का उसे समझा कर संतोष देना।

दूहा ॥ तन तज्जै संजोगि पिय । गहि रष्षी फिरि बाल ॥
जानि नछचिन परि गिरी । चंद मरइति काल ॥ छं० ॥ १२६६ ॥
अरिल्ल ॥ बहुत जतन संजोगि समाए । साम कमल दिनयर दरसाए ॥
उझकि झंकि दिष्यो प्रन पत्तिय । पति दिष्यत मन महि अलि [१]रत्तिय॥
छं० ॥ १२६७ ॥
व्याह नाथ संजोगि सु लच्छन । जिहि तुम कर साह्यौ बर दच्छिन॥
सा तुअ तात भए दल तत्तो । सरन तोहि सुदरि संपत्तौ ॥
छं० ॥ १२६८ ॥

संयोगिता का वचन।

दूहा ॥ ता मुष मुंदिन मोद किय । अलियंन जंपहु आलि ॥
दाधेऊ पर लवन रस । म्रतका न दिज्जै गारि ॥ छं० ॥ १२६९ ॥
अंध न द्रप्पन दिष्षिहै । गुंग न जंपहि गल्ह ॥
अस्रुत नर गान न लहै । अबल न [२]करै सबल्ल ॥ छं० ॥ १२७० ॥
मैं निषेद किन्नौ जु कथ । दुज अरु दुजिय प्रमान ॥
टरै न गंध्रब गंध्रविय । विधि कीनौव प्रमान ॥ छं० ॥ १२७१ ॥

(१) ए. कृ. को.-रज्जिय। (२) ए. कृ. को.-जैरै।

श्लोक ॥ गुरजनं मनो नास्ति। तात आज्ञा [1]विवर्जितं ॥
तस्य कार्यं विनश्यंति। यावत् चंद्रदिवाकरौ ॥ छं० ॥ १२७२ ॥

दूहा ॥ इह कहि सिर धुनि सषिनि सौं। दिषि संजोगिय राज ॥
जिहि प्रिय जन अंगुलि करै। तिहि प्रिय जन किहि काज ॥
छं० ॥ १२७३ ॥
इह चिंतित बत्ती सु सुनि। क्रोध ज्वाल सरि अंव ॥
रही जु लिषिये चित्र मैं। ज्यों सरह प्रतिव्यंव, ॥ छं० ॥ १२७४ ॥

संयोगिता का झरोखे में झांकना और पृथ्वीराज का दर्शन होना।

कुंडलिया ॥ धुनत गवष्यन सिर लष्यौ। अंबुज मुष ससि अंव ॥
अनिल तेज झलहल कँपै। सरद इंद्र प्रतिव्यंव ॥
सरद इंद्र प्रतिव्यंव। चिंति चतुरानन आनन ॥
निरषि राज प्रथिराज। साज सुंदरि अपकानन ॥
इय सत भट्ट सु भूप। मग्ग भोहैं न गनंतन ॥
मानि विसव्वा वीस। सीस धुनि धुनि न धुनंतह ॥छं०॥१२७५॥

पृथ्वीराज का संयोगिता को मूर्छा से जगाकर कहना कि मेरे साथ चलो।

चौपाई ॥ झंकत न्रप दष्षी बर बुस्सै। गंग निकट प्रतिव्यंब सो हस्सै ॥
चिहलै पऱ्यौ चंद तरपौनौ। कै म्रग तिस्न देषि मन मौनौ ॥
छं० ॥ १२७६ ॥
मुच्छि बाल संजोगि उठाई। देवर तर दिसि दिसि पट्टाई ॥
कै श्रोतान स्तूर सुनि झूठे। कै कातर अवहौं न्रिप दीठे ॥
छं० ॥ १२७७ ॥

दूहा ॥ ए सामंत जु सत्त कहि। पंग पुति घटि मंत ॥
एक लष्य भर लष्यियै। जै कढ्ढै गज दंत ॥ छं० ॥ १२७८ ॥

(१) मो.-नर्जितं।

गाथा ॥ मदनं सरा लति विविहा । जिम्हा रटयोति प्रान [1]प्रानेसं ॥
नयन प्रवाहति विवहा । अह वांमा कंत कथ्थायं ॥छं०॥१२७९॥

आर्या ॥ कहु सोभा सो चंद लासौ । मन मथ्थं पहु पांजलि ॥
बरन मान निसा दिवसे । धुनयं सीस जो मम ॥ छं० ॥ १२८० ॥

संयोगिता का कहना कि मैं कैसे चलूं यदि लड़ाई में मैं छूट गई तो कहीं की न रही ।

दूहा ॥ किम हय [2]पुट्टहि आरुहौं । घटि दल संगह राज ॥
भीर परत [3]जो तजि [4]चल्यौ । तब मो आवै लाज ॥छं०॥१२८१॥

पृथ्वीराज का कहना कि मेरे सामंत समस्त पंग दल का संहार कर सकते हैं ।

तब हँसि जंप्यौ न्रप बयन । गहर न करियै अब्ब ॥
सब्ब पंग दल संहरों । सुंदरि लाज न तब्ब ॥ छं० ॥ १२८२ ॥

संयोगिता का कहना कि जैसा आप जाने पर मैं तो आपको नहीं छोड़ सकती ।

कवित्त ॥ सुंदर जंपै बैंन । ढीठ दिल्लिय नरेस सुनि ॥
कहहि सूर सामंत । पवन हल्लहि पहार फुनि ॥
अजहौं अलियों चवै । गंठि दैहै [5]सु जंम कहु ॥
जो सह्रै सुरलोक । लहहि अच्छरि नन संकहु ॥
इह चित्त कंत इच्छहि बहुल । बहु समूह भुज बल कहहि ॥
संदेह सास संभरि धनी । पलन प्रान पच्छै लहहि ॥
छं० ॥ १२८३ ॥

---

(१) मो.-प्रानेव ।
(२) ए. कृ. को.-पुट्टौ । (३) ए. कृ. को.-मुहि । (४) मो.-चलौं ।
(५) ए.-दास ।

गाथा ॥ अवलोकित न्रप नयनं। वचनं जिव्हा सु कातरा सामी॥
निंदा सह स्तुत माने। घोरं संसार पातकी॥ छं० ॥ १२८४ ॥

संयोगिता का जैचन्द का बल प्रताप वर्णन करना।

कवित्त ॥ सिंगारिय सुंदरिय। हास उपजत बर सद्दह॥
करुना वुल्लि इहि बीत। रुद्र कामिनि कथ बद्दह॥
बीर कहत गंध्रब्ब। भयो भामिनी भयानक॥
वीभच्छिय संग्राम। मनहि आचिज्ज सयानक॥
छिन संत मंत इय कंत तुअ। पिय विलास दिन करि करिय॥
इम कहै चंद बरदाय बर। कलहकंत तुअ तौ डरिय॥छं०॥१२८५॥
जे पट्टुरी बिमान। तेह पट्टुरी बिमानह॥
जे सारंग करार। तेह सारंग करारह॥
जिहि किक्तिय गय कोस। तेह किती गय कोसह॥
जिहि गय सघन सरोस। तेह गय मघन सरोसह॥
विल्लोर पयोहर गै मलन। मलन विलोर पयोहरह॥
जयचंद पयानौ परठयौ। भा भुअ हुअरु बसंत रह॥छं०॥१२८६॥
करत पंग पायान। षेह उड्डत रवि लुक्कै॥
महुरैजल पुट्टै सु। पंक सरिता सर सुक्कै॥
पानी ठाहर षेह। एह उड्डती विराजै॥
बर पयान छावंत। भान [1]सिर पट्ट कविज्जै॥
दिगपाल कंपि हल्लि दसो दिस। सेसपयानौ नहि सहै॥
बर न्रपति सीस ईसं सु सुनि। भौ पंगुर तातें कहै॥छं०॥१२८७॥

संयोगिता प्रति गोइन्दराय का बचन।

हे कमधज्ज कुमारि। कहै गोयंद राज बर॥
जे भर पंग नरिंद। सबैं भंजों अभंग [2]पर॥
सम सामंत सहित्त। अंग जैचंदह मंञ्जौं॥
जब कोपै चहुआन। षग्ग मैमत्त विहंडौं॥

(१) चारों प्रतियों में "कूट" पाठ अधिक है। (२) ए. कृ. को.-षल।

जदपि बहुल गोमाय गन। तदपि म्रग्गपति नह डरै॥
ममसंकि चित्त चिंता न करि। पहुचाऊं दिल्ली घरै॥छं०॥१२८८॥
चढ़त पंग बर बीर। नाग बर बीर दढिय अहि॥
जिहि कर करिवर धरिय। घरिय ते भार विदुष महि॥
चित्त करिग कुंडली। अप्प पोषंन बाय बर॥
कर कढ्ढि कलिवान। नाहि धारंत इक्क कर॥
जिनि पहुमि मनी मनि सहस फन। सो फनि फुनि फुनि फनि धरिय॥
जानें कि हथ्थं तत्त कि चिय। सुबर भाजि कर कर करिय॥
छं०॥ १२८९॥

हाहुलिराय हम्मीर का बचन।

दूहा॥ हाहुलि राव हमीर कहि। सुनि पंगानी बत्त॥
एक भिरै असि लष्य सों। सो भर किमि भाजंत॥छं०॥१२९०॥

संयोगिता का बचन।

कवित्त॥ कोरि एक चंचल। चलंत हबर बर पष्पर॥
ता उप्पर दस सहस। वालि जिसे असि होइ जलच्चर॥
सोलह सहस निसान। सहस सत्तरि गैवर घन॥
तीस लष्य गैंवर प्रचंड। षग्ग फारक्क न्त्रभै तन॥
चालंत सेन विजपाल सुअ। पहुमि भार फनयति मुरिय॥
कह होइ सूर सामंत हो। पंग सु दल बल उप्परिय॥छं०॥१२९१॥

चंदपुंडीर का कहना कि सब कथा जाने दो यज्ञ विध्वंस करने वाले हमी लोग हैं या कोई और।

चवै चंद पुंडीर इम। कह बल कथ्थह पुब्ब॥
पंग पंग पग नरिंद कौ। जग्य विधवंस्यौ सब्ब॥ छं०॥१२९२॥

यह सुनते ही संयोगिता का हठ छोड़ना।

सुनत बाल छंड्यौ सु हठ। बर [1]चढ्ढी द्रिग बंक॥

(१) ए. कृ. को.-उट्ठरी।

किधौं बाल मन मोहिनी। कै बिय उदित मयंक ॥ छं० ॥ १२९३॥

कन्ह वचन कि स्वामी की निंदा सुनना पाप है, हे पंग पुत्री सुन।

कवित्त ॥ सुनिय बचन बर कन्ह। सीस धुनि धुनि फुनि जंपिय ॥
भग्ग जियन म्रत सब्ब। [1]पिड बेचिय उर थप्पिय ॥
मन्न वचन तन रत्त। भम्म छुट्टै सुष भग्गा ॥
गरुअ पान जो जियन। जूह जोयन तुछ लग्गा ॥
सो भम्म छचि रष्यन [1]सु तन। जो सांमि निंद कानन सुनैं ॥
कातर वचन संजोग सुनि। जौ परनं आन रष्यै [2]ननैं ॥छं०॥१२९४॥

कन्ह का वचन कि मैं अपने भुजबल से ही तुझे दिल्ली तक सकुशल भेज सकता हूं।

हे प्रथिराज वामंग। संग जौ कन्ह नन्ह दल ॥
हौ चहुआन समथ्थ। हरू [3]रिपु राय भुजन बल ॥
मोहि विरद नर नाह। दंद को करै [4]भुअन बर ॥
मो कंपहि सुरलोक। पंति पन गरू भूमि नर ॥
मम कंपि चंपि सुंदरि सु पहु। चढ़िग कोटि कायर रषत ॥
इन भुजन ठेलि कनवज्ज कों। तों अप्पों ढिल्ली तषत ॥छं०॥१२९५॥
तेग छोरि जद्दवन। सोंह सिर धरि करि कथ्थिय ॥
इहै सत्त सामंत। भूमि शृंगार भरथ्थिय ॥
अतुलित बल अतुलित प्रमान। अतुलित बलदेवह ॥
अतुलित छिति छचि न गियान। स्वामित्त सु सेवह ॥
देषहि न राज बंसहि विलगि। कलह केलि कलहंत पिय ॥
अबलत्त छंडि मन सबल करि। बिघर राग सिधूव किय॥छं०॥१२९६॥
सुनि उच्चरि गोयंद। गरुअ गहिलौत राज बर ॥

(१) मो.-सुथन। (२) ए. कृ. को.-तनै। (३) ए. कृ. को.-हरो।
(४) मो.-भुजन।

बीर पंग लगि धीर। लग्गि को छरन छिन्न कर ॥
जुद्ध जूह पहु पंग। करिग गौ पैज सूर सर ॥
सबर सेन भर अग्ग। धाय दुअ लग्गि सेन धर ॥
जद्दप्पि सु रहि रष्षै अलष। अरकु तदपि रहि हन सरै ॥
जद्दपि अगनि सम्हौ बलै। जीरन अग उंछी पैरै ॥छं०।१२९७

चंदपुंडीर का कहना जिस पृथ्वीराज के साथ में निढ़ुरराय सा सामंत है उसके साथ तुझे चिंता कैसी।

कहै चंद पुंडीर। सूर नहि सूर घरघ्घर ॥
घास लगै नन सस्त्र। भजै आभंग मंच बर ॥
पंग पान बुट्टंत। तन्न भज्जैन ज्वाल पर ॥
प्रथी जेम बल अवून। संग चतुरंगौ निढ्ढुर ॥
निमषेक निकष बर ब्रह्म कौ। दौरि जुगौ बहुतें जुषल ॥
असि प्रान मान सामंत कौ। न्रिप सुंदरि नन चिंति बल ॥
छं० ॥ १२९८ ॥

राम राय बड़गुज्जर का बचन।

प्रति सुंदरि न्रप काज। कनक बोल्यौ बड़ गुज्जर ॥
हरि चक्रह सहज वत। जाल नन रहै बुद्धिबल ॥
काट क्रम्म संजवत। अंति भज्जै हरि नामं ॥
नीर परस संजवत। मैल नन रहै बिरामं ॥
नन रहै गुनौ अग्गैं अवधि। सिध अग्गैं सिद्धि न रहै ॥
संजोग जोग भंजन क्रम। राहु सूर चंपिय ग्रहै ॥ छं० ॥ १२९९ ॥

आल्हन कुमार का बचन।

तब बोलै अल्हन कुमार। सब्ब ब्रहमंड बीर बर।
जिहि मिलंत भर सुभर। होहि तन मत्त बीर सर ॥
मिलै सरित सब गंग। होइ गंगा सब अंगा॥

(१) मो.-आंछौ।

भग्गै सब परपंच। मिलै ब्रह्म ब्रह्मह मग्गा ॥
ऐसे सुबीर सामंत सौ। ढील बोल बोलै बदन ॥
जानै न बक्त बर बंध को। पहुंचावै ढिल्ली सुधन ॥छं०॥१३००॥

सलष पँवार का बचन।

बोलि सलष पांवार। पार लभ्भ्यौ न सस्त्रबल ॥
ब्रह्म पार पायौ न। रूप अवरेष रूप कल ॥
मेघ सोय आग्राज। पार वायन में धारिय ॥
सो कहि अमति चरित्र। ब्रत पाषँड अधिकारिय ॥
सौ जुझ्झ पार धारह धनी। जुद्ध पार लभ्भ्यौ न दोउ ॥
तिहि सत संजोगि सुद्दै प्रलै। प्रलै राज ढिल्लीव सोउ ॥छं०॥१३०१॥

देवराज बग्गरी और रामरघुवंस के बचन।

देवराज बग्गरी। बीर बाल्यौ विह से बर ॥
* .... ॥छं०॥१३०२॥
कहै राम रघुवंस। सुनहि संजोगि बाल बर ॥
पंग प्रलै संमूह। जगत बुझ्झन न्रप कग्गर ॥
बरष सात सामंत। सोभ पत्तिन पररुष्यं ॥
बर दंपती [1]निसंक। सस्त्र भग्गा न विसुष्यं ॥
नल कमल मांहि कंद्रप रहै। पति रष्यै चहुआन इम ॥
दिषि वत्त सति संयाग इह। तब सु प्रलै सासहित क्रम ॥
छं० ॥ १३०३ ॥

पुनः आल्हन कुमार का बचन।

फुनि जंप्यौ अल्हन कुमार। सुनि सुंदरी सूर बल ॥
बर अगनित अंजुली। पंग सो सै समुंद दल ॥
सार मेघ बुट्ठतैं। बीर टट्टी बिच्छोरै ॥
बर दंपति सँयोगि। बंधि दल गौत न जोरै ॥

* छं: १३०२ की चारों प्रतियों में केवल एक ही पंक्ति है शेष पंक्तियां हैं ही नहीं।
(१) ए. कृ. को.-न सकं।

उप्पारि सस्त्र गो व्रह्मनह। न्रिप रषि वज्यौ जेम कल ॥
कामधज्ज इंद बुट्ठै प्र पुनि। सुमन संच जानैं अकल ॥छं०॥१३०४

पल्हन देव कच्छावत का बचन।

पल्हनदे कूरंभ। लाज बड पन बड बीरं ॥
न्रिप लग्गै नन अंच। पंच औ पंच सरीरं ॥
सोम नंद संभरी। सूर सो भम्म न हाई ॥
सौ मे एकज होइ। तेज मुक्कै ग्रह जाई ॥
इक अग्ग पंच जौ सत्त है। सत्त मेर सत जीन तजि ॥
नन डरहि चलहि प्रथिराज सँग। रषत कोटि कायरह सजि ॥
छं० ॥ १३०५ ॥

संयोगिता का बचन कि यह सब है पर दैव गति कौन जानता है।

तब कहंत संजोगि। इक्क वन मझ्झ सरोवर ॥
तहं पंकज्ज प्रफुल्लि। सरस मकरंद समोभर ॥
आय इक्क मधु करह। तथ्थ विश्रामिं गुंजा रत ॥
रैंनि प्रपत्तिय ताम। रह्यौ मधि भंवर विचारत ॥
ह्वैहै विन्तित जामनि सबै। तबै गमन इह बुद्ध किय ॥
बिन प्रात होत बिधि इह करिय। से कलिका गजराज लिय ॥
छं० ॥ १३०६ ॥

दाहिमा नरसिंह के बचन कि सुन्दरी वृथा हमलोगों का क्रोध क्यों बढ़ाती है। कहते हैं कि सकुशल दिल्ली पहुचावेंगे।

तब दाहिम नरसिंघ। सिंघ बुल्ल्यौ बंचाइन ॥
सुनिय बचन सुंदरी। जवाल उट्ठी लगि पाइन ॥
इन दष्षित संजोगि। जोग जिन मग्ग प्रहारै ॥
इन पच्छै बलदेव। जम्म गति दिष्षि निहारै ॥

(१) ए. कृ. को.-कुंआरं। (२) ए. कृ. को.-करै।

उझरों बीर दंपति दुहुनि। सरस मद्दम मथ्थियलै॥
चलि सथ्थ राज प्रथिराज कै। मुकति भुगति हम हथ्थलै॥
छं०॥ १३०७॥

पुनः सलष का वचन।

सु बर बीर पामार। सलष बुल्ल्यौ प्रति धारं॥
जग्गि जलनि कमधज्ज। जोग जीवन जग तारूं॥
ए अमंत सामंत। भज्जि जानै न अभंग अपु॥
वज्र सार झल्लै प्रहार। निश्चलित सार वपु॥
जं करै गहर संजोगि सुनि। मुगति गहर बित्तिय घरिय॥
'जग्गाय पंग दिष्षै दलं। रषित कुंअर केअरि फिरिय॥
छं०॥ १३०८॥

सारंगदेव का बचन।

सारंग सारंग बीर। बीर चालुक्क उच्चारिय॥
पग्ग मग्ग बो हिथ्थ। मरन जिहि तत्त बिचारिय॥
बीच राज प्रथिराज। सूर चावद्दिसि चल्लै॥
ज्यों सिर मग धुअ झाल। भूअ सामंत न डुल्लै॥
संजोगि करिन कायरह तौ। पहुंचावै ढिल्ली घरह॥
प्रथिराज ग्रहै जो पंग बर। तौ पंग सूर एकत धरह॥छं०॥१३०९॥

रामराय रघुवंसी का बचन।

तब रायां रघुवंस। जनक उच्चै उच्चारिय॥
हम निकलंक छत्रीय। सुद्ध बर सुद्ध विचारिय॥
जे मेरें कुल भए। हुए ते षंड तन झझझर॥
मत्ति सस्त्र हनुमंत। बीर जंपिहि बड़ गुज्जर॥
संजोगि बचन कातर कहिग। सहिग प्रान मभझह रहिग॥
हम अग्ग पंग कच्छून बर। जम कंपत षग्गह गहिग॥छं०॥१३१०॥

(१) ए. कृ. को. जग्गवे।

भोंहाराव चंदेल का बचन ।

भोंहा राव नरिंद । बीर उच्चरि बीरत्तं ॥
पै लच्छिन बतीस । पंग पुची घटि मत्तं ॥
तिहि इक लछिन हीन । बही लछिन नन सष्षै ॥
एक एक सुरइंद्र । आइ दुज्जन दल भष्षै ॥
सत कोस पंच घटि धांन न्रप । हमह मत्त छह अग सुभर ॥
इक इक कोसै इक इक भर । पहुँचावै संयोगि बर॥छं० ॥१३११॥

चंदपुंडीर का बचन ।

तब कहि चंद पुंडीर । मतौ सुनि सत्त सूर बल ॥
लष्ष एक लष्षियै । एक भंजैति लष्ष दल ॥
बल अगनित अति जुद्ध । पंग जीरन तिन सेनं ॥
दावा नल सामंत । सत्त मारुत बल देनं ॥
ढंढोरि ढाल गजदंत कढि । कवल पीर कन्हहति वर ॥
नष्षै सु बाजि गम भीम दुति । पंग सेन प्रथिराज भर ॥
छं० ॥ १३१२ ॥

निढ्ढुरराय का बचन कि जो करना हो जल्दी करो बातों में समय न बिताओ ।

तब निढ्ढुर उच्चरिय । सब्ब सामंत राज प्रति ॥
पंग सेंन [1]निरदरहु । ग्रब्ब बोल्यौ सुदेवभ्रित ॥
मन मथौ गोविंद चंद । होइ न कहि कालं ॥
मन पुच्छिरु कहौ जीह । काल घत्ते जिहि जालं ॥
जौ करै ढील ढिल्ली धनी । तौ जुग्गिनिपुर जल हथ्थ दै ॥
सत षंड जीह जंपत करौ । पै चल्लि राज इह लज्ज दै ॥छं०॥१३१३॥
मानि मत्तौ सब सेन । गरुअ गोयंद कन्ह कहि ॥
सुजै अप्प जौ चलै । चलै हम हथ्थ रंभ ग्रहि ॥
जो अप्पन आभंज । सबल बंधौ अब बंधौ ॥

(१) ए. कृ. को.-निरदरे ।

ढील न करि सुंदरी। लोह अलध कल संधी॥
ढंढारि ढाल पहुपंग दल। तन अरत्त जिम तोरियै॥
पहुंचाय सांमि ढिल्ली धरा। जम्म जजर तन जोरियै॥छं०॥१३१४॥

संयोगिता के मन में बिश्वास हो जाना।

दूहा॥ बाले बल सामंत कलि। देखि सूर सम चित॥
इन जु हीन बल [1]जंपियै। [2]भिकत बुद्धि इन वृत्त॥ छं०॥१३१५॥

संयोगिता का मन में आगा पीछा बिचारना।

चंद्रायना॥ बचन सुनिय कनि बाल बिचारत सोचि मन।
माया गुरजन चित्त विगोवत वेर तिन॥
* .... ॥ छं० ॥ १३१६ ॥

अरिल्ल॥ सुवर चंद औपम लिय कथ्थं। ज्यों कुछ वधु वर इंद्री अपहथ्थं॥
† .... ॥छं० ॥१३१७॥

संयोगिता का पश्चाताप करके राजा से कहना कि हा मेरे लिये क्या जघन्य घटना हा रही है।

कवित्त॥ बाल कहिग संजोगि। पुब बंधी सु गंठि बर॥
रिष मराप अरु देव। काज भौ भरन मरन भर॥
स्वरग मग्ग रुक्यौ। मरन संभरि चहुआनं॥
केवल किति सु कंत। रंभ बर बरनन पानं॥
बंधई गंठि संभरि धनी। अब इत्तिव अंतर रहिय॥
सामंत सूर संभरि सु कथ। त्रिपति सु दंपति इम कहिय॥
छं० ॥ १३१८ ॥

राजा का कहना कि इस का विचार न करो यह तो संसार में हुआ ही करता है।

चंद्रायना॥ राज सेन दे नैन समझिझय चंद कवि।

(१) ए. कृ. को.-चंपियै। (२) मो.-भ्रिग्ग वुद्धि दग वृत।
* यह छंद चारों प्रतियों में आधा है। † चारों प्रतियों में ऐसा ही है।

सुनि संजोग इह जोग बुभिझ मन दुष्य हवि ॥
आंसू भरि छह [1]सात [2]अगनि भेज पबर पंग।
रहै गल्ह जुगजाइ सब्ब संमूह नर ॥ छं० ॥ १३१९ ॥

संयोगिता का कहना कि होनी तो हुई सो हुई परंतु चहुआन को चित्त से नहीं भुला सकती।

कवित्त ॥ सुंदरि सोचि सु चित। प्रथम व्रत लियौ राज बर ॥
बरजि मंत पित बंध। बरजि गुर जन छोनी धर ॥
तात जग्य बिग्गरि। ध्रम्म लोपे सु लीह कुल ॥
सहस मुष्य अपहास। हीन भय दीन पलति पल ॥
कर तारह जे लिषिय कर। स्वांमि द्रोह बर बिछुरन ॥
मै लीन भाव मावी बिगति। नन मुक्कौं चहुआन मन॥छं०॥१३२०॥

पृथ्वीराज का संयोगिता का हाथ पकड़ कर घोड़े पर सवार कराना।

दूहा ॥ परनि राव ढिल्ली मुषहि। ग्रहि लीनी कर वांम ॥
सम संजोगि न्रप सोभियत। मनहु बने रति कांम ॥छं०॥१३२१॥
चंद्रायना ॥ सुंदरि सोचि समुभिझत गह गह कंठ भरि।
तवहि पानि प्रथिराज सुषंचिय बाह करि ॥
दिय हय पुट्ठहि भोर सु सन्न सु लच्छनिय।
करत तुरंग सुरंग सु [3]पुच्छनि वच्छनिय ॥ छं० ॥ १३२२ ॥

अश्वारोही दंपति की छवि का वर्णन।

कवित्त ॥ हय संजोगि आरुहिय। पुट्ठि लग्गी सु वांम नृप ॥
पति राका पूरन प्रमांन। अरक बैठे सुद्धर बिप ॥
काम रित्त रहि चढी। काम रति दंपति राजं ॥
कै विद्रुम हिम संग। बियन ओपम [4]छपि साजं ॥

(१) ए. कृ. को.-बार। (२) मो.-अगनि भेजे जु पंगवर।
(३) ए. कृ. को.-पुछनिय। (४) ए. कृ. को. छिति।

सामंत सूर पारस नृपति। मधि सु राज राजंत वर ॥
ग्रह सत्त भान ससि विंटिकै। दिपत तेज प्रथमी सु पुर ॥छं०॥१३२३॥

संयोगिता सहित पृथ्वीराज का व्यूह वद्ध होकर चलना।

पंग पुत्ति आरुहिय। सूर चावद्दिसि रष्षे ॥
दिसि ईसान सु कन्ह। पंग षंधार विलष्षे ॥
केहरि वर कंठेरि। पंग पहुरै सो मुक्यौ ॥
पुब्ब सेन निड्डुर नरिंद। धाराहर रुक्यौ ॥
अगि नेव बीर पहु पंग कौ। धार कोट ओटह, सुभर ॥
पांवार धार धारह धनी। सुजस लघ्य लष्यन सुबर ॥छं०॥१३२४॥
दिसि दच्छिन लषन कुआर। सार पाहार पंग छल ॥
भौंहा राव नरिंद। सांमि रष्षे रुकि कंदल ॥
नयन रत्त दल सिंघ। रिंघ रष्यन कमधज्जौ ॥
वर लच्छन बघघेल। सार सारह भुअ छज्जौ ॥
दिसि मरुत बीर बर सिंघ दे। लष्य सेन आरुहिय रन ॥
बर बंध बरुन साईं सु पथ। जम विसाल कंपन.डरन ॥छं०॥१३२५॥
दिसि उत्तर गषर गुरेस। रनह रुद्र रावत बर ॥
उभै स्वामि पल और। छंडि मदमुष्य भेष बर ॥
दिसि पच्छिम बलिभद्र। [1]जांम अद्दव अवरोही ॥
दई दुवाह दो बीर। रंभ रंभन मन मोही ॥
सुरपत्ति समासै नग डुलै। दुहूं दिसा जै उच्चरिय ॥
सामंत सूर रष्षे नृपति। पंग राय पारस फिरिय ॥छं०॥१३२६॥
कोट पंग आरुहिय। नीम किंत्तिय ग्रह मंडिय ॥
थंभ सूर सामंत। अटल जुग्ग ससि सिष छंडिय ॥
बर चिनेत अरु प्रेत। ताल तुंमर नारद पढ़ि ॥
देव रूप प्रथिराज। लच्छि संजोगि वाम गढ़ि ॥
कामना मुकति अप्पै तही। जो बीर रूप संचै धयौ ॥
सेवै जु सूर औ सूर मिलि। पार बरौ तारन भयौ ॥छं०॥१३२७॥

---

(१) मो.-भान।

पंग दल में घिरे हुए पृथ्वीराज की कमल-संपुट भौंरे की सी गति होना।

आर्या ॥ एकथ्थोय संजोई। एकथ्थौ होइ समर नियोसौ ॥
अनि लेय यथा पदमं। अंदोलए राज रिदएवं ॥ छं० ॥ १३२८ ॥
दूहा ॥ मन अंदोलित चंद मुष। दिषि सामंत सरूप्प ॥
अंदोलित प्रथिराज हुअ। सिर कट्टिय सुष दुष्प ॥ छं० ॥ १३२९ ॥

पृथ्वीराज के हृदय में यौवन और कुल लज्जा का झगड़ा होना।

वय सु लग्गि एकत करइ। कक्कर लग्गिय लाज ॥
वय जुग्गिनि पुर चलि कहै। लाज कहै भिरि राज ॥छं०॥ १३३० ॥
चौपाई ॥ वै सुष सब्ब सँजोगि बतावै। राज मरन दिसि पंथ चलावै ॥
दोई चित्त चढी बर राजं। वै विलास मरनं कहि [1]लाजं ॥
छं० ॥ १३३१ ॥

वय भाव।

दूहा ॥ मिष्टानं बर पान भय। नव भामिनि रस कोक ॥
अमर राइ [2]इच्छति सबै। लाज सुष्प पर लोक ॥ छं० ॥ १३३२ ॥

लज्जा भाव।

चौपाई॥मो तजि मति चोहान सुजाई। ज्यों जलबिंदु सब कित्ति समाई ॥
तौ तिय पन वय तज्जि दिषाई। तिन जिय जाहु ये लज्जन आई॥
छं० ॥ १३३३ ॥

वय विलासिता भाव।

दूहा ॥ सुनत वचन लज्जिय वयह। उत्तर दीय न लज्ज ॥
वै विलास उत्तर दियौ। अज्जु लज्ज हम कज्ज ॥ छं० ॥ १३३४ ॥

पृथ्वीराज के हृदय में लज्जा का स्थान पाना।

वै मुष कौपि प्रमान से। मुक्किय जुगति जुगत्ति ॥

(१) ए. कृ. को.- काजं। (२) ए. कृ. को.-इच्छैति कै।

र 'हलका दंतीन के । धार उज्जल कंति ॥ छं० ॥ १३३५ ॥
बैतन करषि निरष्पयौ । लाज सु आदर दीन ॥
कलि नारद नीरद कवि । प्रगट करहु हम कीन ॥ छं० ॥ १३३६ ॥

कवि का कहना कि पंग दल अति विषम है।

कहत भट्ट दल विषम है। तुहि दल तुच्छ नरिंद ॥
परनि पुत्ति जैचंद की । करहि जाइ ग्रह नंद ॥ छं० ॥ १३३७ ॥

पृथ्वीराज का वचन कि कुछ परवाह नहीं मैं सब को बिदा करूंगा।

झुकित राज उत्तर दियौ ।-सो सथ सत्त सुभट्ट ॥
हूं चहुआन जु संभरी । भुज ठिल्लौ गज थट्ट ॥ छं० ॥ १३३८ ॥

कविचंद का पंग दल में जाकर कहना कि यह पृथ्वीराज नव दुलहिन के सहित हैं।

चल्यौ भट्ट संमुह तहां । जहं दल पंग अरेस ॥
जो दूंछै नृप तुम्झ मन । टट्टौ षेत नरेस ॥ छं० ॥ १३३९ ॥
परनि राइ ढिल्लिय सु मुष । रुष किन्नौ मन आस ॥
कहौ चंद न्रप पंग दल । जुद्ध जुरै जम दास ॥ छं० ॥ १३४० ॥
चढ़िग सूर सामंत सह । न्रिप भग्गह कुल लाज ॥
सुहर समुह दिष्षहि नयन । चिय जु बरिग प्रथिराज ॥ छं० ॥ १३४१ ॥
गयौ चंद न्रप बयन सुनि । जहं दल पंग नरिंद ॥
अरि आतुर अरिग्रहन कौ । मनों राहु अरु चंद ॥ छं० ॥ १३४२ ॥

अंतरिक्ष शब्द (नेपत्थ में) प्रश्न।

श्लोक ॥ कस्य भूपस्य सेनायां । कस्य बाजित्र बाजनं ॥
कस्य राज रिपू अरितं । कस्य संन्नाह पष्षरं ॥ छं० १३४३ ॥

उत्तर।

दूहा ॥ छलि आयौ चहुआन न्रप । भट्ट सथ्थ प्रथिराज ॥
तिहि पर गय हय पष्षरहि । तिहि पर बज्जत बाज ॥ छं० ॥ १३४४ ॥
गाथा ॥ सा याहि दिल्लि नाथो । सा यंतु जग्य विध्वंसनौ ॥
परनेवा पंगपुत्री । जुद्ध मांगंत भूषनं ॥ छं० ॥ १३४५ ॥

(१) ए. कृ. को.-ए हेला देतीर के।

चहुआन पर पंग सेना का चारों ओर से आक्रमण करना।

दूहा ॥ सुनि श्रवननि चहुआन को । भयो निसानन घाव ॥
जनु भद्दव रवि अस्त मनि । चंपिय बद्दल बांव ॥ छं० ॥ १३४६ ॥

प्रकोपित पंगदल का विषम आतंक और सामंतों की सजनई।

भुजंगी ॥ भरं साजतें धोम धुम्मै सुनंतं । तहां कंपियं केलि तिय पुर कँपंतं ॥
तहां डमरु कर डहकियं गवरि कंतं । तिनं जानियं जोग जोगादि अंतं ॥
छं० ॥ १३४७ ॥

तबं कमक मिरु सेस सिर भार सहियं। तहां किम सु उस्वास रवि रथ्थ सहियं॥
तहां कमठ हुत कमल नहिं अंबु लहियं । तबैं संकि ब्रह्मान ब्रह्मंड गहियं॥
छं० ॥ १३४८ ॥

[1]उनं राम रावन्न कबि किन्न कहता। उनं सकति सुर महिष बल धन्न लहिता
मनौं कंस ससिपाल जुर जमन प्रभुता। तिनं भम्मियं एम भय लच्छि सुरता॥
छं० ॥ १३४९ ॥

भरं चढ्ढियं सूर आजान बाहं । तिनं तुट्टि बन सिंघ दीसंत लाहं ॥
तिनं गंग जल मोंन धर हलिय आजैं । भरं पंगुरे राव राठौर भोजैं ॥
छं० ॥ १३५० ॥

तबै उप्परें फौज प्रथिराज राजं । मनों बांदरा लेन ते लंक गाजं ॥
तबं जग्गियं देव देवं उनिंदं । तिनं चंपियं पाय भारं फुनिंदं ॥
छं० ॥ १३५१ ॥

तबै चापियं भार पायाल दंदं । घरं उड्डियं रेन आया समुंदं ॥
गिनै कौन अगनित्त रावत्त रत्ता । तिनं छच छिति भार दीसै नपत्ता॥
छं० ॥ १३५२ ॥

जु आरंभ चक्री रहै कौन मंता । सु बाराह रूपी न कंधै धरंता ॥
जु सेनं सनाहं नवं रूप रंगा । [2]तिनं झिल्ल वैतेग तेचैंच गंगा ॥
छं० ॥ १३५३ ॥

तिनं टोप टंकार दीसै उतंगा । मनौं बद्दलं पंति बंधी विहंगा ॥

(१) ए. कृ. को.-उचं । (२) ए. कृ. को.-तिनं झिल्ल चेचे मते वैच गगा ।

जिरह जंगीन बनि अंग लाई । मनो कट्ठ कंती सुगोरष बनाई ॥
छं० ॥ १३५४ ॥

तिनं हथ्थरै हथ्थ लग्गै सुहाई । तिनं घाइ गंजै न थक्कै थकाई ॥
तिनं राग अरजीव बनि बान अच्छै । भरं दिष्षियै जानु जोगिंद कच्छै ॥
छं० ॥ १३५५ ॥

मनं सस्त्र छत्तीस करि लोह साजै । इसे सूर सामंत सौ राज राजै ॥
छं० ॥ १३५६ ॥

लज्जा भाव कि लज्जा के रहने से संसार में कीर्ति अमर होगी ।

कुंडलिया ॥ बाद बत्तवै कट्ठि न्त्रिप । बहु उपाइ तो साज ॥
मैं वपु लज्जै सौंपि कर । कै चल्लै प्रथिराज ॥
कै चल्लै प्रथिराज । किंत्ति भग्गौं भगि जित्तौ ॥
मरन एक जम हथ्थ । दुरै भज्जिन जम वित्तौ ॥
ते अप्पन तिय राज । लाज इक राग सदेवति ।
गति के प्रान तिन काज । राज हन्नहि सु बहु व्रत ॥छं०॥१३५७॥

मुरिल्ल ॥ जब लाज सबै बे कर रस बद्दे । तब लगि पंग बीर रस सद्दे ॥
दिसि दिसि दल धाए कविचंद । ज्यौं गाज्यौ बर ससि पाल [1]गुविंद॥
छं० ॥ १३५८ ॥

पृथ्वीराज के मन का लज्जा का अनुयायी होना ।

दूहा ॥ दुह [2]एनौ तन चढ्ढियै । लज्ज प्रसंसत राइ ॥
सत्त सुसत्त प्रनंब चढ़ि । चढ्ढिय सु उत्तर राई ॥ छं० ॥ १३५९ ॥

पृथ्वीराज का वचन ।

तूं लज्जी तन चढ्ढ्यौ । लज्ज प्रान संग [3]गथ्थ ॥
अब कित्ती वत्तीय न्गि । [4]अब सन चूक न तथ्थ ॥छं०॥१३६०॥

(१) ए. कृ. को.-गुव्यंदं । (२) ए. कृ. को.-एतौ । (३) मो. सथ्थ ।
(४) ए. कृ. को. अवसन सूक न नथ्थं ।

पंग सेना के रण वाद्यों का भीषण रव ।

मुरिल्ल ॥ बाजि न्त्रपत्न विचित्त सु बाजिग । मेघ कला दल बद्दल साजिग॥
बंबरि चौर दिसान दिसानं । दस दिसि [1]रत्त घोर निसानं ॥
छं० ॥ १३६१ ॥

भुजंगी ॥ निसानं दिसानंति बाजे सुचंगा । दिसा दच्छिनं देस लीनौ उपंगा॥
तबल्लं तिदूरं भुजंगी म्रदंगा । मनों न्रत्य नारद्द कट्टै प्रसंगा ॥
छं० ॥ १३६२ ॥

बजै बंस विसतार बहु रंग रंगा । तिनं मोहियं सथ्थ लग्गे कुरंगा॥
बरं बीर गुंडीर संसे ससंगा । तिनं नच्चई ईस ते सीस गंगा ॥
छं० ॥ १३६३ ॥

सुनै अच्छरी अच्छ मंजै सु अंगा । सिरं सिंधु सद्दनाद्द श्रवनै उतंगा॥
रसे सूर सामंत सुनि जंग रंगा । .... ⋮ ॥ छं० ॥ १३६४ ॥
नफेरी नवं रंग सारंग भेरी । मनों न्त्रत्तनी इंद्र आरंभ केरी ॥
सुने सिंगि साबद्द नंगी न नेरी । मनों भिंभ आवद्ध हथ्थैं करेरी ॥
छं० ॥ १३६५ ॥

करी उच्छरी घाव घन घंट टेरी । चितं चिंति तन हीन बाढी कुबेरी॥
अन्यं ओपमा षंड नैने निभग्गी । मनो राम रावन्न हथ्थें विलग्गी॥
छं० ॥ १३६६ ॥

पंगराज की ओर से एक हजार संख धुनियों का शब्द करना ।

दूहा ॥ सुनि बज्जन रज्जन चढ़िग । सहस संष धुनि चाइ ॥
मनों लंक विग्रह करन । चढ्यौ रघुप्पति राइ ॥ छं० ॥ १३६७ ॥
राम दलह बंदर बिषम । रष्षस रावन वृंद ॥
असी लष्य सौं सौ जुरिग । धनि प्रथिराज नरिंद ॥ छं० ॥ १३६८ ॥

सेना के अग्रभाग में हाथियों की वीड़ बढ़ना ।

दल संमुह दंतिय सघन । गनत न बनि अगनित्त ॥

(1) ए. कृ. को.-जोरत ।

मनों[1] पव्वय बिधि चरन किय। सह दिग्गिय मय मत्त ॥छं०॥१३६९॥

मतवारे हाथियों की ओजमय शोभा वर्णन।

मद मंता दँत उज्जला। मय कपोल मकरंद ॥
दुहुं दिसि भवर गुंजार करि। [2]छुटि अंदून गयंद ॥ छं० ॥ १३७० ॥

भुजंगी ॥ देषियहि मंत मैमत्त मंता। छच छहरंग चौरं ढुरंता ॥
छके जेह अंदून छुट्टै जुरंता। बाय वहु वेग झटकंत दंता ॥
छं० ॥ १३७१ ॥

जिते सिंघली सिंघ सुंडी प्रहारे। तिते सोर संमूह धावै हकारे ॥
उज्जए बान आवै [3]वकारे। अंकुसं कोस तेनं चिकारे ॥
छं० ॥ १३७२ ॥

मीठ मंगोल चिह्न कोद बंके। इसे भूप बाजून बाजून हंके ॥
दंति मनु मुत्ति जरये सुलष्षी। मनों बीज झमकंत जलमेघ पष्षी ॥
छं० ॥ १३७३ ॥

घटं घेन घोरं न सोरं समानं। हलं हाल ए मंत लागे विमानं॥
बिरद बरदाइ आगे वृदंगा। स्वर्ग संगीत [4]करि रंभ संगा ॥
छं० ॥ १३७४ ॥

तेह तर जोर पट्टेब झिल्लैं। चंपियं पान ते मेर ढिल्लैं ॥
रेसमी रेसना रीति भल्ली। सिरी सीस सिंदूर सोभा सु मिल्ली ॥
छं० ॥ १३७५ ॥

रेष वैरष्ष पति पात वल्ली। मनहु बन राइ द्रुम डाल हल्ली ॥
सीस सिंदूर गज जंप झंपे। देषि सुरलोक सहदेव कंपे ॥
छं० १३७६ ॥

इत्तनिय आस धरि मध्य रहियं। कहहि प्रथिराज गहियं सु गहियं॥
.... । .... छं० ॥ १३७७॥

दूहा ॥ गहि गहि कहि सेना सकल। हय गय बन उठि गव्व ॥
जनु पावस पुव्वह अनिल। हलि गति बद्दल सव्व ॥छं०॥१३७८ ॥

---

(१) मो.-पव्वन। (२) ए. कृ. को.-छुट्टिय अंदून।
(३) ए. कृ. को.-हकारे। (४) ए. कृ. को. डरि ।

सुसज्जित सेना संग्रह की रात्रि से उपमा वर्णन ॥

लघुनराज ॥ हयं गयं नरं भरं । [1]उनम्मियं अलड्डरं ॥
दिसा दिसानं बज्जये । समुद्द सद्द लज्जए ॥ छं० ॥ १३७९ ॥
रजोद मोद उप्पली । सव्योम पंक संकुली ॥
तटाक बाल रींगनीं । सु चक्कयो वियोगिनी ॥ छं० ॥ १३८० ॥
पयाल पाल पल्लए । द्रगंत मंत हल्लए ॥
प्रहति छवि. छज्जए । सरोज मौज लज्जए ॥ छं० ॥ १३८१ ॥
अनंदिते निसाचरे । कु कंपि तुंड साचरे ॥
भगंत [2]गंग कूल ए । समुद्र हून फूल ए ॥ छं० ॥ १३८२ ॥
अषंड रेन मंडयौ । डरप्पि इंद्र छंडयौ ॥
कमठ्ठ पिट्ठ निट्ठुरं । प्रसाल भाल विच्छुरं ॥ छं० ॥ १३८३ ॥
छिपान हंस मग्ग ए । समाधि आधि जग्ग ए ॥
अपूर पूर बह्लए । अटाल काल लुट्ट ए ॥ छं० ॥ १३८४ ॥
मंग्दि पंग पायसं । सु छचि मंगि आयसं ॥
गहन्न जोगिनी तुरे । सु अप्प अप्प विप्फुरे ॥ छं० ॥ १३८५ ॥

पंग सेना का अनी वद्ध होना और जैचन्द का मीर जमाम को पृथ्वीराज को पकड़ने की आज्ञा देना ।

दूहा ॥ अप्प अप्प दल विप्फुरे । दिल्ली गहन मंग्दि ॥
* मीर जमांम हमांम कौ । दिय आयस जैचंद ॥ छं० ॥ १३८६ ॥
दिसि दिसि अग्गौ सज्जि वर । चतुरंगिनि पंग राइ ॥
चक्की चक्क वियोगइन । अनंद कमोद कंदाइ ॥ छं० ॥ १३८७ ॥

जंगी हाथियों की तैयारी वर्णन ।

भुजंगी॥चढी पंग फौजं चवं कोद लोकं । दिठी जानि कालं चली जोध थोकं ॥
बंधे बैरषं रत्न [3]हल्लै प्रकारं । मनों [4]नौकरी नौत सोभै सहारं ॥
छं० ॥ १३८८ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-उनव्भियं । (२) ए. कृ. को.-नंग । * यह दोहा मो. प्रति में नहीं है ।
(३) मो.-सोभै । (४) ए. कृ.को.-निक्करी ।

बजे तब्बलं सद्द बंदी निनारे। मनों भृत्त बीरंद हथ्थं सँवारे॥
सिरी पष्षरं लोह गज्जं बनाई। नगं रत्त मझ्झै झमकंत झांई॥
छं० ॥ १३८९ ॥

सुती बैठियं लाल माला प्रकारं। मनों षेलही [1]पारसं कन्ह भारं॥
गजं सज्जयं हेम ओपं विराजे। तिनं अग्र सोहै सितं चौर साजे॥
छं० ॥ १३९० ॥

तिनं की उपम्मा कवी का विचारं। मनों हेम कूटं वहै गंग धारं॥
सिरी उज्जलं लोह है सीस राजं। तहां चौरं ठट्टं सु सीसं बिराजं॥
छं० ॥ १३९१ ॥

तहां चंद कब्बी उपम्मा विचारी। मनों राह कूटं टटं भान मारी॥
सजी पंग सेनं रसं [2]लोह बीरं। तिनं मोकले गहन प्रथिराज मीरं॥
छं० ॥ १३९२ ॥

रावण कोतवाल का सब सेना में पंगराज का हुक्म सुनाकर कहना कि पृथ्वीराज संयोगिता को हर लाया है।

दूहा ॥ सजत सेन पहुपंग घन। आय स पत्ते तीर॥
बर रावन कुटवार तब। पुक्कारे बर बीर॥ छं० ॥ १३९३ ॥

पद्धरी ॥ धर पथ्थराइ बरनौ सुबीर। विश्राम राइ मन मथ सरीर॥
रइबान सिंघ न्रप भेद दीन। चहुआन हरन संजोगि कीन॥
छं० ॥ १३९४ ॥

दरबार जैत मिल्लाइ आइ। संजोगि हरन न्रप सथ्थ जाइ॥
घरि एक एक घरियार बज्जि। पुक्कार लग्गि मारूफ सज्जि॥
छं० ॥ १३९५ ॥

जैचन्द का रावण और सुमंत से सलाह पूछना।

दूहा ॥ परी भीर बर द्रिग्ग बर। द्रिष्ट संजोइय कंत॥
तब तराल रावन कहै। पंग राइ सोमंत॥ छं० ॥ १३९६ ॥

(१) ए. कृ.-को.-पीर सं। (२) ए. कृ. को.-रोस।

सुमंत का कहना कि बनसिंह और केहर कंठीर को आज्ञा दी जाय ।

कवित्त ॥ मोहि मत पुछै नरिंद । तौ चहुआन गहन गुन ॥
दल बल अरि अरि दट्टि । ठट्ट ठेलै दुज्जन दुव ॥
प्रथम राव बन सिंघ । राव बन बीर अग्गि करि ॥
[1]हेत सुमन जग्गौत । उनै पहुपंग पूरि परि ॥
केहरि कंठीर [2]पठौ सु न्रप । इन समान छिचौ न छिति ॥
अड्डौ सु धरौ विब्भार घन । रावन रिन सिष ईय पति ॥
छं० ॥ १३९७ ॥

जैचन्द का कहना कि पृथ्वीराज मय सामंतों के जीता पकड़ा जाय ।

तव नरिंद रा पंग । सु मुष बोल्यौ रावन प्रति ॥
आज गिद्ध ननि जौग । हनै घन स्याम भूप प्रति ॥
अति अयान अनबुझ्झ । अग्गि आगम्म प्रगट्टिय ॥
अप्प अप्प जस हीन । दीन दुनिया दल छुट्टिय ॥
अवरन्न सेन लष्षा चढी । कढौ तेग बंधे दिवन ॥
बहु लाभ होइ जो षेम बिन । जु कछु काम कीजै सु चन ॥
छं० ॥ १३९८ ॥

बघघेलो वर सिंघ । राव केहरि कंठेरिय ॥
कालिंजर कोलिया । राय बंधिय बरजोरिय ॥
[2]रन रावन तलियार । बघ्घ कढ्ढी मुष जंपौ ॥
रवि जैपाल नरिंद । काम कारन हूं अप्पौ ॥
वर गहन चंपि चहुआन कौ । [3]सत्त घत्त सामंत सह ॥
सम समथ सथ्थ भारथ भिरहि । सहस दिये कमधज्ज दह ॥
छं० ॥ १३९९ ॥

---

(१) ए. कृ. को. हेत सुमत जग्गौज । (२) ए. कृ. को.-नर ।
(३) मो.-मन्त ।

रावण का कहना कि यह असंभव है। इस समय मोह करने से आपकी बात नहीं रह सकती।

तब रावन उच्चरै। न्रिपति इह मन्ति सु भट्टौ॥
दीन छोड़ रापंग। सरित डंडी गुर मिट्टौ॥
इह जोगिनि पुर इंद्र। गंजि गोरी गज बंधन॥
इन सु सथ्थ सामंत। सूर अति रन मद मद्दन॥
इह गहन दहन इच्छै न्रपति। भर समूह मोहन करै॥
नव अश्व बाज नव नव न्रपति। नव सु ओरि जग्गह धरै॥
छं० ॥ १४०० ॥

रावण के कथनानुसार जैचन्द का मीर जमाम को भी पसर करने का हुक्म देना।

दूहा ॥ सहस मान सह छत्रपति। सह सम जुद्ध स जुद्ध॥
गहन मीर बंदन कहै। तिहि लग्गै लहु बद्ध॥ छं० ॥ १४०१ ॥
मीर बंद बाहन बलिय। सक सामंत नरिंद॥
मंच घात सक सूरिमा। विष मुत्तरै फुनिंद॥ छं० ॥ १४०२ ॥
अप्प अप्प दल विप्फुर्यौ। दिल्ली गहन नरिंद॥
मीर जमाम हमाम कौं। दिय आयस जैचंद॥ छं० ॥ १४०३ ॥
तुम बिन जग्य न निब्बहै। तुम बिन राज न धाम॥
सुक कट्ठ कट्ठन समुह। जरि जरि अंब बुझाम॥ छं० ॥ १४०४ ॥

रावण का कहना कि आप स्वयं चढ़ाई कीजिए तब ठीक हो।

फिरि रावन न्रप सौं कह्यौ। तात पर्यौ तुहि काम॥
जब लगि अप्प न नांचियै। काम न होइ सु ताम॥ छं० ॥१४०५॥

पंगराज का कहना कि चोरों को पकड़ने में क्यों जाऊं।

कवित्त ॥ तब भुकि पंग नरिंद। ढीठ कुटवार हट्ट पर॥
बाट घाट तस कान। वास बसि करन प्रज्ञ धर॥
रस अद्भुत संग्राम। मझ्झि रष्षत धरि छंडी॥

न कछु मभ्भ्भ मावनौ। बाद राजन सों मंडी॥
अति ग्रब्ब अरब बर्ग्ग सिरह। नरनि मौर उत्तरि रह्यौ॥
जानहि न जुद्ध अविरुद्ध गति। किम सु बचन राजन कह्यौ॥
छं०॥ १४०६॥

दूहा॥ अरे ढीठ रावन सुनि। जितहि न डट्टौ अप्प॥
जो अलभ्भ लोकनि कह्यौ। जिहि मरि मारिय अप्प॥
छं०॥ १४०७॥

पुनः रावण का प्रत्युत्तर की आपने अपने हठ से सब काम किए।

कवित्त॥ फिरि रावन उच्चर्यौ। जग्य मंडि रुकुमत्ति किय॥
जैन जग्य आरंभ। प्रथम चहुआन बंध लिय॥
बहुत मत्त चुक्कए। अबहि तुम मंत सुमंत्त॥
संदेसै व्यौहार। कहौ किन होत भंत्त॥
बंचहु बबंच मंचिय मरन। चाहुआन गहियन गहिय॥
संबरे जाय कन्या [1]रवन। जुगति जग्य पसरिय रहिय॥ छं०॥ १४०८

कुतवाल का बचन कि जिसका पालन करना हो उसे प्राण समान माने परंतु संग्राम में सबको कष्ट जाने।

श्लोक॥ अप्प प्रानं समानस्य। लालना पालनादपि॥
प्रापते तु युद्धकालस्य। शुष्ककाष्टं हुताशनं॥ १४०९॥

दूहा॥ कै प्रारंभन प्रिय भरन। मरन सु अग्गर राइ॥
जग्य विभारन जुद्ध चढ़ि। लियें सु कन्या आइ॥ छं०॥ १४१०॥
मुष मजाद बुल्ल्यौ बयन। नयर कंध कुटवार॥
सु विधि मौर संग्राम भर। तुम रष्षहु हटवार॥ छं०॥ १४११॥
हट्ट नाम कुटवार सुनि। परि सामंतन जंग॥
सबन निरष्षत पंग दल। पर पति दीप पतंग॥ छं०॥ १४१२॥

---

(१) ए कृ को.-बरन

मुसल्मानी सेना नायक का सेना सहित हरावल में होकर आगे बढ़ना।

भुजंगी ॥ तबें पट्ठियं पंग रायं सु हीसं। मषै दोइ द्रुमौन हीने न दीसं॥
किय नीच कंधं तुछं रोम सीसं। परी उप्परें फौज प्रथिराज ईसं॥
छं०॥१४१३॥

रसावला ॥ [1]कोल पलं लषी। मंस स्रवं भषी॥
रोम राइं नषी। बेयजे बिद्धषी॥ छं० ॥ १४१४ ॥
बीर बाहू पषी। सुम्भरे मां लषी॥
बिद्धि सा बद्दषी। टंक अट्टरषी॥ छं० ॥ १४१५ ॥
षंचि बिभ्भारषी। लोह नारंजषी॥
कोल चाहै [2]चषी। बाज बाहै लषी॥ छं० ॥ १४१६ ॥
दुम्म साहै मुषी। बोल तें ना लषी॥
पारसी पारषी। बान बाइं पषी॥ छं० ॥ १४१७ ॥
प्रान तिन्नं तषी। पंग पारठ्ठषी॥
स्वांमिता चित्तषी। ढिल्लि ढाइंभषी॥ छं० ॥ १४१८ ॥
बीच रत्तं मुषी। सट्टि हज्जारषी॥
पवंगे पारषो। .... छं० ॥१४१९॥

पंगदल को आते देख कर पृथ्वीराज का फिर कर खड़ा होना।

भुजंगी। हयं सेन पय सेन अग्गैं सुंडारैं। त्रिपत्ती नछ्छी न लभ्भैं नपारैं॥
तिनं सूर सामंत मध्यं हजारे। मनों विटियं कोट मंझं मुनारे॥
छं० ॥ १४२० ॥

तबै मोरियं राज प्रथिराज बग्गं। बरं उट्ठियं रोस आयास लग्गं॥
मनों पथ्थ पारथ्थ हरि होम जग्गं। मनों षोलियं षग्ग षंडून लग्गं॥
छं० ॥ १४२१ ॥

बरं उट्ठियं सूर सामंत तज्जै। तबें षोलियं षग्ग साहथ्थ रज्जै॥
सुरं बाजनै पंग रा वीर वज्जै। मनों आगमं मेघ आषाढ़ गज्जै॥
छं० ॥ १४२२ ॥

(१) ए. कृ. को.-"कोल पल अभर्ष्या." (२) ए.-चषी।

पृथ्वीराज की ओर से बाघ राज बघेले का तलवार खींच कर साम्हने होना।

कवित्त ॥ बग्घराव बग्घेल। हेल मुग्गल निहल्ल किय ॥
मेघ सिंघ विज्जुलिय। जांनि झंमूर झलक्किय ॥
वे गयंद वारुंन वहंत। वारत्तन वारिय ॥
मीर पुट्ठि आरुट्ठि। सेन गहि गहि अप्फारिय ॥
आवृत्त वत्त सामंत रन। अमर मेछ संमुह मिलिय ॥
अष्टमी चष्य इक्कह सु ग्रह। प्रथम रोस दुग्र दल मिलिय॥छं०१४२३॥

सौ सामंत और असंख्य पंग दल में संग्राम शुरू होना।

दूहा ॥ जोध जोध आयरु मिले। एक इक्क सौं लष्य ॥
नारद तुंबर सिव सकति। सौ सामंतां पष्य ॥ छं० ॥ १४२४ ॥

पुनः रावण का वचन कि पृथ्वीराज को पकड़ने में सब सेना का नाश होगा।

कवित्त ॥ फिरि रावन उच्चरिय। सुनौ कमधज्ज [1]इला बर ॥
अरि बंधन इंछियै। सु तन बंछियै मरन भर ॥
प्रथम मूल दिज्जियै। व्याज आवै धुर अग्गी ॥
इन कज्जैं इल भार। देव [2]करयौ छिति लिग्गी ॥
छिति ग्रीषम बुठ पावसह। बैंन पहु जु पंगह सुनिय ॥
[3]कायर सु भीर भंजै न भर। भर भंजै संभरि धनिय॥छं०॥१४२५॥

केहर कंठेर का कहना कि रावण का कथन यथार्थ है।

केहरि बर कंठेर। पंग सम्हौ उच्चारिय ॥
मत्त सु मत उच्चरिय। बीर रावन अधिकारिय ॥
जंच जोर जो बजै। सार तंची मिलि जंची ॥
जंचि जोर जो [4]चलै। सार बंधी अनु तंची ॥

---

(१) मो.-इलावर। (२) मो.-लरयौ
(३) ए. कृ. को.-कायरन भीर भंजै सुभर। (४) मो.-वजै।

भंजौ जु बीर चहुआन दल। दइ दुबाह सम्हौ भिरै॥
भारथ्थ बीर मंडन सहै। अरी जीत कायर मुरै॥ छं० ॥ १४२६॥

पंग का उत्तर देना कि सेवक का धर्म स्वामी की आज्ञापालन करना है।

सुनि केहरि बर बेंन। कौंन उच्चरै जुद्ध यथ॥
धर संग्रह गो ग्रहन। सामि संकट जु बीर तथ॥
साम दान अरु भेद। सोइ चुक्कै बर साईं॥
नरक निवास प्रमान। सुखित कित्ती निधि पाई॥
जंकरै मंत्त उत्तरि परै। सामि अग्गि मंगै सुभर॥
यौं हँसन केलि घर घर करै। इकत पच्छ बढ़ै सुभर॥
छं० ॥ १४२७॥

पंग को प्रणाम करके केहर कंठेर और रावण का बढ़ना।

दूहा॥ केहरि कन्ह सु गत्तमी। करि जुहार न्रप भार॥
हस्ति काल जम जाल लै। चलि अग्गैं कुटवार॥ छं० ॥ १४२८॥

उनके पीछे जैचन्द का चलना।

कवित्त॥ केहरि बर कंठीर। कन्ह कमधज्ज सु रावन॥
हस्ति काल जम जाल। [1]अग्गि मग चासति धावन॥
ता पच्छै कमधज्ज। सेन चतुरंगी चल्लिय॥
हसम हयग्गय सुभर। भूमि चावद्दिसि हल्लिय॥
कंद्रप्प केत पहुपंग सँग। बजि निसान झपन चढ़िय॥
घन अँगम्यौ सेन चहुआन बर। पवन सेन टिड्डी बढ़िय॥
छं० ॥ १४२९॥

जैचन्द के सहायक राजा रावतों के नाम।

भुजंगी॥ तिकें चढ्ढियं पंग अज्ञान बाहं। बचं उच्चरें सेनं चौहान साहं॥
सुतं चढ्ढियं [2]सेर कंद्रप्प केतं। मनों बंधियं काम बे बीर नेतं॥
छं० ॥ १४३०॥

(१) ए. कृ. को.-अगिन, अगिनिग। (२) ए. कृ. को. बीर।

चढै प्रम्रतं बीर बीरं प्रमानं । कहै पंग अप्पै बंधे चाहुआनं ॥
चढे चंचलं चंपि चंदेर राई । जिनैं पुत्र बैरं रनंथंभ पाई ॥
छं० ॥ १४३१ ॥

चढ़े किल्हनं कन्ह कन्नाट राजी । उठौ बंक मुंछं मसी बीय लाजी॥
चढ्यौ दच्छ भानं सुभानं प्रमानं । चढे कन्ह चंदेल भौधू समानं ॥
छं० ॥ १४३२ ॥

चढ्यौ बग्गरी बीर तत्तौ [1]तुरीसं । लरैं सामि कामं असम्मानं सीसं॥
चढ्यौ इंद्र रांजं असप्पति बीरं । महा तेज जाजुल्य बीरं सरीरं ॥
छं० ॥ १४३३ ॥

चढ्यौ मालवी बीर वरं सिंहतद्दं । भजै तेज जाजुल्य देष्यौ [2]फुनिंदं॥
चढ्यौ पंच पंचाइनं बीर मोरी । चढै बारु रंजैत पावंग जोरी ॥
चढ्यौ दाहिमौ देव देवत्त गत्ती । चढ़े मीर बीरं षुरासान तत्ती ॥
छं० ॥ १४३४ ॥

असी लष्य सेना चिह्नं मग्ग धाई । मनौं भूमि बाराह कांधै उठाई॥
कमठ्ठंति पिट्ठंति ठौसौ समालं । कंपी सेन मुक्कै कुवे हथ्य [3]झालं॥
छं० ॥ १४३५ ॥

पंग की चढ़ाई का आतंक वर्णन ।

कवित्त ॥ [4]वजत धरद्धर सीस । धार धरनीय सेस कहि ।
कुंडलेस कुंडलिय । कहय पन्न गति अरुल रहि ॥
[5]अहि अहि कहि अहि नाम । संकभौ सीस सेस वर ॥
गहिन परै तिहि नाग । चित्त विभ्रम चित्रक पर ॥
कंपेस नाम कंपत भयौ । बहुत नाम तहिन लहिय ॥
जिन जिन उपाय रष्षिय इला । [6]पंग पयानह तिहि कहिय ॥
छं० ॥ १४३६ ॥

दूहा ॥ फन फन पर मुक्कत जु इल । तत्त बसत दष्षि हथ्थ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-तिरीसं ।
(२) ए. कृ. को.-दुनिंदं ।
(३) ए. कृ. को.-झालं ।
(४) ए. कृ. को.-बजत ।
(५) ए. कृ. को.-अहि अहि अहि कहि नाम ।
(६) ए. कृ. को.-पंग पयानन होत वहि ।

अट्ट कंपि दो अट्ट डरि। रवि सुझ्झै नह पथ्थ ॥छं०॥१४३७॥

क्षत्री धर्म की प्रभुता।

कवित्त ॥ मिलि गरूर सामंत। विपथ अरु सुपथ उचारं ॥
विपथ जु बंध्यौ मोह। सुपथ पति रषि पति वारं ॥
रहै विपथ रजपूत। मझ्झि अनि रपि चित भारथ ॥
इह सु पथ्थ रजतीय। सामि प्रेमह छोइ सारथ ॥
सह किति कलं कल कथ्थयौ। काल सु पंग कलंतरै ॥
कस भ्रम्म भ्रम्म छत्री तनौ। मवन मत्त [१]चुक्कहि नरै ॥छं०॥१४३८॥

दूहा ॥ निसि भै भै कादर भजिग। [२]तमस भज्ज गनि सूर ॥
भय भयान रन उदित बर। अद्ध निसा अध पूर ॥ छं० ॥ १४३९ ॥

प्रफुल्ल मन वीरों के मुखारबिंद की शोभा वर्णन।

भुजंगी ॥ परी अद्ध निस्सा अमं छिद्र कारी। ठठुक्के सुरं देखि बरसे न पारी॥
फिरी पंति चावद्दिसं पंग सूरं। महा तेज जाजुल्य दिट्ठी करूरं ॥
छं० ॥ १४४० ॥

सपत्तेज सूरं तहां युद्ध तूरं। दिषे सूर प्रतिबिंद तो मुझ्झ नूरं ॥
महा तेज सूरं समुद्दं जु प्रीतं। बड़े कव्वि रावन्न उप्पम दीतं ॥
छं० ॥ १४४१ ॥

करे सिद्धि जेमन सकारंन नाई। थपे सिद्धि मानं वियं सिद्धि पाई॥
[३]सतं पत्रयं मुद्दि फुल्लै कमोदं। मनौ बाल्लवै संधि दो संधि जदं॥
छं० ॥ १४४२ ॥

तरें को तरं उड्डि पंखं प्रमानं। वसे भौर भोरं सतं पत्र थानं ॥
[४]मिलं दंपती भौर जोगं सरंगी। ललं बेस सौसी जु मुकरंद पंगी ॥
छं० ॥ १४४३ ॥

चले लोइ जानं मनं मध्य बीरं। सजै कुट्टि लै रथ्थ भुअनं सरीरं॥
डगे उड्डि गेनं इकं दुत्ति मानं। रगं रत्त सुझ्झै अभै आसमानं ॥
छं० ॥ १४४४ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-चक्कहि। (२) ए. कृ. को—तम सभनग्गनि सूर।
(३) ए. कृ. को. संत पत्र जा (४) मो.-मिले दंपती भौंर ज्यौं गंध रत्ती।

पृथ्वीराज को पकड़ने के लिये पांच लाख सेना के साथ रूमीखां और बहराम खां दो यवन योद्धाओं का बीड़ा उठाना ॥

दूहा ॥ षां मारुफ नव रत्ति षां । रुषमी षां बहराम ॥
पान मंडि लीनौ सुकर । सामि सपत्ते काम ॥ छं० ॥ १४४५ ॥
पंच लष्य तिन सथ्थ किय । अनी बंधि न्रप राज ॥
गुन गोरी नंन जानई । सामि ध्रम्म सौं काज ॥ छं० ॥ १४४६ ॥

मोतीदाम ॥ बजे बर चंग निसाननि नद्द । सिरं सहनाय नफेरिन सद्द ॥
बजंत निसान सुरंभ रिझंत । सुने सद ईस [1]पलक्क सुलंत ॥ छं० ॥ १४४७ ॥
बजै घट घुघघर घोरनि भार । कै इंद्र अरंभ करै बिबिचार ॥
बजै रंग झोज झलझ झल घंट । हरै ग्रब संभरि नारद कंठ ॥ छं० ॥ १४४८ ॥
बजै सद बंस महिष्यत सिंघ । मनौं कम नंकन आरँभ रंग ॥
तबल्ल टँकार निसानन हल्ल । किधौं गज मेघ अषाढ़ सु कल्ल ॥ छं० ॥ १४४९ ॥

आगे रावण तिस पीछे जैचन्द का अग्रसर होना और इस आतंक से सब को भाषित होना कि चौहान अवश्य पकड़ा जायगा ॥

दूहा ॥ रावन न्रप बद्दत सुबर । षिजि बंधब बर बीर ॥
आदि बैर चहुआन सौं । चढ़ि फवज्ज भर भीर ॥ छं० ॥ १४५० ॥
फटिय फौज पहुपंग बर । मत मंची न्रिप चिंति ॥
अप्प चढ़न बद्दन अरी । नीर फौज छबि किंत्ति ॥ छं० ॥ १४५१ ॥

कवित्त ॥ करि रावन न्रप अग्ग । पंग चढ्ढे बर नागर ॥
[2]धरनि धाय सननंति । रंग दुस्सह जुग सागर ॥

(१) मो.-सु पल्ल सजंत । (२) मो.-धरति ।

भुगति दान अप्पनइ । जंम जीवन उध्यप्पन ॥
फल किती भोगवन । क्रंम भंजन अघ कप्पन ॥
आजुल्य दैव दैवान भर । दिषि नरिंद तोमर तरसि ॥
डगमगे भग्गि द्रुगपाल बर । बीर भुगति तुंमर परसि ॥
छं० ॥ १४५२ ॥

दूहा ॥ तरसि तुंग बद्दलति दल । पल भल बिजय निसान ॥
बाल हच्च इभ उत्तरै । गहै पंग चहुआन ॥ छं० ॥ १४५३ ॥

हरावल के हाथियों की प्रभूति ।

बर सोहै बद्दलति दल । बर उतंग गज्ज रत्त ॥
काज न सक्कल रछ्छई । कौन गंग उर गत्त ॥ १४५४ ॥
चलि गज दंतिन सघन घन । गति को कहै गनित्त ॥
मनों प्रब्बत बिधि चरन कै । फौज अगैं मैंमत्त ॥ छं० ॥ १४५५ ॥

पंग दल को बढ़ता देख कर संयोगिता सहित पृथ्वीराज का सन्नद्ध होना और चारों ओर पकड़ो पकड़ो का शोर मचना ।

पद्धरी ॥ पूरन्न राव चालुक्क बंभ । हम्मीर राव पामार थंभ ॥
गोयंद राव बघ्घेल स्तूर । अंगमी सेन घन ज्यों लंगूर ॥
छं० ॥ १४५६ ॥

पहुपंग गोपि प्रविकास राज । दिष्षै कमंध दल करिय साज ॥
बाजिच ताम बज्जे गुहीर । हय गय सु ताम सज्जंति बीर ॥
छं० ॥ १४५७ ॥

न्त्रिप नाइ सीस मिलि राज सव्व । दिष्षेव पंग गुर तेज ग्रब्ब ॥
दल सजे साजि सब देषि पंग । उच्चर्यौ गरुत्र चहुआन जंग ॥
छं० ॥ १४५८ ॥

सिर धारि बोलि [1]जमराज सामि । बंधें अवन्नि गुरु तेज ताम ॥
सजि सेन गरट चलि मंद गत्ति । निज स्वामि काम [2]गुझ्झ गुरत्ति ॥
छं० ॥ १४५९ ॥

(१) मो.-सज । (२) मो. गुंभे ।

आवंत सेन प्रथिराज जानि । उट्ठेव सूर सामंत तानि ॥
सामंत सूर सजि चढ़े जाम । हय मंगि चढ़न चहुआन ताम ॥
छं० ॥ १४६० ॥
संजोगि पुट्ठि [1]आरोहि बंधि । अट्ठौ सु राज सक्काह संधि ॥
छं० ॥ १४६१ ॥
दूहा ॥ गहि गहि गहि मुष बैन कहि । भग्गि न पावै जान ॥
श्रवन सवद्द न संचरिय । मनौं गुंग करि सान ॥ छं० ॥ १४६२ ॥

लोहाना आजान वाहु का मुकाबला करना और वीरता के साथ मारा जाना ।

कवित्त ॥ दल समंद पहुपंग । गज्जि लग्गौ चावद्दिसि ॥
लौहानौ वर बीर । पारि मंडी अड्डिय असि ॥
लोह लहरि ढिल्लई । फिरिव बज्जे दल षग्गह ॥
हं हं हं आरुहिय । गजति गज्जन नर लग्गह ॥
पारथ्थ बीर वर बार हर । बहु क्रूर कढ्ढी विहर ॥
रघुबीर तरंग तुरंग जल । कमल जानि नंचैंति सिर ॥छं०॥१४६३॥
मित्त रथ्थ रजि व्योम । मद्धि अट्टई असुर गुर ॥
रसह रौद्र विथ्थुर्यौ । षिति षिजि लग्गे अमर पुर ॥
संकर भरि लगि लोह । धूरि धुंधरि तिनि सा छवि ॥
हाजुर मीर हमाम । मीर गिरदान सामि नमि ॥
चवदिट्ठ उट्ठि राजन सबद । पारसि गहन गहन्न किय ॥
है छंडि मंडि असिवर दुकर । जैपत आतुर जीह लिय ॥
छं० ॥ १४६४ ॥

लोहाना के मरने पर गोयंदराय गहलौत का अग्रसर होना और कई एक मीर वीरों को मार कर उसका भी काम आना ।

भुजंगी ॥ तबै हक्कि गहिलौत गोयंद राजं । हयं छंडि ह्वै जेम करि चक्क साजं ॥

(१) ए.-आरोध ।

लगे [1]मुह धारं सु वाहं सु भारं। मनों झकसं तार तुट्टै करारं ॥ छं० ॥ १४६५ ॥

वहै षग्ग झट्टं स झननति सट्टं। बिसीसं बिघट्टं मनों नाचनट्टं ॥
तुटै पग्ग उड्डंत व्योमं विहारं। मनौं संझ संक्रंति इव्वाइ झारं ॥ छं० ॥ १४६६ ॥

हहक्कार हक्कार हक्कै सुमीरं। षवं राहि वीरं बजे जुह धीरं ॥
समुष्षं हमामं सु मीरं मिलंदे। मनौं राह ग्राइं कुटं बेस इंदे ॥ छं० ॥ १४६७ ॥

हए तोमरं हीय फेरे फरक्के। मनो नट्ट बेसं सु भूमं तरक्के ॥
तवै चंपि गिरियं सु गोयंद राजं। हये संगिनौ छुट्टि सीसं सु गाजं ॥ छं० ॥ १४६८ ॥

फटे तोमरं पुट्ठि उट्टंति रंगे। धमक्के धरा नाग नागं सिरंगे।
षवै दीन दीनं गिरंदी गुमानं। कियं आय पाहार नाविक्क बानं॥ छं० ॥ १४६९ ॥

चँपै चंप वर बेग गोयंद राजं। मृगी जेम मृगराज षपि पंषि बाजं॥
हए ताम नेजानि छूरंति धायं। कियं कंत प्राहार गोयंद रायं ॥ छं० ॥ १४७० ॥

हए षग्ग सीसं परे रंभ थंभं। मनौं कोपिनं षत्ति घंटंति ईभं ॥
बियं लग्गि बथ्थं बलं बाहु बाहं। जमं दढ चंपे डरं मेछ गाहं॥ छं० ॥ १४७१ ॥

उठे हक्कि करि भारि कोपेज ढालं। हए च्यार मीरं दुबाहंड ढालं ॥
उरं लग्गि जंबूर आरास षानं। पऱ्यो राव गोयंद दिल्ली भुजानं॥ छं० ॥ १४७२ ॥

गोयंदराय की वीरता और उसके मरने पर पज्जूनराय का हथियार करना।

दूहा ॥ पहर एक असिवर सुभर। आरिसि बुट्ठी सार ॥
गिनै कौन गोयंद सिर। जे षग तुट्टिय धार ॥ छं० १४७३ ॥

(१) ए. कृ. को.-जुद्ध।

कवित्त ॥ तब गरज्यौ गहिलौत। पत्ति पाहार धार चढ़ि ॥
बड़वा नल असि तेज। पंग पारस संमुह चढ़ि ॥
अरि अबुझझ सिष्धवै। मस्त बज्जी तन झिल्लै ॥
अंकै मरन समूह। सस्त्र बर 'सस्त्रन छिल्लै ॥
आहुत्त घाय तन झंझरिय। मन अच्छरि तिन तन बरिय ॥
गोयंदराय आहुट्ठ पति। सुगति मग्ग पुच्छिय दरिय ॥
छं० ॥ १४७४ ॥

परत धरनि गहिलौत। सेन नच्चिय असुरायन ॥
चिंतिय जांम अह सुक्क। रस्स मत्तौ रुद्रायन ॥
गयत प्रान गोयंद। मौर इति मित्ति सुपिल्लिय ॥
षिझ्झे राज पज्जून। सुधर कम्मार सु ढिल्लिय ॥
इहकारि सीस साजे गयन। किहय कंध असि झारि कर ॥
धर पर्‍यौ दंत शत मित्त परि। उज्यौ हक्कि हरि जेम अरि ॥
छं० ॥ १४७५ ॥

पज्जूनराय पर पांच सौ मीरों का पैदल होकर धावा करना और इधर से पांच सौ सामंतों का उसकी मदद करना ॥

इत मित्तह उपारह। 'मीर सो पंच छंडि हय ॥
है है है जंपै जुवान। उथ्थान थान भय ॥
तिन रोहिग पज्जून। राय केहरि करि जुथ्थह ॥
देषि 'सिघ पामार। पीप परिहार सु पथ्थह ॥
चंदेल भूप भौंहा सुभर। दाहिम्मौ नरसिंघ बर ॥
कछरा राइ चालुक्क महु। मिल्लिय पंच उप्पर समर ॥
छं० ॥ १४७६ ॥

नरसिंहराय का वीरता के साथ मारा जाना।

मोतीदाम॥मिलिहक्किय हक्क सु भीर गंभीर। गुमान दुमान सु चंपिय पीर॥
महाभर सूरसामंत सु धीर। सु निम्मल नेम रजे रज नीर ॥
छं० ॥ १४७७ ॥

(१) ए. कृ. को. सत्रुन । (२) ए. कृ. को. सीर ।

हबक्कि सु धक्कि मनो अनि अंग । लगे अम दट्ट सु सेलह संग ॥
छुरिक्कइ घाइ सु तुट्टहि सीस । षिलंत कमंध उठे भर रीस ॥
छं० ॥ १४७८ ॥

चले घर पूर रुधीर प्रवाह । सवै मिलि घुंटि सकेति सु राह ॥
न्निपति कुरूर [1]निभ्भारत पन्न । मनों नटिनी मुष जक्क अगन्नि ॥
छं० १४७९ ॥

मिले दुत मित्त पजून सु याइ । हयौ हिय नेज कुरंमइ राइ ॥
चले सम नेज हयौ असि भ्भार । पन्यौ दुत मित्त मनों तरतार ॥
छं० १४८० ॥

पन्यौ धर राइ पजून समुच्छि । हयौ असि सेर न सीसं उच्छि ॥
चंप्यौ नरसिंघ मनों करि सिंघ । महातन मंडिग सेन कुलिंग ॥
छं० १४८१ ॥

लग्यौ दल सिंघ करष्षि सु तीर । चंपे चव सिंघ सु भग्गिय मीर ॥
पन्यौ नरसिंघ नरव्वर सूर । तुटे सिर आवध जाम करूर ॥
छं० १४८२ ॥

नरसिंह राय की वीरता और उसका मोक्ष पद पाना ।

कवित्त । दाहिम्मै नर सिंघ । रिंघ रष्षी रावत पन ॥
सिर तुट्टै कर कट्टि । चट्टि धायौ धर हर घन ॥
मार मार उच्चरंत । राव वज्जे धारा हर ॥
देव स्तुति करि चार । रंभ अग्गरी कहिरु बर ॥
संकरह सीस लीन्यो जु,कर । दई दरिद्री ज्यौं गहिय ॥
कविचंद निरषि सुभ्भै सिरह । जुगति उगति कवियन कहिय ॥
छं० ॥ १४८३ ॥

मुसलमान सेना का जोर पकड़ना और पज्जूनराय का तीसरे प्रहर पर्य्यंत लड़ना ।

पंग हुकम परमान । अग्र चौकी षुरसानिय ॥
प्रथम जुद्ध किय [2]मीर । हारि किनही नह मानिय ॥

(१) ए. कृ. को. झारत । (२) ए. कृ. को.-मार ।

परे मीर पथ्थार । धार असिवर सिर झारं ॥
सामंतनि लंगरिय । घाइ उट्ठी ग्रह सारं ॥
सम सथ्थ बाघ बघ्घेल न्रिप । अंग ओट कोटह अकल ॥
टारै न मुष्ष सांईय छल । लोह लहरि बाजंत झल ॥
छं० ॥ १४८४ ॥

मुसल्मान सेना के क्षित विक्षित होने पर उधर से बाघराज बघेले का प्रसर करना और इधर से चंदपुंडीर का मौका रोकना ।

परत राइ पज्जून । विसंभय जाम सु बासुर ॥
विषम रुद्र बिथ्थर्यौ । भार लग्गै भर सुब्भर ॥
बघ्घराव बघ्घेल । मार कामोद सेन सम ॥
मिलि चंपिय चहुआन । सूर सुझ्झै न अगम गम ॥
षह धूरि उड्डि धुंधरि धरनि । किलक हक्क बज्जिय विषम ॥
पुंडीर राइ राजह तनौ । समर बार सज्यौ असम ॥ छं० ॥ १४८५॥
बीर मंच उच्चार । धार धाराहर बज्जिय ॥
तिमर तेग निब्बरिय । गुडिल गयनं लफि गज्जिय ॥
उडुपति कमल अलोइ । तेज मंजिय तारा अरि ॥
[1]अनौ भोर अर अकल । सयर लोग उप्पर परि ॥
धर धार धार धुक्किय धरनि । करिय अरिय किननंत धर ॥
पुंडीर राइ चंदह सुचित । [2]अरिन नट्ठ नच्चै सु नर ॥ छं० ॥१४८६॥

मीर कमोद और पुंडीर का युद्ध और पुंडीर का माराजाना ।

बीर मीर कामोद । आय जब पुंडिर उप्पर ॥
विहथ नेज उब्भारि । बाहि निझ्झाहि चंद उर ॥
सेल सैल संमुहिय । हड्ड भंजिय हिय चंपिय ॥
सुधर ढार निभ्भार । बाहि असुराइन कंपिय ॥
पुंडीर राइ आसर सयन । मृत जिम नंचिय समर ॥
दलभंति पंग पुंडीर परि । जय जय सुर सद्दे अमर ॥छं०॥१४८७॥

(१) ए. कृ. को.-अनी मोरं अरि कमल । (२) ए. कृ. को.-अरिय ।

चंद पुंडीर की वीरता।

दूहा ॥ परत राइ पुंडीर धर। तरनि सरन गय सिंधु ॥
गनै जु को पुंडीर सिर। जे धर तुट्टि अनिंधु ॥ छं० ॥ १४८८ ॥

चंदपुंडीर के मरने पर कूरंभराय का धावा करना और बाघ राज और कूरंभराय दोनों का मारा जाना।

कवित्त ॥ परत राइ पुंडीर। गहिव कूरम षग धायौ ॥
बाघ राइ बग्घल। उहित [1]असिवर करि सांह्यौ ॥
त्रिभै त्रिभ्रं त्रिभ्ररिग। तेग झारिय टट्टर पर ॥
मनहु बेद दुअहीन। पिट्टि झल्लरि अग्गै हर ॥
गल बांह लग्गि गह्यौ पिसुन। मीत मेट महा बिच्छुरिय ॥
उर चंपि दोइ कट्टारि कर। मुगति मग्ग लभ्भी घरिय॥छं०॥१४८९॥

कूरंभ के मरने पर उसके भाई पल्हनराय का मोरचे पर आना।

कूरंभह उप्परह। [2]बंधु पाल्हनह आयौ ॥
सिंघ छुट्टि संकलकि। देषि कुंजर घट धायौ ॥
कुंतन तरनि सु मंजि। दट्ठ जम दट्ठ विकस्से ॥
भाला षग्गन छुट्टि। पंग सेना परिनस्से ॥
गजबाज जुड घन नर परिग। पहु कारन दिय प्रान जुअ ॥
सुरनरह नाग अस्तुति करै। बलि बलि बीर भुअंग भुअ ॥
छं० ॥ १४९० ॥

पाल्हन की वीरता और दोपहर के समय उसका खेत रहना।

मध्य टरत विप्पहर। सार बज्यौ प्रहार झर ॥
मेघ पंग उद्दयौ। मार मंडीय अपार सर ॥
भय कूरंभ टट्टीव ।छार भीजै तहां दिज्जै ॥
बर ओडन प्रथिराज। बीर बीरां रस लिज्जै ॥
तन तमकि तमकि असि बर कढ्यौ। असि प्रहार धारह चढ्यौ ॥
पज्जून बंध अह पुच बर। कारन जेम हथ्यह बढ्यौ ॥ छं०॥१४९१॥

(१) ए. कृ. को असिमर। । (२) मो.-पाल्हनराय।

पाल्हन और कूरंभ की उद्दंड बीरता और दोनों का मोक्ष पद पाना।

परे मध्य विप्पहर। पल्ह पज्जून बंध बर ॥
रज रज तन किय हटकि। कटक कमधज्ज कोटि भर ॥
ईस सीस संहऱ्यौ। हथ्थ सों हथ्थ न मुक्कयौ ॥
सूर मुष्यौ सुख हर्यौ। बीर बीरा रस तक्क्यौ ॥
मारंत अरिन कूरंभ झुकि। ते रवि मंडल भेदियै ॥
डोल्यौ न रथ्थ संमुष चल्यौ। किंत्ति कला नह छेषियै ॥
छं०॥ १४९२ ॥

गंग डोलि ससि डोलि। डोलि ब्रह्मंड सक्क डुल ॥
अष्ट थान दिगपाल। चाल चंचाल विचल थल ॥
फिरि रुक्यौ प्रथिराज। सबर पारस पहु पंगिय ॥
च्यारि च्यारि तरवारि। बीर कूरंभति सज्जिय ॥
नंषिय पहुष्प इक चंदनं। इक किंत्ति जंपत बयन ॥
वे हथ्थ दरिद्री द्रव्य ज्यों। रहे सूर निरषत नयन ॥छं० ॥ १४९३ ॥

पज्जूनराय का निपट निराश होकर युद्ध करना।

दूहा ॥ भीर परी पहुपंग दल। भये चलिय पहुराम ॥
तब पजून संमुह करन। मरन क्रत्य किय काम ॥छं० ॥ १४९४ ॥

भुजंगी ॥ भिरें बीर पज्जून यों पंग जानं। बहै षग्ग अघघाट अघघाइ गानं॥
करी छिन्न भिन्नं सनाहं तिजीनं। हयं अंस बंसं द्रुमं बीर कीनं॥
छं० ॥ १४९५ ॥

महा सूर बीरं बुलै क्रूर बानी। चल्यौ धार पज्जून संसार जानी॥
करी अग्ग पच्छं सु टूंनं दिपंबे। भयौ स्वामि सन्नाह बैरी छुडंबे॥
छं० ॥ १४९६ ॥

पहू पंग राइं लग्यौ भान राजं। भुजा दान दीनौ षगं मग्ग साजं॥
बुलै मुष्य कूरंभ सो हन्न राई। मिले हथ्थ बथ्थं रुपे सेस पाई ॥
छं० ॥ १४९७ ॥

कवी जीह जंपै सु पज्जून हथ्थं। इकं भारि उभ्भारि हथ्थं समथ्थं॥
अद्दे अभ्रव पज्जून ओपंम पाई। कु कुब्बी कला जे नहिं दू सभाई॥
छं० ॥ १४९८ ॥

गये तथ्थ नाही तुरी तत्त मत्ते। रह्यौ कुट्टरं मध्य ज्यों जुद्ध रत्ते॥
दिष्यौ सामलं सिंह पुत्तं चरित्तं। वद्दे बांन ज्यौं पथ्थदानं सु रथ्थं॥
छं० ॥ १४९९ ॥

दिषै यों पजूनं मिल्यौ सिंह रुष्षं। भिरंतं बसंतं भयौ ज्यों विरष्षं॥
भई पंच आए प्रथीराज कामं। भए एक घट्टं भिरे तीन जामं॥
छं० ॥ १५०० ॥

पज्जूनराय के पुत्र मलैसी के वीरता और ज्ञान मय वचन।

दूहा ॥ है हम मंगल अब जियौ। मरन सुमंगल काज॥
मरे पुच कों विप्र सुनि। भंजों तामस राज॥ छं० ॥ १५०१ ॥
हम रत्ते कूरंभ रन। मरन सुमंगल होइ॥
पंच पँचीस संवच्छरन। जाहु सु जीवन जोइ॥ छं० १५०२ ॥

कवित ॥ आवरदा सत बरष। अद्ध तामें निसि छिन्निय॥
अद्ध तास बै इद्ध। बाल मझ्झै होइ हन्निय॥
सुतह सोक संकट प्रताप। प्रिय चिय नित संग्रह॥
वट्टि छोह रस कोह। इद्ध दारुन दुष दुग्रह॥
यौं सनों सकल हिंदू तुरक। कौंन पुच को तात बर॥
करतार हथ्थ तरवार दिय। इह सु तत्त रजपूत कर॥छं०॥१५०३॥

मलैसिंह का वीरता और पराक्रम से युद्ध करके मारा जाना।

भुजंगी ॥ तबै देषियं तात पुत्तं चरित्तं। मनों पिष्षियं बाह आयास मित्तं॥
घल्यो हथ्थ बथ्थं दुहथ्थं तनथ्थौ। भिर्यौ हथ्थ बथ्थं रसं बीर धथ्यौ॥
छं० ॥ १५०४ ॥

दिष्यौ एक एकं अनेकं प्रकारं। मनों ब्रह्म माया सु सोयं अपारं॥
कथ्यौ कंध हीनं कमद्धं कलापं। लगी जुग्गिनी जोग माया अलापं॥
छं० ॥ १५०५ ॥

(१) ए. कृ. को.-सुमथ्थं। (२) मो.-तन

तुटै अंत पायं उरभ्भं सरीरं। मनों नाल कट्टै म्रिनालं 'गँभीरं।
तुष्यौ बाज राजं विराजै टुकूलं। मधू माध वै जानि केसू सु फूलं॥
छं० ॥ १५०६ ॥

उरं बान मुष्यं अघानं प्रमानं। मनों षत षायै सु धावै क्रिसानं॥
कह्यौ सब्ब सामंत जै जै मलैसी। दुवं बंस तारै सुअं माल तैसी॥
छं० ॥ १५०७ ॥

लगे घाव सट्ठिं परे धीर षेतं। उपाऱ्यौ सु विप्रं भयौ सो अचेतं॥
पऱ्यौ यौं पजूनं सु पुत्तं उचाऱ्यो। भयो इत्तने भान अस्तमित चाऱ्यौ॥
छं० ॥ १५०८ ॥

उधर से रावण का कोप करके अटल रूप से युद्ध करते हुए आगे बढ़ना।

कवित्त ॥ तब रावन नं टरै। सिर न चंपिय चतुरंगी॥
हस्ति काल जमजाल। उठे गज झंपि मुषंगी॥

पंग सेना की ओर से मतवार हाथियों का झुकाया जाना।

पीलवान रायन्न। दई अंकुस गज मध्यं॥
सुभर सीस गज झरी। करी आरूढ़ सु तथ्यं॥
²उम्मड़ मीर आयो अगह। कूह कहर पच्छै फिरिग॥
मै मत्त कोइ अप्पै अषन। अप्प सेन उप्पर परिग॥छं०॥१५०९॥

सामंतों का हाथियों को विचला देना जिससे पंग सेना की ही हानि होना।

अप्प सेन उप्परै। परे गजराज काज अरि॥
सेन पंग बिथ्थुरी। मीर उच्छारि झारि धर॥
सर समूह परि पील। बान मिट्ठी मंबानी॥
करी सम्ह कर बट्टि। मुष्य दीनं चहुआनी॥

(१) ए. कृ. को.-सरीरं। (२) ए. कृ. को.-उमडे पीर अग्गो अगह।

संमुह्यौ पग्ग सामंत सब। उररि सेन उप्पर परिय ॥
धनि धनि नरिंद सामंत सह। असी लष्ष सम सों भरिय ॥
छं० ॥ १५१० ॥

सामंतों के कुपित हो कर युद्ध करने से पंग सेना का छिन्न भिन्न होना इतने में सूर्य्यास्त भी हो जाना।

भुजंगी ॥ मिले लोह हथ्थं सुबथ्थं हँकारे। उड़ै गेंन लग्गैं सकं सार झारे ॥
कटै कंध कामंध संधं निनारे। परें अंग रंगें मनों मत्तवारे ॥
छं० ॥ १५११ ॥

झरं संभरी राव मो सारझारे। जुरे मल्ल हल्लै नहीं ज्यौं अषारे॥
जबै हार मन्ने नहीं को पषारे। तबें कोपियं कन्ह मैं मत्त वारे ॥
छं० ॥ १५१२ ॥

जबै अप्पियं मार हथ्थं दुधारे। फटै कुंभ झूमंत नीसान भारे ॥
गहे सुंड दंतीन दंती उभारे। मनों कंदला कंदु (१)भील उषारे ॥
छं० ॥ १५१३ ॥

परे पंगुरें पंडुरे मीर सीसं। मनों जोगजोगीय लागंत रीसं ॥
बहै बान कम्मान दीसै न भानं। भमै गिद्धनी गिद्ध पावै न जानं॥
छं० ॥ १५१४ ॥

लगे रोह रत्ते अरत्ते करारं। मनों गज्जियं मेघ फट्टै पहारं ॥
दई कन्ह चहुआन अरि पील सीसं। करी चंद कव्वी उपम्मा जगीसं॥
छं० ॥ १५१५ ॥

तितं संग संधी महा पील मत्तं। मनों षंचियं द्रोन बरबाय पुत्तं॥
किधों षंचियं राम हथिना पुरेसं।किधौं षंचियं मथन गिरिसुर सुरेसं।
छं० ॥ १५१६ ॥

किधों षंचियं कन्ह गिरि गोपिकाजं। धरी सीस ऐसी सुभद्दं विराजं।
(२)रूरै षेत रत्तं सुरत्तं करारं। सुरै कंठ कंठी न लागै उभारं॥
छं० ॥ १५१७ ॥

मुरं स्रोन रंगं पलं पारि पंकं। वजे वंस नेसं सुवेसं करंकं ॥

(१) ए.-नीलं। (२) ए० कृ. को.-रुवै

द्रुमं ढाल ढालं सु लालं सुबेसं। गए हंस नंसी मिले हंस बेसं॥
छं० १५१८॥

परे पानि जंघं धरंगं निनारे। मनों मच्छ कच्छा तिरंतं उभारे॥
सिरं सा सरोजं कचं सासि वाली। गहै अंत गिद्धी सु सोहै मनाली॥
छं० ॥ १५१९ ॥

तटं रंभ 'थम्भं भरत्तं ब चीरं। कितं स्याम सेतं कितं नील पीरं॥
बरै अंग अंगं सुरंगं सु भट्टं। जिते स्वामि काजै समप्पै जु घट्टं॥
छं० ॥ १५२० ॥

तिते काल जम जाल हथ्थी समानं। हुअै इत्तनै जुद्ध अस्तमित भानं॥
छं० ॥ १५२१ ॥

कन्ह के अतुलित पराक्रम की प्रशंसा।

कवित्त ॥ तब सु कन्ह चहुआन। गहिय करवान रोस भरि॥
असिय लष्ष चिन गनिय। हनत हय गय पय निंद्दरि॥
करत कुंभस्थल घाव। चाव ववगुन धरि धीरह॥
तुबक तीर तरवार। लगत संक्यौ न सरीरह॥
कहि चंद पराक्रम कन्ह कौ। दिय ढहाय गेंवर समर॥
उछरंत छिछ श्रोनित सिरह। मनहु लाल फरहरि चमर॥
छं० ॥ १५२२ ॥

सारंगराय सोलंकी का रावण से मुकाबला करना और मारा जाना।

सोलंकी सारंग। बीर रावन आरुझिय॥
दुअ सु हथ्थ उत्तंग। तेग लंबी सा लुझिय॥
दो मरद्दह आरुड्ड। रुद्ध भानं भिल्लोरिय॥
टोप फुट्टि सिर फुट्टि। छिछ फुट्टिय कविलोरिय॥
निल वट्टि फुट्टि पलवक्ष वन। कै ज्वाल माल पावक पसरि॥
तन भंग घाय अरि संग करि। पत्ति पहुर चालुक्क परि॥
छं० ॥ १५२३ ॥

(१) ए. कृ. को. रथ्थं।

सोलंकी सारंग की वीरता ।

ब्रह्म चालुक ब्रह्म चार । ब्रह्म विद्या वर रष्षिय ॥
केस डाभ अरि करिय । रुधिर पन पच्च विसष्षिय ॥
षग्ग गहिग [1]अंगुलिय । नाग गहि नासिक तामं ॥
धरनि अषर दुहं श्रवन । जाप जापं मुष रामं ॥
सिर फेरि षग्ग सम्ही धऱ्यौ । दुअन तार मन उल्हसिय ॥
अष्टमी जुद्ध सुक्रह अथमि । सुर पुर आ सारँग बसिय ॥
छं० ॥ १५२४ ॥

सायंकाल पर्य्यंत पृथ्वीराज के केवल सात सामंत और पंगदल के अगनित बीरों का काम आना ।

भुजंगी ॥ परे सत्त सामंत सा सत्त कोटं । षलं चंपियं बीर भै सोम ओटं॥
लगी अंग अंगं कहूं पंग [2]मध्यं । किधौं वज्र छुट्टै कि वज्जीय हथ्यं॥
छं० ॥ १५२५ ॥

वहै गग्ग मग्गं प्रचारे सु बीरं । झलै षग्ग नीरंजिनं मुष्य नीरं॥
लरै सत्त बीरं दिष्षै सब्ब थट्टं । हरी एक माया करै घट्ट घट्टं ॥
छं० ॥ १५२६ ॥

षगं मग्ग सेना जुपंगं हलाई । मनों बोहथी मारुतं कै रुलाई ॥
दुती देषतें ओपमा कव्वि पाई । मनों बीर चक्रं कुलालं चलाई ॥
छं० ॥ १५२७ ॥

भषै काइ पंषी किअग्गी कि दाही । तुटै धार मग्गं लियै अंग लाही॥
वरै काहि दूरं शिवं माल काकी । ढुढै ब्रह्म लोकं सलोकं सुताकी॥
छं०॥ १५२८ ॥

ननं देव ओपम्म सी धन्नि जाकी । लगी नाहि माया तजे तंत ताकी॥
वजे लोहि आनं फिरी ग्रेह मग्गी । तिनं तेज छुट्टं सुरं ग्रेह भग्गी॥
छं०॥ १५२९॥

---

(१) मो. अंगुरिय । (२) मो.-सध्थं ।

दूहा ॥ भान विहान जु देषि कै। पिषि सामंत सु सूर ॥
 षिनुकन धीरं तनु धरहि। तीरय इक्क्यौ क्रूर ॥
 छं० १५३० ॥

गाथा ॥ निसि गत बंछिय भानं। चक्की चक्काइ सूर साचित्तं ॥
 विधु संजोग वियोगी। कुमुद कली कातरां नांचं ॥
 छं० १५३१ ॥

प्रथम दिन के युद्ध में पंगदल के मृत मुख्य सरदारों के नाम।

कवित्त ॥ प्रथम मार सामन्त। सहिय मीरन इत मित्तिय ॥
 बाघ राव बघेल। हेल इन उप्पर वित्तिय ॥
 उभय उमगि गजराज। काज किन्नौ प्रथिराजह ॥
 इकति सुंड आषारि। एक [२]मिंडिग पग पाजह ॥
 पुंतार डरह कट्टारि कर। परिग षित्त तेषिन न जिय ॥
 इह जुड्ड मच्चि चहुआन सों। प्रथम केलि कमधज्ज किय ॥
 छं० ॥ १५३२ ॥

मृत सात सामन्तों के नाम।

दाहिम्मौ नरसिंघ। पर्यौ नागौर जास धर ॥
 पर्यौ गंजि गहिलौत। नाम गोयंद राज बर ॥
 पर्यौ चंद पुंडीर। चंद पिष्यौ मारंतौ ॥
 सोलंकी सारंग। पर्यौ असिवर झारंतौ ॥
 क्रूरंभ राव पाल्हन दे। बंधव तीन सु कट्टिया ॥
 कनवज्ज रारि पहिलै दिवस। सौमेसत्त निघट्टिया॥छं०॥१५३३॥

पंगदल के मारे गए हाथी घोड़े और सैनिकों की संख्या।

दूहा ॥ उभै सहस हय गय परिग। निसि निग्रह गत भान ॥
 सत्त सहस अस मीर हनि। यल्ल बिंच्यौ चहुआन ॥ छं० ॥ १५३४ ॥

(१) ए.-कृ. को.-टुटै। (२) मो-मंडिग।

जैचन्द के चित्त की चिन्ता।

कवित्त॥ चित्त [1]चिंता कमधज्ज। दैषि लग्गी चहुआनं॥
प्रथम जुद्ध दरबार। सूर सद्धे असमानं॥
घटिय मत्त दिन उद्ध। जुद्ध लग्गे सु महाभर॥
अस्त काल [2]सम मीर। परे धर सूर अप्प धर॥
सामंत सत्त प्रथिराज परि। करे क्रम्म अतुलित्त मह॥
प्रथिराज तरनि सामँत किरनि। थपी तेज आरेन यह॥
छं० ॥ १५३५ ॥

जैतराव का चामण्डराव के बन्दी होने पर पश्चात्ताप करना।

पज्जूनह उप्परह। राज प्रथिराज सँपतौ॥
गरुअ राय गोयंद। घाव अघाइ सँसतौ॥
चाइ चित्त चहुआन। कन्ह किन्नौं कर उभ्भौ॥
रा रड़ी ठिल्लरीय। आज लग्गौ मन दुभ्भौ॥
धाराधि नाथ धारंग धर। जैत जीत कीनौ रुदन॥
चामंड डंस मुक्यौ सुग्रह। रष्यन छिति छत्ती हदन॥छं०॥१५३६॥

अष्टमी के युद्ध की उपसंहार कथा।

दूहा॥ जिहि ग्रह निग्रह पथ्थिवर। बँधि सनाह सयन्नि॥
मन बँधिय अच्छरि बरन। बंधि अँग सँजोगिन्नि॥
छं० ॥ १५३७ ॥

पद्धरी॥ बंधे सनाह न्रप सेन कीन। सोगी उपम्म मनु रंभ दीन॥
आवत्त पंग बज्जे निसान। भै चितन लग्गि बर चाहुआन॥
छं० ॥ १५३८ ॥

तिन सुनी जानि पंगुर नरेस। जनु मत्त जुद्ध जुग्गिनिपुरेस॥
जनु पंग बिषम धुक्किय सयन्न। जुध सभें बीर विष पियन अन्न॥
छं० ॥ १५३९ ॥

(१) ए. कृ. को.-मंस। (२) ए. कृ. को.-तध्य।

आवृत्त भूमि रनहकि बीर। कंपंत वप्प, कायर अधीर॥
हक्कंत [1]अप्प सो पंग बीर। सुनि श्रवन हास नारद गंभीर॥
छं० ॥ १५४० ॥

उर ग्रहन बास दंपति सनाह। दिषि उदित पत्ति रत्तीस दाह॥
पहुपंग बीर संबर सु ताम। मनु बंधिय सेन रति पत्तिकाम॥
छं० ॥ १५४१ ॥

सोभै सनाह उज्जल अवभ्भ। चमकंति भान द्रप्पनति मभ्भ॥
निस गयति अद्ध ससि उदित बीर। बज्जे सु बज्जि मद्यत सुमीर॥
छं० ॥ १५४२ ॥

पृथ्वीराज की वाराह और पंगराज की पारधी से उपमा वर्णन।

कवित्त ॥ अद्ध रयनि चंदनिय। अद्ध अग्गैं अंधियारिय॥
भोग भरनि अष्टमिय। सुक्क वारह सुदि रारिय॥
च्यारि जाम अंगलिय। राव निसि निंदन घुंच्यौ॥
थल विंच्यौ कमधज्ज। रच्यौ कंदल आहुच्यौ॥
दस कोस कोस कनवज्ज तैं। कोस कोस अंतर अनिय॥
वाराह रोह जिम पारधी। इम रुक्यौ संभरि धनिय॥ छं०॥१५४३॥

रोह राह वाराह। भ्झार सामंत डढारे॥
ढिल्लो ढार जुझार। पंच खूरति रषवारे॥
रन सिंघार भुझ्झार। उड्ड बड्डा उच्चारे॥
पारथ [2]बर पच्छियै। सत्त स्वामित्त सु धारे॥
पारस विलास रा पंग दल। धन जिम धर बंबरि दवन॥
संग्राम धाम धुंधरि परिय। त्रिसि त्रिघात तारह छवन॥
छं० ॥ १५४४ ॥

अंधेरी रात में मांसाहारी पशुओं का कोलाहल करना।

चंद्रायना ॥ तारक मंत प्रगट्टिय। यट्टिय पंषियन॥
अंषिन अद्ध उरद्धन। अद्धन निंद मन॥

(१) ए.-कृ-को. तध्य। (२) ए. कृ. को.-बीर।

ढिल्लिय ढाल कुलाल। कुलाहल किन्नरन।
ढिल्लिय नाथ सु हाथ। समथ्थिन अथ्थियन ॥ छं० ॥ १५४५ ॥
दूहा ॥ अह अवन्निय चंद किय। तारस मारू भिन्न ॥
पलचर रुधिचर अंस चर। करिय रवन्निय रिन्न ॥ छं० ॥ १५४६ ॥

सामंतों का कमल व्यूह रचकर पृथ्वीराज को बीच में करना।

कवित्त ॥ चावद्दिसि रषि सूर। मझि रष्यौ प्रथिराजं ॥
ज्यौं सरद काल रस सोष। मझि ससि [1]जुत्त विराजं ॥
ज्यौं जल मझित जोत। तपति वड़वानल सोहं ॥
ज्यौं [2]कल मझ्झे अमन। रूप मधि रत्तौ मोहं ॥
इम मझि राज रष्यौ सुभर। नरन सकल निंदो सु बर ॥
सब मुष्य पंग रुक्यौ सु बर। सो उप्पम जंप्यौ सु गिर॥छं०॥१५४७॥

पृथ्वीराज का प्रिया के साथ सुख से शेष रात्रि बिताना।

चंद्रायना ॥ मिच महोदधि मझ्झ। दिसंत ग्रसंत तम।
पथिक बधू पय द्रष्टि। अहुट्टिय चग जिम ॥
जुवजन जुवतिन गंजि। सुमंत अनंग लिय ॥
जिम सारस रस लुद्ध। सुमुद्धह मझ्झ तिय ॥ छं० १५४८ ॥
चांद्रायन ॥ पह[3] चारु रुचि इंद इंदीवर उद्दयौ।
नव [4]विहार नवनेह नवज्जल रुद्दयौ ॥
भूषन सुभ्भ समीपनि मंडित मंड तन।
मिलि म्रदु मंगल कौन मनोरथ सब्ब मन ॥ छं० ॥ १५४९ ॥
श्लोक ॥ जितं नलिनीं तितं नीरं। जितं नलिनी [5] जलं तितं ॥
जतो गृह ततो गृहिणी। जत्र गृहिणीं ततो गृहं ॥ छं० ॥ १५५० ॥

सब सामन्तों का सलाह करना कि जिस तरह हो इस दंपति को सकुशल दिल्ली पहुंचाना चाहिए।

दूहा ॥ मिलि मिलि बर सामंत सह। न्रप रष्षन बिचार ॥

(१) मो.-जुद्ध। (२) ए. ह. को.-कमल। (३) मो. पंह।
(४) मो.-विरह्य। (५) ए. कृ. को-नीरं।

चलै राज निज तरनि सम। इहै सुमत्तह मार ॥ छं० ॥ १५५१ ॥

जैतराय निढ्ढुर और भौंहा चंदेल का विचारना कि नाहक की मौत हुई।

कवित्त ॥ रा निड्डुर राजैत। राव भौंहा भर चिंतिय ॥
सों अरिष्ट उप्पज्यौ। मरन अपकित्ति सुनंतिय ॥
छचछंदरि ग्रहि अप्प। ग्रहन उग्रह को मुझ्झह ॥
मरि छट्टौ कैमास। मंत जरिगय ता मझ्झह ॥
न्रिप कियौ सुभयौ इन भट्ट सथ। तट्ट मेष राजन कियौ ॥
परपंच पंच बंधहु सुपरि। जोगिनि पुर जाइ सुजियौ ॥
छं० ॥ १५५२ ॥

आकाश में चाँदना होतेही सामंतों का जाग्रत होना और राजा को बचाने के लिये व्यूह वद्ध होने की तैयारी करना।

राजनिद्रि कै काज। सूर जग्गे जस पहरैं ॥
षलह चोर लगि आय। धम्म लज्जा रषि गहिरै ॥
छुध पिपास निद्रान। जानि हवि दीन पछित्तिय ॥
पंच इंद्री सुष बंधि। भए जागिंद सु गत्तिय ॥
जहं लगि निद्रि यथ रचन रहै। तहं लग्गि सच, पर बीर उत ॥
सब मिलिरु सूर पुच्छहि सुमति। अप्प रहै कहुँ न्रपति ॥
छं० ॥ १५५३ ॥

पति वर वर चहुआन। काम ग्रहन पंगी भय ॥
हेमादक उनमाद। मुक्कि मोहन सोषन लय ॥
हय गय नर सर नारि। गोर चिहुकोद चलाइय ॥
लाज कोट चहुआन। दुहुन दंती दुहुलाइय ॥
मन रुक्कि मार दल रुक्किदल। उग्गि चंद कविचंद कहि ॥
सामंत सूर उच्चारि तब। कही मंत फुनि प्रत्त लहि ॥ छं० ॥१५५४॥

मिले चंद सामंत। मंति सा धृम्म विचारिय ॥
इह सुवेह मंगलिय। होइ मंगल अधिकारिय ॥
मुगति भुगति अप्पियै। जुगति लभ्भै न जुगंतह ॥
जस मंगल तन होइ। काम मंगल सुभ जै ग्रह।
कढ्ढियै स्वामि तन वढ्ढियै। चढ्ढियै धार धारह धनी ॥
मंगलन होय इह अन्न कौ। पति रष्षै पति अप्पनी ॥ छं०॥१५५५॥

गुरुराम का कन्ह से कहना कि रात्रि तो-बीती अब रक्षा का उपाय करो।

दूहा ॥ मानि मंत सामंत सह। चलिग बोलि दुजराज ॥
स्वामि ध्रम्म पत्तिय सु पति। चलि पुच्छन प्रथिराज ॥छं० ॥१५५६॥
कन्न लग्गि कहि कन्ह सौं। तकित राय अनुवत्त ॥
निसा अप्प ग्रह कियन कछु। प्रात परै इह [1]क्त्त ॥छं०॥१५५७॥

कन्ह का कहना कि औंघट से निकल चलना उचित है।

कवित्त ॥ कहै कन्ह तम सुद्ध। मूढ़ राजन जिनि[2]संगह ॥
उड्ड मरन तैं डरह। काइ भग्गहु अनभंगह ॥
कहिय राव पज्जून। सोच चित्तक द्रह चित्तिय ॥
असुर बुद्धि असुरिय। भट्ट मंडन किय कित्तिय ॥
मारुडिय ग्रह्यौ अंमृत मितिय। विषम विष्ष नल उत्तरै ॥
[3]अवघट्ट घाट नंघै न्त्रपति। दैव घाट संमुह करै ॥ छं०॥१५५८॥
जिहि देवल भर कोट। सूर सामंत थंभ धर ॥
कित्ति कलस आरुहिय। नीम जीरन,जुग्गह कर ॥
सार पट्ट पट्टयौ। चिच मंड्यौ सु उकति अप ॥
धस्यौ पुहुप पहुपंग। करौ पूजा सु बीर जप ॥
सा भ्रम्म बचन लग्गौ चरन। देव तेव प्रथिराज हुअ ॥
वामंग अंग संजोगि करि। लच्छि रूप मंड्यौ सु धुअ ॥
छं० ॥ १५५९ ॥

(१) मो.-वत्त। (२) मो.-संग्रह। (३) ए. आवट्टनाव।

राजा पृथ्वीराज का सोकर उठना।

दूहा ॥ सुनी मत्त कनवज्ज नृपति । जगी संजोगि निवारि ॥
वीर रोस उठ्यौ न्त्रपति । मनु रजि रुद्र सार ॥ छं० ॥ १५६० ॥

पृथ्वीराज से सामंतों का कहना कि आप आगे बढ़िए हम एक एक करके पंग सेना को छेड़ेंगे।

कवित्त ॥ मिलिय सब्ब सामंत । बोल मांगहिति नरेसर ॥
आप मग्ग लग्गियै । मग्ग रष्षै इक इक भर ॥
इक इक जूझंत । दंति दंतन ढंढोरहि ॥
जिके पंग रा भीछ । मारि सारिन मुष मोरहि ॥
इम बोल रहै कल अंतरै । देहि स्वामि पारथ्थियै ॥
अरि असी लष्ष की अंग मैं । बिना राइ सारथ्थियै ॥छं०॥१५६१॥

सामंतों का कहना कि सत्तहीन क्षत्री क्षत्री ही नहीं है।

कहै सूर सामंत । सत्त छंडै पति छिज्जै ॥
पत्ति छिज्जंत छिज्जंत । नाम छिज्जत जस छिज्जै ॥
जस छिज्जत छिज्जै मुगति । मुगति छिज्जत क्रम बढ्ढै ॥
क्रम बढ्ढत बढ्ढै अकिति । अकिति बढ्ढहि नूक दिज्जै ॥
दिज्जियै नूक कढ्ढन कुमति । कारनो पति तैं जान भर ॥
छिचो निछित्ति सत गरुअ निधि । सत छंडै छचो निगर ॥
छं० ॥ १५६२ ॥

सामन्तों का कहना कि यहां से निकल कर किसी तरह दिल्ली जा पहुंचो।

समद सेन पहुपंग । धार आवध नभ लग्गिय ॥
चढि वो हिथअत सामि । पैंज लगि अंकिन मग्गिय ॥
स्वामि सुष्ष भुग्गियै । भ्रित भुग्गै जु मुगति रस ॥
जगि जीरन प्रथिराज । गिल्यौ सष्षीज जंप जस ॥
मिष्टान पान भामिनि भवन । चूक कह्यौ जू उप्पनौ ॥

चहुआन नाथ जोगिनिपुरह। धर रष्षै बर अप्पनौ ॥
छं० ॥ १५६३ ॥

राजा का कहना कि मरने का भय दिखाकर मुझे क्यों डराते हो और मुझ पर बोझ देते हो।

मति घट्टी सामंत। मरन भय मोहि दिषावहु, ॥
जम चिट्ठी बिन कहन। छोइ सो मोहि बतावहु ॥
तुम गंज्यौ भर भीम। तास ग्रब्बह मैमंतौ ॥[1]
मं गोरी साहाब। साहि सरबर साहंतौ।
मैरैंज सुरन हिंदू तुरक। तिहि सरनागत तुम करहु ॥
बुझियै न सूर सामंत हो। इतौ बोझ अप्पन धरहु ॥ छं०॥१५६४॥

पृथ्वीराज का स्वयं अपना बल प्रताप कहना।

राव सरन रावत्त। जदहि धर पायै आवै ॥
राव सरन रावत्त। जदहि कछु पटौ लिषावै ॥
राव सरन रावत्त। काल दुकाल उबारहि ॥
राव सरन रावत्त। जदहि कोइ [1]अनिबर मारहि ॥
रावत्त सरन नित राव कै। कहा कथन काहावता ॥
संग्राम बेर मुझ्झै सुभर। राव सरन तदि रावता॥छं०॥१५६५॥
मैं जित्तौ गढ द्रुग्ग। मोहि सब भूपति कंपहि ॥
मोहि कित्ति नव षंड। पहुमि बंदी जन जंपहि ॥
मैं भंजे भिरि भूप। भिरवि भुजदंड उपारे ॥
छोंब कहा मुष कहौं। कोंन षग षत विथारे ॥
मैं जित्ति साहि सुरतान दल। मुहि अमान जानै जगत ॥
चहुआन राव इम उच्चरै। इं देष्यौ कब कौ भगत ॥छं०। १५६६॥

सामंतों का कहना कि राजा और सेवक का परस्पर का व्यवहार है। वे सदा एक दूसरे की रक्षा करने को बाध्य हैं।

बन राषै ज्यौं सिंघ। बिंझ बन राषहि सिंघहि ॥

(१) मो.-आसिवर।

धर रष्षै यौं भुअंग। धरनि रष्षैति भुअंगह ॥
कुल रष्षै कुलबधू। बधू रष्षैति अप्प कुल ॥
जल रष्षै ज्यौं हेम। हेम रष्षैति सब्ब जल ॥
अवतार जबहि लगि जीवनौ। जियन जम्म सब आवतह ॥
रावत्त तेहरा रष्षनौ। राजन रष्षहि रावतह ॥ छं०॥ १५६७ ॥

सामंतों का कहना कि तुम्हीने अपने हाथों अपने बहुत से शत्रु बनाए हैं।

तें रष्यौं रा भान। षान रष्यौ हूसेनं ॥
तें रष्यौ पाहार सुरनं किन्नर सो मेनं ॥
तें रष्यौ तिरहुंति। कढ्ढि तोंअर तत्तारी ॥
तें रष्यौ पंडुयौ। डंडि नाहर परिहारी ॥
रष्षनह ढोल ढिल्ली सुरह। गौर भान भट्टी मरन ॥
चहुआन सुनौ सोमेस सुअ। अरिन अब्ब दिज्जै मरन ॥छं०॥१५६८॥

सामंतों के स्वामिधर्म की प्रभुता ॥

अति अग्गें हठ परहि। चोट चिहु रत्तन घल्लहि ॥
परे लेहि परि गाहि। दाह दुअननि उर सल्लहि ॥
पहु डोलंत पछै परंत। पाय अचल्ल चलहि कर ॥
अंत असन सिर सहहि। भाव भल पनति लहहि भर ॥
बरदाय चंद चिंतनु करै। धनि छत्री जिन भ्रंम मति ॥
मुक्कहि न स्वामि संकट परें। ते कहियै रावत्त पति ॥ छं०॥१५६९॥

पुनः सामंतों का कहना कि "पांच पंच मिल कीजे काज हारे जीते नाहीं लाज" इस समय हमारी कीर्ति इसीमें है कि आप सकुशल दिल्ली पहुंच जावें।

पंचति रष्षहि पास। पंच धरणी धन रष्षहि ॥
पंच पृच्छि अनुसरहि। पंच तत्तै जिय लष्षहि ॥

पंच भीत वंचियै। पंच आदर अमनाइत॥
पंच पंच धर तान। कहनि मंडियै बाहन जति॥
चहुआन राइ सोमस सुअ। इमग तेग बहै सुकिति॥
अनुसरिय लाज राजन रवन। सुनौ राज राजंन पति॥
छं० ॥ १५७०

दूहा॥ राज विमुष्यौ लोक सुनि। धुनि सामंत अनंत॥
बंक दौह बंछै न को। सुर नर नाग [1]गनंत॥ छं० ॥ १५७१ ॥

कवित्त॥ तें रष्यौ [2]हिंदवान। गंजि गोरी गाहंतौ॥
तें रष्यौ जालौर। चंपि चालुक्क चाहंतौ॥
तें रष्यौ पंगुरौ। भीम भट्टी दै मथ्थै॥
तें रष्यौ रनथंभ। [2]राय जद्दों सै हथ्थौ॥
इहि मरन किति रा पंग की। जियन किति रा जंगली॥
पहु परनि जाई ढिल्ली लगै। तौ होइ घरघ्घर मंगली॥छं०॥१५७२॥

सुनौ सूर सामंत। सूर मंगल सुपत्ति तन॥
लाज वधू सो पत्ति। राज सोपत्ति सूर घन॥
कबि बानौ सोपत्ति। जोग सोपत्ति ध्यान तरु॥
भिचापति सोपत्ति। पत्ति बंधै सो आतम॥
हम पत्ति पत्ति न्रप जो चलै। तो पति हम [3]पुज्जै रली॥
सा भ्रम जु पंज सामंत भर। रक्के पंगह मंजाली॥छं०॥१५७३॥

पुनः सामंतों का कथन कि मर्दों का मंगल इसी में है कि पति रख कर मरें।

सूर मरन मंगली। स्याल मंगल घर आयैं।
वाय [4]मेघ मंगली। धरनि मंगल जल पायैं॥
क्रियन लोभ मंगली। दान मंगल कछु दिन्नै॥
सत मंगल साहसी। मंगन मंगल कछु लिन्नै।
मंगली बार है मरन की। जो पति सयह तन षंडियै॥
चढि षेत राइ पहु पंग सों। मरन सनंमुष मंडियै॥छं०॥१५७४॥

(१) ए. कृ. को गार्वंत। (२) ए. कृ. को. सुंइ।
(३) ए. कृ. को.-पुरजै रली। (४) मो. मंगाक।

मरन दिये प्रथिराज। इसें छचिय कार [1]पट्टिहि ॥
मीच लगी निय पाइ। कहें आयौ घर [2]बैठहि ॥
पंच पंच सौ कोस। कहै दिल्ली अस कथ्थें ॥
एक एक सूरिमा। पिष्षि बाइते बथ्थें ॥
घर घरनि [3]परनि रा पंग की। पहुंचै हुहै बड़प्पनौ ॥
जब लग्गि गंगधर चंद रवि। तब लगि चलै कविप्पनौ ॥
छं० ॥ १५७५ ॥

कहै राज प्रथिराज। मरन छिचिय सत लिद्धौ ॥
जस समूह गुर सद्द। महिम करि मानन रिद्धौ ॥
कथ समूह उच्चरै। चिच कीजै कवि रूपं ॥
कलस मरन मन चढ़त। पार पल में सो जूपं ॥
छचीन मरन मारन सुरब। नथ्थि सु मिट्टन काल बर ॥
जीरन्न जग्ग संदेस बल। ढिल्ली हंदे ढोल गिर ॥ छं० ॥ १५७६ ॥

राजा का कहना कि मैं तो यहां से न जाऊंगा रुक करके लडूंगा।

सुनौ सूर सामंत। जियन अहि इहु काल पुर ॥
अधम अकित्ती सुष्ष। सा मनौ ग्रह दंड दुर ॥
मोह मंद बर जगत। भए विधि चिच चिताही ॥
अचित होइ जिहि जीत। पुन्न जित देषि पियाही ॥
नन मोह छोह दुष सुष्ष [4]तन। तौ जर जीवन हथ्थ भुत ॥
पहु पंग जंग मुक्के नहीं। जौ जग जीवहि एक सत॥ छं०॥ १५७७॥

सामंतों का उत्तर देना कि ऐसा हठ न कीजिए।

दूहा ॥ राजन मरन न इंछियै। ए अत बंछै नित्त ॥
सिर सट्टै धन संग्रहै। सो रष्षै छच पत्त ॥ छं० ॥ १५७८ ॥

कवित्त ॥ तन बंटन दुष अपन। किंत्ति विय भाग न होई ॥
पुच त्रिया सेवक सु। बंध कर भुग्गवै जोई ॥

(१) ए. कृ. को.- बिट्टहि, पेंटहि। (२) मो.-बट्टहि। (३) ए.-सरनि
(४) ए. कृ. को.-तत।

सुबर सूर सामंत। जीति भंजी दल पंगं ॥
तुम समान छची न। भिरी भारथ्य अभंगं ॥
इन सुभर सूर पच्छै मरन। कित्ती रस मुक्कै न न्रप ॥
रजपूत मरन संसार बर। ग्रह्म बात बोलै न अप ॥छं०॥१५७९॥

पृथ्वीराज का कहना कि चाहे जो हो परंतु मैं यहां से भाग कर अपकीर्ति भाजन न बनूंगा।

बैर ब्याह मंगलीय। बेह मंगल अधिकारिय ॥
मो कित्ती गर भग्गि। पच्छ भग्गौ जम भारिय ॥
बीर मात गावही। अप्पि प्रिय अछित उछारिय ॥
मुत्ति जुथानक भग्गि। करौ कानिन उद्दारिय ॥
कुट्टी प्रजंक जस मुगति किय। काम मुक्कि किप्ति सु मुकी ॥
जौ भंग होइ निसि चीय करि। रहित मौन बर भ्रंम की ॥
छं०॥ १५८० ॥

जा कित्ती कारनह। म्रत्त मंग्यौ भीषम नर ॥
जा कित्ती कारनह। अस्ति दद्धीच देव बर ॥
जा कित्ती कारनह। देव दुर्जोधन मानी ॥
जा कित्ती कारनह। राम बनबास प्रमानी ॥
कारन्न कित्ति [2]दीलीप न्रप। सिंघ मंग गोदान दिय ॥
मम मुक्कि कित्ति इच्छ्इ रतन। सत्त बरष जीवै न जिय॥छं०॥१५८१॥

सामंतों का कहना कि हठ छोड़ कर दिल्ली जाइए हम पंग सेना को रोकेंगे।

मरन दियै प्रथिराज। कित्ति भज्जै जु अप्प कर ॥
पंग कित्त सिंचवय। अपै बल्ली सु बट्ट बर ॥
जोगि नेस अच्छियै। छंडि मंगल करि मंगल ॥
एक एक सामंत। पंग रुद्धंत आइ दल ॥
मानुच्छ देह [3]दुल्लह न्रपति। फुनि देह राजन्न मिलि ॥

(१) ऐ. कृ. को.-इछै। (२) मो.-दिल्लिय नपति। (३) मो.-दुल्लभ।

रजपूत द्रोह भज्जत लगै । हम रुंधै निसि पंग 'बल ॥छं०॥१५८२॥

पृथ्वीराज का कहना कि यहां से निकल कर जाना कैसा और शरीर त्याग करने में भय किस बात का ।

अरे अमंत सामंत । मोहि भज्जंत लाज अल ॥
कांम अग्गि प्रज्जरै । लोभ आधीन बाइ बल ॥
निस दिन षढ़े प्रमान । दुहुं कन्ना परि सुझ्झी ॥
इह लग्गी कंल पंक । कत्र जिहि जिहि वर बुझ्झी ॥
को राव रंक सेवक कवन । कवन न्रपति को चिक्करै ॥
ढिल्लीव दिसा ढिल्लिव न्रपति । पंग फौज धर उप्परै ॥छं०॥१५८३॥

दूहा ॥ सो सति सत न्रप उच्चरै । परें लभ्भ इह ग्रेह ॥
जिहि वर सुब्बर सोउ न्रप । फल भुग्गवै सु तेह ॥छं०॥ १५८४ ॥

चौपाई ॥ सुनी देह गत जीव प्रमानं । जीरन ज्यों बंसन फल मानं ॥
जीरन बस्त्र देह ज्यौं छंडै । त्यौं ग्रह छंडि पर त्तिन मंडै ॥
छं०॥ १५८५ ॥

सामंतों का मन में पश्चाताप करना ।

कवित्त ॥ कहै सूर सामंत । राज इह बत्त न आइय ॥
जौ भ्रम सतु करि रिदै । बचन मद्धि मन जाइय ॥
कोट हरन द्रग रंजन । चूक कबहुं न नाइय ॥
जौ साम ध्रंम घत्तहीं । साम द्रोही नन पाइय ॥
अवरन्न ह्रदै धरि रंजै ज्यौं । कह्रि बीर बंदै बचन ॥
ज्यौं अनल डसन मानुन करै । यौं प्रथिराज रन तत्त मन ॥
छं० ॥ १५८६ ॥

राजा का कहना कि सामंतों सोच न करो कीर्ति के लिये प्राण जाना सदा उत्तम है ।

सोच न करु सामंत । सोच भग्गै बल छत्रिय ॥
सामि द्रोह सो बंध । आहि बंधौ तन रत्तिय ॥

(१) ए. कृ. को.-कल ।

सोच कियै बल भग्ग। भग्गि बल किति न पाइय ॥
सुगति गये नर सब्ब। निद्धि ज्यौं रंक गमाइय ॥
ज्यौं उतर सूर पहरैं अरुनि। न्रिघति रंज नह द्रिग्ग हर ॥
सामंत सूर बोलंत बर। सुबर बीर बित्ते पहर ॥ छं० ॥ १५८७ ॥

पृथ्वीराज का किसी का कहना न मान कर मरने पर उतारू होना।

गाथा ॥ मिटयो न जाइ कहिनौ। कहनो कविचंद सूर सामंतं ॥
प्राची क्रम्म बिधानं। ना मानं भावई गत्तं[1] ॥ छं० ॥ १५८८ ॥

दूहा ॥ चित्ति त्यौंर सामंत सह। बहुरि सु रक्के थान ॥
इहै चित्त चहुआन कौ। कंचन नैन प्रमान ॥ छं० ॥ १५८९ ॥
मरन मंत प्रथिराज भौ। मरन सुमत सामंत ॥
इंद्रासन मत्तौ लहिय। डोलिय बोल कहंत ॥ छं० ॥ १५९० ॥

सामंतों का पुनः कहना कि यदि दिल्ली चले जांय तो अच्छा है।

कवित्त ॥ सामि हथ्थ भर नथ्थ। नथ्थ भर साम हथ्थ बर ॥
और मंच छिन मंच। [2]मंच उर श्रम पिव सर नर ॥
प्रथम सनेह बियोग। बिछुरि तीय पीय बिच्छुबर ॥
जीव सधन पुच बिपछ। इष्ट [3]संकट अबुद्धि गिर ॥
सामंत सूर इम उच्चरै। बिरंग द्रेष बंधेत नर ॥
प्रथिराज ग्रेह जौ जाइ बर। जम्म सुष्य बंधौत धर ॥
छं० ॥ १५९१ ॥

पृथ्वीराज का कहना कि मैं तो जैचन्द के साम्हने कभी भी न भागूगा।

चलै नौमेर निधाम। धूअ डुलै चलै अपु ॥
सत्त समुद जल षुटै। सत्त मरि जाहि काल वपु ॥

(१) मो॰ गत्तं (२) ए. कृ. को-मंत्र उर सम पाविस नर।
(३) ए. कृ. को.-संकष्ट।

चंद चंदायन घटै । बढै सूर औगुन अगा ॥
पच्छा पंग नरिंद । राज अग्गै नन भग्गा ॥
जं करौ सूर उप्पाड़ बर । राज रहै रज रष्षियै ॥
कहुँ न बैन प्रथिराज अग । बार बार नन अष्षियै ॥
छं० ॥ १५९२ ॥

कविचन्द का भी राजा को समझाना पर राजा का न मानना ।

नह मन्निय मति राज । सब्ब सामंत सहित्तं ॥
बरजि ताम कविचंद । मन्न मन राजन बत्तं ॥
बहुरि दिन्न सामंत । गिरद रथ्यौ फिरि राजनं ॥
फिरे भत्य अप थान । बिंट [1]लिन्ने ते आजन ॥
बुल्यौ ताम जादव जुरनि । अहो कन्ह सुनि नाह नर ॥
न्त्रिप व्याह राह चिंतौ सुचित । घर सु तरुनि तरुनिय सु घर ॥
छं० ॥ १५९३ ॥

जामराय जद्दंव का कन्ह से कहना कि यह व्याह क्या ही अच्छा है ।

दूहा ॥ अवर व्याह अनि मंगली । एह व्याह [2]जुधराह ॥
तिन [3]रति व्याह हरष्षियै । रयन मयन प्रथमाह ॥ छं० ॥ १५९४॥
*भुजंगी ॥ परी पंग पारस्स घन घोर कोटं । भए सूर सामंत सो सामि ओटं ॥
दिसा अट्ठ बीरं सुषं पंग साहे । गहे सामि भ्रम्मं अभ्रम्मं न गाहे॥
छं० ॥ १५९५ ॥

व्यूह बद्ध सामंत मंडली और पृथ्वीराज की शोभा वर्णन।

कवित ॥ दिसि बांई [4]उर अत्त । सूर हय अरुहि पंति फिरि ॥
सत्त पंच हय तेज । पच्छ उभ्भै पारस्स करि ॥

(१) ए. कृ. को.-लिल्ले । (२) ए.-जुद्धरह । (३) ए. कृ. को.-रतिवाह ।
* इस छन्द को ए. कृ. को. तीनों प्रतियों में चौपाई और मो. प्रति में अरिल्ल करके लिखा है।
(४) ए. कृ. को.-पुर ।

बर उज्जल सन्नाह। तेज चिहुं पास विराजै॥
कै पसरी रवि किरनि। मेर बिच लषि प्रथिराजै॥
नग मुष्य गढ़ी दुकूल बिधी। बीर बीच दंपति मयन॥
सन्नाह सहित सुभ्भै सु न्त्रिप। रति तीरथ परसै मयन॥
छं० ॥ १५९६ ॥

उक्त समय संयोगिता और पृथ्वीराज के दिलों में प्रेम की उत्कंठा बढ़नी।

गाथा॥ श्रम भौ बर संग्रामं। अभि लिष्यियं चिंतयो बालं॥
ग्रब्बं भौ चहुआनं। नंदरीयं सेन पंगायं॥ छं० ॥ १५९७ ॥

मुरिल्ल॥ कुंचित न्त्रिप कल किंचित पायौ। नेह दिष्ट दंपति न सहायौ॥
छुटित लाज छिन छिन चढ़ि मारे। ज्यौं जोबन चढ़ि सैसब बारे॥
छं० ॥ १५९८ ॥

कन्ह का कुपित होकर जामराय से कहना कि तुम समझाओ जरा मानें तो मानें।

कवित्त॥ तब कहै कन्ह नर नाह। सुनहि जामान जादवर॥
बिरध राह हृह्वाह। तुमहि बुझ्झौ सुभाव भर॥
तुम समान नहि बीर। नेह सम सगुन सुधा रस॥
तुमहि कहौ तिन राज। प्रेम कारन्न काम कस॥
हम काज आज सिर उप्परें। षग्ग धार [1]टाल्लौं सु षल॥
पुज्जऔं राज ढिल्ली सु धर। दुभर सु भर भंजौं सु दल॥
छं० ॥ १५९९ ॥

मे जान्यौ पहिलौं न। एह राजन क्रत काजन॥
मरम पच्छ कैमास। मंत जानै नह ताजन॥
भट्टकज्ज न्त्रप करिय। [2]सकल लोकह सो जानिय॥
एह कथा पहिलौं न। संन सन भई सयानिय॥
[3]मत्यौ सु एह कारन प्रथम। पुर कमज्ज प्रथिराज किय॥

(१) ए. कृ. को.-टालौं। (२) ए. कृ. को.-सब्ब।
(३) ए. कृ. को. मंत्यौ।

पंडौ सु अब्ब अरि हर उक्कसि । लोक सु जित्तौ काज जिय ॥
छं० ॥ १६०० ॥

जामराय जद्दव का राजा से कहना कि विवाह की यह प्रथम रात्रि है सो सुख सेज पर सोओ ।

सुनिय बत्त राजंन । कन्ह मन रीस अप्प चित ॥
पय लग्यौ हर नाह । धन्नि जंपौ सु धन्नि हित ॥
बलिय बास न अन अन्य । फिरत रोपिय सब संगिय ॥
बंध बारि विथ्थारि । उन्न चिंतान बिलग्गिय ॥
जंपयौ राज जद्दौ नमिय । प्रथिम रज इह व्याह रह ॥
खनिय सु ग्रेह प्रथमाह यह । करहु सयन न्त्रिप सुष्य सह ॥
छं० ॥ १६०१ ॥

दरबार बरखास्त होकर पृथ्वीराज का संयोगिता के साथ शयन करना ।

दूहा ॥ संजोगिय नयननि निरषि । सफल जनम न्त्रप मानि ॥
काम कसाये लोयननि । हन्यौ मदन सर तानि ॥
छं० ॥ १६०२ ॥

सुधि भूली संग्राम की । भूलि अप्पनिय देह ॥
जोन भयो बसि पंग दल । सो भयो बाम सनेह ॥
छं० ॥ १६०३ ॥

नयन चरन करमुष उरज । विकसत कमल अकार ॥
कनक वेलि जनु कामिनी । लचकनि बारन भार ॥छं०॥१६०४॥
रवनि रवन मन राज भय । भयौ नैंन मन पंग॥
सूरन सों संग्राम तजि । मंड्यौ प्रथम रस जंग ॥ छं० ॥ १६०५ ॥
तब सु राज रवनिय निरषि । हसि आलिंगन दिठ्ठ ॥
रचिय काम सयनह सुबर । दिय अग्या भर उठ्ठ ॥ छं० ॥ १६०६ ॥

प्रातः काल पृथ्वीराज का शयन से उठना सामंतों का उस

के स्नान के लिये गंगाजल लाना स्नान करके पृथ्वीराज का सन्नद्ध होना।

पद्धरी ॥ अग्गिय दीन अइवइ जाम। रष्षहु जु सब्ब निद्दाम ठाम ॥
मंगयौ ताम प्रथिराज वारि। अंदोलि मुष्ष पय पान धारि ॥
छं० ॥ १६०७

आवद्ध बद्ध सुष सयन कीन। सब दिसा अप्प बर बंटि लीन ॥
सब फिरत थाइ सामंत दीन। पारस फिरंत सामंत कीन ॥
छं० ॥ १६०८ ॥

दस हथ्थ मग्ग सीसइ सु चंद। बैठो सुचिंत चिंता समंद ॥
निड्डरइ राव आमान सथ्थ। बलिभद्र सिंघ पामार तथ्थ ॥
छं० ॥ १६०९ ॥

सामलौ सूर दिसि पुब्ब पंच। रष्षनइ राइ राजेस संच ॥
नर नाह कन्ह पामार जैत। उद्दिग्ग उदोत राष्यै सु भैत ॥
छं०॥१६१०॥

हाहुलियराव हंमीर तथ्थ। जंघारराव भीमान पथ्थ ॥
घन पत्ति दिसि राषै सु धीर। अप अप्प परिग्गह जुत्त बीर ॥
छं० ॥१६११॥

बंधव बरन्न तोमर पहार। बघ्घेल सु लष्षन लष्ष सार ॥
दै बंध हड्ड सम अप्प सूर। मइनसी पीप परिहार पूर॥
छं० ॥ १६१२ ॥

पच्छिम दिसाइ सजि धीर सार। भंजनइ मंत गय जूहभार॥
पवार सलष आजानबाइ। चहुआन अत्त ताई उधाइ ॥
छं० ॥ १६१३ ॥

चालुक्क विंझ भौहा अभंग। बग्गरी देव षीची प्रसंग ॥
बारउह सिंह अनभंग भार। दच्छिन दिसाइ सजि जूह सार ॥
छं० ॥ १६१४ ॥

(१) मो.-पुञ्ज।

[1]साहस्स एक सत एक सथ्थ। सब थत्त हुंच नीचह उरथ्थ ॥
छं० ॥ १६१५ ॥

अप अप्प भ्रत्य सामंत सब्ब। पट्टुए काज जल पंग तब्ब ॥
कमधज्ज भ्रत्य मध्ये बराह। आनयौ अप्प मेदैव ताह॥छं०॥१६१६॥

मुष पाय पानि अंदोलि बारि। अचयौ अप्प आतम अधारि ॥
करि सुतन संति सामंत राज। चिंते सु इष्ट भर स्वामि काज ॥
छं० ॥ १६१७ ॥

आवद्ध बंधि सजि बाजि सब्ब। आसन्न ताम अप्पह अथब्ब ॥
उच्छंग भ्रत्य कौ दै असीस। अस्तंमि षेट के पिन परीस ॥
छं० ॥ १६१८ ॥

पारस्स बैठि पंगुरह सेन। गज्जें निसान हय गय गुरेन ॥
चिंता सु चुंभि अति पंग राज। पारस्स फिरे चहुआन काज ॥
छं० ॥ १६१९ ॥

प्रातः काल होते ही पुनः पंग दल में खरभर होना।

दूहा ॥ चित्त अत्ति चिंता तपित। सज्जि राज कमधज्ज ॥
जिके सुभट बर अप्पने। फिरै तच कित रज्ज ॥ छं० ॥ १६२० ॥

सेन संजोग प्रथिराज हुअ। बाजहि लाग निसान ॥
काइर बिधु मन बंछही। सूरही बंछहि भान ॥ १६२१ ॥

प्रभात की शोभा वर्णन।

रासा ॥ इसी राति प्रकासी। सर कमुदिनी बिकासी ॥
मंडली सामंत भासीं। किवन-कल्लोल लासी ॥ छं० ॥ १६२२ ॥

पारसं रज्जि चंदं। तारस्स तेज [2]मंदं ॥
कातरा क्रति बंधे। सूर सूरत्तन संधे ॥ छं० ॥ १६२३ ॥

वियोगिनी रैनि लुट्टी। संजोगिनी लाज छुट्टी ॥
* * * । * * छं०॥१६२४॥

(१) ए. कृ. को.-साहस। (२) ए. कृ. को.-संदं।

त्रोटक ॥ छुटि छंद गिसा सुरसा प्रगटी । मिलि ढालनि माल रही सु घटी॥
निसमान निसान दिसान हुअं । धुअ धूरिन मूरिन पूरि पुअं ॥
छं० ॥ १६२५ ॥

नव निभ्झरयं बनयं बनयं । गज बाजत साज तयं घनयं ॥
निज कच्छरि अच्छरियं सदयं । करि रंजन मंज नयं अनयं ॥
छं० ॥ १६२६ ॥

करि सारद नारदयं नदयं । सिर मज्जन मज्जनयं सदयं ॥
निज निर्भय यं चहुआन मनं। किर निर्भर रज्जित सूर जनं ॥
छं० ॥ १६२७ ॥

गाथा ॥ सितभ किरनि समूरौ । 'पूरयं रेनं पंग आयेसं ॥
जुग्गनि पति भर सूरौ । पारस मिलि पंग राएसं ॥ छं० ॥ १६२८॥

मुरिल्ल ॥ पारसयं पसरी रस कुंडलि । जानकि देव कि सेव अषंडलि ॥
हालि हलाल रही चव कोदिय । दीह भयौ निसकौ दिसि मुंदिय॥
छं० ॥ १६२९ ॥

प्रातः काल से जैचन्द का सुसज्जित हो कर सेना में पुकारना कि चौहान जाने न पावे ।

* कुंडलिया ॥ देषि चिरा उद्योत घन । चंद सु ओपम कथ्थ ॥
दीपक विद्या जनु रचिय । द्रोन कि पथ भारथ्थ ॥
द्रोन कि पथ भारथ्थ । काम आये औ अरथं ॥
उभय घरी दिक्कतं । रुधि हरि चक्र विरथं ॥
दो प्रदीप गज तुरँग रथ । एक धनुष पाइल करग ॥
पावै न जानि पप्पीलिका । निसा दीह सम करि भिरग ॥
छं० ॥ १६३० ॥

कवित्त ॥ सहस पंच सम सूर । पास वर तिय निरमल कुल ॥
निज सरीर हथ देह । सज्जि सिर अग्गि राज बल ॥
तिन समथ्थ रा पंग । फिरत सब सेन अप्प प्रति ॥

(१) मो.-चूरयं सेन पंग आएसं ।

* वास्तव में यह डोढ़ा छन्द है परंतु इसकी बीच की दो पंक्तियां खो गई हैं । यह छन्द मो. प्रति में नहीं है ।

जिके सेन प्रथिसेव । कहै प्रथिराज रोह तलि ॥
जिन जाय निकसि चहुआन ग्रह । ग्रहौ तास सब सेन हय ॥
[1]इम फेरत राज निज भत्त प्रति । प्रथु सनमानित सब्ब रय ॥
छं० ॥ १६३१ ॥

जैचन्द का पूर्व दिशा से आक्रमण करना ।

करति अरति पहु पंग । फिरे सब सेन अप्प प्रति ॥
अग्गि तेज कुसाल । भाल दुति भई दीह भति ॥
प्रथम पुब्ब दिसि राज । जथ हुं तह फिरि पारस ॥
तहं फिरि आइय राज । जाम जामनिय रहिय तस ॥
प्राचीय मुष्ष सजि राज गज । दिष्षि सोय कमधज्ज नमि ॥
न्रप चढे तेव टामंक करि । ग्रहन राज चहुआन तमि ॥
छं० ॥ १६३२ ॥

सुख नींद सोते हुए पृथ्वीराज को जगाने के लिये कविचन्द का विरदावली पढ़ना ।

पद्धरी ॥ सोवै निसंक संभरि नरिंद । पष्परत पंग संको सुरिंद ॥
प्रथिराज काम रत सम संजोगि । अवतार लियौ धर करन भोग ॥
छं० ॥ १६३३ ॥

जगावै कोन आलिम्म जोइ । प्रेमनिय प्रेम रस रह्यौ भोइ ॥
चव वाह मत्त[2]हीसंकि कान । चंपि चुंग दिसनि रहि घुरि निसान ॥
छं० ॥ १६३४ ॥

सिधूअ मारु मलक्यौं सु गान । सुनि सूर नह काइर कंपान ॥
पंचास कोस रुद्धी धरन्नि । मेछान मध्य चहुआन किन्न ॥
छं० ॥ १६३५ ॥

कवि किय किवार वुल्ल्यौ विरह । सिंघ जिंम जग्ग सुनि श्रवन सह ॥
छं० ॥ १६३६ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-इम फेर राजनित भृत पति ।　　(२) ए. कृ. को.-हींसहि ।

पृथ्वीराज का सुख से जागना ।

दूहा ॥ बिरदावलि बोलत जग्यौ । अरु संजोइय कंत ॥
कंदल रस रत्ते नयन । क्रोध सहित बिहसंत ॥ छं० ॥ १६३७ ॥

गाथा ॥ इम सज्जत सामंत । घटय रयनि तुच्छ संघरियं ॥
जग्गत नृप चहुआनं । पयानं भाग [1]प्रच्छानं ॥ छं० ॥ १६३८ ॥

दूहा ॥ सयन संधि मंडिय नृपति । दुअ यट्टौ अरि पेलि ॥
मानि घात सामंत मन । तब उभ्भै करि नेत ॥ छं० ॥ १६३९ ॥

पृथ्वीराज का सैन से उठ कर संयोगिता सहित घोड़े पर सवार होना और धनुष सम्हालना ।

त्रोटक ॥ न्रिप मंगिय राज तुषार चढ़े । कविचंद जयज्जय राज पढ़े ॥
परिपंग कटक्कत घेर घनं । दस पंचति कोस निसान सुनं ॥
छं० ॥ १६४० ॥

गज राज बिराजित मध्य घनं । जनु बद्दल अभ्भ सु रंग बनं ॥
[2]परि पष्षर सार तुरंग घनी । जनु झल्लत हेल समुद्द अनी ॥
छं० ॥ १६४१ ॥

बर बैरष बंबरि [3]छच तनी । बिष माहिय स्याहिय सिंघ रनी ॥
[4]हरि पष्प इमा उअ पीत बनी । जनु सज्जत रैनि सरद्द तनी ॥
छं० ॥ १६४२ ॥

भन नंकहि भेरि अनेक सयं । सहनाइय सिंधुअ राग लयं ॥
निसि सब्ब न्रिपत्ति अनीन फिरै । जनु भांवरि भान सु भेर करै ॥
छं० ॥ १६४३ ॥

दल सब्ब सँभारि अरिष्ष करी । जिन जाइ निकस्सि नरिंद अरी ॥
गत जांम चिजाम सु पीत परी । जय सद्द अयासह देव करी ॥
छं० ॥ १६४४ ॥

कर चंपि नरिंद सँजोगि ग्रही । उपमा चर चारु सुभट्ट कही ॥
मनों भोर दुभ्भारसि अग्गि तपी । कलिका गजराज कमोद झपी ॥
छं० ॥ १६४५ ॥

---

(१) ए. को.-प्रस्थानं । (२) मो.-पारि पष्षर ताप सुरंग घनी ।
(३) मो. पचव्रती । (४) ए. कृ. को.-हरि पष्प उमापति पीत पती ।

पय चंपि रके बनि बाज चढ़ी। रवि बेलि किधौं गरु काम बढ़ी ॥
तर तोन चमंकत पच्छ दिठी। जु मनों तन भांन [1]मयूष उठी ॥
छं० ॥ १६४६ ॥

मुष दंपति चंद बिराज बरं। उदै अस्त ससी रवि रथ्य घरं ॥
भर न्त्रप्प सजे सु तरंग चढ़े। मनु भान पयानति लोह कढ़े ॥
छं० ॥ १६४७ ॥

चहुआन कनौजति कोपिलियं। मिलि भोइनि षंचि कसी सदियं॥
सर छुट्टत पंषति सद्द [2]सयं। मद गंध गयंदन मुक्कि गयं ॥
छं० ॥ १६४८ ॥

सर एक सु बिद्धत सत्त करी। दल दिष्षत नेंन ठठुक्क परी ॥
नरवारि हजारक च्यार परी। प्रथिराज लरंत न संक करी ॥
छं० ॥ १६४९ ॥

पंग सेना का व्यूह वर्णन।

कवित्त ॥ उभै सहस गजराज। मद्द मुष्षह पंति फेरिय ॥
नारि गोर जंबूर। बान छुटि कहुंकि सु भेरिय ॥
पंग अग्ग कंद्रप कुआर। [3]मीर गंभीर अभंगम ॥
ता अग्गे बन सिंघ। टांक बलिभद्रति अंगम ॥
केहरि कंठेरि अग्गें न्त्रपति। सिंह बिभग्गा सिंह रन ॥
उग्गयौ न भान पयान बिन। [4]मथन मेर मच्च्यौ मद्दन ॥
छं० ॥ १६५० ॥

वीर ओज वर्णन।

रसावला ॥ षग्ग वीरं घुलं, अंत दंतं रुलं। दंत दंती घुलं, लोहरतं मिलं ॥
छं० ॥ १६५१ ॥

बीर बीरं ठिलं, सार सारं झिलं। चच्च [5]रंसी बिलं, बीर अंगं ढिलं॥
छं० ॥ १६५२ ॥

(१) ए. कृ. को. मझंष। (२) ए. कृ. को.-भयं। (३) ए. कृ. को.-मीर।
(४) मो.-सथन। (५) ए. कृ. को.-चच्चरं चीषिकं।

काइरं जे पुलं, वैन बहु बुलं। सिव 'चित्त' डुलं, क्रम्म बंधं षुलं॥
छं० ॥ १६५३ ॥

मुगति मग्गं चलं, ईस सीसं हलं। ढुंढि बंधं गलं, षग्ग मग्गं दलं॥
छं० ॥ १६५४ ॥

ढाल गज्जं मलं, देवलं जं ढुलं। घाइ घुम्मै षलं, अंग सोभै ललं॥
छं० ॥ १६५५ ॥

सीस हक्कै कलं, काइ रंजं ढुलं। पिंड रत्तं पंनं, षग्ग चित्तं तनं॥
छं० ॥ १६५६ ॥

सूर उट्ठै पनं, द्रोन नच्ची धनं। आयुधं झंझनं, नारदं रिभझनं
छं० ॥ १६५७ ॥

सूर्य्योदय के पाहिले से ही दोनों सेनाओं में मार मचना।

कवित्त ॥ बिनइ भान पायान। इदं कमधज्ज जुद्ध दुअ॥
सच्चौ न बोल संपुलै। बिरद पागार बज्र भुअ॥
सुकल [1]षोलि कल्हार। झकित कच्यौ झाराहरं॥
बिनहि अरुन उद्योत। अरुन उग्यौ धाराहर॥
पहु बिन पुकार पहु उप्परिग। सु प्रइ पहक फट्टौ फहन॥
उहिग सुतन अरि वर किरन। मिलिव चक्क चक्की गहन॥
छं० ॥ १६५८ ॥

असिवर झर उघ्घरिय। चक्क चक्की अनंद मन॥
कुमुद मुदिग कमधज्ज। सेन संपुटिग सघन रिन॥
पंच जन्य संपन्न। सकल कु[2] घरनि घरीयं॥
पसु कि मझ्झ मुष पंच। तिमिर किरनिनि निबरीयं॥
उडगन अचंभ कौतूहलह। अरु जु स्वामि किन्नौ गहरु॥
उहिग पगार सुत पंचनन। समर सार बुल्यौ पहरु॥
छं० ॥ १६५९ ॥

(१) मो.-विर्ते। (२) ए. कृ. को.-कोल।

युद्ध वर्णन।

वृद्धनाराज ॥ हयग्गयं नरब्भरं [1]रथं रथंति जुट्टयौ।
मनौं नरिंद देव देव झल्लरी सु बट्टयौ ॥
किनंकही तुरंग तुंग जूह गज्ज चिक्करं।
जु लोह छक्कि नष्षि भोमि षेत मुक्कि निक्करं ॥ छं० ॥ १६६० ॥
बजंत घाय सद्दकं ननद्द नद्द मुद्दरं।
गरज्जि देषि अग्गि ज्यौं विदोष मल्ल जो दुरं ॥
उठंत दिष्ट सूर की करूर अंषि राजई।
मनौं कि सौकि बीय दिष्ट बंकुरीति साजई ॥ छं० ॥ १६६१ ॥
उभै सयल्ल क्रम्म यंक को न भूमि छंडयं।
जु मझ्झि झ कंक भज्जि कोन सार अंग षंडयं ॥
बरंत रंभ रंभभंति सार के दुझारयं।
जुधं जुधं बजंत सूर धार धीर पारयं ॥ छं० ॥ १६६२ ॥
तुटंत श्रोन सीस द्रोन नंचि रीस हक्कयौ।
[2]रचंत भोम बिद्र कार बीर बीर झक्कयौ ॥
परंत के उठंत फेरि मच्छ ज्यौं तरप्फई।
रनं विधान धीर बीर बीर बीर जंपई ॥ छं० ॥ १६६३ ॥

अरुणोदय होते होते भोनिग राय का काम आना।

कवित्त ॥ पहर एक असि एकं। एक एकह निब्बर धर ॥
धर धर धरनि निहारि। नाग धक्कयौ सु नाग सिर ॥
हल हलि मिलि रट्ठौर। रीठ बज्जी बज्जारह ॥
कर क्रक्कस रस केलि। धार तुट्टिय लगि धारह ॥
दुहुं दल पगार पागार गिरि। [3]भिरि भुअंग भूनिग तनौ ॥
पहु फटिग घटिग सर्बरि समर। अमरं मोह जग्यौ घनौ ॥
छं० ॥ १६६४ ॥

(१) मो.-रथं रथं सु। (२) ए- कृ. को.-चरंत भोम छिद्रकार। (३) मो.-भर।

अरुणोदय पर साषुला सूर का मोरचा रोकना।

अरुन बरुन उट्ठयौ। अरग उद्दिम उद्दिग भुज॥
सह सुप्परि सा षुलौ। षोलि षंडौ उग्गिग दुज॥
हय गय नर आरुरि सु। राह बंबरि बर तोल्यौ।
सार सार [1]संझार। बीर बंबरि झंझोल्यौ॥
पहुपंग समुद् जरह[2]अध। स्लूर सार सारह हनिय॥
दनु देव नाग जै जै करहिं। बरन रुद्र रुद्रह भनिय॥

छं०॥ १६६५॥

घरी एक दिन उद्दै। पंग आरुहिय सेन भिरि॥
हय गय नर भर भिरत। लुथ्थि आहुट्टि लुथ्थि पर॥
किन्नर बर [3]चैनेन। बीर पस पंष किलक्किय॥
पंचम सुर जुग्गिनिय। बंधि नारह सु वक्किय॥
हं हंत हंत सुर असुर कहि। जै जै जै प्रथिराज हुअ॥
असि लष्ष पंग साइर उलटि। धनि नरिंद मंडेति भुअ॥

छं०॥ १६६६

एक घड़ी दिन चढ़े पर्य्यंत सामंतों का अटल हो कर पंग सेना से लड़ना।

परिग बीर बन सिंघ। रंग कमधज्ज सुरष्षिय॥
बर सुरंभ घरि फेरि। तज्यौ बर प्रान सु लष्षिय॥
ज्यौं मझ्झ बर [4]अप्पि। जैम बंकुरि तिय लष्षिय॥
बीनि रंभ दुहु हथ्थ। मरन जीव ते लष्षिय॥
लष्षन प्रमान मझ्झहिति रुंघ। रंभ अरंभन फिरि बरी॥
तिहि परत सिंघ रवि रिंघ अप। पंग पंच हथ्थिय परी॥

छं०॥ १६६७॥

दूहा॥ घरिय उदय उभ्भय दिवस। हक्कि हलक्क गज पंग॥
सुभर सूर सामंत सुनि। टरिय न बीर अभंग॥ छं०॥ १६६८॥

(१) मो.-संसार (२) ए.-अस। (३) ए. कृ.को.- चैनेत्र। (४) कृ. को. अप्पि।

सामन्तों का पराक्रम और फुर्तीलापन।

कवित्त ॥ जहं जहं संभरि वार। सूर सामंत बहिग बर ॥
तहं ति तेज अग्गरौ। फिरयौ करि वार करतु कर ॥
जहं तहं भय भागंत। सार सनमुष सिर सहयौ ॥
जहां जहां चहुआन। विहरि चंचल चित रहयौ ॥
तहँ तहं सु सार [1]सारंग लिय। विरचि बीर चंदह तनौ ॥
पहु पुच्छ तुट्टी रिंझवि रनह। तहं तहं करै निवच्छनौ ॥
छं० ॥ १६६९ ॥

पङ्गराज की अनी का व्यूह वर्णन और चंदेलों का चौहानों पर धावा करना और अत्तताई का मोरचा मारना ॥

षोड़स गज पहु पंग। मीर सत सहस राज अगि ॥
अट्ठ अट्ठ गजै राज। दिसा दच्छिन रु वाम मग ॥
षां पहार मोहिल्ल। महिद बंध रान ततारिय ॥
समर सूर चंदेल। बंध मिलि बाग उपारिय ॥
बर बंध बर्न अल्हन उभै। अत्तताइ अवरत्त बर ॥
दिसि मुक्कि वाम दच्छिन परिग। हाइ हाइ आरत्त भर ॥
छं० ॥ १६७० ॥

रसावला ॥ हलके हलकं, गिरं जानि बक्कं। छुटी मद्द पट्टं, वपं मेर घट्टं॥
छं० ॥ १६७१ ॥

चढ़ी जम्म भल्ली, गिरं भान हल्ली। सर क्किन्त मद्दं, घटं जानि भद्दं॥
छं० ॥ १६७२ ॥

दियै दंत भारी, सनंना सयारी। [2]कवी बक्क अष्पं, भमै मेघ पष्पं॥
छं० ॥ १६७३ ॥

धयै तेज जस्सं, जपं कंक कस्सं। [3]सरं नाव कस्सं, पनु रंत अस्सं॥
छं० ॥ १६७४ ॥

कुकं कोपि हल्ली, उपम्माति भल्ली। नदी मंद पायौ, रुपी पान धायौ॥
छं० ॥ १६७५ ॥

(१) ए.- सा मंगालिय। (२) मो०-कब्बी ब्बक अप्पं। (३) ए० कृ. को.-रसं।

पतू रत्त असं, जपं कंक कसं। मुषं मोर आनं, उपम्मा न आनं॥
छं० ॥ १६७६ ॥

इतने में पृथ्वीराज का दस कोस बढ़ जाना परंतु हाथियों के कोट में घिर जाना ॥

कवित्त ॥ चढ़ि पवंग प्रथिराज। कोस दस गयो ततच्छिन ॥
परत कोट चिहुकोद। घेरि करि लियौ गयंदनि ॥
इम जंपै जैचंद। भग्गि प्रथिराज आइ जिन ॥
सोइ रावत रजपूत। सूर तिहि गनौं अयंगनि ॥
[1]कंमान कठिन कविचंद कहि। दुहुं भुव कब कर तानियौ ॥
लग्गौ सु बान जयचंद हय। तब दख फिरि दुहुं मानयौ ॥
छं० ॥ १६७७ ॥

पृथ्वीराज का कोप करके कमान चलाना।

इसौ देषि प्रथिराज। सहस ज्वाला जक जग्गिय ॥
मनों गिरवर गरजंत। फुट्टि दावानल अग्गिय ॥
अप्प अप्प विरफुर्‌यौ। करिय ज्वाला क्रम लग्गिय ॥
मनु पावक मक्ति वीज। आनि अंतर गन जग्गिय ॥
हिरनाल फाल कट्टिन सकै। दावा नल भट्टह तयौ ॥
कनवज्ज नाथ असिलष्य दल। जम जम अग्गि भपट्टयौ ॥
छं० ॥ १६७८ ॥

एक प्रहर दिन चढ़ते चढ़ते सहस्त्रों योद्धाओं का मारा जाना।

सत विंध्यौ चहुआन। पंग लग्गौ अभंग रन ॥
सु बर सूर सामंत। जोति झलहलिय उंच घन ॥
जांम एक दिन चढ्यौ। रथ्थ षंच्यौ किरनालं ॥
ब्रह्म चौंति फुनि परिय। देषि भारथ्थ विसालं ॥
पूतंनि ताम देवस्त कर। धरे ग्रब्भ दस मास बर ॥
जोगवै जतन पन निम्मइय। तिन मरत न लग्गत पल सुभर ॥
छं० ॥ १६७९ ॥

(१) ए. कृ. को. लेकर कमांन कविचंद कहि।

गाथा ॥ इट्ठं सनाह सरिसं । निमुष निमुष बंधनं तनइं ॥
तिट्ठं जोग प्रमानं । तं भंजयौ सूर निमिषाई ॥ छं० ॥ १६८० ॥

दूहा ॥ रन रुंध्यौ संभर धनी । पंग प्रमानत घेरि ॥
निमुष सु रघ्यौं बर नृपति । ज्यौं पलि भान सुमेर ॥ छं० ॥ १६८१ ॥

जैचन्द का कुपित होकर सेना को आदेश करना ।

कवित्त ॥ लझै नैन सु पंग । बान रत्ती रस बीरं ॥
इथ्थ रोस विथ्थुरैं । मोह मुक्कत्ति सरीरं ॥
गह गहगह उच्चार । भार भारथ सपंतं ॥
बंधन बर चहुआन । भीम दुस्सासन रत्तं ॥
सावंग अंग चित पंग कौ । घ्रत्त[1] सोज प्रथिराज रस ॥
सामंत होम भारथ्थ कस । बीर मंच जदि होइ बस ॥ छं० १६८२ ॥

घनघोर युद्ध वर्णन ।

रसावला ॥ परे पंच बीरं, मदेलष्ष भीरं । परे बंद मब्बी, समंदं हरब्बी ॥
छं० ॥ १६८३ ॥
मथे बीर भीरं, जुजंतं सरीरं । उड़ै छिंछ धग्गं, लगे अंग अग्गं ॥
छं० ॥ १६८४ ॥
नगं रत्त जैसं, जरे हेम तैसं । लगे लोह तत्ती, सहं बीर पत्ती ॥
छं० १६८५ ॥
सुम्यौ बीर नद्दं, बहै बग्ग हद्दं । बही अंष जारी, विजू यों सँभारी॥
छं० ॥ १६८६ ॥
[2]धुसी लग्गि बीरं, बरं मंत धीरं । [3]मढ़ डाढ़ि नीरं, दंती कढ्ढि बीरं ॥
छं० ॥ १६८७ ॥
कन्हं कांस तीरं, कँधं नंषि भीरं । घयं वार पारं, रुधी धार धारं ॥
छं० ॥ १६८८ ॥
जयं कंन रायं, पलं छुट्टि वायं । सिरं तुट्टि पारं, रुधी छुट्टि धारं ॥
छं० ॥ १६८९ ॥

---

(१) मो०-घृत्त ।　(२) ए. कृ. को.- धुछी　(३) ए. कृ. को.- गर्ज ।

नभं होम लग्गी घृतं होम अग्गी। घटं घट्ट धारं, दिवी घट्ट भारं॥
छं० ॥ १६६० ॥

झले षग्ग जग्गी, तिने लोक लग्गी। जियं मुक्ति भट्टं, चली बंधि थट्टं॥
छं० ॥ १६६१ ॥

धरं धार चट्टं, षगं मग्ग बट्टं। सत्र वीर झारं, जुधं लीन भारं॥
छं० ॥ १६६२ ॥

मरं मार [1]मारं, पँगं बीर बारं। * * छं० ॥ १६६३ ॥

पृथ्वीराज के सात सामंतों का मारा जाना और पंग सेना का मनहार होना परंतु जैचन्द के आज्ञा देने से पुनः सबका जी खोलकर लड़ना।

कवित्त ॥ परिग पंग भर सुभर। राज रजपूत सत्त परि॥
लोथि लोथि पर चढ़ी। बीर बट्टीति कोट करि॥
परिग सूर जै सिंह। गौर गुज्जर पहार परि॥
परिय नन्ह अरु कन्ह। अमर परि नाभ अमर करि॥
बग्गरी परिग रनधीर रन। रनरूँधिग रिन मल्ल परिग॥
इन परत सूर [2]सत्तौ तिरन। पंग सेन ढट्टु कि करिग॥ छं० ॥१६६४॥

भुजंगी ॥ ठठुक्के सुमेनं मनं मीर मिल्लै। डरं [3]विहूरी सेन सब्बें निकल्लै॥
बरं बैर राठौर चहुआन [4]झल्लै। तबै लष्षियं पंगु रा नैन लल्लै॥
छं० ॥ १६६५ ॥

तिंन उप्पजी रोस उर अम्भ अग्गी। उतं निक्करे न्रिपनि कै नैन मग्गी॥
तिनं लुंचियं नैंन दीसै दिसानं। तबं चंपियं राज नें चाहुआनं॥
छं० ॥ १६६६ ॥

तिनं उप्पजी संष धुनि सिंगिधारं। तिनं वज्जियं नद्द नीसान भारं॥
लयं लग्गियं कन्न राजं सँजोई। तिनं अप्पियं कंत कोवंड जोई॥
छं० ॥ १६६७ ॥

तिनें सुमरियं चित गंध्रव्व सद्दं। उतं जोइयं मुष्य सामंत हद्दं॥

(१) मो.-झारं, कृ.- कारं। (२) ए.- मत्तौ। (३) को.- विहूरी। (४) ए. कृ. को.- हल्लै।

बचन्न सु सद्द कवी चंद बोल्यौ। तबै भंजियं कन्ह सों सौ अबोलौ॥
छं० १६९८॥

तबें लग्गियं भान रायंति रायं। [1]उनं देषियं आज कौतूह चायं॥
तबै कोपियं बीर विजपाल पुत्तं। तिनं आवधां झारि जमजालि दुत्तं॥
छं०॥ १६९९॥

सर्व संहरी सेन सौन्नह दीहं। इसौ नौमि तिथि थान प्रथिराज सीहं॥
तिनं राजसं तामसं बे प्रगट्टं। भरं मुक्कियं सब्ब सातुक्क बट्टं॥
छं०॥ १७००॥

सरं सार संपत्ति पै त्तति रच्छं। मनो आवधं इंद्र रुद्रानि कच्छं॥
बरं निट्ठुरी ढाल गय पत्ति मत्तं। तबै उट्ठियं सूर सामंत रत्तं॥
छं०॥ १७०१॥

उतं भूमि भर धरनि ढहि ढरि सुपथ्थं। तिनं अथ्यि बिय हथ्थ प्रथिराज संथ्यं॥
बढे वीर सामंत सा बीर रूपं। जिसै सैल संदूर संदेस जूपं॥
छं०॥ १७०२॥

उडै विग्रवांनै सुमानै उदंता। जिसें अरक फल फूटि होतें अनंता।
ततें कंपियं काइरं लोह इत्तं। मनों अनिल आरंभ प्रारंभ पत्तं॥
छं०॥ १७०३॥

इसौ जुद्ध आवद्ध मध्यान झूझं। रहे हारि हथ्थं जु जूवारि जूझं॥
छं०॥ १७०४॥

दूसरे दिन नवमी के युद्ध के ग्रंह नक्षत्रादि का वर्णन।

कवित्त॥ तिथि नौमी सनिवार। मेष संक्राति सिंघ ससि॥
गंज नाम बर जोग। चिच जोगिनी बाम बसि॥
दिन नछिच रोहिनी। जांम मंगल बुध तीजौ॥
के इंद्री गुर देव। भान ससि राह सुभीजौ॥
बर द्रष्टि ये ह ग्रह दान रन। नवमि जुद्ध [2]अवरुद्ध बजि॥
पहुपंग बीय सुंमुह ढरी। चावद्दिसि रष्षै सु सजि॥ छं० ॥१७०५॥

(१) ए. कृ. को. तिनं। (२) ए. कृ. को.- अवरत्ति।

जैचन्द की आज्ञा से पंग सेना का कोप करना और चौहान की तरफ से पांच सामंतों का मोरचा लेना। इन्हीं पांचों के मरते मरते तीसरा पहर हो जाना।

तदिन रोस रट्ठौर। चंपि चहुआन गहन कहि ॥
सौ उप्पर सैं सहस। [1]बीह अगनित्त लष्ष दहि ॥
छुटि डुंगर थल भरिग। फुदि जल थलति प्रक्काहिग ॥
सह अच्छरि अच्छहि। विमान सुर लोक बनाइग ॥
कहि चंद दंद दुंहु, दल भयौ। घन जिम सिर सारह झरिग ॥
हरि सैस ईस ब्रह्मानि तनि। तिहुं समाधि तद्दिन टरिग ॥ छं० १७०६ ॥

पंग बीर गंभीर। हुकम अप्पौ जु गहन बर ॥
बर हैबर बर रम्य। द्रुग्ग दैवत्त जुद्ध भर ॥
चित चचुभुज भर दंद। गोर सूरंत नषत हर ॥
चावद्दिसि चहुआन। रुक्कि कड्ढी असिवर भर ॥
दल मुररि मुररि मोहिल मथन। नयन रत्त बोलिग सुभर ॥
जुग्गिनि पुरेस निंदरि चलिय। अबल होत उप्पर सुघर ॥
छं० ॥ १७०७ ॥

गाथा ॥ विपहर [2]पहुरति परियं। हय गय भार सार [3]नथ्थनं ॥
रह रंग रोस भरियं। उट्ठियं बीर बिबेनं ॥ छं० ॥ १७०८ ॥

कवित्त ॥ सुनिग माल चंदेल। आन भट्टी भुआल बर ॥
धनूबीर धवलेस। उट्ठि निब्बान हक्कि बर ॥
तमकि सूर सामलौ। सार झल्लिय पट्टार भर ॥
पंच पंच तिय पंच। पंच पंचंत पंच बर ॥
दैवान जुद्ध पंचै भिरिग। भिरि भारथ्थ अपुब्ब बर ॥
बजि घरी पहर तीसर उठी। [4]ज्यौं अगनि धुंम संजुत्त धर ॥
छं० ॥ १७०९ ॥

---

(१) मो.-बीरह। (२) ए. कृ. को-महुरति।
(३) मो.-सथ्थनं। (४) मो.-ज्यौं अगनि धुंमर जुत्त धर।

वीर योद्धाओं का युद्ध के समय के पराक्रम और उनकी वीरता का वर्णन ।

बाघा ॥ परि पंच जुद्ध सु बीर । बजि सस्त्र बज्जि सरीर ॥
भर अग्गि अंजन भीर । झुकझकी षग्गनि नीर ॥ छं० ॥१७१०॥
तुटि सस्त्र बस्त्र सरीर । मनु [1]तरनि सोभि करीर ॥
नरपत्ति चाहत बीर । तिन किलकि जोगिनि तीर ॥ छं० ॥ १७११॥
तजि सबन यों अन बीर । षग मिलिग झलिग सरीर ॥
दल मथत दलन अधीर । जनु समुद थाहत कीर ॥ छं०॥१७१२॥
बर बरै अच्छरि बीर । जिन मुष्प झलकत नीर ॥
तुटि अंत दंतन तीर । मिनाल मन कढि नीर ॥ छं०॥१७१३ ॥
बजि षग्ग नद्द निनद्द । [2]गज गजत सोरस मद्द ॥
गज रत्त रत्त जु ढाल । षग लगत भज्जत हाल ॥ छं० ॥ १७१४ ॥
सद व्रत्त जनु गहि दीन । तिन ईस सीस जुलीन ॥
घट उट्ठि धरियत अद्ध । चंदेल माल विरुद्ध ॥ छं० ॥ १७१५ ॥
सिर हथ्थ साहि प्रमान । कर नंषि दिसि चहुआन ॥
बर [3]पंग है गै बीत । भारथ्थ दस गुन गीत ॥ छं० ॥ १७१६ ॥

उक्त पांचों वीरों की वीरता और उनके नाम ।

कवित्त ॥ परे पंच बर पंच । सुभर भारथ्थह जुत्ते ॥
उंच हथ्थ करतूति । उंच बड्पन बड जुत्ते ॥
तिल तिल तन तुट्टयौ । [4]पंग अयनित षल भंजिय ॥
पंच पंच मिलि पंच । रंभ साहसं मन रंजिय ॥
दिन लोक देव आनंद कर । बर बर कहि कहि झग्गरैं ॥
इन परत पंग जो गति बुझी । षिझत फिरी पारस परैं ॥
छं० ॥ १७१७ ॥
पऱ्यौ माल चंदेल । जेन धवली धर गुज्जर ॥
पऱ्यौ मान भट्टी । भुआल थट्टा धर अग्गर ॥

---

(१) ए. कृ. को.-सरनि ।　　(२) ए. कृ. को.-गज गजत सोरह मद्द ।
(३) ए. कृ. को.-पंच ।　　(४) ए.-अंगे ।

परयौ ह्वर सामली। जेन बानै मुष मच्छइ॥
इसै तेन पांवार। जेन विरदावल अच्छइ॥
न्त्रिब्बान बीर धावर धनू। [1]हनुय नरिंद अनेक बल॥
इन परत पंच भय विप्पहर। अगनित भंजि असंष दल॥
छं० ॥ १७१८ ॥

पृथ्वीराज को पकड़ लेने के लिये जैचन्द की प्रतिज्ञा।

चढ्यौ सूर मध्यान्ह। पंग परतंग गहन किय॥
[2]सुरनि षेह षह मिलिय। श्रवन इह सुनिय सुबीय लिय॥
तब नरिंद जंगलिय। कोह कढ्ढौ सु वंकि असि॥
धर धूमिलि धुम्मरिय। मनहु दल मझ्झि झि दुतिय ससि॥
अरि अरुन रत्त कौतिक कलस। भयौ न भय सुभिरंत भर॥
सामंत निघट पंचह परिग। न्त्रपति सपिट्ठिय पंच सर॥
छं० ॥ १७१९ ॥

साटक॥ इक्कं तीन सकढ्ढियं कर धरं, पंचास [3]वर्द्धासने।
उत्तारे सहसं सु बीय उडनं, लष्यं चलष्यं बियं॥
सब्बं पारि इमंच क्रित्त जनकं, पत्तं च धारायनं॥
एवं बाहु सु बाह बान धरियं, द्रोनाहि पथ्यं जथा॥ छं० ॥ १७२०॥

जैचन्द का अपनी सेना की आठ अनी करके चौहान को घेरना और सेना के साथ राजकुमार का पसर करना। उक्त सेना का व्यूहबद्ध होना। मुख्य योद्धाओं क नाम और उनके स्थान।

कवित्त॥ अष्ट फौज पहु पंग। परिस चहु आनह फेरिय॥
मीर धीर धरवान। षान असमानह केरिय॥
क्रोध परिग गजराज। सत्त मुर मद्द मोष वर॥
तिन मझ्झ मल्हन मेहेस[4]। बंसीति सहस भर॥
ता अग्ग केत कुंअर कंद्रप। दस सहस भर सु भर सजि॥

---

(१) ए. कृ. को.-हनिय। (२) ए. कृ. को.-मुरनि।
(३) मो.-पंचास वर्द्धानने। (४) "सर" पाठ अधिक है।

ता अगै न्रपति [1]बज्जीत सवि । पंच सत्त गज मुष्य गजि ॥
छं० ॥ १७२१ ॥

ता अग्गै तिरहुति नरिंद । बीर केहरि कंठेरिय ॥
बिच जहाँ रा भान । देव दच्छिन न्रप भेरिय ॥
ता अग्गैं अंगोल । देव दहिया तत्तारिय ॥
मोरी रा मह्नंग । बीर भीषम षंधारिय ॥
ता अग्ग सेन्न बल अंग बल । सजि समूह ब्रह्मह सयन ॥
प्रथिराज सेन दिष्षत गिम्न । सुकविचंद बंटहि नयन ॥ छं०॥१७२२॥

वीर रस माते योद्धाओं का ओज वर्णन ।

रसावला ॥ पंग रा सेनयौ । रत्त आनै नयौ ॥
आइ संछुट्टियं । [2]दिट्टयं तुट्टियं ॥ छं० ॥ १७२३ ॥
बीर जं विप्फुरं । जोर जम्मं जुरं ॥
सस्त्र बाहं बरं । वज्जतं सिप्परं ॥ छं० ॥ १७२४ ॥
सस्त्र छुट्टं नियं । बथ्थ जुथ्थं लियं ॥
जुद्ध अद्धं मयं । बज्जि जुद्धं मयं ॥ छं० ॥ १७२५ ॥
क्रूर सूरं अरी । आनि मत्ते करी ॥
पाइ बज्जे घटं । बीर बोले भटं ॥ छं० ॥ १७२६ ॥
कूक मच्ची षरं । सार सारं भरं ॥
अंत रघ्यं बरं । देव रघ्यं षरं ॥ छं० ॥ १७२७ ॥
बोल जे जं बरं । फूल नंषे सिरं ॥
देव जुद्धं ननं । सूर बंटै धनं ॥ छं० ॥ १७२८ ॥
अंत गिद्धी कुड़ी । अंतरिछं उड़ी ॥
मन्न मुष्यं षरं । रघ्य हक्के डरं ॥ छं० ॥ १७२९ ॥
क्रंम मत्तं बरं । द्रोन नंचै धरं ॥
थोर थोरं थनी । [3]अप्प ढुंढै धनी ॥ छं० ॥ १७३० ॥
चंद औहं करी । गौ पथं उच्चरी ॥
गज्ज ढालं ढरी । दंत दंती परी ॥ छं० ॥ १७३१ ॥

(१) मो.-वज्जनि । (२) ए. कृ. को.-भावतं दिठियं । (३) ए. कृ. को.-अध्य ।

सोमि मुक्के करी। अस्स पंषी परी॥
* * * । * * छं० ॥ १७३२ ॥

लड़ते लड़ते दोपहर हो जाने पर संभरी नाथ का कुपित हो हाथ में कमान लेना।

कवित्त ॥ दिनयर सुभ्र दिन जुद्ध। जूह चंपिय सामंतन ॥
भर उप्पर भर भर । परिहि उप्पर धावंतन ॥
दल दंतिन बिच्छुरहि। हय जु हय हय किन झंकहि ॥
[1]अछरि वर हर हार। धार धारन झन नंकहि ॥
जय जया सद्द जुग्गिनि करहि। कलि कनवज दिल्लिय वयर ॥
सामंत पंच षित्तह षपिग। भिरत पंच भये [2]विप्पहर ॥
छं० ॥ १७३३ ॥

रन रत्तौ चित रत्त। [3]वस्च रत्तेत मग्ग रत ॥
हय गय रत्तै रत्त। मोह सौं रत्त बीर रत ॥
धर रत्ते [4]पत रत्त। रुक रत्ते विरुझानं ॥
रत्त बीर पलचर सु रत। [5]पिंड रत्तौ हिय सानें ॥
विप्फुरे घाइ अघ्घाय फुट। पंग ठट्ट चंपे सु भर ॥
दैवत्त जुद्ध चहुआन वर। षिजि कमान लीनी सु कर॥छं०१७३४॥

घनघोर युद्ध का वाकचित्र दर्शन।

मोतीदाम ॥ रजे रविरथ्थ रहस्सिय व्योम। धमक्किय बज्जिय गज्जिय गोम॥
जग्यौ रस तांम स पंगह पूर। गहग्गह राग [6]वज्यौ सम सूर ॥
छं० ॥ १७३५ ॥

नवम्मिय कत्यकसूर सु अन्न। घटी दुह अट्ठ सु[7]गव्वह दिन्न ॥
नयौ सिर आनि सु डुंगह देव। गह्यौ पहु जंगल सूर समेव ॥
छं० ॥ १७३६ ॥

(१) ए. कृ. को.-कच्छुर। (२) ए. कृ. को.-दुप्पहर।
(३) मो.-वस्त्र रत्ते सु। (४) ए. कृ.-पर।
(५) ए. कृ. को पिंड रत हिये न साने।
(६) ए. कृ. को.-मच्यौ। (७) ए. कृ. को.-गत्तह।

भुवनाह राज सु जंगह अग्ग। कढ़ी करनट्टिय सिंघ सु बग्ग॥
तुरंगम पंति पयद्दल सक्क। जु सज्जिय अग्गह सह सरक्क॥
छं० ॥ १७३७ ॥

धमक्किय धोम निसानन नद्द। झनक्किय कातर सिंधु असद्द॥
षहं मँडि सिंधुअ हुंपुर रेन। गहग्गह बच्च क्रम्यौ सब सेन॥
छं० ॥ १७३८ ॥

उलट्टिग सिंधु सपंतिन अप्प। उरब्बिय सा अनु अंत कलप्प॥
मुरक्किय बग्ग सु जंगल राज। प्रगट्टित कोप [1]धुअं वर गाज॥
छं० ॥ १७३९ ॥

चह चह चंब तरं रन तूर। सु रब्बर संघ सजे घन सूर॥
मिले पहु जंगल सेन सु पंग। मनों मिलि सागर संग सु गंग॥
छं० ॥ १७४० ॥

जगे रस तामस नग्गिय षग्ग। मनों रस हारि जु आरिय लग्ग॥
झरझ्झर वज्जिय धारनि धार। मनों ससि क्रक्कसि तुट्टिय तार॥
छं० ॥ १७४१ ॥

लगे मुष नाग सकत्ति न भेरि। मनों गजराज बजावत भेरि॥
हयद्दल पैदल दंतिय एक। लगे कर आवध सावध केक॥
छं० ॥ १७४२ ॥

झरझ्झर सेन झनक्किय झार। धरद्धर लुथ्थि [2]ढरें धर भार॥
[3]कढी चहुआन कमान सु बंक। मनों षह सेन सु बीय मयंक॥
छं० ॥ १७४३ ॥

पृथ्वीराज की कमान चलाने की हस्तलाघवता।

दूहा॥ कढि कमान असमान घन। मंडि चमंकिय बीज॥
मनों काल की जीभ ज्यों। झुकि कढ्ढी करि षीजि॥
छं० ॥ १७४४ ॥

तमकि तेज कोवंड लिय। जंगल वै जुध वान॥
असी लष्ष दल तुच्छ गनि। न्याइ बँध्यौ सुरतान॥ छं० ॥१७४५॥

(१) ए. कृ. को.-धुअंमर। (२) ए. कृ. को.-धरै। (३) ए. कृ. को.-चढी।

पृथ्वीराज का जैचन्द पर बाण चलाने की प्रतिज्ञा करना और संयोगिता का रोकना।

कवित्त ॥ कहै राज प्रथिराज। सुनहि संयोगि सु [1]लष्षिन ॥
आज हनों जैचंद। दंद ज्यौं मिटै ततष्षिन ॥
पिता मरन सुनि डरिय। करिय अरदास जोरि कर ॥
मोहि पंग बग सीस। कंत किज्जै सु प्रेम धर ॥
मन्नेव बचन संयोगि तब। चल्यौ राज अग्गे विमन ॥
कलहंत नारि जानिय सु चित। मिटै न गंध्रब कौ वचन ॥
छं० ॥ १७४६ ॥

पृथ्वीराज के घोड़े की तेजी।

दूहा ॥ असी लष्ष दल उप्परै। नंषि वाजि प्रथिराज ॥
धरनि फट्टिकै गगन तुटि। भरकि सु कायर भाजि ॥ छं० ॥१७४७॥

चहुआन की तलवार चलाने की हस्तलाघवता।

चोटक ॥ [2]चहुआन कमानति कोपि करं। पघनं पघनं प्रिथिराज बरं ॥
जिहि लष्ष असी दल तुच्छ करौ। दल गाहि नरिंद जु मंझ फिरौ॥
छं० ॥ १७४८ ॥

बहि बान कमान धुंकार बजी। कि मनों बर पुब्बय मेघ गजी ॥
सर फुट्टि सनाहन भेदि परी। नर हथ्थ तरंगनि जुड्ड [3]तरी॥
छं० ॥ १७४९ ॥

चहुआनति मुष्षहि बीर चढ़ी। सर नंषि तहां किरवान कढ़ी ॥
लगि राज उरं किरवान कटी। कि मनों हरि पै तड़िता वि छुटी॥
छं० ॥ १७५० ॥

चहुआन बही किरवान बरं। सु परे अरिषंड विषंड धरं ॥
अरि ढाहि परे गजराज मुषं। सु बहै [4]तिन बान कमान रुषं ॥
छं० ॥ १७५१ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-लंच्छन। (२) यह पंक्ति मो.प्रति में नहीं है।
(३) मो.-करी। (४) मो.-नित।

कटि सुंडि सु नेनन दंत कटी । सु मनों तड़िता घन मद्धि छुटी ॥
सु॰परे धर बीरति पंग भरं । प्रथिराज जयज्जय चंपि बरं ॥
छं॰ ॥ १७५२ ॥

सुकरी अरि [1]अप्प विडारत गज्ज । मनों बन आरिन जानि धनज्ज॥
ढहै गज ढाल सु झंडहि झारु । मनों फल भारह तुट्टिय डारु ॥
छं॰ ॥ १७५३ ॥

ढह्यौ घन घाव सु डुंगह देव । भुवन्नह राव पर्‌यौ घह घेव ॥
भरक्किय सेन सु भग्गिय पंति । परे दह तीन सहस्सह दंति ॥
छं॰ ॥ १७५४ ॥

परे धर बीर सु पंग भरं । प्रिथीराज जयज्जय चंपि बरं ॥
छं॰ ॥ १७५५ ॥

सात घड़ी दिन शेष रहने पर पंगदल का छिन्न भिन्न होना देख कर रयसलकुमार का धावा करना।

कवित्त ॥ घरिय रस्स रवि सेष । भयौ कलहंत ताम भर ॥
वज्र घात सामंत । अग्गि लग्गी सु षग्ग झर ॥
हलहलंत दल पंग । दंग चहुआन जान [2]भय ॥
तब आयौ रयसल्ल । बिरद भैरुं सु भूत रय ॥
हाकंत हक्क बर उच्चरिग । अतुल पान आजान हुअ ॥
कमधज्ज लग्गि कमधज्ज छल । बीर धीर विजपाल सुअ ॥
छं॰ ॥ १७५६ ॥

पृथ्वीराज के एक एक सामंत का पङ्ग सेना के एक एक सहस्त्र वीरों से मुकाबला करना ।

दूहा ॥ सहस बीर भर अप्प बर　इक इक रष्षै रिंघ ॥
संभरि जुध सामंत सम । मनों लग्गि सम सिंघ ॥ छं॰॥१७५७॥

घमासान युद्ध वर्णन ।

(२) ए. कृ.-को.-अप्प ।　　　　(३) ए.-कृ.-को. भुव ।

पद्धरी ॥ लग्गे सु सिंघ सम सिंघ धाइ। चहुआन सूर कमधज्ज राइ ॥
झाकंत मत्त भारंत तेक। इम संत रत्त इलि चलन एक ॥
छं० ॥ १७५८ ॥

गय नभ्भ सूर रुधि रत्त भौन। पसरै मरीच नह मझ्झि तौन ॥
संचार क्रम्म सद्दी न व्योम। धुंधरिग धाम दह दिग्ग धोम ॥
छं० ॥ १७५९ ॥

पावै न मध्य गिद्धी पसार। भिहै न अन्य षहु अड्ड चार ॥
[1]दृषंत सूर [2]कौतिग्ग सोम। नारह आनि अध निरषि व्योम ॥
छं० ॥ १७६० ॥

षह चरह सुद्ध सुझ्झै न कंक। घन घुरह षेह पूरित पलंक ॥
अच्छरिय रथ्थ रुद्धंत सीस। पावै न वरन इच्छंत ईस ॥
छं० ॥ १७६१ ॥

पत्तौ सु काल रयसह्ल रूप। गह गह चवंत चहुआन भूप ॥
भौ तिमिर धुंध सुझ्झै न भान। प्रगटै न अप्प त्रिग अप्प पान ॥
छं० ॥ १७६२ ॥

दिष्षहि न सूर सामंत राज। संग्रहौ सह दल सकल साज ॥
सद्यौ सु कन्ह सामंत इह। हो जैत राव जामानि जह ॥
छं० ॥ १७६३ ॥

निडुरह सिंघ सुनि अत्त ताइ। सुझ्झै न ईस सौधौ सु राइ ॥
वंच्यौ सु सूर चौरंगि नंद। लष्यौ सु राज अरि लष्ष वृंद ॥
छं० ॥ १७६४ ॥

वंच्यौ सु कन्ह धुअ गेन धार। गय पंग ढारि बंधौ सु पारि ॥
क्रम्यौ सु श्रवन सुनि अगताइ। भोंहौ सु धीर धरि तोन धाइ ॥
छं० १७६५ ॥

हलकंत सथ्थ सामंत तार। मानहु क्रमंत हरि दंत भार ॥
विहथंत कोपि वाहंत.कोन। भिहंत सिंधु उड्डंत श्रोन ॥
छं० ॥ १७६६ ॥

प्रगटंत झाक पावक [3]धोम। किलकंत घूंटि संठी सु व्योम ॥

(१) ए. कृ. को. देषन्न। (२) मो.-कौतिक्क। (३) ए. मो.-धोम।

धमकंत नाग धर असि उसंध । चइकंत कंध कूरंम बंध ॥
छं० १७६७ ॥

घर तुट्टि धरनि पल पलनि पंक । तन खन अवन अहमान संक ॥
गय ढार सार सुषमत्त भार । प्रगटंत मद्धि दुअ दल पगार ॥
छं० ॥ १७६८ ॥

रुक्कंत पारि पंगुरह सेन । निरषंत स्वामि सामंत नेन ॥
*　*　*　*　*　*　छं० ॥ १७६९ ॥

नवमी के युद्ध का अंत होना ।

दूहा ॥ संझ सपत्तिय न्रप तिरन । बिय पारस पर कोट ॥
रहै सूर सामंत जकि । देषि न्रपति तन चोट ॥ छं० ॥ १७७० ॥
दोइ बर अश्वनि पष्परह । दुअ न्रप इक संजोइ ॥
इह अवस्थ अंषन लषी । इम जीवन न्रप तोइ ॥ छं० ॥ १७७१॥

सामंतों का कहना कि अब भी जो बचे हैं उन्हें लेकर दिल्ली चले जाओ ।

इह कहि न्रप लग्गे चरन । सांई दिष्यत अंषि ॥
[1]जाहु सुजीवत जानि घर । पंच सु बीसह मंषि ॥ १७७२ ॥
जीत हारि न्रप होत है । अरु हांसी दुज्जन लोग ॥
जुरि धर अद्ध निरद्ध किय । अब जंगल वै भोग ॥ छं० ॥ १७७३ ॥

नवमी के युद्ध में तेरह सामंतों का मारा जाना ।

सविता सुन दिन जुद्ध बर । भौ रस रुद्र [2]समंत ॥
होत संझ नवमिय दिवस । परे तेर सामंत ॥ छं० ॥ १७७४ ॥

मृत सामंतों के नाम ।

कवित्त ॥ परे रेन रावत्त । राम रिन अंग अंग रस ॥
उठत इक धावंत । पंच वाहंत बीर-दस ॥
बलि बारड मोहिल । मयंद मारुअ मुष मध्ये ॥
आरेनो अरि लंघि । पंग पारस दल षद्धे ॥

(१) ए. कृ. को.-जाह सु जीवत ।　　(२) ए.-समात ।

नारेन बीर बंधव बरन । दिव देवान [1]गौ देवरी ॥
कलहंत बीज सामंत मुष । रह्यौ स्वामि सिर सेहरौ ॥छं०१७७५॥

संध्या को युद्ध बंद होना ।

दूहा ॥ संझ सपत्तिय रत्ति भर । फुनि सज्जै दल पंग ॥
चलिग पंति [2]पहु पंग मिलि । जुद्ध भरनि किय जंग ॥
छं० ॥ १७७६ ॥

पंग सेना के मृत रावतों के नाम ।

कवित्त ॥ कमधज्जह रयसल्ल । बिरद भेंरू सु भूत गहि ॥
कर नांटिय किय सोर । राग सारंग थट्ट थहि ॥
सु पहु गुंड सु ग्रीव । राव बग्घेल सिंघ बर ॥
मोरी [3]का सु मुकंद । पुट्ठि भौमेह पंति धर ॥
न्रप कन्ह राव मरहट्ठ वै । हरिय सिंघ [4]हथनेव पर ॥
नरपाल राव नेपाल पति । राइ सल्ल क्रमि लै समर ॥
छं० ॥ १७७७ ॥

नवमी के युद्ध की उपसंहार कथा ।

विज्जुमाला ॥ नवमिय [5]सूरन सूर । बज्जिग विषम तूर ॥
गहन [6]गड्डन पंग । बज्जिग सज्जिग जंग ॥ छं० ॥ १७७८ ॥
तरनि सरनि सिंधु । धरनिनि मिर धुंध ॥
संचार गौ मय बानि । झलकि सज्जित जानि ॥ छं० ॥ १७७९ ॥
सघन जुग्गन जूप । प्रगटित पहुमि रूप ॥
सज्जित सु चहुआन । करषि कर कम्मान ॥ छं० ॥ १७८० ॥
रजति रामठि संक । मनहु लेयन लंक ॥
घुट्टि छग्गुन कंन । बहिया तुरंग [7]तंन ॥ छं० ॥ १७८१ ॥
पष्षर सब्बर सार । प्रगटि उरनि पार ॥
सनमुष पंग सेल । सहित सूरन ठेल ॥ छं० ॥ १७८२ ॥

(१) ए. कृ. को. गयौ । (२) ए. कृ. को-पहुपंति ।
(३) मो.-पाम । (४) मो. हथनेर । (५) मो.-सूअन ।
(६) ए. कृ. को.-गन । (७) ए. कृ. को.-छंन ।

बहिग विष्षम सार। प्रगटि उरम्मि पार॥
धाए धार लगि भार। धरनि धर सुद्दार॥ छं०॥ १७८३॥
रयसल्ल लष्षिय राज। क्रमि गहनं भु साज॥
लषि सम रज धाय। आइ लगि अततार॥ छं०॥ १७८४॥
[1]हय होय सिंगी भार। नष्यौ जु पूर परार॥
उहिग क्रमि सु हूअ। मंडि गज सिंघ [2]रूअ॥ छं०॥ १७८५॥
रयसल्ल परे पिष्षि। क्रमे गह राज रिष्षि॥
मिली कन्ह अत्ता ताइ। रिषि रन रुक्कि राय॥ छं०॥ १७८६॥
परे दह सत्त घाइ। सघन घइ अप्प आइ॥
परे अन्न भूय पिषि। भोग सेन सब लषि॥ छं०॥ १७८७॥

पंग सेना का पराजित होकर भागना तब शंखधुनी योगियों का पसर करना।

दूहा॥ भगे सेन विजपाल नृप। लषि भै तामस राइ॥
सहस एक भर संब धर। कहि हय छंडि रिसाइ॥ छं०॥ १७८८॥
बाते संष त्रिरह धर। बैरागी जुध धीर॥
स्नूर संष त्रिप नामि सिर। भर पहु मज्जन भीर॥ छं०॥ १७८९॥

शंखधुनी योद्धाओं का स्वरूप वर्णन।

कवित्त॥ पवंग मोर पष्षरह। मोर ग्रीवत गज गाहिय॥
मोर टोप टट्टरी। मोर मंडित संनाहिय॥
मोर माल उर संष। संक छंडिय भय भग्गिय॥
धार तिथ्थ आदरिय। पंग सेवहिं बैरागिय॥
तिहि डरनि डारि घंसै। तिनहिं नित राज अग्गे रहै॥
हल हलत सेन सामंत भय। मुक्कि मुक्कि अप्पन कहै॥ छं०॥ १७९०

पृथ्वीराज का कवि से पूछना कि ये योगी लोग जैचन्द की सेवा क्यों करते हैं।

दूहा॥ रिषि सरूप संषह धुनिय। अति बल पिथ्थ कहंद॥
बैरागी माया रहित। किमि सेवै जयचंद॥ छं०॥ १७९१॥

(१) मो.-हय हाय संगे झार। (२) ए. कृ. को.-सूअ।

कविचन्द का शंखधुनियों की पूर्व्व कथा कहना ।

कहत चंद प्रथिराज । ए सब रिषि अवतार ॥
मुनि नारद [1]परबोध भौ । कथ्थ सुनहु विस्तार ॥ छं० ॥१७९२॥

तैलंग देश का प्रमार राजा था उसके रावत लोग उस से बड़ी प्रीति रखते थे ।

कवित्त ॥ सहस एक सुधवंस । सहस एकह धर सोहै ॥
सेवा करत तिलंग । लष्ष दस सस्च अरोहै ॥
एक सहस वाजिच । समुद तट सेवा सद्धै ॥
वपु सु वज्र चित वज्र । एक निरलेप अरद्धै ॥
सब एक जीव तन भिंन भिम । बंस छत्तीस अषाढ़ सिध ॥
पामार तिलंग हरि सरन हुअ । कुल छतीस धर दान दिध ॥
छं० ॥१७९३ ॥

उक्त प्रमार राजा का छत्तीस कुली छत्रियों को भूमि भाग देकर बन में तपस्या करने चला जाना ।

न्टप केहरि कंठेर । राइ सिंधुआ पाहारं ॥
रा पछार परताप । पत्त इंडौर सु धारं ॥
राम पमार तिलंग । जेन दिन्निय वसुधा दन ॥
उज्जैनिय चक्कवै । करै सेवा तिलंग जन ॥
सह सेक सुभट सब एक [2]सम । जब तिलंग परलोक गय ॥
छषीन दान दिन्नौ तबहि । सहस सुभट बनवास लय ॥
छं० ॥ १७९४ ॥

दिय दिल्ली तोंवरन । दई चावंड सु पट्टन ॥
दय संभरि चहुआन । दई कनवज कमधज्जन ॥
परिहारन मुर देस । सिंधु बारड़ा सु चालं ॥
दै सोरठ जद्दवन । दई दच्छिन जावालं ॥

(१) मो. परमोद । (२) ए. कृ. को.-मन ।

चरना कच्छ दीनी करग। भट्टा पूरब भावही ॥
तब गए न्रपति बंटै धरा। गिरिजापति माला गही ॥ छं०॥१७९५॥

राजा के साथी रावतों का भी योग धारण कर लेना।

दूहा ॥ एक सहस रिष रूप करि। अजपा जपै सु नाम ॥
बन षंडह विस्राम किय। तप तप्पत तिन ठाम ॥ छं०॥१७९६॥

ऋषियों का होम जप करते हुए तपस्या करना।

पद्धरी ॥ रिषि मंगि आइ सुर धेन ताम। दीनी सु इंद्र बर होम काम ॥
रिषि तास दूध [1] बर करै होम। संच पत होइ तिन सुरभ धोम ॥
छं० ॥ १७९७ ॥

अध्याय अधिन आजंन जप्प। रिषि करै सब्ब उन क्रष्ट तप्प ॥
तहं करत दैत्य बहु बिघन [2] नित्त। भष्षौ सु गाव वच्छी सहित्त ॥
छं० ॥ १७९८ ॥

एक राक्षस का ऋषि की गाय भक्षण कर लेना और ऋषियों का संतापित होकर अग्नि में प्रवेश करने के लिये उद्यत होना।

विअष्षरी ॥ रिषि तहां बसै उभै सत वर्षं। राक्षस तहां धेन बछ भष्षं ॥
कोपवंत रिषि हुए सु भारी। सब मिलि अगनि प्रवेस विचारी ॥
छं० ॥ १७९९ ॥

इह उतपात चिंति नारद रिषि। आयौ तिन आश्रम्म समह सिषि ॥
अरघ पाद सब्बह मिलि किन्नौ। मुनि सुष पाइह औ आधिन्नौ ॥
छं० ॥ १८०० ॥

नारद मुनि का आना और सब योगियों का उनकी पूजा करना।

दूहा ॥ रिषि आवत नारद मुनि। लग्गे सब्बह पाइ ॥
फनपत्ती से द्रिष्ष करि। चरन पषालै आइ ॥ छं० ॥ १८०१ ॥

(१) ए. दूध।　　(२) मो. वित्त।

नारद मुनि का योगियों को प्रबोध करना।

दूहा ॥ मुनि प्रबोध मुनिजन कियौ। प्रति राक्षस कृत साप ॥
सो तुमकों लग्यौ सबै। तब रिषि लग्गे ताप ॥ छं० ॥ १८०२ ॥

नारद का कहना कि तुम जैचन्द की सेवा करो वहां तुम युद्ध में प्राण त्याग कर साक्षात मोक्ष पावोगें।

विघ्नध्वरी ॥ नारद रिषि उच्चरै सु बत्तं। सुनौ सबै इह इक करि चित्तं ॥
फिरि रिषि राज सु आयस दिद्धं। करौ तपस्या साधक 'सिद्धं ॥
छं० ॥ १८०३ ॥

वरष बीस तुम तप्प सु तप्पे। एक चित्त करि अजया जप्पे ॥
तुम ही छत्री जाति सबै मुनि। तिहि आचरौ धार तीरथ फ,नि॥
छं० ॥ १८०४ ॥

और तप्प बहु काल अभ्यास। इंद्री डुलै सबैं भ्रम नास ॥
धार तिथ्य आदरै जु षत्री। सुष में पावै मुगति तुरत्ती ॥
छं० ॥ १८०५ ॥

धार तिथ्य पहिलै छत्री ध्रम्म। भू पर सबै और जानौ भ्रम ॥
कहौ कौन इम सों जुध आवै। देषत दूरिहु तें जरि जावै ॥
छं० ॥ १८०६ ॥

जग मध्ये जयचंद कमंद न्रप। अवनी उप्पर ताम महा तप ॥
मानों इंद्र सरूप विचारं। आयौ प्रथी उतारन भारं॥छं०॥१८०७॥
ता रिपु एक रहै चहुआंनं। अवर सबैं न्रप सेवा मानं ॥
संभरि वै दिल्ली पति रज्जं। सौ सामंत सेव तिन सज्जं ॥
छं० ॥ १८०८ ॥

सो ढुंढा अवतारी भारी। ते तुम संमुह मंडै रारी ॥
जाउ तुम सेव जयचंदं प्रति। एक लष्प गढ़ तिन घर सोहति ॥
छं० ॥ १८०९ ॥

---

(१) ए. कृ. का.-चित्त।

लष्ष असी तोषार पलानै । अग मध्ये तीनूं पुर आनै ॥
रषि सुनि बैन सबैं सुष पायौ । अच्छौ गुर उपदेस बतायौ ॥
छं० ॥ १८१० ॥

कवि का कहना कि ये लोग उसी समय से जैचन्द की सेना में रहते हैं ।

दूहा ॥ रिषि आयस मंन्यौ सु रिष । संष चक्र धरि साज ॥
दिन प्रति सेवै गंग तट । सुनि विजपाल सु राज ॥ छं० ॥ १८११ ॥
मोर चंद्र मध्ध्यै धरिय । जटा जूट जट बंधि ॥
संष बजावत सब्ब भर । सेवैं जाइ कमंध ॥ १८१२ ॥

नारद ऋषि का जैचन्द के पास आना और जैचन्द का पूछना कि आपका आना कैसे हुआ ।

विअष्षरी ॥ धुज्जै भूमिरु अंबर गज्जै ।तीन लष्ष वाजित्र धुनिज्जै ॥
तुट्टि अकास तीन पुर भग्गै । जोग मायथौ जोगिनि जग्गै ॥
छं० ॥ १८१३ ॥

है षुर रज ढंकियैं सु अंबर । चढ़ै कमंध करि मेघाडंबर ॥
लष्ष पचास पड़ै हय पष्षर । हुअ मैदान मेर से भष्षर ॥
छं० ॥ १८१४ ॥

अग्गै जल पच्छै मिलि पंकं । मर वर नदी लादि सों ठंकं ॥
पानी थान षेह उड्डै बहु । अंत कलप्प दूसी सुनियै कहु ॥
छं० ॥ १८१५ ॥

दस दिगपाल परै भंगानं । मानव संस देव संकानं ॥
इन आडंबर चढ़ि कमधज्जं । आतपत्र ढंक्यौ उडि रज्जं ॥
छं० ॥ १८१६ ॥

यौं जयचंद तपै तट गंगा । नाम सुनंत छोड़ अरि पंगा ॥
नारद मुनि आये तिन ठामं । पंग उट्ठि तब कीन प्रनामं ॥
छं० ॥ १८१७ ॥

कुसल पुच्छि बहु सुष रिष किन्नं। चरन सु रज मस्तक न्वप दिन्नं॥
किन कारन आए पुच्छै न्वप। भाग अज्ज मो नगर आय अप॥
छं० १८१८॥

रिष्य कहै संभलि न्वप राजं। सावधान मन करे समाजं॥
* * * । * * * छं० ॥१८१९॥

नारद ऋषि का शंखधुनी योगियों की कथा कह कर राजा को समझाना कि आप उनको सादर स्थान दीजिए।

दूहा॥ नाद सु नारद जंपि इह। सुनि जैचंद विचार॥
सहस एक पिचौ सु तन। सेवक तिलंग पवार॥छं०॥१८२०॥
जीव एक देही उभय। अवतारी रजपूत॥
जब पवांर परलोक गय। गह्यौ भेष अवधूत॥ छं०॥ १८२१॥
सागर तट तप सह्यौ। बरष उभै सित एह॥
होम धेन राक्षस हतौ। तिन डर डरौ सु देह॥ छं०॥१८२२॥
सब मिलि मरन विचारयौ। अगनि प्रवेस कुमार॥
उभय भाग रिषि राज सुनि। हूं आयौ तिन बार॥ छं०॥१८२३॥
दहन बरज्ज्यौ बोध दै। धारा [1]तिथ्थ सु संत्ति॥
वेद पुरान प्रमान जुग। दस अट्ठह [2]संम्रत्ति॥ छं०॥१८२४॥
स्लोक॥ जीविते लभ्यते लक्ष्मी। मृते चापि सुरांगणा॥
क्षणं विध्वंसिनी काया। का चिंता मरणे रणे॥ छं०॥१८२५॥
कवित्त॥ मुनि प्रबोध मन मानि। रिष्पि आये तुम पासं॥
धारा तीरथ आदि। तहां साधन किन्न आसं॥
मोर पंष जट मुगट। सिंगि संग्राम सु धारै॥
मोह देह सब रहित। मरन दिन अंत विचारै॥
कलहंत वार मिलकंत न्वप। संष नाद पूरंत सर॥
जैचंद सेव आये सबै। [3]एक जीव उभया सु हर॥छं०१८२६॥

(१) ए. कृ. को. तीरथ। (२) मो.-सुमृत्त।
(३) मो.-"एक जीव उरभया, सुहर"।

नीसानी ॥ बषत बड़े कनवज्ज राय रिषि तेग गहाई ।
संषधुनी सहसेक न्रप हुये जु सहाई ॥
जब चल्लै संष सह दै गिरि मेर ढहाई ।
लष्ष असी मधि देषियै नारद बरदाई ॥
ए अवतारी मुनी सबै पूरब पुनि पाई ।
जब कोपे करि वार सै पुर तीन ढहाई ॥
ए पराक्रमी सूरिमा हर उमया जाई ॥ छं० ॥ १८२७ ॥

कबि का कहना कि तब से जैचन्द इन्हें अपने भाई के समान मान से रखता है ।

दूहा ॥ राज पंग पय लग्गि करि । सब रष्षे निज पास ॥
लष्ष एक देही लहै । पुज्जै द्वादस मास ॥ छं० ॥ १८२८ ॥
अति बर न्रप आदर करै । जेठा बंधव जोग ॥
तिनहि राज रष्षह रहै । ते छुटि अज जुध भोग[1] ॥
छं० ॥ १८२९ ॥

जैचन्द की आज्ञा पाकर शंखधुनियों का प्रसन्न होकर आक्रमण करना ।

कवित्त ॥ न्रिप केहरि कंठेर । राय परताप पट्ट चह ॥
सिंधुअ राय पहार । राम षम्मार थट्ट थह ॥
कट्ठिय आम सुकाज । पत्त गुडीर नरत्ता ॥
पह परबत पाहार । रहै सांषुला सुमत्ता ॥
अन्नेक सेव पति संष धर । सहस एक बिन मोह मत ॥
अग्या सुपंग किल क्रंत क्रमि । अप्प अप्प मुष उप्परत ॥
छं० ॥ १८३० ॥

शंखधुनियों का पराक्रम ।

हय हय हय आयास । केलि सज्जी सुव्योम सिर ॥
किल किलंत का मक्कि । डक्क बज्जी सुहंस हर ॥

(१) मो.-जोग ।

ओर राह पति संघ । हक्कि असि ताईय तत्ते ।
मनहुं घात निघ्घात । पत्ति सामंत सुसत्ते ॥
इम संत सेन अम्भय उभय । चाहुआन कमधज्ज कस ॥
उच्चरिग आन अप अप्प मुष । रुक्कि धार रत्ते सुरस ॥
॥ छं० ॥ १८३१ ॥

युद्ध की शोभा और बीरों की वीरता वर्णन ।

विज्जुमाल ॥ पैद्लह मंत रत्त । जु गुर सुलह जुत्त ॥
बंचित सुचंद छंद । विज्जुमालवि वंद ॥ छं० ॥ १८३२ ॥
विमल सकल व्योम । रजति सिरन्नि सोंम ॥
[1]प्रगटि ताम सपंग । इलि मिलि झिलि गंग ॥ छं० १८३३ ॥
सुरत सेन सुलष्पि । निरषि परषि पिष्पि ॥
विहसि ढ़िग्ग करूर । बाजित बिंब तूर ॥ छं० ॥ १८३४ ॥
मुंछति निरति भोंह । भोंह दु कुंतल सोंह ॥
दल सु समुद रूप । अचवन अगस्ति रूप ॥ छं० ॥ १८३५ ॥
हाकंत संघ सुधार । वहत बिषम सार ॥
धार धार लगि धार । भररंत तुट्टौ भार ॥ छं० ॥ १८३६ ॥
किननंत सिर निसार । अचल मनु आधार ॥
हवकि हवकि संग । अनी अनी लगि अंग ॥ छं० ॥ १८३७ ॥
बिहल कराल कूप । क्रिपित कोल सरूप ॥
बानैत संघ समंत । अरिग हूकर अंत ॥ छं० ॥ १८३८ ॥
सु वचि सामंत राज । अप अप इष्ट साज ॥
सुमिरंत बीर मंत । आइग सब सुनंतः ॥ छं० ॥ १८३९ ॥
रुकित सु तोन धारि । कढ्ढिग सिरनि सार ॥
धरनि सु धर धार । हक हाक बजि भार ॥ छं० ॥ १८४० ॥
नंचित चीर षंग । थइ थेई थंग ॥
घन नंक सघन घंट । किलकंत [2]गोम कंट ॥ छं० ॥ १८४१ ॥
गिधिय अंत गहेस । अंत सु लगिय तेस ॥

(१) ए. कृ. को प्रगटित ताम संग । (२) मो.-मोम ।

मनों बल बाला रंग। उघरंत चारु चंग ॥ छं० ॥ १८४२ ॥
सुरचि जठ्ठर सार। अद्धध उद्ध विहार ॥
फर फर टरे फेफ। परति [1]पंषी रेफ ॥ छं० ॥ १८४३ ॥
हकित सिर विकंध। नचित धर कमंध ॥
नचित रुचि अटाल। संचि सिरनि माल ॥ छं० ॥ १८४४ ॥
सकति अघाइ घोर। बजि राग घंट रोर ॥
रमित रस सुभंद। आनंद चिल्हय ब्रंद ॥
चुंगल ग्रहंत पल। चुंच बल लै कमल ॥ छं० ॥ १८४५ ॥

शंखधुनी योगियों के साम्हने भौंहा का घोड़ा बढ़ाना।

दूहा ॥ बजत संष दह सत्त। सघन नीसान धुनक्किय ॥
पावस रिति आगमन। सिषर सिषि जानि निरत्तिय ॥
तिन अमित्त पौरष्य। सहस सामंत विअष्यिय ॥
निठ्ठुरंजैत नरिंद। स्वामि अग्गौ धपि दिष्यिय ॥
हहकारि सीस भौंहा सुभर। गहि अकास नंच्यौ स हय ॥
उड़ मंडल उत्त निरष्ययौ। मनो बाज पंषी सु[2]भय ॥छं०१८४६॥

मांसभक्षी पक्षियों का बीरों के सीस ले ले कर उड़ना।

दूहा ॥ रुंड मुंड पल षंड [2]भुअ। मचि योगिनि बेताल ॥
चिल्हनि भष जंबुक गहकि। हर गुंथी गल माल ॥ छं०१८४७ ॥
लै चिल्ही अम्मिय सुभर। हैं हर मिट्ठी रूप ॥
बीर सीस चुंगल चंपे। गय [3]ग्रधंम अनूप ॥ छं० ॥ १८४८ ॥

एक चील्ह का बहुत सा मांस ले जाकर चील्हनी को देना।

कवित्त ॥ लै चिल्हन सिर बीर। बीर भारथ्थ देषि भर ॥
को तर पर तिह थान। विषम प्रब्बत सु रंग बर ॥
उंच छ्च्छ बट अति सु रंग। पंष [4]घूंसल अध विच्चं ॥

(१) ए. कृ. को.-पंषीं। (२) ए. कृ. को.-हुअ।
(३) ए. कृ. को.-ग्रहधन्न। (४) ए. कृ. को.-घूंसन।

तिहिं सु तट्ट चौसट्ठि। देषि आरंभन रब्बं ॥
जिम जिम सु सीस मष्षन कियौ। तिम तिम सुभष्षै तीन भुष ॥
पल भष्षत छुट्ट भष्षित सकल। आनंदी पंषी सुनिय॥छं०॥१८४९॥

चील्हनी का पति से पूछना यह कहां से लाए।

दूहा ॥ आनंदी पंषी सकल। चिल्हानी पुछि कंत ॥
कहि कहि गल्ह सु रंग बर। सुष दुष जीवन अंत ॥छं०॥१८५०॥
चिल्हानी बुलि पत्ति सों। [1]ऊमंती बरजंत ॥
बड़ गुरजन बत्ती सुनी। सो दिट्ठी दिषि कंत ॥ छं० ॥ १८५१ ॥

चील्ह का कहना कि जैसा अपने पुरुषों से प्राचीन कथा सुनता था सो आज आखों देखी।

कवित्त ॥ पुब्ब सुन्यौ बर कंत। जुद्ध बलि राइ इंद्र बर ॥
तिपुर युद्ध संकरि विरुद्ध। भारथ्थ पंड भर ॥
चंद जुद्ध तारक्क। कन्ह समिपाल लंक रघु ॥
जरासिंध जद्दवनि। दच्छ नंदी जु जगी अघु ॥
हरि जुद्ध बीर [2]बीत्यौ असुर। पुब्ब सेन जंप्यौ सुनिय ॥
दिट्ठौ सु कंत भारथ्थ मैं। पुब्ब पच्छ अब नह सुनिय ॥१८५२॥

चील्हनी का पूछना किस किस में और किस कारणवश यह युद्ध हुआ।

स्लोक ॥ कस्यार्थे कंत भावीति। बरणं कस्य सुंदरी ॥
कस्य वैर विरुद्धं सौ। कस्य कस्य पराक्रमं ॥ छं० १८५३ ॥

चील्ह का सब हाल कहना।

जग्य वैर विरुध्वंसौ। बरनं क्रत्य रंभयौ ॥
प्रथीभारो पंगराजा। जोधा जोधंत भूषनं ॥ छं० ॥ १८५४ ॥

चील्ह का चील्हनी से युद्ध का वर्णन करना और उसे अपने साथ युद्ध स्थान पर चलने को कहना।

(१) ए. कृ. को-उमगती। (२) मो.-चित्यौ।

चौपाई ॥ [1]लुथ्थी लुथ्थि पुलथ्थि प्रमानं । भर बजि गज्जि बीर छुटि थानं॥
हेरे संमर रंभ हकारी । कहो कंत मो पन उच्चारी ॥छं०१८५५॥

दूहा ॥ सुनि विवाद चिल्हो सु वर । धुनि सुनि वर भारथ्थ ॥
उमा कंति चौसट्ठि दिय । रंहि मसु पुच्छिय कथ्थ ॥छं०॥१८५६॥

पद्धरी ॥ [2]उच्चरी चिल्ह भारथ्थ कथ्थ । चौसट्ठि सुनो सुनि कंत तथ्थ ॥
नर भिरैं जुद्ध देवनि मसान । उत मंग गुरें हकि सीस पान ॥
छं० ॥ १८५७ ॥

सुनि दिव्व दिव्व जुद्धह सयंन । षग षगति जुद्ध बन नित्तबंन ॥
रथ रथनि रथ्थ गज भंजन जुट्ट । बाजीन बाजि नर नंर अहुट्टि॥
छं० ॥ १८५८ ॥

वर सुन्यौ देवि भारथ अपुब्ब । उहित्त बीर देषत सब्ब ॥
इह रित्त सब्ब बाजित्त सार । तन सिद्धि दिंत जोगिनि सु तार ॥
छं० ॥ १८५९ ॥

डमरु डक्क बज्जै [3]अजूप । तुंमर पिसाच पल चर अनूप ॥
गावंत गीत जुग्गिनिय [4]थान । आहत्त जुद्ध चर्म्मै न भान ॥
छं० ॥ १८६० ॥

नारद नद्द वैताल [5]डक्क । वर बैर रंभ फिरि बरैं चुक्क ॥
नच्चै कमंध हक्कंत सीस । पीसंत दंत बंभनी रीस ॥ छं०॥१८६१॥
आचिज्ज जुद्ध जो दिषत तथ्थ । उड़ि चलौ कंत चौसट्ठि मथ्थ ॥
* * * * । * छं० ॥ १८६२ ॥

कवित्त ॥ सुनत कंत आनंद । बीर आनंदैं चवसठी ॥
लै चिल्हनि चलि मेंथ्थ । जुद्ध पिष्षन दिवि उठी ॥
उठे सूर बल ग्रंह । बान अरजुन जिम विद्धत ॥
एक झार उभझार । एक संमुष [6]षग संधत ॥
तेगां अचंभ सुभझै [7]सपत । आरुथ्थौ प्रथिराज दिषि ॥

(१) मा.-लोथी लोथि । (२) को. उत्तरी ।
(३) मे.-अनूर । (४) ए. कृ. को.-गान ।
(५) ए.कृ.को रुक्क । (६) मो. मुष । (७) ए. कृ. को सयनु ।

मोहिनि संजोग पहुपंग सुर। भेंन रत्न बहुश्रान लिपि ॥
छं० ॥ १८६३ ॥

शंखधुनी योगियों के आक्रमण करने पर महा कुहराम मचना।

दस हजार बर मीर। पंग आयस फिरि अप्पिय ॥
छुटिय बान कम्मान। मेछ चावद्दिसि धप्पिय ॥
सबर सूर सामंत। बीर बीरं बिरुझानं ॥
गज्ज जिमी बर पत्त। पत्त झंकुरिश्रा षानं ॥
श्रावद्द बीर प्रथिराज बर। असम सिंह आहत्त बल ॥
लगि पंच बान उप्पर सु धपि। अगनित दल भंजै सु षल ॥
छं० ॥ १८६४ ॥

बड़ी बुरी तरह से घिर जाने पर सामंतों का चिंता करना और पृथ्वीराज का सामंतों की तरफ देखना।

दूहा ॥ दुतिय बेर सामंत फिरि। देषि श्रोन धर धार ॥
मन चिंता अति चिंतवन। ढिल्ली ढिल्ली पार ॥ छं० ॥ १८६५ ॥
कवित्त ॥ बान श्रोन प्रथ बीर। बाल देषी अग्गी हुश्र ॥
असन बीर बिच राज। बान उडुगन जु मद्धि धुश्र ॥
इसी लाह विप्फुरै। जानि लग्गै बिय अग्गा ॥
फिरि नंष्यै है राज। सूर साही नृप बग्गा ॥
मोरे सु मीर मोहिल्ल परिम। षग्ग मग्ग वोहिथ्य रिन ॥
बर कन्ह सलष भोंहा नृपति। फेरि त्रिपति दिष्यौ सु तन ॥
छं० ॥ १८६६ ॥

पृथ्वीराज के सामंतों का भी जी खोल कर हथियार चलाना।

सूर पत्त दित संभ। सूर चिंती रस मग्गा ॥
बन कट्ठी जल जलनि। राज अग्गा नन अग्गा ॥
अल्हन कुंअर नरिंद। कनक बड़ गुज्जर बीरं ॥
नृप अस्वंबन चली। राज अप्पौ लिय तीरं ॥

संजोगि पीय दंपति दुहनि । मुष ध्यालन आलस भिरिगि ॥
रवि मुदित चंद उग्गनि परह । फेरि पंग पारस फिरिग ॥
छं० ॥ १८६७ ॥

पृथ्वीराज का कुपित हो कर तलवार चलाना और बान बर्साना ।

झ,कित पंगु प्रथिराज । गहिय कर वार चंपि कर ॥
रोस मुट्ठि निस्सरिय । दंत बाही सु कुंभ पर ॥
धार मुत्ति आदरिय । पंति लग्गिय सुभ चौरहि ॥
मनहु रोस गहि षग्ग । ढाहि धारा धर नीरहि ॥
मनु द्वतिय चंद बद्दल बिचै । पंति लग्गि उड़गन रहिय ॥
धर धुकत मंत इम दिष्षियै । मनहु इंद्र बज्जह बहियछं० ॥ १८६८ ॥

दूहा ॥ पंग डंस चहुंआन बर । मंच संजोगि सु झार ॥
संझ पार सम्हौ अरै । अरि पंचन रिपुचार ॥ छं० ॥ १८६९ ॥

कवित्त ॥ परी निस्सि ससि उदित । सूर सामंत पंति फिरि ॥
उतरि न्त्रपति प्रथिराज । लघु अनिसंक अभंग करि ॥
उभै तुषार [1]तुधार । बान छुट्टै कमह बर ॥
[2]उभै बीर सम्हौ नरिंद । सोभै सुरंग भर ॥
लग्गौ सु नैन त्रिकुटी बिविच । टोप फट्टि कंठं[3] सु भगि ॥
प्रथिराज सु बल संभरि धनी । जै जै जै आयें सु लगि ॥
छं० ॥ १८७० ॥

दूहा ॥ उभै दिवस बित्ते सकल । गत घटिका निसि अग्ग ॥
जो पुच्छै दिवि सकल तू । सुनि भारथ्थ [2]समग्ग ॥ छं० ॥ १८७१ ॥

इसी समय कविचन्द का लड़ने के लिये पृथ्वीराज से आज्ञा मांगना ।

तीर तुबक सिर पर बहत । गहत नरिंद गुमान ॥
बरदाई तहां लरन कों । हुकम मांगि चहुआन ॥

(१) ए. कृ. को. निहार । (२) मो.-सुभग्ग । (३) ए. कृ. को.-लगि ।

पृथ्वीराज का कवि को लड़ाई करने से रोकना।

इम झूझत रजपूत रिन। जंपत संभरि राव॥
अमर किन्ति सामंत करन। बरदाई घर आव॥ छं०॥ १८७२॥

कविचन्द का राजा की बात न मान कर घोड़ा बढ़ाना।

किन्ति करन गुन उद्धरन। जल्हन पच्छ सु लज्ज॥
मोहि न्रिपति आयस करौ। ईस सीस द्यौ अज्ज॥ छं०॥ १८७३॥
बिन आयस प्रथिराज कै। धाय नंषयौ बाज॥
कौ रष्षै सुत मल्ह कौ। हूर नूर मुष लाज॥ छं०॥ १८७४॥

कविचन्द के घोड़े की फुर्ती और उसकी शोभा वर्णन।

लघुनराज॥ कविंद बाज नष्षयं। नरिंद चष्ष दिष्षयं॥
मनों नछिच पातयं। हु अंकि मद्धि राजयं॥ छं०॥ १८७५॥
पवंन बेग पाइसं। तुरंग कब्बि रायसं॥
न्रपत्ति अप्प पारषं। बियौ न कोइ आरिषं॥ छं०॥ १८७६॥
नचंत वै किसोरयं। हरै गुमान मोरयं॥
धरा ऐराक ठौरयं। लियौ सु वप्प तोरयं॥ छं०॥ १८७७॥
दियौ चुहान मौर को। समुद्द की हिलोर को॥
जरावयं पलानयं। अमोल पिट्ठ ठानयं॥ छं०॥ १८७८॥
मनो कि रथ्थ भानयं। कविंद जाचि आनयं॥
सु भंत अग्रकान के। मनों भलक्क बान के॥ छं०॥ १८७९॥
हरन्न सच्चु प्रान के। करे विरंच पानि के॥
हुती उपंम जोरयं। चिया सुनेन कोरयं॥ छं०॥ १८८०॥
कि भोर चित्त स्वेत की। गरब्भ फाफ केतकी॥
प्रफुल्ल चंद मौजयं। कि पंषुरी सरोजयं॥ छं०॥ १८८१॥
पवन्न हीन पिष्षयं। कि दीप जोति सिष्षयं॥
तमं दरिद्र भंजनं। गतंग हूम दभ्भनं॥ छं०॥ १८८२॥

सुभंत केस वालयं । सरित्त ज्यौं सेवालयं ॥
स्लम्ह कंध वक्क कौ । सगोल पुट्ठि चक्क कौ ॥ छं० ॥ १८८३ ॥
गिरद्द देत घुम्मरं । पलं इलंत भुम्मरं ॥
घुरं चमक्क उज्जलं । मनौं घनंम विज्जुलं ॥ छं० ॥ १८८४ ॥
बरन्न गात भौंर सौ । इलंत पुंछ चौंर सौ ॥
करंत फौज हीसयं । दिष्यौ कनौज ईसयं ॥ छं० ॥ १८८५ ॥
घुरं रजं तुरंगयं । उड़ंत जोर जंगयं ॥
किरन्न सूरं मंदयं । छुट्टंत तीर इद्दयं ॥ छं० ॥ १८८६ ॥
बजै निसान नद्दयं । गरज्ज ज्यौं सुमुद्दयं ॥
बहंत गज्ज मद्दयं । करंत सद्द रद्दयं ॥ छं० ॥ १८८७ ॥

कविचंद का युद्ध करके मुसल्मानी आनो को विदार देना और सकुशल लौट कर राजा के पास आजाना ।

उठै रनं रवद्दयं । सुनंत भट्ट सद्दयं ॥
कमट्ठ पंग उट्ठयं । सुमेर जेम दिट्ठयं ॥ छं० ॥ १८८८ ॥
करै हुकम्मं पट्ठयं । गंभीर भीर अट्ठयं ॥
हुसेन षाँ कमालयं । षलील षां जलालयं ॥ छं० ॥ १८८९ ॥
पिरोज षां हुजावयं । फरीद षां निवाजयं ॥
अजव्व साज बाजयं । धरंत जुद्ध लाजयं ॥ छं० ॥ १८९० ॥
कुलं जरं गरिट्ठयं । भुजा तिनं बलिट्ठयं ॥
द्रिगं सु [1]घात रत्तयं । मनो गयंद्द मत्तयं ॥ छं० ॥ १८९१ ॥
लरंत मीर भट्टयं । छुटै हथ्यार थट्टयं ॥
करंत घाव घट्टयं । नचंत जेम नट्टयं ॥ छं० ॥ १८९२ ॥
अरी घटा दवट्टयं । कि विज्जुलं लपट्टयं ॥
परंत चट्ट पट्टयं । पिशाच श्रोन चट्टयं ॥ छं० । १८९३ ॥
सनद्ध हथ्थ भट्टयं । उभै सु मीर कट्टयं ॥
हयग्गयं सु अंगयं । कलंत श्रोन पंकयं ॥ छं० ॥ १८९४ ॥

(१) ए. कृ. को.-गात रत्तयं ।

कृपान हथ्थ चंदयं। सु रग्गदेव बंदयं॥
भरंत मीर अंगयं। निकट्ट तट्ट गंगयं॥ छं०॥ १८९५॥

घटं सु धाव घुम्मयं। परे सु मीर भुम्मयं॥
लगे तुरंग अंगयं। संपूर लोह जंगयं॥ छं०॥ १८९६॥

घटं सु घाव घुम्मयं। परे सु मीर भ,म्मयं॥
लगे तुरंग अंगयं। संपूर लोह जंगयं॥ छं०॥ १८९७॥

फिर्‌यौ सु चंद तन्नयं। करन्न राज कन्नयं॥
लगे न घाव गातयं। सहाय दुग्ग मातयं॥ छं०॥ १८९८॥

कवि का पराक्रम और राजा का उसकी प्रसंशा करना।

दूहा॥ कुंजर पंजर छिद्र करि। फिरि बरदाई चंद॥
तिन अंदर जिह्वनि भ्रमत। ज्यौं कंदरा मुनिंद॥ छं०॥ १८९९॥

कवित्त॥ लरत चंद बरदाइ। करत अच्छरि बिरदावलि॥
भरत कुसम गयनंग। धरत गर ईस मुंडावलि॥
करत घाव कवि राव। पिसुन परि बथ्थ पछारत॥
भरत पत्त कालिका। भूत बेताल उकारत॥
जहं तहं टरंत गज बाज नर। लोह लपटि पावक लहर॥
मुष वाह वाह प्रथिराज कहि। कटक भट्ट किन्नौ कहर॥
छं०॥ १९००

कवि का पैदल हो जाना और अपना घोड़ा कन्ह को देना।

भयौ पाज कविराज। तंग रुक्यौ दल सायर॥
कर कृपान चमकंत। कंपि थर हर कर काइर॥
साज बाज रुधि भीज। कियौ छर हर गति नाहर॥
भूमि तुरंग परंत। मुष्ष जंपिय गिरिजा हर॥
कविचंद पयादौ होइ करि। न्रप बिरदावलि आपु पढ़ि॥

(१) मो.-कविराज।

बिलहान कन्ह चहुआन की । बगसि भट्ट सिर नाइ चढ्ढि ॥ छं० ॥ १९०१ ॥

नवमी को एक घड़ी रात्रि गए जैचन्द के भाई का मारा जाना ।

दूहा ॥ नौमी निसि इक घटि चढ़ी । बंधि परत षिभ्भि पंग ॥
धाइ परे चहुआन पर । ज्यों अगि जज्जर दंग ॥ छं० ॥ १९०२ ॥

जैचन्द का अत्यन्त कुपित होकर सेना को ललकारना । पंग सेना के योद्धाओं का धावा करना । उनकी वीर शोभा वर्णन ।

भुजंगी ॥ धाए पंग राजं महा रोस गत्तं । सुनी सावधानं रसं बीर बत्तं ॥
चले तीर तत्तं कहैं मेघ बुट्टं । अले पंष पंषी तिते भज्जि छुट्टं ॥
छं० ॥ १९०३ ॥

कछू [1]पंष हीनं [2]तनं आन पायं । जिते वान मानं सरीरं बँधायं ॥
महा तेज सूरं बरच्छी भमायं । तहां बद्ध कब्बी उपम्माति पायं ॥
छं० ॥ १९०४ ॥

फलं उज्जलं सोभिते स्याह डंडं । मनों राह चंदं हहूडंत मंडं ॥
बजे लोह लोहं बरं सूर रट्टं । मनों इंद्र के हथ्थ तें बज्ज छुट्टं ॥
छं० ॥ १९०५ ॥

गदा लग्गि सीसं फुटे टूक टोपं । फुटी जानि भानं मयूषं अनोपं ॥
[3]भिरं तंनु दीसै न दीसै गुरंतं । तुटी सीस दीसं बलं आ अनंतं ॥
छं० ॥ १९०६ ॥

पियं राग [4]सिंधू अब्बम्भं न [5]बट्टं । द्रवै सूर बीरज्ज अंगं उलट्टं ॥
तिनं कन्ह सूरं बलं आ [6]अमन्नं । तनं कि क्रमं रूप धावै दिवन्नं ॥
छं० ॥ १९०७ ॥

बहै तेग बेगं गजं सीस धारं । दुहं श्रृंग छंछं रुधी धार पारं ॥
कवीचंद मत्ती उपम्मा जु पंछी । उपं बद्दलं जानि भारथ्थ कच्छी ॥
छं० ॥ १९०८ ॥

(१) मो.-पंग ।　(२) को.-तिनं, मो.-ननं　(३) ए. कृ. को.-भिरंजानि ।
(४) मो.-सोधें ।　(५) ए. कृ. को.-बढूढं ।　(६) मो.-अनन्तं ।

सुभै स्याम [1]फुंदा सनाहंनि जक्की । चलै रत्त धारं दुहूं अंग बक्की॥
उभै पंति बंधू ससे भौंर बीचं । उरं चंद मानो चलै चंद सीचं ॥
छं० ॥ १९०९ ॥

कारी बज्र बीरं न हस्सै हलाई । बधू बाल जैसें बधू ज्यों चलाई ॥
हसं हंस हंसं हसं पंच पंचे । उड़ै पंच पंचे भगी देह संचे ॥
छं० ॥ १९१० ॥

सुनै सूर दिष्षी सु सोभै सु देहं । फूले आनि सोभै मधू माधुकेहं ॥
भये छिन्न छिन्नं सनाहं निनारी । मनों ग्रेह रज्जं मंडी आनि जारी॥
छं० ॥ १९११ ॥

दिषै देवि आई मुषं एक मोरं । कहै कोनं तोंसौ ज भारथ्थ जोरं ॥
परे सीस न्यारे विरुभभाइ उट्ठे । विना सीस दीसै अमं तंज छुट्टै ॥
छं० ॥ १९१२ ॥

करै सीस हक्कै धपै दो निनारे । मनों केत ते राह दूनों हकारे ॥
कही वत्त चिल्ही कहं ए सु जीयं । बनी नाहि जीहं सुकै कोटि कीयं॥
छं० ॥ १९१३ ॥

सामंतों का बल और पराक्रम वर्णन ।

साटक ॥ छची जे पहपंग जुग्गिनि पुरं लोयंत धारा धरं ॥
दुत्ती बज्जन बीर धीर सुभटं आलुथ्थि अलुथ्यनं ॥
अंती अंत करंति भंजिति धरं धारं रुधिं षारयौ ॥
चिल्ही जंभर बीर भारथ वरं जो गीव जत्ती गतं ॥ छं० ॥१९१४॥

चिल्हनी का युद्ध देख कर प्रसन्न होना ।

दूहा ॥ इह सुनि कर भारथ्थ गति । उट्ठि चिल्ही चवसट्ठि ॥
सो भारथ्थ न दिट्ठयौ । पंषिन अंषिन दिट्ठ ॥ छं० ॥ १९१५ ॥

कवित्त ॥ उठें एक धावंत । सहस रत्ता अगिनित बल ॥
क्रोध किये दस होइ । सहस दसमध्य जूह षल ॥
वाहंतै सुरपंच । लष्ष सम्हौ उच्चारं ॥
रुधिर पारसह हींसु । पलल अगनित उभ्भारं ॥

(१) ए.-फंदा । (२) ए. कृ. को.-तो सूंज ।

उचरै चिल्ह अस्तुति करी । साथि भरै सामंत दल ॥
भारथ्थ देवि मन उल्हसी । चिल्ह पंषि दिष्यौ सकल॥छं०॥१८१६॥

केहरि कंठीर का पृथ्वीराज के गले में कमान डाल देना।

केहरि रा कंठेरि । स्वामि सिंगिनि गर घत्तिय ॥
वरुन पास निय नंद । लोक पालह पति पत्तिय ॥
हसि हलक्कि हक्कारि । पंग पुत्तिय आनन पन ॥
तात अग्ग सुंवरिय । राज राजन आनी धन ॥
चहुआन रथ्थ सथ्थह चढ़िय । नंषि बथ्थ कमधज्ज बर ॥
अब देषि बाल लालन सु पर । सुतन हाल विंचै सु क्र ॥
छं० ॥ १८१७ ॥

संयोगिता का प्रत्यंचा काट देना और पृथ्वीराज का केहरि कंठीर पर तलवार चलाना।

दूहा ॥ गुन कढ्ढिय रमनिय सु वर । डसनह पंग कुंआरि ॥
असि बर झर प्रथिराज हनि । सूर हथ्थ नर वारि ॥छं०॥१८१८॥

तलवार के युद्ध का वाक् दृश्य वर्णन।

त्रोटक ॥ निर वारि सु कढ्ढिय कंठ तनं । धर ढारि धरड्डर भार घनं ॥
' झर लग्गिय झार उझार भरं । कटि मंडल षंड विहंड धरं ॥'
छं० ॥ १८१९ ॥

लगि हक्कि सु धार सु बीर सुभ्रं । कठिया किकरिम्मर धार धुभ्रं ॥
असि रुंड सु मुंडन झुंझ पयट्ठ । मनों सुक कूटि कवारिय कट्ठ ॥
छं० ॥ १८२० ॥

जु क्रमे बर केहरि चंगल चंपि । ग्रहे कर पाव[1] उडंत उझंपि ॥
धरे सम जंगल पुच्छ सरोह । सनंघत मंडल उंडल सोह ॥
छं० ॥ १८२१ ॥

फिरक्कन आय धरप्पर धुक्क । किलक्कति चष्प विलग्गिय कुक्क ॥
विभच्छह रस्स सु रच्चिय मेन । हयग्गय लुथ्थि तहीं पर अन ॥
छं० १८२२ ॥

(१) ए.-उडंपि ।

धर प्परि संष धरं सय सत्त। सुरझित सेन सु पंगु रषत्त॥
मनो भगि धूर अधूर नरिंद। मुद्दंत मरीच अथंगय चंद॥
छं० ॥ १९२३॥

नवमी की रात्रि के युद्ध का अवसान। सात सौ शंखधुनियों का मारा जाना।

दूहा। तिथ नौमी सिर चंद निसि। बारह सुत्त रविंद॥
सुत चौरंगी संष धर। कहर कलह कविचंद॥ छं० ॥ १९२४॥
संष धुनिय परि सत्त सय। सुर रानी कमधज्ज॥
अति सु अरिष्ट विचारयौ। जाय कि संभर रज्ज॥ छं० ॥ १९२५॥

नवमी की रात्रि के युद्ध की उपसंहार कथा और मृत योद्धाओं के नाम।

कवित्त॥ निसि नौमी सिर चंद। हक्क बज्जी चावद्दिसि॥
भिरि अभंग सामंत। वारि वरषंत मंच असि॥
अयुत जुद्ध आवद्ध। इष्ट आरंभ सत्ति बर॥
एक जीव दस घटित। दसति ठेलै सु सहस भर॥
दिठ्ठै न देव दानव भिरत। जूह रत्त रत्तिय सु पल॥
सामंत सूर सारह परिग। मोरे पंग अभंग दल॥ छं० ॥ १९२६॥

भुजंगी॥ भए राय दुअ कंक इक्क समानं। परे सूर सोलह तिनं नाम आनं॥
पस्यो मंडली राव मालह चुहंसौ। जिनै पारिया पंग रा सेन गंसौ॥
छं० ॥ १९२७॥

पस्यौ जावलौ जाल्ह सामंत भारे। जिनै पारिया पंग पंधार सारे॥
पस्यौ बग्गरी बाघ वाहे दुहथ्थं। भिरै षग्ग भग्गौ मिल्यौ हथ्थ वथ्थं॥
छं० ॥ १९२८॥

पस्यो बीर जादौं बली राव बानं। जिने नंषिया गेंन गय दंत पानं॥
पस्यौ साह तौ सर सारंग गाजी। दुहुं सथ्थ भष्यो भलौ हथ्थ माजी॥
छं० ॥१९२९॥

परयौ पह्वरी राव परिहार रामा । मुलि सेल साजे पुलै पंग वाना ॥
[1]जबै उप्पटी पंग आवद्ध नौरं । तबै सांपुला सिंह भुज[2]भानि भीरं ॥
छं० ॥ १६३० ॥
परयौ सिंधुआ सिंधु सादल मोरी । लगे लोह अंगं लगी जानि होरी ॥
भिरैं भोज भग्गं मह्यौं सार भग्गं । परयौ मल्ह मानों मह्यौ जूह लग्गं ॥
छं० ॥ १६३१ ॥
परयौ राव भौंहा उभै चंद साषी । इकै कुसुम नंषे इकै कित्ति भाषी ॥
जिसी भारथं पोहनौ अट्ठ होमी । तिसी चैत सुदि राति निसी एक नामी ॥
छं० ॥ १६३२ ॥
कवित्त ॥ तब नायौ [3]रयपाल । जहां ढिल्ली संभरि वै ॥
मुहि सांई लगि मरन । चंद रु खूर साषि दुऐ ॥
सार सिंगि सिर परत । फुट्टि सिर चिहुं दिसि तुट्टौ ॥
धर धायौ असमान । अंत पय [4]पय भर पुट्टौ ॥
हटक्यौ सु कटक किन्नौ चटक । सब दल भयौ भयावनौ ॥
जग जेठ झझिझ धरनी परयौ । अच्छरि [5]करिहि वधावनौ ॥
छं० ॥ १६३३ ॥
दूहा ॥ पहु पचार रट्ठौर रिन । जिहि [6]सिंगिनि गुर कौन ॥
भुज[7]भुअंग सामंत कय । गह्यौ संष धर लौन ॥ छं० ॥ १६३४ ॥
तुरंग विछिं डिग षंडि तसु । करिग सु सस्त्र विसस्त्र ॥
रुधिर धार धर उड्डरिय । भरिग उमा पति पत्र ॥ छं० ॥ १६३५ ॥
राज पर्यंप्यौ भिरन भर । आज कह्यौं हिय छोह ॥
भौंहा भौंह पराक्रमइ । कुल चंदेल न होहि ॥ छं० ॥ १६३६ ॥
कवित्त ॥ जिने सेष धर संषं । पूर पूरंत भुअ कंपिय ॥
जिनै संष धर संष । भूमि डारत भर चंपिय ॥
जिनै संष धर संष । राज गर सिंगिनि घत्तिय ॥
सो संषधर असि समेत । आयास जपत्तिय ॥

(१) ए. कृ. को-बजे ।　　(२) मो. जानि ।　　(३) ए. कृ. को.-रजपाल ।
(४) ए. कृ. को. पथ, पथ्य ।　　(५) ए. कृ को.-करिहि ।
(६) मो.-सिंगिन गर ।　　(७) ए. कृ. को.-भुनंग ।

धनि बीर बीर बीरम्म सुअ। सु कज्ज वारि अवधारितैं ॥
सामंत सूर सूरन हनषि। सुकल किति बिसतार तैं ॥छं०॥ १९३७॥
दिट्ठौ द्रुग्ग नरिंद। कासि राजा जुर जग्गिय ॥
राय इनौं लंगूर। गोठि करनं कर भग्गिय ॥
पंग राय परतष्षि। जंग रष्षन रन साईं ॥
निसि नवमी ससि अस्त। गस्त [1]गौअर गहि पाईं ॥
इक्कंत दंत चंप्यौ न्रपति। सामंतन असि बर बहिय ॥
धग पऱ्यौ सत्त आथंत कौ। कहिग सब्ब गहियन गहिय ॥
छं० ॥ १९३८ ॥

दूहा ॥ सिंधु जत्ति कमधज्ज दल। [2]बिबरि अनी अन लष्ष ॥
दिथ आयस कर उंचकरि। [3]कनक राइ परतष्ष ॥ छं० ॥ १९३९ ॥
एक लष्ष सेना सुभर। बाजि बज्ज रसबीर ॥
अनिय बंधि आषाढ़ नभ। बरषि बूंद घन तीर ॥ छं० १९४० ॥

युद्ध वर्णन।

चोटक॥ सजि सेन मनों मिलि मत्त जलं। मिलि उप्पर पुट्ठि कमद्ध दलं ॥
घन नंकिय घंट सु बीर घुरं। भर निर्मल स्वामि सु नेह धुरं ॥
छं० ॥ १९४१ ॥
मिलि सेन उभै भर आतुरयं। हुअ नारि सु कातर कातरयं ॥
लगि लोह उभै भर संकरयं। असि पावक झाक बढी झरयं ॥
छं० ॥ १९४२ ॥
हय भार ढरै धर धार मुषं। किननं कहि धुक्कहि दुट्ट दुषं ॥
करि तुट्टहि सुंड सु सीस ढुरै। पय तुट्ट पुलै चक चीह करै ॥
छं० ॥ १९४३ ॥
भर सामंत जुड्ड अयास लगै। जय स्वामि सु अप्पह अप्प मगै ॥
निज इष्ट सु सूरनि संभरियं। सुनि आइ सबै सोइ संधरियं ॥
छं० ॥ १९४४ ॥

---

(१) मो.-गौवर। (२) ए., कृ. को.-बिचार। (३) ए. कृ. को.-कैचन राउ।

भय बीर भयानक रुद्र रसं । धर नच्चि धरप्पर सीस कसं ॥
जु कियं कर असि जुधं अधयं । दिठि दिट्ठि सुनीन सु सा जुधयं ॥
छं० ॥ १९४५ ॥

[1]भय धुंधर हक किलक बजं । गज तुट्टिय ढाल सु नेज धजं ॥
भय सामंत जुड्डह सद्वरयं । जुरि जुड्डहि रुद्धमि सुद्वरयं ॥
छं० ॥ १९४६ ॥

भ्रम छत्त [2]अछत्त सु राज भयं । जय आस उभै भर बीर गयं ॥
छं० ॥ १९४७ ॥

सामंतों की प्रशंसा।

कवित्त ॥ धनिव सूर सामंत । जीव लगि जतन न कीनौ ॥
धन्निव सूर सामंत । सबद जंपत पुर तीनौ ॥
धनिव सूर सामंत । घाय दुज्जन संघारे ॥
धनिवं सूर सामंत । देष पिची रिन पारे ॥
इतनौ सु कियौ प्रथिराज छल । कहत चंद उत्तिम हियौ ॥
संदेह देविं पय लग्गि करि । तबहि गंग मज्जन कियौ ॥ छं० ॥ १९४८ ॥

अत्तताई का युद्ध वर्णन ।

दूहा ॥ *चौरंगी नन्दन सुभर । अत्ताताइ उतंग ॥
समरि ईस आनंद न्रप । धरि चिह्नल जुरि जंग ॥ छं० ॥ १९४९ ॥

अत्ताताई की सजावट और युद्ध के लिये उसका ओज एवं उत्साह वर्णन ।

पद्धरी ॥ जुरि जंग सूर चौरंगि नंद । धकि दंत मंत उप्पर मयंद ॥
जा गिनिय पच लै [3]सजिय संग । उल्हास ईस आनंद अंग ॥
छं० ॥ १९५० ॥

(१) ए. कृ. को.-भर । (२) ए. कृ. को.-असत्त ।
* दिल्ली के राजा अनंगपाल तूंअर के प्रधान चौरंगी चहुआन जिनका बेटा अताताई था।
(३) ए. कृ. को. चलिय ।

उत्तंग तोलि जिरह सु बीर। गज्यौ गगन्न गल कल कंठीर॥
पर सर पयट्ठ मधि मत्त दंति। उभ्भ भारि कमध पग ढिग सु पंति॥
छं० ॥ १९५१ ॥

जलडोहि सु जस बीरस रत्त। भंजी सु पारि अरि अमिय मत्त॥
जय जय सु किति जंपै अघाइ। नचै सु ईस भर रुंड पाइ॥
छं० ॥ १९५२ ॥

प्राहार लग्ग औरस एक। है गै तुटंत नर ताग तेक॥
घन रुहिर भाक रंगिय सकत्ति। तन रत्त रुद्र रस ज्यौं अरत्ति॥
छं० ॥ १९५३ ॥

उट्ठी दुरंग मुषि लग्यौ धाहि। चिमूल भारि धर धरनि ढाहि॥
जसवंत कमध कोपै करार। आयौ सु साज सह बट्ठ सार॥
छं० ॥ १९५४ ॥

प्राहार कियौ चहुआन जाम। [1]संग्रह्यौ हक्क कंठह सु ताम॥
असि घाइ सीस उप्पर उभार। प्राहार अवरि अवनी सु ढारि॥
छं० ॥ १९५५ ॥

रुहिरै सु पूर पावस प्रवाह। जल रत्त गंग भिलि भयौ [2]नाह॥
भग्गे सु सेन न्रिप पंग जाम। आइयौ हनू लंगूर ताम॥
छं० ॥ १९५६ ॥

अत्ताताई पर मुसल्मान सेना का आक्रमण करना।

दूहा॥ तत्तारिय तमि पंग भर। करि उप्पर द्रिग बीर॥
अत्ताताई उप्परै। आइ घरक्कै मीर॥ छं० ॥ १९५७ ॥

अत्ताताई का यवन सेना को विदार देना।

कवित्त॥ अततार्इ बर बीर। सेन रुंध्यौ तत्तारी॥
छोह सामि तजि मोह। कोह कढ्ढी कट्टारी॥
गलह अग्गि आभंग। वज्जि नंच्यौ बर बाही॥
जाम समंत धिप्फरे। पंग सेना सब गाही॥

(१) ए. कृ. को.-संग्रह्यौ कंठ हासिहक्कं ताम। (२) ए. कृ. को.-ताह।

तोषार [1]तुंग पष्षर सहित। परिग भीर गंभीर भर॥
पहु पंग फेरि पारस परिय। घटिय तीय घट्टी पहर॥
छं०॥ १९५८॥

अत्ताताई का अतुलित पराक्रम वर्णन।

अततातई बर बीर। स्वामि लद्धौ न पार बल॥
तीय पहर बाजिग्ग। बज्र बिच परे जूह षल॥
धर समुंद धरमान। बहु मेलौ देषौ जुध्य॥
धुअ प्रमान पै मंडि। धूअ कौ नौत अप्प भुअ॥
धर परत धरनि उट्ठे भिरन। हक्कि सीस तिहि ईस बर॥
जंपरे बीर धरनी सु बर। बरन रंभ बंटेति भर॥ छं०॥ १९५९॥

बरन रंभ बंटयौ। भरन पिष्षै पौरिष बर॥
बरन सु बर किय चित्त। सूर रंछिय रन चित्त भर॥
रंभ कहत्तिय आदि। सूर उर वसि उर मंडं॥
जमगत्ती जिन अंनि। बंद छंडे जिन छंडं॥
संभरी बोल तम बर बरी। भित्त छंछ इच्छी सु बर॥
नन बरे बरहि. रहि सुबर। बन्यौ न को रवि चक्रतर॥
छं०॥ १९६०॥

कोपि चाइ चहुआन। तट्ठि तर सूर उपारिय॥
सिंगी नाद अनंद। इष्ट करि इष्ट संभारिय॥
सुधिर सत्त सामंत.। रुधिर पष्षर लष संगह॥
रहसि राइ लंगूर.। ग्रीव चंप्यौ आभंगह॥
जै सद्द बद्द जोगिनि करिय। अत्ताताइ उतंग सिर॥
भरि हरिय पंग पंगुर सयन। गंग सुरंगिय रंग ढरि॥ छं०॥ १९६१॥

अत्ताताई के युद्ध करते करते चहुआन का गंगा पार करना।

दूहा॥ ढरत सु धर चहुआन कौ। मझ्झि गंग वैमाहि॥
जय जय सुर जंपिय सु भर। धनि धनि अत्ताताइ॥ छं०॥ १९६२॥

(१) मो.-तुरंग।

गंधर्वों का इन्द्र से कहना कि कन्नौज का युद्ध देखने चलिए और इन्द्र का ऐरावत पर सवार होकर युद्ध देखने आना ।

पद्धरी ॥ गंध्रब्ब सुर्ग[1] पत्ते सु जाम । आनंद उअर उप्पनौ ताम ॥
आदर सु इंद्र दीनौ विस्राम । मेलयौ जुद्ध भल कौन काम ॥
छं० ॥ १९६३ ॥

गंध्रब्ब कहै सुनि सुर्ग देव । सामंत जुद्ध पिष्षंन स टेव ॥
जस करौ रथ्थ ऐराय इंद्र । देषनह जुद्ध कमधज्ज दंद ॥
छं० ॥ १९६४ ॥

सजि चले देव अन्नेक सथ्थ । सोभंत [2]रंग अन्नेक रथ्थ ॥
अपछर अनेक चालंत सुर्ग । अन्नेक सुभट लेपंत मग्ग ॥
छं० ॥ १९६५ ॥

गंगह दुकूल ढाहंत सेन । रेलयौ कटक सरिता प्रवेन ॥
अन्नेक करी वहता सु दीस । बेहाल मुष्प पारंत चीस ॥
छं० ॥ १९६६ ॥

चंपे लंगूर अततार्इ जब्ब । बंधेव तोन-संकर गुरब्ब ॥
साबद्द बेध लाघव्व सार । मारंत सेन संगह प्रहार ॥छं०॥ १९६७ ॥

सामंत सज्जि चब और जोर । अन्नेक सेन बिच करत सोर ॥
रोपयौ बीच सिल सहस षंभ । गज गाह बंधि देषत अचंभ ॥
छं० ॥ १९६८ ॥

पच्चास कोस रिन षेत छुब्ब । कीनौ सु जुद्ध सामंत धूब्ब ॥
*   *   *   * ॥   *   * छं० ॥ १९६९ ॥

पृथ्वीराज का कविचन्द से अत्तातार्इ की कथा पूछना ।

दूहा ॥ अत्तातार्इ अभंग भर । सब पहु प्राक्रम पेषि ॥
लगी टगटगी दुअ दलनि । न्रिप कवि पुच्छि विसेष ॥छं०॥१९७० ॥

अतुलित बल अतुलित तनह । अतुलित जुद्ध सु विंद ॥
अतुलित रन संग्राम किय । कहि उतपति कविचंद ॥छं०॥१९७१ ॥

(१) ए. कृ. का.-सर्ग । (२) ए. कृ. को.-तव्व ।

कविचन्द का अत्ताताई की उत्पत्ति कहना कि तूअरों के मंत्री चौरंगी चहुआन को पुत्री जन्मी और प्रसिद्ध हुआ कि पुत्र जन्मा है।

कवित्त ॥ चौरंगी चहुआन । राज मंडल आसापुर ॥
तूंअर धर परधान । सु बर आनै इत्तासुर ॥
[१]धर असंष धन धरिय । एक नारिय सुषि धाइय ॥
तिहिं उर पुत्री आइ । पुत्र करि कही बधाइय ॥
करि संसकार दुज दान दिय । अत्तातइय कुल कुंअर॰॥
न्रिप अनँगपाल दीवान महि । पुत्र नाम अनुसरइ सर ॥
छं॰ ॥ १९७२ ॥

पुत्री का यौवन काल आने पर माता का उसे हरिद्वार में शिवजी के स्थान पर लेजाकर शिवार्चन करना।

अति तन रूप सरूप । भूप आदर कर उट्ठहि ॥
चौरंगी चहुआन । नाम कीरति कर पट्ठहि ॥
द्वादस बरष सुं पुज्ज । मात गोचर करि रष्यौ ॥
राज काज चहुआन । पुत्र कहि कहि करि भष्यौ ॥
हरद्वार जाइ बुल्ल्यौ सु हर । सेव जननि संहर करिय ॥
नर कहै रवन [२]रवनिय पुरुष । रूप देषि सुर उद्धरिय ॥
छं॰ ॥ १९७३ ॥

दूहा ॥ जब त्रिय अंग प्रगट्ट हुअ । तब किय अंग दुराइ ॥
अह रयन लै अनुसरिय । सिव सेवन सत भाइ ॥ छं॰॥ १९७४ ॥

शिवस्तुति ।

विराज ॥ स्वयं संभु सारी । समं जे सुरारी ॥
उरं विष्य धारी । गरस्सं विचारो ॥ छं॰ ॥ १९७५ ॥
ससी सीस सारी । जटा जूट धारी ॥
सिरं गंग भारी । कटिं ब्रह्मचारी ॥ छं॰ ॥ १९७६ ॥

(१) ए. कृ. को.-धन ।　　(२) ए. कृ. को.-नवनिय ।

मया मोह कारी। अपंजा विडारी ॥
गिरिज्जास पारी। उछंगं सु नारी ॥ छं० ॥ १९७७ ॥
धरी वेज तारी। चयं नाउंकारी ॥
प्रलै जहि झारी। करे नेन कारी ॥ छं० ॥ १९७८ ॥
अनंगं प्रहारी। मतं ब्रह्मचारी ॥
धरै सिंग सारी। बिभूतं अधारी ॥ छं० ॥ १९७९ ॥
जुगं तत्त जारी। छिनं जे निवारी ॥
सुअं सार धारी। [1]भुगत्तं उधारी ॥ छं० ॥ १९८० ॥
इसौ सिंभु गाया। न दिष्षौ न माया ॥
तिनं कित्ति पाया। जगत्तं न चाया ॥ छं० ॥ १९८१ ॥
चढ़े दृष्प सीसं। विभूती वरीसं ॥
मनौं क्रम्म रब्बी। अपं जोध सब्बी ॥ छं० ॥ १९८२ ॥
दूहा ॥ मात पिता बंधव सकल। तजि तजि मोह प्रमान ॥
दस कन्या बर संग लै। गायन गौ सुरथान ॥ छं० ॥ १९८३ ॥

कन्या का निराहार वृत कर के शिवजी का पूजन करना।

ईस जप्प दिन उर धरति। तजि संका सुर [2]बार ॥
सो बाली लंघन किये। पानी पत्र अधार ॥ छं० ॥ १९८४ ॥
पंच धने पुज्जंत सिव। गहि गिरिजा तस पानि ॥
चिय कि पुरुष हवि संचु कहि। विधि कलि बंध प्रमान ॥
छं० ॥ १९८५ ॥

शिवजी का प्रसन्न होना।

एक दिवस सिव रीझ कै। पूछन छंडन लीन ॥
सुनि सुनि बाल विसाल तौ। जो मंगै सोइ दीन ॥ छं० ॥ १९८६ ॥

कन्या का बरदान मांगना।

मुझ पित जुग्गिनिपुर धनिय। अनंगपाल परधान ॥
पुत्र पुत्र [3]कहि अनुसरिय। जानि वितक्कुर मानि ॥ छं० ॥ १९८७ ॥

(१) ए. कृ. को.-भुगत्त। (२) ए. कृ. को.-बाल। (३) ए. कृ. को.-कर।

कवित्त ॥ [1]विदित सकल मुनि चपल । सतीअ लंपट विन कपटे ॥
भमत उधव अरविंद । सीस चंदह दिषि झपटे ॥
गीत राग रस सार । सुभर भासत तन सोभित ॥
काम दहन जम दहन । तीन लोकह मोय लोकित ॥
सुर अनंग निद्धि सामंत गवन । अरि भंजन सज्जन रवन ॥
मो तात दोष वर भंजनह । तुअ विन नह भंजै कवन ॥
छं० ॥ १९८८ ॥

शिवजी का बरदान देना ।

दूहा ॥ जयति जुवति संतोष घन । संचहि यामी आव ॥
सुबर बाल नन आइयै । सो विह लघ्यौ सु पाव ॥ छं० ॥ १९८९ ॥
पुच लिषिनि पुब्बै कहों । देउ सु ताहि प्रमान ॥
जु कछु इंछ बंछै मनह । सो अप्पौ तुहि ध्यान ॥ छं० ॥ १९९० ॥

शिवजी का बरदान कि आज से तेरा नाम अत्तताई होगा और तू ऐसा वीर और पराक्रमी होगा कि कोई भी तुझ से समर में न जीत सकेगा ।

पद्धरी ॥ बोलेति सिंभ बालह प्रमान । आघात कियौ देवलनि आनि ॥
[2]आना नरिंद बेताल हक्कि । डर करै नाथ बाला प मुक्कि ॥
छं० ॥ १९९१ ॥
षट मास गये विन अन्न पान । दिष्यौ सु चिंत निह कपट मान ॥
चल चलइ चित्त तिन लोइ होइ । पावै न देव तप झूठ कोइ ।
छं० ॥ १९९२ ॥
निश्चलह चित्त जिनै होइ बीर । पावै जु सुर्ग सुष मद्धि कीर ॥
जगि जग्गि निसा तज्जिय चिजाम । सपनंत ईस दिष्यौ प्रमान ॥
छं० ॥ १९९३ ॥
अततार्इ नाम तो धरौं बीर । पावैब राज राजन सरीर ॥
ना लषै पुत्त तुअ तात ग्रेह । तजि नारि रूप धरि भ्रम्म देह ॥
छं० ॥ १९९४ ॥

(१) ए. कृ. को.-दिवस तरल । (२) ए. कृ. को. पनाम ।

जं होई सब्ब भारथ्थ काल। भंजै न तूअ तिन अंग साल ॥
किरनेव किरन फुट्टत प्रकाल। भंजै सु पलह लुकि अग्ग धार ॥
छं० ॥ १९९५ ॥

भारथ्थ रमन जब होइ काल। मरअंत काल बाल हति बाल ॥
तुअ अंग जंग 'पुज्जै न जुद्ध। मानुच्छ कोन करिहै विरुद्ध ॥
छं० ॥ १९९६

जिन मध्य होइ अततार्इ भान। कड्ढिहै तिमिर-दुज्जन निधान ॥
झलकंत कनक दिष्षौत बाल। जग्गयौ बीर तिन मध्य काले ॥
छं० ॥ १९९७ ॥

लच्छि कच्छि बंधी सु थाल। पावहि सु बीर बीरह बिसाल ॥
इह कहिरु बीर गय अप्प थान। विभ्भूत चक्र डौंरु प्रमान ॥
छं० ॥ १९९८ ॥

मालाति अरत्त दीसै उतंग। सिव रूप धरिग मन दुति अनंग ॥
सिर नेत दीन सुष्षम थान। इह काल करिग आयौ सु पान ॥
छं० ॥ १९९९ ॥

साटक ॥ जुत्तं जो सिव थान अनगति वरं, कापालं भूतं वरं ॥
डौंरु डक्कय नद्द नारद बलं, बेताल बेतालयं ॥
तूं जीता रन बारुनैत्र कमलं, जै जै अताताइयं ॥
ध्यातं मंचय छित्ति तारन तूही, पुज्जै न कोई बलं ॥ २००० ॥

कवि का कहना कि अत्तातार्इ अजेय योद्धा है।

दूहा ॥ नागति नर सुर असुर मय। असुर चित्त परमान ॥
तो जित्तै अततार्इ जुध। सो नह दिष्षिय आन ॥ छं० ॥ २००१ ॥

अत्ताताई के वीरत्व का आतंक।

कवित्त ॥ अत्ताताइ उतंग। जुद्ध पुज्जै न भीम बल ॥
थुति धावत करै देव। चक्र वक्रैत काल कल ॥
गह गह गह उच्चार। मध्य कंपै मघवा भर ॥

(१) ए. कृ. को.-पुच्छै।

अह कंपै इगपाल । काल कंपै सु नाग नर ॥
उच्छाह तात संमुह करिय । आय सपत्तह पुत्त पह ॥
लभ्भै सु कोटि कोटिह सु नन । सो लभ्यौ [1]सत्ती सुदहि ॥
छं० ॥ २००२ ॥

दूहा ॥ तूं तारन कल ऊपज्यौ । अत्ताताइ उतंग ॥
जिन हुकंम कल कल करिय । करै सु रनह अभंग ॥
छं० ॥ २००३ ॥

रन अभंग को करै तुहि । तूं बढ़ देवह थान ॥
चाव दिसि सो भिंटई । हरत पान गुन मान ॥ छं० ॥ २००४ ॥

उस कन्या के दिल्ली लौट आने पर एक महीने में उसे पुरुषत्व प्राप्त हुआ ।

इक मास षट दिवस बर । रहि न्रप दिल्ली थान ॥
सु बर बीर गुन उप्पजिय । सुनि संभरि चहुआन ॥ छं० ॥ २००५ ॥
भाई सोई प्पय सु लहि । बंछि जनम सँघ नाव ॥
दुमतर जुग में बीर ज्यौं । छुटै न बंधव पाव ॥ छं० ॥ २००६ ॥
नर चिंता पाच तलभै । जौ परुषन सुष्याइ ॥
तौं बंधन छुट्टै परी । जौ सुद्धौ जग्गाइ ॥ छं० ॥ २००७.

इस प्रकार से कवि का अत्ताताई के नाम का अर्थ और उसके स्वरूप का वर्णन बतलाना ।

कवित्त ॥ सिव सिवाइ सिर हथ्थ । भयौ कर पर समथ्थ दै ॥
सु विधि राज आदरिय । सत्ति स्वामित्त अथ्यलै ॥
वपु विभूति आसरै । सिंगि संग्राह धरै उर ॥
चिजट कथं कंठरिय । तिष्षि तिरसूल धरै कर ॥
कलकंत बार किलकंत क्रमि । जुग्गिनि संह सथ्थै फिरै ॥
चौरंगि नंद चहुआन चित । अत्तताइ नामहं सरै ॥ छं० ॥ २००८॥

(१) ए. कृ. को.-छत्ती ।

आयौ तब ढिल्ली पुरह। ले चहुआन सु भार॥
कोट सबैं सामंत भय। अत्तताइ [1]इम मार॥ छं०॥ २००९॥
नमसकार सामंत करि। जब जब दिष्षहि ताहि॥
तब तब राज बिराज में। रहें भूप मुष चाहि॥ छं०॥ २०१०॥
ढिल्ली सह सामंत सह। अमर सु क्रत ढिग आन॥
[2]समर सिंघ रावल सुभर। ग्रह लै गौ चहुआन॥ छं०॥२०११॥
इह बत्ती कविचंद कहि। सुनिय राज प्रथिराज॥
जुद्ध पराक्रम पेषि कैं। मंन्यौ सब क्रत काज॥ छं०॥ २०१२॥

अत्ताताई के मरने पर कमधुज्ज सेना का जोर पकड़ना और केहरि मल्ल कमधुज्ज का धावा करना।

कवित्त॥ अततताइय धर पर्यौ। बाग उप्परी पंग भर॥
गहन हुकम किय राज। बीर पंगुरा सुभर भर॥
सस्त्र बीर प्रथिराज। दिसा केहरि करि मिल्लं॥
हुकम बीर कमधज्ज। सस्त्र [3]ओडन सब झिल्लं॥
कम्मान सीस धनि न्रपति गुन। कढ़ी रेष नरपत्ति बर॥
सामंत सूर तीरह निकसि। करिग राज उप्पर सु भर॥
छं०॥ २०१३॥

पंग की कुपित सेना का अनेक वर्णन।

भुजंगी॥कहै चंद कव्वी कह्यौ ज्यों फुनिंदं।वरं चार चारं भुजंगी सुछंदं॥
ससी सोम सूरं करूरं जु धायं। गिरि पंग सेनं छिनं भेद लायं॥
छं०॥ २०१४॥
करी बीर दूनं दुहन्नं दुहाइ। दुहुं अंग सिंगी दुहुं नैन नाई॥
दोऊ बीर रूपं बिरूभझाय धाई। मनौं घोटरं टक्करं एक छाई॥
छं०॥ २०१५॥
अनी सों अनी अंग अंगी परक्की। मनौं भौंन भानं दुहुं बीच बक्की॥
मिली मंडली फौज पहूपंग घेरी। कियं क्रोध दिट्ठी चहूआन हेरी॥
छं०॥ २०१६॥

---

(१) ए. इम। (२) मो. अमर सिंह। (३) मो. ओड़त।

सवै सस्त्र मंतं अवतं ज सूरं। भरै दिष्ट वैरी लगै जे करूरं॥
दिसा धुंधरी पंच विमान छायौ। किधों फेरि वरिषा जु आषाढ़ आयौ॥
छं० ॥ २०१७ ॥

गजै मार धारं निसानं प्रमानं। फिरै पंति दंती घनं सेस मानं॥
बजै सद्द झिंगूर [1]उद्दंद कूरं। पढै भट्ट वीरं समं जानि [2]सूरं॥
छं० ॥ २०१८ ॥

धजा सेत नीलं सु मतं फिरंती। मनों सुक्क मालं बगं पच्छं जंती॥
उडै सार धारं [3]किरवान तथ्यं। उडै झिंगनं जानियै विज्ज सथ्यं॥
छं० ॥ २०१९ ॥

उडै सार सीरं असी बंक झारं। मनों अभ्भि [4]सरन बालं बज्ज्यौ सवारं॥
भयं अंग रत्तं ढरै रुद्धि हल्लौ। मनों हथ्थ पायं नदी जाम्नि चल्लौ॥
छं० ॥ २०२० ॥

कहै रंभ लेयं नहीं हथ्थ आवै। तिनं सार धारं सु मंगल्ल गावै॥
रही अच्छरी हारि मनोरथ्थ पुट्टै। मनो विरहिनी हथ्थ तें पीउ छुट्टै॥
छं० ॥ २०२१ ॥

ढलं ढाल ढालं सु रत्ती फिरंती। गुरं गज्ज छंडै चढ़ै पंष पंती॥
परे पंच सूरं जु भारथ्थ भारै। जिनं पंग सेनं सवं षग्ग झारै॥
छं० ॥ २०२२ ॥

दूहा ॥ पंग राव चहुआन वर। सब वित्त कविचंद॥
देवासुर भारथ्थ [5]नन। नन ब्रित्त सुर इंद्र॥ छं० ॥ २०२३ ॥

कवित्त ॥ परत पंच भारथ्थ। चंपि चहुआन अहझि झय॥
डररि सब्ब सामंत। मुत्ति लड्डन मन सुभ्भिय॥
धर धारव चंपिय सु। पंग पारस गहि नंषिय॥
जियन जुद्ध तुछ कीय। कित्ति कीनी जुग सष्पिय॥
कलहंत केलि लग्गी विषम। [6]तन सुरत्त वर उम्मग्गिय॥
मनों पुहप हथ्थ बंधन पलह। अम्मर अम्म पूजा करिय॥
छं० ॥ २०२४ ॥

(१) ए. कृ. को.-उज्जंत। (२) मो.-मूरं। (३) मो.-किरवान।
(४) ए. कृ. को.-सन। (५) मो.-नन।

युद्ध स्थल की पावस से उपमा वर्णन।

बर माधव पहपंग। सार उनयौ सस्त्र भार ॥
बज्जी बर प्रथिराज। सोर मंडे अट्ठ गिरि ॥
सस्त्र तेज उठ्ठाय। [1]साम लगियन सु बुंद असि ॥
घरी एक धर धरे। सार बुट्ठंन सूर धसि ॥
अवरत्त बीय बज्जे बिषम। भगि अष्यौ नर सूर बिव ॥
प्रथिराज दान घन दीय सस्त्र। ग्रहन राह अहि भजन रवि ॥
छं० ॥ २०२५ ॥

दूहा ॥ छिनक उसरि बहलति दल। छच पंग सिर भास ॥
षेम दंड चलि उदै सम। ग्रह चंपे रवि रास ॥ छं० ॥ २०२६ ॥

पंगराज के हाथी की सजावट और शोभा।

कवित्त ॥ रत्ति ढाल ढलंकति। रत्त अम्मरिय पीत धज ॥
सेत मंत गज झंप। रत्त मंडत्त सहस गज ॥
मनों राइ रवि व्योम। भोम चढ़ि षिष्कि दल नयंबं ॥
सज्जि सेन कमधज्ज। अग्ग दीनौ अरि छिंबं ॥
तिम चढ़त घटत किरनाल कर। भै अभंत चतुरंगिनिय ॥
तन कढ्ढि करषि कायर धरषि। सुमरि सोम वासर गनिय ॥
छं० ॥ २०२७ ॥

पंगराज की आज्ञा पाकर सैनिकों का उत्साह से बढ़ना। उनकी शोभा वर्णन।

दूहा ॥ इन भज्जै संजोगि ग्रह। जीय संपतौ राज ॥
अजुत जुद्ध रिन जित्तही। पंग सु भर [2]किहि काज ॥ छं० ॥ २०२८ ॥

रसावला ॥ पंग कोपे घनं। लोह बज्जे झनं ॥
ओड मंडे ननं। बीर बज्जै [3]रनं ॥ छं० ॥ २०२९ ॥
चच्चरं चंगनं। चंपि पुज्जे मनं ॥
बान रोसं भनं। अंत [4]तुट्टै घनं ॥ छं० ॥ २०३० ॥

---

(१) ए. कृ. का.-स्याम। (२) ए. कृ. को.-कहि।
(३) ए. कृ. को. ननं। (४) ए. कृ. को.-लै।

लज्ज बीरं अनं। बीर नंचै छिनं ॥

दंत दंती तनं। सीस चढ्ढी फनं ॥ छं० ॥ २०३१ ॥

मारि मेलं मनं। जोत रिष्षे कनं ॥

सोर लग्गे तिनं। जक्क जे संमनं ॥ छं० ॥ २०३२ ॥

सिंघ देषे तिनं। ग्रब्ब मेरं मनं ॥

कोटि तप्पं तनं। षग्ग पावं छिनं ॥ छं० ॥ २०३३॥

सीस हक्के फ़नं। द्रोम नंचे घनं ॥

सूर दिष्षे छिनं। जानि कीयं ननं ॥ छं० ॥ २०३४ ॥

लज्ज पंकं षुतं। ढोरि षग्गं [1]जुतं ॥

लोटि घंनं मनं। किति बंधं तनं ॥ छं० ॥ २०३५ ॥

पृथ्वीराज की तरफ से हाड़ा हम्मीर का अग्रसर होना।

कवित्त ॥ हाड़ा राव हमीर। राय गंभीर बिरंधौ ॥

लष्यौ ना तोषार। लष्ष जर जीन सहंदौ ॥

राज अग्ग फेरि यहि। जाहि जंगल पति जानहि ॥

चहुआन आमर नरिंद। जोगिनि पुर थानहि ॥

असि द्रुग्ग द्रुंग दल सों जुरिग। सामंतनि सत्तह चढ़िग ॥

आलोह सेन लागन बिषम। [2]बलीदान बामन बढिग ॥

छं० ॥ २०३६ ॥

पंग सेना में से काशिराज का मोरचे पर आना।

दूहा ॥ कासिराज सज्यौ सु दल। फुनि अग्या दिय पंग ॥

गाजे भीर अभीर रनि। बाजे बिषम सु जंग ॥ छं० ॥ २०३७ ॥

काशिराज के दल का बल।

कवित्त ॥ कासिराज दल बिषम। मद्धि जानु तार बिछुट्टिय ॥

मिरिनि हार जुध धार। अह अहुह लिय बंटिय ॥

निघनि घात तन बात। घात हय घात अघानिय ॥

मनों जिहाज सायरिय। तिरन तुंगत तिहि बानिय ॥

(१) ए. कृ. को. मुतं। (२) "मनों" पाठ अधिक है।

बल बंधि बलपति बत्त तिन। छिन छिनद्दा कमधज्ज दल॥
भूचाल भूमि जवल पवल। इम सु छबि पहुपंग दल॥
छं०॥ २०३८॥

काशिराज और हाड़ा हम्मीर का परस्पर युद्ध वर्णन।

भुजंगी॥ हले पंग छत्रं, न छिन्नं निधानं। उवं हड्ड हम्मीर गंभीर बानं॥
[1]हलं हाल भग्गी सु जग्गी जुआनं। रुधी धारउद्धार भूमी भयानं॥
छं०॥ २०३९॥

समं सेल मंद्देह अंद्देह गानं। हयं तानि छंडै न छंडे परानं॥
बके राइ पंगे बद्दे पीलवानं। नभं गोम गज्जेव जंजीर थानं॥
छं०॥ २०४०॥

निमा एक मेकं समेकं हियानं। दिसा धूरि धुंधी उड़ीगैं[2] गिधानं॥
भिरैं बीर सामंत तत्ते उतानं। महा भार भुत्ते सु सौंई सु तानं॥
छं०॥ २०४१॥

दोनों का द्वंद युद्ध और दोनों का मारा जाना।

कवित्त॥ हाड़ाराय हलकि उत। कासिराजह कर बर कसि॥
जोगिनि पुर सामंत। बहुत कमवज्ज बीर रस॥
बियौ बीर आहुरिय। धरिय दंतह्हर आवध॥
नामि बीर निज्जुरिय। करिय केहरि कुस रावध॥
उड़ि हंस मंस नंसह मुहर। कुहरति सा बज्जिय सुहर॥
जग्गयौ नाग तब नाग पुर। होम दुरग धामंक धर॥छं०॥२०४२॥

दूहा॥ हाड़ा राय सु हथ्थ धरि। गंभीरा रस बीर॥
कासिराज दल सम जुरिग। कुल उद्धारिय नीर॥ छं०॥ २०४३॥
न्रप अलसिग अलसिग सुभर अलसिय पंग नरिंद॥
विलसित काल करंक किय। सह सति तीस गनिंद॥ छं०॥२०४४॥

नवमी का चन्द्र अस्त होने पर आधी रात को दोनों सेनाओं का थक जाना।

कवित्त॥ निसि नवमी ससि अस्त। घटिय मुर बीय स उप्परि॥

(१) ए. कृ. को. हथं थाल। (२) मो.-निधानं।

थकिय हथ्थ सामंत। थकिय पंगुर दल जुप्परि॥
रुधिर सरित परहरिय। गिद्ध [1]गोमाय अघाइय॥
ईस सीस गत दरिद्द। बीर बेताल नचाइय॥
आसुर सु उट्टटि थट भट रहिग। पंग फेरि सज्जिय सुभर॥
करि सौस रीस पुच्छिय सुबर। कहिय गहन आयास चर॥
छं०॥ २०४५॥

पृथ्वीराज का पंग सेना के बीच में घिर जाना।

बर बिपहर निसि पंग। क्रोध बिष बीर साम सब॥
जीभ लोह दिढ साव। अरिय साइस्स तत्त तब॥
चित वामंग गारुरी। अमी अंचल चित मंतं॥
दिष्ट अछित उच्छारि। हंकि कढ्ढिग विष [2]गत्तं॥
[3]अप्पइ जु पल सार सु गरुर। [4]रुद्रसि बेंन सज्जै मिसह॥
जे चिच रेष चिची सु बर। सिष सँजोग आसा सिगह॥छं०॥२०४६॥

आर्या॥ पन्नगो ग्रसित सामुद्रं। त्यों पंग सेन ग्रिसती [5]रायं।
छिन सुछित आहट्टं। नवमी निसी अड उपायं॥ छं०॥ २०४७॥

मुरिल्ल॥ पिष्षि जुद्ध [6]कंदल दिव धाया। लग्गे सह दसों दिसि आया॥
तक्किग रहि गनि साजत बीरं। भग्गिय जुद्ध ग्रह पति धीरं॥
छं०॥ २०४८॥

रात्रि को सामंतों का सलाह करना कि प्रातः काल राजा को किसी तरह निकाल ले चलना चाहिए।

कवित्त॥ रेनि मत्त चिंतयौ। प्रात कह्वौं प्रथिराजं॥
प्रा रष्यौ चहुआन। जाय जुग्गिनिपुर साजं॥
जब लगि अरि तन बढै। कढै न्रप कूह प्रमानं॥
च्यार बीस षग षुट्टि। अज्यौं सामंत [7]अघोनं॥

(१) ए. कृ. को.-गोमय। (२) ए. कृ. को.-गत्रं।
(३) को.-अप्प पलगु सार सु गरुर। ए.-अप्पह जु पजु लज्ज सार सु गरुर
(४) ए. कृ. को.-सद्रसि। (५) मो.-रयं। (६) ए.-कद्दल। (७) मो.-सघानं।

जो चढ़ै सामि पह,पंग कर। तौ सब किंत्ति समथ्थनौ॥
जब लग्गि न्रपति हम हथ्थ है। तब लगि बल सामंत भौ॥
छं०॥ २०४९॥

पृथ्वीराज का कहना कि तुम लोग अपने बल का गर्व करते हो। मैं मानूंगा नहीं चाहे जो हो।

सुनिय बयन प्रथिराज। रोस बचननि उच्चारिय॥
ततो होइ तिन बेर। मंत बह बह बक्कारिय॥
तुम सु ग्रब्ब सामंत। मंत जानौ न अमंतं॥
में भग्गा ग्रिह पंग। लिय ढिल्ली धर अंतं॥
सौ सामि होइ सिरदार भल। तौ काइर बल राह जित॥
जौ हथ्थ जीय होइ अप्पनौ। सुरब सेन अरियन्न कित॥छं०॥ २०५०॥

सामंतों का कहना कि अब भी न मानोगे तो अवश्य हारोगे।

दूहा॥ सुनि सामंत उचारि न्रिप। बिय दिन जुद्ध उमाह॥
अब जीतै प्रभु हारिहै। जौ नहि चल्लै राह॥ छं०॥ २०५१॥

पृथ्वीराज का कहना कि जो भाग्य में लिखा होगा सो होगा।

तब जंगलवै बोल्लि इह। रे भावी समरथ्थ॥
जौ पैसै लष पंजरै। अंत चढ़ै जम हथ्थ॥ छं०॥ २०५२॥

दिशाओं में उजेला होना और पंग सेना का पुनः आक्रमण करना।

चौपाई॥ सामंत सूर उच्चरि चहुआनं। अचल चित्त अति धीर सु ध्यानं॥
धनि नरिंद सोमेसुर जायौ। मंडी अमर पंग बर धायौ॥
छं०॥ २०५३॥

रहि घटि सर निसि बढि तत मानं। घिनदा चरम रही घन पानं॥

(१) ए. कृ. को.-चालि।

बजि दल दुंदुभि पंग निसानं । रत चित सूर तेस रति मानं ॥

छं० ॥ २०५४ ॥

जैचन्द के हाथी की शोभा वर्णन ।

कवित्त ॥ दिसि पुब्बह पहुपंग । बीर ठट्टौ रचि सेनं ॥
सेत केत गज झंप । सेत दुरि चौर समेनं ॥
सेत धजा आसुही । सेत सिंदूक सु इल्ली ॥
सेत अस्व पुष्षर प्रमान । नाग मुषी रहि पुल्ली ॥
उज्जल सनाह अस बरन बर । सेत धजा कमधज्ज सब ॥
ओपमा चंद सस्तन किरन । कै बिगसौ सु कलेसु रवि ॥

छं० ॥ २०५५ ॥

सामंतों का घोड़ों पर सवार हो कर हथियार पकड़ना ।

चौपाई ॥ मतौ मंड़ि सामंत सूर भर । जिहि उपाय संकस जतन नर ॥
न्रिप अन जग्गत सबै तुरंग चढ़ि । भान पयान न होत लोह काढ़ि ॥

छं० ॥ २०५६ ॥

चहुआन के सरदारों के नाम और उनकी सज धज का वर्णन

कवित्त ॥ चावद्दिसि पहुपंग । बंधि बन बीर सु ठट्टै ॥
रत्त धजा मारूफ । बंधि वामं दिसि गट्टै ॥
पीत धजा दल स्याम । सोह रट्टौ बर कन्हं ॥
सेत धजा पहुबंध । बीर उम्भौ पहु नन्हं ॥
चौबिद्धि फौज चावद्दिसा । बीर बीर बर बिट्टरै ॥
चिंतयौ भान पयानं बर । लोह पयानत बिस्तरै ॥ छं० ॥२०५७॥

प्रातःकाल पृथ्वीराज का जागना ।

दूहा ॥ सुष्य सयन प्रथिराज भौ । तम घंट्टि तम चर बार ॥
घरी एक निसि मुदित हुअ । बजत घरी घरियार ॥ छं०॥२०५८॥

पंगराज का प्रतिज्ञा करना ।

कवित्त ॥ घरिन बजत घरियार । पंग परतंग सु बाहिय ॥

कै तन छंडि नर धरौं। जीति दुरजन दल साहिय ॥
उभै उभै दिसि फौज। साजि चतुरंग चलाइय ॥
चावद्दिसि चहुआन। चाव चतुरंग इलाइय ॥
पायान भान बरज्जित अरि। लोह पयानन मोह भलि ॥
दिसि रत्त उत्त धररत्त कहि। सिध समाधि जरह पुलि॥ छं०॥२०५९॥

प्रातः काल की चढ़ाई के समय पंग सेना की शोभा ।

भुजंगी॥ लगी बज्र ताली बजे लोह पुल्ली। घरी एक सिद्धिं समाधिं स भुल्ली ॥
किधों इन्द्र वेता सुरं जुद्ध बीयं। किधों तारका जुद्ध सुर सस्सि कीयं॥
छं० ॥ २०६०॥

कहै देव देवाइयं जुद्ध देषी। इसौ बीर अत्तीत भारथ्थ पेषी ॥
भयं कब्बि चंदं सबै बीर सथ्थी। नचै रंग भैरू ततथ्थे ततथ्थी ॥
छं० ॥ २०६१ ॥

किलं कार कारं रुधं पत्त धारं। पियै जोगिनी जोग माया डकारं॥
भरै लोह लोहं सबै दिस्सि भारी। नचै सट्ठि चव जोगिनी देत तारी॥
छं० ॥ २०६२ ॥

घटं घंट घट्टं सु पिंडं बिचारी। फिरै आदि माया सु आदं कुमारी॥
बहै बान पग्गं छुपिक्का बिरंभं। परे बार पारं दुहू अंग छिद्रं ॥
छं० ॥ २०६३॥

भये छिन्न छिन्नं सनाहंति छिन्नं। रुधी अट्ठ रंकै तिनं माहि भिन्नं॥
कहै चंद कब्बी '(१)उपम्मासि रुध्यं। मनो उग्गतं भान डालो मउथ्थं॥
छं० ॥ २०६४ ॥

भये अंग अंगं सु रंगे निनारं। भरं उत्तरे मुगति संसार पारं॥
भयौ जुद्ध कबरुद्ध कथ्थे कथायं। लही सूर सूरं सबं मुगति पायं॥
छं० ॥ २०६५ ॥

परे पंग लष्षं उभष्षं सु सथ्यं। तुटै सस्त्र सूरं जुटै हथ्थ बथ्थं॥
छं० ॥ २०६६॥

(१) मो. उपंमास ।

पृथ्वीराज का व्यूहबद्ध होना और गौरंग देव अजमेरपति का मोरचा रोकना।

कवित्त ॥ उग्गि भान पायान । देव दरबार संष बजि ॥
सु बर सूर सामंत । [1]गज्जि निकरे सेन सजि ॥
[2]धुर हरि बलि पांवार । अग्ग कीनं प्रथिराजं ॥
ता पच्छै न्त्रिप कन्ह । सीस मुक्की बढ़ि लाजं ॥
ता पच्छ बीर[3]निड्डुर निडर । ता पच्छै दंपति अयन ॥
गौरंग गरुअ अजमेरपति । रष्षि न्त्रपति पच्छैं सजन ॥छं०॥२०६७॥

पृथ्वीराज की ओर से जैतराव का बाग सम्हालना।

पच्छ भान पायान । लोह पायान अग्गि कढ़ि ॥
धर हरि धर पांवार । कोट धारह सलष्य चढ़ि ॥
बज्जि घाइ आवत्त । सार झरि सारह झड्डौ ॥
नभ सु माम सामंत । जानि बीरं जगि अड्डौ॥
घन देत घत्त अवरत्त असि । उभै सेन बर बर जुटी ॥
घरी अद्ध कंध [4]बजि विषम । भारथ्यह पारथ घटी ॥ छं०॥२०६८॥

पृथ्वीराज का घिर जाना और वीर पुरुषों का पराक्रम।

फिरि रुक्यौ प्रथिराज । परी पारस कमधज्जिय ॥
मुरि सु पंच पल भान । चढ़ी आयस सुर रज्जिय ॥
ठठुक्कि सेन पहु पंग । चंपि चहुआनन संके ॥
बर बिरंग बिड्डार । लज्जी बंभन झुकि झुक्कै ॥
का कुटिल दिट्ठ कनवज्ज पति । सब्ब मंच करि झारयौ ॥
जगि पवित्त जोग मंडल बर । भार तिथ्य [4]तन पारयौ ॥
छं० ॥ २०६९ ॥

युद्ध के समय श्रोणित प्रवाह की शोभा।

भुजंगी ॥ चल्यौ भान घट्टी उभैता प्रमानं । कढ़ै लोह राठौर अरु चाहुआनं॥

(१) ए. कृ. को.गज्जि । (२) मो.धुर हरिबल ।
(३) मो.बरती । (४) मो.-नभ, ए. कृ.-नन ।

सुभौ दीन एकं विवे पंति बीयें। करे एक मेकं तिनं लोह लीयें॥
छं० ॥ २०७० ॥

उठै हत्थि छिंछं झरै सार सारं। किधों मेघ बुट्टं प्रबालीन धारं॥
ढरै रंग आवक्क हेमं पनीरं। गहै अंत गिद्धौ उडंती प्रकारं॥
मनों नभ्भ इंद्रं धनुक्कं पसारी। * * * छं० ॥ २०७१ ॥
हटक्की बरच्छी ठनंकंत घट्टं। षिजे गज्ज पेंपे चल्यौ साथ तट्टं॥
छं० ॥ २०७२ ॥

कहै चंद कब्बी उपम्माति कज्जं। पचै इंद्र बद्धू कपी काम फज्जं॥
निकस्सौ सनेनं झरै हत्थि धारं। ढरै रंग आवक्क हेमं पनारं॥
छं० ॥ २०७३ ॥

झरै सीस हक्के धरं कंठ रज्जी। मना नट्ट काया पलट्टीति बज्जी॥
दुहुं दिस्सि हंधे परें धाइ घट्टं। मनो रत्त डोरी रुक्यौ नट्ट पट्टं॥
छं० ॥ २०७४ ॥

नहीं सुष्य दुष्यं न माया न काया। तहां सेवकं सामि रंकं न राया॥
घटक्की घटक्कीज भूछिद्र कारी। फिरी फेरि चहुआन पारस्स पारी॥
छं० ॥ २०७५ ॥

घुड़सवारों के घोड़ों की तेजी और जवानों की हस्तलाघवता।

कवित्त ॥ ठठुकि दिष्षि न्रप सेन। छच धारइ जु छच तजि॥
तत्तो होइ तिहि बेर। तत्त माया सु मुदित तजि॥
तत्त गत्त सो हथ्थ। तेग्र तत्ती उभ्भारी॥
धात षंभ न्रिघात। जानि झल्लरि झल्लारी॥
असवार सनाहत पष्षरे। कटि पट्टन तुट्टै निबर॥
जाने कि सिषा तर गिर सिरह। बिहर बार करवत्त झर॥
छं० ॥ २०७६ ॥

माझी बर मरदान। मान मरदा मिलि तोरन॥
चाहुआन कमधज्ज। दिट्ठि अरुहि रन जोरन॥
दुने बीर रस धीर। धाइ लग्गो आभुष्षं॥
लोह बज्जि अवरत्त। जानि छुट्टै मद मुष्षं॥

त्रिघाइ घाइ बज्जे घनं। घन निसान सद्दह दुरिय॥
रुम्भि भग्ग घाइ आभंग अगि। घटि बिवंग ओगां जुरिय
छं० ॥ २०७७ ॥

लोह धार बज्जंत। बज्जि घुरतार भार परि॥
सेस सीस हल धसी। फेरि मुक्की कुंडलि करि॥
करि कुंडलि अध सत्त। परे पिट्टं परिवारं॥
'गो भगि फुनि फुनि फुन्नि। फुन्नि किय चंद निनारं॥
अहि सीस [2]बीस सत कलमले। रास रत्त भेदन दलं॥
चिचकन चित्त विभ्रम भुअ। तिहित बेर अहि कलकलं॥
छं० ॥ २०७८ ॥

जैचन्द के भाई वीरम राय का वर्णन।

बंधौ रा जैचंद। रा विजपाल सपुत्तह॥
से रंभी उर जनम। नाम बीरम रावतह॥
सहस तीस सिंधूत। ढाल नेजा सिंदूरिय॥
सिंदुरीव-सम्माह। सेव वाहन संपूरिय॥
दिन महिष एक भुंजै भषनि। विजय द्रग्ग अग्गै न्नपह॥
जीते जुवान हिंदू तुरक। वाम अंग टोडर पगह॥ छं०॥२०७९॥

वीरमराय का चहुआन सेना के सम्मुख आकर सामंतों को प्रचारना।

सुक्रवार अष्टमिय। निंद जाने नै जुग्ग परि॥
नौमि सनी टरि गंद्दय। सामि संग्राम इंद्र जुरि॥
हय दिष्षत षावास। पाइ गहि सत्त पछारिय॥
रे समग्र मृढंग। अंग जुरि हीन जगारिय॥
आयौ निसंक सामंत जहँ। कर कसंत आलस असन॥
तिनने सूर साहि सु समर। जनु अगस्ति दरिया ग्रसन॥
छं० ॥ २०८०॥

(१) मो.-गोभग्ग फनं फन फुन्न। (२) मो.-मास।

दूहा ॥ बसु कट्टिय कंपह धरिग। जब बसीठ परिहार ॥
उभय पान साहिग सनर। गय न्रप पंग सु सार ॥छं०॥२०८१ ॥
रा जैचंद नरिंद दल। दरसि भत्त बल काज ॥
में भुंज पंजर भिरि गहिग। इन में को प्रथिराज ॥ छं०॥२०८२॥
माया मागति देव जगि। छवि जिम छठिय प्रगट्टि ॥
तिन कट्टारिय कर धरिग। तिन घन सेन निघट्टि ॥ छं०॥२०८३ ॥
भ्रमरावली ॥ घन सैन निघट्टिय पंग दलं। रावत्त बंध्यौ तिहि बीर बलं॥
रुधि पान स वित्त कियौ समरं। घन देषि विमान फिरें अमरं ॥
छं० ॥ २०८४ ॥
तिन पौरिस राज भये सबरं। दिसि च्यारि फवज्जति पंग करं ॥
दसमी पह फट्टति एह जुरं। इन जुद्ध समावर जोग 'हरं ॥
कविचंद अनुक्रम बात धरं। छं० ॥ २०८५॥
* * * * । * छं०॥ २०८६ ॥

दसमी रविवार के प्रभात समय की सविस्तार कथा का आरंभ।

कवित्त ॥ कट्टिय बर विस्तस्यौ। धाइ लग्गौ धर राजन ॥
जहाँ भीम जुवान। तीर तुंगह भै भाजन ॥
रा रन बीर पविच। सु पति रष्यिय परिहारह ॥
राज काज चहुआन। स्वामि संकेत अहारह ॥
जुध भिरत तिनहि हय गय विहत। गह गह कहैति संभरिय ॥
निसि गइय एक सामंत परि। भयत पीत निस अंमरिय ॥
छं० ॥ २०८७ ॥

नवमी के रात्रि के युद्ध में दोनों दलों का थक जाना।

दूहा ॥ निसि नौमिय वित्तिय बिषम। उदित दिवस आदीत ॥
उठहि न कर पल्लव नयन। अस बड़ बित्त कवित्त ॥छं०॥२०८८॥
गहन आस गई पंग न्रप। जियन आस चहुआन ॥
सूर षंड मंडन रवन। उयौं सु रत्तौ भान ॥ छं० ॥ २०८९ ॥

(१) ए. कृ. कौ.-जुरं। (२) ए. कृ. को.-बरन।

कनवज्जै भज्जै सयन । जे भर ढिल्लिय सार ॥
जे घर अंगुलि झल्लरित । उदित आदित वार ॥ छं० ॥ २०९० ॥

कनवज्जह झलकिय किरन । वर तजि न्रपति उरन्न ॥
जिहि गुन प्रगटित पिंड किय । तिहि उत्तरिग सुरन्न ॥छं०॥२०९१॥

रजत चित धर केलि सह । लाभ सु किल्लिय पूर ॥
जिहि गुन प्रगटित पिंड किय । तिहि उत्तरि सुर मूर ॥छं०॥२०९२॥

संयोगिता का पृथ्वीराज की ओर और पृथ्वीराज का संयोगिता की ओर देख कर संकुचित चित्त होना ।

देषि संजोगिय पिय सु वल । श्रम जल बूंद वदन्न ॥
रति पति अहित पवित्त मुष । जालि प्रजालि मरन्न ॥छं०॥२०९३॥

चंद्रायन ॥ घुरि निसान उगि भान कला कर मुद्दयौ ।
श्रम सामंत नरिंद छिनक धर धुक्कयौ ॥
सविष पंग दल दिट्ठ सरोस निहारयौ ।
अंचल अंमृत सँयोगि रेन मिस झारयौ ॥ छं०॥२०९४ ॥

भमरावली ॥ फिरि देषिय राज रवन्न मुषं । अतिवंत दुषी दुष मानि सुषं ।
भुव बंकम रंकम राज मनं । दूष तंनि निहंति समोह घनं ॥
छं० ॥ २०९५ ॥

गुन कट्टनि कट्टति तात कुलं । किय सत्य महाबर बीर बरं ॥
अभिराम विराम निमष्य करं । उत्तरंपि न पिट्ठन दिट्ठ हरं ॥
छं० ॥ २०९६ ॥

इहि श्रीय सु पीय सु कीय कुलं । मुष जंपिन कंपिन काम कुलं ॥
* * * * । * छं० ॥ २०९७ ॥

चारों ओर घोर शोर होने पर भी पृथ्वीराज का आलस त्याग कर न उठना ।

दूहा ॥ सुधर विलंबम घरिय पर । रहि ठहिय घटि तीन ॥

(१) ए. कृ. को.-उतरिग । (१) ए. कृ. को.-घ ।

उठहि न अवसित कर सु वर। कछु मन मोह प्रवीन ॥
छं० ॥ २०९८ ॥

उत नृप चंपिय रठ्ठ वर। इत सुष संभरि वार ॥
चलत राइ फिरि फिरि परिय। उद्दित आदित वार ॥ छं० ॥ २०९९ ॥

सब सामंतों का राजा की रक्षा के लिये सलाह करके कन्ह से कहना।

करि विचार सामंत सह। न्रिप तिहि रष्षत काज ॥
कहै अचल सुन ह्व रहौ। करहु चलन कौ साज ॥ छं० ॥ २१०० ॥
तब सामंत अचलेस सौं। बार बीय हम कथ्थ ॥
अब तुम कन्ह कविंद मिलि। कहौ चलै न्रप सथ्थ ॥ छं० ॥ २१०१ ॥
कहै अचल उरगंत रवि। बीच सुभर अप्पाम ॥
चलै राज जीवंत ग्रिह। कहिय अचल सम कान्ह ॥ छं० ॥ २१०२ ॥

कन्ह का कवि को समझाना कि अब भी दिल्ली चलने में कुशल है।

कवित्त ॥ कहै कन्ह चहुआन। अहो बरदाइ चंद बर ॥
जुरत जुद्ध दिन बीय। भये अनभुत्त उभै भर ॥
एक जन पंचास। परे सामंत सूर धर ॥
पंग राव घन सेन। तुट्टि सक मोर धीर थर ॥
थक्के सु हाथ सुभ्भर नयन। उठ्ठ न करइ विश्रम बिरम ॥
पहु चलिग मग्ग रष्षै सुभर। कियौ राज अदभुत्त क्रम ॥
छं० ॥ २१०३ ॥

समौ जानि कविचंद। कहै प्रथिराज राज मुनि ॥
आदि क्रम्म तें करें। तास को सकै गुनिक गुनि ॥
सेस जीह संग्रहै। पार गुन तोहि न पावै ॥
तें जु करिय पहुपंग। मिलिय आरनि थर सावै ॥
नन कियौ न को करिहै अ को। जै जै जै लछी तरुनि ॥
ग्रिह जाइ अप्प आनंद करि। बढ़ै कित्ति सब लोग पुनि ॥
छं० ॥ २१०४ ॥

कविचन्द का पृथ्वीराज के घोड़े की बाग पकड़ कर दिल्ली की राह लेना।

दूहा ॥ इह कहि सु कवि समीप गय। गहिय बग्ग हैराज ॥
चल्यौ षंचि ढिल्ली सु रह। सुभर सु मन्यौ काज ॥छं०॥२१०५॥
प्रलय जलह जल हर चलिय। बलि बंधन बलि बार ॥
रथ चक्रां हरि कारि करिय। परि प्रभुत पथ्थार ॥ छं० ॥२१०६॥
उदय तरनि नट्टिग तिमिर। सजि सामंत समूह ॥
न्रिप अग्गै वहै सु इम। चल्लहु स्वामि करि कूह ॥ छं०॥२१०७॥

पृथ्वीराज प्रति कविचन्द का वचन।

कवित्त *॥ बंस प्रलंब अरोपि। हंन घन अंदर कट्टिय ॥
वरत पुरातन बंधि। धरनि द्रिढ लग्गि न षुंटिय ॥
करि साहस चढि नट्ट। द्रुनी देषत कोतूहल ॥
घंटा रव गल करत। महिष उभौ जम संतल ॥
उत्तरन कुसल करतार कर। श्रिया लाभ सौ अलग रहि ॥
ढिल्लीव नाथ ढीलन करौ। लगौ मग्ग कविचंद कहि ॥
छं० ॥ २१०८॥

राजा पृथ्वीराज का चलने पर सम्मत होना।

दूहा ॥ चलन मानि चहुआन न्रप। बज्जे पंग निसान ॥
निमि जु इंद दुहुं दल भयौ। विद्ध सहित बिन भान ॥छं०२१०९॥
हय गय करि अग्गें न्रपति। पिछि चंपे प्रथिराज ॥
मो अग्गैं आजुहिं रहै। टरिग दीह विय साज ॥छं०॥२११०॥

सामंतों का व्यूह बांधना धाराधिपति का रास्ता करना और तिरछे रूख पर चौहान का आगे बढ़ना।

कवित्त ॥ वर द्वादस भारथ्थ। राज परि भौंर वाम दिसि ॥
सह दख्खिन न्रप सथ्थ। बीर वुर्रे बही बीर असि ॥

* यह छन्द मो.-प्रति में नहीं है।

बर जोगिनि पुर उट्टै। सीस धर हर बर [1]जुट्टै ॥
मनों अंत प भ तत्त। मेघ धारा जल बुट्टै ॥
तिरछौ तरि उप्परि न्त्रपति। दइ दुबाह धारह धनी ॥
जाने कि अग्गि अज्जुर बनह। बंस जाल फट्टै घनी ॥ छं०॥२१११॥

शौचादि से निश्चित हो कर दो घड़ी दिन चढ़े जैचन्द का पसर करना।

दूहा ॥ [2]घटी उभै रवि चढ़िय बर। स्नान दान गुर चार ॥
पंग फेरि घेरिय सु घन। भर बिंटे सिर भार ॥ छं०॥२११२॥

वीर योद्धाओं का उत्साह।

रसावला ॥ सांमि बिंटे रनं, सूर छोहं घनं। बथ्थ मल्लं जनं, धार कुट्टै मनं॥ छं० ॥ २११३ ॥
सूर चढ्ढे मनं, लोह तत्ती तनं। सीत बित्तं जनं, बिड्डुरेनं मनं ॥ छं० ॥ २११४ ॥
चित्त जोतिप्पनं, सो मनं जित्तनं। तेग बंकी झनं, बज्जि अस्सी तनं ॥ छं० ॥ २११५ ॥
सूर कीनो रनं, भारथं नं समं। भ्रंम सासिप्पनं, जीव तुच्छे गिनं॥ छं० ॥ २११६ ॥
काल भूखं ननं, जम्म छुट्टे मनं। रज्ज कोटं भटं, रुद्धि घुम्मै घटं ॥ छं० ॥ २११७ ॥
सूरं चित्तं करं, दिष्षियं तुंमरं। स्वामि चल्लै घरं, जुद्ध [3]झल्लं भरं॥ छं० ॥ २११८ ॥

सामंतों की स्वामि भक्तिमय विषम बीरता।

दूहा ॥ परिग पंच पंचे सु भर। भितनि परिग भत पंच ॥
कूह जूह लै लै करिय। न्त्रपति न लग्गी आंच ॥ छं० ॥ २११९ ॥
समर स पुट्ठी समर परि। सामि सुमति चल तेन ॥
सामंतन रुक्यौ सु दल। लीज [4]मुष्प मुह जेन ॥ छं० ॥ २१२० ॥

(१) मो.-झुट्ठे। (२) मो.-घरी। (३) मो.-मल्ले। (४) ए. कृ. को.-मुछ।

परिग सूर सोरह सु भर । आदित जुद्ध 'सरीस ॥
बीर पंग फेरिय गहन । करि प्रतंग दिव ईस ॥ छं० ॥ २१२१ ॥

पंगराज का अपनी सेना को पृथ्वीराज को पकड़ लेने की आज्ञा देना ।

कहै पंगुरौ सु भर भर । आज सु दिन तुम काम ॥
गहौ चंपि चहुआन कौं । ज्यों जग रष्षै नाम ॥ छं० ॥ २१२२ ॥
दूहा गाहा सिरसतिय । न्रप प्रसाद धन सथ्थ ॥
दुरजन ग्रह एते तुरत । ग्रहै न पच्छै हथ्थ ॥ छं० ॥ २१२३ ॥

पंगराज की प्रतिज्ञा सुन कर सैनिकों का कुपित होना ।

इह प्रतंग पहु पंग सुनि । भ्रित कोपिय भ्रम काज ॥
परे चंपि चहुआन पर । जानि कुलिंगन बाज ॥ छं० ॥ २१२४ ॥
जब देषे सामंत हथ । तब लग्यौ घन ताप ॥
जानै बिष ज्वाला तपति । कै प्रलै काल मनि आप ॥छं०॥२१२५॥
जितै भ्रंम लच्छी लहै । मरन लहै सुर लोक ॥
दोऊ सु परि भ्रत सुद्धरै । 'परे धाइ धर तोक ॥ छं० ॥ २१२६ ॥

पंग सेना का धावा करना तुमुल युद्ध होना और वीरसिंह राय का मारा जाना ।

भुजंगी ॥ मुरे धाय बीरं रसं पुच्छ दभ्भै । क्रमं पंच धक्के चहुव्वांन भज्जं ॥
पऱ्यौ पंग पच्छै जुटेढ़ी पठाढी । दिसं पुब्ब मारूफ बर बंक काढ़ी॥
छं० ॥ २१२७ ॥
चहूआन सूरं असीं बंक भारीं । मनों पारधी बिंट बाराह पारी॥
मह माह सूरं प्रचारे सबाहं । 'तबै बीर बीरं उपम्माति चाहं ॥
छं० ॥ २१२८ ॥
षिलै लाज मुक्कै चियं पीय छोरी । मुरे लज्ज बंधं दोऊ सेन जोरी
बहै षग्ग मग्गं सु बग्गं निनारे । तिरै जोध माया सरे सार पारे ॥
छं० ॥ २१२९ ॥

(१) ए. कृ. को.-सरीर । (२) मो.-परत । (३) ए. कृ. को.-तकै ।

बहै षग्ग तुट्टै उड़ैं टूक नारे। मनो टूट्टही' राति आकास तारे॥
सहै हथ्थ अवान फुरी टोप सथ्थं। किधौं छूरिजं भूलियं राइ हथ्थं॥
छं० ॥ २१३० ॥

डरै काइरं चिंति मुष्षं दुरायं। मनो प्रात दीपं बिधं कांति गायं॥
तुछं फुट्टि संगं सनाहं न कूरं। मनौं जार कढ़ै मुषं मीनं रूरं॥
छं० ॥ २१३१ ॥

मचै घाइ अघ्घाइ छुट्टै हवाई। मनौं [2]टौस ज्यौं डंभरू पंति लाई॥
घरी अद्ध आहत्त बज्जे विषम्मं। पऱ्यौ राव वरसिंघ कित्तीव जम्मं॥
छं० ॥ २१३२ ॥

पंगदल की सर्प से और पृथ्वराज की गरुड़ से उपमा वर्णन।

कवित्त ॥ पुंग धार पहु पंग। राग सिंधू बज्जाइय॥
सार मंच संधयौ। बीर आलाप चिघाइय॥
सेस सुनिव सामंत। कंन मंडत तिहि रग्गा॥
फन मिसि असिवर धुनिय। जीह कढ्ढी षग लग्गा॥
गारुरी बीर कमधजक सर। अंच मंच हीनं गनिय॥
मनि मध्य मेर डस्यो विषम। सिंगि स्याल गज्जर मनिय॥
छं० ॥ २१३३ ॥

दूहा ॥ सांमि भ्रंम रत्ते सु भर। चढे क्रोध बिष [3]भाल॥
दभ्भै कायर दूर टरि। मिले गरूर मुंछाल॥ छं० ॥ २१३४ ॥

पंग सेना के बीच में से पृथ्वीराज के निकल जाने की प्रसंशा।

कुंडलिया * ॥ बार पारि पहु पंग दल। इम निकसिय चहुआन॥
छाया राषिसनी ग्रसत। पिट्ठ फोरि हनुमान॥
पिट्ठ फोरि हनुमान। गौन सै साठि कोस मुह॥
उदधि मद्धि बिस्तारि। [4]गिलन अंतरिष वहंतह॥
रंकार सबद उच्चार करि। ब्रह्मंड कि भिदि मुनि गयौ॥
कहि चंद ध्यान धारत उभर। सागर पारंगत भयौ॥छं०॥२१३५॥

(१) मो.-मैन। (२) ए. कृ. को.-ईस। (३) ए. कृ. को.-ज्वाल।
(४) ए.-मिलत। * यह कुंडलिया मो. प्रति में नहीं है।

पुट्ठि बुट्ठि झालां हलह । चलि न सकै चहुआन ॥
सामंतनि करि कोट' अउ । यों निकसे राजान ॥ छं० ॥ २१३६ ॥

दूहा ॥ जे छची अंड्डे अरे । ते झुझझै असिथान ॥
मानों बुंद समुंद में । परै तत्त पाषान ॥ छं० ॥ २१३७ ॥

पंग सेना का पृथ्वीराज को रोकना और सामंतों का निकल चलने की चेष्टा करना ।

संभर पंग पिष्षे परत । परत करिय द्रिग रत्त ॥
रवि उद्दित चढि सत्त घटि । तपित तेज आदित्त ॥ छं० ॥ २१३८ ॥

त्रिभंगी ॥ हग रत्ते सूरं, पंग करूरं, बजि रन तूरं, फिरि पंती ॥
रुष्षे चहुआनं, पंग रिसानं, द्रोन समानं, गुर कंती ॥
उप बज्जिय कंती, धर रंग रत्ती, बीर समत्ती, अखि बीरं ॥
बर बेन करूरं, हुअ नहि सूरं, रोस डरूरं, छुटि तीरं ॥ छं० ॥ २१३९ ॥

असि कढ्ढी नीवं, ज्यों ससि बीवं, भै [२]भति भीवं, अनसंकं ।
सब ओडंन नष्षे, रज रन रष्षे, अरि घर भष्षे, भरि अंकं ॥
बर बर धर मैनं, तन फल छीनं, ज्यौं जल हीनं, फिरि मीनं ॥
कूरो है हस्सैं, करि किन डस्सैं, बीर सलस्सैं, तन छीनं ॥ छं० ॥ २१४० ॥

अंती बर कंती, पें उर भंती, में मत पंती, विच्छूरं ।
उप्पम कवि पूरं, जलंगं भूरं, [३]गज्ज हिलूरं, जल घूरं ॥
झुझझे सिर तुट्टं, पग आहुट्टं, उप्पम घट्टं, कविआनं ।
तुट्टे जिम तारं, पहु भग भारं, [४]हूतं सबीरं, सम जानं ॥
छं० ॥ २१४१ ॥

भै बीर बिरुद्धं, जटि आरुद्धं, मंति सु लद्धं, मपि सेनं ॥
[५]लुथि लुथि आहुट्टिय, बंधन कुट्टिय, किन्ति स लुट्टिय, कवि नैनं ॥
छं० ॥ २१४२ ॥

(१) ए. कृ. को.-अर ।
(२) ए. भित्त, को. कृ.-भति ।
(३) ए. कृ. को.-गज्जहि तूरं ।
(४) ए. कृ. को.-हूतसबीरं ।
(५) मो.-लुथि लोथि ।

एक पहर दिन चढ़ आने पर इधर से बलिभद्र के भाई उधर से मीरां मर्द का युद्ध करना।

कवित्त ॥ बजिग पहर इक अहर। हथ्थ थक्क कमान बहि ॥
हैगै नरभर डररि। अमिज थक्कए षग्ग सह ॥
बीय अरी चित लरत। कोउ मानै नन थक्कै ॥
जोगि नींद उग्यौ प्रमान। कुइ चतुरंग अटक्कै ॥
है नंषि बंध बलिभद्र कौं। पज्जूनी अग्गै सयन ॥
उत निक्करे मीर मीरां मरद। ढुंढारी सम्हौ बयन ॥
छं० ॥ २१४३ ॥

बलिभद्र के भाई का मारा जाना।

दुनें मिले मरदान। कथ्थ पै दीह न मुक्कै ॥
लज्ज मंस बिहु बीच। बिंब केसर बर बक्कै ॥
कट्टारी बर कड्डि। मेछ बाहिय पहु लग्गिय ॥
फुट्टि सीस बरकारी। बांम भग्गा सह अग्गिय ॥
बर मुष्छि घाइ कच ग्रह करे। कट्टारिय गहि दंत कढि ॥
तन फेरि अंग झंझर कियौ। को दिव बंध कबंध चढ़ि ॥
छं० ॥ २१४४ ॥

दो पहर तक युद्ध करके बलिभद्र का मारा जाना।

करि उप्पर बर बीर। बली बलभद्र सु धाइय ॥
दल दल मुष मुष पंग। भई द्रप्पन मुष झाइय ॥
है (१)अंठुन दल पंग। बीर अवरत्त हलाइय ॥
समर अमर कोतिग्ग। ईस नारद रिझाइय ॥
झक झोरि झोरि दल मोरि अरि। बिरह चीर उट्टाय करि ॥
सामंत पंच पंचह मिलिग। टरि न टरै भर बिप्प हर ॥
छं० ॥ २१४५ ॥

(१) ए. कृ. को.-अंठुलि।

हरसिंह का हथियार करना और पंग सेना का छिन्न भिन्न होना।

भुजंगी॥ चँपै चाइ चौहान हरसिंघ नायौ। जिसे सेंन में सिंघ गज जूथ पायौ॥
करै कूह गज्जे जूह सनमुष्य धायौ। तबै पंग दल समटि चिहुं कोद छायौ॥
छं०॥ २१४६॥

पगराज को दो मीर सरदारों को पांच हजार सेना के साथ धावा करने की आज्ञा देना।

कवित्त॥ बली अली दै मीर। उभै बंधव वर बीरह॥
छत्तिय हथ्थ दुसल्ल। मल्लविद्या साधक सह॥
पग्ग मग्ग बिन रेह। जुद्ध जानें निरगम गम॥
डंडा युद्ध छचीस। बट्ट पाइक पाइक सम॥
भुज लहै कोरि उभ्भै अभय। स्वामि ध्रंम रत्तं सु रह॥
अनषित्त पंग लज्जी अदब। दल पगार बिर दैत गह॥
छं०॥ २१४७॥

करिय क्रपा पहुपंग। सहस पंचह दिय मीरह॥
कुल बिषत्त जुध जुत्त। लहै वर लाज अभीरह॥
स्याम चमर पष्पर सु। स्याम गज गाह सुनित्तह॥
झंडे स्याम सु माम। पछय पय पुलै न षित्तह॥
अग्या सु मंगि पहु पंग पहि। आए मीर पठान पुर॥
आदित्त जुद्ध हरि उग्ग मनि। आए आतुर सज्जि अरि॥
छं०॥ २१४८॥

मीरों का आज्ञा शिरोधार्य्य करके धावा करना।

दूहा॥ मंग्यौ आयस नंमि सिर। कहै पंग करि पान॥
जीय सु षंडो षत्त पहु। गह्यो बह्यो चहुआन॥ छं०॥ २१४९॥

मीर मंडली से हरसिंह का युद्ध। पहाड़राय और हरिसिंह का मारा जाना।

भुजंगी॥ तबै उप्परी फौज सा राज मीरं। सहस्सं च पंचं बरं बंधि नीरं॥

किलक्क किलक्की हके आसुरानं। चवै दीन महमूंद महमूंद मानं॥
छं० ॥ २१५० ॥

[1]बली मीर अली दिसा अप्प भष्यै। [2]तनं अज्ज साईं निज कज्ज रष्यै॥
करों पिंड षंडं निजं स्वामि काजै। गहै चाहुआनं भरं भूभ भाजै॥
छं० ॥ २१५१॥

हके मीर अप्पान लै अप्प नामं। तिनं साष भष्यै [3]कहीक कै कामं॥
लही फौज आवंतसा चाहुआनं। हरं सिंघ सिंघं गज्यौ जुद्ध जानं॥
छं० ॥ २१५२ ॥

नयौ सीस प्रथिराज रजि बीर रस्सं। फिऱ्यौ संमरे इष्ट अप्पं उक्कस्सं।
चले बीर किलकार साथे सु गाजै। करं अप्प आवद्ध सावद्ध साजै॥
छं० ॥ २१५३ ॥

मिल्यौ जुद्ध मंझी सम आइ मीरं। भरं आवधं बज्जियं धार धीरं॥
मिले मुष्य एकं अनेकं सु धायं। करक्कै सु सीसं परै पूर घायं॥
छं० ॥ २१५४ ॥

परैं मीर एकं अनेकं सु षंडं। कलं कूह बज्जी रुलं मुंड रुंडं॥
कलं भूचरं षेचरं सा करूरं। नचै जंध हीनं कमद्धं दु सूरं॥
छं० ॥ २१५५ ॥

रमे तेक चहुआन रस रास तारं। फिरै मंडली जेम षल न्रत्य कारं॥
उभै मीर बल्ली अली संघ लष्यै। क्रमे आतपं तप्पि जल जाम [4]भष्यै॥
छं० ॥ २१५६॥

बली आय प्राहार कीनो जु जामं। उरं मग्गि तिष्षी निकस्सी परामं॥
चलै सेन सम्मं हयौ षग्ग झारे। हयौ रोह माँ तूं भिरें मच्छ कारे॥
छं० ॥ २१५७ ॥

बली सीस तुट्यौ षगं षंभ थोरं। मनों देवलं इंदु तुट्टौ सु तारं॥
अली आय [5]बामं हयौ धग्ग धारं। तुट्यौ सीस उड्यौ षगं भूमि पारं॥
छं० ॥ २१५८ ॥

(१) मो.-चली। (२) ए. कृ. को.-तनं (३) ए. कृ. को.-कहा।
(४) ए. कृ. को.-धष्षे। (५) ए. कृ. को.-बाहं।

गह्यौ तांम [1] अली उर अप्प चंप्यौ। गयौ अंस उड्डी तिनं तांम [2] लिप्यौ॥
भज्यौ सेन मीरं भरक्कै धु धामं। सयं सत्त ताई परे पंति तामं॥
छं० ॥ २१५९॥
घनं घाइ अघ्घाय पूऱ्यौ सु पानं।पऱ्यौ सिंघ हरसिंघ करि जीति षामं॥
छं० ॥ २१६० ॥

नरसिंह का अकेले पंग सेना को रोकना और पृथ्वराज का चार कोस निकल जाना।

कवित्त ॥ करि जुहार [3] नरसिंघ। नयौ चहुआन पहिल्लौ॥
बरौ अनौ सावरौ। लष्ष सों भिऱ्यौ इकल्लौ॥
आगम काय हुअ फिरै। धरनि षुर सों षुर षुंदहि॥
एक लष्ष सों भिरै। एक लष्षह रन रुंधहि॥
असि घाइ झाइ बज्जै [4] विषम। जै जै जै आयास भौ॥
इम जंपै चंद बरद्दिया। च्यारि कोस चहुआन गौ॥छं०॥२१६१॥

नरसिंह के मरते ही पंग सेना का पुनःचौहान को आघेरना।

दूहा ॥ परत धरनिं नरसिंघ कहुं। रुकि गयंद दल अब्ब॥
मनहु जुद्ध जोगिन पुरह। तिन मुक्कयौ सब [5] अब्ब॥छं०॥२१६२॥
फुनि प्रथिराज सु पच्छ दल। बर रट्ठौर नरेस॥
[6] सिर सरोज चहुआन कै। भवर सत्त सम भेष॥ छं०॥२१६३॥

इस तर्फ से कनक राय बड़ गुज्जर का मोरचा रोकना।

कवित्त ॥ भौ आयस प्रथिराज। कनक नायौ बड़ गुज्जर॥
हम तुम दुस्सह मिल्लन। स्वामि दुज्जै सु अप्प घर॥
हौं रबि मंडल भेदि। जीव लगि सत्त न [7] षंडो॥
षंड षंड करि रुंड। मुंड हर हार सु मंडो॥

(१) ए. कृ. को.-अली। (२) ए. कृ. को.-लेप्यौ।
(३) ए. कृ. को.-हरसिंह, परंतु हरसिंह के युद्ध का वर्णन पूर्व छंद में हो चुका है।
(४) ए. कृ को.-सकल। (५) ए. कृ. को.-अब्ब। (६) मो.-सिर सराज।
(७) ए. कृ. को. छंडों।

इन बंस भग्गि जानै न को। हों पति कंप अलुझझयो ॥
इम जंपै चंद बरद्दिया। कोस षट्ट चहुआन गौ ॥ छं०॥ २१६४॥

वीरमराय का बल पराक्रम वर्णन।

सुअन धाय जैचंद। नाम बीरम बीरम बर ॥
गरुअ लाज गुन भार। जुद्ध जुति ज्ञान ग्यान गुर ॥
बंधव सम जै चंद। प्रीति लिष्षवै प्रेम गुरु ॥
अगि आदर न्वप करै। गान उत्तंग अंग सन ॥
सह सत्त जुत्त सेना सु तस। बरन रत्त बाना धरै ॥
जहं जहं सु राज काजह समथ। तहं तहं परि अग्गों लरै ॥
छं० ॥ २१६५ ॥

दूहा ॥ ऐरावत बीरम पऱ्यौ। औ बीरम मुअ धाइ ॥
सम प्राक्रम पंगुर परषि। दियै सु अग्या ताइ ॥ छं० ॥ २१६६ ॥

उक्त मीर वंदों को मरा हुआ देख कर जैचन्द का वीरम राय को आज्ञा देना।

परे मीर देषे उभै। दिय अग्या तमि पंग ॥
गहौ जाइ चहुआन कौं। हनौ सुभर सब जंग ॥ छं० ॥ २१६७ ॥

वीरम राय का धावा करना वीरमराय और बड़ गुज्जर दोनों का मारा जाना।

भुजंगी ॥ सुने आयसं बीर पंगं नरिंदं। चल्यौ नाइ सीसं मनों जुद्ध इंदं॥
सिरं सज्जि गेनं रची फौज तीरं। कजं जुद्ध ईसं रज्यौ रस्स बीरं ॥
छं० ॥ २१६८ ॥

बजी भेरि झंकार धुंके निसानं। धरा बोम गज्जे सजे देव दानं॥
बड़ं गुज्जरं देषि आवंत फौजं। सनंमुष्ष झाम्यौ दलं संक नौजं ॥
छं० ॥ २१६९ ॥

जपे इष्ट सा उच्चरे बीर मंचं। गरै बंधियं ख्रून सम्मीर जंचं॥
किलक्के सु बीरं गंहक्के सु भीरं। कलं कंपिय कातरं भीत भीरं॥
छं०॥२१७०॥

(१) ए. कृ. को.-पंक।

मिली जोगिनी जोग नंचै पिघाई। फिकारंत फेकी पलं पूरि भाई॥
मिल्यौ गुज्जरं मद्धि फौजं सु धायौ। हमै षग्ग षत्तं षलं 'एक घायौ॥
छं० ॥ २१७१ ॥

परे बिंब षंडं धरं तुंड तुंडं। इकै गिद्धि जाचं परे षोनि मुंडं॥
सिरं बीर आवद्ध नंषै अपारं। नचै नारदं देषि कौतिग्ग भारं॥
छं० ॥ २१७२ ॥

तनं गुज्जरं एक देषै अनेकं। मुषं मुष्ष लग्यौ प्रती एक एकं॥
अरी भूतयं बीर नच्चै अपारं। महाबीर लग्गे बुरं जुद्ध भारं॥
छं० ॥ २१७३ ॥

धनं धारि उभ्भारि धायौ समुष्षं। मदं मत्त इभ्भं फिरे कुस्स रुष्षं॥
हयौ आइ बड़ गुज्जरं षग्ग धारं। कटे टट्टरं सीस पर्यौ कुठारं॥
छं० ॥ २१७४ ॥

हयौ असि झारं सु बीरम्म तामं। कटे बाहु दूनौ धरं तुट्टि ठामं॥
परे षंड बीरम्म तुट्टे विभग्गं। धमं धन्न जंप्यौ कनक्कूति लग्गं॥
छं० ॥ २१७५ ॥

करं बाम चंप्यौ निजं सीस अप्पं। करे षग्ग धायौ समं रिम्म धुप्पं॥
अरी ढाहि ढंढोरि माझौ कनक्के। 'दुरे कोइ ढारं पलक्के सप्पक्के॥
छं० ॥ २१७६ ॥

बरी अच्छरा बिंद साचौनि मन्ने। दुर्यौ कन्नकू धार सों घाइ घन्ने॥
सयं पंच सारद्ध बीरम्म सथ्थें। परे षेत षंदे कनक्कू सु हथ्थें॥
छं० ॥ २१७७ ॥

बड़ गुज्जर के मारे जाने पर पृथ्वीराज का निठ्ठुर राय की तरफ देखना।

दूहा ॥ बड़ हथ्थह बड़ गुज्जरह। झुझ्झि गयौ बैकुंठ॥
भौर 'सघन सामित परत। चष निद्धुर अरि दिट्ठ ॥छं०॥२१७८॥
पर्यौ षेत बड़ गुज्जरह। अप्प फुंग दल हक्कि॥
तम्मि सनमुष नेन करि। दियः आग्या मन तक्कि ॥ छं० ॥ २१७९॥

(१) मो.-लर्ष। (२) ए. कृ. को.-ढरे काइ ढारं षेळं कइ सक्के। (३) मो.-सघन।

जैचन्द की तरफ से निठ्ठुर राय के छोटे भाई का धावा करना । निठ्ठुर राय का सम्मुख डटना ।

कवित्त ॥ बीजापुर दिग विजय । करत विजपाल नरिंदं ॥
सिंधुर लिय पेसंक । च्यारि जनु रूप करिंदं ॥
बार सहस को पटो । एक एकह प्रति थप्पिय ॥
पष्षर पूरब नाय । राव बलिभद्र सु अप्पियं ॥
घन सयन अवर पच्छे करैं । क्रमिय पंग आदेस लहि ॥
आवंत देषि बंधव अनुज । राव निडर पग मंडि रहि ॥
छं० ॥ २१८० ॥

युद्ध वर्णन ।

रसावला ॥ कमद्धंति पथ्यं, दिषे चष्य रूप्यं । ह्यौ निठ्ठुरेयं, करी रंग ह्रेयं ॥
छं० ॥ २१८१ ॥

मुषं नैन रत्तं, मनों झाल तत्तं । पुली बंबनेनं, हग्यौ तोअ गेनं ॥
छं० ॥ २१८२ ॥

हुभे टोप सीसं, घनं ऊर्द्ध दीसं । सनाहं सु देही, तिनं मत्ति वेही ॥
छं० ॥ २१८३ ॥

मनो नीर मद्धं, सुभै 'लाज सुद्धं । कमे सस्त्र तोनं, गुरं जानि द्रोनं ॥
छं० ॥ २१८४ ॥

छुटे बान हथ्थं, मनों इंद्र पथ्थं । लगै ईष गज्जं, बजै जानि बज्जं ॥
छं० ॥ २१८५ ॥

मुठी दिट्ठ मंडे, लियै जीव छंडे । हने छत्रधारी, लुटै भूमि भारी ॥
छं० ॥ २१८६ ॥

छुटै अग्गि हथ्थं, जरै सस्त्र सथ्थं । रुके सेन पंगं, मनो ईस गंगं ॥
छं० ॥ २१८७ ॥

दिषे पंग नेनं, मनों काल सेनं । अनी मुष्ष राजं, गजं जुथ्थ साजं ॥
छं० ॥ २१८८ ॥

(१) मो.-कमी । (२) ए. कृ. को.-ज्वाल । (३) मो.-सासि ।

अवै मद्द धारं, न नेनं उघारं। छुटै बाय वेयं, मनों बद्दलेयं ॥
छं० ॥ २१८६ ॥

मुषं चारि धाये, मनों आल आये। हने पीलवानं, उडै घास जानं॥
छं० ॥ २१९० ॥

चवै चारि ढक्कै, पछै और रुक्कै। करै तीर मारं, बहै लोह धारं॥
छं० ॥ २१९१ ॥

नदी श्रोन पूरं, फिरै गेन हूरं। गजै गैन काली, नचै षप्पराली॥
छं० ॥ २१९२ ॥

रुचै ईस अंगं, रसै रोस रंगं। उभै षिचिपालं, बकै बिक्करालं॥
छं० ॥ २१९३ ॥

दुअं तोन षुट्टै, पछै षग्ग जुट्टै। हनै तक्कि मद्धं, परे अद्ध अद्धं॥
छं० ॥ २१९४ ॥

झरै अंग अंगं, द्रवं जानि दंगं। गजं सीस पानं. परै बीज जानं॥
छं० ॥ २१९५ ॥

दूहा ॥ कमध धपत अरि पंग लिषि। तमकि तमकि बर तेज ॥
जानिक अग्गि बन घन चरन। उमडि बाय घन सेज॥छं०॥२१९६॥

भाई बलभद्र और निड्डर राय का परस्पर द्वंद युद्ध होना और दोनों का एक साथ खेत रहना।

भुजंगी ॥ नरे निड्डुरं निंद नामंत रायं। बलीभद्र लष्यौ मितं गज्ज गायं॥
सहं नाम बच्चो विधानी करन्नी। छितं छत्र वत्ती सु मामी मरन्नी॥
छं० ॥ २१९७ ॥

उभै दिट्ठ दिट्ठी मिले बाहु बाहुं। नियं उक्ति नाही अगी राह राहं॥
प्रियं पीत रतं गैत पंगं नरिंदं। मिल्यौ षग्ग हंसं क याहं बनिंदं॥
छं० ॥ २१९८ ॥

उठी झार सस्त्रं विसस्त्रंति मीसं। रुधी धार धारंति मानं तिदीसं॥
कवीचंद केली कनवज्ज रायं। सयं तात मातं वरं सिंघ जायं॥
छं० ॥ २१९९ ॥

(१) मो.-जरन। 　　(२) ए. कृ. को.- दराजे सुरायं।

बियं गभ्भ थानं सु म्यानं गुरज्जे। न छुट्टै न पुट्टै न तुट्टै उरभ्भै॥
घरी ईक दीहं तिहं हंति कालं। मनों रत्त आरत्त मैं मत्त मालं॥
छं० ॥ २२०० ॥

परै अस्स अस्संग ऊखंग बीयं। बिए भ्रम्म धारी सु धारी सु नीयं॥
मनों विंद बिंदान दुरजोध बंधं। कटे गंध वाई सु बग्गो सु गंधं॥
छं० ॥ २२०१ ॥

भभक्कंत सोंधा तिनं अंग तासं। दुग्रं घट्टि पंचास कोसं प्रकासं॥
गयंनं गुंजारं करें भोंर भीरं। धर्यौ आतपं आनि रवि छांह गीरं॥
छं० ॥ २२०२ ॥

भयौ जंग में जंग आवै न बंटै। उभै सीस ईसं दृग्यारै उभ्भंटै॥
रवी चंद नारद्द वेताल रंभा। चवट्ठी जमातं निरष्यो अचंभा॥
छं० ॥ २२०३ ॥

कवित्त। तिमिर बध्ध रट्ठौर। आय जब पुट्ठ विलग्गौ॥
गहु गहु गहु चहुआन। हद्द हिंदवान सु भग्गौ॥
कर क्रक्कस हर सिंघ। सिंघ मम सिंघ न छुट्यौ॥
जनु कि जंत वै सुपह। सुभष लद्दौ मुष बट्यौ॥
घन घाय चाय [1]बित्तिय घरिय। करिग आन सामंत सह॥
बैकुंठ बट्ट लद्धौ बिहुन। लरन अप्प अप्पह सु रह॥छं०॥ २२०४॥

जैचन्द का निठ्ठुर राय की लाश पर कमर का पिछौरा खोल कर डालना।

दूहा॥ झुझ्झि षेत निठ्ठुर पर्यौ। दिष्षि दुहुं दल सथ्थ॥
कटिपट छोरि जैचंद पहुं। ढंकिय अप्पन हथ्थ॥ २२०५॥

निठ्ठुरराय की मृत्यु पर पंग का पश्चात्ताप करना।

कवित्त॥ तुं कुल रष्षन केलि। बंध बारुन बल बोहिय॥
तें रष्यौ चहुआन। सांमि संकट सुभ सोहिय॥
तें आरस अलि अल। उतंग बारधि बल बंध्यौ॥
जहं जहं हय भर भरंत। तहां फथ्यौ सिर संध्यौ॥

(१) मो.-चिंतिय।

रंडरी ढाल ढिल्लिय मयर । मरद मयन झुझयौ पुरिस ॥
निड्डुर निसंक उप्पर पहुर । बहुरि पंग बोल्यौ सरिस॥छं०॥२२०६॥

दूहा ॥ [1]सम रट्ठौर रट्ठवर । निड्डुर झुझिंझग आम ॥
दिनयर दल प्रथिराज कौं । राह पंग भय ताम ॥ छं० ॥२२०७॥

निड्डुरराय के मोरचा रोकने पर पृथ्वीराज का आठ कोस पर्य्यन्त निकल जाना ।

कवित्त धर फुट्टै षुरतार । तार तुट्टै सिर उप्पर ॥
तहां नायो रट्ठि वर । न्रिपति प्रथिराज स्वामि छर ॥
षग्गह सीस हनंत । षग्ग षुप्परिय षनं षन ॥
स्रोनित बुंद परंत । पंग किद्धीय घरघघन ॥
बिरचयौ लोह बर सिंघसुअ । षंड षंड तन षंडयौ ॥
निड्डुर निसंक झुझझंत रन । अट्ठ कोस न्रप छिंडयौ ॥
छं० ॥ २२०८ ॥

निड्डुर राय की प्रशंसा और मोक्ष ।

अट्ठ कोस अंतरिय । पंग सथ्थरिय परिय भर ॥
परि निड्डुर पथ्थंरिय । कंस गजराज दंत धर ॥
हय हय है भारथ्थ । धवल बंबरह भिरत हुअ ॥
ब्रह्म लोक सिव लोक । लोक ससि छंडि लोक धुअ ॥
रन घरिय रांव आरति अरुन । तरुन अरुन मंडल षिलिय ॥
अट्ठाह कोस चहुआंन पर । बहुरि पंग षारस झिलिय ॥
छं० ॥ २२०९ ॥

पंग सेना का पुनः पृथ्वीराज को आघेरना और कन्ह राय का अग्रसर होना ।

झिलि षारस पहुपंग । रंग रंगह घन घेरिय ॥
घन निसान गय घंट । ठनकि ठंठनि बजि भेरिय ॥

(१) ए. कृ. को.-सम रट्ठौर नरिंद वर ।

तल विताल धर धरनि। नट्टन गहनह उक्करयौ ॥
तब कन्हा चहुआन। सघन छंछट संभरयौ ॥
पट्टन पवंग ओड़ौ उगहि। सु गुर सार भेरिय भरन ॥
छुट्टति स्वामि हंसारि हंसि। तजि धमारि बंछिय मरन ॥

छं० ॥ २२१० ॥

वीर बखरेत का पंग सेना को रोकना और उसका माराजाना।

छंछट छल रष्षनह। [1]पवंग पट्टन प्रवेस किय ॥
तब लगि हय गय भर। भरंति चहुआन चंपि लिय ॥
बलिय बीर [2]बष रेत। पग्ग पाहनि दल [3]रुक्कयौ ॥
तब लगि कँह पटनेस। झारि झंझरि झर झुक्कयौ ॥
उच्चित सीस तस अंमरह। समर देषि संपष्ष्यौ ॥
निट्ठुर निसंक उप्पर पहर। बहुरि पंग पहु उतर्‍यौ॥ छं० ॥ २२११ ॥

छग्गन राय का पंग सेना को रोकना।

दूहा ॥ चंपत अच्छरि रिंढ लगि। चषि अप्पन तन देषि ॥
तन तुरंग तिल तिल करन। भयौ कन्ह मन भेष ॥ छं० ॥ २२१२ ॥

कवित्त ॥ सुनहु बत्त पषरैत। लेहु ओढ़ौ दल रक्कौ ॥
चहूँआर चंपंत। अंत ओटह किम चुक्कौ ॥
पहु पट्टन पल्लानि। हटकि करि हनौ गयंदह ॥
सबर बीर संग्रहौं। भीर नह परैं नरिंदह ॥
रुक्कयौ [4]छगन जैचंद दल। सिर तुट्टै असिवर कढ्यौ ॥
तब लगि सु तास दल रुक्कयौ। जब लग्गि कन्ह हँवर चढ्यौ ॥

छं० ॥ २२१३

छग्गन का पराक्रम और बड़ी वीरता से माराजाना।

हय कट्टत भू भयौ। भये भूपयन पलक्यौ ॥
पय कट्टत कर चल्यौ। करहि सब सेन समिक्यौ ॥
कर कट्टत सिर भिर्‍यौ। सिरह सनमुष होय फुर्‍यौ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-पवन। (२) ए.-वसरेत (३) मो.-लुक्यौ।
(४) ए. कृ. को.-सिघ।

सिर फुट्टत धर धऱ्यौ । धरह तिल तिल होय तुथ्यौ ॥
धरि तुट्टि फुट्टि कविचंद कहि । रोम रोम बिंध्यौ सरन ॥
सुर नरह नाग अस्तुति करहि । बलि बलि बलि छग्गन मरन ॥
छं० ॥ २२१४ ॥

छग्गन की पार्थ से उपमा वर्णन ।

गाथा * ॥ पंडव छग्गनि षग्गं । सहस गुनं पुज्जियं समरं ॥
कौरव दल भीमधज्जं । रूकै चहुआन कन्ह मुष अग्गं ॥
छं० ॥ २२१५ ॥

छग्गन का मोक्ष। पृथ्वीराज का ढाई कोस निकल जाना ।

दूहा ॥ लरि छग्गन छत्री सुनहु । लियौ सु हूर विमान ॥
तिन भूभत निरभै गयौ । अढी कोस चहुआन ॥ छं० ॥ २२१६ ॥

कन्ह का रणोद्यत होना, कन्ह के सिर की कमल से और पंग दल की भ्रमर से उपमा वर्णन ।

चढत कन्ह सामंत हय । जय जय करहि सु देव ॥
मनहु कमल अलिमल भ्रमर । कुहर पंग दल सेव ॥ छं० ॥२२१७॥

कन्ह के तलवार की प्रशंसा कन्ह की हस्तलाघवता और उसके तलवार के युद्ध का वाक दृश्य वर्णन ।

भुजंगी ॥ भये आमुहे सामुहे सेन थट्टं । कसे सीस टोपं समाहे सु भट्टं ॥
जबै वृंद सा हंद को कोप जान्यौ । तबै जंगली राव हैवर पलान्यौ ॥
छं० ॥ २२१८ ॥

पयानो कियो दिग्गपालं सुक्रित्ती । सुअं बीर नर सिंह सा सूर पत्ती ॥
नराची कढी कन्ह कै हथ्थ सूरी । महा लोह लंबी लसै लोह पूरी ॥
छं० ॥ २२१९ ॥

किधौं काल कन्या किधौं काल नग्गी । किधौं धूम केतं किधो ज्वाल (१)जग्गी ॥
लषे सत्रु सेना सुअं भंग सोचै । मनो लोह संघार की मौंच लोचै ॥
छं० ॥ २२२० ॥

* यह गाथा मो. प्रति में नहीं है । (१) मो.-लग्गी ।

गिराये गुरं षेत घन घाय घोरैं। महा बाहु मैं मत्त मैं मत्त मोरैं ॥
मच्यो मार मारं बिजै सार बज्जै। कपै कायरं नारि सा सूर गज्जै ॥
छं० ॥ २२२१ ॥

परी जिरह सन्नाह तें बाहु षंडी। मनों टूक करि कंचुकी नाग छंडी॥
परे अंग अंगं धरं सीस न्यारे। मनों गरूर ने षंडि कै व्याल डारे॥
छं० ॥ २२२२॥

घनं घाय लग्गे धुकै धींग धाये। मनौं नालि तें कंज नीचें नवाये॥
लगे लेल सामंत घूमंत ठड्डै। मनों रंग मज्जीठ में बोरि कड्ढे ॥
छं० ॥ २२२३ ॥

उडैं अग्गि यों दंत दंती सनेनं। गुढ़ी पुच्छ उड्डैं मनों झाल रेनं॥
कहूं दौरि कै अग्गि बाहं उषारें। कहू लाष मायंक के बाक फारें॥
छं० ॥ २२२४ ॥

कहू वा पचारे कहूं चोट चंडी। कहूं बीर बीराधि ज्यों मोद मंडी॥
कहू नागिनी सी नवावै न राजी। मनों पिंड कारंड मैं पट्ठि पाजी ॥
छं० ॥ २२२५ ॥

कहू मुंड रुंडं अरुंडं सुपेल्ली। कहूं स्रोन के कुंड में मुंड मेल्ली॥
कहुं स्रोन के सार में कंठ मेल्लै। मनों सिंध की धार सिंदूर ढोलै॥
छं० ॥ २२२६ ॥

झरी तेग तब बीर अमरट्ठ कड्ढी। गही गाढ मारी किधों मुट्ठि गड्ढी ।
किधों सच्चु के प्रान की गैल नामी। किधों पानि मैं लोह की जेब जामी॥
छं० ॥ २२२७ ॥

जबै सच्चु के लोल कों धाव घाले। मनो काल की जीभ जाहाल हालै ॥
किधों छंद छत्ती निरत्ति निकस्सै। किधों भेदि देही दुआरं दरस्सै ॥
छं० ॥ २२२८ ॥

कहू ऐंचि तारीन सों अंत ल्यावै। कहूं सच्चु के प्रान को ताकि आवै॥
कहूं चंपि दूसासनं भीम मारे। कहूं मुष्टिकं चंपि कीचक प्रहारे ॥
छं० ॥ २२२९ ॥

लगे सेल सामत लग्गे न जानैं। परै स्रोन कै पंक में सीस सानै ॥
* * * * * * छं० ॥ २२३० ॥

दूहा ॥ ऐ ऐ कन्ह निव्रत्त कर । धर धर तुट्टिय धार ॥
पक्खर एक पर ढ्थ्थरे । सिर सिर बुट्टिय सार ॥ छं० ॥ २२३१ ॥

पट्टी छूटते ही कन्ह का अद्वितीय पराक्रम वर्णन ।

कवित्त ॥ पट्टै पल छुट्टंते । कन्ह धाराहर बज्यौ ॥
अनुकि मेघ मंडलिय । बीर बिज्जुलि गहि गज्यौ ॥
हय गय नर तुट्टंत । बिरह तुट्टिय तारायन ॥
तुट्टिय षोहुनि पंग । राय श्रोनिय भारायन ॥
हल हलिय नाग नागिनि पुरंत । नागिन सिर बुक्यौ हरि ॥
आवहि न संग सिंगार मन । मननि सीस मुक्यौ सु धर ॥
छं० ॥ २२३२ ॥

कन्ह का युद्ध करना । राजा का दस कोस निकल जाना ।

भुजंगी ॥ जितं सार धारं जु सारंग तुट्टौ । मनों आवनं मेछ्स सीसं उट्ठौ ॥
फटी फौज आवाज सा पंग राई । म्रगी जानि म्रहै धरै बंध धाई ॥
छं० ॥ २२३३ ॥

बजी हक्क हुंकार भंकार भेरी । भरी रीस सेना फिरी लज्ज घेरी ॥
धजा बीर बैरष्ष साबं बरैसा । लगै सीस सामंत सा अंमरेसा ॥
छं० ॥ २२३४ ॥

उड़ै गिद्ध आवद्ध तुट्टै उतंगा । किनक्कै सु ताजी चिकै हस्ति चंगा ॥
भभक्कै सु धायं सु रायं हवाई । मनो मारुतं मत्त सामंत थाई ॥
छं० ॥ २२३५ ॥

फिरी चक्क चहुआनं की हक्क बज्जी । मनों प्रौढ़ भर्तान ऊढ़ा सु लज्जी ॥
हसी कन्ह चहुआनं करि केलि रत्ती । फिरै जोगिनी जोग उच्चार मत्ती ॥
छं० ॥ २२३६ ॥

दह कोहसो स्वामि आराम छुट्टौ । पछै पंग रा सेन आवेन उट्टौ ॥
* * * । * * छं० ॥ २२३७ ॥

कवित्त ॥ दिष्षि सेन पहुपंग । आस ढिल्ली ढिल्ली तन ॥
चिंति कन्ह चहुआन । पट्ट छुट्टौ सुभयौ बन ॥

(१) ए. कृ. को. पंतकलौं । (२) ए. कृ. को.-उच्चार भेली ।

निपथ अप्प है जनिय। पंग जंपै औवन गहुं॥
सु पथ सूर सामंत। जीह जीयत सु बैन लहु॥
आहत्त जात धंधो तिनं। सो धंधौ जुरि भंजयौ॥
बज्जियन जीव रुंध्यौ न्त्रिपति। मुकति सथ्य है बज्जयौ॥
छं० ॥ २२३८ ॥

कन्ह का कोप।

पद्धरी॥ कलहंत कन्ह कुप्यौ कराल। फरकंत मुंछ चष चढ़ि कपाल॥
चिंतौ सु चिंत देवी प्रचंड। कह कहति कंक कर मूल मंड॥
छं० ॥ २२३९ ॥

गुररंत सिंघ आसन अरोह। वामंग बाह षप्पर सु सोह॥
इहि भंति प्रसन सजि देवि दंद। तहं पढ़त छंद अनेक चंद॥
छं० ॥ २२४० ॥

रन रंग रहसि ठट्ठो षयंत। बरदाइ बदत बिरदन अनंत॥
यह प्रगट बिरद जिन नरनि नाह। हंतन हनंत आजानबाह॥
छं० ॥ २२४१ ॥

षोलंत नयन जिहि समर रंग। भारथ्थ कथ्थ भीषम प्रसंग॥
भज्जनह राय संकर पयान। षूनी न पग्ग षंडल षयान॥
छं० ॥ २२४२ ॥

देषंत सेन न्त्रप पंग रुक्कि। उद्यान कुग्ग जनु सिंघ हुक्कि॥
गहि संग नंग न्त्रिम्मलिय हथ्थ। सोहंत बज्र जनु तात पथ्थ॥
छं० ॥ २२४३ ॥

षलभलिय सेन न्त्रप पंग राइ। उद्यान तपत जनु लग्गि लाइ॥
धर परत धरनि है छिनत सून। बाहंत गुरज सिर करत चून॥
छं० ॥ २२४४ ॥

तरफरत तड़ित सम तेज तेग। सम सिलह सहित तुट्टत अछेग॥
बरि अंग अंग तुटि तुच्छ तुच्छ। जन सुकत नीर सर तरफि मच्छ॥
छं० ॥ २२४५ ॥

घन घाय घुम्मि इक रहंत थंकि। बासंत षेलि मतवार जक्कि॥

है कटे च्यारि चहुआन जंग। पंचमह साजि है समर रंग ॥
छं० ॥ २२४६ ॥

चार घोड़े मारे जाने पर कन्ह का पांचवे पट्टन नामक घोड़े पर सवार होना। पट्टन की वीरता। कन्ह का पंचत्व को प्राप्त होना।

कवित्त ॥ तब सु कन्ह चहुआन। तुरिय पट्टन पल्लान्यौ ॥
हिंसि किनकि वर उठ्यौ। मरन अप्पन पहिचान्यौ ॥
उहि कर असिवर लह्यौ। गहिब गज कुंभ उपट्टै ॥
मारै लतानि वह घाव। षुंदि अरि दंतन कट्टै ॥
वह नर निसंक है वर सु धर। पिष्पहु बित्त कबित्तयौ ॥
बर मुंड माल हर संठ्यो। वह रवि [1]स्थलैं जुत्तयौ ॥ छं० ॥ २२४७ ॥

दूहा ॥ पट्टन पवंग पालानि पति। चढ्यौ कन्ह चहुआन ॥
कहर कूह कीयो रनह। रह्यौ षंचि रथ भान ॥ छं० ॥ २२४८ ॥

मोतीदाम ॥ कम्प्यौ कर कन्ह सु कंक कराल। बजै षग हथ्थ दुअं असराल ॥
मनों रस बीर बली बिकराल। कुटै असि गड्डरि कूटत पाल ॥
छं० ॥ २२४९ ॥

फटै सिर सारनि मार विषंड। मनो जगनाथ सु बंटिय हंड ॥
तुटै सिर जाय रहै उत सन। अजा सुत हंति सिवा बल दैन ॥
छं० ॥ २२५० ॥

परें सब सूर धरप्पर सिंभ। मनों कटि रिम्म महा गुर गिंभ ॥
* * * * * * छं० ॥ २२५१ ॥

कन्ह के रुंड का तीस हजार सैनिकों को संहारना।

दूहा ॥ निकस्यौ न्रप प्रथिराज पहु। रह्यौ कन्ह दल रोकि ॥
हय हय हय म्रतलोक महि। जय जय चवि सुरलोक ॥ छं० ॥ २२५२ ॥
लरत सीस तुट्यौ सु हर। धर उठ्यौ करि मार ॥
घरी तीन लों सीस बिन। कट्टे तीस हजार ॥ छं० ॥ २२५३ ॥

(१) मो. वह रवि रथ छे जुत्तयी।

कन्ह का तलवार से युद्ध करना ।

चोटक ॥ बिन सीस इसी तरवारि बहै । निघटै जन मावत घास महै ॥
धर सीस निरास हुअंत इसे । सुभ राजनु राह रुकंत जिसे ॥
छं० ॥ २२५४ ॥

धर नाचत उट्ठि कमंध धरै । भगतं जनु आपस ध्यान करै ॥
बिय षंड बिहंड सु तुंड तुटै । दुअ फार करारनि सीस फटै ॥
छं० ॥ २२५५ ॥

हरदास कमद्धज आय अस्यौ । तिन को तन घावन सों जकऱ्यौ ॥
बल बाम इसो न रहै रुकस्यौ । मनों नाहर पेटक में सिकस्यौ ॥
छं० ॥ २२५६ ॥

कि मनो गजराज छुट्यौ जकस्यौ । कविचंद कहै परलो सु कऱ्यौ ॥
असि दोरि दई सु जनेउ उतारि । परयौ हरदास भ्रिथी पुर पारि ॥
छं० ॥ २२५७ ॥

बिफुऱ्यौ रन में कर कान्ह सजें । बिन मावत छुट्टि कि मत्त गजें ॥
हहरें हलकै किलकै किलकी । भहरें भरि पच उनां भिलकी ॥
छं० ॥ २२५८ ॥

तिन मैं रुधि धारि चलै झिलकी । तिन उप्परि पंति फिरै अलिकी ॥
सु उभावत हथ्थ छुरी षलकी । सु पियें रुधि धार चलै ललकी ॥
छं० ॥ २२५९ ॥

गहरें गवरांपति माल गठैं । बहरें वर बावन बीर बढैं ॥
घहरें धर घायल घुम्मि इसे । अहरें जनु षाइ ढरंत जिसे ॥
छं० ॥ २२६० ॥

कहरें नर कन्ह सु केलि करी । पहरें तरवार सु तुट्टि परी ॥
वह नागिनि सो सुध व्है निबरी । दल पंग भयान लगी अकरी ॥
छं० ॥ २२६१ ॥

तलवार टूटने पर कटार से युद्ध करना ।

दूहा ॥ जब तुट्टी तरवार कर । तब छुट्टी जम दड्ढ ॥
इक कटारी दुहुन उर । पंच सहस भर बड्ढ ॥ छं० ॥ २२६२ ॥

कटार के विषम युद्ध का वर्णन जिससे पंग सेना के पांच सहस्त्र सिपाही मारे गए।

त्रिभंगी ॥ कर कढ्ढि कटारी जम दढ्ढारी काल करारी जिय भारी ॥
चंपै चर नारी बारों पारी निकसि निनारी उर भारी ॥
ग्रस सोभत सारी डेढ करारी लंब लंबारी लंबारी ॥
उपजै सुर आरी बजि घरियारी अति अमियारी आहारी ॥
छं० ॥ २२६३ ॥

लग्गे इक आरी होइ दुआरी जानि जियारी जिभ्भारी ॥
लपकै हियलारी बारह बारी भूषी भारी भाहारी ॥
जनु नागिनि कारी कोप करारी अति आकारी सा कारी ॥
भभकै रुधि भारी भभक भरारी भर भर बारी तन ढारी ॥
छं० ॥ २२६४ ॥

गिरि.तें झरकारी झिरना झारी झिरै झगारी झर कारी ॥
बबकै बुबकारी बीर बरारी नारद तारी दै चारी ॥
मचि कूहं करारी अति उभ्भारी अगिमित पारी धर ढारी ॥
* * * * ॥　　　　छं० ॥ २२६५ ॥

दूहा ॥ काल कूट कीनो विषम । पंच सहस भर बढ्ढ ॥
कहर कल्ह किन्नौ सु कर । तब तुट्टिय जमदढ्ढ ॥ छं० ॥ २२६६ ॥

कटार के टूट जाने पर मल्ल युद्ध करना।

पद्धरी ॥ तुट्टी सु हथ्थ जमदेढ्ढ जोर । बढ्यौ जु अप्प बल अंग और ॥
गहि पाइ भुम्मि पटकै जु फेरि । धोबी कि वस्त्र सिल पिट्ट सेर ॥
छं० ॥ २२६७ ॥

दुअ हथ्थ दोन नर ग्रहै मुंड । होइ मथ्थ चूर जनु तुंब कुंड ॥
गहि हथ्थ हथ्थ मुर रे सु तोरि । गज सुंड साष तोरे मरोरि ॥
छं० ॥ २२६८ ॥

भरि रोस हथ्थ पटकंत मुंड । भिरडंत जानि श्रीफल सु षंड ॥

(१) ए. कृ. को.-दुपारी, दुपारी ।　　　　(२) ए. कृ. को.-भारी ।

गहि पाइ दोइ डारंत चीर। कढ्ढी सु आनि फारंत भीर॥
छं० ॥ २२६९ ॥

गहि सीस मौर भंजै सु ग्रीव। फल मोरि मालि तोरै सु तीव॥
हाकंत मत्त दैलत्त घाइ। डारंत तेव करि हाइ हाइ॥छं०॥२२७०॥
इहि विधि सु कन्ह रिनकेलि किन्न। परि अंग अंग होइ छिन्न भिन्न॥
छं० ॥ २२७१ ॥

चाहुआन का दस कोस निकल जाना।

कवित्त ॥ चाहुआन सुज्जानं। भूमि सर सेज्या सुतौ॥
लेषि विअच्छरि बर। समूह बरनह सानूतो॥
जनु परि त्रिय परहंस। हंस आलिंगन मुकझौ॥
भर भारी कन्हह। हनंत अवसान न चुक्कयौ॥
धर गिरत धरनि फुनि फुनि उठत। भारथ मम [1]जिन बर कियौ॥
इम जंपै चंद बरद्दिया। कोस दसह भूपति गयौ॥ छं० ॥२२७२॥

कन्ह राय की वीरता का प्रभुत्व। कन्ह का अक्षय मोक्ष पाना।

जिम जिम तन जरजर्यौ। विहसि वर धायौ तिम तिम॥
जिम जिम अंत रुलंत। लष्य दल तिन गनि तिम तिम॥
जिम जिम करिवर परत। उठत जिम सीस सहित बर॥
जिम जिम रुधिर झरंत। सघन घन बरषत सद्दर॥
जिम जिम सु षग्ग बज्ज्यौ उरह। तिम तिम सुर नर मुनि [2]मन्यौ॥
जिम जिम सु घाव धरनी पर्यौ। तिम तिम संकर सिर धुन्यौ॥
छं० ॥ २२७३ ॥

गह गह गह उच्चार। देव देवासुर भज्जिय॥
रह रह रह उच्चार। नाग नागिनि मन लज्जिय॥
बह बह बह उच्चार। सु रह असुरन धुनि सज्जिय॥
चह चह चहतामंत। तुट्टि पायन पर तज्जिय॥
मुह मुहह मुच्छ कर कन्ह तुअ। चमर छत्र पह, पंग लिय॥

(१) ए. कृ. को.-जिहि। (२) ए. कृ. को.-गन्यौ।

सिर बंध कंधै असिवर हरिग । पहर एक पट्ट न दिय ॥
छं० ॥ २२७४ ॥

पहर एक पर प्रहर । टोप अमि बर बर बज्जिय ॥
बषर पषर जिन सार । पार बट्टन तुटि तज्जिय ॥
रोम रोम बर बिद्ध । सिद्ध किन्नर लिन्निय बर ॥
अस्त्र बस्त्र बज्जौ । कपाट दद्धीच हीर हर ॥
रुधि मंस हंस हरिबंस नर । दिव दिवंग मिटि अम्मिलित ॥
किन्नर कबंध घटि तंति तिन । सुबर पंग दिष्षिय [1]षिल्लत ॥
छं० ॥ २२७५ ॥

कन्ह के अतुल पराक्रम की सुकीर्ति ।

भुजंगी ॥ परे धाय चहुआन कन्हा करूरं । भयं पारथं बीर भारथ्य भूरं ॥
बढे सार बज्जे न भज्जै न बग्गं । नहीं नीर तीरं हरं भार लग्गं ॥
छं० ॥ २२७६ ॥

हुते लज्ज भारे सु भारथ्य नीरं । बड़े सूर अन्नं न दीसै सरीरं ॥
तिनं सम्म भारं सम्मै नाहि हथ्थं । झरै सब्ब सस्त्रं परं बीर बथ्थं ॥
छं० ॥ २२७७ ॥

झमक्कंत झारे प्रहारंत सारं । मनों कोपियं इंद्र बुट्ठि अंगारं ॥
जितो भोमि [2]चष्षे पिजै पंग इंदं । लरे लोह दीनं मरेहं गुबिंदं ॥
छं० ॥ २२७८ ॥

लगै लोह लोहं पलट्टैति तत्तो । रमं सामि अप्पैन भो सार छत्तो ॥
तुटे अस्त्र बस्त्रं भयं छीन भंतो । असव्वार अस्वं न ढुंढै निरत्तो ॥
छं० ॥ २२७९ ॥

परे संघरे सूर मारंग पाजं । नरी रंग बज्जै कलं प्रान बाजं ॥
इसी कन्ह चहुआन करि केलि रत्तो । फिरै जोगिनी जोग उच्चार मत्तो ॥
छं० ॥ २२८० ॥

टरै विष्णु हरं दसै दीन बारं । भयं अश्वमेधं सहं धम्मसारं ॥
छं० ॥ २२८१ ॥

(१) ए. छ. को.-लिषत । (२) मो. चषे ।

कन्ह द्वारा नष्ट पंग सेना के सिपाहियों की संख्या।

दूहा ॥ * एक लष्प सित्तर सहस। कट्टि किये अरि नन्ह ॥
दोय दीन भष्षै सु इम। धनि धनि न्रप्प सु कन्ह ॥
छं० ॥२२८२॥

धरनि कन्ह परतह प्रगट। उठ्यौ पंग न्रप हक्कि ॥
मनौं अकाल संकरह हँसि। गहिय तुट्टि निधि रंक ॥छं०॥२२८३॥

अल्हन कुमार का पंग सेना के साम्हने होना।

तब झुकि अल्हन षग्ग गहि। भयौ अप्प बल कोट ॥
सिर अप्पौ कर स्वामि कौं। हनो गयंदन जोट ॥ छं० ॥ २२८४ ॥

अल्हन कुमार का अपना सिर को काट कर पृथ्वीराज के हाथ पर रख कर धड़ का युद्ध करना।

कवित्त ॥ करिय पैज अल्हन। कुमार रुद्धौ पग पुल्लै ॥
झरतु धार तन चार। भार असिवर नन डुल्लै ॥
रोहन रन मुंडयौ। बीर बर कारन उट्ठौ ॥
ज्यों अषाढ घन घोर। सार धारह निर बुट्ठौ ॥
पंगुरा सेन उप्पर उझरि। उभै भयन गज मुष्प दिय ॥
उच्चरे देवि सिव जोगिनिय। इह अचिज्ज सें राज किय॥छं०॥२२८५॥

अल्हन कुमार का अतुल पराक्रममय युद्ध वर्णन। वीरया राय का मारा जाना उसके भाई का अल्हन के धड़ को शान्त करना।

पद्धरी ॥ मह माइ चित चिंतीस आज। जंप्यौ सु मंच देवी कराल ॥
आश्रम्म देवि किय निज्ज धाम। कट्टयो सीस निज हथ्थ ताम ॥
छं० ॥ २२८६ ॥

झुकयो सीस निज अग्ग राज। हुंकार देवि किय निज्ज गाज ॥
धायौ सु धरह बिन सीस सार। संग्रह्यौ बांह बामैं कटार ॥
छं० ॥ २२८७ ॥

* यह दोहा मो. प्रति में नहीं है।

उच्छयौ षग्ग बर दच्छ पानि । संमुही धीर धायौ परानि ॥
कौतिग्ग सब्ब देषंत सूर । दिष्यौ न दिठ्ठ कारन करूर ॥
छं० ॥ २२८८ ॥

माझौ पयठ्ठ सा सेन पंग । बज्जे करूर बज्जंत जंग ॥
कौतिग्ग सूर देषंत देव । नारद रुद्र रस हंस एव ॥ छं० ॥ २२८९ ॥

षेचर रुहंस चर भूम्म चार । थक्के सु देषि प्राक्रम करार ॥
महमाइ सुधरं उप्पर बयठ्ठ । अरि भार सार मंडिय पयठ्ठ ॥
छं० ॥ २२९० ॥

धर परै धार तुट्टै सु थार । हलहले पंग सेनंस सु भार ॥
दष्षिनिय राय बीरयांनाथ । गज चल्यौ जुद्ध सन्नद्ध समाथ ॥
छं० ॥ २२९१ ॥

सूरमा धारह ढहन्न बीर । चंपयौ गज्ज सम्हौ सुधीर ॥
मुष लग्गि आय सम अलह जाम । असि झाक हयौ मुष इभ्भ ताम ॥
छं० ॥ २२९२ ॥

सम अंषि जार तुट्टौ सुदंत । कटि मूल पर्यौ पादप सुमंत ॥
उठ्ठयौ छक्कि बीरया नाथ । आयेव अल्ह सम लग्गि बाथ ॥
छं० ॥ २२९३ ॥

चंपयौ उअर अल्हन तास । नष्षयौ धरनि गय रुड़ि उसास ॥
बीरया नाथ लघु बंध धाइ । गज चल्यौ पंग लग्गौ सु दाय ॥
छं० ॥ २२९४ ॥

षिंटयौ अब्ब सेना सु धीर । आवद्ध मुक्कि सब सेन बीर ॥
चंपयौ आय गुरु मज्ज जाम । संग्रह्यौ दंत दंती सु ताम ॥
छं० ॥ २२९५ ॥

गय हयौ सीस कट्टार सार । महमाइ हंसिय दीनौ हुंकार ॥
भग्गौ सु गज्ज कीनौ चिकार । ढाइयो सबै मिलि सूर सार ॥
छं० ॥ २२९६ ॥

अल्हन कुमार के रुंड का शान्त होना और उसका मोक्ष पाना ।

कवित्त ॥ सिर तुट्टै रुंध्यौ गयंद । कढ्ढौ कट्टारौ ॥
तहां सुमरिय महमाइ । देवि दीनौ हुंकारौ ॥

अमिय सद्द आयास। लयौ अच्छरिय उछंगई॥
तहां सु भइ परतष्षि। अरित अरि कहत कइंगह॥
अल्हन्न कुमार विभ्रम सुभ्यौ। रन कि विमानह मनु मन्यौ॥
तिहि दरसि तिलोचन गंग धर। तिम संकर सिर धर धुन्यौ॥
छं० ॥ २२९७॥

दूहा ॥ सघन घाय विह्वयो सु तन। धरनि ढल्यौ परिहार॥
परे बहुत्तरि सुभर रन। सह्व अल्हन सार॥ छं०॥ २२९८॥

अल्हन कुमार के मारे जाने पर अचलेस चौहान का हथियार धरना।

धुन्नित ईस सिर अल्हनह। धनि धनि कहि प्रथिराज॥
सुनि कुप्यौ अचलेस भर। मुहि बल देषिव राज॥ छं०॥ २२९९॥
इह चरित्त नद्दिय सु चिर। करिय राज परिहार॥
अदभुत क्रम देषहु न्रपति। करौं षेत सर सार॥ छं०॥२३००॥
पर्यौ अल्ह सामंत धर। गह्यौ पंग दल अव्व॥
सुभर रज्जि कमधज्ज दल। सुमन राज गुर गव्व॥ छं०॥२३०१॥

पृथ्वीराज का अचलेस को आज्ञा देना।

कवित्त ॥ तब जंपै प्रथिराज। सुनौ अचलेस संभरिय॥
इह सु सूर आचरन। नही सामंत संभरिय॥
मैंन सूर धरि कंध। राह रुंधेत गयौ धन॥
इह अचंभ आचरन। देव दानव दैतानन॥
मुनि दानव परहरि पर। अपर जुद्ध संधि पंगुर दलह॥
संकह्यौ सामि संकट परै। सकल किति कित्ती चलह॥ २३०२॥

अचलेस का अग्रसर होना।

सुनत बेन प्रथिराज। अचल नायौ मरंन सिर॥
है नच्यौ सु तुरंग। बीर कनि तुरंगधर॥
जुद्ध सलित्तह परै। लोह लग्गी धर तुट्टै॥
जल विथ्थरि कमधज्ज। घाय लग्गे आहुट्टै॥

अचलेस अग्गि अग्गंत भर। प्रलै अग्नि चनेच जिम॥
चहुआन अग्ग उभ्भौ भयौ। राम अग्ग हनमंत जिम॥छं॥२३०३॥

अचलेस का बड़ी वीरता से युद्ध करके मारा जाना।

भुजंगी॥ तबै हक्किय्यं सेन पंगं नरिंदं। दियौ आयसं जानि कल गज्जि इंदं॥
उठी फौज पंगं करै कूह सब्बं। बगे बग्ग कट्टी गजे बीर गब्बं॥
छं०॥२३०४॥

करी अचलेसं जु स्वामित्त पज्जं। करौं षंड षंडं पलं तुम्भ कज्जं॥
नबौ सीस चहुआन अचलेस नामं। मिल्यौ आय सैना रती कंक कामं॥
छं०॥२३०५॥

जपे मंच द्रुग्गा करे ध्यान अंबी। सुने आय आसीस सा देवि लुंबी॥
बलं अच्चलं रूप अदभुत्त पिष्यो। भयौ मोह सब्बै घटी रुद्र दिष्यौ॥
छं०॥२३०६॥

विरम्भे धुरम्भे धु बज्जे निसानं। मिले रीठि मत्ती सिरं चाहुआनं॥
दिसं भेष लग्गी रयं रत्त भुम्मी। पयं पात जानं सयं गत्त उम्मी॥
छं०॥२३०७॥

उछंगं उछारंत अच्छी निरष्षै। दलं दंग पंगं कुरंगं परष्षै॥
कुल्ला केलि सामंत तत्तं पतंगं। परे जुद्ध मत्ते सरित्ता सु गंगं॥
छं०॥२३०८॥

रहं भान थानं रह्यौ थक्कि रथ्थं। टगं लग्गियं भूच षेचं सु रथ्थं॥
गही पंग सेना भरं षग्ग पानं। मनो हक्कि गोपाल गोधन्न थानं॥
छं०॥२३०९॥

भरक्के धरक्के भरक्के ढरक्के। परे गज्ज बाजं सु कंधं करक्के॥
करे नाम सब्बं परे षग्ग धीरं। करी जूह मझ्झे गजैकं कंठीरं॥
छं०॥२३१०॥

पयंसं सरक्कै धरक्कै धरन्नी। परे बिब्बि षंडं सबं मुष्ष रन्नी॥
किलक्कारियं देवि सथ्थें सु नच्चै। परै षग्ग पानं करै पंज संचै॥
छं०॥२३११॥

कवित्त ॥ करि विपेज अचलेस। सु छल चहुआन पग्गगहि[1] ॥
अरि दल बल संहस्यौ। पूरि धर भरित रुधिर दहि[2] ॥
मच्छति हैवर तिरहि। कच्छ गज कुंभ बिराजहि ॥
उअर हंस उड़ि चलहि। हंस मुष कमलति राजहि ॥
चवसट्ठि सद्द जै जै करहि। छत्रपत्ति परि संचरिय ॥
बोहिथ्थ बीर बाहर तनै। दिल्लीपति चढ़ि उम्मरिय॥छं०॥२३१२॥

दूहा ॥ सुनत घाव बिद्धयौ सघन। ढर्यौ अचल चहुआन ॥
भयौ मोह कमधज्ज दल। परें पंच सें थान ॥ छं० ॥ २३१३ ॥

विझराज का अग्रसर होना।

अचल अचेत सु षेत हुअ। परिग पंग बहुराय ॥
पट्टनं छर अरु पट्ट छर। उठे बिंझ बिरुझाय ॥ छं० ॥ २३१४ ॥
पर्यौ अचल पिष्यौ अरिय। करिय कोप पहुपंग ॥
अप्प बग्ग कढ्ढिय बिरचि। [3]हनू हनौ चवि जंग ॥ २३१५ ॥

पंग सेना का विषम आतंक वर्णन।

लघुनराज ॥ कढ्ढी सु बग्ग पंगयं। तमक्कि तोन संगयं ॥
बजे निसान नद्दयं। ठनंकि घंट मद्दयं ॥ छं० ॥ २३१६ ॥
रनक्कि भेरि भेरियं। नद्दे भरन्न फेरियं ॥
परक्कि तोन [4]पष्षरं। गहक्कि भार सुब्भरं ॥ छं० ॥ २३१७ ॥
धरक्कि धाम सुद्धरं। किनक्कि सीस से सुरं ॥
भरं सु राज पग्गयं। लहंति जुत्ति जंगयं ॥ छं० ॥ २३१८ ॥
कुलं अरेह लज्जसं। अरप्पि सांइ अप्पसं ॥
अमग्ग बट्ट भंगयं। जुरे अनेक जंगयं ॥ छं० ॥ २३१९ ॥
रते सु ध्रंम्म सामयं। करन्न उंच कामयं ॥
पंती सु नेह न्निम्मलं। चले सु स्वामि अच्चलं ॥ छं०॥२३२०॥
मरन्न तिन्न मातयं। गरूअ गुन्न गातयं ॥
तपे सु आय आइयं। नयौ सु सीस साइयं ॥ छं०॥२३२१॥

---

(१) मो. कहि। (२) ए.-दहि
(३) ए. कृ. को. हनो। (४) मो.-षप्परं।

दियौ सु पंग आयसं । गहन्न सब्ब रायसं ॥
गयौ बढ़ौ सबैं मिली । सकै न जाइ ज्यौं दिली ॥ छं० ॥ २३२२॥
सुने सु बत्त पंगयं । कढे सु षग्ग गज्जयं ॥
*　*　*　*　*　*　छं०॥२३२३ ॥

पृथ्वीराज का विझ्झराज सौलंकी को आज्ञा देना ।

कवित्त ॥ दल आवत प्रहु पंग । दिष्षि चहुआन सब्ब सजि ॥
बींझराज चालुक्क । दियौ आयेस अप्प गजि ॥
अहो धीर चालुक्क । सहि अनभंग षग्ग धरि ॥
सनमुष सजि षल जूह । तास भर सु भर अंत करि ॥
उच्चर्यौ ब्रह्म चालुक्क तहं । अहो राज प्रथिराज सुनि ॥
पथ्थ धरनि घन सूर भर । करौं पंग दल दंति रिन ॥
छं० ॥ २३२४ ॥

विझ्झराज पर पंगसेना के छः सरदारों का धावा करना । विझ्झराज का सब को मार कर मारा जाना ।

भुजंगी ॥ तव नम्मि सीसं न्त्रपं विंझ राजं । चल्यौ रिम्म सम्हं घनं जेम गाजं॥
जपे मंच अंबीय सा इष्ट सारं । मनं बच्च क्रम्मं धरे ध्यान धारं ॥
छं० ॥ २३२५ ॥
दियौ आय अप्पं दरस्सं सु अंबी । चढी जानि सिंघं सु आवड्ड लुंबी॥
सथ्थै सब्ब देवी षगं षप्प रत्ती । मतं झूझ मत्ती झलक्कंत कत्ती ॥
छं० ॥ २३२६ ॥
सबै भूचरं षेचरं षग्ग हक्कं । नच्चं काल ईसं सु डक्कं तु हक्कैं ॥
अगें भूत प्रेतं फिरैं भूह कारं । करं जोगिनी पच्च जंपे जैकारं॥
छं० ॥ २३२७ ॥
चलै अग्ग गिद्धी समं सिद्धि साजं । सिरं सूर कौतिग्ग देषै विराजं॥
रजे देव जानं अधं आय लिष्षै । नचै बीर कौतिग्ग नारद्द दिष्षै ॥
छं० ॥ २३२८ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-पंति ।

लष्यौ पंग सेना सु बिंभं करारं । भयं भौंत भीरं सजे सूर सारं॥
मिल्यौ घाव चालुक सा सेन मझ्झं।बनं अंबुजं इभ्भ ज्यौं झानि लुझं

छं० ॥ २३२९ ॥

परे पुंडीरकं घनं सेन सारं । किनक्कै सुता जीभ जै दंत भारं ॥
धरं मुंड पूरं चलै श्रोन पूरं । पलं कीच मच्चौ सवं कूक रूरं॥

छं० ॥ २३३० ॥

समं सीस कट्टै तिनं सीस तुट्टै । मिलै रिन्न वट्ट तिनं आव घट्टै॥
तबै ग्रप्परी पीठ अप्पै अंबाई। अरी हंकि ढाहैं धरं घाइ घाई॥

छं० ॥ २३३१ ॥

सिरं इष्ट आवद्ध नष्षै अपारं । भरक्कंत सेना भगी पंग भारं ॥
दिष्यौ पंग दिष्टी मधी सेना पंती। क्रम्यौ सिंघ जेमं मदं देषि दींत॥

छं० ॥ २३३२ ॥

दिष्यौ सेन दिष्टी करी हंतिकारं । क्रमे षट्ट राजा करे षग्ग धारं॥
क्रम्यौ तोमरं देषि सो क्रिस्नरायं। क्रम्यौ रुद्रसिंघं सु कंठेरि तायं॥

छं० ॥ २३३३ ॥

जयंसिंघ देवं सु जादव्व बंसी । न्त्रिपं भीम देवं अयौ बंभ अंसी॥
क्रम्यौ सांषुलाराय सो देविदासं । न्त्रिपं बीरभद्रं सु बघ्घेल तासं॥

छं० ॥ २३३४ ॥

बजे आय अड्डे रसं राज बीरं । मिल्यौ पंग सम्मीप सो बिंभ धीरं॥
हयौ झाक सिंगीक बाहू कमंधं । पऱ्यौ अश्व फुट्टी परे सिंगि उद्धं॥

छं० ॥ २३३५ ॥

न्त्रिपं चंद्रसेनं म मूरिज्ज बंसी । नरंसिंघ रायं सुनै षड्ड अंसी॥
दुश्रो आय पंच्यौ भरं पंगतामं।मिले आय अड्डो घटं न्त्रिप्प ठामं॥

छं० ॥ २३३६ ॥

हयो किस्न राजं हयं बिंझ्झ राजं। पऱ्यौ भोमि उच्च्यौ सु चालुक्क गाजं॥
तिने जुद्धमंतो मद्दंतं करारं । महा झाक बज्जी समं सार सारं॥

छं० ॥ २३३७ ॥

तिनं तार आवद्ध बज्जै चिन्नाई । हयौ किस्नराजं जिनै अश्व ढाई॥

असी रुद्रसिंघं हयौ विंझ रायं। सिरं ताम तुट्यो पऱ्यौ भूमि भायं॥
छं० ॥ २३३८ ॥

बिना सीस सों संग्रह्यौ रुद्रसिंघं। फिरक्यौ सु फेऱ्यौ पछाऱ्यौ परिंघं॥
गयो आसु उड्डी तनं तम्मि नंष्यौ। बिना सीस धार्यो चिषा जुद्ध भुष्यौ॥
छं० ॥ २३३९ ॥

जयं जंपियं देवि सो पुहप नष्यै। टगं टग्ग लग्गी सवं सेन अष्यै॥
घटी दून सारद्ध बिन सीस झुझयौ। घनं घाय अघघाय अंतं अलुझयौ॥
छं० ॥ २३४० ॥

पऱ्यौ विंझराजं रच्यौ रूप जांनं। बऱ्यौ मांइ चालुक्क सो बंभ थानं॥
इनं देषि पंगं दलं हाय मानी। अहो बीर चालुक्क किंधी ब्रषानी॥
छं० ॥ २३४१ ॥

सबै छच छची न को हद्द रष्यौ। भयौ चंद कित्ती तहां सूर सष्यौ॥
* * * * * ॥ * छं० ॥ २३४२ ॥

विंझराज द्वारा पंग सेना के सहस्र सिपाहियों का मारा जाना।

दूहा ॥ सहस एक परिपंग दल। धन धन जंपै धीर॥
जै जै सुर बंदै सयन। धनि धनि विंझा बीर॥ छं०॥२३४३॥

विंझराज की वीरता और सुकीर्ति।

कवित्त ॥ परत अचल चहुआन। पच्छ गुज्जर रषि लाजं॥
छित्त भाग सामंत। सार न्रप जल तन भाजं॥
रूप रूप रष्यनह। दैन टट्टी बच्छारं॥
अरि रुक्की बसि सार। कीव तन भंग प्रहारं॥
तन तुट्टि सिरह पल्लवर ग्रस्यौ। बलि बिंटीह बिराधि जिम॥
इम विटि पंति अच्छरि परी। ससि पारस रति सरद जिम॥
छं० ॥ २३४४ ॥

कलिन कल्यौ असियन मिल्यौ। भार्हरि नहि भग्गौ॥
अजसुन लयौ जस बनि भयौ। अमग्ग न लग्गौ॥
पहुन लयौ [1]जियन गयौ। अप्जस नह सुनयौ॥

(१) को. कृ. जियतन।

और न ज्यौं दवरि न गयो। गाइंत न गइयौ॥
गयौ न चलि मंदिर दिसह। मरन जानि भभयौ अमिय॥
बिंझ दिय दाग तिलकाह मिसइ। बह बह बह भग्गल धनिय॥
छं० ॥ २३४५॥

दूहा॥ परत देषि चालुक्क धर। करिग पंग दल कूह॥
जिम सु देव इंद्रह परसि। रहे बीटि अनजूह॥छं०॥२३४६॥

विंझराज के मरने पर पंग सेना में से सारंगदेव जाट का अग्रसर होना।

कवित्त॥ परत बींझ चालुक्क। गहकि रा पंग सेन दल॥
जट्टराव सारंगदेव। आयौ तपित बल॥
सहस तीन असवार। धार धारा रस मध्यं॥
न्रिमल नेह स्वामित्त। सिंघ रन बहै सु हथ्थं॥
नाइयौ सीस नंमि पंग कह। दईय सीष पहुंच कर॥
उप्पारि बग्ग निज सेन सम। भला प्रसंसिय अप्प भर॥
छं० ॥ २३४७॥

फिरिय चंपि चहुआन। पंग आयस धाय सु गसि॥
गह्यौ गह्यौ उच्चारि। पंग संकर संकर रस॥
देव सोन पद्धरी। लुथ्थि लुथ्थिय आहुट्टिय॥
मरन जानि पावार। सलष संकर रस जुट्टिय॥
बाला सु हद्द जोवन पनइ। देवल पन जिहि न्रिप्रयौ॥
भयो ओट मंडि ढिल्लिय न्रिपति। सुबर बीर अड्डौ भयौ॥
छं० २३४८॥

पृथ्वीराज की तरफ से सलष प्रमार का शास्त्र उठाना।

दूहा॥ भयौ सलष पंमार जब। बज्जि दुहूं दल लाग॥
हसहि सूर सामंत सुष। मुरि कायर अभभाग॥ छं०॥२३४९॥

पंग सेना में से जैसिंह का सलख से भिडना और मारा जाना।

त्रोटक॥ गहि बग्ग फिर्‍यौ पति धार भरं। इय राज धरक्कत पाय धरं॥

समरे निज इष्ट सु बीर बलं । धरि संगि उरंगिनि काल पलं ॥
छं० ॥ २३५० ॥

हहकारिय सीस असीस सजं । रस आवरि अप्प सु बीर गजं ॥
जपि मंचह मंझि पलझिमलियं । मिलि देव अयास किलंकि लियं ॥
छं० ॥ २३५१ ॥

दिषि रूप सलष्य सुपंच सयं । हहकारि सुराधिय जट्ट रयं ॥
बजि आवध झाक सु हाक सुरं । कटि सीस धरहर ढारि धरं ॥
छं० ॥ २३५२ ॥

नचि बीर सुदेवि किलक्क लियं । हकि सेनह जट्ट हला बलियं ॥
जयसिंघ सु आयं संनमुषयं । सम आय सलष्य मिल्यौ नृषयं ॥
छं० ॥ २३५३ ॥

बजि आवध झाक करूर सुरं । हय तुट्टि उभै भर श्रोनि ढरं ॥
दुअ हक्कि उठे भर बीर बरं । मिलि आवध सावध बंछि भरं ॥
छं० ॥ २३५४ ॥

असि झारि सलष्य सु षग्ग झरं । जयसिंघ बिषंडस हूअ परं ॥
जय सिंघ परयौ सब सेन लषं । गहि आवध ताहि सलष्य धषं ।
छं० ॥ २३५५ ॥

मिलि रीठ करार सुधार घरं । मुष लग्गिय भग्गिय भीर भरं ॥
हहकारिय धीर दुहथ्थ कियं । पति धार धस्यौ लषि जंपिलियं ॥
छं० ॥ २३५६ ॥

हल हल्लिय सेन जटं भजियं । सय तीन परे बिन हंस नियं ॥
भर भग्गिय देषि सु पंग न्रपं । हहकारिय हक्किय सेन अपं ॥
छं० ॥ २३५७ ॥

सब सेन हलक्किय पंग भरं । ग्रह कोपिय जांनि करूर नरं ॥
* * * । * * छं० ॥ २३५८ ॥

सारंगराय जाट और सलख का युद्ध और सारंगराय का मारा जाना।

कवित्त ॥ तब सु जट्ट सारंग । सुमन समसेर समाहिय ॥
विरचि पांन करि रीस । सीस सथ्थां पंर बाहिय ॥

टोप कट्टि बिय टूक । फुट्टि तिम बिषि सिर फट्यो ॥
सुमन षांन कम्मांन । बांन लग्गत सिर थट्यो ॥
रिंझयौ सूर सुर असुर हूँ । बर बर कहि करिवर अर्यो ॥
दुअ हथ्थ मध्य दई अहकै । धर बिन सिर धरनी ढर्यो ॥
छं० ॥ २३५९ ॥

सलख का सिर कटना ।

गाथा ॥ असि बर सिर बिरछीयं । बांनं संधांन सट्ठीयं नीरं ॥
प्राहार भग्गि ढरीयं । सूरा सलहंत वाह वाह धानुष्यं ॥
छं० ॥ २३६० ॥

कवित्त ॥ सिर ढरंत धर धुक्कि । भक्कि कट्टी कट्टारिय ॥
बिना कंध आकंध । सुद्ध छोइ किद्ध प्रहारिय ॥
लग्गि सु धर फुटि पार । सुरिम सलंष करि बाह्यौ ॥
अंग ग्राह्यौ षिभि षेत । घाव अद्धें अध बाह्यौ ॥
वाहंत घाव धर धर मिल्यौ । पराक्रम्म पम्मार किय ॥
धनि उभय सेन अस्तुति करय । प्रथीराज सों जाबु दिय ॥
छं० ॥ २३६१ ॥

राह रूप कमधज्ज । गज्जि लग्गयौ आकासह ॥
धार तिथ्थ उर आंनि । न्हान पम्मार फिर्यौ तह ॥
रुधिर मद्ध जब करिय । जीव तनु तिलनि षंड अस ॥
जुरित सीस असि गहिय । पांनि सोभियहि केस कुस ॥
करि न्नपति सार न्नप पंग दल । अब्ब अ पति जप सब्ब किय ॥
उग्रह्यौ ग्रहनु प्रथिराज रवि । सलष अलष भुज दांन दिय ॥
छं० ॥ २३६२ ॥

दूहा ॥ दियौ दान पम्मार बलि । अरि सारंग समषेल ॥
मरन जानि मन मझझ रत । लरि लष्षन बघ्घेल ॥छं०॥२३६३ ॥

पंग सेना में से प्रतापसिंह का पसर करना ।

कवित्त ॥ बंधव पति कनवज्ज । सिंह परताप समथ्थह ॥
सुत मातुल जैचंद । ब्रह्म चालुक्क सु दत्तह ॥

तन उतंग गहै अत्त। गात दीरघ हथ्थ भर॥
मंडस घट्ट सेना सुभट्ट। कुल वट्ट जुड जुर॥
कट्टिय सु बग्ग त्रिप नाइ सिर। जनु बद्दल बद्दी अग्निय॥
जंप्यौ सु अप्प सेना सरस। गहौ राज सुभ्भर हनिय॥छं०॥२३६४॥

पृथ्वीराज की तरफ से लष्षन बघेल का लोहा लेना। प्रतापसिंह का मारा जाना।

छंद नाराच॥ दिषेव सांमि रिम्म सों बघेल सीस नम्मयं।
करे सु वाज सुद्ध भाज नम्म पाय सम्मयं॥
बचे सु लोल फुल्लि अंग अप्प ईस गज्जियं।
करों सु षंड अप्प रिम्म सांइ षेत रज्जियं॥ छं०॥ २३६५॥
करे क्रपांन अस्समांन धाय संप रद्दलं।
चिते सु कांम स्वांमि तांम गज्ज औ करंकलं॥
हनूअ मंच जंपि जंच धारि धीर षग्गयं।
सुचिंति इष्ट आइ तिष्ट हक्क हक्क जग्गयं॥छं०॥ २३६६॥
मिल्यौ सु धाइ षेत ताइ धारयं करारय।
करंत हक्क धक्क डक्क झार धार धारयं॥
परंत षंड सुंड तुंड बाजि दंत बिज्जलं।
उडंत सीस षग्ग दीस दिष्षि राज दुद्दलं॥ छं०॥ २३६७॥
नंचै कमंध बीर बंध देवियं किलक्किलं।
करंत घाय एक तेक्क बिब्बि षंड बिद्दलं॥
रलंत गिद्ध नच्चि सिद्ध पंषि संपं हक्कियं॥
षेलंति षेच भूचरीरं गोमयं अहक्कियं॥ छं०॥ २३६८॥
बरंति बिंद अच्छरीं भरं सुचित्त चिंतयं।
करै अचिज्ज कौतिगं सुरं सु जुद्द मंतियं॥
धरंत षग्ग धाप यों प्रतष्य लष्षि लष्षनं।
हयो बघेल षग्गधार तुट्टि षग्ग तष्षनं॥ छं०॥ २३६९॥
ग्रहौ सु हक्कि सं बघेलतं हन्यौ कटारियं॥
करे सु छिन्न भिन्नयं प्रताप भूमि पंरियं॥

करंत हक्क धार षग्ग षग्ग धारि नद्दरे ॥
हने सु राय पंग सेन स्रोनियं परं परे ॥ छं० ॥ २३७० ॥
करी अरूह मज्ज सिंघ लष्षनं गहक्कियं।
ढरंत धार पंग भार भज्जि हक्क हक्कियं ॥
मघन्न घाय बिद्धि ताय मुच्छि लष्षनं ढरं।
पऱ्यौ प्रताप पंग भाय पंच सौ परप्परं ॥ छं० ॥ २३७१ ॥

लष्षन बघेल का वीरता के साथ खेत रहना।

कवित्त ॥ जीति समर लष्षन बघेल। अरि हनिग षग्ग भर ॥
तिधर तुट्टि धरनहि धुकंत। निवरंत अद्ध धर ॥
तहँ गिद्धारव ररिग। अंत गहि अंतह लग्गिग ॥
तरनि तेज रस वसह। पवन पवनां घन बज्जिग ॥
तिहि नाद ईस मथ्थौ धुन्यौ। अमिय बुंद ससि उल्लस्यौ ॥
बिहस्यौ धवल संकिय गवरि। टरिय गंग संकर हस्यो ॥
छं० ॥ २३७२ ॥

दूहा ॥ सात कमल ससि उप्परह। कन्ह चंद गोयंद ॥
निडुर सलष वरसिंह नर। साष भरै सुर इंद ॥ छं० ॥ २३७३ ॥

चौपाई ॥ [1]पारस फिरि सेनं प्रथिराजं। है गै दल चतुरंगी साजं ॥
सो ओपम कविराजह ओपी। ज्यों इंद्र पुरी बलि धूरत कोपी ॥
छं० ॥ २३७४ ॥

लष्षन बघेल की वीरता।

कवित्त ॥ दल सु पंग नृप चंपि। द्राज बिंध्यौ चतुरंगी ॥
तह लष्षन बघेल। षेत संभरि अनभंगी ॥
राज कमाननि षंचि। षग्ग षोलिय षिजि जुट्टिय ॥
कै बड़वानल लपट। बीच सप्पर तें छुट्टिय ॥
करि भंग अग्गि अरि जुग्गि जुरि। मोरि सुहम मूरत्त मन ॥
हय सत्त अंत तिन्न एक किय। परिन समझि ढूंढंत घन ॥
छं० ॥ २३७५ ॥

---

१ (१) ए. कृ. को.-परि पारस सेनं प्रथिराजं।

पहार राय तोमर का अग्रसर होना ।

दूहा परत बघेल सु मेल किय । रन रट्ठौर सु भार ॥
कनवज ढिल्लिय कंकरह । तोंवर तिष्ट पहार ॥ छं० ॥ २३७६ ॥

कवित्त ॥ द्वादस दिन पच्छलौ । घटी पल बीह समग्गल ॥
सविता वासर सेत । दसमि दह पंच विजय पल ॥
[1]मिलिय चंद निज नारि । रारि सज्यौ सु रुद्र रस ॥
रा असोक साहनौ । सहस सेना सु अट्ठ तस ॥
स्वामित्त ध्रम्म रत्तौ सु रह । करै प्रीति रा पंग तस ॥
लष्यो सु जाइ चहुआन दिग । कम्यौ फौज बंधिय उक्कसि ॥
छं० ॥ २३७७ ॥

जैचन्द का असोक राय को सहायक देकर सहदेव को धावा करने की आज्ञा देना ।

पंग देषि साहनी । जात जंगल पहु उप्पर ॥
मनहु सिंघ पर सिंघ । बीर आवरिय स्वामि छर ॥
तब गंध्र सहदेव । देषि दिसि वाम समग्गल ॥
चषरत्ता हवि जान । अप्प उड्डर जादव कुल ॥
सिर नाइ आइ अघघा सरकि । दिय अग्या पहु पंग तमि ॥
संग्रहौ जाइ चहुआन कौं । रा असोक साहाय क्रमि॥छं०॥२३७८॥

दूहा ॥ नाइ सीस मिलि निज सयन । दिय अग्या बर पंग ॥
बंधि अनिय द्वादस सहस । बाजे बज्जे जंग ॥ छं० ॥ २३७९ ॥

सहदेव और असोक राय का पसर करना ।

सजिय अप्प सहदेव दल । अनिय सु राय असोक ॥
मिल्यौ जाइ मध्ये सु भर । अप्प चिंति उधलोक ॥ छं०॥२३८०॥
रा असोक सहदेव रा । मिलि उभ्भय दल येक ॥
सहस बीस दल भर जुरिग । चलैं सु तत्त तेक ॥ छं०॥२३८१॥
प्रथीराज बांई दिसा । [1]आवत पल.दल देषि ॥
गहिय बग्ग पाहार सम । तपि दिय आयस सेष ॥छं०॥२३८२ ॥

(१) मो.-आवत देख दिलेस ।

पृथ्वीराज को तोमर प्रहार को आज्ञा देना ।

कवित्त ॥ दल सु पंग रट्ठिवर । जाम चंपिय दिल्लिय भर ॥
तब जंपिय प्रथिराज । पंड वंसह पाहर नर ॥
हरि हथ्थां हरि गहिहि । बांम रष्षै इहि बीरह ॥
सेस सीस कंपियै । डट्ठ डुल्लिय भुवि भीरह ॥
कविचंद एह आंपुब्ब सुनु । बीर मंच उब्बर भन्यौ ॥
ठठुक्यौ सेन जयचंद दल । जए तोंअर टट्टर धन्यौ ॥ छं० ॥ २३८३ ॥

नाइ सीस प्रथिराज । अप्प कस्स्यौ हय हंसह ॥
ताराणंति सम तेज । षिषि वाहन हरि-वंसह ॥
[1]हंस हंस आपेष । इष्ट मंचं उच्चारिय ॥
चल्यौ जंपि मुष राम । स्वामि ध्रम्मह संभारिय ॥
[2]जोगनी जूह दुअ हुअ । बीर जूह अग्गै सु नचि ॥
निरषंत अमर नारद निगह । अच्छरि रथ सीसंह सु रचि ॥
छं० ॥ २३८४ ॥

पहारराय तोमर का युद्ध करना। असोक रांय का मारा जाना ।

पद्धरी ॥ उप्पारि बग्ग तोमर पहार । गज्जयौ सूर सज्जे सु सार ॥
उट्टंत रूप अरि बीस दिट्ठ । सौ एक रूप अभिलयंत जिट्ठ ॥
छं० ॥ २३८५ ॥

साहस्स तेग बाहंत ताम । दिष्षे सु षेत पल स्वामि काम ॥
धारा सुधार बाहंत बीर । गज्जयौ मभ्भ मनु करि कंठीर ॥
॥ छं० २३८६ ॥

तुट्टंत सीस उड्डंत रिष्ट । अब संक बुट्ठि मनु उपल वृष्टि ॥
तुट्टंति बाह [2]उडि संघन धाय । उड्डंत चिल्ह मनु पंष पाइ ॥
छं० ॥ २३८७ ॥

धर धर धरब्बर पूरें भार । कट्ट कट्ट षग्ग बज्जै करार ॥

(१) ए.-हंस हेस आयप्प हुअ । (२) मो. मनुं ।

तुट्टै विषग्ग उड्डै अकास । चमकंत तड़ित मनु मेघभास ॥
छं० ॥ २३८८ ॥

परसंत पूर श्रोनं प्रवाह । गहरंत कंठ सट्टी सुबाह ॥
आइयौ राय अस्सोक गज्जि । दो हथ्थ करारी संग सज्जि ॥
छं० ॥ २३८९ ॥

[1]बिहथ्थ हयौ तोमर पहार । भिट्टयौ न अंग तुट्टौ सु सार ॥
संग्रह्यौ कुंठ तोमर पहार । पच्चारि सीस उप्पर उभारि ॥
छं० ॥ २३९० ॥

करि षंड षंड नंष्यौ धराउ । बिन अंस उड़यो [1]जरनौ निहाउ ॥
रिन मझ्झ पर्यौ अस्सोक जानि । ओहक्यौ पेंड पंचह परांनि ॥
छं० ॥ २३९१ ॥

कवित्त ॥ धरिय भार पाहार । पग दल बल ढंढोर्यौ ॥
[2]हय गय नर नर पतिय ताम । बंबर झंझोर्यौ ॥
छच पच मारुत महंत । अरि बांन उड़ाइय ॥
सार सार संभार चंद । जिम [3]मुष मुष सांइय ॥
आनंद केलि कलहंत किय । हय हिलोल दल दुम्भरिय ॥
तों अग चिबोलमारह सुभर । सिरसुबर अझ्झर झरिय ॥
छं० ॥ २३९२ ॥

पहार राय तोमर और सहदेव का युद्ध । दोनों का मारा जाना ।

भुजंगी । तबै राइ सहदेव देवंग वीरं । अरे धाइयौ संग से हथ्थ धीरं ॥
हयौ राइ पहार सों कंठ मझी । परे फुट्टि उड्डी उकस्सी सु अन्नी ॥
छं० ॥ २३९३ ॥

ग्रह्यौ सेल संगै सह देवि तामं । [4]चप्यौ बथ्थ हथ्थे उथ्यौ हंस धामं ॥
ढरे दून काले बरकं अचेतं । दुनै सूर जुझ्झै उभै स्वामि हेतं ॥
छं० ॥ २३९४ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-धरनी । (२) ए. कृ. को.-हय गय नर पतिय पताष ।
(३) ए. कृ. को.-सुष । (४) ए. कृ. को.-चप्पी ।

परंतं पहारं उठी श्रोन धारं। उठे बीर मत्ते सु रत्ते करारं॥
सहस्सं सु एकं सयं दून बीरं। करै असि उतंग सा गात धीरं॥
छं० ॥ २३९५ ॥

पंग नैत बंधे किलक्कार उट्ठे। नचै जाम बीरंत रत्ते सु रूट्ठे॥
धरक्के सु गोमं धरक्के धरन्नी। भरक्कंत सेना सु भग्गै परन्नी॥
छं० ॥ २३९६ ॥

ग्रहै गज्ज दंतं फिरक्कंत उड्डै। पियै श्रोन धारं गजं पात गुड्डै॥
भयो पंग सेनं सनेहंति कारं। फिरै जोगिनी संई मद्दी फिकारं॥
छं० ॥ २३९७ ॥

भगौ सेन रायं भरक्कै सु पंग। धरी एक विंत्ती भरं बित्ति जंगं॥
उडै बीर असं सु आकास मंगै। पहु राउ पाहार गौ मुत्ति संगै॥
छं० ॥ २३९८ ॥

दूहा ॥ गरजै दल जैचंद गुर। धुर भग्गौ ढिल्लीस॥
वासर जीजै वेढि थिय। चंद चंद रवि रीस॥ छं० ॥ २३९९ ॥

जंघार भीम का आड़े आना।

तब जंघारो भीम भर। स्वामि सु अग्गे आइ॥
गहि असिवर उभ्भन उससि। कमध कमंडा धाइ॥ छं० ॥२४००॥

कवित्त ॥ रा कमधज्ज नरिंद। अड्ड षोडनिय तुरंगयि॥
तिन मद्धि अड्डमि अक्क। जोन नग मुत्ति सुरंगिय॥
तिन छुट्टत हल बलत। साहि सामंत राज चढ़ि॥
ते थल थक्कवि रहित। चल्लआन सु राजन रढ़ि॥
मिथि सिथिल गंग थल बल अबल। परसि प्रांन[1]मुक्किन रहिय॥
जुरि जाग मग्ग सोरों समर। चवत जुद्ध चंदह कहिय॥
छं० ॥ २४०१ ॥

पंग सेना में से पंचाइन का अग्रसर होना।

कुंडलिया ॥ सिलहदार पंचाइनौ। करि जुहार पग धार॥
पंग समुद मझ्झहि परिय। वजि धुम्मरि ग्रह पार॥

(१) ए.कृ. को.-मुक्किय।

वजि धुम्मिरि गह पार । सार जुध परिय उदक मथि ॥
ज्यों बड़वानल [1]लपट्ट । मथ्थि उट्ठंत नरं नथि ॥
सार झार तन झरिग । सीस तुट्यौ धरनी लहि ॥
जोगिनि पुर आवास । मिलन [2]हंहं हय सीलहि ॥ छं० ॥ २४०० ॥

जैधार भीम और पंचाइ का युद्ध ।

कवित्त ॥ दहन पंथै सो दुष्ट । देव दाहिन देवं फिरि ॥
घात वज्जै निग्घत्ति । हकि चहुआन मझिझ परि ॥
सुबर बंध कमधज्ज । धाक बज्जे हक्केरव ॥
हृष जुद्धें हर हरी । जुद्ध वज्जी जुझ झसरव ॥
मिलि सार धार विषमह विमल । कमल सीस नच्चें कि जल ॥
सिव लोक सेत नन मीन धन । सुर सुर कंदल बत्त फल ॥
छं० ॥ २४०१ ॥

पृथ्वीराज का सोरों तक पहुंचना ।

दूहा ॥ पुर सोरैं गंगह उदक । जोग मग्ग तिथ वित्त ॥
अद्भुत रस असिवर भयौ । बंजन बरन कवित्त ॥
छं० ॥ २४०२ ॥

किस सामंत के युद्ध में पृथ्वीराज कितने कोस गए ।

कबित्त ॥ बेद कोस हरसिंघ । उभै चियस्स बड़ गुज्जर ॥
काम बान हर नबन । निडर भिड्डर भुमि [3]सुभ्भर ॥
छग्गन पट्ट पलानि । कन्ह षुचिय द्रुग पालह ॥
अलह बाल द्वादसहं । अचल विग्घा गनि कालह ॥
शृंगार बिंझ सलषह सुकथ । लषन पहारति पंचचय[4] ॥
इत्तने सूर सथ झुझ्झ तह । सोरौं पुर प्रथिराज अय ॥
छं० ॥ २४०३ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-पलट्ट । (२) ए. कृ. को. हंतं ।
(३) ए. कृ. को.-सुद्धर । (४) मो.-सय ।

अपनी सीमा निकल जाने पर पंग का आगे न बढ़ना और महादेव का दस हजार सेना लेकर आक्रमण करना ।

परयौ पंषि पाहार । राज कमधज्ज कोप किय ॥
पहु सोरों प्रथिराज । निकट दिष्यो सुचिंति हिय ॥
गयौ राज जंगलिय । नाथ कनवज्ज मन्नि मन ॥
जग्य जोग बिग्गार । लहिय जै पुनि हरिय तिनु ॥
आइयौ राइ महदेव तब । नाय सीस बोल्यौ बयर्न ॥
संग्रह्यौ राज प्रथिराज को । सह्यौं पहु जंगल सयन ॥
छं० ॥ २४०४ ॥

इम कसि सुत सामंत । देव सजि चल्यौ सेन वर ॥
लौल नाम पम्मार । प्रिथक परसंसि अप्प भर ॥
जपि वाया जगनाथ । थान उच्चारिय धीरह ॥
अनी बंधि दस सहस । अप्प सज्जै पर पीरह ॥
ठननंकि घंट भेरिय सबद । पूरि निसान दिसांन सुर ॥
महदेव चल्यौ प्रथिराज पर । मिलिय जुद्ध मनु देव दुर ॥
छं० ॥ २४०५ ॥

महादेवराव और कचराराय का द्वंद युद्ध । दोनों का मारा जाना ।

पद्धरी ॥ आवंत देषि महदेव सेंन । उप्पारि सीस भर सज्जि गंन ॥
मातुलह सयन संयोगि बंधं । बर लहन धीर भर जुद्ध नंध ॥
छं० ॥ २४०६ ॥

कचराराय चालुक्क धीर । आवंत देषि दल गज्जि बीर ॥
सिरनाइ राज प्रथिराज ताम । बल कलिय बदन उरकंक काम ॥
छं० ॥ २४०७ ॥

इक वार पहिल लग्गो सु घाय । जित्तए सुभर तिन पंग राइ ।
संजोगि नेंग दिय कंठ माल । पहिराइ कंठ बज्जी भुआल ॥
छं० ॥ २४०८ ॥

गज्जियो भीम जिम सुभन भीम । पेषेव जूह मनुहरि करीम ॥
कसियो तंग बज्जी सु नेत । संकलपि सीस प्रथिराज हेत ॥
छं० ॥ २४०९ ॥

आयौ समुष्य रिम्मह समथ्थ । चिभाग संग किय सौघ्र हथ्थ ॥
उच्चरिय मंच भैरव कराल । उच्चरिय ध्यान चिपुराइ बाल ॥
छं० ॥ २४१० ॥

किल किलिय किड भैरवह जाम । हुंकार देवि दीनो सु ताम ॥
परदल पयठ्ठ उप्पारि बग्ग । षुल्लिय कपाट भर स्वर्ग मग्ग ॥
छं० ॥ २४११ ॥

बाहंत षग्ग भर सौघ्र हथ्थ । कुर सेन मद्धि मनु मिलियै पथ्थ ॥
बाहंत षग्ग आयुध अपार । धर धार धरनि मधि भंरनि भार ॥
छं० ॥ २४१२ ॥

किलकार बीर चालुक्क सथ्थ । नाचंत भूत भैरव सु तथ्थ ॥
मुष मुष्य लग्गि चालुक्क [1]घाय । बिबि पंड धरै धर तुट्टि धाय ॥
छं० ॥ २४१३ ॥

कोतिग्ग राम देषंत देव । नारद बिनोद नंचीय एव ॥
बर बरै इच्छ अच्छरिय ताम । पलचर पल पूरै रुहिर काम ॥
छं० ॥ २४१४ ॥

रस रुद्र भयौ भर जुद्ध बीर । पूजंत सब्ब चालुक्क धीर ॥
चालुक्क तेक रस रमै [2] रास । चमकंत षग्ग कर बिज्जु भास ॥
छं० ॥ २४१५ ॥

महदेव सन हल हलत दाष । ग्रह राह जेम दल ग्रसत [3]पेषि ॥
घन पूरि घाव चालुक्क अंग । बर तत्त सुमत्तन वधिय रंग ॥
छं० ॥ २४१६ ॥

धाइयौ ताम महदेव तम्म । चालुक्क हयौ संगी उरम्म ॥
दुअ लग्गि बीर मिलि विषम घाव । आवद्ध तुट्टि दुअ बीर ताव ॥
छं० ॥ २४१७ ॥

---

(१) मो.-थाइ । (२) मो.-राहु । (३) मो.- देषि ।

लग्गे सु बथ्थ समवय सरूप। दुअ अट्ठ बरष दुअ भ्रम्म भूप॥
लग्गे सु कंठ असि उट्ठि ताम। दुअ भजि भूप दुअ सामि काम॥
छं०॥२४१८॥

दुअ चले मुत्ति मारग्ग सग्ग। विम्मान जानि विचि विचिच लग्ग॥
अच्छरिय उंच रुंधें सु मेव। जय जय चवंत नंषि कुसुम देव॥
छं०॥२४१९॥

भेदे सु उरध मंडलह दून। बर मुत्ति गत्ति प्रम्मे सु ऊन॥
[1]दुअ हरे गंग मह जल प्रवाह। उप्रमे ताम गुन बंध थाह॥
छं०॥२४२०॥

लीलराय प्रमार और उदय सिंह का परस्पर घोर युद्ध करना और दोनों का मारा जाना।

कबित्त॥ लीलराइ पम्मार। राइ महदेव सु सेवं॥
सहस तीन थट सुभट। आय उप्पर बर केवं॥
मार मार उच्चार। सार गज्जे मुष सारह॥
तेन सुष्ष जगदेव। धार बज्जिय पति धारह॥
परि भोम सीस सजि सामि भ्रम। झर उझार दुझझरति झर॥
मानों कि बघघ गड्डुर बिचह। झपट लपट लेयंत झर॥
छं०॥२४२१॥

बेली भुजंग॥ भुरं झार झट्टं बजे घट्ट घट्टं। लगे पंग भट्टं अगी भल्ल पट्टं॥
भगे थट्ट जानं दहं बट्ट मानं। परे गज्ज बानं भरं थान थानं॥
छं०॥२४२२॥

तवै नील देवं अयौ देव मुष्षं। दुअै बीर वाहं दुअै सामि रुष्षं॥
उदै दीन पुत्तं उदैसिंघ देवं। इतै राव बंभं उतै देव सेवं॥
छं०॥२४२३॥

दुअंगात उच्चं सिरं उंच धारे। मनो सेन कोटं मझारं मुनारे॥
करं नंषि[2]भ्रंमं षगं दोय हथ्थं। उझारै सु मथ्थं दुअं टोप[3]कथ्थं॥
छं०॥२४२४॥

(१) ए. कृ. को.-दुअठरं गंगा मझी। (२) मो.-भ्रमं, को.-चर्म। (३) मो.-कट्टं।

फट उत्तमंग, टहन सुरंग । गिरं जानि चल्लं रतं धार गंग ॥
घरी एक धारं अपारं ति बग्गै । षगं सार तुट्टै जमंदट्ठ लग्गै ॥

छं० ॥ २४२५ ॥

हये ऊर ऊरं उनके उनाही । ढरे दोइ कल्लेवरं गंग माहीं ॥
सिरं सुम्मनं देव ब्रष्मा विराजै । पछै सूर धारं वरं रंभ [1]छाजै ॥

छं० ॥ २४२६ ॥

तिनं सीस देवी दियौ सामि काजै । वरं तास कित्ती जगम्मै विराजै ॥
जमं ठौरै ठेलै गयौ ब्रह्म थानं । जिनै जित्तयौ लोक परलोक मानं ॥

छं० ॥ २४२७ ॥

कचराराय के मारे जाने पर पंग दल का कोप करके धावा करना ।

कवित्त ॥ गरजे दल जै चंद । सीस पहु देन नरेसर ॥
समर सूर सामंत । सु पुनि भंज्झ नर सुड्डर ॥
पर्यौ भार पम्मार । अंग एकै आचग्गर ॥
वासुर तीजै वेढि । कलह बेथक्कि बाहि करि ॥
जगि देवन दानव देव जगि । पार मार उरवार पनि ॥
थंभयौ कटक षोहनि बिकट । [2]देव सु एवं बद्दियनि ॥ छं० ॥ २४२८ ॥

दूहा ॥ कौन सहस मे तीन सय । सूर धीर संग्राम ॥
बधि पम्मारह बीर बर । दम गै अस्सव ताम ॥ छं० ॥ २४२९ ॥

कवित्त ॥ दुहु पष्षां गंभीर । दुहुं पष्षां छच पत्त ॥
दुहु पष्षै राजान । दुहुं पष्षै गावत्त ॥
दुहु वाहां दुज्जरह । मात मातुल सुष लष्षै ॥
कंठमाल सुभ कंठ । नाग [3]मार्जो गह रष्षै ॥
संकटह स्वामि बंकट विकट । त्रिघट रुक्कि कमधज्ज दल ॥
अदित वार दसमिय दिवस । गरुअ गंभ भ्रंमुंग जल ॥

छं० ॥ २४३० ॥

(१) मो.-साजै । (२) ए. कृ. को.- देव सुए भेग बद्दिय ।
(३) ए. कृ. को. नाग सौ जोग सुरष्षै

कचराराय का स्वर्गवास ।

मंगराय भानेज । राय कचरा अरि कब्बर ॥
गरुश्र ध्रंम स्वामित्त । सार संमुह रन अब्बर ॥
पट्टन सिर अरु पट्ट । गंग घट्टह [1]घन नष्यौ ॥
जै जै जै जपि सद्द । नह त्रिभुअनपति भष्यौ ॥
पष्यरत पखिय बज्जिय बिहर । उग्रराय रठौर धुर ॥
चालुक चलंत सुभ स्वरगमन । अघ्य अरघ दीनौ सु धर ॥
छं० ॥ २४३१ ॥

कचराराय का पराक्रम ।

दूहा ॥ परें पंच सें पंग भर । परि चालुक सु तथ्थ ॥
बिलष बदन प्रथिराज भय । बंछिय मरन सु अप्प ॥छं०॥२४३२॥
निसि नौमिय वित्तिय लरत । दसमिय पहु रिति च्यार ॥
[2]पंगपहुमि प्रथिराज भिरि । अथ्थिग आदित वार ॥ छं०॥२४३३॥

सब सामंतों के मरने पर पृथ्वीराज का स्वयं कमान खींचना ।

कवित्त ॥ घरिय सत्त आदित्त । देव दसमिय दिन रोहिंनि ॥
रुक्यौ तथ्थ प्रथिराज । पंग मध्यह अध षोहनि ॥
पंच अग्ग च्यालीस । सत्त सामंत सु रत्तिय ॥
पंच अग्ग पंचास । मझ्झि सथ्थह सेवक तिय ॥
वामंग तुरंगम राज तजि । तोन सज्जि सिंगिनि सु कर ॥
बंदेव चंद संदेह नह । जीवराज अचरिज्ज नर ॥छं०॥२४३४ ॥

जैचंद का बराबर बढ़ते आना और जंघारे भीम का मोरचा रोकना ।

दूहा ॥ [1]गंग पुट्ठि अग्गै विहर । छत बंकौ जल किंदु ॥
उग्यौ छत्र न्रप पंग पर । मनु हेमं दंड पर इंदु ॥छं०॥२४३५ ॥
गरजे दल जैचंद गुर । धुर भग्गे दिल्लेस ॥

(१) ए. कृ. को.-घट । (२) मो.-मंग ।

बासुर तीजे बैठितं । चंद चंद रवि रेस ॥ छं० ॥ २४३६ ॥
तब जंघारो भीम भर । स्वामि सु अग्गै आय ॥
गहि असिवर ओड़न उक्कसि । [1]कमध कमझा धाय॥छं०॥२४३७॥

कवित्त ॥ जंघारौ रा भीम । स्वामि अग्गै भयौ ओड़न ॥
दुहुं कहाँ सामंत । दुहूं द्वादस दस को दन ॥
पच्छ सध्य संजोगि । कलह कंतिय कोतूहल ॥
मदन रंभु मोहनिय । सुरां अमृत तहूं लह ॥
दुहुं राय जुद्ध दुंदज भयौ । चाह,आन रट्ठौर भर ॥
घरि च्यारि ओन असिवर झस्यौ । मनहु धुम्म अग्गा सु झर ॥
छं० ॥ २४३८ ॥

जंघारे भीम का तलवार और कटार लेकर युद्ध करना ।

भुजंगी ॥ झरं झार झारंति झारंति झारं । ढरं ढार ढारंति ढारंति ढारं ॥
तुटै कंध कामंध संधं उसंधं । बहै संगि षग्गं रतं रंभ्र रंभ्रं ॥
छं० ॥ २४३९ ॥
चवं सूर सेनं सरं सार सारं । लगै कोन अंगं विभंगं विहारं ॥
चलै ओन सारं [2]विरंतं सुधारं । मनों वारि रुद्धं अनंतं प्रनारं ॥
छं० ॥ २४४० ॥
बजै घट्ट घट्टं सबद्दं सबद्दं । नको हारि मन्नै नको भेटि हद्दं ॥
तुटै षग्ग लग्गै गहे हथ्थ बथ्थं । मनों मल्ल जूझंत बेजानि वथ्थं ॥
छं० ॥ २४४१ ॥
बढी ओन धारा रनं पूर पूरं । चढ़ी सक्ति ऊभी कमडंति सूरं ॥
जयंतं जयंतं चवंसट्ठि सद्दं । असी तार झारं नचे नेम नद्दं ॥
छं०॥ २४४२ ॥
बजै जंगलीसं विडारं विडारं । करं धारि झारं सकत्ती करारं ॥
करी फुट्टि सन्नाह प्रगटंत अच्छी । मुषं भीमरा कंध काढंत मच्छी ॥
छं० ॥ २४४३ ॥

(१) मो.-कमधज कमधां धाय । (२) ए. कृ. को.-चिरत ।

धरे बारड सिंह आघाय घायं । [1]बरं बार सुष्षं अगंमग्न धायं ॥
जिते सेन बिग्घा कटे षग्ग हक्कं । परे कातरं सं भयानंक टक्कं ॥
छं० ॥ २४४४ ॥

लष चंपियं सीस बहु आन धायं । गनो सिंघ क्रम्यौ मदं दंति पायं ॥
लघं लाघ बंकीन बाहंत बंकं । मनौं चक्क भेदंत सीसं निसंकं ॥
छं० ॥ २४४५ ॥

कटे टट्टरं टूव सन्नाह वट्टं । बहै षग्ग झट्टं मनो बीज छट्टं ॥
मधे श्रोन फेफं सु डिंभं फरक्कं । मनो मभ्भ नाराज छुट्टंत भक्कं ॥
छं० ॥ २४४६ ॥

न्निप पोषि धारा धरै धाय धायं । उठै टंग बग्गं मनौं लष्षरायं ॥
चवै पंग आनं गहन्नं गहन्नं । जगन्माल क्रम्यौ सुन्यौ सीस धुन्नं ॥
छं० ॥ २४४७ ॥

[2]करन्नाटिया राय रुडूतिरायं । रवै वाम दच्छिन्न राजंग सायं ॥
बहै बिंभ मग्गलं करीवार सथ्थं । दुअं लग्गि झाकं मनो कोपि पथ्थं ॥
छं० ॥ २४४८ ॥

कलेवार गट्टं परे छेदि बंभं । मनौं भंग पंछी सु उड्डंत संभं ॥
[3]नरं हक्क बज्जी सु रज्जी सकत्ती । रची पुष्प विष्टं षहं देवि पत्ती ॥
छं० ॥ २४४९ ॥

असी झाक बज्जंत रज्जंत सूरं । भयं चक्क जुद्धं भयं देव दूरं ॥
दलं दून धारों ढरै षंड षंडं । बरं संग्रहै ईस सीसंति दंडं ॥
छं० ॥ २४५० ॥

थनं थोर लू राग सूरं बरंती । रचे माल्ल कंठं कुसम्मं हरंती ॥
सजै सेंन [4]आवन्न वन्नं विमानं । वरं रोहि तथ्थं क्रमं अप्पयानं ॥
छं० ॥ २४५१ ॥

जयं सद्द बद्दं पलं श्रोन चारं । थक्यौ सूर नारद्द नच्यौ विहारं ॥
घनं घाइ अघघाइ सामंत सूरं । धरे मंडलं सब्ब सामुच्छि जूरं ॥
छं० ॥ २४५२ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-मार । (२) मो.-करें लाटिया (३) ए. कृ. को. भरं, झरं ।
(४) ए. कृ. को.-आवन्न ।

दह पंच पंग परे सुव सार। भर राज सामंत हथ्थे हजार॥
भय अद्भुतं रसं बीर बीरं। घटी दून जुद्ध बिहानं बिहारं॥
छं० ॥ २४५२ ॥

नव अंघारौ जोगी जुगिंद। कत्ती कट्टारौ॥
असि बिभूति घसि अंग। पवन अरि भ्रमन हारौ॥
श्रेन पंग मन मथन। [1]ब्रम्म षग गयंद प्रहारं॥
[2]पलति मुंड उरहार। सिंगि सद बदन ब्रिघारं॥
आसन सु दिट्ठ पग दिट्ठ ब्रह्म। सिरह चंद अंम्रत अमर॥
मंडलौ राम रावन भिरत। नभौ बीर इत्तौ समर॥ छं०॥२४५३॥

जंघारे भीम का मारा जाना।

घरिय च्यार रवि रत्त। पंग दल बल आहुट्यौ॥
तब जंघारौ भीम। धंम स्वामित तन तुट्यौ॥
सगर गौर सिर मौर। रेह रष्षिय अजमेरिय॥
उडुत हंस आकास। दिट्ठ घन अच्छरि घेरिय॥
जंघार सूर अवधूत मन। असि बिभूति अंगह घसिय॥
पुच्छयौ सु ज्ञान त्रिभुवन सकल। को सु लोक लोकें वसिय॥
छं० ॥ २४५४ ॥

पंगदल की समुद्र से उपमा वर्णन।

भय समुंद जैचंद। उतरि जै जै क्यों पारह॥
अदभुत दल असमान। अब्ब बुद्धिह करिवारह॥
तहां बाहिय हरब्रह्म। भार सब सिर पर पधरयौ॥
उहरि उद्ध कुमार। धनि जु जननी जिहि जनयौ॥
नन करहि अवर करिहै न को। गौर बंस अस बुझझयौ॥
सो साहिब सेन निबाहि करि। तब अप्पन फिरि झुज्झयौ॥
छं० ॥ २४५५ ॥

बर छंड्यौ दुहु राय। बहन छंड्यौ बर बारर॥
सिर थक्यौ महि सार। बहन थक्यौ गहि [3]सारर॥

(१) मो.-व्रह्म। (२) ए. कृ. को. लपति। (३) ए.-सिरमार।

रव बज्यौ रव रवन। रवन बज्यौ मुख मारह॥
धर बज्यौ धर परत। मनुन बज्यौ उच्चारह॥
पायौ न पार पौरष पिसुन। स्वामिनि सह अच्छरि अप्यौ॥
जिम जिम सु सिंह सम्मीर सिव। तिम तिम सिव सिव सिव तप्यौ॥
छं०॥ २४५६॥

पृथ्वीराज का शर संधान कर जैचन्द का छत्र उड़ा देना।

एक षंग तिय सकल। [1]विकल उच्चरिय राज मुष॥
भ्रकुटि षंकर [2]कुरिय। षंसु तिहि लिषिय मद्दि दष॥
बिय भिमान उप्पारि। देव डुलिय मिलि चलिय॥
भ्रम भ्रमंकि आयास। पत्ति अच्छरि [3]चलि मिलिय॥
एकं चवै कवि कमल भसि। मुकति भंक करि करिय न्रप॥
नन राज काज आजह भिरिग। सु मति सोह भइ देव वपि॥
छं०॥ २४५७॥

चार घड़ी दिन रहे दोनों तरफ शान्ति होना।

घरिय च्यारि दिन रह्यौ। घरिय दुम विक्तक वित्तौ॥
नको जीय भय मुक्यौ। नको हार्यौ न को जित्तौ॥
पंच सहस सें पंच। लुथ्थि पर लुथ्थि अहुट्टिय॥
लिषे षंक बिन कंक। न को झुज्झयो बिन [4]घुट्टिय॥
दो घरिय मोह मारुत बज्यौ। करन अंभ बरष्यो निमिष॥
[5]तिरिगत्त राज तामस बुझयौ। दिषिय पंग संजोगि मुष॥
छं०॥ २४५८॥

जैचन्द का मंत्रियों का मत मान कर शान्त हो जाना।

[6]मुरझानौ जैचंद घरम। चंप्पि छम बर तर।
उतरि सेन सब पत्यौ। राव कह्यौ हरवं कर॥
षेहु षेहु न्रप करय। चवन चहुआन बुलायौ॥

(१) ए.-विकल। (२) मो.-और मोलय।
(३) ए. कृ. को.-दिलि। (४) मो.-कुट्टिय। ए.-नको जित्यौ न विघुट्टिय।
(५) ए. कृ. को.-तिहि लगता। (६) ए. कृ. को.-मुरझानों।

सूर बीर मंत्री प्रधान। मिलि कै समुझायौ ॥
उत परे सब्ब इत को गनै। असुगुन भय राजन गिल्यौ ॥
घर चंत पलान्यौ अमत करि। सीस धुनत नर वै किन्यौ ॥
छं० ॥ २४५८ ॥

दूहा ॥ नयन नंषि करि [1]कनक नह। प्रेम समुद्दह बाल ॥
प्रंवम सु पिय ओड़न उरह। मनु भुलवति मुद्ध मराल ॥
छं० ॥ २४६० ॥

जैचन्द का पश्चात्ताप करते हुए कन्नौज को लौट जाना।

कुंडलिया ॥ दिष्षि पंग संजोगि सुष। दुष किन्नौ दल संग ॥
जग्य जन्यौ राजन सघन। अवरन हुति संजोग ॥
अवरन अहुति संजोगि। किन्नि अग्गी जल लग्गी ॥
ज्यों घल घट आदर्यो। लोय पुच्छिय छल मग्गी ॥
सुष जौवन अब लाज। मनहि संकलपि सिलष्यौ ॥
निबल रम संकलै। आस लग्गी मन दिष्यौ ॥ छं० ॥ २४६१ ॥

दूहा ॥ इह कहि परदछिन फिरिग। नमसकार सब कीन ॥
दान प्रतिष्ठा तू अमर। जौ दिल्ली पुर दीन ॥ २४६२ ॥
चढि चहुआन दिल्ली सघर। उठो दुहूं दल बेह ॥
छंडि आस चहुआन पहु। गयौ पंग फिरि गेह ॥ छं० ॥ २४६३ ॥

जैचन्द का शोक और दुःख से व्याकुल होना और मंत्रियों को उसे समझाना।

कवित्त ॥ चौ अग्गानी बुद्धि। भजि [2]पापीय सुगति रस ॥
छिति छची चिति छित्ति। अल्ल आवरति सूर बस ॥
चौ अग्गानी पंच। राज पावास परिग्गह।
अनी पंच मिलि बीर। पंग जंपियत अहग्गह ॥

संभूह जुद्ध भारथ्थ मिलि । पंचतत्त मंचह [1]सरिस ॥
तन छोह छेह एकादसी । चंद वत्त वर [2]तच्चरिसु ॥
छं० ॥ २४६४ ॥

फिरयौ राज कमधज्ज । मुक्कि जीवत चहुआनह ॥
आनि संजोगि समंध । मग्ग कनवज्ज सु प्रानह ॥
फिरे संग राजान । मानि मत्तौ वर वीरह ॥
मनों पल छंडे सिंह । कोप उर केर सु धीरह ॥
निज चलत मग्ग जैचंद पहु । पुरे सुभर रिन अप्प पर ॥
किय प्रथुक वंध्व कारन न्रिपति । दीय दाघ जल गंग धर ॥
छं० ॥ २४६५ ॥

समझायौ तिम राइ । पाय लगि बात कहिय अब ॥
जिके सूर सामंत । करौ गोनह न कोइ अब ॥
फिर्‍यौ न्रपति पहुपंग । सयन हुअ तह घर आयौ ॥
स्य ढिल्ली सुरतान । जान आवतह न पायौ ॥
आयौ सु सयन चहुआन कौ । ग्राम ग्राम मंडप छयौ ॥
आयौ नरिंद प्रथिराज जिति । भुअन तीन आनंद भयौ ॥
छं० ॥ २४६६ ॥

पृथ्वीराज का दिल्ली में आना और प्रजा वर्ग का बधाई देना।

दूहा ॥ चली षबर दिल्ली नयर । एकादसि दिन छेह ॥
के रवि मंडल संचरिग । के मिलि मंगल ग्रेह ॥ छं० ॥ २४६७॥

कुंडलिया ॥ बद्धाइय दिल्लिय नयर । कंवर सेन जुध मग्ग ॥
घाय घुमत स्रोरिन घले । स्रवन सुनंतह लग्गि ॥
स्रवन सुनंतह अग्गि । उठी कंचन गिरि अच्छी ॥
कै वडवानल लपट । निकरि लालन धत गच्छो ॥
कै नाग लोक सुंदरी । सुति न भारथ कथ्थाई ॥
कै मिलन पीय अंतरह । मिलन आवंग बधाई ॥ छं० ॥२४६८॥

---

(१) ए. कृ. को.-सरिस । (२) ए. कृ. को. उच्चरिय ।

जैचन्द का पृथ्वीराज के घायलों को उठवा कर तैसि डालियों में दिल्ली पहुँचाना ।

पद्धरी ॥ परि सकल सूर अघ्घाइ घाइ । उच्चाइ चंद न्रपराइ धाइ ॥
धरि लियौ बीर चालुक्क भीम । बग्गरी देव अरि चंपि सीम ॥
छं० ॥ २४६९ ॥

पम्मार जैत षीची प्रसंग । भारथ्थ राव भारा अभंग ॥
जामानि राव पाहार पुंज । षोहान पान आजान हुंज ॥
छं० ॥ २४७० ॥

गुज्जरह राव रंघरिय राव । परिहार मदन नाहर सु जाव ॥
जंगलह राव दहियां दुबाह । बंकटह सु पह बघनौर बाह ॥
छं० ॥ २४७१ ॥

जद्दवह जाम रावत्त राज । बर बलिय भद्र भर स्वामि काज ॥
टेवरह देव कन्हरहराव । ढंढरिय टाक चाटा दुभाव ॥
छं० ॥ २४७२ ॥

चौहठी स पहुपह कर प्रहास । कमधज्ज राज आरज्ज तास ॥
देवसिंघ हरिय बलिदेव सथ्थ । परिहार पीय संग्राम पथ्थं ॥
छं० ॥ २४७३ ॥

अघघाय घाय वर सिंह बीर । हाहुलिय राव हंसह हमीर ॥
चहुआन जाम पंचान मार । लष्षन उचाय पहु पत्ति धार ॥
छं० ॥ २४७४ ॥

भट्टी चलेस गोहिल्ल चाच । सुम विजय राज वघ्घेल साच ॥
गुज्जरह चंद्र सेनह सु बीर । ते जल्ल डोड पामार धीर ॥
छं० ॥ २४७५ ॥

सोलह मलथ्थ उच सच सार । संग्राम सिंह कछिय दुजार ॥
परिहार दल तारन तरन । कमधज्ज कोल रय सिंघ कन्न ॥
छं० २४७६ ॥

सेंगरह साह भोलन तास । शाहरदेव मुष मल्ह नास ॥

अध्घाय घाय धर. धरइ ढाइ। लष्षीन मीच जिय कंक साइ॥
छं० ॥ २४७७ ॥

डोलिय सु मझि संजोग सार। पट कुटिय मझि मनु बसिय मार॥
उप्पारि सेव बरदाइ ईस। डोलिय सु सज्जि बर तेर तीस॥
छं० ॥ २४७८ ॥

संक्रम्यौ सेन दिल्ली सु मग्ग। बंधाय धाय थिय पुरनि अग्ग॥
छं० ॥ २४७९ ॥

दूहा ॥ सघन घाय सामंत रिन। उप्पारिग कवि ईस॥
मध्य अमोलिक सुंदरिय। डोला तेरह तीस॥ छं० ॥२४८०॥
(१)हलकि हसम हय गय चरिग। बाहिर जुग्गनि नैर॥
हलकि जमुन जल उत्तरिग। बाल इक जु अबेर॥ छं०॥२४८१॥
इक घर सिंधु असंचरिग। इक घर (२)चन्नर मार॥
तेरसि अंबक बज्जि बहु। राज घरइ गुर बार॥छं०॥२४८२॥

जैचन्द का बहुत सा दहेज देकर अपने पुरोहित को दिल्ली भेजना।

पुर कमधज्ज कमंध गय। चरि उर गंट्ठिय अथ्थ॥
करे चंद प्रोहित प्रति। तुम दिल्लिय पुर अथ्थ॥२४८३॥
विधि विचित्र संजोगि कौ। करहु देव विधि ब्याह॥
हसम हयग्गय सब्ब विधि। जाय समप्पौ ताह॥२४८४॥
नग अनेक विधि विधि विचित्र। और गनै कोइ गेउ॥
विजै करत विजपाल (३)निज। लिय सु वत्थु दिय देउ॥
छं० ॥ २४८५ ॥

पंगराज के पुरोहित का दिल्ली आना और पृथ्वीराज की ओर से उसे सादर डेरा दिया जाना।

मुरल्ल ॥ पुर ढिल्ली आयौ प्रोहितइ। मंन्यौ मन चहुआन सुहितइ॥
दिय आनक आसन उत्तिम ग्रह। बर प्रजंक भोजन भल भष्षह॥
छं० २४८६ ॥

(१) मो.-हलाकि। (२) ए. कृ. को.-चंदन। (३) ए. कृ. को.-नृप।

दिल्लिय पति दिल्लिय संपत्तौ । फिरि पहु पंग राइ ग्रह अत्तौ ॥
जिम राजन संजोगि सु रत्तौ । सुह दुह करन चंद महि मत्तौ ॥
छं० ॥ २४८७ ॥

दिल्ली में संयोगिता के व्याह की तैयारियां।

कवित्त ॥ कनक कलस सिर धरहि । चवहिं मंगल अनेक त्रिय ॥
पाटंबर बहु द्रव्य । सज्जि सब सगुन राज किय ॥
हरहिं नीर गज गाह । इक्क आरती उतारहिं ॥
इक छोरि करि केस । रेन चरनन की झारहिं ॥
इम जंपहि चंद बरद्दिया । मुकताहल पुज्जंत भुअ ॥
घर आइ त्रिति दिल्लिय न्रपति । सकल लोक आनंद हुअ ॥
छं० ॥ २४८८ ॥

दोनों ओर के प्रोहितों का शाकोच्चार करना।

एक अग्ग तिय सकल । विकल उच्चरिग राजसुव ॥
त्रिगुटि अग्र अंकुरि प्रमान । तहाँ लषित मझ्झ रुव ॥
बौय विवाम उच्चरिय । देवि डुल्लिय मिलि चल्लिय ॥
अधर्म भ्रम किय आइ । सपत अच्छरी सु मिल्लिय ॥
संजोग जोग रचि व्याह मन । गुरु जन सुत अरु निगम घन ॥
प्रोहित्त पंग अरु ब्रह्म रिषि । ग्रसत सुष्य बर दुष्य सन ॥
छं ॥ २४८९ ॥

विवाह समय के तिथि नक्षत्रादि का वर्णन।

महा नछित्र रोहिनी । मेष भुग्गवै अरक बर ॥
भद्र यह परवालु । तिथ्य [illegible]रसि सु दीह गुर ॥
इंद्र नाम वर जोग । राज अष्टमि रवि सिज्जौ ॥
चंद चंद सातमो । बुद्ध सत्तम गुर तिज्जौ ॥
गुर राह सन्नि सुरकेत नव । न्रप वर बर मंगल जनम ॥
तद्दिनह मुक्ति चहुआन कौं । छुट्टि पंग प्रारस प्रमम ॥ छं० ॥ २४९० ॥

(१) ए. कृ. को. घट्टि ।

पंग और पृथ्वीराज दोनों की सुकीर्ति।

पंग राइ उग्रह्यौ। दान दै गै भर नर लिय ॥
धारागार वर तिथ्थ। अपइ चहुआन बीर किय ॥
एक गुनै तिहि बेर। दिये पाइल लष गुन्निय ॥
चौसट्ठं कै सट्ट। लच्छि संजोगि सु दिन्निय ॥
ज्यौं भयौ जोइ भारथ्थ गति। सोइ बित्यौ बित्तह जुरि ॥
द्वादसवि पंच सूरइति सुकि। आरम्भिय पहु पंग फिरि ॥
छं० ॥ २४९१ ॥

दूहा ॥ दिव मंडन तारक सकल। सर मंडन कमलान ॥
रन मंडन नर भर सु भर। महि मंडन महिलान ॥ छं०॥२४९२॥
महिलन मंडन न्रिपति ग्रह। कनक कंति ललनानि ॥
ता उप्पर संजोगि नग। धरि राजन बलवान ॥ छं० ॥ २४९३ ॥
राजन तन सइ प्रिय बदन। काम गनंतिन भोग
सैरै न पल लेतें पलनि। न्रपति नयन संजोग ॥ छं० ॥ २४९४ ॥

पृथ्वीराज का मृत सामंत पुत्रों को अभिषेक करना और जागीरें देना।

पद्धरी ॥ वैसाष मास पंचमिय सूर। उपरात पष्य पुष्यह समूर ॥
संतिय सु छित्ति प्रथिराज राज। किन्नौ सनान महुरत्त आज ॥
छं० ॥ २४९५ ॥
मंगल अनेक किन्नौ अचार। बाजे बिबिध बज्जत अपार ॥
विधि सु विप्र पुज्जे सु मंत। दिय दान भूरि अनेक जंत ॥
छं० ॥ २४९६ ॥
गुन गंठि कब्बि आये सु चंड। दिय अनंत द्रव्य बीजौउ षंड ॥
अह्वाय कीय सब नयर मंत। श्रृंगारि सहर वाने अनंत ॥
छं० ॥ २४९७ ॥
बह्वाम आय सब देस थान। सनमान सौम पति आय जान ॥
वर महल तास प्रथिराज दीन्ह। सामंत सब्ब तं न्हान कीन ॥
छं० ॥ २४९८ ॥

सामंत सब्ब बोले सु आय। आदरह सब्ब दीनौ सु राय॥
कामधज्ज बीर चंद्रह सुबोलि। निहुरह सुतन सुभ तेज तोलि॥
छं० ॥ २४९९ ॥

दीनौ सु तिलक प्रथिराज हथ्थ। बद्धारि ग्राम दिय बीस तथ्थ॥
हय पांच गज्ज दीनौ सु एक। थप्पौ सु ठाम समपित्त तेक॥
छं० ॥ २५०० ॥

ईसरह दास कन्हह स पुत्त। चहुआन क्रम्म बड़ करन जुत्त॥
दह पंच ग्राम दीने बधाय। हय अठ्ठ गज्ज इक दीन ताय॥
छं० ॥ २५०१ ॥

बोलाय धीर पुंडीर ताम। सनमानि पित्त दीने सु ग्राम॥
जिन जिन सु पित्त रिन परे षेत। तेय तेय थप्पि सामंत हेत
छं० ॥ २५०२ ॥

सामंत सिंह गहिलौत बोलि। गोयंद राज सुअ गरुअ मोलि॥
द्वादस्स ग्राम दीने बधाय। हय पंच दीन पितु ठाम ठाय॥
छं० ॥ २५०३ ॥

सामन्त अवर उव्वरे जेह। दिय दून दून ग्रामह सु तेह॥
सनमानि सब्ब सामंत सूर। दिय अनत दान द्रब्यान पूर॥
छं० ॥ २५०४ ॥

आदरह राज गौ उट्ठि ताम। संजोगि प्रीति कारन्न काम॥
* * * * * ॥ * छं०॥२५०५॥

ब्याह होकर दंपति का अंदर महल में जाना और पृथाकुमारी का अपने नेग करना ॥

दूहा ॥ गौ अंदर प्रथिराज जब। भंडि महूरत ब्याह॥
आय प्रिया कहि बंध सम। करहु सुमंगल राह॥ छं०॥२५०६॥

भुजंगी ॥ रच्यौ मंगलं मास बैसाष राजं। तिथी पंचमी सूर सा पुष्य साजं॥
असित्तं सपुष्यं सुभ यौ जोग इंदं। कला पूरनं जोग सा छत्र बिंदं॥
छं० ॥ २५०७ ॥

सगम्नं सु गोधल सा अप्प केयं। चल्यौ सत्त ते पंच थानं रवेयं॥
पल्यौ नग्ग थानं कला खिट्ट चंदं। ततं ताम सज्यौ निजं उच्च मंदं॥
छं० ॥ २५०८ ॥

तबै आय प्रोहित्त श्रीकंठ नामं। दई आन सोवत्त, अनेक नामं॥
रच्यो तोरनं रंन मै उच्च थानं। लहै मोल अनेक नालभ्यमानं॥
छं०॥ २५०९ ॥

गजं गज्ज अट्ठोतरं सौ सिंगारे। तिनं गात उत्तंग ऐराव तारे॥
सहस्सं स पंच हयं तुंगगातं। तिनं नग्ग सा कत्ति साहेम जातं॥
छं० ॥ २५१० ॥

घटं जात रूपं जरे नग्ग उच्च। गनै कौन मानं तिनं जानि रुच्च॥
जरे जवु नहं वरं भाज नेयं। गनै कौन ग्रामन्न सा संष तेयं॥
छं० ॥ २५११ ॥

जरे पट्ट पट्टं अनेकं प्रकारं। अग्भूत अनेक सा वस्तु भारं॥
चिहं तिथ्य अनेक जे पंग राजं। सबै पट्टई सोइ संजोग साजं॥
छं० ॥ २५१२ ॥

करे साजि संजोगि निट्टुरं सु ग्रेहं। मुषं जोति इंदं कला पूरि तेहं॥
* * * ॥ * छं० ॥ २५१३ ॥

विवाह के समय संयोगिता का शृंगार और उसकी शोभा वर्णन।

लघुनराज ॥ प्रथम्म केलि मज्जनं। बने निरत्त रंजनं॥
सु स्निग्ध केस पायसं। सु बंधि रैन बासरं॥ छं० ॥ २५१४ ॥
कुसम्म गुंथि आदियं। सु सौरभ फूल सादियं॥
तिलक्क द्रप्पनं करो। श्रवन्न मंडि धरो॥ छं० ॥ २५१५ ॥
सु रेष कज्जलं दुनं। धनुप्प सा गुनं मनं॥
सु नासिका स मुत्तियं। तमोर मुष्य दुत्तियं॥ छं० ॥ २५१६॥
सुहार कंठ मालयं। निगोदर विसालयं॥
अनघ हेम पायसं। सु पानि मध्य भासयं॥ छं० ॥ २५१७॥
कलस्स पानि कंकनं। मनो दि काम अंकनं॥

चले सु गाढ़ मुद्रिका । कटीव छुद्र घंटिका ॥ छं० ॥ २५१८ ॥
सु कट्टि मेषला भरं । सरोर नूपुरं जुरं ॥
चले न रत्त जावकं । सतत्त हंस सावकं ॥ छं० ॥ २५१९ ॥
सु बीर चारु सो रसं । सिंगार मंडि षोड़सं ॥
सुगंध ब्रंम छन्नयौ । अभूषनंति भिन्नयौ ॥ छं० ॥ २५२० ॥
सु चारु कब्नि भुंम्नयौ । नैषं सिषंत ड्स्नयौ ॥ छं० ॥ २५२१ ॥
साटक ॥ लज्जामार्ग कटाच्छ लोकन कला, अलपस्तनो भूषनं ॥
रत्ती रित्त, भयौ सु प्रेम सरसा, गै हंस बुभझाइनं ॥
धीरज्जं च छिमाय चित्त हरनं, गुह्य स्थलं सोभनं ।
सीलं नील सनात नीत तनया, षट दून आभूषनं ॥ छं० ॥२५२२॥

पृथ्वीराज का शृंगार होना ।

दूहा ॥ करि सिंगार प्रथिराज पहु । बंधि मुकट सुभ सीस ॥
मनों रतन कार उप्परै । उयौ बाल हरि दीस ॥ छं० ॥ २५२३ ॥

विवाह समय के सुख सारे ।

पद्धरी ॥ सिंगार सकल किय राज जाम । उच्चार वेद किय विप्र ताम ॥
बाजित्र बज्जि मंगल अनेव । माननि उचारि सागुन्न भेव ॥
छं० ॥ २५२४ ॥

जय जया सद्द सद्दै समूह । सामंत सूर सब मिल्लिय जूह ॥
बद्धाय आव चवरत्थ सुराग । आनंत स्वजन गति उद्ध भाग ॥
छं० ॥ २५२५ ॥

गुरु राम वेद मंत्रह उचार । अनेक विप्र पढि वेद सार ॥
हय रोहि हंस जंगल नरेस । जय जया सद्द जंप्यौ सु देस ॥
छं० ॥ २५२६ ॥

उछरंत द्रव्य अनेक मग्ग । गुन तवंत एक अनेक लग्ग ॥
निद्दुरह ग्रेह तोरनह जाम । यट्टौ नरेस सम इंद्र ताम ॥
छं० ॥ २५२७ ॥

: (१) ए. वद्दाय ।

प्रोहित पंग रवि ब्रह्म रूप। बहाय आय नग मुत्ति भूप ॥
सिर फिरैं विवह पट कुल राज। दिन्ने सु दत्त बाजिय बाजि ॥
छं० ॥ २५२८ ॥

गोकियौ राज बर नेक काम। मत्तौ सु हास रस रास ताम ॥
सुन षानि क्रूर लीला सरूप। प्रोषनह काज किय ताम भूप ॥
छं० ॥ २५२९ ॥

नग जटित हेम मंडह अनूप। चौरीस ताम सज्जी सजूप ॥
हिम धरित पट्ट मानिक रोह। बासनह छादि सम विषम सोह ॥
छं० ॥ २५३० ॥

दंपत्ति गोहि आसनह ताम। किय विप्र सब्ब सुर मुष्ष काम ॥
गा... चैक माननि सुमेव। आवरिय भोम भ्रामरिय तेव ॥
छं० ॥ २५३१ ॥

कमधज्ज बीर चंद्रह सु आय। तिहि तव्यौ विवह प्रथिराज राय ॥
नैवेद ताम धन गय तुषार। सम प्रान मुत्ति माला कुसार ॥
छं० ॥ २५३२ ॥

कंसार जाम आहरै राज। बानी अयास सुरताम साज ॥
श्रब बरस अवर सुर मास जोग। सम सचहु साज्व संजोग भोग॥
छं० २५३३ ॥

संभरिय बानि आयास भूप। पन्यौ सु काल बल मनिय कूप ॥
बीवाह सेष सब करिय काज। ...सि बास धाम पत्तौ सु राज ॥
छं० ॥ २५३४ ॥

सुहाग रात्रि वर्णन।

कवित्त ॥ निसावास चहुआन। धाम बर राज संपत्तौ ॥
सुष सेज्या निसि मध्य। र...मि क्रीड़ा रस रत्तौ ॥
मिलिय सषिय ... नेह। बीस ...त अगविय अष्पनि ॥
तिन प्रेरित संजोगि। आनि म...र राज ततष्पिन ॥
संग्रहिय पानि संजोगि न्रप। अग्गोहिय निज ...प बर ॥

(१) ए. कृ. को. धाम। (२) मो. अकाम।

संजोगि लष्षि सुच्छम सुतन । नेहन औड़ कोस पर ॥ छं० ॥ २५३५ ॥
निरषत द्रग संजोगि । गयौ प्रथिराज मोह मनं ॥
उदय सूर उठि राज । काज किन्नौ सु व्याह पन ॥
आप पंग प्रोहित्त । दीन सब बस्त संभारिय ॥
जे [illegible] जैचंद । व्याह संजोगि सु सारिय ॥
[illegible] बेस बिंद कारन न्रपति । आए बज्जन [illegible] घर ॥
पंषे सु [illegible] स्रृंगार करि । दीनौं बिधि बिधि [illegible] भर ॥
[illegible] २५३६ ॥

ब्याह हो जाने पर पृथ्वीराज का प्रोहित को एक मास पीछे बिदा करना ।

दूहा ॥ हेम हयग्गय अंबरह । दासि सहस सत दीन ॥
प्रोहित पंग सु ब्रह्म रिषि । व्याह बिहि बहु कीन ॥ छं० ॥ २५३७ ॥
कवित्त ॥ करिय सु कारन व्याह । दीय दानह बिप्रां कवि ॥
प्रोहित पंग नरिंद । तास आदर किन्नौ तवि ॥
ता पछै दुअ पष्य । राषि प्रोहित प्रथिराजह ॥
सत सारद हय सु बर । पंचगज दीन सु राजह ॥
कोटेक द्रब्य दीनौ न्रपति । जुगल जुगल हय सथ्य दिय ॥
चहुआन चिंति रा पंग गम । बढ़ी प्रीति आनंद जिय ॥
छं० ॥ २५३८ ॥
दूहा ॥ दयौ द्रब्य सु जाग घन । चलि प्रोहित पुर पंग ॥
प्रथम राज सुअ इंद सम । बिबिध बिबिध बढि रंग ॥ छं० ॥ २५३९ ॥
सुभह रम्य मंडिग न्रपति । दिपति दीप दिव लोक ॥
मुकुर मउष अंम्रत झरहि । करहि ति मनह असोक ॥ छं० ॥ २५४० ॥
वय सुसंत छिति संकिय । [illegible] मग्मंत सु जीव ॥
ग्रीषम गट्ठि सु पिम्म प[illegible] । अम्रत स[illegible] गीव ॥ छं० ॥ २५४१ ॥

सुख सोनारे की ऋतु से उपमा वर्णन ।

[illegible] अगर धुम्म मुष [illegible] पह उमंगो मेघ जनु ॥
[illegible] मोर मल्हार [illegible] मत्त [illegible] ॥ [illegible]

सारंग सार रंग पइहि पंषि रस ॥
बिज्जुलि कोकिल सानि, झमझहि आसु मिसि ॥ छं० ॥ २५४२ ॥
दादुर सादर सोर नवप्पुर नारि घन ॥
मिलि सुर मधि मधु इत्त माधुर मझि मन ॥
तालक पंच पचीस प्रजंकति दून दस ॥
तर्हे अग्गि पूर्न्न सु बीनति दासि दंस ॥ छं० ॥ २५४३ ॥
के जुअ जुध्य जवाहि प्रमादहि मंद गति ॥
केवल अ चर्ल बाय निरूपहि सरद रति ॥
केवर भाष पराक्रत संक्रित देव सुर ॥
केवर बीन बिराजित राजहि बार बर ॥ छं० ॥ २५४४ ॥
इन विधि विलसि विलास असार सु सार किय ॥
ट सुष जोग संजोगि प्रिथी प्रथिराज प्रिय ॥
ज्यों रति संगम मारन जानैं रयन दिन ।
केतकि कुसुम लुभाय रह्यौ मनु भ्रमर मन ॥छं० ॥ २५४५ ॥

सखिपरिहास और दंपतिविलास ।

गाथा ॥ अंगा अंबोह पत्ती । कंती कंताय दिठ्ठ मा दिठ्ठी ॥
राहिला मरम सु मिठ्ठी । पत्ती कंताइ इच्छि मिछांइ ॥
छं० ॥ २५४६ ॥

दूहा ॥ भजै न राज संजोगि सम । अति सुच्छम तन जानि ॥
तब सु सषी पंगानि बर । रची बुद्धि अप्पान ॥ छं० ॥ २५४७ ॥
मधि अंगन नव दल सु तरु । नव मौर घन उट्टि ॥
एक मंजर पर भ्रमर भ्रमि । बास आस रस चिट्ठ ॥ छं० ॥२५४८॥
भार भ्रमर मंजरिन मि । हुत जानि उठि पंषि ॥
कछु अंतर राजन स : बोलि बयन दिषि अंषि ॥ छं०॥२५४९॥
रस घुट्टत लुट्टत न ' नन इ मंजरि याह ॥
भार भगत कथ्थइ सुनी । अलिया । मंजरि याह ॥ छं० ॥ २५५० ॥

(१) ए. कृ. को.-ठाठुर। ( ) ए. ो.-नवध्धुर।
(३) ए. कृ. को. सोच्छ, सिंछ

गाथा । अप्पइ आरुहि भंग । मम डरई मह देषि श्रीनं ॥
पत्तली षग्ग धारा । हय गयं कुंभस्थलं हनई ॥ छं० ॥ २५५१ ॥
जं केहरि नन भीनं । तं गज मत्त जूथयं दलए ॥
नव रमनी रमि राजं । एक पलं जम्म सुष्यांइ ॥ छं० ॥ २५५२ ॥

दूहा । अलिय अलिय एकत मिलिय । रस सरवर संजोगि ॥
सो कविंद चय बरस रस । मुह प्रगटित रति भोग ॥ छं० ॥ २५५३ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराजरासके कन्वज संयोगिता प्रतिष्ठा पूरन राजा जैचंद दल चूरन सामंत जुध दिल्ली आगमन नाम एकसठवों प्रस्ताव संपूर्णम् ॥